साहित्य-परिषद्-ग्रन्थावली संख्या—४५

संगीत
रागकल्पद्रुमः

(२रा खण्ड)

स्वर्गीय कृष्णानन्द रागसागर-विरचित

——— o ———



सुप्रसिद्ध साहित्यानुरागी लालगोलेके

राजा राव श्रीयोगीन्द्रनारायण राय बहादुरके

सम्पूर्ण व्यय और उत्साहपर

हिन्दी प्रभृति विविध भाषाओंमें पारदर्शी सङ्गीतज्ञोंके साहाय्यसे

विश्वकोष-सम्पादक

श्रीनगेन्द्रनाथ वसु प्राच्यविद्यामहार्णव शब्दरत्नाकर

सिद्धान्तवारिधि-सम्पादित

——— o ———

२४३।१ अपर-सरकुलार रोड, बङ्गीय साहित्य-परिषत्-मन्दिरसे

श्रीरामकमल सिंह द्वारा प्रकाशित

कलकत्ता

संवत् १९७२

SANGITA
RAGA-KALPADRUMA

Encyclopædia of Indian Music

COMPRISING

Popular Sanskrit, Hindi, Gujrati, Karnatic, Telegu, Tamil, Bengali, Uriya, Arabic, Persian, Peguan and various songs of the different dialect of Rajputana as well as some ancient English songs.

COMPILED BY

LATE KRISHNANANDA VYASADEVA RAGASAGARA

———oo———

VOL. II.

(REVISED EDITION)

Edited by

NAGENDRA NATH VASU, Prachavidyamaharnava, Siddhantavaridhi, Sabdaratnakara

Under the distinguished patronage of

RAJA RAO JOGINDRANARAYAN RAY BAHADUR

OF

L A L G O L A.

———o———

Published

From the Bangiya Syhitya Parishad,

By RAMA KAMAL SINHA

243|1 Upper Circular Road,

CALCUTTA.

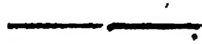
Printed by

R. C. Mittra, at the **Visvakosha-Press**

9, Visvakosha Lane, Bagbazar,

1916

विषय-निर्देश



ग्रन्थकार और ग्रन्थका संक्षिप्त परिचय

कोई ३२ वर्ष पहिले सन् १८८४ ई०को कलकत्तेमें सार् राजा राधाकान्तदेव बहादुरके प्रासादमें हमने तेजस्वी तप्तकाञ्चनवर्णाभ और दीर्घकाय एक ब्राह्मण देखा। उस समय हमने वङ्गभाषामें 'शब्देन्दु-महाकोष' नामक वृहदभिधान प्रकाशित करनेका बीड़ा उठाया था। इस अभिधानके प्रकाशन और प्रत्नतत्त्वविषयमें शिक्षालाभके अभिप्रायसे ही राजा राधाकान्तके उपयुक्त दौहित्र स्वर्गीय श्रीआनन्दकृष्ण वसु महाशयके समीप हम उपस्थित थे। उसी समय पूज्यपाद वसु महाशयसे साक्षात् करनेको वह ब्राह्मणप्रवर राधाकान्त भवनमें आये थे। वसु महाशयकी कृपासे हमारा उनका परिचय हुआ। परिचय-प्रसङ्गमें वसु महाशयने कहा था,—"यही रागसागर कृष्णानन्द व्यासदेव हैं। इस समय इनका वयस ८० वर्षका, किन्तु देखनेपर ५०।६० वर्षसे अधिक समझ नहीं पड़ता। हमारे मातामहने जैसा 'शब्दकल्पद्रुम' नामक अभिधान बनाया है, इन्होंने भी वैसे ही 'रागकल्पद्रुम' नाम पर एक प्रकाण्ड सङ्गीत-ग्रन्थको सङ्कलन किया है। 'पृथ्वीराज-रायसे'की बात सबने सुनी होगी। इस समय एकमात्र यही कविचन्दका वह 'रायसा' उपयुक्त रूपसे गा सकते हैं।" इत्यादि

जब हमने उन महात्माको देखा, तब वह बहुमूल्य जरीन् कुरता, चपकन, चोगा और टोपी पहने हुये थे। उनकी वह वेशभूषा देख हम उन्हें कोई श्रेष्ठ ग्रन्थकार या गायक समझ न सके। हमने सोचा, कोई अमीर या राजा-महाराज होंगे। वसु महाशयसे उनका प्रकृत परिचय पा हम विस्मय-विमुग्ध हो गये। कवि-चन्दका नाम तो सुना, किन्तु उनका गान कभी कानमें न पड़ा था। हमने बहुत डरते-डरते गुरुस्थानीय वसु महाशयसे वही गान सुननेका आग्रह प्रकाश किया और रागसागरने भी हंसते-हंसते बालकका मन रख दिया। उन्होंने कविचन्दका गान सुनानेके लिये पहले अपना परिष्कृत परिच्छद समस्त खोल-खाल लंगोटा पहना, पीछे वीररसात्मक कविचन्दका एक पद गाया। वैसा हृदय-उत्तेजक और वीररसात्मक गान फिर हमें कभी सुन न पड़ा। जो लोग आनन्दकृष्ण वसु महाशयके पुस्तकागारमें उस समय बैठे थे, वे रागसागर महाशयका अपूर्व स्वरालाप सुन और हावभाव देख मानो मन्त्रमुग्ध हो गये। हमने उसी समय समझ लिया, कि यह व्यक्ति प्रकृत ही एक असाधारण पुरुष हैं। किन्तु उस समय भी उनके कीर्तिस्तम्भ 'सङ्गीत-रागकल्पद्रुम'को देखनेका सुयोग न लगा। स्वर्गीय वसु महाशयने सिर्फ यही कहा, "यह राजा राधाकान्त देवकृत शब्दकल्पद्रुमके अनुकरण पर रागकल्पद्रुम बना रहे हैं।" सिर्फ उसी दिन इन महापुरुषसे हमारी मुलाकात हुई थी। उसके थोड़े दिन बाद सुन पड़ा, रागसागर इहजगत्से उठ गये। इस बातको गुजरे कोई २८ वर्ष बीते होंगे। वर्तमान वङ्गके प्रथित-कीर्ति साहित्य-परिपोषक मुर्शिदाबाद-लालगोलेके वासी श्रीयुक्त राजा योगीन्द्रनारायण राव बहादुरकी कृपा एवं हमारे श्रद्धास्पद बन्धुवर श्रीयुक्त रामेन्द्रसुन्दर त्रिवेदी महाशयके उद्योगसे रागसागरका कीर्तिस्तम्भ राग-कल्पद्रुम हमारे हाथ लगा है।

प्रसिद्ध प्रत्नतत्त्ववित् राजा राजेन्द्रलाल मित्र महाशयने रागसागर और रागकल्पद्रुमके परिचय-प्रसङ्गमें लिखा है :—

"The book was in three volumes. The author, I remember, told me that he would make his work extend to seven volumes, the same as Raja Radhakanta Deva's Sabdakalpadruma, but I do not think he had materials ready at hand for the purpose. He carried about with him a huge bundle of MS notes, but I never had an opportunity to examine them, and I was too young then to care for them. The author was a Brahman, and his great pretension was that he could sing in three octaves, the ordinary compass of the human voice being two and a half octaves. He pretended also that he could sing in all the Ragas and Raginis with absolute accuracy, and without ever mixing up the latter; but I never studied music myself, and in my youth cared no-

thing about it, so I never could get any proof of the man's pretensions. He was always singing, but was not a professional musician, that is, he never let himself out on hire. He received presents from the rich people of the town frequently, but never accepted anything as wages or remuneration for singing."

राजा राजेन्द्रलालकी उक्तिसे समझ पड़ता है, कि उन्होंने बाल्यकालमें ही रागसागरको देखा था। उस समय रागसागर अपने वृहत् ग्रन्थकी पाण्डुलिपि लिये घूमते रहे। उद्धृत परिचयसे आप अच्छीतरह समझ सकते हैं, कि वे एक अद्वितीय गायक थे। फिर उस समय कलकत्तेमें प्रत्येक बड़े आदमीके घर सङ्गीतका यथेष्ट आदर रहा। प्रधान-प्रधान धनी रागसागरको बुला गाना सुनते, और उपयुक्त उपहार दे सम्मानित करते थे। किन्तु उन्होंने कभी किसीसे पारिश्रमिक वा वेतनके तौरपर कुछ नहीं लिया। राजा राजेन्द्रलालने कहा है, कि शब्दकल्पद्रुमकी तरह रागकल्पद्रुमको सात खण्डमें प्रकाश करनेका अभिप्राय रखते भी रागसागर तीन खण्ड मात्र ही छपा सके थे।

सन् १८२४ ई०में राजा राजेन्द्रलाल मित्रने जन्म लिया था। अन्तत: द्वादशवर्ष वय:क्रमकालपर रागसागरके सहित उनका साक्षात् होनेसे प्राय सन् १८३६ ई०को हमें रागसागर कलकत्तेमें देख पड़े। रागसागरने अपने रागकल्पद्रुमकी सूचनामें बताया है, कि उन्होंने ३२ वत्सरकाल भारतमें सर्वत्र घूमफिर गीत-संग्रह किया था। सन् १८४२ ई० अर्थात् १८९८ संवत्में उनके रागकल्पद्रुमकी सूचना और प्रथमांश 'रङ्गीन गान मजमूवा' प्रकाशित हुआ।

हमने प्रारम्भमें ही लिखा है, कि सन् १८८४ ई०को रागसागरका वयस प्राय: ९० वत्सर पहुंचा था। ऐसे स्थलमें प्राय: सन् १७९४ या १७९५ ई० उनका जन्मकाल निकलता है। उनके आत्मपरिचयसे मालूम पड़ता है, कि राजपूताना मेवाड़-राज्यके अन्तर्गत उदयपुरके 'जारैना' नामक स्थानमें कृष्णानन्द व्यासदेव रहते और वृन्दावन-गोकुलमें सङ्गीतशास्त्र पढ़ते थे। गोकुलके सुप्रसिद्ध सङ्गीताचार्य दामोदर गोस्वामी, गिरिधर गोस्वामी एवं कल्याणराय प्रभृति गोस्वामिगणने सङ्गीतविद्यासे मुग्ध हो उन्हें 'रागसागर' उपाधि दी थी। इसके ठहरानेका कोई उपाय नहीं, किस वयसमें उन्होंने 'रागसागर' उपाधि पायी थी। फिर भी उन्होंने ३२ वर्षकाल उत्तर एवं दक्षिण भारतके सकल प्रधान स्थान घूम फिर बड़े बड़े उस्तादों या गायकों और पदकर्त्ताओंसे मिल उनके निकट उस समय भारतको नाना भाषामें जितने प्रकारके श्रेष्ठ गान रहे उन सबको संग्रह किया। जिस समय वह इस विराट् संग्रहकार्यमें लगे, उसी समय सम्भवत: राजा राजेन्द्रलालसे उनकी मुलाकात हुई थी। उस समय भी वह विशाल पाण्डुलिपि कन्धेपर लादे घूमते थे।

सन् १८२२ ई०में राजा राधाकान्त देवने शब्दकल्पद्रुम आरम्भ किया और १८५८ ई०में उनका वह महाग्रन्थ पूरा हुआ। सुतरां जिस समय शब्दकल्पद्रुमका मुद्रणकार्य चलता था, उसी समय रागसागरके हृदयमें रागकल्पद्रुम प्रकाशका सङ्कल्प उठा। शब्दकल्पद्रुमप्रचारकालमें राजा राधाकान्त जिस तरह असम्भव अर्थ लगा अपने छापेखानेसे शब्दकल्पद्रुम निकालते, असाधारण उद्योगी पुरुष गौड़ब्राह्मण रागसागर वङ्गवासी और धनकुबेर न होते भी उसी तरह कलकत्तेमें खास छापाखाना खोल अपना विराट् रागकल्पद्रुम प्रकाश करनेको व्रती बने थे। उस समयके इस कामको असाधारण अध्यवसायका चूड़ान्त निदर्शन कहना पड़ेगा। यह हमने एक दिनके परिचयमें ही समझ लिया, कि ब्राह्मण दरिद्रसन्तान होकर भी उनका हृदय राजा-महाराजकी तरह उदार और विशाल था। शब्दकल्पद्रुम समाप्त होनेसे पहले ही उनका रागकल्पद्रुम निकल गया। राजा राधाकान्तदेवने १६ लाख रुपये लगा ३६ वर्षका चेष्टाके फलसे जो महाकार्य साधन किया, बेचारा ब्राह्मणसन्तान ३२ वर्ष घूम उपकरण संग्रह कर पीछे ८ वर्षकी चेष्टामें ही अपना चार खण्ड रागकल्पद्रुम छपा सका था। पहले ही बता दिया है, कि सन् १८४२ ई०में उनके ग्रन्थका प्रथम खण्ड छपा था। मुद्रित ग्रन्थकी समाप्ति पुष्पिकासे समझ पड़ता है, कि सन् १८४९ ई०को उनके ग्रन्थका अन्तिम खण्ड निकला था। उनके ग्रन्थका जो-जो खण्ड जिस२ समय मुद्रित हो प्रकाशित हुआ था, उसका सन्-संवत् इसतरह लिखा मिला है,—

सूचनिकाके शेष "संवत् १८९८ चैत्रबदि द्वितीया रवौ, बङ्गला सन् १२४८ ७ चैत्र अङ्गरेजी १८४२ १९ मार्च।"
रङ्गीनगान मजमूआके शेष "संवत् १८९८ चैत्र वदि रवौ"
ग्रन्थनाम सूचनिकाके शेष "संवत् १९०० वैशाख कृष्णत्रयोदशी बङ्गला १२५० १५ वैशाख, अङ्गरेजी १८४२ २०एप्रेल।"
रागरागिणी-विवेकाध्यायके शेष "संवत् १९०१ वैशाख शुक्ल एकादशी, बङ्गला सन् १२५१ १८ वैशाख २४ एप्रेल।"
बंगला भाषा रङ्गीनगान २३६ पृष्ठके शेष "सन् १२५२ साल, संवत् १९०२ शुक्लचतुर्दशी तारीख २९ माघ"
ध्रुवपद विष्णुपद ख्याल आदि गानके शेष "संवत् १९०२ फाल्गुन सुदी १शुक्रवार,बङ्गला सन् १२५२ अङ्गरेजी १८४५"
कबीर-बीजकके शेष "संवत् १९०६ वैशाख कृष्ण १ चतुर्थी, बङ्गला सन् १२५६,११ वैशाख, अंगरेजी सन् १८४९"।

पूज्यपाद आनन्दकृष्ण वसु महाशयसे सुना और राजा राजेन्द्रलाल मित्र महाशयने भी लिखा है, कि रागसागर महाशयने अपने रागकल्पद्रुमको शब्द-कल्पद्रुमकी तरह ७ खण्डमें सम्पूर्ण करनेका सङ्कल्प किया था, किन्तु उसमें वे ३ खण्ड मात्र ही प्रकाश कर सके। इधर रागसागरकी ग्रन्थसूचनामें देखते हैं, कि उनका ग्रन्थ ४ खण्डमें सम्पूर्ण हुआ, प्रति खण्डका मूल्य २५) रु० और समग्र ग्रन्थका मूल्य १००) रु० निर्दिष्ट रहा।

सुप्रसिद्ध साहित्यानुरागी लालगोलेके राजा श्रीयोगीन्द्र नारायण राव बहादुरने एक प्रति रागकल्पद्रुम संग्रह कर वङ्गीय साहित्य-परिषत्-पुस्तकागारमें प्रदान किया। बहुत दिनसे यह अपूर्व ग्रन्थ लुप्तप्राय था। सन्देह है, कुछ प्राचीन सङ्गीतज्ञ व्यतीत कितने ही लोगोंने इस महाग्रन्थका नाम पर्यन्त सुना है या नहीं। चिर-साहित्यबान्धव राजा बहादुरने ऐसे लुप्तग्रन्थका पुनरुद्धार एकान्त वाञ्छनीय समझ सन् १९१२ ई०में पुनर्मुद्रणका अभिप्राय प्रकाश किया। इसलिये उन्होंने हमें लालगोले ले जा हमसे परामर्श पूछा—कैसे यह ग्रन्थ छपाया जा सकता है, और सुहृद्वर श्रीयुक्त रामेन्द्रसुन्दर त्रिवेदी महाशयके आग्रहसे इस बृहद् ग्रन्थका सम्पादनभार हमारे ही ऊपर रख दिया। हमारे लिये यह गुरुभार ग्रहण कोई सीधी बात न थी। जिस बहुविध भाषाका गान इस रागकल्पद्रुममें ग्रथित हुआ, उस समस्त भाषा और विशेषत: सङ्गीत शास्त्रमें हमें अल्प ही अभिज्ञता विद्यमान है। हमने राजाबहादुर जैसे उत्साहदाताके आनुकूल्य और सुहृद्-वर त्रिवेदी महाशयके उत्साहवाक्यसे इस महाकार्यमें हाथ लगाया।

यद्यपि रागसागरने अपनी सूचनामें ४५ विभिन्न भाषाओंके सङ्गीत-संग्रहकी बात लिखी है, तथापि उनके इस ग्रन्थमें प्रधानत: हिन्दी, उर्दू, माड़वारी, पञ्जाबी, व्रजभाषा और बंगला ही अधिकांश व्यवहृत हुई है। अपरापर भाषाओंके गान बहुत ही अल्प हैं। देशीय मुद्रायन्त्रकी उस शैशव अवस्थामें अच्छा प्रूफ परिदर्शक न मिलता, प्रूफ देखनेका भी किसीको अभ्यास न था। सुतरां उस समय उपयुक्त प्रूफ-परिदर्शकके अभावसे रागकल्पद्रुमके अधिकांश गान ऐसे विकृत भावसे छपे, कि उनका प्रकृत पाठ उद्धार करनेके लिये हम और हमारे साहाय्यकारी कयी बार घबरा गये हैं। विशेषत: चीन, पेगु, ब्रह्म, श्याम, बलख, बोखारे प्रभृतिकी जो भाषायें इस देशमें साधारणत: नहीं चलतीं, उनमें हम यह नहीं ठहरा सके, किस-किस विषयके कौन-कौन गान संग्रहीत हुये हैं। संस्कृत, बंगला, हिन्दी, उर्दू, अंगरेजी, मारवाड़ी प्रभृति प्रचलित भाषाओंके गानोंका पाठ उद्धार नाना व्यक्तियोंके साहाय्यसे किया गया है।

रागसागरके छापेखानेसे जिस अवस्थामें ग्रन्थ सम्पादित हुये, उसे हम आजकलका प्रथम प्रूफ समझ सकते हैं। राजा राधाकान्तदेवने जैसे बहुसंख्यक पण्डित नियुक्तकर अपने शब्दकल्पद्रुमके विशुद्ध संस्करण-प्रकाशमें उपयुक्त आयोजन किया, मेवाड़के गौड़-ब्राह्मण सन्तानने भी कलकत्ते पहुंच वैसे ही उपयुक्त आयोजन करनेका सुयोग न पाया था। सङ्गीतविद्यामें अद्वितीय व्यक्ति होते हुये भी इसमें सन्देह है, कि अपनी बनायी ४५ भाषाओंमें उन्हें अभिज्ञता रही। इसीसे उनका ग्रन्थ उपयुक्त भावसे मुद्रितकर निकालना एक प्रकार असाध्य-साधन व्यापार है। लालगोलेके राजा बहादुरके उत्साह

और हमारी बहु चेष्टासे छपते भी नहीं कह सकते, कि यह संस्करण संपूर्ण भ्रम-प्रमाद-विरहित हुआ है। हमने यथासाध्य प्रकृत पाठ-उद्धारकी चेष्टा की है।

यह बता देना भी आवश्यक है, कि इस रागकल्पद्रुमके संस्कृत, बंगला और अंगरेजी अंशको छोड़ अपरापर अंशके मुद्रणकालमें हिन्दी भाषावित् श्रीयुक्त राधारमण देव, पण्डित मतिराम महता, पण्डित बलभद्र शुक्ल, पण्डित रामाधीन अवस्थी, पण्डित गुरुदयाल मिश्र, पण्डित रामेश्वर देव साहित्याचार्य और पण्डित जयनारायण पाण्डेय काव्यतीर्थ महाशयने विभिन्न स्थलके भ्रमसंशोधन एवं पाठोद्धार-कार्यमें उपयुक्त साहाय्य किया है। इस लिये हम उनके निकट कृतज्ञ हैं।

१ले और २रे खण्डके प्रथमांशमें प्राचीन संस्कृत सङ्गीत-शास्त्रसे जो प्रमाण उद्धृत हुये, रागकल्पद्रुममें उनके आकरस्थान वा अध्यायादिका निर्देश न रहनेसे बहुसंख्यक मूलग्रन्थ मिला आकरस्थान निकालने और प्रकृत पाठोद्धार करनेमें हमें अनेक कष्ट झेलने पड़े हैं। हम सम्पादक रूपसे कह सकते हैं, कि संस्कृत अंशके प्रकृत पाठ-उद्धारके लिये संपूर्ण भावसे दायी हैं। अपरांश हमारे सहकारियोंकी अभिज्ञताके फलसे सम्पादित हुआ है। इस सकल अंशकी आलोचना करनेको हमें समय न मिला। विशेषतः सङ्गीतविद्यामें अभिज्ञता न रहनेसे उनके कार्यपर हस्तक्षेप करना युक्तियुक्त कैसे समझ सकते हैं! हिन्दुस्थानी पण्डितों और गायकोंमें भाषाज्ञानका भी यथेष्ट तारतम्य है। किन्तु उनमें तीन दल हो गये हैं। एक दल तो चाहता, पहले जिसतरह प्रकृत रूपसे हिन्दीभाषा व्यवहृत होती थी, ठीक उसी तरह हिन्दी अंश छपना चाहिये। दूसरा दल हिन्दीभाषामें जहां शुद्ध संस्कृत शब्द आता, वहां प्रकृत संस्कृत रूप ही रखता और खालिस हिन्दी अंश हिन्दी भाषाके प्रकृत उच्चारणानुसार सन्निवेशित करता है। फिर गायकदल जिस भावसे गाता, उसीके स्वरालापकी पद्धति और उच्चारणके अनुसार ग्रन्थ छपानेकी अनुमति भी देता है। ऐसी ही तीन श्रेणीके संशोधकोंके साहाय्य एवं तत्त्वावधानसे विभिन्न स्थलकी हिन्दी, ब्रजभाषा और मारवाड़ीके पदोंका अंश छापा गया है। सुतरां मुद्रणकालमें सर्वस्थान भाषागत या उच्चारणगत परिचर्या सम्पूर्ण भावसे रक्षित रह नहीं सकती।

नहीं जानते और सुनते भी नहीं, कि भारतीय सङ्गीत-साहित्यमें रागकल्पद्रुम-जैसा कोई वृहत् ग्रन्थ विद्यमान है। हिन्दुस्थान और बङ्गालमें सङ्गीत संग्रहके जो ग्रन्थ छपे हैं, उनमें हमारे कितने ही देखे सुने हैं। किन्तु इस रागकल्पद्रुमके सामने वह अति सामान्य हैं। रागसागरने ग्रन्थके प्रथम सङ्गीत-शास्त्रसे उद्धृत संस्कृतमें जिस अज्ञात-पूर्व विविध सङ्गीत-साहित्यका परिचय दिया, उससे हमें बहुतसे प्राचीन सङ्गीत ग्रन्थोंका सन्धान मिला है। उनमें ऐसे अनेक ग्रन्थ हैं, जो वर्तमान भारत-गवर्णमेण्टके भारतव्यापी अनुसन्धानसे भी आजतक आविष्कृत हो न सके। वर्णानुक्रमिक प्राचीन (२रे खण्डके अन्तिम ८ पत्रपर) संस्कृत शास्त्रसूचीमें उन सकल ग्रन्थोंके नाम देख पड़ेंगे। इन सकल संस्कृत ग्रन्थोंको छोड़ रागकल्पद्रुमके गानाध्यायमें बहुसंख्यक हिन्दी और बंगला ग्रन्थोंसे भी गान उद्धृत हुये हैं, नीचे वही सकल ग्रन्थ अकारादिक्रमसे लिखे जाते हैं*,—

अनन्तरस	काशीखण्ड
अनेकार्थ-नाममाला	कृष्ण गीतावली
अवतार-चरित्र	कोकसार
अवध विलास	कौतुक-रत्नावली
अष्टयाम	खट्ऋतु
आभास रामायण	गणिताङ्क
उपदेशमाला	गर्भावली रामायण
कविप्रिया	गीतावली (हिन्दी)
कवित्त-रामायण	गीतावली (बंगला) आनन्द-नारायण घोषकृत
कबीर-बीजक	

* सर जर्ज ग्रीयार्सन साहबने अपने हिन्दी भाषाके इतिहासमें रागकल्पद्रुमसे हिन्दुस्थानी ग्रन्थोंकी जो तालिका दी, वह भी इस जगह ली गयी है। उसमें सकल नाम मिला हम यह ठीक कर नहीं सके, किस-किस ग्रन्थसे कौन-कौन अंश उद्धृत हुये हैं। इस तालिकामें जिन सकल ग्रन्थोंके नाम छपे, उनमें केवल गीतावली और ब्रह्मसङ्गीत बंगला भाषाके ग्रन्थ हैं। सिवा इसके समस्त ही ग्रन्थ हिन्दुस्थानी, मारवाड़ी और ब्रजभाषाके बने हैं।

गीतावली (बङ्गला
,, आशुतोष देवकृत)
,, कालिदास गाङ्गुलीकृत)
,, कालिदास मौरजाकृत)
,, रामनिधि गुप्तकृत)
,, शिवचन्द्र सरकारकृत)
गोपीचन्द्र गान
गोरक्षमच्छेन्द्र-समाज
चाहार दरवेश
छत्रप्रकाश
जगद्विनोद
ज्ञान-उपदेश
तानसेनका सङ्गीतसार
तुलसीदासका रामायण
नगर-कीर्त्तन (राजकृष्ण
बाहादुरकृत)
दया-विलास
दोहावली
ध्यान मञ्जरी
नयानसुख
नरसीकी हारमाला
नाजिरका शायर
नीतिकथा
पञ्चरतन
पद्मावत्
पृथीराज रायसा
प्रबोधचन्द्रोदय-नाटक
प्रेमसागर
ब्रह्मसङ्गीत (राममोहनराय)
,, (देवेन्द्रनाथ ठाकुर)
,, (गिरीन्द्रनाथ ठाकुरकृत)
भक्तमाला (हिन्दी)
भाषा इन्द्रजाल
,, कोक
,, छन्द
,, पचिशी
,, पिङ्गल
,, भगवद्गीता
,, भागवतपुराण
,, भूषण
,, रत्नाकर
,, सङ्गीतदर्पण
,, सावर

भाषा सामुद्रिक
मदन-मञ्जरी
मनोरञ्जन इतिहास
मक्खुलालका शायर
माधी-विलास
योगान्तकसार
रसराज
रसार्णव
रसिकप्रिया
रागमाला
राजनीति
राज-भर्त्तरि गान
रामचरण-चिह्न
रामविनोद
रामशतसै
राम-शलाका
रास-पञ्चाध्याय
रुक्मिणीमङ्गल
लीलावती
लूना चमारिका मन्त्र
वारवे रामायण
विद्वपरीक्षा
विद्याभ्यासका फल
विनय-पत्रिका
बिहारी शतसै
वृन्दावन सत्
वेताल-पचिशी
वैदरी कथा
वैद्यमहोत्सव
व्रजयात्रा
व्रजविलास
व्रजभाषा महाभारत
शालिहोत्र
शिवका ग्रन्थसाहब
शिवसरोज
शिशुबोध
श्रीकृष्णावली
सिंहासनवत्तिसी
सभाविलास
सरस रस
सर्पादि-जन्तुकी पोथी
सुगा बहत्तरी
सूरसागर

सौदाका गजल
स्नेहसागर
हनुमान नाटक
हनुमान वाहुक
हातमताइ
हितोपदेश
हीराराञ्झा

इस ग्रन्थतालिकासे हमें कई हिन्दुस्थानी, डिङ्गल और बंगला ग्रन्थोंका सन्धान मिलता है।

इस सुबृहत् ग्रन्थमें कितने प्रकारकी राग-रागिणी, कितने गीत-रचयिता और उनके रचित कितने प्रकारके गान किस विषयमें संगृहीत हुये, साधारणको समझानेके लिये उपरोक्त तालिकाको छोड इस ग्रन्थके साथ निम्नलिखित भावसे विस्तृत सूचीपत्र दिया गया है—

१। १ले और २रे खण्डके साधारण विषय और रागरागिणीकी सूची (१—१६ और १—६ पृष्ठ)

२। २रे खण्डके अन्तमें १ला खण्डोक्त वर्णानुक्रमिक रागरागिणी-नाम सूची। (१—८ पृष्ठ)

३। प्राचीन संस्कृत ग्रन्थ सूची। (२य खण्डके अन्तमें ८ पृष्ठ)

४। १ले, २रे, और ३रे खण्डके गीतरचयिताओं और साधारण नामोंकी वर्णानुक्रमिक विस्तृत सूची। (१०—१६ पृष्ठ)

गीत-रचयिताओं और साधारण नामोंकी सूचीसे समझ पड़ेगा, रागसागरसे पहले कितने सुप्रसिद्ध गायक या सङ्गीत-रचयिता विद्यमान थे और दिल्लीके मुगल बादशाहसे लेकर कितने मुसलमान और हिन्दू राजन्य, धर्माचार्य और सिद्ध पुरुष उनके आश्रयदाता रहे। तीन खण्डकी साधारण नामसूचीमें उन सकल आश्रयदाताओंके नाम लिखे गये हैं, उनमें कितने ही पदकर्ता या गीतरचयितृ-रूपसे भी परिचित हुये हैं। सिवा इसके दूसरे भी बहुतसे गान रागकल्पद्रुममें हैं, जिनके रचयितृगणके नाम और आकरस्थानका कोई सन्धान हम नहीं पा सके हैं।

रागकल्पद्रुम कोई प्रकृत इतिहास या साहित्य ग्रन्थ नहीं है, तो भी इस विराट् संग्रह ग्रन्थमें इतिहास-प्रसिद्ध व्यक्तियों, धर्माचार्यों और समाजपतियोंके नाम मिलनेसे इसकी आलोचना द्वारा मुसलमान और हिन्दू-समाजके विभिन्न समयका अनेक अज्ञातपूर्व ऐतिहासिक तत्त्वोंका उद्धार हो सकता है। इस रागकल्पद्रुमसे हमें कितने ही हिन्दी और उर्दूके मुसलमान पद-

कर्तोओंका सन्धान मिलता है। नामसूचीकी तालिकामें अकबर, जहांगीर, शाहजहां औरंगजेब, आलमगीर, मुहम्मदशाह प्रभृति बादशाहोंका नाम लक्ष करनेसे ही समझ पड़ेगा, कि मुग़ल बादशाह भी हिन्दुओंके साथ भगवद्लीला एवं प्रेम-विषयक गान सुनते और स्वयं भी समय-समय पर पद बना कृतकृत्य होते थे। जिस औरङ्गजेबको कितने ही लोग दारुण देवद्वेषी और हिन्दूविद्वेषी समझते हैं, उनके रचित पद पढ़नेसे इस विषयमें घोरतर सन्देह होता है कि वास्तविक वह हिन्दूविद्वेषी थे या नहीं। शायद लोग कहें,—औरङ्गजेबका नाम रहते भी वह पद औरङ्गजेबके खास बनाये नहीं, किसी हिन्दूने ही लिखे होंगे। इस बातका यह उत्तर दिया जा सकता है—वह यदि प्रकृत हिन्दू-विद्वेषी ही होते, तो उनके समय उन्हींके नामसे ऐसे गान प्रचारित होनेकी कभी सम्भावना न थी। अन्ततः इस रागकल्पद्रुमोक्त मुसलमान पद कर्ताओंके बनाये शत-शत पदोंसे हम समझ सकते हैं कि, किसी समय मुसलमान बादशाह और मुसलमान लोग हिन्दूओंको हरगिज़ विद्वेषकी दृष्टिसे न देखते थे। हिन्दु-देवलीला भी उनके निकट सम्पूर्ण अवज्ञाका वस्तु नहीं मानी जाती थी। ऐसे दिन बीत गये हैं, जब हिन्दू मुसलमान एक दूसरेको आत्मीय भावसे देखते, धर्म-विश्वासमें कभी विवादवादी न होते; उलटे परस्पर धर्मकार्यमें सहानुभूति रखते थे। कहनेसे क्या— मुसलमानी अमलदारीमें समाज,धर्म-साहित्य और रीतिनीतिके मध्य जिस भावका तरङ्ग उठता था, उसका कुछ-कुछ आभास हमें रागकल्पद्रुमके नाना पदांस मिला है। स्थानाभावसे हम इसका विस्तृत विवरण न दे सके।

पहले ही लिख चुके हैं, कि रागसागरके समय भारतके सकल धनी गृहस्थोंके घरमें सङ्गीतकी चर्चा यथेष्ट प्रचलित रही, विशेषतः कलकत्तेमें बड़े आदमियोंका ऐसा घर न था, जिसमें उपयुक्त सङ्गीत-चर्चा न होती हो। सङ्गीत-चर्चाके साथ कितने ही बड़े आदमी नाना विषयोंके अनेक गान बनाते थे, जिनका अधिकांश इस समय विलुप्त होते हुये भी रागसागरकी कृपासे रागकल्पद्रुमके बङ्गांशमें कुछ लोगोंका सन्धान मिलता है।

इस ग्रन्थके प्रथम प्रकाश-कालमें शाहकत्रेशोक्त जो जिन-जिन महात्माओंने रागसागरको उत्साह दिया था, उन सबका नाम ग्रन्थकी सूचनामें रागसागरने कृतज्ञताके साथ लिखा है। उसी ग्राहकतालिकामें राजराजेश्वरी क्वीन विक्टोरियासे लेकर उस समयके भारतवर्षीय सकल स्थानके सकल प्रधान-प्रधान राजाओं अमीरों और बहुतसे सम्भ्रान्त धनी व्यक्तियोंका नाम देख पड़ता है। उस समय महाराज रणजित्सिंहके पुत्र स्वाधीन भावसे ही राज्य करते और काशीपति चेतसिंहका राज्य लोप होते हुये भी उनके पुत्र महाराज बलवन्त सिंह आगरेमें विराजते थे। उस समय भी भारतवर्षके बाहर-भीतर जिन स्वाधीन और अर्ध-स्वाधीन नृपतियोंने रागसागरको रागकल्पद्रुम ले उत्साहित किया, उनका सन्धान भी इस ग्रन्थकी सूचनासे मिल जाता है। जिन् सकल महात्माओंका नाम उक्त तालिकामें लिखा है, उनके कितने ही वंशधर आज भी नाना स्थानोंमें उज्ज्वल नक्षत्रकी तरह चमक रहे हैं। हम आशा करते हैं, कि उनके पूर्वपुरुषोंकी तरह उनके निकट भी यह ग्रन्थ विशेषरूपसे समादृत होगा।

हम पहले ही बता चुके हैं, कि रागसागरके ग्रन्थ छपानेके बाद अनेक ज्ञानी और मानी लोगोंके रागकल्पद्रुम ले उन्हें उत्साह देनेपर अल्प दिनोंमें ही यह ग्रन्थ विरल-प्रचार हो गया था। परम पूज्यपाद महामहोपाध्याय श्रीयुक्त हरप्रसाद शास्त्री महाशयसे हमने सुना है, कि ग्रीयार्सन साहबने (अधुना सर जार्ज ग्रीयार्सन) सन् १८८६ ई०को जब हिन्दूस्थानी भाषाका संक्षिप्त इतिहास लिखना आरम्भ किया तब यह रागकल्पद्रुम उनका प्रधान अवलम्बन बना; उन्होंने अनेक चेष्टा लगा मेटकाफहाल-पुस्तकालयसे एकमात्र सम्पूर्ण ग्रन्थ पाया था। यह ग्रन्थ दीर्घकाल व्यवहार करनेको उन्हें सौ रुपयेसे भी ज्यादा चन्दा पड़ा, परन्तु उन्हें बहु चेष्टा करने एवं मूल्य देनेपर भी दूसरा सम्पूर्ण ग्रन्थ न मिल सका। शास्त्री महाशयने भी घटनाक्रमसे बङ्गांश मात्रके तीन खण्ड संग्रह किये थे। अपना एक खण्ड उन्होंने बङ्गीय साहित्य-परिषत्-पुस्तकागारमें उपहार दिया है। पहले शास्त्री महाशयकी भी धारणा रही,

कि बङ्गाक्षरमें मुद्रित अंश ही रागसागरका सम्पूर्ण रागकल्पद्रुम था। किन्तु पीछे लालगोलेके राजाबहादुरने जब बङ्गीय साहित्यपरिषत्को नागरी अक्षरोंमें मुद्रित अंश दिया और आपको महाशयने उसे देखा, तब वह वास्तविक चमत्कृत हो गये। लालगोलेके राजा बहादुरको इस ग्रंथके उद्धारका आयोजन करते देख आपको महाशयने आन्तरिक धन्यवादज्ञापक पत्र लिखा था। हमने अनेक चेष्टासे निम्नलिखित नागर और बङ्गाक्षरमें मुद्रित रागकल्पद्रुमका सन्धान पाया है। उनमें—

१। लालगोलेके राजा बहादुरका दिया और बङ्गीय साहित्य-परिषत्-पुस्तकालयमें रखा आदर्श पुस्तक है।

२। स्वर्गीय राजा राधाकान्तदेव बहादुरके भवनमें अयत्नसे रक्षित १ खण्ड है।

३। वर्तमान कलकत्ता इम्पीरियल लायब्रेरीमें रक्षित एक असम्पूर्ण खण्ड है। (इस पुस्तकको ग्रीयार्सन साहबने व्यवहार किया था।)

केवल बङ्गाक्षरमें मुद्रित ४।५ ग्रन्थोंका सन्धान तो मिला, किन्तु हम कितने ही लोगोंसे अनुसन्धान लगा भी यह मालूम कर न सके, नागरी और बङ्गाक्षरमें मुद्रित ग्रन्थ सिवा तीन प्रतिके किसी दूसरी जगह है या नहीं। पहले हम समझते थे,—लालगोलेके राजाबहादुरका दिया आदर्श-पुस्तक ही संपूर्ण रागकल्पद्रुम है। इस पुस्तकमें निम्नलिखित रूपसे अंश-विभाग लगा है—

१। सूचनिका ४ पत्राङ्क और नाम ४ पत्राङ्क।

२। स्वराध्याय, तालाध्याय, नृत्याध्याय, रागरागिणीविवेकाध्याय—२८ पत्राङ्क।

३। ध्रुवपद, ख्यालादि गान प्रथम २२८ पत्राङ्क, पीछे १से ८ और ११७से १५६ पत्राङ्क।

४। रङ्गीनगान मजमूवा, ३४४ पत्राङ्क।

५। कीर्तन वा नृत्यकीर्तन, १३२ पत्राङ्क। उसके बाद खण्डित है।

६। होली रङ्गीनगान १०८ पत्राङ्क। (१०८ पृष्ठके बाद खण्डित है।)

७। अध्यात्म और ज्ञानतत्त्वसागर, ७६ पत्राङ्क।

८। हिन्दी भक्तमाल-धृत कबीरका बीजक, ५२ पत्राङ्क।

९। बंगला अक्षरमें मुद्रितांश, प्रथम २३६, उसके बाद २४ पत्राङ्क।

आदर्श पुस्तकके अवलम्बनसे ग्रन्थसम्पादनकालमें अनेक चेष्टा करनेपर भी हम दूसरा कोई ग्रन्थ संग्रह कर न सके थे। ग्रन्थका ३रा खण्ड या बङ्गाक्षरांश छपते समय हमें इम्पीरियल लाइब्रेरी और राजा राधाकान्त देवके पुस्तकालयमें इस पुस्तकके वर्तमान रहनेका सन्धान मिला। किन्तु उभय ग्रन्थ मकान लाकर उपयुक्त भावसे मिलानेका कोई सुयोग लगा न था। स्वर्गीय राजा राधाकान्त देवके सुयोग्य पौत्रके निकट कितनी ही दौड़ धूप कर भी उनके भवनका पुस्तक हम देख न सके। इम्पीरियल लाइब्रेरीका पुस्तक देख तो पाया, किन्तु उसे मकान ला अपने आदर्श-पुस्तकके साथ मिलानेकी सुविधा न लगी। इम्पीरियल लाइब्रेरीके कर्मचारी अपने यहांका पुस्तक किसी प्रकार बाहर निकालनेपर सम्मत न हुये। इसीसे हमें इम्पीरियल लाइब्रेरीमें जाकर उभय पुस्तक मिलानेकी व्यवस्था बांधनी पड़ी। हमारे सहकारी पण्डित श्रीयुक्त रजनीकान्त विद्याविनोद मासाधिक काल इम्पीरियल लाइब्रेरीमें यातायातकर आदर्श पुस्तकसम्बन्धीय १ला खण्डका खण्डित अंशके ३२ पृष्ठोंकी नकल उतार लाये। यह अंश २रे खण्डके परिशिष्टमें छपा है। ३यांश या ध्रुवपदख्यालादि अंश इम्पीरियल लाइब्रेरीके पुस्तकमें ४ पृष्ठ मात्र अर्थात् संपूर्ण न रहनेसे हम पूर्ण कर न सके। अष्ठ अंश भी थोड़ासा असंपूर्ण रह गया है। इम्पीरियल लाइब्रेरीके पुस्तककी नकल उतारते समय दूसरे भी कई भाग मिले, जो हमारे आदर्श-पुस्तकमें बिलकुल देख नहीं पड़ते। नीचे उनका अंश-विभाग दिया जाता है:—

१०। सूरदासजीकृत सूरसागर-सारावली ४४ पत्राङ्क।

११। सूरसागर—बधायी, बाललीला, यमलार्जुन, अघासुरवध, वत्सहरण, राधाकृष्णजीको प्रथम मिलनलीला, गोचारण-लीला, कालीयदमन-लीला, वस्त्रहरणलीला, पनघटकी लीला और खण्डिता, (सूरसागरके) कुल १५२ पत्राङ्क।

१२। सूरसागर—दानलीला और राधाजीको अनुरागलीला, कुल १०४ पत्राङ्क।

१३। सूरसागर—मुरलीलीला, रासलीला और मानलीला, कुल ८६ पत्राङ्क।

१४। सूरसागर—मथुरालीला, ३२ पत्राङ्क।

१५। सूरसागर—अमरगीता (रागसागर-संग्रह), १२० पत्राङ्क ।

१६। अपना दीनदयाल,प्रभुजीका माहात्म्य तथा विनय-पत्रिका, ३१ पत्राङ्क ।

१७। कलावती होलीगान—अतिरिक्त पत्राङ्क १०८ से १७६ ।

१८। राजा-भर्त्तरि-गीत, (१-८पृ०) और राजा गोपीचन्द्र गीत (८-२८), कुल २८ पत्राङ्क ।

१९। रङ्गीनगान (गजल, रेखता, शायर, रुबायी आदि हिन्दी, फारसी और सब देशकी भाषामें) कुल ६८ पत्राङ्क, उसके आगे खण्डित है ।

सुतरां उभय पुस्तक मिलानेसे देख पड़ा, कि इम्पीरियल लायिब्रेरीमें रक्षित रागकल्पद्रुमके ७४४ पृष्ठ अभी छपनेको पड़े हैं ।

समझनेकी बात है, रागसागरने अपनी सूचनामें जिन चार खण्डोंका परिचय दिया, उनमें तीन खण्ड मात्र राजा बहादुरके दिये हुये आदर्श पुस्तकमें मिलते हैं। तीन खण्डमें विभक्त ऐसाही मूलग्रन्थ सम्भवतः राजा राजेन्द्रलालने भी देखा होगा। हमें प्रथम जैसे चतुर्थ खण्डका सन्धान न मिला, राजा राजेन्द्रलालको भी वैसे ही तीन खण्डसे अतिरिक्त पुस्तक देखनेका सुयोग लगा न था। सुतरां इसमें सन्देह नहीं, उनके समयमें ही इस संपूर्ण पुस्तकका कितना ही अभाव पड़ा होगा। जो हो, इम्पीरियल लायिब्रेरीमें संगृहीत पुस्तकसे हमारा वह अभाव पूरण हुआ है। हमारे आदर्श और इम्पीरियल लायिब्रेरीके पुस्तकमें जो-जो अंश मिला, उसकी तालिका ऊपर दी गयी है। सिवा इसके किसी दूसरेके पास यदि कोई अंश मिले तो कृपापूर्वक उसका संवाद देनेसे हम विशेष अनुगृहीत होंगे। अतः राजाबहादुरके उत्साहसे यदि चतुर्थ खण्ड निकालनेका सुयोग लगा, तो अवशिष्ट समस्त अंश छाप ग्रन्थ पूर्ण करने और उसी चतुर्थ खण्डमें सङ्गीत साहित्यके इतिहासकी आलोचना देनेकी हमारी प्रबल इच्छा है ।

इस वृहत् ग्रन्थके तीन खण्ड प्रकाशित हुये हैं। रागसागरने ३रा खण्ड केवल बङ्गाक्षरोंमें निकाला था। ३रे खण्डमें अधिकांश बंगला गान रहनेसे हमनेभी उसे बंगला अक्षरोंमें ही छापा है। आगेके दो खण्डोंकी पत्रसंख्या कुल १२५६ और तृतीय खण्डकी पत्रसंख्या कुल ३४० है। फिर आगेके दो खण्डोंमें गानोंकी संख्या ११२२० और तृतीय खण्डमें गानोंकी संख्या २५६२ है। इसी बातसे ग्रन्थकी विशालता लोगोंकी समझमें आ जायेगी ।

हम पहले ही कह चुके हैं, कि महात्मा सर जार्ज ग्रीयासनने हिन्दुस्थानी भाषाका इतिहास-बनाते समय इस रागकल्पद्रुमसे यथेष्ट साहाय्य लिया था। महात्मा ग्रीयासन साहबने भी अपने ग्रन्थमें लिखा है—

"And another product of Calcutta civilisation, of a very different kind, was the huge anthology of Krishnanand Byas Deb, called the Rag-Sagarodbhab Rag-kalpadrum, written in emulation of the better-known Sanskrit lexicon, the Sabda-kalpadruma."

(The Modern Vernacular Literature of Hindusten, (1889) p. xxiii.)

"Some years ago this work, which was printed in Calcutta, sold for a hundred rupees a copy, but it is now out of print." (Do Do pp. 137.)

ग्रीयासन साहबके ग्रन्थ-रचना-कालमें इस पुस्तकका एकान्त अभाव हो गया था। आज लालगोलेके राजा-बहादुरकी असाधारण वदान्यता, ऐकान्तिक यत्न और आग्रहसे वह अभाव मिट गया। सौ रुपये नकद मूल्य देकर भी ग्रीयासन साहब जो ग्रन्थ पा न सके, अब अनायास ३० ही रुपयमें वही ग्रन्थ सबको मिल जायेगा। इसलिये इसमें सन्देह नहीं, कि समस्त भारतवर्षके सङ्गीत-रसज्ञ मात्र इस महाकार्यके लिये लालगोलेके राजा बहादुरका सुयश कीर्त्तन करेंगे। बङ्गीय साहित्य-परिषत्के परम बन्धु राजाबहादुरने बहु व्ययसे मुद्रित इस विशाल ग्रन्थका समस्त स्वत्व साहित्य-परिषत्को अर्पण किया है और इसके विक्रय-लब्ध मूल्यसे अन्यान्य सङ्गीत-ग्रन्थके प्रचारका आदेश दिया है। राजा बहादुरकी वदान्यतासे बङ्गीय साहित्य-परिषत् चिर-कृतज्ञ बना रहेगा।

विश्वकोष-कुटीर
९ विश्वकोष लेन, बागबाजार, आषाढ़ी पूर्णिमा, संवत १९७१।

श्रीनगेन्द्रनाथ वसु (सम्पादक)

रागसागरको सूचना

श्रीगणेशाय नमः। श्रीलक्ष्मीनारायणाय नमः।

श्रीकृष्णानंदव्यासदेव सागरसागरोद्भव सङ्गीतरागकल्पद्रुमनाम ग्रन्थः॥ श्रीव्रजगोकुलके गोस्वामि श्रीदामोदरजो महाराज गोस्वामि श्रीगिरिधरजी महाराज गोस्वामि श्रीकल्याणरायजी महाराज आदि सर्व गोस्वामिजीने कृपाकरके श्रीकृष्णानन्द व्यासदेवको संगीतशास्त्रमें रागसागरनाम दयो। ताते सबही गोस्वामीनकी कृष्णानुग्रहते सर्वदेशमें फिरके बतीस बरष पर्यन्त गान संग्रह किया। सब गुनीजननसे प्रबंध दिवारी संगीतवारे ध्रुपदवारे कलामंत तिसकी चारवानी। गोबरहारा खंडारी डागरी नोहारी तानसेनको बैजुबावरेको गोपालनायकको सूरदासको वाणी। ख्यालवारे कवालतिमका वाणी चार अमीरखुसरोको कबीरको राजामान इंदलको सुलतानसरकी। अथ रागोत्पत्ति—श्रीव्रजवृंदावनमें श्वेतवाराहकल्पविखे श्रीकृष्ण भगवान् स्वयं परब्रह्मरासलीला करी। तामें चार प्रकारकी गोपी वेदकी स्तुतिरूपा ऋषिरूपी देवरूपी और स्वतन्त्र सदासर्वदा व्रजमें नित्यलीलामें गोपी। श्रीकृष्णविराजे व्रजवृन्दावनप्रलयमें नांही ब्रह्मस्थान है। सोले सहस्र एक शो आठ आदिगोपी एतनही श्रीकृष्णरूप धरे। एक एक गोपी श्रीकृष्णप्रति एक एक राग एक एक ताल जुदे जुदे गाए। सोले सहस्र एकशो आठ रागरागिणी प्रगट भए। ताते यह भूलोकमें रागरागिणी प्रसिद्ध भए। तामें भैरवादि छराग छतीस रागिणी रागपुत्र पुत्रवधु सखी सहेला राग उपराग देशी मार्गादि भेदकरके रागमिलाप देशदेशको धुन आदि राग उपरागादि साढ़ेसातसो राग साढ़ेसातसो उपराग। धनादि संग्रह किया बारलाख पचास सहस्र गानप्रबंध ध्रुपद ख्याल विष्णुपदादि परमेश्वरके प्रीत्यर्थ संग्रह संकल्प किया। ताते सब हिन्दुस्थानमें व्रज दिल्ली ग्वालेयर अन्तवेंद जैनगर योधपुर गुजरात मलबार पुना दक्षण हैदराबाद काशी पटना ढाका बंगला वाराभाटी कलकत्तेमें सब बंगलागान सब देशका गान संग्रह करके हजारान रुपैया खरचकर शरीरसे मेहनत करके परमसज्जनके आनंदार्थ। संगीतशास्त्री श्रीकृष्णानन्द व्यासदेव रागसागर गौड़ब्राह्मण रहेणवारे मेवाड़देश उदेपुर देवगढ कोटकेवासी यह पुस्तक सब देशनमें, सब तीर्थनमें सब प्रजानमें सब राजा उमराव और विलायत बादसाहको पठाया, बादसा बहोत प्रसन्न भया नामकेवास्ते पठाया। अमीरनमें पठाया। यह पुस्तकमें कुछ भूलचूक होय ताकी क्षमा करियो सुधार बनाय लइयो। भैरवादि षट्राग त्रिंशतिरागिणी अष्ट अष्ट पुत्र तथा पुत्रवधूसखीसखा सहित ध्यानोदाहरण समय रागमिलाप संस्कृत भाषाटीकासहित संगीतरत्नाकर संगीतदर्पण संगीतदामोदर संगीतसार संगीतमहोदधि संगीतनारायण संगीतसाहित्य सङ्गीतनादपुराण सङ्गीतपारिजात सङ्गीतकौमुदी सङ्गीतचन्द्रिका सङ्गीतमञ्जरी सङ्गीतनारदसंहिता सङ्गीतार्णव सङ्गितभाष्यादि शिवमत भरतमत हनुमत्मत नारदमत ब्रह्ममत विष्णुमत महेशमत पार्वतीमत लक्ष्मीमत हाहाहुहुगांधर्वमत सोमनाथमत कलिनाथमत इन्द्रप्रस्थमत नन्दिकेश्वरमत भैरवनाथमत गणेशमतादि अनेकमत मंगलाचरण भगवद्वाक्य नादमहिमा सरस्वतीवाक्य शरीरचक्रयोगभेद सप्तस्वरोत्पत्ति वर्णकुलदेवता स्वरस्वरूपवर्णन पंक्षीपशुस्वर उचार बाईस श्रुतिविवेक इकईस मूर्छना नामविवेक स्वर-अलंकार बादी विवादी अनुवादीभेद स्वराध्याय उनचास कोटतान प्रस्तार विस्तार पलटा आरोही अवरोही तिन प्रकारसों ओडव खाडव संपूर्ण संकीर्ण काकली द्वादशभेद स्वराध्याय रागाध्याय प्रकीर्णाध्याय प्रबंधाध्याय वाद्या-

ध्याय मृदंगाध्याय पर्णप्रस्तार प्रमेलु ब्रह्मा विष्णु महेश गणेश देवी सूर्यषट्शब्द सङ्गीतबोल देशदेशके संस्कृत-भाषादिगान भैरवादि अष्टप्रहरके रागरागिणीसंयुक्त नित्यनैमित्तिक कीर्त्तन ठाकुरकों जगानेंतें पौढानें पर्यन्त प्रार्थनासहित सेवापदके मंगलके प्रात दरशनके जुगल-स्वरूपके कलेवाके बाललीलाके जमुनाजीके गङ्गाजीके सिङ्गारके ग्वालके राजभोगके बनछाकके उथापनके भ्रवन-ते व्रजवनके संध्या आरतीके वयारुके पोढवेके दीनताके नित्यगान और उत्सव द्वादश महीना होली अठार-हजार झूलन पांचहजार। जन्माष्टमीके छठीके पलनाके ढाढोढाढनके बाललीलाके श्रीराधाष्टमीके वामनद्वादशी-के दानलीलाके सांझीके नवरात्रिके दशहराके धनतेरसके रूपचतुर्दशीके दिवालीके अन्नकूटगोवर्द्धनधर गोवर्द्धन-पूजा इन्द्रमानभङ्गके भाइदुजके गोपाष्टमीके प्रबोधनी एकादशीके गोकुलनाथजी यमुनाजीके चीरहरणके श्री-विठलनाथजीके वसन्तसमयके होली धमारके डोलउत्सवके फूलमण्डलीके रामनवमीके सीताजीके हनुमानजीके आचार्यजीके अक्षयतृतीयाके नृसिंहचतुर्दशीके जल-विहारयात्रा स्नानयात्राके रथयात्राके वर्षाके हिंडोलाके पवित्राके राखीके इत्यादि उत्सवादि गान और ध्रुपदादि द्वादशलक्ष पचीससहस्र गान तिनके गीत सङ्गीत प्रबंध छन्द कविता सवैया धारु धोवा माठा परमाठा जुगलबंध वेवट तिलाना रागसागर चतुरङ्ग षट्रङ्ग पञ्चरङ्ग सप्तरङ्ग अष्टरङ्ग नवरङ्ग दशरङ्ग चौराष्टक निरोष्टक मणि पति बलि विकट उंच नींच प्रथम सार ध्रुवपद विष्णुपद बलदेवपद शिवपद शक्तिपद सूर्यपद गणेशपद भैरवनाथ-पद सब देवतानके सब राजावादशाही ध्रुपद तुक ख्याल टप्पा ठुमरी खेमटा पंचाली सखीसंवाद विरहा कहरवा दादरा सिठनी समधनगारी लोरी जशन सावन कजली झूलना राजा भर्तरीगान गोपीचन्द्रगान अनेक प्रकार दसणा-निलावणी चूर्णिका गुजराति-धवल गरबा गरबो गजल रुबाइ रेखता शयर नानाप्रकारके देश देशभाषाबोल गान हिंदूस्थानिभाषा उरदु व्रज बांस वाड़ा तिरोहती मगही नेपाली निवारी भोट बाराभाटी बंगाला गान पेगु चिनिया ओड़ीया तैलंगी पद्मनाभ-भूमि महाराष्ट्री कोंकणी कर्णाटी काठावाड़ सिंध मारवाड़ी मेवाड़ी ढूंढार हाडोती जेसलमेरी सेखा-वती हरियाणा दिल्लीबोली वैखरीभाषा प्राकृतभाषा सरस्वतीबालभाषा नागभाषा डिंगलपिंगलभाषादि गान, अरबीगान तुरकी इरानी रुम शाम बलख बुखारा खैबर पश्तो फारसी गजल रेखता रुबाई फरद बैंत मिश्रा शयर बहरैताबोल द्वादश अहंग विलायत मकाम द्वादश चौवीस सोवे सनम् गनम् नारेज बाकरेजादि नाना प्रकारके छन्द दोहा सोरठा चौपाई सवैया कवित झूलना त्रिभङ्गी आर्या शिखरिणी शार्दुलविक्रीड़ित त्रोटक वसन्ततिलका मालिनी नागराज नागस्वरूप हरिणीप्लुता जयकरि छन्द महीधरी इन्द्रवज्रा मोतीदास दोधक सावंत रोला भुजङ्गप्रयात गुरुतोमरछन्द घनाक्षरी गद्य-पद्यादि अनेकछन्दमें गीत। इत्यादि तिनसौ साठ ताल। नानाप्रकारके छन्द ताल लय एकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पदी पंचपदी षट्पदी सप्तपदी अष्टपदी नवमपदी दशमपदी नायिकाभेद स्वकीया परकीया सामान्या खण्डि-तादिभेद अलंकारादि गणागण नगण भगण यगण सगण तगणादि अष्टगण शुभाशुभ लीलावती गणितादिभेद व्याकरण न्याय मीमांसा षट्काव्यादि श्लोकप्रस्थान रत्ना-करादि अनेकस्तोत्रस्तवकवचादि श्रीवल्लभाचार्यजी श्री-गुसाईजी कृतनाष्टक गोस्वामिश्रीगिरिधरजीकृत रामानुजजी कृत माधवाचार्यजीकृत नीमावताचार्यजीकृत श्रीहितहरि-वंशजीकृत रूपसनातनगुसांई श्रीकृष्णचैतन्य श्रीशङ्करा-चार्यकृत विल्वमङ्गल पुष्पदन्ताचार्य इत्यादि अनेक मधुर-स्तोत्रादि श्रीसूरदासजी सूरस्वामिजीकृत सूरसागर एतने महाभावनकी वाणी सूरदास सूरश्याम श्रीजयदेवजीकृत नानकजी तानसेन नायक बैजुबावरे नायकगोपाल नायक-घोंधी नायकचिरजु नायकमोर नायक वक्सु नायक-रामदास जगन्नाथ सूरस्वामी परमानन्दस्वामी छित-स्वामी गोविन्दस्वामी चतुर्भुजदास कृष्णदास कुम्भनदास नन्ददास सूरदास मदनमोहन श्रीभटजी गदाधरभटजी गदाधरमिश्र व्यासजी हितआनन्द ध्रुवदास विहार

बिहारव रसिकबिहारी व्रजनिध नागरीदास मीराबाई नामदेव कबीर कमाल जुगलदास जानकीदास माधोदास व्रजजीवनदास करतालीया मोहनदास श्यामदास विष्णुदास कान्हरदास ठंडीराम महानन्द चरणदास सहजीबाई मलूकदास रामजस नृसीमहता नरहरदास भगवानदास कृष्णजीवन लछीराम चतुरविहारी रसिकराय श्रीगुसांई वल्लभजी श्रीगुसांई पुरुसोत्तमजी श्रीगुसांई गोकुलनाथजी सरसरङ्ग श्रीगुसांई व्रजाधीशजी मदनमोहन कल्याण माणिकचन्द वल्लभदास दामोदरदास धीरज माधो दयासखी सांवरीसखी चन्द्रसखी सोनादासी रङ्गीलीसखी सामासखी केवलराम वृन्दावन जीवन आनन्दघन बलरामदास ऊधोदास रङ्गीला प्रीतम ज्ञानदास लछनदास जुगराजदास हरिदास जितउ रामगुलाम नृसिंहदयाल रामसहाय रसिक गोविन्द गोपाल गोपालदास हितदामोदरदाम श्यामसुन्दर श्यामाश्याम इत्यादि, चण्डिदास गोविन्ददास विद्यापति अभेराम नधिराम रामप्रसाद रघुनाथमहाशय नीधु आशुतोष नीलमणि नीलरत्न करुणानिधान मदनमोहन राममोहन शिवचन्द्र कालीमिरजा लोकनाथ रामानन्द इत्यादि अनेक कवीश्वरकृत गिरिधर कविराय भूषण मतिराम पद्माकर देवआलम विद्यापति कमलापति सुवंश कुलपतिमिश्र चन्दकवि पृथुराज राजा कर्ण विक्रम भर्त्तरि राजा विश्वनाथसिंह मानभावनके गानसंग्रह। ध्रुपदमें तानसेन बैजुबावरे गोपालनायकादि विष्णुपद सूरदास सूरश्याम आदि। मुसलमान गवैया इक्कावरस वाकवरस हसुखां हुसेनवक्स साकलि जम्नुमम्नुखां रङ्गवरस तानवरस तानवरङ्ग वाणीविलास हिदायत खुशालखां छजुखां मूरखां रागरसखां कायमखांकृत नीवाजखां दुलेखां उदोतसेन गङ्गासेन जाफरखां पेयारखां वासदखां सादिखां छगेखां इमामखां नामरखां चपल मौज साहुसेन अकतर मानखां खाजेहसन रहीमवक्स इमामवक्स साहवखां मीरोटपेवारि गामु हमदम् नादम् महमदखां नामर अली अमीरखां कविरखां खाजेकुतव मीरअलिसाह गूदर कालम असगरली खां सुलतान् अलीखां हुसेनअलीखां जीवनखां वाकरखां सखनमखन रजवली फजअली हदुहसु मानखां पानखां तानप्रवीण धोंधा फारातुला। अथकलामति चार वाणी प्रथम गुवरहारो नामसेनकी वाणी दुसरे खण्डारी इक्कावरसकी वाणी डागरीवाणी नोहारीवाणी इति कलामति वाणी। अथ कवाली वाणी-कनोरवाणी अमीरखुसरी सुलतानसरकी शेख सलेमी सदारङ्ग अदारङ्ग मनरङ्ग रसरङ्ग कोडीरङ्ग इस्करङ्ग आशकरङ्ग दिलरङ्ग खूबरङ्ग सरसरङ्ग रङ्गरस आनन्दरङ्ग। ध्रुपद हुमाउके अकवरके राजारामके साहजहांके जहांगीरके आलमशाहके औरङ्गजेवके महमदसा अहमदसा सुलतान सलेम इत्यादिकनके नामके ध्रुपद ख्याल टप्पादि प्रकार। इत्यादि बहुत संग्रहीत रसज्ञ गुणज्ञ रोचक महानुभाव ज्ञानी सज्जन विद्वज्जन रसिक-जननके आनन्दार्थ सङ्गीतशास्त्री श्रीकृष्णानन्द-व्यासदेव रागसागर गौड़ब्राह्मण मेवाड़देश उदेपुरवासी श्रीजोईनिवास निज छापामें सङ्गीत-रागकल्पद्रुम छापाए। जाकुं यह पुस्तक लेनेको इच्छा होय सो ठिकाना नगर कलकत्तेमें बड़ेबाजार थानेके नजिक सराफा महाजनोंसों पुछलेवे श्रीकृष्णानन्द व्यासदेव रागसागर पास मिले इस पुस्तकका च्यारखण्ड एक एक खण्डका मोल नवछावर रुपैया २५ च्यार खण्डका जुमले रुपैया १०० अंके एकसो कंपनी निखरचे लगेंगे और वाहार भेजनेमें डाकका महसूल गाहकोंको लगेगा। याका कागजमें छापा जाता है। अगरचे एकठेदेश विदेशमें लिखावे तो हजारोन रुपैया खरच होय नहीं संग्रह होय सकता सो श्रीयुक्त राजा उमराव अमीर जमीदार महाजन सराफ व्यापारी बजारू ग्टहस्थादि जो कोउ लेवे सो दस्तखत करे वा चिठी भेजी तिनके परमभाग्य है।

"सङ्गीतसाहित्यरसानभिज्ञः
ख्यातः पशुः पुच्छविषाणहीनः।
चरत्यसौ किं तृणानभुंक्ते
परं पशूनामुपवासहेतुः॥
नाहं वसामि वैकुण्ठे योगिनां हृदये न च।
मद्भक्ता यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद॥"

शुभमिति चैत्र वदि तिथा रवौ संवत् १८९८, बांगला तारिख ७ चैत्र सन १२४८, अंगरेज सन १८४२ १८मार्च श्रीरस्तु कल्याणमस्तु।

श्रीलक्ष्मीनारायणाय नमः। अथ श्रीकृष्णानन्द व्यास-देव रागसागरोद्भव सङ्गीत-रागकल्पद्रुम नाम ग्रन्थकी पुस्तक प्रीतिपूर्व्वक अङ्गीकार कीया, सर्व देशानमें पठाया तिन राजा, बादशाह, अमीर, उमराव, महाजन, सज्जन विद्वज्जन, गुणीजन तिनके नाम हस्ताक्षरकारिणां नामानि। श्री५ महाराजाधिराजराजेश्वर हिन्दुपति पातसाह श्रीराणाजी स्वरूपसिंहजी, इंलण्डीय सर्व-देशाधिपति श्रीमती राजराजेश्वरी सर्वसामन्त-चक्र-चूड़ामणि कुयन् विकटोरीया बादशाह, दिल्लीदेशाधि-पति शाहनशाह बहादुर शाहसानी, अरबदेशाधिपति शाहनसाह शैयद नावाबसानो वा मोल्लानी वा नवीना शैयद विन सुलतानी, फरासीस देशाधिपति साहनसाह, रुशयादेशाधिपति साहनसाह, पुन सतारेके श्रीमहाराजा-धिराज साहु राजा पुस्तकमेकं, ईरानदेशाधिपति महम्मद शाहसुलतान, लाहोर-पञ्जाब-काश्मीर मूलतानदेशा-धिपति श्री५ महाराजाधिराजराजेन्द्र पातसाह श्रीरण-जत सिंह बहादुर, श्री५ महाराजाधिराज राजराजेन्द्र खड़गसिंह बहादुर, श्री५ महाराजाधिराज राजराजेन्द्र नवनिहाल सिंह बहादुर, श्री५ महाराजाधिराज शेर-सिंह बहादुर, श्री५ महाराजाधिराज लाहोर-पञ्जाब-कश्मीर-मूलतान-देशाधिपति पातशाह दिलाप सिंह बहादुर नृपवरस्यैकं पुस्तकं। चीनीहा देशाधिपति शाहनसाह पातसाह, रंगुन-पेगु-ब्रह्मा देशाधिपति साहनसाह पातसाह, इरानदेशाधिपति शाह, बलख बुखाराधिपति शाह, दक्षिणाधिपति श्री५ महाराजा-धिराज राजराजेश्वर राजा श्रीमन्त बाजिराव पेशवा बहादुरस्यैकं पुस्तकं। दक्षिणाधिपति श्री५ महाराजा-धिराज राजराजेश्वर अमृत राव पेशवा बहादुर तस्य पुत्र श्री५ महाराजाधिराज श्रीमन्तविनायक राव पेशवा बहा-दुरस्यैकं पुस्तकं। श्री५ जहांपना राजराजेन्द्र सुवैयाजी हैद्राबादाधिपति श्रीजहांपना, मगसुदाबाद देशाधिपति जहांपना श्रीमन्त जहांपना शुलफकार, फरक्काबाद देशाधिपति जहांपना, नेपालनेवार देशाधिपति स्वस्ति श्री५ गिरिराजचूड़ामणि नरनारायणेत्यादि विविध-विरुदावली विराजमान मानोन्नत श्री५, श्रीमन्महाराजा-धिराज राजराजेन्द्र विक्रमसाह बहादुर समसेरजङ्ग देवानां सदा समविजयीनां नृपवरेषु—मारवाड़देशाधि-पति श्री५ महाराजाधिराज राजराजेन्द्र राजा तखत सिंह बहादुर नृपवरस्यैकं पुस्तकं। जयनगर देशाधि-पति श्री५ महाराजाधिराज राजराजेश्वर श्री५ राजा रघुजी भोंशले सेनापति सुवे बहादुरस्यैकं पुस्तकं। कर्णाटदेशाधिपति श्रीपद्मनाभ भूमिपति श्री५ महाराजा-धिराज राजराजेश्वर श्रीरामराजा सिंह बहादुरस्यैकं पुस्तकं। नागपुर-देशाधिपति श्री५ महाराजाधिराज राजराजेश्वर राजा सवाई राजसिंह बहादुर नृपवर ग्रन्थमेकं। वृन्दावनपुरी बुंदी देशाधिपति श्री५ महा-राजाधिराज राजेन्द्र राजा रामसिंह बहादुरस्यैकं पुस्तकं। कोटादेशाधिपति श्री५ महाराजाधिराज राजा राव राजा रामसिंह बहादुरस्यैकं पुस्तकं। बुंदेल-खण्ड बघेलखण्ड देशाधिपति श्री५ महाराजाधिराज राजेन्द्र राजा विश्वनाथ देवसिंह बहादुर तिलकधारी नृपवरस्यैकं पुस्तकं। बरोदा-गुजरात-देशाधिपति श्री५ महाराजाधिराज राजेन्द्र श्रीमन्त सोयाजी गायक-वाड़ सेनापति सुवे बहादुरस्यैकं पुस्तकं। सुदामा-पुरी पुरबन्दर द्वारका देशाधिपति श्री५ महाराजाधिराज भोजराज सिंह बहादुरस्यैकं पुस्तकं। रामनगर काश्यधिपति महाराजाधिराज राजेश्वर उदितनारा-यण सिंह बहादुर। श्री५ महाराजाधिराज राजराजेन्द्र राजा ईश्वरीप्रसादनारायणस्यैकं पुस्तकं। श्री५ महा-राजाधिराज राजा देवकीनंदनबहादुर। गुजरात-भाव-नगर देशाधिपति श्रीमहाराजाधिराज विजयसिंह बहा-दुरस्यैकं पुस्तकं। गुजरात-नयानगर देशाधिपति श्री५ महाराजाधिराज राज जामशाह बहादुरस्यैकं पुस्तकं। कच्छभुजदेशाधिपति श्री५ महाराजाधिराज राजा देशर जो बहादुरस्यैकं पुस्तकं। जैपुर-प्रधान महाराज

रावल सिंहजी एकं पुस्तकं। श्री५ राउ लछमनसिंहजी पुस्तकमेकं। भरतपुर देशाधिपति श्रीमहाराजाधिराज राजा बलवन्त सिंह बहादुरस्यैकं पुस्तकं। भागदेमे श्री५ महाराजाधिराज चेतसिंह बहादुरस्य पुत्र श्री५ महाराजाधिराज बलवन्तसिंह बहादुरस्यैकं पुस्तकं। मथुराजी मध्ये श्रीद्वारकाधीशजी पुस्तकस्यैकं। श्री५ महाराज सेट मनोराम, लक्ष्मीचन्द्र, राधाकृष्णस्यैकं पुस्तकं। अएग्रामाधिपति श्रीमहाराज पीतमसिंह बहादुरस्यैकं पुस्तकं। श्रीमैनपुरीदेशाधिपति श्रीमहाराजाधिराज गङ्गासिंह बहादुरस्यैकं पुस्तकं। श्री५ श्रीमहाराज जालमसिंह जी। श्री५ साह विहारीलाल, गोविंदलालजी रघुवरदयालजीस्यकं पुस्तकं। श्री५ साह रामलाल बद्रीनाथजी एकं पुस्तकं। भोजपुर उमराव देशाधिपति श्रीमहाराजाधिराज राजा लाल साह बहादुर नृपवरस्यैकं पुस्तकं। बकसरदेशाधिपति श्रीमहाराजाधिराज उदितप्रकाश सिंह बहादुरस्यैकं पुस्तकं। पगयादेशाधिपति श्रीमहाराजाधिराज क्षितनारायण सिंह बहादुरस्यैकं पुस्तकं। श्री५ महाराजाधिराज राजा टाडरनारायण सिंह बहादुरस्यैकं पुस्तकं। बेतीयादेशाधिपति श्री५ महाराजाधिराज राजा नवलकिशोर सिंह बहादुरस्यैकं पुस्तकं। छोटेनागपुरके श्री५ महाराजाधिराज जगन्नाथ सिंह बहादुरस्यैकं पुस्तकं। हजारीबागके श्री५ महाराजाधिराज राजा शम्भुनाथ सिंह बहादुरस्यैकं पुस्तकं। श्री५ महाराजाधिराज अमरसिंह बहादुरस्यैकं पुस्तकं। पुरणीयादेशाधिपति श्री५ महाराजाधिराज राजा विजयसिंह बहादुरस्यैकं पुस्तकं। हतुवाके श्री५ महाराजाधिराज राजा छत्रधारी सिंह बहादुरस्यैकं पुस्तकं। दरभङ्गातिरोहतदेशाधिपति श्री५ महाराजाधिराज राजा रुद्रसिंह बहादुरस्यैकं पुस्तकं। श्री५ महाराजाधिराज राजा वासुदेवसिंह बहादुरस्यैकं पुस्तकं। मधुवनीके श्री५ महाराजाधिराज कीर्त्तिसिंहस्यैकं पुस्तकं। सकरी फतेपुरके श्री५ महाराज रामप्रतापसिंह बहादुरस्यैकं पुस्तकं। पुरणीयाके श्री५ महाराजाधिराज राजेन्द्रनारायण, श्री५ महेन्द्रनारायणसिंह बहादुरस्यैकं पुस्तकं। पुरणीयाके श्री५ महाराजा विद्यानन्द सिंहस्यैकं पुस्तकं। पुरणीयाके श्री५ महाराज रुद्रानन्द पुस्तकमेकं। फतेपुरके श्रीमहाराज हमीर सिंह पुस्तकमेकं, महाराज रामनारायण सिंह पुस्तकमेकं, महाराज रूपनारायण पुस्तकमेकं। मुजफरपुरके साह मनोहर दासजी पुस्तकमेकं। महाराज सधाके भैरुसिंहजी पुस्तकमेकं। काशीके महाराज अवसान सिंह पुस्तकमेकं। राजधानीके महाराजाधिराज राजा ग्रन्थमेकं। बाबू जगन्नाथ दास, बाबू बलराम दासजी पुस्तकमेकं। बाबू गोवर्द्धन दासजी पुस्तकमेकं। साह गोपालदास, मनोहरदास, मुकुन्दलाल दास, हनुमानदास पुस्तकमेकं। बाबू मुकुन्दलाल जानकीदास पुस्तकमेकं। बाबू रामचन्द्र जानकीदास, दामोदरदास पुस्तकमेकं। बाबू ब्रजवल्लभ दास, गोकुलदास, हरिदास, मथुरादास पुस्तकमेकं। साह विहारीलाल रघुवरदयाल पुस्तकमेकं। बाबू रामदयालजी पुस्तकमेकं। बाबू शिवचरणलाल, शिवसहायलालजी पुस्तकमेकं। बाबू ब्रजभूषण दास पुस्तकमेकं। बाबू द्वारकादास मधुवनदास पुस्तकमेकं। बाबू रामसेवक मिश्र, रघुनन्दन मिश्र पुस्तकमेकं। बाबू हरिदास, हरेकृष्णदास पुस्तकमेकं। बाबू नारायणप्रसाद वल्लभदास, जगन्नाथ दासजी पुस्तकमेकं। बाबू मोतीचंद गुजराती पुस्तकमेकं। कलबाबू लालचंद जी पुस्तकमेकं। बाबू परसराम अयोध्याप्रसाद पुस्तकमेकं। बाबू सीताराम, तुलसीराम पुस्तकमेकं। बाबू पूरणमल कृष्णदासजी पुस्तकमेकं। साह मोहनलाल ठाकुर पुस्तकमेकं। बाबू नेणसी पद्मसी पुस्तकमेकं। बाबू प्रतापचंद बहादुरमल पुस्तकमेकं। बाबू रूपचंद स्वरूपचंद पुस्तकमेकं। बाबू जोरावरमल दानमल पुस्तकमेकं। बाबू माणकचंद केशरीचंद पुस्तकमेकं। बाबू देवचंद, पूर्णचंद पुस्तकमेकं। बाबू देवचंद सर्वसुखस्यैकं ग्रन्थं। बाबू पूरणचंद लक्ष्मीचंद ग्रन्थमेकं। बाबू पूरणचंद मनामाल ग्रन्थमेकं। बाबू सूरतराम रायभान धनरूपा बाघमल। बाबू शिवजीराम

गौर्षाराम हरदयाल शिवप्रसाद रामप्रसाद। बाबू हरगोविंद राय गुलाबराय। बाबू देवचंद कपूरचंद। बाबू सीताराम देवनदास। बाबू बालजी रतनजी कल्याणजी प्रत्येकं। बाबू माबजी धनजी प्रत्येकं। बाबू रणछोड़दास मनजी प्रत्येकं। बाबू नानजी लीकरम प्रत्येकं। बाबू मूलचंद प्रेमजी प्रत्येकं। बाबू भूटाकच्छा जी प्रत्येकं। बाबू गोकुलदास जी प्रत्येकं। बाबू दामाजी प्रत्येकं। बाबू रुस्तमजी प्रत्येकं। बाबू शिवरामदास मालसिंह। बाबू गोवर्द्धनदास धनसुन्दरदास। बाबू नंदराम मेली गंगादास लछमनदासजी प्रत्येकं। बाबू फकीरचंद गंभीरचंद प्रत्येकं। कृष्णलाल बैजनाथ। बाबू सीताराम लछमनदास मनदास परमसुख। सदासुख युगलकिशोर। बाबू राजरूप धनसुन्दरदास। बाबू फकीरचंद गंभीरचंद। मेवाड़देशके सोले उमराव। बूंदीके द्वादशउमराव। नवकोटी मारवाड़के उमराव। हरियाना शेखावटीके उमराव। लाहोर श्रीचरनर पञ्जाबके उमराव। जांबू जंग शायालाके उमराव। काश्मीरके उमराव। मुलतानके उमराव। ज्वालामुखी पटीयालादि उमराव। कान्हारके उमराव। श्रीनगर वद्रीनाथजीके उमराव। उनगरके उमराव। अलवरादि उमराव। वृन्दावन मथुरा गोकुलके गोस्वामी उमराव। आगरा ग्वालियरके उमराव। दिल्ली सरधना मेरट पानीपत जयपुरके उमराव। विटोर कानपुर अन्तरवेदके उमराव। लखनौ वासपाड़ा अयोध्याके उमाडाके उमराव। गोरखपुर आजमगढ़ जौनपुरादि उमराव। गाजीपुर कोपामोह डुमरावादि उमराव। काशी मिरजापुर प्रयागादि उमराव। बुंदेलखण्ड बघेलखण्ड जबलपुर चरखेरी ब्यतोया झांसि उमराव। छपरा हतुवा देहतादि उमराव। तिराहुत दरभङ्गा जनकपुरादि उमराव। वेतीया नेपाल पुरणीयादि उमराव। घोड़ाघाट रङ्गपुरादि उमराव। ढाका मुक्तागाछा चट्टग्राम बाल बांकुड़ादि उमराव। मणिपुर भाट कुकीयादि उमराव। रङ्गनके पेगु ब्रह्मदेशके उमराव। चीन महाचीन सिंगापुरादि उमराव। वाराभाटी वंगला मगसुदेबाद कलकत्ता मेदिनीपुरादि उमराव। उड़िष्या बालेश्वर बन्दर कटक जगन्नाथपुरी आदि उमराव। पना नृसिंह मछलीबंदर शिवकांची विष्णुकांची मदरबाजादि उमराव। रामेश्वर देशाधिपति उमराव। कर्णाटदेश पद्मनाभभूमादि उमराव। कोंकणदेश मलयावारादि उमराव। हैद्राबाद सत्यासो बिदूर गंगाखेड अमरावती आदि उमराव। औरङ्गाबाद पुन-सतारा महाराष्ट्रदेशादि उमराव। मुम्बई सूरत बरोदरा अमदाबाद भावनगर नयानगर सुदामापुरी द्वारकानाथ गुजरात देशादि उमराव। काठवाड़ कच्छभुज मजारादि उमराव। सिन्ध सिकारपुर हद्राबाद काबल-गंधारादि उमराव। द्वादश टोपी इंग्लंड फरासी रुसीया अरब रुम शाम इरान बलख लुषा मक्का मदीना बसारादि उमराव। अथ बंगला देशके ग्राहककारी। ५ राजा महाराजाधिराज शिरोशचंद बहादुर। ५ महाराजाधिराज श्रीशचंद बहादुर। ५ महाराजाधिराज महताबचंद बहादुर। ५ महाराजाधिराज बनवारीलाल बहादुर। ५ महाराजाधिराज दुर्गानाथ बहादुर। महाराज आनन्दनाथ बहादुर। बाबू द्वारकानाथ ठाकुर महाशय। बाबू देवेन्द्रनाथ ठाकुर महाशय। बाबू गिरीन्द्रनाथ ठाकुर महाशय। बाबू रमानाथ ठाकुर महाशय। बाबू प्रसन्नकुमार ठाकुर ग्रंथमेकं। बाबू गोपाललाल ठाकुर १। बाबू ललितमोहन ठाकुर। बाबू चन्द्रकुमार ठाकुर। बाबू नीलरतन हालदार। बाबू हरिश्चन्द्र लाहिड़ी १। ५ महाराजाधिराज राधाकान्त देव बहादुर। कुमार महेन्द्रनारायण १। बाबू अमृतलाल मित्र। महाराजाधिराज सीतानाथ बहादुर १। बाबू आशुतोष देव १। ५ महाराजाधिराज कालीकृष्ण बहादुर १।५ महाराजाधिराज देवेन्द्रकृष्ण बहादुर १। बाबू जन्मेजय मित्र १।

रागकल्पद्रुमः

द्वितीयखण्ड—सूचीपत्र

अथ कुञ्जामङ्गल

नित्यकीर्तनका परिशिष्ट

रागकल्पद्रुमः

द्वितीयः काण्डः

श्रीकृष्णाय नमः ॥

अथ खम्बावती-ध्यानम् ।

(संगीतदर्पण २।५४).

खम्बावती स्यात् सुखदा रसज्ञा
सौन्दर्य्य-लावण्य-विभूषिताङ्गी ।
गानप्रिया कोकिलनादतुल्या
प्रियम्बदा कौशिक-रागिणीयम् ॥

खम्बावती सरगम—ताल आड

ध ध नि नि धा नि सा सा नि ध प म म म म ध म
ध नि सा सा नि ध प म ग रे सा सा रे ग म प ध
नि सा सा नि ध प म ग रे सा ।
धा नि नि ध नि नि ध नि सा ग रे सा म ग रे सा
सा नि ध प म ग रे सा सा नि सा नि ध प ध प
म ग रे सा म ग रे सा ॥
प्रथम सप्त सुर ब्रह्मनाद उच्चारो आहद अनहद तह
लोक चराचर सुर नर मुनि गुनी गन्धर्व्व आद नाद ।
सा नि नि सा ध नि सा ग रे सा म ग रे सा सा नि सा
नि ध नि ध नि ध प ध प ध प म प म प म ग
म ग म ग रे ग रे ग रे सा सा रे ग म प ध नि सा
सा नि ध प म ग रे सा ॥

खम्बावती—चौताला

एरी तू अङ्ग अङ्ग रङ्ग रानी अतही सयानी री तू
पिय मन मानी री तू ।
सोलह कला समानो बोलत अमृत बानी तेरो मुख देखें
चन्द जोत हू लजानो री तू ॥
कटि केहर कदली जङ्घा नासका पर कीर वारों
श्रीफल उरोजनको छवि आनी री तू ।
तानसेन कहे प्रभु दोज चिरञ्जीवी रहो तेरो नेह रहे
जालों गङ्ग जमुना पानी री तू ॥

२

जोबनके जोर तोर कैसे समझाय राखूं मेरो
कह्यो मान प्यारो आज तेरो दावरी ।
तन मन धन नोछावर करहूं बीत गई रैन
तासों छूट गयो चावरी ॥
लाल मनावत तू नहीं मानत उठरी गंवार नार
घने समझावरी ।
तानसेन कहे प्रभु से तजो मान ह्यांतसे गंवांय
आल फेर पछतावरी ॥

३

बंशी धुन सुन मझार बाजत श्रीवृन्दावन
रङ्ग घुमड़ रह्यो सघन गरजत बादर विमान ।

रहस सरस बरषत गोपी जिम दामन चमकत
नैना रतनारे पर भौंह सोहै धनुष बान ॥
चंवर चार चोकुन कंचन बसन बिराजत है
प्यारी और प्यारे दोउ छूटे छबकी छटान।
कुञ्जन श्रीविहारी जुगल विहरत मुख मूंदत खोलत
जैसे बरषा रितमें निकसत औ छिपत भान ॥

४

मन्दिर मणि दीपक काया मणि जीव
रजनी मणि चन्द दिन मणि है जु भान।
फूल मणि पङ्कज वृक्ष मणि कल्पवृक्ष
विद्या मणि भोज विक्रम जनन मणि जान ॥
बेदन मणि सामबेद राजन मणि रामराज
आनन्द मणि सुखनिधान।
सरिता मणि गङ्गा बीर मणि हनूमान
गुणियन मणि तानसेन गुरुन मणि ज्ञान ॥

५

सूनो भवन उन बिन कैसे रहो जाय निपट कारी
बरषा रित आई अब बिरहन पर मदन दूनो।
रजनी अंधियारी भारी कारी कारी कजरारी
झिल्ली झनक भारी दादुर मोर सोर सर समान जनो॥
जुगनू जमाति जोरे चपला चमके तैसे
पवन झकझोर देत होत दुख दूनो।
चिन्तामन ब्रजचन्द नन्दनन्दन आनन्दकन्द
कैधों मेरे नयन ए चकोर होंहि निरखि मुखचन्द पूनो॥

६

आवत देखे हे री माई सुन्दर मोहनलाल।
जैसो बनो मोर कैसरो पाग तैसिय बनो उर माल ॥

७

अरन दल मलनको सांचो अरदल प्रबल वर भूम पर।
ऐसे छत्रपति भुप्रपति हलनको
तोरे गढ़ सब और घर घर ॥

८

सङ्गत अनाघात देशी मारग लिये हो ए राग।
जय जय गुनी तें तें कठन जानत है यह खिलौना नाग॥

सा ग म प ध नि सा सा नि ध प म ग म प
नि ध नि प म ग म प ध म ग रे सा।
म प ध नि नि सा नि सा ग रे सा निसा नि
ध प सा नि ध प म ग रे सा ॥

१०

रङ्ग लाल रूप लाल अधर अधिक लाल
द्रगनके डोरे लाल कोरे लाल झलके।
कर लाल चुरी लाल सीसफूल झूमे लाल
एतो लालो बिच प्यारो लाल पलके ॥
असन बसन लाल दसन चमक लाल
लाल हो ललना पगन परत लाल सुगनके।
माला लाल दुलरी को रेशम लाल
सदारङ्ग प्यारे लाल लाल होमें ललके ॥

११

समझ समझ आली प्राण जात प्यारे मोहन बिन।
बहोर न यह रङ्ग बहोर न यह रूप
बहोर न रहे आली यह दिन ॥
अञ्जुरन जल घटत छिन छिन तेरे री
मान बढ़े चोगन।
तानसेनके प्रभु तुम बहु नायक
मान न कीने आली छिन छिन ॥

१२

लाल अब कब करोगे मेरे आंगनमें तुम फेरा।
तर गईं अंखियां जगमग जोहत रैन
गिनत नित होत सवेरा ॥
सूनो भवन मोहे रंच न भावै
आन सतावै बिरह ताप ने घेरा।
नन्दलालके लाडले आज मया कीजे सवेरा ॥

१३

कर पछताय आली री मान कर पछताय रहो।
हमसों अवध बद अनत बिरम रहे
जीतो भई सहे लहो ॥

१४

ध ध नि ध नि सा सा नि ध प म ग म म ध म ध नि
सा सा नि ध प म ग रे सा सा नि ध प म ग रे सा रे सा।
नि नि ध म नि ध नि सा सा नि ध प म ग रे सा
म ग रे सा सा नि ध प म ग रे सा सा नि ध प म
ग रे सा रे सा ॥
प्रथम तार सुर ओप विद्या किया दोउ बिन भो
अम्बर दोउ एक रस बन काम भयो।
सा नि नि सा नि नि ध सा सा नि सा सा नि ध प ध प
म ग रे सा सा नि सा नि ध प म ग रे सा ॥

१५

आज तो सखी री देखे रामचन्द्र छत्रधारी
गजकी सवारी किए चले जात बाटमें।
केते असवार सोहे केते सोहे बरकनदाजे
केते नकीब बोले आनन्दके ठाटमें ॥

१६

झीनो झंगलो बीच झीनो अङ्ग झलकत
झुमरि झुमरि झकि ज्यों ज्यों झूले पलना।
घुंघरू घुमत बने घुंघराके घोर घने
घुंघुरारे घोर मानो घनी बार चलना ॥
आलम रसाल जुग लोचन विशाल लोल
ऐसे नन्दलाल विनु देखे क्योंहु कलना।
फेरि फेरि फेरि करि गोद लै लै घेरि घेरि
टेरि टेरि गावे गुण गोकुलकी ललना ॥

खम्बावती ख्याल—तिताला।

अब कोई जाइयो रे मोता सुरजनुवा मोरे के
मइकों वेग खबरियां लइयो याह सन्देशवा
उन सन कहियो।
वेग खबर ले आव पतिंगवा उन विन मइ कों
विरह सतावे बार बार नित जइयो ॥

२

तू मेरे डेरे आइयो रे सांवरा सलोना प्यारे
वेग दरस मोहो देखाइयो।
विन देखे मोहे चैन न आवे तनको तपन बुझाइयो ॥
घरी पल छिन विन देखे मोहे कछु न सुहावे
वंशी तान सुनाइयो।
कृष्णानन्द आनन्द करो उर सुख सम्पत
देहो मन चाइयो ॥

३

आगाने पधारो जो महाराज ओ जो म्हांरा राज बेमाने
पधारो जो महाराज।
म्हें तो थांरो दासो वारो थें म्हांरा सायबां थांसे
अटक्यो छे म्हांरो काज ॥

४

कोठे रित मानी महाराज कोठे साइबां
रैन विहानी म्हांरा राज।
लटपटी पागके अटपट पेचां
चाल चले छे मतवारी म्हांरा राज ॥

५

राज हो लोभी आवणा थें म्हांरा सिरताज राज।
फूलांदो सेज वारो उमगसे बिछावां थां सां अटकों छे
म्हांरो काज ॥

६

जाए दासो जवा दे मारुड़ासे केज्यों मैं बो आवां छां।
मैं तो थांरो दासो वारो थें म्हांरा साइबां इतनो अरज
म्हांको मानां छां ॥

७

सुखसें रहियो मेरो जान हरियाले बने।
सक्कर बाटूवारो पोर मनाऊं तान
मौलादो अमान हरि० ॥

८

प्यारे विन जो मेरो तरसे कारो रैन डरावनो लागे
धरकत मोरो छतियां।
नहीं आयो मेरो मदको मातो कैसे कटे दिन रतियां ॥

९

अमलांरो मातो आयो छे जो लाडो थांरे वारने।
रैण चौमासो मांझली रात
झोका खातो आयो थांरे कारने ॥

१०

महलां पधारो म्हांरो राज राग सूनें छे हो खम्बाची।
थें अदारङ्ग अरज करे छे मतवारो राज अरजे सांची॥

११

बीरा नागरवेल री अपने बालमजूके कारने कहो
पान जेहो पातलारे कहा के सूहे जेहा रङ्ग।
कंदल जेहो कहो जङ्ग है भुक भुक लागे अङ्ग॥

१२

नैनां दी बरछी लाई वे आख्या सुन तो भला तेज
नजरांवाला।
सान धरी काजर दोउ मग दिल नाल वे
मितम किया तैं तो यार सिपाई वे०॥

१३

नैणांदी मांग चलाई वे हो जटी नैणांदी मांग चलाई।
सांग धरी काजर दी उमंगसे इश्कदी लाग लगाई॥

१४

काई गुनडा ममभ्रामो म्हांरो राज।
बालो रङ्ग यूं हो करो छे सुनियो रो म्हांरो एरो सखो।

१५

जादूगर वे जादूकी जाने मेंड़े नैन आप हो सेहर दे।
एक आन विच उमंग दिल मियांणनू मायल कर दे॥

१६

म्हेंको जाणां नैणांदी तकसीर भला जेव
रांझणनू मानू मायल कीता।
उमंग दिलदी जाण दे नाहीं लोकां आंक दे फिर दे
कमली हुइयाहोर भला०॥

१७

मांनू बूहे खड़ा भिड़के दा वे दरदो वे परवाहियां दे
नाल रब ना महे जो मैं सहंदा।
राति देहा उमंग दिल डरदा रहंदा आह
फकीरांदो क्यों लेदां॥

१८

काई रूस मारों बतलावो जो आवे राजीन्द्र मारू।
जभो जभो थांरो बातड़ीपे भो सायबां चञ्चल
सेभड़िए रङ्ग लावोजी राजीन्द्र मारू॥

१९

आवें सोणा मांनू छड़के न जा मैंडा नेहा लगा।
छिकतो गलां साड़ो माण लेवो चञ्चल
तैंड़े कारण भलो जगणत जा॥

२०

हो रबा वे मैं तो राजी जो तैंड़ो मरजी।
अरज गरज तुसो माल मुलक नहीं
करदो वरल पिया तैंडे महर नजरदी॥

२१

कस कर भौंहैं कमान प्रेमके वान चलावत हंसके।
चञ्चल चपल दृगन मोहे सेन चलावे बतियां कसके॥

२२

याद मांड़ी क्यों भुलाई वे औरांदे नाल वहाना तू
सुण तों नैणावाले मियां।
जो कुछ तेरे दिलमें खूब समझे तैं दाद मैंने
भर पाई वे०॥

२३

तुज विन यार मेंड़ा जो तरफे हो जों मछलो विन नीर।
बबरू आधीन हुण तैं दड़ा लगदे विरहदे तीर॥

२४

या जटीमें थो क्यों रूठीनो तकसीर साड़ो की दीठानी।
नाहकदो बदनामी भोरो सोणि दुनियांदो सबसो ठानो॥

२५

एक गलांदे नाल पियारा मैं सभी गलां गिरते झेलियां।
जो तान इश्कदी वहाणा उमंग नाल वे मियां रब
करेगा हंड़ो सब भलियां वे मैं केहो बदनामां
गिरते०॥

२६

दम ब दम जोर जफा सहदा तानू की नफा वे।
दुतांदा वेला दुश्मन पावे मग दिल और महबूब
बेवफा वे॥

२७

हुणतो वसे खेड़े दिलवर मांड़ डा माड़े नेड़े।
विछोहेदो रातो न करो रब सांइयां भांदे
उमंग दिलदे भेड़े भेड़े॥

२८

आयानी मैंनू मार्की बे माते माते नैण बेखावणनू।
मेरी उसदी प्रीत लगी गोरी मियां
फकीर रब डाढ़ेदा पंजतन दा होवी साया ॥

२९

झमके माते नैण ढोलनदी पलकां लाया नेह वो।
तेज निजारे नाल जींद खस लीती
गुजियां कर कर सैण ढो० ॥

३०

नाहक जीन्द क्यों सतामो वो बेदरदां हथ बीच की
तैंडे आमी।
कबी तो आन मिलो चश्चल साड़े नाल
हुण तैंडा गम खामो ॥

३१

ए हो मैं की जाणि नैणां दा तक्सीर बे।
घायल कीतां असी लड़ फिरजांदा
गोरी दिल लांदा तीर बे ॥

३२

क्यों झुक झुक विरहदे जानी यार मैं तो
मर चुकियां तैंडा गम खांदी खांदी।
गोरी दे मानूं टपेदी तांन भांदी आंदी जांदी ॥

३३

वसदा बे यार मैंड़ा ऊंचे बेड़े मानू सांवलियां दा डेरा।
ना कछु तेरा गोरी ना कछु मेरा की दमदा उलझेरा ॥

३४

तानू तो कदर दा न जान जिन्द दी तो एमें आन।
रब कीता गुलजार हुणदा महबूब बे
उमंग दिलदे सुन सुन टपेदी तान ॥

३५

नैन कर तैंडे चोरियां में लखियां जानी यार भला।
हुमकदी तैंडे वेडे उमंगनू मेरा मियां
एक तो सोरी दूजे शिरते जोरियां जा० ॥

३६

आज इथे रहणा बे मियां आज इथे रहणा।
आप की दिल मिला नहीं मिलदे जांदे
गोरी फकीरांदी मान सदा मियां रहजांदे
इथे होंदे माते आ० ॥

३७

मोही बे मोही यार मैं तो मोही बे भला मोही बे
सानू अंखी मारदा।
मुख भालन तैंडा मानू काम न होया
गोरी तूं तो ठग बाजारदा ॥

३८

मुख बेखलामी बे मियां घणे दिन बीते।
दरदनू नित ध्यान तूंडा साड़ा बे आपो मिल जावे
सानू हां बे मुख बे ॥

३९

हमकों तो याही गलां तेरी प्यारी बे मियां।
रमझांदे नाल सानू मायल कीता मुखडा तैंडा सब
जगन भांदा असी अदापे तेरी वारी वारी बे० ॥

४०

जटो पनियां भरन न देन रमण रम
तेंडी कलाई दुखेनी।
घड़ा घड़ूला भरन चली शोक रङ्ग दिलड़ो बाड़ो
होदां जिन्दडा लटो प० ॥

४१

लाड़ला सेहरा वो रङ्ग लगामा।
गूंध ला री मालन फूलां दा सेहरा
अची बनो सें लागा नेहरा वो०।

४२

राज सुण लीजो म्हारा हेला नन्दजी रा
हो जी अलवेला।
घणे दिनांमें आएओ जो उभा तो रहो हो जी
थें तो बांको रस छैला ॥
नींद न आवे मण अत अकुलावे मदन सतावे
मैं हां जी अकेला।
ब्रजनिध निपट नवेलाजी रसिया जावा न देस्यां
थांने राखोंजी भेला ॥

४३

मैंनू फन्द क्यों गया वे इश्कदा जाल मरापा मुखड़के
न लीती मेरी खबरां।
मारा किश्ती:तनमोर नफरदी अजब मङ्ग दिल
पाया वे॥

४४

तैंनू छुमनंदा झमका वेखला जा तैंनू छमनदी
कसम माहिड़ा।
तन मन अन्दर भाय इश्कदा माला चमका चमका।
झमक वेखला जा छुमनंदा॥

४५

घोलमें जांदियां लाखां परिया तैंड़े परांदे मुखड़ेदा
बहोन यांपर मार मरियां।
उरियां न सकदी दूमन केखण नू पर पर पर
छांपे परा बांध खरियां॥

४६

कांई कर सै मतवारां राज सदारङ्ग कांई करसे
रनियो भोगी हो मखवारां।
गरबां चाक प दिल जो दस्मन गर दस्त आयद
वमादा गाफिलिम् शारमस्त मा आयद॥

४७

मैं तो भूलियां जानो यार वे सखियां में तेरियां मियां।
जो तुं करम करो रब दाव्या कोमो वहाने तूं
मिलियां जनियां॥

४८

सोणा मह्बूबांदो गलियां लगदियां तेरियां
मियां वे सोणो०।
केखणनू सब जटियां चलियां मिलियां रलियां
गलियां घुलियां भलियां मियां सोणो०॥

४९

कैसी बजाई बंशी कान्ह मोह लिया मन मोरा रे।
तनक भनक सुन मुरलीकी धुन
निकस जाय प्रान मोरा रे॥

५०

जालम तेरियां वे मैं तो तेरियां अन्दर नो जानो
तुसो मेरियां।
नाजक यार दिलवर दे वर दे रहंदे बक्स गुणा बन्दी
चेरियां मैं तो०॥

५१

सोणा तूं तो मेड़े नाल नाहीं बोलदा
असी केहोनक्सोर पाई है असाड़ो गाढ़ो
दिलदो गंडो नहीं खोलदा।
विश्नुदास दो गुणा माफकर लैंडडे चरण
मेंड़ा मन डोलदा॥

५२

तेरो चितवनने मुझे मारा रे एक नजर
नाल आसक दिल।
पीत करी तो निभाइन जानो आपने आसक
शोकरङ्गदो कोरे घाट मोहिकूं उतारा रे॥

५३

हां जो हो जो हो केसरिया म्हांरा मारूजी
ए मैं ना बोलांगो थांनो टहल करो रहो
सोतनियाके रूड़े जो।
अङ्गना बहारूं सेज संवारूं फुलदन सेज बनाऊं
शोकरङ्ग थांरे सङ्ग मैं तो पीऊं छू दारूड़ो॥

५४

पोहरिये म्हांरे रूड़ो छे नवाड़ांगो मेल।
घर कांका माथोड़ा ले सङ्ग वेगा आज्यो जो छैल॥

५५

कागद आयो है पन्ना मारूजीरो आज।
बिचड़ो बनावड़ो चढ़िया जा बिचवाड़ांरो लाज॥

५६

थें तो जीवो म्हांरा राज जब लग
गङ्गा जमुना जलपानी।
राज करंता म्हें सुण्या म्हांरा राज ओ जी
मैं तो थांरो जोवां बाटड़ी हो राज।

५७

बोल सुनादियां (?) सानू भांदे भांदे ।
सहर पनू विच आलम् बसदा क्यों गोरो
अपना मन सरमांदे भांदे ॥

५८

जिसेदा मन लगि सोई जाणे बे वेकदरांदो बला जाणे ।
इश्कां दे रमझा नाल दिलांदे महरम्
हो सोई पहचाणे बे० ॥

५९

ओ मेरो जान जादू कीता भला इन
सांवलियांदे दोउ नैन ।
मोर मुकुट पीताम्बर राजत वंसी बजाय मन
लीना भला० ॥

६०

आयानो मेंड़ा प्यारे जटियांदे काल मानू छड़के ।
कोसी तने समझाऊं गोरोनू आ मिलो लड़ भड़के ॥

६१

मियां तांड़े छदड़े जांदियांनो सदके कीतो
कुरबान मेंड़ा माहिड़ा ।
गोरा अटका भटका लटका दे नाल
केहा झेड़ा खेड़ा चाहिड़ा ॥

६२

जानो यार बे सोणा बे सैंदिया बिरहंदो सांग लहरा
ले लै लै ले जानो या० ।
हो न तो सोरी छड़दे मर चुका सहरां कर दे ॥

६३

जिन्द सांड़ी रुंधो बे सोणा कोई आण मिलावो ।
इश्कदे अर मेंड़ेनु आग लगाणावे जवसें पड़ी
साड़ी रूसीवे ॥

६४

तू मेंड़ा दिल जान बे सांवलयार ।
घरी घरी पल छिन बिन देखे कलन परत
मैंनू रटत रहत मदन दहत नीर नैननतें रङ्ग रस
कर निड़र वीन सिखाई ऐसो तान बे ॥

६५

काचो कलो जिन तोरो मोरे प्यारे डार मुरंगो ।
पाकन दे सांवरो हाथ जिन लावो
जब फिर मौज खुलेगो ॥

६६

ले कर जो फिर आणा समझाणा ।
बैठ रहो मन मार न जाणा जो गुजरी सोई
खूब मियांवे ॥

६७

अब घर कैसे आऊं राज जाओ महाराज
जिय मोरा है बेकरार ।
कबकी मैं ऊभी सायबां अरज करां छां वे
अबके उतार सवार ।

६८

जींदुड़ी साड़ी क्यों कर यार प्यारा तूं तो होरांदे
नाल मिलदा नो माणो जो० ।
लख बदनामी तैंड़े कारण ली तो दिल जानो माणे
क्यों कर यजो० ॥

६९

झमकें चूड़ाजो थांरा सगा नैणोरो जोबन सुन्दर
बन्यों मन मोहे राजोन्द्र राजुड़ा ।
सुन्दर मुख तेरे अबतें निरखलूं तबतें कांई जाणे
रहत उदास मारुड़ा ॥

७०

माई रब जानदा बे मियां दिलांदो फिरयाद
सोणा बे तू की जाणे कमल्लां नदाणा मियां ।
तांड़े दिलां बिच कामिल रहंदो को पया बिच
हमलां नदाणे मियां सांई ॥

७१

आलो जांपता जो म्हांने प्यारा लागो आप ।
रङ्ग भीना राजोन्द्र राजे सुरकर प्रवीन प्रताप ॥

७२

झांझरो झनके मोरो रे ।
कैसे कर आऊं पिया तेरो सेज मोरो रे ॥

७३

घड़ी वेग बजाव रे घड़ियाले आज पियाके
मिलनकी वारी।
शुभ सायत सों पियासों मिलोंगी बार बार
गई मैं वारी॥

७४

कागद आयो छे जी मारू जीरो आज।
बहोत दिनन पाछे कागज आयो हंस हंस
गरवों लगायो छे॥

७५

बिरमरहो जी कौन देशदेश हो बालम राज उजलो।
सुरङ्गो मैंण गुद्दो रङ्ग लाल छे जी छैला
राजो रहणा इशकदी वे छिवारो ना चढ़ं थर थर
कांपे म्हांरा जी उजलो॥

७६

कैतक दूर भला वो म्हांडे माहिड़ा गाढ़ो राज
साथिड़ा लशकरिया।
पलङ्ग बैठो मोजां मारे मुजरा लीजो म्हांरा
नाथिड़ा ल०॥

७७

सुणदा विनाही मैंड़ा दिल दां हवालनो सइयो वे
मैं किसनु जाय सुनावां।
कुछ न पूछो अए अजीजो यार जानो की तरां
हर बात मैंडी सुनके की जाता है पानोकी तरां॥

७८

नैणांदे निजारे नाल दिल लीता मैंड़ा अपना
बस कीताबे।
फन्दियांमें तांड़े दिल तो ना आदम केहा पयानी
मैंड़ा इशकदा जाल दिल०॥

७९

मांनू भांदे नैन सिपाइया दे अंखियादे बीच सोहे।
इशकदी डोरे नैन सिपाइया दे खून करेदे॥

८०

लोभी आजरे धनवारी जीरे मंमंल्ला सवाणा
घोलहोड़ रातरे धन०।
माशूक रे कई कपट की नेहकी बातेंहो
मारूराज थेंई एई॥

८१

हो राज कमरिया राज गहरो लगा जो राज
घर घर चम्पा फूलो मिलियारे इशकदो फुलरो
सेज बिछाजो॥
आप सोवे और सुन्दरो सोलावे मुझे राज
वेग मगाजो॥

८२

अनी वेखो सइयो फन्दड़ा तकेंदो दिल वयारद।
चञ्चल अचपल सुन्दर नार नोंके रङ्ग सो जा कहियो॥

८३

मिलनेंदा तेड़ा मैंनु चाह वे कि करां तुसो जाणदा
वो नाहीं।
गरल गणेन जिय तरसेंदा रब करे तुसो वेग मुड़ आओ
साड़ो गलां तुसो माणदा वो नाहीं॥

८४

वीरो नागर बेलरो अपने बालमजूके कारनेका
पांनां जेहो पातलोजो कांई केसरजेहो रङ्ग।
चम्पासा कोमल वाहीं झुकझुक लागे अङ्ग॥

८५

आवो सजण गर लाग मिलां व्रजमोहनकी
जुदाइयां वे।
वलिहारियां तैंनू सब कोई चाहे रूप निमाणां
मैंड़ो अरजतुज ताइयां वे॥

८६

द्रतोम् तनन दीम् तन दिरना
तन दिरना दिरना आहे दोस्त नाद्र दिर दानी
तुम दिर दिर दानी तदरे दानी तार दांनी दोस्त
मियाने आशको महबूब माशूक करम जो करो
ममका तवारह मुखवसेस्त॥

८७

कल न परेदियां वे तुज विन दिलबर मेरे।
विछोहाने दुख सालदानी सइयो वेषण दे मैंनू
चाव घणेरे॥

८८

जादुड़ा कीता मन लीता ढोलणदे निजारे नाल केहा।
दुतां बेड़ा दुशमन माये जर प्याला श्रमा पीतां ढो०॥

८९

गुमाना घुमाई जांदियां वे सोणा जीन्दा रहो वे
वाल सनेहो।
चन्द जेहा मुखड़ा सानू भांदा वे सोणा जीन्दा रहियो
गबरू घनेहो॥

९०

जानी यार वे मिया मैंना छड़के न जामा।
आतो रातीत काला बेला भूलीनू राह बतामा॥

९१

मारूड़ा म्हांरो हैलो ने बताजा पना मारूड़ा।
म्हांरे री आंगन चम्पेदो बूंटिला सात सखी मिल
छांटा लाड़ांने बताजा पन्ना मारूड़ा॥

९२

घर आवा सजन कदी कर फेरा।
घाल घुमाइयां सदके कीता हुण तेरे मिलन नू जी
चाहे मेरा॥
मुखडावो तेरा वारा अजब बहारांदा वल वल जांदियां
मैंडा प्यारा घाल घुमाई सदके कीतो कीतो
लख लख बेरा॥

९३

जाहे लागी चोट सोई जाणे।
इश्क दा लहरां रब्बा हरगिज किसी कूं न होवे
ज्ञानरङ्ग दीठ लगी जाणे॥

९४

दिल तो तेरे हाथ बिक गया।
कथा तैंडी पाक असनाइयां वे
ज्ञान रङ्ग साडा नेह नित नया॥

९५

मैं तक आइयां वे रांझा जान वे साडडी गली कर
फेरा साड़ा तूं दरद पछांणा वे।
राजा तूं तखत हजारां दा वे लख लख लेंदो
बलाइयां वे०॥

९६

गाढ़ा मारू हां वे म्हांरा गाढ़ा मारू आया वे।
चार महाने थांने चलन न देगां बहुत दिनन पाछे
आया जी म्हांरा राजा वे मारू हां वे॥

९७

रसिया ना बोलूं थां से लगा जी म्हांरा नेह रसिया
ना बोलो कोहीं॥
बेसरदा मोती अनविधो के वा राखो नयड़े बीच।
सांई हमारा एक पल राखे मैं राखूं पल बीच॥

९८

खेड़ांदे नाल नहीं जांदियानी मैं जिन्द कीती
कुरबानियां।
हुमण सोणा आनके वे खामो भला लगदा तैंड़ो
आनो मैं०॥

९९

साड़ी बातड़ी सुणजामी सोणा इश्क लगा तो
निभावो वे।
तुजजेहा मांनू होर न दीसदा साड़ी जीन्द आणके
जिवावो वे॥

१००

उरझ रहे री दोउ नैन नथपर।
चञ्चल अचपल चतुर छबीली तन मन वारूं सुन्दर
छवगत पर॥

१०१

किया रे वंशी ने टोना रे।
तेरी वंशीने मेरा मन हर लीनो तोरूंगो पात
बनाऊंगो दोना रे॥

१०२

बनरा अनमोला ढोला रे चाव घणेरा वे ।
नोको घरोमि बना व्याहन आया गल विच पहरे
सूहा चोला रे० ॥

१०३

छैला जोर कांई बे जटियांदा रङ्ग माणा ।
इस नगरी विच बे जालम बसदा वे
विच महबूबांदा थाणा ॥

१०४

फन्दड़ा तकेंदियां दिलबर यारदा आणी पेंगो मढ़ियो ।
विन दीठे चैन नहीं आवे नाको रङ्गसों जाय कहियो

१०५

का करां वे मैंडे दिलियां में का सन कोता ।
मढ़ेदा रङ्ग वे चार दिनांदा वो दियां आसक्कदा
रङ्ग तें लोता ॥

१०६

कहीं टेरो रे मोहन बांसरी ।
बांसरी बजाय कर मन हर लीनो
उपज करत और सांसरी ॥

१०७

मैं तो तैंनू चदियां चहदियां यार व बलाय लेदियां ।
मुखड़ा तांड़ा यारा बे अजब तराटा सुभङ्ग करांई
ओढ़ें में मरदियां ॥

१०८

मेरा बे मनमोहन प्यारा बे वंशी बजादा आंदा ।
मुरलीदा धुन सुन भई है कमला
साडा जिय ललचांदा ॥

१०९

वंशी बाजि सन ननन ।
श्रवण सुनत सुर नर मुनि गुनी जन
मोह लिए तान तन ननन ॥

११०

पिया बिन नैनां नींद न आवे ।
सगरी रैन तरफत बीते भोर भए जिय घबरावे ॥

१११

असी तैंनू दवाइयां दे दे बे मियां मैंड़ो जिन्द लग
तैंडे नाल ।
पंजतन पाकदा साया तैंनू बे दोस्त शाद
तैंड़े दुशमन पैमाल ॥

११२

तांड़े कुरबान सांगा मैंड़ो गल सुण जामो ।
बन्दी हुइयां तैंड़े लैणादो सांणा वेखणी
माणो गल लग जामी ॥

११३

बिरम रहे जो कोन देश देश रे बालम राज ।
अबके गए अजहूं नहीं आए काहे बिरमा रहो महाराज ॥

११४

रब्बा मैंड़ा माहिड़ानू आनके मिलामा बे रब्बा ।
पण्डित पूछे दा वारी बे सगुन मनादी बे
सांचा आख्या दर कद आमो बे० ॥

११५

सोहो चोर वालियां बे मैंनू यार
सांगे न टेरा मेरा सोणा मैंनू यार ।
ऊंचेनो थल कूके दियां बे रांझण मिला मैंनू प्यार ॥

११६

नन्ददे गुमानो म्हांरा बात न मानो बे ।
औरांदे नाल नू हंसदानी मिलदा बे
हमसों करत हो सयाणो बे ॥

११७

सालू वालीनि मन सोहे रे पटो पावां मांग सवारां
अंखियन काजल पावां ।
म्हांरा राज रमक झमक थांरे घूंघटड़े घर घालो रे० ॥

११८

हो राज गाढ़ा मारू जो मैं नहीं आवना
हो हो हो हो हो हो जो ।
ऊंचेनो मैड़ो बे दूरि देख्यां बे रङ्गरसनू बतलाजो
तू म्हांरे घर आइला सायबां होहो हो हो हो हो जो ॥

११९

मोकों नींद न आवे रे गिनत तरैयां।
गिनत सारी रजनी विहानो सुन मेरी सजनी रे
आवन आवन हमसों कह गए निश बीतो आए भोरैयां॥

१२०

गिनत गिनत तारे रैन विहानो रे।
सेज सूतो वारो नींद न आवे वो पिया मोरी
पीर न जानो रे॥

१२१

तैं मैंडो सुध लीजा जो वा जानेवाले।
इतनी अरज मैंडो मनरङ्ग मान ले
जो चाहा सुख दीजो जी०॥

१२२

केहा जादुडा कीता वो जाणेवाले।
आप न आवे वारा ना लिख भेजे मियां
इश्क लगाय जान्द लीता वो०॥

१२३

वो पंछी दानियां दिलबर मैंडा वो।
जो तूं चला वारा नाल चलेंदियां आसरा छे
रब सब तेंडा वो॥

१२४

साजडा थांने आवण देशां।
पायल मोरी रुणझुण बाजे सास ननद घर जागां॥

१२५

गुइयां बालम है परदेश।
हमरे बालमको खबर न पाई
करहुं जोगनियांकी भेश॥

१२६

निंदियांके माते जाग रे।
सगरी रैन मोहि तलफत बीती
भोर भए गर लाग रे॥

१२७

मैं तो मोही वे मेड़ा माहिड़ा मैं।
तुज जेहा मानु होर न भांवदा वे
जित देखुं तित तूं हो वे०॥

१२८

नैणांदे गुलाम लगी सगी पगी।
वरज रहा वरजो नहीं माने रूप सलोने जगी॥

१२९

दिलभर सोणा तुसो मैंडरे आवणा।
अदारङ्ग तुसी महदी लावणा पोर पोर
छलडे रचावणा॥

१३०

नजर झरोखा मुजरा लीजो।
कान्हा कीं नाराज कहीं गुण माना॥

१३१

नैणांदे निजारे नाल वे दिल लीता सांइडे
अपने वस कीता वे।
आन पया तांडे दिल तो नादम को पया वे
तांडे इश्कांदे जाल वे०॥

१३२

रखो साडा लाज वे क्यां न करे फरियाद जान वे।
या रब्बा मिलन दे देवो मुराद वे प्यारा मिले मैं
आज वे॥

१३३

बैरन किन बिरमायो राज।
घोडो नाजे कुन्दनारे चाबुक है गुलजार
पानका डिब्बा मारे हाथ में रे
मृगा नैणोका ढोला साथ॥

१३४

तांडो आखियां वे मियां झूम रहियां सालुडे वे
चन्द छपावण मियां।
यारों नूं नेह जतावण मियां अंखिया रङ्ग खिला लरियां॥

१३५

साजन मोरा अत हो रङ्गीला देखन कों सब
आईं सखियां।
हमसों अवध बद अनत बिरम रहे जियको
करत है अनसम बतियां॥

खम्बावती—चक्रताल

मनमोहनके पास न जा न जा न जा।
हां जी कहीं तो मों भानत नाहीं लजा लजा लजा॥

खम्बावती - तिताला

दिलबर यार वे मियां मैंनू छडके न जामों।
आधी रातीनिं काला वेला भुललान् राह बतलामो॥

२

केहा जादुडा कीता वे गोरिया जटियन।
ए परी तेरी नाहीम राज चा आरस्तन
नई हरके आईना बदस्त तो देहद दुशमन॥

३

कल न पईदियां वे तुज विन दिलबर मैंनं।
विकुड़दा दुख मालदाना मइयां वेपर्वाह
मैंन् चाव घनेरे॥

४

जभों रे रङ्ग माणि लाडो दे रङ्ग माण।
केसरिया बना छै निपट निदान वो उभो
बांकोड़ घोडो थांरो बांकोड़ जोड़ा मूछ
हाँरे सबज कमाण॥

५

आजी हां जी बलमा कांई जाणो ए महाराज।
राजदुलारे म्हांरो बात मान लीजो मायबां ज्यो
राज कांई गुण मासों रूस रहा छो॥

६

यलल लों यलुम यलुम यल लूम।
तर लूम तर लूम तर लल लूम उदन तूम तनन तूम
नित नारे दोम॥

७

जान बख्शा चु मा आयदम।
आखर नवा शोख् आखर कार हमन जा हो
गवां बैठे तुम॥

८

जीन्दुड़ा माडी क्यों कर यार तैंडे नाल दीता यो यार।
लख बदनामी तैंडे कारण लीतो
सुण मन मोहन यार॥

मैंनु जा यार छडके जिन्द कीता वे तांडे सदके।
मुलका बिगाणा शोरा लाग पराया
लाख तेरे दिल खटके॥

१०

गुजारा दम्दा वे आदम् दा किसी तर्र
होय होय जोयदा।
आदम दा को मरदा शोरा तूं क्या डरदा बेचारा दम्०॥

खम्बावती—अष्टताल

साजन मोरा अत हो रङ्गीला देखन को सब आई
सखियां।
हमसों अवध वद अनत बसोला जियको करत है
हमसों घनियां॥

२

खरन मनि रचित अति दिव्य परजंक पर कल्पित
सज्जा बनी सुमन राजे।
संन बस नैन श्रीराम अरु जानकी भूषण जटित
तापर विराजे॥
अष्टसिद्धि नौनिद्धि दासिका घेरि रहो
हरत कर चौरम फूल चारि भ्राजे।
यक्ष गन्धर्व नारद सहित सारदा करत कल गान
वर बाजे बीणा विराजे॥
कुसुम बरषत ब्रह्म रुद्र इन्द्रादि सुर
मुदित मनसा बसा दरस काजे।
तड़ित घन मिलित सुख पाव जो परसपर
निरखियत कोटि रति काम लाजे॥
विमल राका रजनी मनहु कर जोर रहो गनत मणि
सुभाग्य निज भुरी आजे।
दासलछन जुगलरूप धर ध्यान जो करत
कलि कलुष दुःख दूरि भाजे॥

खम्बावती—चौताला

लटकि लटकि चलत मोहन आवे
भावे मन अधर मुरली मधुर मधुर बाजे।

श्रवण कुण्डल चपल डोलनि मोर मुकुट चन्द्र कलनि
मन्द हंसनि जियको वसनि मोहनि मूरत राजे ॥
भौंह कुटिल कमल नैन अधर अरुण कोमल वैन
गज मतङ्ग गवन तिलक भाल वर विराजे ।
लछनदास श्यामरूप नख सिख अङ्ग अङ्ग अनूप
रसिक भूप वदन निरखि कोट मदन लाजे ॥

२

लाडलीलाल दोउ कुञ्ज भवनमें राजत रूप नवीने ।
मुकुट विराजत मोहन जूके पीताम्बर कटि ओप्यारो
छवि नख सिख भूषण कीने ॥
लाल भाल केसरि चन्दन को तिलक वन्यों अति
सुमन गुहे सिर प्रिया छवीली कुङ्कुम बेंदो दीने ।
लछनदास परस्पर ले आदर विलोकत मन्द मन्द
मुसकात लिए करत मनसिज कोटि कोटि छवि छीने ॥

खम्बावती—तिताला

भजु रे मनुवा कोशिलराज ।
सुन उपदेश मानु चित हित करि
नाहित बड़ोइ अकाज ।
वेद पुरान सन्तमुख सुनियत है प्रभु लाज जहाज ॥
लछनदास राम करुणामय दशरथ सुत महाराज ॥

२

विने कुंवर दोउ फूले जमुनाके कूले ।
नन्दनन्दन वृषभानु नन्दिनी नवल वेस समतूले ॥
रङ्गरङ्गके सुमन सुहाए तिनपर मधुकर भूले ।
ख्याल खुशाल करत पिया प्यारी भरे नेहरस मूले ॥

३

प्यारी पियाको मनावे पइयां पर पर विनती सुनावे ।
हा हा करत निहारत नैनन सैनन चाह लुभावे ॥
कोई लीन्हा पट पीताम्बर खेंच
कोइ कर पकर रिझावे ।
कोइ गलबहियां डार नवेली गिरिधर लाड लडावे ॥
ख्याल खुशाल करत व्रजवनिता नव निकुञ्ज दरसावे ॥

४

निरतत रासमण्डलमें आली
ओराधे पिया सङ्ग वनमाली ।
कुञ्ज निकुञ्ज सुहावनो सोभा
हरो भरो तर भुक रह्यो डाली ॥
चितवत ललित चखन छवि व्रजको
फूले रङ्गरङ्ग सुमन विशाली ।
ख्याल खुशाल करत जसुदासुत
निरख रसिक जन करत निहाली ॥

५

लाई अबीर गुलाल बनाके होरी खेले मृदु मुसिकाके ।
व्रजको सखा सब बन बन आई चोवा चन्दन लिपटाके ॥
नन्दकुमार सो फाग खेलत होरी
फगुवा मागे मनाके ।
ख्याल खुशाल प्रातके निशदिन ननोंसे नैन मिलाके ॥

६

सांवला मुझे रङ्गहोमें वोरे
सुन री सखी सङ्ग लागोइ डोरे ।
जित जाऊं तित रसिया ठाड़ो
अबीर गुलाल मलत वरजोरे ॥
गारी गावत फगुआ मांगत नैनन वैन सैन मन चोरे ।
ख्याल खुशाल करत है निशदिन
उमंग आवत है मोरी ओरे ॥

७

रङ्गमे रङ्गत है कन्हाई भरी गुइयां पिचकारी
चपल चलाई ।
चञ्चल मलत गुलाल कपोलन जोवन उमंग उमंगाई ॥
ख्याल खुशाल करत बस अपने बंसीको टेर सुनाई ॥

खम्बावती—जत

रसमाते कुञ्जनमें खेलत हैं दोउ होरी री ।
नन्दनन्दन वृषभानु नन्दिनी रङ्ग तरङ्ग वरजोरी री ॥
अबीर मलत मुख अङ्ग लिपटावत
करत नैन चित चोरी री ।

मृदु मुसक्यान छलत मन चितवन
बसकर पिया बरजोरी री ॥
ख्याल खुशाल दिखाय लुभावत बांध प्रेमकी डोरी री ॥

२

कैसे होरीके खिलार कन्हाई सारी बोरी रङ्ग
अब ह्वीं रङ्गाई ।
अत उधमी अपार नन्दके बात मीठी मीठी सुनाई ॥
उमंगाई आवत कर पिचकारी
बरजोरी अबीर लगाई ।
छैल कंवर खिलवार बड़े हो ख्याल खुशाल लोभाई ॥

३

टुक देखलो जा मैंने जोंवे सांड़ा माणा यार ।
तैंडे देपण दे असी रंदा मुस्ताक ला मियां
मौला वेष वे तांड़ा दीदार ॥

खम्बावती - तिताला

करुणामय प्रभु गुणनिधि दीनन दरन दुःख दारुणम् ।
सरनागत पालन प्रभु समरथ जग जग सन्त उधारणम् ॥
कमलनयन रघुनाथ कृपानिधि हो दयाल बिनु
कारणम् ।
लछनदास सुखद कोमलचित राम प्रणत जन
तारणम् ॥

२

ऊधो तुम हो निकटके वासी ।
यह निरगुन ले उन हो सिखावो जे मुद्रिया बसे कासी ॥
मुरली धरन सकल विधि सुन्दर रूपसिन्धु गुणरासी ।
जोग बटोरे लिए फिरत है ब्रजलोगनको फांसी ॥
राजकुमार भले हम जानत घरमें कंसकी दासी ।
सूरदास जदुकुल हि लजावत ब्रजमें होत है हांसी ॥

३

ऊधो या विध ब्रजमें रहियत ।
आगत जामन जुगसे जात हो जतनन निरबहियत ॥
सागर विरही अगम है ऊधो अब कैसे ठहरैयत ।
तुमसों काज कौन कहवेको जल बूड़त तृण गहियत ॥
एक बार दरसनकी आसा ता कारण सब सहियत ।
अबकी बार मिलो प्रभु सूरको
बहोर नेहीं कुछ कहियत ॥

४

ऊधो यह मन बिगर परे ।
मानत नहीं ग्यान गीताको मृदु मुसक्यान अरे ॥
बांकी भौंह वक्र द्रग राचे यातें अधिक खरे ।
सूध न होत स्वान पूंछ ज्यों पच पच वेद मरे ॥
जोग गभीर अन्धकूपनसों यातें दूर डरे ।
सूरदास प्रभु ऐसे रहन दे श्याम वियोग भरे ॥

५

ककमनो मोहे व्रज बिसरत नाहीं ।
वा क्रीड़ा वा केल जमुन तट सघन कदमकी छांहीं ॥
गोपबधुनके भुजाकगठ धर विहरत कुञ्जन माहीं ।
और विनोद कहां लग बरनों मो मुख बरणि न जाई ॥
सुरभी सुत और नन्द जशोदा वह चित ते न टराई ।
जद्दपि सुखनिधान द्वारावति वा ब्रजकी सर नाईं ॥
सूरदास सुन्दर घनमोहन समझ समझ पछताई ॥

६

बसो जो भंवरवा मोरी प्रीत कली ।
कृपा निवास श्रीअवधविहारी प्यारे अब रङ्गरली
बनी बात भली ॥

७

हमारो औगुण चित न धरो ।
समदरसी है नाम तुमारो सोई पार करो ॥
एक लोहा पूजामें राखत एक घर वधिक परो ।
सो लोहा पारस नहीं जानत कञ्चन होत खरो ॥
एक नदिया एक नार कहावत मैलो नीर भरो ।
जब मिलियां तब एकबरन ह्वै गङ्गा नाम परो ॥
तन माया जी ब्रह्म कहावत सूर सुमिल बिगरो ।
कों इनको निरधार कीजिये को प्रण जात टरो ॥

८

जागवे पियारा मत नींद करे उठ सुमरण कर हरे हरे ।
माया नींद अविद्या सोयो राम कहत भव पार परे ॥

लख चौरासी भटकत भटकत शरण सुमेरमें आय अरे।
रागसागर प्रभुको रट ले नित कृष्ण कहे सब दुःख हरे॥

ऊधो रे जाके माथे भाग।
विलसत फिरत सकल व्रज जुवती चेरो चपल सुहाग॥
आए जोगको बेलि लगावत काटो प्रेमको बाग।
कुब्ज्या को पटरानो कोनो हम हीं देत वैराग॥
निलज भरे खेलत हैं दोऊ बारामासी फाग।
सूरदास प्रभु जख छाड़ कर चतुर चचोरत आग॥

१०

कहियो रे जसुमतको असीस।
जहां रहो तुम नन्ददुलारे जीयो कोट बरीस॥
मुरलो दई दोहनो घ्रत भर ऊधो धर लई सोस।
ए माखन उन हीं सुरभोको जो पालो जगदोश॥
ऊधो चलत सखा जुरि आए मिल दश पांच पचीस।
अबको बार व्रज फेरि बसावो सूरदासके ईस॥

११

मैं हरिको मुरली वन पाई।
सुनि जशोवत सङ्ग छोड़ आपनो कुंवर जगाय देन हीं आई॥
इतनो सुनत विहंस उठ बैठे अन्तरजामी कुंवर कन्हाई।
मुरलीके सङ्ग हुतो मेरो पोंचो दे राधे व्रषभान दुहाई॥
हीं चित लाय उहां नहीं ढूंढ़ो चलहु ठोर सोइ देहु दिखाई।
सूरदास प्रभु नागरी नार दोउ बुध एको चतुराई॥

१२

नन्द घर लले बधावा धाय आई।
नारी नार उमाह भरे अङ्ग मुखछबि बरनि न जाई॥
देख रहो मनमोहन सोभा उर आनन्द प्रगटाई।
ख्याल खुशाल विशाल प्रेमके जोवनका फल पाई॥

१३

बजाई कान्ह मुरलो जमुनाजीके तीर।
भनक परे श्रवननमें सजनी मिटी बिरहको पीर॥
ख्याल खुशाल भरे अङ्ग अङ्गमें चले मिले बलबीर॥

खम्बावती—जत

लगीयानो नैन निजारिदे नाल।
देख आई नन्दराय लाडला सुनरी सखी मन मगन जाल॥
चेटक नेह बैन मैननमें करी री प्रीत बस ख्याल खुशाल॥

२

प्रगटी महालक्ष्मी आन।
बरसाने में छाय रही छव भवन मध व्रषभान॥
सिद्ध सकल नौ निध तहां राजत ध्यान सकल गुन खान।
पावत फल जो निरखत आनन पूरन चन्द समान॥
आवत घर घरसे नर नारी हिल मिल करत बखान।
रसिक खुशाल विलोकत जीवन श्रीवल्लभके प्रान॥

३

मुरली बजांदानी सइयों मन भांदा श्याम।
ललित कदम तले ललित त्रिभङ्गी रस भरी तान सुनांदा श्या०॥
चल सखी देख भेख नट नागर नैनन म्रदु मुसक्यांदा श्या०।
ख्याल खुशाल दयाल सांवरा चितवन चित हो चुरांदा श्या०॥

४

श्याम रे सलोने प्यारे मेरे कने आ रे।
तेरो सूरत पर मायल हइयां नैनों सैन मिला रे॥
ख्याल खुशाल उमाह भरे है वंसीकी टेर सुना रे॥

५

राममें निरतत विवस कुमारे।
राजत गौर श्याम तन सोभा नख सिख रूप अपारे॥
नैन मैन सुख चाह बढ़ावत गुन रित लखन लखारे।
उरझ रहे सुरझे नहीं कबहूं प्रेम प्रीत लपटारे॥
म्रदु मुसकात दिये गलबहियां ख्याल खुशाल निहारे॥

६

ब्रजकी बाला फूल बीन बीन लाई।
नख सिख रूप अगाधा राधा सकल मध्य दरसाई॥
सेवती गुलाब चमेली चम्पा बेला नवेली दरसाई।
निरखत रसिक खुशाल ख्याल नित वृन्दावन छव छाई॥

खम्भावती—धीमा तिताला

कर ध्यान याही धर ध्यान महादेव भोला मन भाता
रिद्ध सिद्ध सब सुखकं दाता जो।
बिच कासी कासी बसे अवनासी सकल सम्पत
सुख सङ्ग लीने सन्त अपनेकों सुख दीने जो॥
सो निध को निधि भगत अरु मुकत प्रास गुण चार
वेद गाता के जैसा भुजग विख्याता जो।
हरि धावो धावो महावर पायो करो निशदिन
प्रभु की सेवा जो होइ है प्रेम खोद देवा जो॥
जिय प्रीत प्रीत बढ़े रस रीत बतावत भेद अगम
बाता दयानिध ख्याल राम राता जो॥

२

त्रिपुरारी त्रिपुरारी मूरत प्यारी भवानी सङ्ग सोभा
धारी निहारी छव सिङ्गार अपारी।
हित प्राणन प्राणन उरगत आन रसिक रसकन
निरसात दिष्ट क्रपा कर मुसकाना जो॥
श्रीगङ्गा गङ्गा घाट सुहाए रङ्ग रङ्ग राजत ललित
धर्न सुहावन भावन ललन बने जो।
नरनारी नरनारी रूप संवारी मोद पल पलमें
सरसा जो हिरदे बीच जन खुशाल लाता जो
कर ध्यान॥

३

हमारे प्रभु पूरण ब्रह्म अवनासी वृन्दावन विलासी।
महाराज तिहूं लोक उजागर राधे क्रष्ण नाम उपासी॥
जाको जश गावत ब्रह्मादिक देवन देवन प्रकासी।
नाम सच्चिदानन्द प्रगट जग भत उदार सुखरासी॥
ख्याल खुशाल करत मन भावे महा रूपको रासी॥

४

वल्लभ रसिक रसिक रसिकाई।
कों कहि सकत अब ना मध कविकुल निगम चार
गत लखो न जाई॥
विहरत वन निशदिन ललित मोहनो रूप बनाई।
जेइ निरखत तेई बड़ भागी प्रेम लच्छना जिन मत
पाई॥
निरमल इन्दु प्रगास आनन सुख अङ्गनि बल रितु
मदन लजाई।
रूप रास गुन खान माधुरी मृदु मुसकानि क्रान्ति
प्रगटाई॥
वोह निरगुन सरगुन सोभा रही छाय त्रिभुवन भाई।
यह रस ख्याल खुशाल विलोकत पाई भगत फल
गुरु सरनाई॥

५

हठड़ी सेज सवारं सहेली कब घर आवे म्हांरा
सामी।
सुनियोरी म्हांरी सखिय सहेली तन मन धन
जोबन वारी॥

६

चलेस्यां थांके साथ सुनो जी म्हांका ए सांवरा प्यारा।
थांका म्हांकी प्रीत नित नई छे म्हांरा राज अलगा न
रहजो रहजो भेला नाथ सु०॥

खम्भावती—तिताला

हां जी हो थे जीवो म्हांरो राज जब लग गङ्गा
जमुना पानी।
थे विधना दीनो पन्ना साहेब लाड़ लड़ी ठकुरानी॥

२

थांसो मन लागो जी म्हांरा राज कंवरजी।
राव राजा राज सुहावे थें मांनि प्यारा लागो सुन्दरजी॥

३

बनरा अवधविहारी लख आई।
जनक भवनमें श्याम सलोना बनरोके गल बांई॥

मुसकावत मन भावत मोहनी सोहनी सूरत लोभाई।
रसिक खुशाल राजा महाराजा दूलह रूप सुहाई॥

खम्बावती—जत्

बनरा दशरथ लाल निहारा।
जनक भवनमें समैं व्याहके नख सिख रूप अपारा॥
नवल ही मूरत सूरत मोहनी नवल बेस छव भारा।
ख्याल खुशाल सकल बन आए देखा राजदुलारा॥

२

विहारी सरद रात मन भावे।
वृन्दावनमें चारहु दिशतें रितु गुन मन्द देखावे॥
तैसेइ फूल खिले रंग रङ्गके द्रुम बेली छव छावे।
पवन सुगन्ध उमग उर लावतु कुञ्ज निकुञ्ज सुहावे॥
करत विहार पियारा व्रजमध रागरागणी गावे।
निरखत रसिक खुशाल ख्याल सुख सकल विधी सुख पावे॥

३

बेला चमेली हार गूंध लाई।
मनमोहनके कारण सखियां जाही जुही मन भाई॥
चम्पा यार बेल दाऊदी सेवती गुलाब सुहाई।
दौना मरुवा केवड़ा सब्जी केतकी सुगन्ध महकाई॥
कमलकली कमोद तुर्रा गुलेबास दरसाई।
गेंदा कुञ्जकली अरसरफी जाफरी ललित वनमाई॥
गुल्लाला गुलकलंगा हजारा इश्कपेचा छव छाई।
मोतिया मोलसिरी औ निवारी मालती अत सरसाई॥
यह शोभा निरखत निशदिन प्रभु ख्याल खुशाल लुभाई॥

४

निजारे दियां लालियां वे सानू आन।
उठियाना ख्याल खुशालांदी मिठिया मुखड़े सोने दी मुसकान॥

५

वस रहा रीझ श्याम पियारा बांके नैनां वारा।
मनमोहन मनमांह विराजे कबूं न होवत न्यारा॥
प्रेम प्रीत वस कर लियाने छैला प्राण हमारा।
रसिक खुशाल भरे गुण सैनन रङ्ग रहा रङ्ग अपारा॥

६

पिया नैणां लगी तेरे नाल वे।
कुलकत भरे मदन रितु राते निरखत करत निहाल वे॥
रुकत न चपल चोप वस दिठियां रसिक ख्याल खुशाल वे॥

७

यार मैंड़े नाल आमो वे वंशीवाले नेक वंशी बजामो वे।
कोल तूं साड़े इश्क लगामो ख्याल खुशाल लुभामो वे॥

८

औ रङ्गीलो राधा पिया प्राणन प्यारो।
मोहनी मूरत सोहनी सूरत चन्द्रवदन उजियारो॥
करत विहार विपिन वृन्दावन निरखत सब सुखकारो।
ख्याल खुशाल ध्यान मन निशदिन याही प्राण अधारो॥

खम्बावती—धीमा तिताला

राधा मुख बेपलामो तो जिवामो वो।
मनमथ गुन मन उमग उमग रहे अधर सुधा रस पामो वो॥
मान मनोहर आगर नागर याही बात मनभामो वो।
ख्याल खुशाल विलास निहारो प्रेम प्रीत उरझामो वो॥

२

दरशन देना प्राण पियारे नन्दलला मेरे नैननके तारे।
मनमोहन मन रुकत न रोके यह चित चाह हमारे॥
दीनानाथ दयाल सकल गुण नवकिशोर सुन्दर सुकवारे।
रसिक खुशाल मिलनकी आसा निशदिन सुमरन ध्यान लगारे॥

३

बनरा प्यारा देखो नी देखो लाडला रङ्गीला।
राजा जनक घर व्याहन आया नखसिख छैल छबीला॥

सिर सोनेदा मोर विराजे बागा सुगन्ध विशाला ।
भूषण हार चमेलो बेला कङ्गना हाथ सजोला ॥
जोवन फल पावे जो निरखत भर भर नैन रसोला ।
ध्यान खुशाल सदा निश वासर चितवन माह बसोला ॥

४

मैया मोरो कामर कौन लई ।
कोउ कहे तेरो कामर देखो जमुनामें जात बई ॥
एक कहे हम नाहीं लीनो सुरभो खाय गई ।
एक कहे तुम नाचो गावो ले दें मोल नई ॥
हां जो गए थे धेन दुहावन औचक भेंट भई ।
एक कहे तुम आवो हो आयो हां तुम रसिक मई ॥
सूरदास जशमतके आगे असुअन धार दई ॥

५

नेक चलो री चलो नन्दरानी ।
देखो जाय कान्हको का गत दूध मिलावत पानी ॥
हमरे शिरको नई चुनरिया ले गोरसमें सानी ।
हमें उने रसबाट कहांको आन देखावत ज्वानी ॥
यह व्रजको बसवो नहिं नीको हम निहचे कर जानी ॥

६

बिहारीलाल ठाढ़े जमुनाजीके तीर ।
मधुर मधुर बांसुरी बाजो सुन मन धरत न धीर ॥
भूषण मणिगण अङ्ग विराजत सुन्दर श्याम शरीर ।
कृष्णरङ्ग स्वामी लख आई फेर चलो मेरो वीर ॥

खम्बावती—तिताला

ऊधो भाग बड़े इत आए ।
उत हरि गए घने दिन बीते समाचार नहीं पाए ॥
कुशल तो है वसुदेव देवकी हमरे हित चित भाए ।
कहो कुशल बलदेव कान्हको रहे उतै सुख पाए ॥
विरधापन कों पूत पालियत तहां तज हम हिं सिधाए ।
धायहु को ना तो हरि धोयो बिनु कछु दोस लगाए ॥
चलत बार बलदेव कान्हतें साथ न प्राण पठाए ।
ताके ए परपाक गदाधर जीवत ही फल पाए ॥

१

काह्न फिर न कही वह बातें ।
जो भर गए सुकृत किरियातें वा मगहूं कुशलातें ॥
जैसे चढ़त रङ्ग भीतर सहत सेलकी घातें ।
वाको स्वाद पूछिए कासों सैले सही है तातें ॥

३

अब तो सहाय करो प्रभु मेरे बह्यो जात जन तेरो ।
माया नदिया लिये जात है हात गहो प्रभु मेरो ॥
काम क्रोध लोभ मोह जलचर दियो चहुं दिश घेरो ।
नाना भंवर भरमके भीतर भरमत रहे जों फेरो ॥
बार बार नहीं गिनत है मोकूं कियो खोज बहुतेरो ।
विष विकार चित तातें तवपद गहो जात नहो मेरो ॥
माणक और उपाय न सूझे चरण कमल दृढ़ हेरो ॥

४

हो मुरलोमें गावत तान ।
पढ़ पढ़ मोहन मन्त्र सखो री सुन्दर श्याम सुजान ॥
परत न चैन रैन दिन तबतें भनक परी मेरे कान ।
जानकोदास कोउ आन मिलावे रसिया नागर कान्ह ॥

५

थें म्हांरे घर आज्यो जी नन्ददुलारे ।
मत टोको जी म्हांने मारग जातांई सास ननद
म्हांने मारे ॥
गुरुजन दुरजन चाव करे छे हित चित को न विचारे ।
प्रेमरङ्ग घड़ी पल नहीं बिसरों तन मन वस छे थांरे ॥

६

रतनाली बे तेड़ी आंखड़ियां असां जिन्द बेष ले
असो जिन्द बेधो वो मुस्ताक रहेंदे ।
मुए पएके हो राह मुसाफिर नाजो भूरोखेन् क्यों
खड़ियां अ० ॥
याणे नाल स्याणों क्यों दरस तुसो दें दो पलकों
दे नाल क्यों लड़ियां अ० ।
प्रेमरङ्ग दरस दे दिवाणे इश्कदो बेड़ो तुसो क्यों
जड़ियां अ० ॥

७

रसिया भजन छै जगमें सार।
सुक नारद ऋषि श्रुति देवा भजन ही भए भव पार॥
ध्रुव प्रह्लाद उपमन्यु विभीषण अचल पदके सिरदार।
शिव सनकादिक आदि ब्रह्मादिक और हु
ब्रजको नार॥
भजन रङ्ग रङ्गीले जे भए पाए साक्षातकार॥

८

जो तूं छोड़ा माको ताको भेद।
तू माहं छूं हूं मातूं मो भूट नहीं कइं सांच कहे
छे वेद॥
अणपाम्यूं पामवाना दुखथो सुख मारू निरवद।
जो तूं जो हूं होऊं एक अनेक होय बी जा तो
देहि करे खेद॥
प्रेमरङ्ग प्रभु थी रङ्ग रमतां नहीं पामा विछेद॥

९

राघोजीके नीको लागी नव रङ्ग पाग।
कबहुं छैल छबिसों सुन्दर निरखत आनन्द है अनुराग॥
झलक लाल मोतिन की कलङ्गी उपजावत सुख लाग।
राम सखे प्रभु शोभा सागर देखत सो बड़ भाग॥

१०

थांरो छब प्यारो लागे राज राधावर महाराज।
रतन जटित शिर पेंच कलङ्गी केशरिया सब साज॥
मोर मुकुट मकराकृत कुण्डल रसिकों रा सिर ताज।
मीरांके प्रभु गिरिधर नागर म्हांने मिल गया ब्रजराज॥

११

हेलां म्हांरे मङ्गलरो दिन आज।
श्यामसुन्दर जो आया म्हांरे पावणा सज
केसरिया साज॥
बीण मृदङ्ग बजा स्यां गास्यां भुजभर मिल स्यां
ब्रजराज।
रसिक गोबिन्द रसिया जीसूं हिल मिल करस्यां
सुफल सब काज॥

१२

आज बन बंसी बाजे छे।
लोक लाज कुलकान सखीरी सुन सुन भाजे छे॥
बैरन घन जो गाजे छे म्हांरो चित चोटो छबि छाजे छे।
रसिक गोविन्द जो सास ननद जिय छिन छिन
लाजे छे॥

१३

म्हांरो मन मोह लियो छे वो कान्हा थांरो बांसरो।
तीखी तीखो तान बान सों म्हारों मन गेलो
कियो छे वो०॥
थें तो म्हांरा रूड़ा राजीन्द छो मैं तो थाने आपा
दियो छे वो०।
अब जुग बिच म्हांने खाली लागे आनन्द घन
रस नीको पियो छे वो०॥

१४

ऊधो कबसें भए हरि ज्ञानी।
छिन छिन भात ग्वालनको पावत मांग लयो
दध पानी॥
अब कछु ज्ञान भयो तिनहीको करो जो चेरो रानी।
होय भोगी और जोग सिखावत कौन वेद या वानी॥
महीदास अदभुत यह गत कछू जात नहीं जानी॥

१५

गुजर दे यार वे जानो यार तेरे नैनांके मारे भाले
आले ओ मिजगांवाले।
दिठोयानो ख्याल खुशाल कमाले साजो जमा माले
ढाले मिठोया आटे नाले॥

१६

बनरा कुञ्जविहारी मन भावे।
छैल छबीला रङ्ग रङ्गीला श्याम सलोना मुसकावे॥
शिर सोने दा सेहरा विराजे कर कङ्गना छब छावे।
सुगन्ध बसीला सुहाग लजामा पीतमबर सरसावे॥
सङ्ग सोभा प्यारो दुलहनके चितवन चित उरझावे।
निरखत जन खुशीयाल मनोहर निशदिन प्रेम बढ़ावे॥

१७

कौन गुण बांसरी बजाई रे भनक परी श्रवनन मेरे ।
नन्दरायके कुंवर लाडले बलदाऊके भाई रे भ० ॥
ख्याल खुशाल करन चित चाहे ब्रज कुञ्जन छव
छाई रे भ० ॥

१८

हे म्हांरे गरे लागो जी श्याम सलोना ।
कृपा भई म्हांरे महल पधारो मोहन मनही लगोना ॥
सुन्दर सुघट सरूप कृपानिधि जन्त्र मन्त्र धो टोना ।
भई दासी में थांरो ब्रजनिध अब कछु और न होना ॥

१९

सुघर हो राजेन्द्र पना आओ या ही माझलो गात ।
पान फूल और अतरदान लिए ठाड़ी मारवण
गोरे गात ॥

२०

मोहनो मूरत ललित श्यामकी जबसें नैन निहारी ।
विन देखे कल परत न आली वनमाली वनमालीरी ॥
याही चाह चित लखो कीजिए ख्याल खुशाल
अपारी ॥

२१

बल बल जांदी श्याम मैं तेरे अरे मोरे प्यारे हो यार ।
सुनिए कुंवर कन्हाई विनती मोहनी रूप देखावा
हो यार ॥
ऐसी चाह हमारे चितमें आंखन आगे आवो हो यार ।
बहुत दिननतें उमग भरी है देखन मुख ब्रजचन्दा
हो यार ॥
आवो चित विस हांस मनोहर नव जोवन नन्दनन्दा
हो यार ।
जो लीला तुम ब्रजमें कीनी दिए प्रिया गल बांही
हो यार ॥
वृन्दावन वो वंसीवट ललित कदमकी छांई हो यार ।
नितप्रत आस लालसा जियमें लिखिए श्रीगिरिधारी
हो यार ॥
कुञ्जन माह नेहरस माते रास हुलास विलासो
हो यार ।
मदन मोहन नन्दराय लाड़ले रसिया रसिक विहारी
हो यार ॥
गोकुल नाथ सकल सुखदाई भक्तनके हितकारी
हो यार ।
विसरत नाहीं वसो उरमाहीं प्रीतम प्रीत तिहारी
हो यार ॥
महाराज राजोंके राजा पूरन ब्रह्म खिलारी हो यार ।
तिरलोकीपति अन्तरजामी करुणासिन्धु कृपाला
हो यार ॥
ख्याल खुशाल करो निशवासर राधावल्लभ लाला
हो यार ॥

२२

श्यामसुन्दर वनमाली बुला ला आली ।
विन दरसन मन धीर धरत ना मोहन मदन गोपाली ॥
करत विहारी कुञ्ज कुञ्जनमें हिलमिल उर भुज डाली ।
मोहनी सूरत सोहनी सूरत रसिया ख्याल खुशाली ॥

२३

काची कली जो न तोड़ माड़े बालम डाल मुड़ेगी ।
पाकन दे पिया हात मत लावो अपनी उमगसें आप
खुड़ेगी ॥

२४

वा विन जात नाहिन कोय जाव न विसरी टुहद
बांसरी नोय ।
सुरभ केस सुरेस असवट और पै नहीं होय ॥
धरनीमां अली भाल मानो रही कमल भिगोय ।
रूप सैली फनिन निद्रित जननी सों कहे रोय ॥
विसरो रही अङ्ग अङ्ग भोय बांसरीमें प्राण मेरो
देख हिरदे टोय ।
सूर जाके अङ्ग विथा व्यापी पीर जानत सोय ॥

२५

मोरो बौरो भोला आज लागत मोहे नीको ।
सीस जटा वाघाम्बर ओढे शोभित हार फनीको ॥

बूढ़े बैल पर धर असवारी खबर लेत धरनीको।
कृष्ण रङ्ग छब देख मगन भए भाङ्ग धतूर धनीको॥

२६

अधर धरी मोहन बांसरिया।
सोवत चौंक परी सेज पर तानन बेध गई फांसरिया॥
जो जैसे सो तैसे धाई डार दई गरे प्रेम फांसरिया।
कृष्णरङ्ग प्रभुके मिलवे को कुलके लाज करी
नासरिया॥

२७

लाग रह्यो मन राधावर सों
और कहे कछु और उपरसो।
दिन रतियां अंखियां आगे मेरो
ठाढ़ो रहे कछु रूप सुघरसो॥
लोक लाज कुलकान तजो आलो
निठुर भए घरवार नगरसो।
आनन्द घन प्रभु लाए नेहा
प्रेमरङ्गांगो मैं गिरिधर बरसो॥

२८

उरझ रह्यो मन श्यामसुन्दर सों।
उरझ तो रह्यो पर सुरझत नाहीं
केते जतन किए बाहरसों॥
लोग कहे कछु लाज करो आलो
लाज गई है नेह जकरसों।
हरदम घरी घरी पल पल छिन छिन
चरण गहे है दोउ करसों॥

२९

मोला केलो केलदे मुहा गोनू सेंदियांनू पार लगावणा।
नौबहार रब तेंडो बनाई ससोदा मुल्क सुहावणा॥

३०

दिल मैला मत रखियो प्यारे उजला दिल चांदनी चौक।
तज दे कपट तुसी सुन वे सांणा याहो सचे इश्कदियां
नोक॥

३१

सांवला मोहना मैं तेंड़े कुरबाण।
विन देखे सानू कल न पड़दां तू मेंड़े है प्राण॥

३२

कौन देश जाए रे बालम बिरमाए राम कहो रो
सखी अजहूं नहीं आए मोर मन्दिरवा मीत पियरवा
कासे कहूं को पतियाए।
धाम छोड़ तोरे मोर रहत फिरत है जो उनसे
नेहा लाए वे तो मौज करे सोतनके जो मेरे आवने
नहीं पाए॥

३३

बालम तोर कौन विध जइहूं मोरी राम।
ननदिया बैरन जागे डरपत हूं को मत देख पावे चरचेगो
मई खिजावन कारन कर गई एक ठोर सब धाम।
एक तो यह डर दूजो पायल बिछुवा बाजे झनन झनन
तीजे रैन उजारो चौथे मौज करनकों मन करे नहीं
मानत काम॥

३४

परदेशवा मत जाइयोरे पानन छाई पनवरिया भंवरा।
काहेको तेरी नाव नेवरिया काहेका तेरा वासा
तेरा खेवनहारा बताय दे भंवरा।
सोनेदी मेरो नाव नेवरिया रूपेदा मेरा वासा
खेवनहारा गुसैंया भंवरा॥

३५

बना जी थांरे सेहरड़े रङ्ग रूड़ा।
तन मन धन नोछावर करहूं
चिरजीयो छोटो लाड़ो जोरो चूड़ा॥

३६

दीजो जी सांवलिया म्हांने हा नजरांरो मेलो दीजो।
छछन्दपना थांरा म्हांने न भावे
इतनो अरज सुन लीजा॥
थें तो म्हांने प्यारा लागो सायबां
मन माने सोई कोजो।
यह उपकार नहीं भूलस्यां व्रजनिधि मेहर कीजो॥

३७

प्यारेदे मिलदो मैंनू आस घणेरो मियां।
पार खड़ा वे रांझण कूकदो दिल बिच खुभ गई
फांस घ०॥

४

मो नयना मृग मोरे है सब तनमें बहराय काम कियो
लहलाय दृष्ट घात लगाय पिय चकचाते कीने ।
चोप तुरङ्ग चढ़ाय पीत पटा बैठाय सकुचत डोर छिड़ाय
अपने चाट चटाय कुद्रा बढ़ाय कपट फन्दी
उतराय छव देखाय तुम्र और छोर दीने ॥

५

मो है हसन री तो कूं दशन झलक यों लागत
मानो चन्द मध बोज चमक गई ।
अतही सुन्दर बतीसी मेरे जान लक्षन बतासी को
सभाकी प्रतिबिम्ब देखत हो नवल कमल बीच
हीरा खान भई ॥

६

सुध आइये आइये जु उनके जिय कछु मेरो सुध ।
अवध बदी मोसी दुती न लगाई है प्यारे नीको
छद्मसी पिय मेरे ग्टह धाइये जु० ॥

परज—तिताला

जोगी जती सती सन्यासी अवधूत जोग अडम्बर
भाव तू जो भेख धरे ।
जपतपने सञ्जम जमकत दुख हरे करत सब सुख
दुख हरे ॥
मन सुमरण ज्ञान ध्यान चित न हरि हरि करे ।
कहे बैजु बावरे रसना रटना नाम जाते पाप
सब ही टरे ॥

२

मन जोगिया आसन कीने चिबुक गुफामें जाय ।
रहो समाय लगायके तिल मुल हारे लाय ॥

३

शरद-शशीवदनी सारदा सरस्वती हंसवाहनी धरे
बीन वरदानी ।
वाक्वाणी शेष सुरता सबनको जीवनमूल देवी ते
जगजानी ॥
जय जय जगदम्ब निरालम्ब अवलम्ब तुही ताते विनो
बार बार जोर जुगपानि महारानी ।
जीवन धन तुव प्रसाद पावे नाद वेद भेद गोबिन्द
गुण गाय गाय पीत मनमानी महारानी ॥

४

जित देखों तित कृष्ण मनोहर दूजो दृष्ट ना परे री ।
चित सुहावनी छवि अति सुन्दर रोम रोम
रस ही भरे री ॥
शिव विरञ्च जहां ढूंढ़त फिरे सो मन मेरे अरे री ।
निशदिन राचो गुण गोविन्दके और उपाय न करे री ।
जा कारन हों अटको फिरो जगमें पायो
निज घर मेरे री ।
परमानन्द लह्यो सुख दरशन चित कारज सबही
सरे री ॥

५

श्याम सखो नीके देखे नाहीं ।
चितवत ही लोचन भरि आवत वार वार पछताहीं ॥
कैसेहुं करि एकटकमें राखति नेकहि में अकुलाहीं ।
निमिष मनो छवि पर रखवारे ताते अतिही डराहीं ॥
कहा करे इनको कहा दोषन ईन अपनीसो काहीं ।
सूर श्याम छवि पर मन अटक्यो उनि सब शोभा लाहीं ॥

६

गोपी श्याम रङ्ग राची ।
देह गेह सुध विसारी बढ़ी प्रीति सांची ॥
दुवधा डर दूरि गई उघर उघर नाची ।
हरि तजि जा और भजे पुहमी लोक खांचो ॥
माता पिता लोक बन्धुको बात नहीं बांचो ।
सकुच जबहो उर वार वार झांचो ॥
अब तो छिन हू न छांड़े नाहि न मत कांचो ।
सूर श्याम पद पराग ताही में मांचो ॥

७

मेरो लाल रंगीलो रंग भरो ।
जो भावे सो करहु किशोरीमोहन तेरे वस परो ॥
जमुना-पुलिन निकुञ्ज-भवनमें सर्वसु सची तोको धरो ।
विट्ठल विपुल विनोद विहारी सगुण गांठो देवर वरो ॥

८

मेरो गुप्त मतो कहिया हरिसों जायके।
दूध भात कुञ्जनमें खाते पहले हम हीं खवायके॥
जलको प्यास जबे हरि होती पीते हम हुं पिवायके।
अब तो छान छान जमुना जल पीवत है अचवायके॥
वहां जाय कुवरो नहीं उबरो व्रजको सबे भुलायके।
अब सुनियत हरि घण्ट बजावत तिन्ह तिन्ह
वार नहायके॥
नमस्कार कहियो सूरको कबहीं अवसर पायके।
जप लगबे कों लगो है बोले यासह अघुए खायके॥

परज—चौताला

हो लाल आइए मेरे गृह धरिए द्रगन पर
चरणकमल।
करोंगो बधाई आनन्द मन भाई शुभ दिन घरी
पल मुबारक करिए कृपा प्राण प्यारे नवल॥

२

कारे री कान्हा कुञ्जन कारे नयन अञ्जन कारे
कांधे कामर सोउ कारी री।
भोंहे कारो द्रग कारो मुरलो अत हितकारो
धुनोमें कस सोउ कारी री॥

३

ए सखी कारो री सारो सोहत अङ्ग कारो हो
कारो है सिङ्गार।
कारे हो रेष मिश्रि कारे हो नैन अञ्जन कारो हो
मुख मञ्जन कारे हो कृष्ण सों करत प्यार॥

४

सोहे सोस मुकुट श्रवण कुण्डल भाल तिलक
गुञ्जमाल पीताम्बर कट काछनी विराजे।
शङ्ख चक्र गदा पद्म कर मुरली अधर धरो वृन्दावनचन्द्र
मध श्रीगोपीनाथ छाजे॥
धनुष वज्र जम्बुक फल जई रेष त्रिकोण षट्कोण
अष्टकोण मीन चन्द्र जव भ्राजे।
गोविन्द है मदनमोहन श्रीनारायण बद्रीनाथके प्रभु
सप्त सुर छाय रहे लेत तोनो ग्राम मधुर मधुर गाजे॥

५

प्रथम आदि शिव शक्ति नाद परमेश्वर नारद तुम्बरु
सरस्वती फणपतिरे।
अनाहत आदि नाद गुणसागर स्वरूप ब्रह्मा विष्णु
महेश लक्ष्मनरे॥
आदिधरणी शेष आदि चन्द्र सूर्य आदि पवन पानी
आदि अनगनरे।
आद बैजूके प्रभु कब गुरु प्रसाद सुध बुध
मत गुन गनरे॥

६

पलकन जुहार कर ले हो आये घर तेरे मुरार।
नीचो नार किए ऊंचे न चितवत काहे बढ़ावत रार॥

७

मोको तो जब लग चैन तब लग देखों तुम्हारो
दरसन।
नैननके तारे प्यारे कर राखों जेहर धन्य धन्य रावरे
तुज चरण परसन॥

परज—तिताला

जोगिया मन मेरे चित भटकत अलख।
आप आपो लख ज्ञान सुमरनको करत सो तो
सब व्यापत है रोम रोम नख सिख॥
घट पर घट घर आंगन जित तित पवन वृक्ष
सब वाहो सुरत रख॥
चन्द्र सूर्य उड़गण मदगण पशु पक्षी जल थल
बिच लख॥

२

मोहि कोउ देहो बताय मोए कल न परत छिन
वा बिन ए जोगियारा।
सेलो स्याम भभूत मुख सोहे नैन चातुर मन
भोगियारा॥

३

ए हो दक्षिण सारो दलमलो वाको चहुं देश
भयो नाम।
अब हीं चढ़ो महा मरदान एक दरस परस सब काम॥

४

जाके दान स्थिर रह्यो मेदनो एसो वोरभानको नन्दन
राजा राम बघेलो वोर।
इन्द्र नाहीं धरत धोर दान वाको सुनि शेष
उकमत बलवोर ॥

५

नाद ब्रह्मको साधो आराधो।
योगिनको गत परम पद पावे अनहद आहद
उपवेद पठंत तत वित त घन सिखर प्रवान्धो ॥

६

बरसानेते आये अरसाने हम जाने जू लच्छण तिहारे
पहचाने।
कहूं काजर कहूं पोक लोक अनगन सुभाय
मोपे न जात बखाने ॥
नैनन नींद ध्यान मन हिरदे बसत तोय ताही के
लगत गुण गाने।
धन्य रे नेह ताहि एसे नटनागर छल कर नाच नचाने॥

७

मनमोहन देखत हो सजनो क्यों गई नन्दके द्वार रो।
दशन हसन कर बसकर डारो कासे करों पुकार रो॥
मोहन सोहन जोहन छवि निरखत कौन मन्त्र पढ़
डार रो।
रागरङ्ग मुरलो अधरन धर मधुरो तान उचार रो॥

८

श्याम सुजान आए सखो मेरे अब हौं उठ चल
हिल मिल करो टेल तन मन धन सब वार वार
डारो फेरे घने रे।
वे महाराजाधिराज कृपाल दयाल कृपासिन्धु
करुणामय जब गुण अवगुण सब हो बिसर राखे
अपने शरण तरे रे॥
धन धन भाग सुहागरो सजनो धन घरो पल मूहूर्त
आज सांवरे रावरे चरण धरे रे॥

नन्दनन्दन आनन्द कन्द मोहनो मूरत ब्रजराज चन्द्र
मेरो मन रस बस कर लियो मन्दचोते काज
भये मेरे रे॥

९

श्यामसुन्दर मन मेरा सोहावे।
सोहनो सूरत और माधुरो मूरत आलो हंस रस
बस कर कस भुव नैना निरख निरख द्रग बांको
चितवन सों मोहे सखो जो आवे॥

१०

एरो मैं क्यों गई जमुना पानो।
देखत हो मन मोह लोनो मेरो सांवल हाथ बिकानो॥
मेरे मन बसो है सांवरो सूरत लोक कहे बोरानो।
प्रकट भई बलिहार श्याम सों लागो प्रोत न छानो॥

११

न जानूं तेरो यह माया कासो कुटिल कुचाल
कुसङ्गत में हो ओरघुराया।
करत करं फिर मेटे काहू भेद न पाया जो
बलिहार द्रवो दोन पर गुरुमुख भेद बताया॥

१२

वृन्दावन फूल रहो फुलवारो।
विहरत लाडलो लाल अस भुज चांदनो रात
उजियारो॥
झुक रहो श्याम लता द्रुम द्रुम को
पल्लव क्रान्ति निहारो।
कुञ्ज निकुञ्ज विराजत राजत देख विहार विहारो॥
मङ्ग सखा नव रङ्ग रङ्गोला नख सिख रूप अपारो।
निरखत रसिक खुशाल सदा सुख ओराधे बनवारो॥

१३

कारो पोरो धुंधरो धुमारो पिया प्यारो घटा घिर
आइयां।
बोलत मोर पपोहा कोकिला कोयल कूक सुनाइयां॥
वृन्दावन में छाय रहो छवि ख्याल खुशाल लुभाइयां॥

१४

राजत ललित ऊन चांदनी छिटक के खिल रहे
तारे तूं आ मिल मेरे यार पास रहो प्यारे ।
बिच रङ्गमहल छवि छाई फूलों की सेज बिछाई
उर मदन उमग उमगाई नहीं रोके रहत रुकाई
तेरी चितवन उरझे प्राण जानी सुलझारे ॥
वे बातें मोहे सुनावो जो सैनन माह बतावो
चित अपनी चाह लखावो जानी सनमुख आवो
उर लगो हमारे आय कांह सुकवारे ।
मैं कहती हूं मेरे जानी प्रेम प्रीतको बानी
उर नेह चोप उमगानी तू लेना श्याम मेरी मानी
मेरी नई चाहको चाह मैन लिपटारे ॥
काम जो ऐसका आया रस ख्याल खुशाल बनाया
मनमोद काम प्रगटाया क्या बखत सभूका छाया
साअली महावत कली खिली मुसकारे ॥

१५

प्यारो पिया सङ्ग करत बियारी ।
नानाविध पकवान मिठाई कई कई रङ्ग संवारी ॥
अनगिन जिनस सलोनो चाषत मुसकावत सुकुमारी ।
निरखत रसिक खुशाल सदा दोउ नव निकुञ्ज
छवि छारी ॥

१६

व्रजमें कुञ्ज कुञ्ज छवि छाई ।
रास समाज कियो नन्दनन्दन लीला ललित बनाई ॥
फूले फूल नवल द्रुमनन पर गुञ्जत मधुप लोभाई ।
बोलत पञ्छी रङ्ग रङ्गके सुगन्ध पवन महकाई ॥
झुक रही लता कूल जमुनाके पुलत पिवत सुहाई ।
प्रीत खुशाल श्रीराधावर सुख रसिक फल पाई ॥

१७

दूले जदुराई सुखदाई वो मनमोहन कुंवर कन्हाई वो ।
रासमण्डलमें छाय रही छवि अङ्ग लखि अनङ्ग
लजाई वो ॥
रूप मोहनी मदनमोहनको उपमा वरनि न जाई वो ॥
विलसत सुखरस केलकुञ्जनके शोभा व्रज प्रकटाई वो ।
गावत राग रागिनी सखियां आनन्द हृदय बढ़ाई वो ॥
ख्याल खुशाल निरख पिय प्यारो जीवनके फल
पाई वो ॥

१८

सखी वनमाली विहरे विपन मंझारी ।
निरखत द्रुमद्रुम लगे फूल फल हरियल झुक
रही डारी ॥
मन अति प्रसन्न सुगन्ध सुगन्धित शोनत सुमन अपारी ।
हार हमेल बनावत निज प्रिय रसिक खुशाल लुभारी ॥

१९

बना दूलह अवधविहारी वो दुलहन जनकदुलारी वो ।
जनक नगरमें छाय रही छब निरखत नर औ नारी वो ॥
शिर सोनेका सेहरा विराजत गल फूलोंके हारी वो ।
सूए वसन अङ्ग आभूषण पहरे नख सिख रूप अपारी वो ॥
विश्वामित्र वशिष्ठ आदि सब देत असीस उचारी वो ।
नौबत बाजे घन जो गाजे गावत मङ्गलचारी वो ॥
करत नोछावर दशरथ राजा द्रव्य अनेक लुटारी वो ।
पावत रसिक खुशाल जुगल सुख प्रेम प्रीत
रस सारी वो ॥

२०

छिप छिप कहा करत नन्दनन्दा कौन चूक जो हमें
बतावो रूठ रहे व्रजचन्दा ।
महा प्रवीण सकल विद्यामें कीजे वेग आनन्दा ॥
ख्याल खुशाल कुड़ी जनमें रसिकन आनन्दकन्दा ॥

२१

आवत मृदु मुसक्यात किशोरी ।
रासविहार करन उर रुच मन निरख सरद निशा
उमग उठोरी ॥
अति विचित्र प्रवीण वैरन धन्य आन अब छाई
एकठोरी ।
जो शशी पूरण उदित पूर्व दिशि चलत प्रकाश
करत चहुं घोरी ॥

भूषण वसन दिव्य अङ्ग राजत साजत शोभा मदन करोरो ॥

२२

मोहे धनुष चढ़ाए पन्न शिर तुरङ्ग नयन रसराज चटोरो।
चावक चलक लिए सुख राजत नेह पकर चितवन कर डोरो ॥
श्रवण कुण्डल निशान मनसिजके फहरत सुन्दर कपोलन ठोरो ॥
अवलो सुभग सुहावन ढेसर नथ मुकता लालरो ठगोरो।
अधर अरुण दमकत दशना बोलो बोलन मोहनो मन्त्र पढ़ोरो ॥
विवस करत पिया प्राण मनोहर प्रेम प्रीत गुणसिन्धु झकोरो ॥
सङ्ग सखी नवरङ्ग रङ्गीली आवत गावत व्रजको खोरो।
ख्याल खुशाल ध्यान निशवासर चरणकमल सों चित उरझोरो ॥

२३

पियाजोके चरणन को वलिहारो।
जिन चरणन शरणको महिमा गावत वेद अपारो ॥
जिन चरणनका ध्यान किएतें तुरत मिल कुञ्जविहारो।
भवदुख मेटन नाम मनोहर श्रीराधा सुखकारो ॥
रसिक खुशाल मनोरथ पूरन कारन विपिन विहारो॥

२४

घर आवो सजन मिठबोला।
तेरे खातर सब कुछ छोड़ा काजर तेल तमोला ॥
जो नहीं आवे रैन विहावे छिन मासा छिन तोला।
मीराके प्रभु गिरिधर नागर कर धर रहे कपोला ॥

२५

दर दा दम दर दो दर दो दम दर दो दम आहे आहे दर दोदम।
गनीमत सुमर ए शमा वसलो परवानाको दम आ मिलाता शबोदमन खु़ाहदमन्द॥

२६

आहे नादिरदीम तन दिरना तन दिरना यललो यला यला ललेयार यल यलीयल यल लले।
मुकयदान तो अर्जी करे गेरखा सुसन बखा तेरेके तु'हि दिगसारा फरासन् ॥

२७

मंजड़ी रात आइला छे जी।
हाथी आवे तिहारे द्वारे नो साहबदोन सुभ दिन सुरङ्ग हाथमें कमदानिया सात आइला छेजो ॥

२८

मरदाना हो राजेन्द्र माणी वारो केसरिया राजेन्द्र।
बागां थांने ढोलण आइला हो राजजी राजेन्द्र ॥
राजा थांरे घोरलारो हो राजेन्द्र थांरे घोरलारो
बाजो परता लाहो मक्त माणी बाजे छे घूंघरू हो राजेन्द्र ॥

२९

दारूडा राज पीवो क्यों न दारूड़ा राज लाड़ी राज देशां थांने दारूड़ा मारूड़ा।
म्हे'तो थांसे अरज करां थां हमलांरा हात घालो सालुड़ा मारूड़ा ॥

३०

हो राजा मैं वारो वारो जावां गाहो राज थांसों म्हांरो मण लाग्यो मैं कांई जाणो।
अमलांहो सेज पर सुखवा करोलो सायबां बैठो पटो तले चपोकरां थांरो ॥

३१

होरो तार ठाड़े प्यारा पिया कुञ्जन घन में गोर श्याम शोभित तनमें।
उन पहरो वाको मोतिन माला उन पहरो कुण्डल श्रवनमें ॥

३२

सइयां विन घर मोहे रहीयो न जाय को मोरे प्रोतम देह मिलाय

वारे सइयां परदेश निकस गए समझ समझ
मोरा जिय पछताय।
दिन न चैन निश नींद न आवे कोटि करो नहीं
मन ठहराय॥
भूषण भार शृङ्गार सबे सखी अस जिय होय के
देहीं बहाय।
जावक सो पावक सो लागत कछु निल नागन होय
डस जाय॥
लोग कहें धन भई है बावरी हियकी विथा
कोउ नहीं लखाय।
यह दुख कासों कहों सुन सजनो नवल श्याम सों
कछु न वसाय॥

३३

फरकत वाम नैना प्यारीके।
आवन हार भए मनमोहन हर्ष भए सब नर नारीके॥
कसमसात अंगिया बन्ध टूटत फरहरात
अञ्चल सारीके।
लगि लगि श्रवण भ्रमर गुञ्जारत सगुन होत
गिरवरधारीके॥
उड़ो काग आवे मनमोहन भाखत युवती
बारबारीके।
देहों भात दूध सिपागरी जुर अञ्चल अपने फारीके॥
होत मगन मन प्रीत शकुन शुभ भया प्रेममद
अधिकारीके।
रामदास दरस यह मनमोहन मिलवे तेई
चातक गति घन कारीके॥

३४

सतगुरु पूरा होय दयाल एक पलकमें करे निहाल।
आदि पुरुष उपजायो नाद विन समुझे वो पूरी व्याधि
यन्त्री मन्त्री नृत्य कर रागी उनको
सुरत न आवे ताल॥
ब्राह्मण क्षत्रिय शूद्र वैश्य सैयद मङ्गल पठान कुरेश
चाल बड़ोंकी छाड़ दई है अपनो अपनो कहत
निकाल।
ब्रह्मज्ञान क्षत्रियपन छाड़ा युद्ध करन तेहं मुख मोड़ा
कहा भयो खड्ग कटारी बांधे सजे धनुष औ
बरछी भाल॥
धोती कण्ठी औ जप माल छापे तिलक
लगाये भाल।
धरम चीन्हे मल मल न्हाय मन भीतर बस रह्यो
चण्डाल॥
रती न माया मन सों त्यागी बाहर भेख धरो वैरागी
तृष्णा भूख रहे नित लागी सों क्यूं करे भक्ताका
ख्याल।
पञ्च इन्द्रिय वस हो हो रोगी तो शिव कैसे पावे जोगी
कहा भयो विभूति रमाय मुद्रा धारे आंखे लाल॥
संन्यासी को रीत न जानी जटा बढ़ाय भये निर्वानी
खैंच खाल सिंहनकी आनी बैठा तले वाघम्बर डाल।
भगवा भेष दण्ड कर मांय टुकड़े कारण घर घर जाय
तिन को दण्डी कैसे कहिये डोलत मन नहीं
रखो सम्भाल॥
मू बांधे और जूठा खाय बाल खसोटे कबू न जाय
प्रभु त्यागन जग स्थिर कर माना अतिही कुटिल
महाविकराल।
पढ़े सुखमनी अमृत नाम करे खोटाई आठो जाम
अपने मनमें सिद्ध कहावे क्यों कर उतरे पार अकाल॥
घरमें तिरिया व्याही आवे आकर पीपर हुकम चलावे
माता पितासे जुदा करावे यह देखो कलियुगके ख्याल।
जगत् बीच रीति भई नई लोक लाज आंखनतें गई
लख उपकार जो होय शिरपै एक घड़ीमें देवे डाल॥
जा मधु पीवे जीभ सुहाती चोर पारनिन्दक अपघाती
जन्म गंवावे फिर पछतावे जब शिरपै आ
कड़के काल।
अहङ्कारमें ऐंड़े फिरे ठगठग लाय उदरको भरे
अन्तकाल कोई नेक न चीने आगेको कहा
होगा हाल॥
याचक को दे यश नहीं लीनो पुण्य दान उपकार न कीनो

जो काहू सों बांट न खायो कहा भयो
घर मञ्यो माल ।
या देहीको बनन बनावे भूषण वस्त्र बहोत उड़ावे ॥
तापर अतर सुगन्ध लगावै खास निकल गयो रह
गई खाल ।
जो जो दृष्टि बोचमें आई सोई देख हदोस बनाई
प्रेमी प्रभुको आज्ञा पाई नहीं तो हमरो कौनमजाल॥
सत् गुरुका ज्ञ शब्द विचारे कामको जीत क्रोधको मारे
दया सन्तोष गरोबी धारे सोई कहिए मिक्ख
खुशाल ॥

२५

सत्गुरु जारे जग जञ्जाल कृपा करके किए निहाल ।
कण्ठी बांध कियो जिन सेवक नाम सुनायो गोपाल ॥
ओंकारको तिलक बतायो नाम जपनको तुलसीमाल ।
पूजाको सब रीत बताई ऐसे किया करो तिरकाल ॥
तिमिर दूर कर ज्ञान दिढायो घटमें दीपक दीनो बाल।
महान भावनके पद बतलाए समय के सुन्दर ख्याल ॥
सप्त सुरन और तिन ग्राम ला राग रागिनो और
सुरताल ।
ऐसे ढ़गुडो रामगुरु स्वामी विष्णुदासको करि
प्रतिपाल ॥

२६

माई इन अंखियन लगन लगाई ।
पैले हो जाय आप हो उरभो फिर मोको उरभाई ॥
बिन देखे मुखकमल कन्हाना मोपे रहो न जाई ।
नागरीदास दुई बिच पावक कैसे रहत छुपाई ॥

परज—धीमा तिताला

मन मेरोरी बरजो नहीं माने ।
प्रकट करत है अन्तरको सब रहन न देत नछाने ॥
विरह बाय बोरानेकी गत जो जाने सो हो जाने ।
खिजो रहे तन जाय लगत है नागर रूप निशाने ॥

२

आवे रसिया मोहना गऊ चरावे छहो राग सुध
श्रीमुख गावे
लकुट कामर मुरली कर लिए दोहना सोहना मोहना।
मुकट झलक दृग हंसनि अलक छवि अङ्ग अङ्ग
नखसे सोहना मोहना ॥
यह छवि निरख शिव ब्रह्मा सुर नारद बीन ले
सुध जोहना ।
दीनदयाल ख्याल अब गतको अगम अगोचर ताहे
नचावत ग्वाल बाल सङ्ग गोहना मोहना सोहना ॥

३

आधीरात चांदनी छाय रहो ।
अति सुकुमारी लड़ैतो प्यारी प्रीतम उर लपटाय रहो ॥
मनसों मन नैनन सो नैना तन सो तन उरझाय रहो ।
नागरिया नागर दोउ राजत लाजत मृदु
मुसकाय रहो ॥

४

कुञ्ज पधारो जो रङ्ग भरो रैन ।
रङ्गभरी दुलहन रङ्गभरे दुलहा श्याम सुन्दर सुख देन॥
रङ्ग भरी सेज रचो है रङ्ग सो जहां रङ्ग भञ्यो
उलहत मैंन ।
रसिक विहारी प्यारी दोउ मिलकर करो रङ्ग
सुख चैन ॥

५

चतुरङ्ग गायन गाइये रिझाइये रघुनाथको स्वर तान
ताल सों राग डाट सो स्वर सम सा मान मनाइये ।
तननन नूं द्र द्र तूं तदीम तदीम नादर दर दर द्रद्रद्र
द्रद्रतूं तनुम उद तद्रनूं द्रतनूं यलल यलललूं लाइये ॥
सा नि ध प म ग रे सा सा रे रे ग गम म प प
ध ध नि नि सम प सस प स धाइये ।
सप्तस्वर तीनग्राम एकईस मूर्च्छना गुणोजन सममान
ज्ञान पाय परस पाइये ॥

६

ऐय ऐय्य ऐय ऐय्यं धा धिलांगता धिधि कुकु झाइये।
धिकिटित धृत न थूंन थूं न मृदु मृदङ्ग मिलाइये ॥
परम प्रति प्रति पधति मन उहति यदुराइये ।
पद तराना पराक्रम प्रेमरङ्ग त्रवट सुनाइये ॥

७

सिया रघुवरके चरण उर ध्याऊं ।
दशरथनन्दन जनकनन्दिनी दोउश्रनको शिर नाऊं ॥
और नाम तीरा जो जानो राम नाम चन्द्र ज्यों गाऊं।
जानकीदास राम राम इति शङ्कर शाख सुनाऊं ॥

परज—तिताला

चरनन सीस धरे दे वो देवा तेरे ।
मधु कैटभके मारन कारन हरिको जाग्रत दे दे वो० ॥
तारे देव मार महिषासुर मारे धूम्रलोचन
चण्डेदे वो० ।
सब बलदान भए बलगल सुन शुम्भ निशुम्भ
डरेदे वो० ॥
ज्यों ज्यों मारे त्यों त्यों बढ़दे रक्तवीज मुखमें दे वो०।
शुम्भ निशुम्भ मारे राचस कुलवाहन सिंह सोहदे वो०॥
ब्रह्म ईश जगदीश इन्द्र मुख जय जय कार करेदे वो० ।
देवो सुरत समाधि वेश वरदे तुसी बिन्द पहाड़ा
रहदे वो० ॥
प्रेमरङ्ग कहि सप्त शनिक जश शरण तु सांड़ा
लहंदे वो० ॥

२

प्यारी तेरे नेणां लगंदे केवर कारो ।
नैना नाल लगदे वारो दिल बिच चुभदे वो
प्रेमरङ्गदो जिन्द वारो ॥

३

भज मन कृष्ण गोकुलके वासी ।
मोर मुकुट शिर छत्र विराजे कुण्डलको छवि खासी॥
वंशीवट कट निकट यमुना तट वंशी बजावे
सुखराशी ।
सांवरी सूरत देवकृष्ण मन वसो जन्मको दासी ॥

४

कान्हा रसिया वृन्दावन वासी ।
यमुनाके नीरे तीरे धेन चरावे मुरली बजावे
मृदुलासी ॥
मोर मुकुट पीताम्बर सोहे श्रवण कुण्डल झलासी ।
मीरांके प्रभु गिरधर नागर बिना मोलको दासी ॥

५

लागोलो म्हांरो प्राण सजनो श्याम सुन्दर नट
नागरसों ।
नेक न होत पल ओट सांवरो नैन सैन ब्रजराज
कुंवरसों ॥
एकटक रहत निशवासर गुरुजन निडर निडरसों ।
हो तन मन धन ऊपर वारो चतुर सुघर युगराज
सुन्दरसों ॥

६

आवो शलोना श्यामजो थांने मुकडो आपुरे ।
मुकड़ी आपु भुकड़ो भागु है इड़े राखुरे ॥
आतां जातां आंखड़ लो लागो केण पेरे लाज ढापुरे ।
घमक घुघरड़ा छन्द हुतो घूंघट मा ढापुरे ॥
श्यामाटे नथो घेर आवो नरशोना सामो हैड़ो चापुरे॥

७

रचो री वृन्दावन रास गोविन्दा ।
चलो सखी देखन चलिये नवल अनन्दा ॥
खञ्जिरी सारङ्गी बाजे और मोरचङ्गा ।
हेलो धन वंशी बाजे मधुरी मृदङ्गा ॥
नारद आए ब्रह्मा आए गौरी गणेशा ।
नन्दी चढ़ कर शम्भू आए अद्भुत वेषा ॥
यमुनाके नीरे तीरे शीतल सुगन्धा ।
ए पद गावे स्वामी रामानन्दा ॥

८

निरख ऋतुराज वारोरी निरतत रासविहारी ।
सब गुण भरी किशोरी राधा प्रीतमके सङ्ग प्यारी ॥
तातथेई तताथेइ बोलन मुखतें पग नूपुर झनकारी ।
उरपति रपगत लेत सुलेप सो सरद रैन उजियारी ॥
बाजत बीन मृदङ्ग सुरस सुर मिल गावत ब्रजनारी ।
केलकुञ्ज वृन्दावन वीथिन सुख वरषे बलिहारी ॥

९

अंखियां श्याम मिलनकी प्यासी आप तो जाय
द्वारका छाये लोक करत मेरी हांसी ।

आंबकी डारी कोयल बोले बोलत शब्द उदासी ॥
मेरे तो मनमें ऐसी आवत है करवत लूं जाय कासी।
मीरांके प्रभु गिरिधर नागर चरण कमलकी दासी ॥

१०

सेवो रे भैया गोबिन्द नाम हरी।
ज्या मुख में नहीं नाम हरिको वा मुख धूल परी ॥
राम कहत कछु दाम न खरचे नहीं छूट परे गठरी।
कहत कबीर सुनो भाई साधो जे बोले हरी हरी ॥

११

गऊ चरावनहारा मेरी जान दंसी वाला नन्ददुलारा।
मोर मुकट और कन्धेनी कमल मुरली मधुर बजावे
नन्द महरदे धन चाराये साड़ा चितचोरा मेरी० ॥
लोकांदे घर रातना चोरी में लुटिया दिन वे चोर
असांड़े मन विच बसदा उस बिन पलक नथारा मेरी०।
आवन दे सोबादे नी कीते एक न होया पूरा
तेरा दोष नहीं कछु प्यारे भाग असाड़ा कुड़ा मेरी० ॥
ममा प्यो दी मैं खरी पियारी साहरड़े मनमानो
कन्थ बिना कोइ बात न पूछे इसं उमर बिहानी मेरी०।
देश बिगाणा लोगा धिगाणा कौन करे दिलदारी
ते बाजु साड़ा होर न कोई साहन बुधबिहारी ॥

१२

मेरी जान कोई वाला तू यार तू साड़ा वे भूंरवो
कमल वारा मेरी जान० ।
काले बागांदी काली तूती कूटन नाल पवाई
उड़ गई तूती टूट गया पिञ्जरा तोड़े चला आशनाई
मेरी० ॥
काहे कारण सुरमा पांवा काहे कारण न्हाती
तफलांदी गल हार हमेलां मैंनू बितरी दी
नथबेली मे० ।
काले कगांदावो सोयर काला डरदी बाल न गुदधो ॥
चलोना सइये जोथ वेखन चलिये आशक सूलो
चढ़दा सूलो खिल खिल हंसदा मोती मूल
न डरादा मे० ॥

१३

चारो राजकुमार शिकार सों आवत है जू।
अवध मारग मानुष खरे अभिनव सबु सिङ्गार शि० ॥
बाल वृद्ध तरुणी धरुणी मिल निरखत हर्ष
अपार शि० ।
सुन सुरपुर सो सुरस बधाए जय-जय करत पुकार शि० ॥
पटरानी निज द्वार बधाए भरभर मोतिन थार शि० ।
रावण असुर संहारण हारे बार बार बलिहार शि० ॥

१४

सुनियो बिथा रे गुसाईं व्रजकी।
रथकी ध्वजा पीतपट भूपन लखत सबी उठ धाईं
व्रजको ॥
जै तुम कहिये जोगकी बातें से सब उनहि
सुनाई व्र० ।
श्रवण मंद गुण रूप निहारत नयनन नीर भर आई ॥
बहोर एक सन्देसो यशोमत कहत दूरलो चाई।
कछु आतो नातो हतो हमोसन दोनबन्धु बिसराई ॥
सूरदास स्वामी बालपन में तब तुम धेनु चराई।
सो अब धेनु ग्वाल नहीं घेरत मानो भई है पराई ॥

१५

सुन लीजे विनती हमारी मैं शरण गही है तेरी।
तुम कीते पतित उधारे भवजालसे पार उतारे
मैं सबको नाम न जानूं मैं कोई कोई भक्त बखानूं ॥
अम्बरीष सुदामा नाम पहुंचाए हैं निजधामा।
प्रह्लाद टेक तुम राखो जे जानत हैं सब साखो ॥
तुम खेत धनाको जमायो प्रभु विनहो वोज उपजायो।
पाण्डवनको करो सहाई द्रुपदाकी लाज बचाई ॥
ध्रुव पांच बरसको बाला ताहि दरस दिए गोपाला।
सदना से ना ना नाऊ प्रभु बहोत किए सुकताऊ ॥
मीरां तुमरे रङ्ग भीनी नरसिंहको हुण्डी लीनी।
करमाका खींचड़ी खाई गणिकाहु पार लगाई ॥
शिवरीके फल तुम खाए त्रिलोचनके घर आए।
मैं काम क्रोध मद घेरा प्रभु जलदही कर निरबेरा ॥

तेरो शेष आदि यश गावे तेरो वेद पार नहीं पावे ।
कृष्णानन्द यश गावे तोपे बार बार बल जावे ॥

१६

आनन्दे नाचे जटाधर रे कैलासेर माझे ।
फणीर माला फणीर बाला फणीर कुण्डल काने ॥
दुई आंखो मुदिये हरिध्यान मने मने ।
वामे शक्तिधर दक्षिणे लम्बोदर परमानन्दे माति
वामे अङ्गे शोभे गौरी दक्षिणे गोविन्द तार माझे
भोला नाचे ॥
देव सदानन्द नाना यन्त्र बाजे भोमर गाजे
ह्रताल धरिया नाचे कालशशी मोर बिछे आन० ।
डिमि डिमि डमरु बाजे रामनाम लया सिङ्गा
माथार ऊपरि जटार भितरी बिराजित गङ्गा
सुरधुनी नाचे नारद रङ्ग साजे करि हरिध्वनि
वीणा बाजान मुनि आन० ॥
महादेव शिव शम्भु कैलासेर पति महेश्वर
त्रिपुरारि ईश अम्बापति
रास ताण्डव नाचे धुमकिट मृदङ्ग बाजे नन्दी भृङ्गी
साज साजे बम बम बम बोले बोले आछे हर हर
कहे डोले डोले गिरिजा देखे मोहे आ० ।
हरिके कहे द्विज नित्यानन्द भज विश्वनाथे
एड़ावे यमेर ज्वाला चलि देशा पथे
हटावे मेरु मध्य भज गोविन्दपद आनन्दे बल
हरि चलिवे स्वर्गपुरी ॥

१७

पापी महा सतावो । अकलङ्को महाकलापी ॥
सुखदेव गुरु मैं पायो । जिन तेरो ही नाम बतायो ॥
चरण दास आपना कोजे । प्रभु भक्तिदान मोहे दोजे ॥

१८

कारे सबही बुरे रे ऊधो ।
कारनकी प्रतीति कहा बेखत जतन करे रे० ॥
कोयलके सुत परम पियारो बारे उदर भरे रे० ।
जाय मिलो जब कुल है आपनो कागा जाय हरे रे० ॥
जैसे मधुकर जाय पद्मपर मदमाते मदन भरे रे० ।
ले सुबास अनत उड़ बैठत ऐसे कुटिल खरे रे० ॥
जे बातें प्रभु जोसे कहियो प्राणन जांच परे रे० ।
धरी उतार मुण्डतें गठरी बहोतक बोझ भरे रे० ॥
हमको योग भोग कबजाको धन्य भाग हमरे रे० ।
सूरश्याम मधुपुरी सिधारा व्रजबाल वंशी बिसरे रे० ॥

१९

ऊधोजो कहे ठकुर सुहातो ।
हमको योग भोग कुबजाको सुन सुन फाटत छाती ॥
जो यश कियो सोई फल पायो सोचत
दिन अरु राती ।
सूरदास दुख तबही मिट है जब प्रभु लग है छाती ॥

२०

घाट पर ठाड़े मदन गोपाल ।
कौन यत्न करि भरों यमुना जल परे हैं मेरे ख्याल ॥
एक चितवनि दूजे हियको रहो लगन उठत
प्रेमको जाल ।
अबार भई घर सासु रसो है जान देहु नन्दलाल ॥
इतनो सुन छाड़ो नन्दनन्दन गायो करो बेहाल ।
परमानन्द स्वामी मन हर लीना वेणु बजाय रसाल ॥

२१

कदम तले ठाड़े श्रीमदनगोपाल ।
आस पास सब ग्वालमण्डली बाजत वेणु रसाल ॥
मोर मुकुट कुण्डलकी झलकन मृगमद तिलक
लिलार ।
आशकरण प्रभु मोहन नागर प्रेम मगन व्रजबाल ॥

२२

गोविन्दा गुमानी अमाड़ो गली आउरे ।
है प्रीतम तुज विन अति व्याकुल जैसे मीन विन
पानी आ० ॥
मोर मुकुट घुंघवारो अलकें निरखत रूप लुभानी आ०।
रसिक प्रीतम सुखसागर मोहन दरसन दीजे
दधिदानी आ० ॥

२३

कान्हा थारे ओलम्भड़ारो ।
दूध दही घर माखन म्हांरे और मिठाई सारो ॥
या मारग न वर्जिये कुंवर जो हूं तुहें राखूं बारो ।
अनदोखाने दोष लगाड़े ए हैवो छे व्रजनारो ॥
तू तो व्रजनो ठाकुर कृष्णजी हूं थारो वलिहारो ।
नरसीनो स्वामी भले मलीयो हा हा हूं अब हारो ॥

२४

हरि सुमर सुमर भव तरणा हो भला करणा ।
कालजाल मद लोभ मोहमें काहे पच पच
मरणा हो० ॥
झूंठ सांच कर कर जग ठगिया एक उदरके
भरणा हो० ।
विषय विकार कुमति सङ्गतको देख दूरसे
डरणा हो० ॥
यह संसार सार एक श्रीपति समझ परे क्यों न
चरणा हो० ।
कामिनी कञ्चन देख लुभाना विसर गयो
हरिशरणा हो० ॥
यह उपाय दाव तो पायो चिन्तामणि चित
धरणा हो० ।
भाव भक्ति हनुमान युगल पद जो चाहे भवदुख
तरणा हो० ॥
कामक्रोधको लहर ज़हर सब विषय आंच क्यों
जरणा हो० ।
राधाकृष्ण कल्पतरु शीतल जहां जाय तन
परणा हो० ॥
रत्न जन्म पायो नरदेही कौड़ीका क्यों
करणा हो० ।
अधम उधारण दीनबन्धु प्रभु बलिहारो
भवतरणा हो० ॥

२५

काहू फिर न कही वे बातें ।
जे जे नर इहां सुकृत कर गए वा परको कुशलाते ॥
जैसे सती मरा चढ़ बैठे अपने स्वामीके जाते ।
वाको भेद काहू नहीं जानो सिगरो जहां किधो ताते ॥
जैसे शूर पिलत रण भीतर सहो है अनीको घाते ।
वाको दरद काहु नहीं जाना सेल लगो किधों साते ॥
यह संसारउको सब अद्भुत आवत जात कहाते ।
कहे सूर देह गति एसी समझ न परे इहाते ॥

२६

इतनो सन्देशवा को सुनावे प्यारे हरिको जिय
प्राण रहै ।
तलफि तलफि दिन रैन विहानो उनहो
कोउ जाइ कहै ॥
माहे नहीं भावे कछु न सोहावे छिन छिन विरह दहै ।
लक्ष्मणदास दया करि आवो को यह शूल सहै ॥

२७

गवरो नेह भयो मेरे जियको जाल घेरे रहत करि
बरबस ।
जोरि रह्यो इतउत न जात कहूं थकित भयो पर्यो
परवस ॥
काह कहों तन मनको बनियां मोल लियो मानो
सरवस ।
लक्ष्मणदास कठिन ह्वे लाग्यो देखत देखत लोग
सहर वस ॥

२८

मेरो गति एक श्रीविदेहनन्दिनी ।
जाके गुणगण अपार पावत नहीं निगम पार
ध्यावत चर अचर सकल जगत्वन्दिनी ॥
शङ्कर ब्रह्मादि शेष नारद शुकमुनि गणेश
भजत उर निरन्तर यमभय निकन्दनी ।
जाके पदपद्म मूल वन्दत जरि त्रिविध शूल
नाम जाल प्रबल असुर विहग फन्दनी ॥
वैकुण्ठ वास चारि लोक प्रकट प्रणत हरत शोक
कोटि कामधेनु जननि दनुजदण्डनी ।

कोमल चित विदित वानि सेवकप्रद अभयदानि
जन्म जन्म करनि कलिमल विहण्डनी ॥
जय जय जननी उदार सुरहित महि हरनि भार
अद्भुत त्रैलोक्य विदित विमल चन्दनी।
लछमण तव दास मूढ़ वरणे कह यश अगूढ़
छन छन दिन रैन राम उर अनन्दनी ॥

२९

रावरे निबाहे बनैगो मेरो लाज।
आयो है शरण खल कुमिति शिरोमणि अधमनको
सिरताज ॥
पाप आपने कहंलो गनाऊं कोटिन चलत जहाज।
लछमणदास पुकारत तुमसो दशरथसुत महाराज ॥

३०

नयनन मेरे मोहनो मूरति श्याम पोस छितकरि
आनि बसावो।
निश दिन घरी पल छिन नेकु न करो न्यारा निरखि
निरखि मन सुख पावो ॥
इन्दु सो वदन जलजात से युगल लोचन मदन
धनुष भौंहे कुटिल रूप ममावो।
लछमणदास सुखविलास रावरो दरस माह निमिष
न बाट जावो ॥

३१

रङ्गभीने रासमें नृत्यत लाड़लो लाल।
यमुना तीर शुभग वृन्दावन कर मण्डल व्रजबाल ॥
ठुमक चलत गति ललित त्रिभङ्गी हावभाव मिलि ताल।
बांह जोर वृषभानुनन्दनो लटकि लटकि गजचाल ॥
बढ़ो है कामको कामकुतूहल अवलोकत नन्दलाल।
तृण तोरत वलिहार सखी जब गावत मदनगोपाल ॥

३२

मिल गावत नार अयोध्यापुरको।
घर घर कोजो सब घर घर पुरको ॥
होत उछांव अवधपुरमें नार फिरत हरखो हरखो।
बजत मृदङ्ग घन घन ज्यों गरजत मोतियनको
वर्षा बरखो ॥
लघु तरुणी बाल शशिवदनी गावत राग समसुरको।
अग्रदास बलि जात कौशल्या वार वार दशरथसुतको॥

३३

झूठा जवाब दीज्यो महाराज।
भलाहो पधारो शो करके महलां घणाहो घड़ा देशो
गहना ॥
लखी न जाय करमको गति कहीं लाखां पड़त
या लहना।
हंसाराम हरि अब कांइ हारूं बोल वचन
लाखो सहना ॥

३४

आइलो रे मोर मन्दरवा आ आ गुणन भरे गुणवन्ता
मइयां देखत हो नैननमें अति हो छबोलरा।
जन्म जनमलो सङ्गवा न छाड़ों हो चरण न गहे
रहो हो टेहो असोसवा मदा रङ्ग युग युग जोवे दिन
दुलहा महम्मदशा चतुर रङ्गोलरा ॥

३५

आयो आयो रे कन्हैया म्हांरे ढिग कहा करां
मिझमाणो।
मुरलीवाला म्हांरो सुधबुध लोनो जानरङ्ग सुनके
मोचको तान मानो ॥

३६

मूलन मूड़ सां ताड़ो राइयां वे लखो लोग करण
बदखाइयां।
चूचक दे घर घणीयानो धोयां हो रसिया लेदो जाइयां॥

३७

केसरिया कैतक दूर भला वा म्हांरा मारुड़ा गाढ़ोड़ा
साथोड़ा।
पलंगां बैठो मोजां माणे मेरा मियां मुजरा
लोज्यो म्हारो नाथोड़ा ॥

३८

थें म्हांरे डेरे आइयो हो राजेन्द्र राजा उम्ड उम्ड
आई बादरो।

सदा रङ्गीलरो व्यथा कौन सुनै मोविन महम्मद
मोविन आदरो ॥

३९

ढोलन मेंड़े आया मैं की करां मिझमाणी।
तैन फकीरांदी मदद होई अलो नवोदा साया मैं० ॥

४०

रांझड़ा ढोलीयांमें मारूजी थें म्हांके वलिहारणा
मारूजी।
सुनियो म्हांरी सखी सहेली बे म्हें थांके चाकर रहना
बे म्हें थांके वलिहारणा मारूजी ॥

४१

बाला राज बांका म्हांरा राज बांका।
बांका घोड़ला बांका कमर कटारा राज० ॥
माथे पंच रङ्गली पाग कुसुम्भी पाग कुसुम्भी
माणा राज०।
अधिक सुहावे घूंघट उल्नट पट में तक
झांका राज० ॥

४२

ऊभोजी रममाणि लाड़ा वे रङ्ग माणें छे ऊभो म्हांरो
लाड़ो माणें केसरिया बागा छै निपट निदान वो०।
बांकोइ घोडो थारो बांकोइ जोड़ो मुगड थांरे सब्ज़
कमान वो० ॥

४३

म्हारो जिन्द लगी वे तांड़े नाल सोणा मियां तुसी
वेंजावो।
आठ पहरोला अटारङ्ग कतार टुक वेख माड़ी
हाल सो० ॥

४४

सुधबुध मोरी मति गइली प्राणतें पिया विन एमा।
जिया की लग्न कोउ कहा जानें जो जानें तेपे
भइली प्रा० ॥

परज—धीमातिताला

सेझड़िया सूनी रे थे वाझो आज म्हारे राज।
म्हारो सायबां विदेशो विरमोजीवन शो आ छेल बे ॥
होजी म्हारो लाज म्हारो अरजी सुन सुआवा।
म्हारो शायबां राजीन्द्राना खाले महराङ्गी आज ॥

२

बे मानू सठियां मार जगाइयां।
इन वेंदरदा नाल की समझाइयां
दरद जानें रब साइयां बे मानू ॥
याहीं रम रहणा वो भला सोणा।
आराकींदा थाणा महबूबांदा मिलणा ॥

३

अरे मेरो चावोरो आयो छे। रङ्गरी बातां लायो छे ॥
बनरोंको बनरो आयो रङ्गरी बातां लायो छे।
आजां मांरा सकरड़ो गोणां लायो छे ॥

४

थें तो म्हारो कदर न जाणदा बे मारूड़ा।
इतनो अरज म्हांरो मानले प्रतापसिंह दिलदो
गिला नहीं माणदा बे० ॥

५

नयनी मूलन मारो बे।
नयन तुमाड़ा बरछो दो नोकां सान चढ़ो तरवारो
चम्पदो माला गरे फूलोंदा माला तारो बे ॥

६

अणी अणी मेड़ा ढोलनो सइयोनो में साहब
सुरजन लो धानो।
अणो भोलो मा ए मेरा लान अनो जोन वे सराइयां
माण कलधा अरो ए मा मालकल धानो ॥
सोसर भीजे गो चोलनो।
रूपा में देदियां सोना में देदियां यार न देशां तोलनो ॥

७

सायबां वे राज म्हांसो अवेर लगावो निलजी
गावो गारो।
ले कोनमन लगी अगव ड़े पिछवारे दे तारो
वलिनहारो बोल सभारो साय० ॥

८

तू करले ज़ालम फेर वो मन मेरा मेरा मुश्ताक़ तेरा।
सगरी रैन मोहि तलफत बीती किसका तम्बू डेरा॥

९

सवाजी म्हारे वो तुम मनरी बात थे कांई जाने।
आप रङ्गीला थारी सेज रङ्गीलो आपही आप पहचाने॥

परज—यत्

माधो जी म्हांरी चुड़ियां करके सारो मरके जियरो
धरके छियरो फरके नूपुर जेहर तेहर धरके ननदी
गुरुजन जागत धरके।
हाहा खात हूं पइयां परत हूं दरक दरक अंगिया
दरके तनिया तरके॥

परज—पञ्चायतन

खण्ड मण्ड ब्रह्माण्ड शिव शम्भो महादेव
देवदुख भञ्जन।
वैजनाथ विश्वनाथ पिनाकपाणि शङ्कर गिरिजापति
मनरञ्जन॥

२

अबतो हरि हरि लव लागी।
सब ब्रज को यह माखनचोरा नाम धरे वैरागी॥
कहां छोड़ी मोहन मुरली कहां छोड़ी गोपी।
मूंड मुंडाय डोर कों बांधो माथे मोहन टोपी॥
मात यशोदा माखन कारण बांधो जाको पाउ।
श्याम किशोर भये नव गौरा चैतन्य जाको नाउ॥
पीताम्बर को भाव देखावत कटि कौपीन कसे।
दास भक्तको दासी मीरां रसना कृष्ण बसे॥

३

बही वंशी बाजे कालिन्दी तीर।
उमग चली सांवन सरिता ज्यों ब्रज युवतिनको भीर॥
हाय दई निर्दयी मोहे रोकी अब कित जाउं
मोरी वीर।
नागरीदास प्राणपति आगे पहुंचो छाड़ शरीर॥

परज—झपताला

आदि मध्य अन्त योगादि योगी शिव भांग अफीम
रिझ ए मतवारो।
नाभिके कमल तें तीन मूर्ति भई भिन्न जाने सोइ
नरक भोगी॥
जटा मध्य गङ्ग हर सङ्ग नित बालके भस्म लगाये
और भङ्ग खाये।
कनकफल रच्यो आपके आपमें आप पाये॥
जाके नाद अनादि पूरे भानु पञ्च पूरे खाक मुखर
धेनके अफीम खाय किये।
भालमें चन्द्र आनन्द निर्भय सदा सोसको चंवर
पवन किये॥
वाघाम्बर वृषभ वाहन त्रिशूल डारा नयन न्यारा।
सुमर हरिराय सदा शीतलपुरी भुक्ति मुक्तिको
देनहारा॥

परज—तिताला

धन्य बलिहारी जी म्हांरो राज हो राज कुमार हे
बंदोलड़ो राज।
राजेन्द्र फूल गुलाबरो थारो बनरो केसर क्यारो
रिझण रिझण बाजे हे घन॥

२

मान निहोरा मोरा अब हो जात रजनी सुन सजनी।
रूप यौवन धन दिवस चारको घटत जात
थोरा थोरा॥

३

जो मुख देखत सोई मोहत हैं हरि रस वस
भये तोरा।
हस्तराम लटू भये भटू चाड़े दोउ कर जोरा॥

४

सुन लीज्यो जी मांड़ा वेग सजन थे रसिक भ्रमर
मैं तो कलियां।
बागां री सैल करो राज म्हांरा सायबा थे म्हांके
मन रङ्गरलियां॥

तरे तरे रा फूल फूल रहाके सहल करो
हिल मिलियां।
हुस्लराम हरि कबरे मिलोगे अबहो मिलो तो
भलियां॥

५

ना जानूं हरि तेरो हो माया।
कामी कुटिल कुचालो कुसङ्गति मेरी है यादुराया
प्रगट करकर फिर मेटे काहू भेद न पाया॥
राई होय पर्वत पर्वत होय राई रङ्क करें राजा
राजा रङ्क दाया।
जो वलिहारी द्रवो दीन पर गुरुमुख भेद बताया॥

६

कब आवेंगे म्हारे बलमा पियारे अब श्यामसुन्दर
सुख देना हो।
उड़ रे कागा सगुण मनाऊं वेग जाय तुम कहणा हो॥
पल पल पन्थ निहारत बीतो कल न परत
निशदेणा हो।
हुस्लराम हरि कुवज्या सों मिलो सुख पलङ्ग
सुख सेणा हो॥

७

तें काहे बजाई बीण वे तें सांवरे मनमोहन
गोपाललाल।
श्रवण सुनत सब सुध बुध विसरी एसे डारे हरि
प्रेमको जाल॥

ऊधो इतनी विनती जाय कहो मनमोहन सांवरेसों
अबहो।
हरि विन कल न परत घरी पल छिन निशदिन मो
जोवत बीत गइलो एतो प्रीति काहे करो प्यारे
तबहो॥

८

तुम विन वृन्दावन वन घन घन गऊ गो ग्वाल बाल।
और नन्द यशोदा व्रजको बाल आवनहार कहे
भए है श्यामसुन्दर रटना
रसना लाग रही कान्ह कान्ह कर रहे अबहो तबहो
६ तबहोरे।

परज—धीमा तिताला

हो राज महलां करो हो राज मोतिड़ा अलसावे
हो खुमारो राज।
डावर नयनो चिम्ता लइो छके छकावे गुणी भावे गुण
अवगुणमें मत जिय धरो हो०॥

२

छांड़ मत जइयो बे यार॥
वृन्दावनके घाटपर उलटो देखो चाल।
जिन गिन मारिव एक दिन में सो सो वार॥
प्रेमनगरके घाटपर उलटो देखो चाल।
घायल चुन चुन मारिए खूनो फिरे खुशाल॥

परज—खम्बावती

मीन दोन धांजा तूलो बड़ोहो दिवान बड़ो दोवान
हो मान।
पंजतन पाकहाज दे ईमान आनहो में॥

२

हरियाला बना आया रे लाड़िला बना।
सर मोतियनको सेहरा विराजे हारा लगे मोती पनारे॥

३

तेरो राजा वो मैंनू प्यारो जो करदा सों दिलदारो।
ग्रोरो उमग उमग महरबान आज़म मियां मोहन
होदा वलिहारो॥

४

झालनी पइया इस्क रंझेटे दे नाल अमो वेखो
सइयो हाल वे।
दुखांदो रोटो वारो सूलांदा सालना वे मियां हुखांदा
बालन सानूं बाल वे॥

५

चल बे दरियावांदे कंढ़े अबे।
असी सोणिया सांवल लुभानी हां हां हां मीं॥

६

झङ्ग वे राबीदे मैन् दरसन लाइयां वे यांणा मै

तैरहो यारि दूर्वीनावांदे मै तो वारो वे दाना साईं ।

बांकोइ घोड़ा थारो बांकोइ जोड़ा माथे पञ्चरङ्ग

पाग सोहनाजो म्हारा ॥

७

खेंड़ेदा शिर साईं चाखदा बना मैं तो तेरे नामदा

लेवां वलाईं ।

सेलाहुण् वीना वरनाईं ॥

चढ़ोइया वीर जा कहियो उस यारसो संदेशवा हमारे

ताके कसमरमे वकदमे ।

हैं खड़े तेरे इनजार काजम गुन्हे चि करदे

खरीदारा बाजार ॥

परज—तिताला

नैवरिया राम तुमही लगाओ पार ।

जग दरियाव लोभ मोह ममता सूझत वार न पार॥

कैते पतित उधारे गिरिधर जहां तुही खेवनहार ।

सुन वलिहार कान ए विनती अबके मेरो बार ॥

२

आली मोहे नागरनन्द डगर बीच गहियां ।

डगर बीच गहियां हो वरजोरी अङ्ग लइयां ॥

रोकत टोकत यमुना निकट छूट निपट खोट जइयां।

मैं वरजोरी झकझोरी मोरी सखियां गहे वहियां॥

एसे ढीट कन्हैया सुन मैया हो कैसे ब्रज रहियां।

लपट झपट दपट लागन जाय मोरे ठइयां ॥

नयनन के सैन देन वैन के बजैया बोलत मृदु बोल

बोल हंस हंस गारो दइयां ।

ज्ञानदास प्रभु नेंक न माने अपने जियकी बतियां

ठाने कछु न बसात मेरो लागूं वाके पइयां॥

३

माधव बिलम विदेश रहे ।

अमरराज सुत नाम रैन दिन निरखत नीर बहे ॥

कुन्तीपति पितु तात नार घर ता अरि अङ्ग दहे ।

घट सुत अरि तनया पति सजनो नाह नेह निबहे ॥

मारुत सुत पति नन्दग्रहको हरिभख वचन कहे ।

जस ऋतु नाम जानि अब लागी ताके नेह रहे ॥

शैलसुता पति ता सुत वाहन बोल न जात सहे ।

सूर श्यामके दरश लहे बिन व्रज छिन नर न रहे ॥

४

व्रजके निकट जाय फेर आयो ।

गोपी नयन नीर सरिता मह उतरत पार न पायो ॥

तुमरी सीख नाव सरिता मह चावत पार गयो ।

योग ज्ञान जो तुम कहे दोनो सब परिवार लह्यो ॥

इत ते चलयो जाय नौका उत ते पवन झिकझोरो ।

सुरत वृक्ष सो मार डार गहि तोरो ॥

कैते दूरलों हों वह जलमें अङ्गन बुड़को खाई ।

ना जानो यह योग कुन्द के कत वह गयो गुसाई ॥

जानत हतो थाह वा जलको तोखे ह्नको टोर ।

सूर सो कथा कहा कहुं उनको करो प्रेमको भोर ॥

५

ऊधो व्रजको दशा विचारो ।

ता पाछे पुनि आपनि योग कथा विस्तारो ॥

परम चतुर निजदास श्यामके सन्तत निकट रहत हो।

जल बूड़तु अवलम्ब फेनको फिर फिर कहा

गहत हो ॥

हो वह ललित मनोहर आनन कोनो यतन बिसारो।

योग युक्ति और मुक्ति वारो वा मुरलो पर वारो ॥

जाके उर बसत श्यामसुन्दरघन तहां निर्गुण कैसे

आवे।

सूरदास सोइ भजन बहाऊं जाहे दूसरो भावे ॥

परज—कलिङ

थारो देश रूड़ा छे जो मारो राज मारवण ।

उदियांपुरदी कामनी गढ़ बांकों चित्तोर

घूमघुमालो घाघरा बांको नयनांको कोर

बिजियापुरदी कामनी नरवरगढ़ो रूड़ो लाग छे जो।

२

तसादीयां मैंड़ीयां आखीयां मोंगु यारदे मिलणनू।
भव आमी वे वी वांक खाब जियाकी मेड़ा वास्ता
सांवलियाबे घटाकारियां दिन रात पई बरसे दोयां॥

३

मारूजी थाने जाम न देग्यां म्हारे।
पायल मोरी रुनझुन बाजे सास ननद मेरो
जागे मैं कैसे आऊं॥

४

उंचे नी डंगरला साडे कोल चढो नहीं जाणदा बे।
एक लडीवारो निकलो नाजुक दूजे बुलावे भनभादा
साड़ेकूं॥

५

रांझणा मेडी जिन्दड़ी तरसामी बे आखा जञ्
सिहाल वेग जामी।
है कोड रांझिनू आन मिलावे मनरङ्गदे दिलांदी
पर न पामी॥

६

ममधन री तू दादड़ीनी कुड़िए गोदी में यार
छिपाय लेनी।
तुझनू हाथोदा भावे चूंडा तेरी खरकी अनमोली॥

७

हो राज मै से बोलो म्हासे बोलो।
मैं तो थारो दासी वारो जनम जनमको बे त
घूंघट पट खोलो॥

८

माझली रात मारूवड़ो मारू ढोलो अधक
छकावे जो थे म्हारा मन।
सगरी रैन जगावो सदारङ्ग कहीं सखी परज
म्हाको राज माण॥

९

सांडे पेर नालबे बन्दांदे अनबट नाल बे।
झांझर छलोछलो बांसोड़े पेर सादरे दे कदम चलो
मेड़ा मियां यार माणावन चल चललो बे॥

१०

छाड़ो थाने जान न देग्यां।
कमर कटारो थारो बांकडोरे धरें बून्दी तरवार
बरे बून्दे बचे॥

११

चञ्चल नयना मतवारे रे तिहारे कोन बिरमाए
हारे कजरारे।
देखो प्यारे दिल घायल कीने जिन्द पुकारे हुणकारे
बिसियारे॥

१२

साड़े पेर नाल बे बन्दो दे अनवट नाल बे।
झांझर छलो साड़े पेर नाल बे साड़रे कदम चलो
सोरी मियां यार मनावन चलो चलो बे साड़े
पेर नाल बे॥

१३

दारुड़ी हो महाराज पिवा क्यों न राज
दारुड़ी रे पिये मोहे आवे दूनी लाज।
रैन खुमारी थारी भलो ए लगत है
भर भर प्याले म्हाणे दोज्यो म्हांरो राज॥

१४

ए री हो तो पर पायन बाजो कोई आन मिलावे
चतुर सुघर सुरजन बालमुवा।
जानी पीउ तन मन जिउ तुम बिन कल न परत
हां रे मोत पियरवा सुरजनवा॥

१५

कमलीदी वारी बे नदाना मियां
भला कमली दी वारी बे।
नदाना मियां भला इश्क तु साड़ड़ी बान पई बे
यार बे॥

१६

दारुड़ी री बातं कजरा करे हो राज प्याला
पीवो चतुर सुजान।
मै तो थारी दासी वारी बे तू म्हारा सायबां मिकसो
रोप्या थाने जभो म्हारो राज॥

१७

मारूजी सो कहज्यो राज अमलांरी अमलांरी बात।
चन्द्र सरीखो थांडो मुखडो बिराजे थांजी कांई
गोरी गोरी गात॥

१८

मोती रोड़ो आटो थासे लागो म्हारो राज लाधो
होते दीज्यो जी।
सालूडारी सलवट मांतिडा मैं भूलो छे राज
नोदडियांमे घूला छो राज॥

१९

नयनां नींद न आवे मांडी सइयोनो राफ़ण नजर
आवदा मैडे।
चश्मके टारो खारं बूद चूं खुशपसन्द आरा के गुमैयार
बुवद चुं खुशपसन्द सुथड़ाई इश्क़ जगाया मैडे॥

२०

ठाकुर रे तू आइयो म्हारे डेरे सुन मारूजी हो राज।
सोने दा सुराई मोनेदा प्याला आप पोवे
म्हाने प्यावे॥

२१

हो जी हो जगो जा म्हारे निदरा नदान।
मतवारे ढोला सुन मारो बात॥

२२

छाड़दे लङ्गर घर जान दे छेलवा।
यमुना जल भरन जात रहो हमसो करत बरजोरीरे
लङ्गरवा॥

परज—एकताला

प्रकट प्रीति करि रसके बस भए सरस वदे बिसर गये
बरबस पिय परबसमें परके।
केसरका रङ्ग लाल बेसरका रङ्गराग मोतिमसो
माग भरे प्रेम भरके॥
चुनरी सुरङ्ग रङ्ग कुचको अङ्गिया उतङ्ग बसके अनङ्ग
अङ्ग अङ्ग अङ्ग करके।
सुन्दर तनके सिङ्गार जोवन निरखो बहार जोवन
सो कर पियार हार हिये दरके॥

२

मारा डाने जगावेछे म्हे तो कांई राज लाज
पाज म्हाने धनी आवेछे म्हे कांई जानो राज।
सुनियोरी मेरो यार परोसन आधो आधो रतियां
म्हाने जगावेछे म्हे कांई॰॥

३

हेली हो कांई करो माई नन्दनन्दन बिना कछु
न सोहाई।
मोर मुकुट की लटकमें मन अटक्यो भावे नहीं
खान हर विन सुध बिसराई॥

४

निपट हैतको सुध विसराय डारो मोहन प्यारे
कठिन भये श्यामसुन्दर जियते विसराय डारो।
नई प्रीति नया रङ्ग कीना हरि अनत जाय एसे निर्दयो
व्यथा नेक न विचारो मारो॥

परज—धीमा तिताला

ऊधो प्रीति करो पछुतानो।
हम जानो एसो निबहैगी उन कछु औरहो ठानो॥
और सो हिया कोई न पतीजे बालत मधुरी बानी।
औरनको वैराग सिखावत आप भए रजधानो॥
अब तो सेज सुहावत ना हरि सोचत रैन विहानो।
जब ते गमन कियो मधुबनको नयनन बरषे पानो॥
ऊधा कहियो श्याम सुन्दर सो उर अन्तरको जानो।
सूरदास प्रभु मिलकर बिछुरे ताते भई है दोवानो॥

२

ऊधो सुन सुन आवत हासो।
कहां वे तोन लोकके ठाकुर कहां कंसको दासो॥
इन्द्रादिक को कौन चलावे शङ्कर करत खवासो।
नोस मनेतो बन्दो जन जाके सेस सोसके वासो॥
कमला जाके वसे निरन्तर कोन गिने कुब्जासो।
सूरदास प्रकट कर बांधे प्रेम प्रीतिको फासो॥

परज—तिताला

बिछो बे मारी बेलोको।
लगीयाणो बिरह सांईदे नाल इश्क दे नाको भोकां
आवो वे सुनु यार बे नयनरो दोजार मजारो॥

२

अहो वेख पई सुराइयां या रब्बा मैंड़े पाले कोल
पे बल देनी रहे मुसाफिरां यार।
मैंड सङ्गण लड़के गए मेहर न पाइयां उना जाल
मा मानू सुतानू छड़के गए
केते बिछो है विछड़े या रब्बा ओ गया सो गया
गए आमो॥
मैं सुतियां सुहाग बीच यार।
पुनूदे गले लगमें वांहट टोला मे राणो नहीं या रब्बा॥
मेरी बूकुल गदो अगर लागि लानी सहेलियां
या रब्बा तुमो बहोत तीदे कोल।
सभो थीयो जोगणा या रब्बा मैंड पुनू नू लावो ढोल॥
इत घिणा वी तकड़ा या रब्बा तुसि एंद
घिणा बो नाल।
मेंड शिर बदनामा दे गया या रब्बा औह घड़ियन
ढेंढा कोल॥
भूलो माचो थलां दे या रब्बा मैंनू मोत आखें बलो।
इथे न कोई तकियां न आसरा या रब्बा ना कोई
कुच्छगलो॥
मेकू का तरफ खुदा यदीयां मेकर कर बांह खलो।
नारो धोया ससाये या रब्बा॥
कोई तेनू बोलाच घणि मेंड़े पुनू दी एहियां सूरत या
रब्बा कोई विरलो माव जाण।
आधी रात निखण्ड है या रब्बा इना हातानें लाई
सनदेके पुसराबदो या रब्बा॥
मैंडे पुनूनू ढूंढता वनन पनत ठदे दी या रब्बा।
मैंड़ो पेंडो पड़न बबूल हो केते पूनू नू मिले
या रब्बा नाहो तो मरणा कबूल॥

३

हो जो सोलाल लागीहो राज पानि सायंशा जी
नित निहोरा राज।
म्हे तो थारो दासो वारी थे म्हारा सायां अरज
धाछे महाराणी॥

४

मैं वारो वारो वारोबे राजेन्द्र वारी मे तो बलिहारो
थारी मे।
रसिक रङ्ग थारे मिलवे कूंटो नैणांको मारो बे
राजेन्द्र॥

५

अछा गोरो दा सावला यार।
सांवरा मेरो जान बे मैंड़ा रब्बा लाया सांवला
लोकांदे भावे चाक सहेलो सांडे भावे रावला यार॥

६

आज म्हारे मङ्गलरो है रात।
आवो म्हारे बमना बैठो म्हारे अगना
किस गुण विचारा शुभ छे साहागको रात॥

७

तूं करलेरे जाल फरेब मनमे मुश्ताक रहेदेरा।
तेड़ेरे बेखणनू चतुर सुघर सुन्दर बालमुवा
मेरा जिय चाहे घनेरा॥
सगरो रयन मोकूं बाट जोवत भई किसका तंबू
किसका डेरा।
आवो सजन मिठबोलना साजन तनमन वार वार फेरा॥

८

सबाजी म्हारे बे तू मनरो बात थे कांई जानो।
आप रङ्गीला थारी सेंज रङ्गीलो आपहो आप
पहचानो॥

९

रांभा तेड़े मुखड़ेदो लेवे बलिहारो मैंनू लगदो
तेडो सूरत प्यारी।
इश्क महोबत आखा कितवलकु की सोहनी
सूरत बेकरारी॥

१०

भावदियां बे मैंनू तेंडी अंखियां।
सेरा बांगू बे करुण कलाची धावदियां।
नावे मैंनू कुण तेंडा दिलब मेडी लाग रखियां॥

११

नयनों मूलन मारीरे।
नयन तू साडी बरछी दो नोकां सांन चढ़ो तरवारीरे॥

१२

चमेली माला गले फूलदी माला।
नयन बजहन तन कौन सो पूछिए कोई लाल
चम्मे घाला॥

१३

मारवण बाला वन्द तो मोह्यो है।
रांज हांजो कांई अमलारा छाक्या म्ह छे राजकुमार
राजथाने खमाजी खमा कर लेश्यां॥

१४

बरछी मारो वे नयना बीच तोल।
सुन्दर श्याम मनोहर मूरत तू मारा अनमाल॥

१५

कांई करां मनुहार बे साजण आया।
छत्रपति म्हारे महल पधारना बे तन मन दोनो
वार बे सा०॥

१६

बीरतो बुलावे दमदे वो।
घडी पल मैंनू चेन न दे दे गोरो नज़ारे कमदे वो॥

१७

ड़ाबर नयनोंरी मानो गरशानि म्हाने शानि बुलावे।
थे कि जानो म्हारो मनडो लाग्यो छेवो माणो
गर पोव्यो माणि आन जगावे॥

१८

मारू जी सो कहे दीजो राज मारेरे मनकी बात।
मैं तो थारी दासो सायबां जनम जनमकी थां सो
लग्योछे म्हारो काज मा०॥

१९

श्याम उनींदा तू मेरे घर आया वो।
पंथुड़ामे जोई जोई दरस देखावो
खूब बलिहारयांदां सांवल सानूको जुदा वो॥

२०

साजननू वेग मिलामो मेरा प्यार हो जिन्दडीनू
आन जीवामी हो।
सेज सूमती वारो नींद न आवे कधी तो दरस
देखामी हो॥

२१

महाराज मोसो कुंड़ी बे कहियोजी।
बालम रूम रहा छे होजो बलमा सइयां
जाणि छे जी वारी राजदुलारीको बात सुनजइयोजी॥

२२

कांई जाणा राज म्हारा मनकी हांजो म्हारा
मनकी हो बात।
छत्रपति म्हारे महल पधार्यो राज पको पायल
म्हारी झमकी हो राज॥

२३

आवां न करेस्या राज म्हारे डेरे आवन।
अनहट बाजे म्हारा पगका बिछुवा लगो याद नहीं
भूलदी॥
आप न आवे वारो ना लिख भेजे जिन्द तु साड़े
नाल घूलदी।
राजा पछछजो जोजो राजा राणा
राजदुलारी रो बात सुन जाइयो लोग कहे छें
थाणे साजणा राज॥

२४

थे तो मो सोभलो वो राज कोनो राजबर म्हाके
नहीं महाराज थे।
छत्रपति म्हारे महल पधार्यो राज पायल
म्हारो छली वो राज थे केसरियाजी म्हारे॥

२५

क्यों गई यमुना पानी जानी मनमोहन मिल गयो ।
बरबस मोरी बइयां झकझोरो चितवनमें
बसबस कर डारो न जानुं कौन चेटक चित ह्वै गयो ॥

२६

तातें न बधा भक्त भलो तिन तिनकी मत
नेकु न अनत चलो
श्रवण परीक्षित नर राज ऋषि कीर्त्तनक शुकदेव ।
सुमरण करि प्रह्लाद निर्भय भयो कमल हरिपदसेव ॥
अर्चन प्रथु वन्दन सुफलक सुत दास भाव हनुमान ।
सखाभाव अर्जुन सम कीनि श्रीपति श्रीभगवान ॥
बलि आतमा समर्पण करि करि राखे आपने पास ।
अतिमति प्रेम रच्यो गोपिन सों बलि परमानन्ददास॥

२७

किसो बखानि आव सांवल ।
नयन लगे तुमो नाल असाड़े सोहन रूप देखाव ॥
इन गलियां विच फिर तो मकरदे मैनूं देखणदा
चाव ।
चलत चाल सुगड़ रंगलो विसारो बलिहारी
यानूं जीवाव ॥

२८

आयारे मेरा सांवल प्यारा ।
मोर मुकट पीताम्बर सोहे उर बैजन्तीमाल सांवरा ॥
लटकन चलन मुसकान चितवन मोहत प्राण हमारा ।
नन्दनन्दनको छब निरखतहो उमानाथ तनको वारा ॥

२९

भइलोरे आज मिलनवा मनमोहन सुन्दर सनवा ।
राजबहादुर निरख दुख गइला नन्दनन्दन
मनमोहन कनुवा ॥

३०

देखिये तो समान एक ठौर ।
कनोश उपर चन्द विराजे तापर शोभा और ॥
धर पर गगन गगन पर धरणी ता ऊपर विस्तार ।
कोटिन कोटि तरैयां सोहैं रवि उनये भिनसार ॥
गुण निर्गुणकी शोभा बरणूं सब पर एही भाव ।
सूरदास यह दृष्ट कथा नही पण्डित अर्थ बताव ॥

३१

राधे तेरे नयन किधो बटपारे ।
चितवत चित बाणसे लागे घूमत जौं मतवारे ॥
अञ्जन दे पियाको मन मोहत करि कटाक्ष
बिसहारे ।
सूरदास प्रभु भक्तनको सम्पदा नृत्यत ज्यों नटवारे ॥

३२

रांझन जोगी जोगी जोगी कर मेड़े नयन लगाए हो ।
पलकां सेलियां भोहे जटयां सइयो गरदन
पेतो विभूति रमाए ॥
हुण की करां कुस रही मैं थो मूलन मणदे मनाए ।
रुयेदो मठो बिच आसन मारे बैठे फिर थे ना
फिराए ॥

परज—धीमा तिताला

मूलन दिसदे मियां मारवाण लढ सिधाने
कथे कारवान ।
कार दे हिजरां मेखु कित कारण लाए कारीगरी
कर गए बेकार ॥
दान पुरनूं कले जैनूं असी न जुदा कर ले गए
जालिमा जान जान ॥
रान भरो हिजरे अज़ चश्म पुर आबम् वह दे हम
चुना बदानम् ॥

२

हे हे हो हो ताए को हां सरस्तावे ना होदा
आलम विचारस्ताने सनुमनके ।
बनोनु घिन कले आए असवारोनूं फिरश्ता
लिखदियां
मरसण कानियातें कागज बनदा अहवाल गुजस्ता ॥

३

कलापो थासे दारुड़ो मांगे ऊभो बांको मारुड़ो ।
राज मतवारों राज सारी रैनके काम उनीदे छे ॥

४

अमलांरो रातो छै क्यां म्हारे आइलो ।
सदारङ्ग छो जी म्हाणे साहबां आप पीवे मुझे
पिलावे छे क्यां० ॥

५

राह देखावो मोणा तेरे दरवाजे बैठा कोई कब
लग तेरो राह देखे वो ।
जो तू अपने घरको घर जानता नाहीं इस
मालूम हुवा अपने लेके आवे ॥

६

इस प्यारे नाल लठगियानो मैं ठगियां ।
रांझन मैंड़ आपो आदा हंस हंस गरे लगादा
इन बन्दियां कोलन डरदो चटपट अंखियां लगियां ॥

७

इश्क लगा तैंड़े नाल सुन साजन सांई ।
जो भामो त्यो पाल तुज बिन मैंड़े हेर न कोई
सुन नन्ददे गुमानो गोपाल ॥

परज—धीमा तिताला

रात चांदनी बनी चांदनीके देखे मोहे प्यारो
याद आवे ।
फूलन कोरा जरद गजरा फुलवाकी सेज पर फूल ले
बिछावे ॥

२

एरी मैं तो लाग रही चरण ।
महमद शा पिया सदारङ्गले जनम जनम हो शरण ॥

३

गुरुजी म्हाने मोल ले दे कारो कारो कामरिया ।
राम जपन को माला ले दे पानी पीवन कों तुमरिया ॥

४

सायबांजो म्हाड़ो चम्पा वरनो राज ।
हद चम्पा हद मोगरारे हद चमेली फूल
मारवण बैठी सेज पर कांई माणिक ढिग मन झूल ॥

५

हुण तो नयन लगे वो मेरी जान अबी वो यार ।
नयन तु सांड़े वारी बरछीदो नोके बे इश्क तु
साड़े नाल फन्दे वो ॥

६

वो मैं तर गइयां रांझा वो ।
पांच रुपैया वारी पानादां बीड़ी नजर यारांदा
कीती वे ॥

७

मैंड़ा अनबेलड़ा रावलको आंखदा ।
पांच रुपैया वारी पानादा नजरानो मांगत
सारो रातदा ॥
मैंड़ा काल आमो वे भला वे मनडा लग्या तेड़े कोल ।
साड़े दिलादी वारी मोला हो जाने वो हरगुण
कहे दे आला मोल ॥

८

मारूजी वो मारो हेलो हेलो न बताय जापन मारूड़ा ।
मारुदे आंगन चम्पेदा बूटा साथ सहेलो मिल
जुड़ो छे जुड़ो छे ॥

९

दारूडारी बात झलक रहो वो ।
सोनेदो सुराही वारो मोनेदा प्याला आप पीवे
भंवर सुजान आलो जी वो ॥

१०

कलाला थारो दारूड़ो ए अजब तमाशा
पीवत करे मतवाला ।
सोनेदो बतक जोबन मद भरये वो नयना जलाउदा
प्याला ॥

११

आंगण आ वे मारू जीवे ।
सोनेदो सुराही वारो रूपेदा प्याला
वे भर भर प्याला तू पीवे ॥

१२

नहीं भावे नहो भावे छे गुमानो अनबोलनाजो
थारा नहीं भावे ।
सोनेदो सुराहो मोनेदा प्याला वे मद छक्या छक्या
घर आवे ॥

१३

मा मूकड़ो म्हारो जोव छे गोरी बहियां छार दे ।
लटपटो पाग केसरिया बांगा वो नोलो घोड़ारो
असवार छे ॥

१४

राजाजी म्हारो कांई बेगुन्हा नजरो नजरो करो ।
अबकी बार पिया मानत नाहीं मान पियारे
म्हारो यो झगरो ॥

१५

छैला मेरी कदर न जानो ।
कर मुकरो वो तु जो वा विहारो वो राजा बे बहादुर
गर्व गुमानो ॥

१६

थे कांई जाणा छे घांटो राज आमि वो छे गाज ।
अनवट बाजे थारा पग का बिछुवा घुंवरिया बे
घननन गाज ॥

१७

नजारा मेरा चोला दा रङ्ग बे ।
चोलोदा वारो अजब कसोदा कठिन बालोदा
तिखड़ा नादोदा तेरो जुल्फ कुण्डल बल खायानो बे ॥

१८

लायवां दिल जावो भो ।
एक अंधेरो दूजे बादर घेरियां वो मियां
जिन गलां तोंमें डरियां सोई गल्लां ॥

१९

म्हारा मारूजी ने कामन थाकियो के ।
हूं तो थारो दासो भायवां जनम जनम रो राजमें
तो थाई देखा देखा देखा देखा जो वो म्हारो ॥

२०

जारे जारे सिपैया मै तो मोहो रे ।
मेरो कह्यो तू एक न मानो तेरो बात मैं ना मह्यो रे ॥

२१

मै तो भूलो नवेलो का मै नु भूलो नाहो बे
भूलो रांझा तेरो चाल ।
रब करे तूसो आनके मिलामो मेरा मियां
सांड़ा दिल तेंड़े नाल धूलो ना० ॥

२२

दिल महर यार दा बे वेखा सइयो पेडुंडा तकेदो बे ।
लिख भेजो मेरो जानकूं कांसो विहार हेमन्तऋतुके
वासो के ॥

२३

कित गए रो श्याम कन्हाई ।
इत यमुना उत गोकुलनगरी कितहु ढूंढे नहो पाई ॥

२४

नेह नेक न भावे आलो कासे कहूं बोत ।
आप तो जाए द्वारका छाये कौन अनोखो रोत ॥

२५

मानें है राजेन्द्र ओ जो भावे छे अणो भात मानें दे ।
चन्द्रवदन मृगनयनोरो सायबां गोरो गारो गात मा० ॥

२६

मुरलिया ते वस कीनोरो कोनो है जग सगरो ।
अधर मधुर ध्वनि बाज बाज उन गाज गाजरो
पहोचत धाय धाय सब वनमे छाड़ दई
सब कुलको कान ॥

२७

प्यारे ते नु मतनु मत नदर रहदा वो नाहो
तनदे रतन मन जपतू रामनाम ।
नादर दर दर दर दर दर फिरे मत तूं तन मन
हरिसो लगाव समझ बूझ नहो तेरे कोज
आवे काम ॥

२८

कांई मो सो वैर परारो मुरलिया ।
जातिपांति तेरो कछुश्र न जाना तू जङ्गलको
लकरिया ॥

२९

निरख ऋतुराज वारो ।
सब गुण भरो किशोरो राधा प्रियतमके सङ्ग प्यारो ॥
नोलाम्बर पोताम्बर राजत झमकत कोरकिनारो ।
युगल खड़े कुञ्जनमे विहरत शोभा पर बलिहारो ॥

२०

थारो वर रूड़ो छे जी हो राधारानी ।
धन्य धन्य भाग्यसुहाग तिहारो और अविचल
बांहो चूड़ो ॥
सांवलियो पातलियो सुन्दर जैसे शरद शशि पूरो ।
जानकीदास हरि बालहो लागे और जग लागे
म्हांने कूड़ो ॥

२१

थांरो बातें लागे म्हांने मोठोरे बालहा ।
सांवलियारो मुखड़ो यौवन मान्दुर जनलोक
मान दोठोरे बा० ॥
सास ननद मोरो दोरानी जेठानो जैसो बलतो
अङ्गोठोरे बा० ।
नरसोनो स्वामी सांवलियो उघोरो कर्म नो
चोठोरे बा० ॥

२२

वंशीके बजैया जू वेसेहो बजावो सांवरे ।
छ राग छत्तोस रागिणो न्यारा न्यारोके सुनवैयाजू ॥
भैरव मालकोश हिंडोल श्रीमेघ दोपकके गवैयाजू ।
चेतसिंह कहे गिरिधर नागर ब्रज के हाहु सहैयाजू ॥

२३

मन मेरे लाग रहो मैयारो मनमोहन
पिया कान्ह कुंवर प्राण प्यारेको सूरत ।
कल न परत घरो घरो पल पल छिन चित गति
जात न कहो ॥
चटपटे परे भटपट नयना मिलनेकी टेक गहो ।
सब सुख सरस मिलगो यशुमति सुत आंसा सुख
आज सहो ॥

२४

चांदनो रात अति भावे सखो मोहे ।
वृन्दाविपिन विपुल वंशोवट यमुना निकट सोहावे ॥
मण्डल निरत करत प्रिया प्रियतम कोउ मृदङ्ग कोउ
बोन बजावे ।
जानकीदास श्यामकी मुरलो सुनि मुनि मन ललचावे ॥

परज—तिताला।

खुल रहो चांदनो पुलिन यमुना तट ।
रास रच्यो वृन्दावन मोहन सखिन समेत जहां
वंशोवट ॥
हावभाव कर लेत चोर मन नृत्य करत बहुविध
नागर नट ।
जानकीदास विलास रास सुख निरखत छवि मुख
लागो हरि हरि रट ॥

कलिङ्ग राग

हमे राम रघुनाथ हो मारत नाहीं लागत यमराज
जगायत।
काम क्रोध मद ममता वनजो कुटिल कपट
अभिमान बिसायत ॥
सुमिरन राम सिया रस पारस राव सो बना रस
लगन लगावत ।
प्रेमरङ्ग प्रभुको सङ्ग प्यारा चाल सुचाल कुचाल
कफायत ॥

२

मन उरझ्यो श्याम सुजान सो बाज आई मेरो बान सो।
कल न परे छिन पल घरो घरमें लाज तजो
कुलकान सो ॥
गुरुजन बकत चबाव करत है सुनत नहीं मानो
कानसो ।
बौरो भई खिरकिनको फिरकिन तनक वंशोको
तानसो ॥

३

तन मन मेरे रामचरण है ।
जबते सत् गुरु नाम दियो है तबसे रघुवर दास
शरण है ॥
सुख दुख सचे पूर्व जन्मके वरवश आयुर्बल रैन
भरण है ॥
प्रेमरङ्ग हमारे प्रभु तुमरे भक्तवत्सलके विरदसे
तरण है ॥

४

बांसरिया किने बजाईरे
मेरो श्रवण सुनत सुध बुध सारी बिसराईरे।
सुनरी बीर तीर यमुनाके मधुर मधुर सुखदाईरे॥
पञ्चबाणसम तान लगत है अङ्ग अङ्ग शिथिलता
आईरे।
तकभक रहो जिह्वा दशनन गहि जानकीदास
मुख चाईरे॥

५

श्याम तोरी अजब रङ्गीली अंखियां।
आप रङ्गीला वारो सेज रङ्गीली और रङ्गीली सखियां॥
रवड़ी यां कछुक सुना वानी वे तेडरे कारण भई
कोयल रगियां।
पाक इश्क् रबदी ता नामदार होर मही तो
पावा मेमरियां॥

कलिङ्ग—ठुमरी

सांवलिया बिलमायोरी।
सुनयोरो मोरो अगर परोसन उन बिन कछुन
सोहायोरी॥

२

सांवलिया तोरे नयनवा रसीले लागें प्यारियां
बड़ी बड़ी अंखियन कजरा दोनो तोरो चितवन
मोहे मारियां।
ब्रज वनिता सब कहत प्रेम वस लागो प्रेम कटारियां॥
मन मोहत जोहत मनभावन लोक लाज कुल
डारियां।
अमृत स्रवत रैन दिन प्यारे कृष्णरसिक
बलिहारियां॥

३

नीको लगत मोहे अपने पियाको आखर मोलो लाज
भरीहो
खञ्जन मीन कमल मद गञ्जन रञ्जन मनसुख
सीमा धरीहो।
श्याम सेत मनसिज सरसावत तामे अरुणको रेख
परोहो॥
नवनि विलोकनिकी छवि घन है उर बिच
वर्षत प्रेम भरी हो।
कृष्णरसिक मैं हेरत ठाढ़ो नित प्रति कृपा कटाक्ष
करो हो॥

४

सइयोनी मैं की करां कांइ रांझण मिलदा नांही वे।
रांझण मेड़ा मे रांझणदी राणा सोरदा सांई वे॥

५

मोपे भरइ न जाय राम पानिड़ारे।
कङ्कर कुइयां पाताल जल पानी गगरा न डूबे
मोरी कमर पिराय राम०॥

६

मोरे ललना हो हो नीचवा बसेरे कलबरो।
या उचवा बसे मोरे ललना हो हो भोरे मोरे
मतवरवाकी लाल पगरो॥
या अरे मोरे ललना हो हो लचकत
आवे मतवरवा मो०।
दहने हात सरवा बायें हात करवा मोरे ललना हो
घूमत आवे गज चलवा मो०॥

७

चांदनो रात छिटक रहे तारे आधो रात
पहरके तरके किन सोतन सिखलाए पिय प्यारे॥
कृष्णरसिक मन मान लेहु अब होहु न एक पल
मोहि सन न्यारे।

८

रुड़ अन्दर भायल वे काहो।
होरां रांझेणदे इश्क् नो पगियां दिल कोता सइयो
मायल वे॥

९

चला जारे गुमानो मैं नहीं बोलूं।
ना मै बोलो ना मै चालो काट कटीलो छूड़ी
मारी मैं०॥

१०
सांची कहो रे विरहिया जिय डूबो डूबो जाय।
माथे की टिकुलिया मोरी गई बिसराय कंगना
झुमि झुमि जाय॥

११
मोरी अंखियां लजाइरी ननदी तोरे अगवा।
आगे देखें पाछे देखें अगर बगर के लोगवा॥

१२
बेंदिया दीज्यो मोरीरे कैसेके आऊं तोरे पास।
बेंदियां मोरी काहू छीन लीनी कैसे कटे सारी रात॥

१३
मेरोरी नादान बनरा बाजूबन्द महरको कंगना।
बने पियारे डेरे डारे नीके मैदान बनरा॥
गले तेरे खासेका जामा चोलो लहर रही बनरा।
सिर तेरे ककरेजो चीरा गल सोहे फुलवनको हरवा॥

१४
मैं काके सोइ रहूं साथरी सूनी परी उन बिन सेजरियां।
एक तो अंधेरी राती अति डर पाऊं दूजे तरफ
तरफ जिय जातरी॥

१५
मैं नहियां राजो नहियां छाड़ दे मोरी बहियां।
ग्रानबाज पिया चुनरी रंगाय दे विनती मानो
मोरी सइयां॥

१६
नजरियां लागीं मोरे गुइयां हमारे सइयां को
ढाल तरवरिया सइयो कमर सो लागी।
फुलवा बीनन गई बगिचवा सइयांके सङ्गमें पागी॥

१७
काहे कु लगाई ऐसी प्रीति दैया मोरे मनमें रहोरी।
जो मैं ऐसा जानती प्रीति किये दुख होय तो नाहक
करती सहोरी॥

१८
मोहे नीको लागो तेरो गांव।
आगे चलत हूं चल न सकत हूं पाछे परे मेरो पांव॥

१९
मोकूं गारी दीनी आपो गरजे आपो बरसे।
हंसोखुशी सो पिया मोरे डेरे आइला रसभरी
बतियां कर कर मइ कूं गरवा लगाय लीनो॥

२०
एरी मोहे गरवा लागन देरी निशि अंधियारी कारी
घन गरजे।
उमड़ चहूं ते आये बदरवा मोरो जियरा लरजे॥

२१
कागा बोले दाहनेरी मनमोहन आवेंगे मेरे धाम।
जबसे कागा बोले तबसे मनरस पागी ओर रसरङ्गसे
दिल उन सङ्ग लागा॥

२२
तुमसो नयना लागेरी जासो मेरो मन अटक्यो।
सगरी रैन मोहे तलफत बीती भोर भए गरवा लागेरी॥

२३
बंसरी बजाय मन मोहोरे कान्हा।
हरे हरे बांसकी बंसी बजाई ऐसे बजा तोको
राम दुहाई मइकूं नींद न आईरे कान्हा॥

२४
बटोइया जियरा जातरी।
सगरी रैन मोहे तलफत बीती तरफ तरफ घबरातरी
कृष्णरसिक हंस मो उर लागो होन चहत अब प्रातरी॥

२५
गारी दूंगो में ना डरोंगो लालारे।
दूंगी गारी मैं अपनो उमङ्गसे सौतन की मैं ना सुनूंगी॥

२६
सुवावाली बनो मैं पाया अब मेरी जान लाड़ो मैं पाया।
हाथ तेरे जराउदा कंगना महदी देख लुभाया॥

२७
लोगोरे बिरना जागे।
एक चन्द्र दूजे निर्मल तारे पायलिया मोरी बाजे॥

२८
ननदी तारा बिरना मई छेड़त।

तोरे बिरना कूं किस समझाऊं निशदिन मइकूं छेड़त
सगरो रैन मोहे तलफत बीते सिरको गगरिया
तोड़त ॥

२८

आमार वंशी के ले गइलो चोरारे सांवल भला भला बे
आमार बाड़ी आओ बँधु खाओ नागर पान।
बैठन देवो शीतल पाटी जौबन देवो दान ॥
एक सखी तोरे घरमें गई ता एक सखी तोरे द्वार।
तन मोशी चाखि काजल कनको मारे जाय ॥

कलिङ्ग—खेमटा

वंशी बाजाय मन लेगयो रे श्याम रे काला रे कान्हर
आमार बन्धु आमार जोरी प्राण म०।
कालिन्दीर तीर कान्ह बजाईला वंशिया
आमार वंशी रङ्ग डर टोली प्रेम रो तरङ्ग ॥

२

बेड़ा पार करिया श्रीराधारी व्रजनाथ।
सबसखी को पार कारी ली लेवें आना आना
राधाजीको पार करो लो लेव कानेर सोना ॥

३

किंगरी निर्वाण बाजे बाजे बाजे एरी सजनी
ज्ञान सिरोहा बांध कमरमें शूरा रणमें आया।
प्रेम मगन ह्वै शूरा खेले एक एक पर धाया ॥
शूरा ज्यों मैदानमें क्या कूरा का काम।
शूराको शूरा होय मिलियें तो पूरा सब काम ॥
कहे कबीर सुनो भर्त्तृहरि मौजी सुन रीझे मन ज्ञान।
प्रेमकी डोरी लागी गगनमें त्रिकुटी संयम ध्यान ॥

४

गगरिया मैं कैसे ले घर जाऊं।
सास बुरी मोरो ननद हठाली देवरा करे लरकैया ॥

५

मन ले गयो ले गयो पिया बातनमें।
एक दिन काजम गरबी लगायो हाथ दियो मोरे
हाथनमें ॥

६

मोर परदेशिया कब घर अइ है।
ना जानूं कौन देश बिलम रही कबहु को सुध मारो
लइ है ॥

७

यह वंसी किने बजाईरे जिया माने न मोर।
छोटी करेला के लम्बे लम्बे पात
छोटोका जियरा छोटो के हात ॥

८

उनींदा छो जो काँई रातरा बैन शिथिल
अरु नयन झुक्या हो आवे लगि बैठा परभातरा।
पलकाँ पीक अधरन अञ्जन अलसाया छो गातरा
रसिकबिहारी बनिया दुलारी कहाँ कहाँ कर
आए यातरा ॥

९

मारुडारे देश मैं तो जास्यां।
सुन मारवन कहे अलबेलिया लिख छक हग
फरमास्यां॥
दुर्जन लाज पाजरे ऊपर ह्वै आतुर ललचास्यां।
जो मानि हस लाज दिवासो तुमसे अति अरखास्यां ॥

१०

बना मेरा सांवला हो मैं वारी।
जंटांदे गल घुंघरू बाजे ठाढ़ो मैं देखों छो अटारी ॥

११

गई झुलनी टूट दगा हो गई बालम।
हरे हरे बांसको बांसुरीरे टेरत मति बौराई ॥
घर बाहिर मोहे कल न परत है पूंछत कुंवर कन्हाई।
कृष्णरसिक फिर नेक सुनो वह मनमोहन सुखदायी ॥

१२

मोरे बहोत दिनन के बिछुरे सइयां बोलो नांही रे।
कहा मोसे चूक परी मोरे काजम हंस हंस घूंघट
खोलो ॥

१३

तरसाए रखियोजो कबतक मुख देखे पाऊं

छक छक दरस देत, कहूं तनक तनक ।
प्रस्तर मणि शशि गुरु अपनेका प्रेमको जब लागो
चकमक ॥
निकसि पड़ों कहीं ज्योति तकसी देख ज्योति लागो
चेटक ।
परख परख अब कहां जाय काजम ठुमक ठुमक कहूं
चटक मटक ॥

१४

उजियारो भई मारो रतिया तूं जो उजियारा पिया
जग अंधियारा निरख निरख पियाको छवि न्यारो ।
घट घट बढ़ बढ़ सम्पूरण भई हम इंको दोनो
उजियारो काजम हमारे मङ्गको सबहो ज्योति भइ
कैसे रहे जगमें अंधियारो ॥

१५

पिया छाड़ दे मारो बहियांरे अपने गरजके सइयां ।
लगर झगर के लिपटत जात हो ठइयां ॥
हंस हंस धस रस बस पड़ गइलो ऐसे मनके छइयां ।
गई सो गई मेरः वयस अकारथ अब हूं समझ
गुसइयां ॥
सब तजके धाम तेरे अइलो और आय परो पइयां ।
अवगुण बखशा नित दर्शन पइये चरण कमल
बलिजइयां ॥

१६

बीत गई सारो रातियां पियके लाग छतियां ।
सोच सोच जिय जात है मेरो सोच सोच रहो
मनहो मनमें जात रहो जोबनवा जगमें
कोउ न पूछे बातियां ॥

१७

मत करोरे काई बात अयानो ऐसो बातां
का रब निगहबानो ।
समझ समझ कर मुखते निकासो निकसो बात
पीर हुइ है बेगानो
मुरादअली अब सांची कहत है किस बिरते
पर तत्ता पानी ॥

१८

मैं पूछत हूं तोसे नायक बनजारे ।
तू सङ्ग लादे फिरत है इतने ठांड़ा इतने भारे ॥
काहूसे भरत काहूसे बेचत लेत नफा थोड़ा दूना
इर भरतोमें धड़ाधड़ो करत नफा तापे सेर न होत
यह कोन पनसेरोते बांट तेरे भाई ।
तू पा संग या का जो भया है वह चतुरजू और
पूरो तौल रहो है यह कह दे साच भाव मोसे ॥

१९

खींच न आवे कमनिया वे नवला जान ।
सुनवाको थरियामें जेवना परोसो देखो मैं थारो
छैला मिजमान ॥
मानकचन्दो सांपरिया चाबो न जाय बंगलादे पान ।
ढाल तरवरिया बांधे हूं न जान हमसे करत तू काहे
गुमान ॥

२०

मइकूं गारो दोनोरे सुनो ननदिया वीर तिहारे ।
ना मैं बालो ना मैं चालो काट कटोलो छड़ो मारो ॥
अपनो गरजको मेरे कने आवे बहियां मरोर मोंहो
गरहो लगावे।
सौतनिया कछू कहत आवे और कहूं तो सइयां
रिझावे मैं तो वाहोके रङ्गरस भोनोरो ॥

२१

फलवा खिल खिल जातरो मलिया तोरो बगियामें ।
आपो बोये आपो तोरे आपो पाले देखा रो गंवार
ठाढ़ो बगियामें ॥

२२

जान जान जियरा लगाय दुख दे गयो ।
विरहको रातो मातो जरो जात हूं तन मनको
रस ले गयो
हमरे पिया परदेश सिधारे ना जानूं कछु ले गयो ॥

२३

सइयांरे नइयां नइयां जइ हूं मैं तोरे साथरो ।

सास मोरी बैरन ननद हठीली ताने दे दो
आधी रातरी ॥

२४

सइयांकी खबरियां मइकूं आन सुनारे कागा ।
जारे कगवा लारे सइयांकी खबरियां सोने चोंच
मढेहूं कागा ॥

२५

पिया बिन आज मइकूं बादरवा डरावे ननदी ।
कहा करूं कछु बस नहीं मेरो रैन दिना मइकूं
विरह सतावे ॥

२६

बादल गरजे बोले मोर ननदी छुवो छोर ।
मनरङ्ग पिया तोरे पइयां परूंगी फिर आऊंगी भोर ॥

२७

ननदी दिवरा वामर कोठरी पैठा चोर ।
अलख झलक मोरा बिछुवा उतारे मैं जानूं सइयां
मोर ॥

२८

न छुवो न छुवो न छुवो अरे सइयांरे मोरा
जियरा डरे ।
सगरी रैन मोहिं तरफत बीती आवो आशक
तुम बैठो परे ॥

२९

मोरह भवा मइका नीक सगुनवा आवेंगे पियरवा
मन्दिरवा सखीरी मोरो पहर सिंगरवा करहु
भेंट जोबनवा ।
मौज भई जियरा सुख पाइलो आनन्द से चमक
रह्यो धाम अङ्गनवा ॥

३०

कोई इतनी मेरी जाय कहो वा प्रियतम प्यारे सो
सजनी ।
कल न परत मोहिं घरी घरी पल पल छिन छिन
निश दिन औैर मग हेरत बार भई कितनी ॥

३१

इश्तियाक बन्दी दार तु दारद दिले मन दिले मन
दांन दो मन दोश्मो दान दिले मन ।
अब तो दया कर अपनी मौजसे काहे बेदरदो चाह
जितन ॥

३२

फुलवारी हूं देखन जातरी जोबनमें मदमातारे ।
मोतिया केवरा चम्पा चमेली मालन फूलन लातीरे ॥
माहन वास आई जो मोहतो फूलतो हो कुम्हलातीरे ।
हाफिज़ मदन बान परो मारे अङ्ग अङ्ग रङ्गरातीरे ॥

३३

प्यारे मोसों जिन बोलो जावो सौतनके सङ्ग डोलो ।
भोर भए सकल जन जागे अब घूंघट मत खोलो ॥
मानो रसरङ्ग विनती मोरी गढ़ गढ़ बतियां छतियां
छोलो ।
जिनके सङ्ग सब निश जागे हो उनके अङ्ग टटोलो ॥

३४

चांदनी रतियां कर ले बतियां ।
आज पियरवा मनमोहनवा तुहारे दरस मोरो
आरीं हो छतियां
तिहारे कारण मैं सेज बिछाई रागरङ्ग आवो
हम तुम मिल ले चकि छकि झकि रहा वेग
आये प्यारे बीत जात है सब रतियां ॥

३५

हेरा फेरामें गुजर गई सारी रतियां ।
सास मोरी सोवे ननद मोरो जागे करने न पाई
सइयां सङ्ग बतियां
सास मोरी देखे दोरनिया जेठानियां ननद
निगोड़ी कर रहा घतियां ॥

३६

बगिया बिरानी जिन छूवोरे बलमा मोरा ।
एक तो वोगन बामलिया तोरो बगियामें
दूसरे वेगनवा मोरो छतियां ॥

३७

मुलक देगना कहीं जइयो रे सइयां मोरे।
काहेको गमन करो परदेशवा याही घरवा बैठ
रहियोरे सइयां मोरे ॥

३८

जोबनवा मोरा जायरे।
चकवा चकवी दोय जन वारी इन मत मारो कोय
ए मारे कर्तारके ज्यों रैन बिछोहा होय ॥

३९

मोरा मन धीर धरत नहीं धुन सुन श्याम बंशरियाको
लोक लाज कुल सकुच रहूं डर दारुण सासु
ननदियाको ॥

४०

बोलो बोलो रे हरिनाम मोर कंथा बालमराज।
एक पिञ्जरामें दोय जन वारी एक मुनिया एक लाल
लाल बेचारा उड़ गया तेरी मुनिया पै क़ुरबान ॥

४१

वंशीवारे हो कान्हा मोरो रे गगरी उतार।
गगरी उतार मेरी तिलक संभार ॥
यमुनाके नीरे तीरे बरसीलो मेह।
छोटे से कन्हैयाजो सो लागो म्हारो नेह ॥
वृन्दावनमें गउएं चरावे तोर लियो गरवा को हार।
मीरांके प्रभु गिरिधर नागर तोरे गई बलिहार ॥

४२

रातके सुपनवा हां सांवरे सों जुलम भइला।
बारह वर्ष की वृषभानु दुलारी सोलह वर्षके कान
वंशी बजावे वृन्दावनमें मोह लियो मेरो प्रान
मन बस गइला ॥
गोरे वदन पर सीतला जो निकसी दे गई दिलपै दाग।
मेरो मन सांवरे सों उरझो प्रीति पुरानी लाग
गइल वा ॥

४३

बारह वर्ष पर मोर सइयां आइल ढुर गयो
जोबन वाला हो।
अब पछताये क्या होत है वयस उमर सब टाला हो ॥

४४

सास मोरी वैरन ननद हठीली छोटो देवरा बड़ो
हो मदाना।
सइयां बेदरदो खबर न लीनो गयो यौवन नहीं आना ॥
सबही जइल वा हो हां सइयां गइलो गाजीपुरमा।
देवरा गइलो पटमा ससुरा गइलो पूर्व तैयां
आवो मोहन करो हठ ना वे बलमा ॥

४५

बोले बोले रे चिरैया वनके मोरवा।
परदेश वालो तोरी आस लगो कुम्हलाय गइलो
यौवन वास नहीं ॥
एक अंधियारी दूजे पिया बिछुरे तोजे सावनको
डबरवा भर गइलो नीर।
उमग आलु नरवा यौवन गम्भीर कैसे कटि
है रजनी ननदी विन तोरे वीर ॥
मोरे कौन पवरिया पहुंचावे ललना नयो रे भयो।
चलना परदेशिया ललना तैंने कछु न कियो
मोरे आवत हो यौवनवा परदेश कियो ॥

४६

सगुण विचारो पियके मिलनको।
विन देखे कल न परत है लागत प्यारो वाके चाल
चलनको ॥

४७

आनो अनो मेरा ढोल ढोलनो अरो ए सूर्यमल धाल
धा भोलो मा अनमोलनो।
जिन बे राहियां माना कल था सो सर भोजो चोलनो
सोना देवीं रूपा देवीं यार न देवीं तोलनो ॥

४८

हां रे चोरेवालिया ओ रो नयनवालिया तैं काहे कूं
जादू डारा रे अरे।
तेरे हाथमें खरबूजा तेरा यार मिलेगा दूजा ॥
अरे तेरे हाथ में करेला यार मिलेगा छैला।

तेरे हाथ में नारङ्गी तुझे यार मिलेगा रङ्गी ॥
तू खावे शकरकन्दो तुझे यार मिलेगा गन्धो।
तेरे हाथमें बताशा तेरा यार करे तमाशा ॥
अब तू रङ्गी रङ्गी रङ्गी तू तो सदा रहैगा चङ्गा।
तुझे यार मिले फिरङ्गी तुझे यार मिलेगा जङ्गी ॥

४९

ना कछु ना कछु होई पञ्ची गए पाछे खोज न होई।
जैसे हैं कालिन्दीके खम्भा तैसे परब्रह्म को रङ्गा
सब जगमें वो एक हो चिन्ना सम कबीर कहे रङ्ग भिन्ना ॥

५०

मइ कूं गारी दीनी री सुनो ननदिया वीर तिहारे।
ना मैं बोलो ना मैं चालो काट कटोलो सुर मारो री० ॥

५१

मोरा पार करिया दे रे गोकुल व्रजनार।
सब सखिनको पार करी ले लेवो आना आना
राधा जीको पार करी ले लेवो काना साना ॥

५२

भीजे चुनरी प्रेम रस बूंदन।
आरती साजके चली है सुहागन अपने सइयां को ढूंढन ॥
चढ़ो गगन खुल गई किवाड़ो गुरुके चरण लागो
झूलन।
कहे कबीर गोरी याही विध भीजे मिट गये
दुःखद्वन्दन ॥

५३

आज मोरे जानीके मिलनेकूं आईरे मो मन चीते
कजवा भइले मन्दरवा।
आवो गावो नाचो सब सखी रे महलो सदारङ्ग
कहीं मिल है सुन्दरवा ॥

५४

ननदियाके विरना मइ कूं ले चलो रे।
पहले पार मोरी खेती बोई समुद्र किनारे
हरि भरो तामें बोए पांचो बिरवा तामें सइयां
मो मिलो रे ॥

५५

बेदरदी मोरा सइयां रे मरोरी मेरी बहियांरे।
क्या करूं कछु बस नहीं मेरो विनती करूं पर्रू पइयांरे
क्षणरसिक यह केलि देखावत मन मेंहियां
सुख नहियांरे ॥

५६

श्याम बजावत वीणा री आली।
आठ मास कार्तिक नहाए दान पुण्य बहु कीना
एरी दई तेरो कहा बिगड़ो छोटा कन्त मोहे दीना ॥
करके शृङ्गार पलंगपर बैठो रोम रोम रस भीना।
चोली केरे बन्द तरकन लागी श्याम भए प्रवीणा ॥
मीरांके प्रभु गिरधर नागर हरि चरणन चित लीना।
अब तो आन पड़ो फन्दे बिच लोक लाज तज दीना ॥

५७

मोर मुकट पीताम्बर राजे उर सोहे वनमाला
बांके कन्हैया प्यारे वो छैला।
मुकुटकी लटक छवि अजब बनी मन्त्र जन्त्र टोना
बस कीनो व्रजनारी सारी दीनदयाल गये कौन गैला ॥

५८

गोपाल रङ्ग राचो मैं श्याम रङ्ग राचो।
कहा भयो जल विषके खाए तीन हुते मैं बाचो ॥
तात मात लोग कुटुम्ब तिन कीनो उपहासी।
नन्दनन्दन गोपी ग्वाल तिनके आगे मैं नाचो ॥
और सकल छाड़िके मैं भक्ति काछ काचो।
मीरांके प्रभु गिरिधर नागर मेरो जानत झूठो
और सांचो ॥

५९

हरि बिछुरनकी शूल न जाई।
कबहुंक दये आलिङ्गन कबहुंक दौरत
निहोरत गाई ॥
एक समय वृन्दावन महियां अचरा झपट मोरी
लाज छुड़ाई।
बलि बलि जाउं मुखारविन्दको वह मूरति चित
रही है समाई ॥

वे दिन ऊधो बिसरत नाहीं अम्बर हरि यमुना
तट जाई ।
सूरदास स्वामी गुणसागर सुमिर सुमिर हरिकी
सुध आई ॥

६०

हारे हारे फिरे नहीं सुध राम भजनको ।
औरनको उपदेश करत है अरे सुध न रह्यो तन मनको ॥
लोभ ग्रस्यो रहत निशि बासर आशा लागी है धनको ।
देवकथा प्रभुको सुमरण कर ले गैल गहो
श्रीवृन्दावनको ॥

६१

हमारे मन्दिरके झारु झारे सब पाप ।
हरि मन्दिरमें पवित्र होत है गावत मङ्गल आप ॥

६२

तन हारो रे सुवा हरि नाम बना ।
मट्टीको पिञ्जरा पवन सुवा पांच तत्त्व मिल
प्रकट हुवा ॥
काम क्रोध मद जरत धुवा पांच पचीस सङ्ग ले न डुबा ।
तामें राजा एक सटुवा भूला रहत दरदम घटुवा
कहत कबीर वृथा जन्म मिटुवा ॥

६३

श्याम मोहिं बावरो कर डारो ।
अंबुवाकी डारो कोयलिया बोले कुहू कुहू भयकारो ॥
दिन नहीं चैन रैन नहीं निद्रा विरह व्यथा भई भारो ।
सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलनको तुम जीते हम हारो ॥

६४

हां रे दई मारे योगी काहेको वेणु बजाईरे ।
कानन कुण्डल गले बिच सेली घर घर अलख
जगाईरे ॥

६५

हम न करी हरिकी सेवकाई ।
कोमल चरण महाकण्टक मग ता पर बन हम
धेनु चराई ॥
अपने सुख सम्पतिके कारण आगे कर दीने
दोऊ भाई ।
सूरश्याम मानत है नाता प्रेम सहित कहे नन्दराई ॥

६६

ऐसे राम दीन हितकारी ।
अति कोमल करुणानिधान बिन कारण पर उपकारी ॥
साधनहीन दीन निज अवश शिला भई मुनिनारी ।
गृह ते गमन परसि पदपावन घोर शापते टारी ॥
हिंसारत निषाद नाम सब पशु समान बनचारी ।
भेंटो हृदय लगाय प्रेम वश नहीं कुल जाति बिचारी ॥
यद्यपि द्रोह कियो सुरपति सुत कहि न जात
अति भारी ।
सकल लोक अवलोकि शोकहत शरण गए भय टारी ॥
विहङ्गयोनि आमिष आहार पर गृद्ध कौन व्रतधारी ।
जनक समान क्रिया ताकी निज कर सब बात संवारी ॥
अधम जाति शिवरी योषित शठ लोक वेदते न्यारी ।
जानि प्रीति दे दर्श कृपानिधि सोउ रघुनाथ उधारी ॥
कपि सुग्रीव बन्धुभय व्याकुल आयो शरण पुकारी ।
सहि न सके दारुण दुख जनके हत्यो बालि सहि
गारी ॥
रिपुको बन्धु विभीषण निशिचर कौन भजन
अधिकारी ।
शरण गए आगे ह्वै लीनो भेंटो भुजा पसारी ॥
अशुभ होय जिनके सुमिरनते बानर रीछ्छ विकारी ।
वेद विदित पावन किए ते सब महिमा नाथ तुम्हारी ॥
कहां लग कहों दीन अगणित जिनकी तुमने
विपत् निवारी ।
कलिमलग्रसित दासतुलसी पर काहे कृपा बिसारी ॥

६७

आज गिरिधारी नेक बांसुरी बजाइये ।
देखत ही मेरो मन हरलीनो मुरली की टेर सुनाइये ॥

६८

सब घट व्यापक ऐसे राम भक्ति मोहिं दीजिए ।

अज महेश वेद चार नाम अनन्तको कर उचार
नाद सारद शेषनाग स्मरण निशिदिन कीजिए ॥
वाल्मीक औ वेदव्यास ध्रुव प्रह्लाद विभीषणदास
शिवरी केवट खगसे वायस अपनो जन मोहिं
कीजिये ।
गणिका गृद्ध अजामिल श्वपच कुब्जाको आशा दीनो
रूपक सदन कसाई और सुदामा पाहन होय
पसीजिये ॥
नामदेव औ दास कबीरा रङ्का बङ्का नाई मीरा
द्रौपदी गज और विदुर सुदमासो सुयश लीजिए ।
भक्ति शिरोमणि है भरपूर गावें गूदर सबको धूर
दास गरीबी तुलसी सूर गिनती कहां लग कीजिये ॥

६९

लङ्गरवा मडको छोड़ रे लगोई रहत दर पर थरहरवा
निपट कठिन कहुं डगर बगरवा ।
झमक झमक दृगसी दृग जोरे हरिदयाल हंसि
बहियां मरोरे कैसे बसिये गोकुल नगरवा ॥

७०

कौन गांवकी रीति बेदरदी आपु ही आप करत
बरजोरी ।
दधि मेरो खाइ मटको मेरो फोरी आप चले जग जीत॥

७१

तेरे रसीले नयना जान चितवनमें चितचोरी करें ।
कासों जान करूं फरयाद सब तो वाको ओरी करें॥

७२

छोटी छोटी चुरियां न पहरूं नरम कलैया मोरीरे ।
दारीजारा है मनहरवा अङ्गिया देख लुभानारे ॥

७३

कजरारे नयना लागि ललक रूप मोहनी वा
प्यारो तक तक चित रहे पिया परे ना पलक ।
उमंग भरे ऋतुराज राज के देख सखी यौवनकी
झलक ॥
प्रेम प्रीति नए नेह रङ्ग में रङ्ग रहे शिरसे पांव तलक ।
ख्याल खुशाल करत निशि वासर छैल छबीले
चपल कुलक ॥

७४

सइयां निरमोहिया को मनाय लाई ।
सगरो रैन मोहे तलफत बीतो भोर भए गरवा
लगाय लाई ॥

७५

एरी गुइयां कर्मको बांचो न जाय ।
कर्म ही यार खोटो निकलो भ्रमतही दिन जाय ॥

७६

फेर फेर राम रसिया तन हेरत ।
तृषित जान जल लेने लखनख गए भुजा उठाय
ऊंचे सुर टेरत ॥
अवनि कुरङ्ग विहङ्ग द्रुम डारन रूप निहारत
पलकन फेरत ।
अवलोकत मग लोक चहुंदिश मनहुं चकोर
चन्द्रमहिं घेरत ॥
मग न डरत निरखत पदकमलनि शुभग सरासन
शायक फेरत ।
ते नर भूरि भाग्य भूतल पर तुलसी राम पथिक
पद जे रत ॥

७७

तन धरि सुखिया कोउ नहीं देखा जो देखा सो
दुखियारे ।
आदि अन्तको कहे देत हो इसको करो विवेकियारे॥
योगी दुखिया जङ्गम दुखिया तपसीका दुख दूनारे ।
आशा तृष्णा सब घट व्यापो कोइ महल नहीं सूनारे॥
घाटे दुखिया बाटे दुखिया क्या गृहस्थ क्या वैरागी।
शुकाचार्य दुःखके कारण गर्भ ही माया त्यागी ॥
सांची कहो तो सब जग खीझे झूठी कहो ना जाई।
कहे कबीर सोइ है सुखिया हरि चरणन चित लाई॥

७८

कोइ सुनता है गुरुज्ञानी गगनमें अवाज होती झानी।

पहले जे आए नादविन्द सो पाछे जमाए पानी ।
घट घट पूरण पूर रहा है अलख पुरुष निर्वाणी ॥
वहां से आए पटनो खाए तृष्णा नहीं बुझानी ।
अमृत छोड़ विषको रस पीवै उलटे पाश फंसानी ॥
जो कुछ देखो नज़र हो देखो अजर अमर हो नशानी ।
कहै कबीर सुनो भाइ साधो यह आगम
निगमको वाणी ॥

७९

को मेटे कर्तार करी ।
कहा मुनि शक्ति सगरको सन्तति विनु इन्धनको
आग जरो ॥
गणिक वशिष्ठ इष्ट सङ्ग लक्ष्मण दुर्बल रावण आन हरो ।
त्रिभुवन को पति पति पायो है सो सीता कैसे
बन्ध परो ॥
भिषक् विदुर व्यास ऐसे पण्डित ताहि मध्य पुनि
छुते हरो ।
कौरव पाण्डव हैं दोउ दल तिनके हटकत जूझि मरो ॥
चतुर हतो यदुवंश मण्डलो विन लोहेके जूझ झरो ।
सूरदास जैसो मति उपजे ताके तैसो कर्म परो ॥

८०

हमारे अंखियन हो के तारे ।
राधा मोहन मोहन राधा यह दोउ रूप उजारे ॥
गौर श्याम अभिराम रङ्गभरे ब्रज बरसानेवारे ।
शुक सारद नारद बलिहारी उपमा वरणत हारे ॥

८१

घुटवन घनश्याम चलेरे ।
कटि किङ्किणी पग नूपुर बाजे नाक बुलाक हलेरे ॥
किलकत बिहंसत दूर निकस गए कहत यशोमति
भलेरे ।
सूरदास प्रभु बाललीला देखत मन आनन्द रलेरे ॥

८२

दया मेरी मेरी करते जनम गयो कछु हरि न भज्यो ।
बारह वर्ष बालापन बीत्यो बीस वर्ष कछु नहिं न कियो
वृद्ध भए तन कम्पन लाग्यो इन्द्रियको बल
सब ही दह्यो ॥
जिह्वा थकी मुख वचन न आवे तब हृदय बिच ज्ञान
भयो ।
आई तलफ गोपाल लाली माया मन्दिर घेर रह्यो
कहै नानक सुन भर्तृहरि योगी माया डूब गयो ॥

८३

कर तुम ताड़ निरखेरे निनाड़ रङ्गा ।
गोविन्द स्वामी अटकूं तन् देया मैनू कालुम्
शम शम ताड़ औरङ्गा ॥

८४

हो म्हारो मारबन थांरो देश रूड़ो ।
उदियांपुरको कामिनी कोई गढ़नरवरको ढालो चूड़ो ॥

८५

गम कैसो करदा वो मेरी जान वो मेरी जाना ।
दोष काहु न दोजे प्यारा आलो कि समनदा बदा होना ॥

कलिङ्ग—तिताला

आज म्हारे मङ्गलरा भलो रात ।
आवो मोरे बमना तू बैठो मोरे अंगना
बहियां चढ़ाऊं थारे चन्दन गात ॥

२

कान्हा राजी आवो ने म्हारे ।
थे तो म्हाने प्यारे लागा राज आज सिपर धारे हमारे ॥

कलिङ्ग—यत

हम जो बे दाना साईं मैं तो वारी वां ।
बांकोड़ घोड़ा तेरो बांकोड़ जोड़ा
बांकोई कमर कटारो राज साईं वो ॥

२

हम न जीवे तुम जाइलोरे ।
तुम्हीं सों ध्यान तुम प्राणपति पिया जब लग प्रीति
निभाइलोरे ॥

३

मुरलीवारेने जादू कीता हो ।
राजबहादुर तानके मिस कोन मन्त्र पढ़ दीता हो ॥

४

सुआवाली लाड़ो वर पाया ।
जिन सौं बतियां रङ्गरस कीनो सोई वर व्याहन आया ॥

कव्वित्र—धीमा तिताला

नयनन ए कीना वरजोरी ।
रूपलालकी सीख न मानो श्याम एक रङ्ग चितवोरी
उन तन बार बार लजात ब्रह्म सर्वसों वहोरी ॥

२

दोम तन दिरना दोस्त तदानी नाद्र दानी तुम
तदार तद्र दानी ।
बिष्ण बिष्णके खमजां दर मेयारीन साया चि दारी
अतकिल अत न्यारी दीम ॥

३

लागी लगन कैसे छूटे सैंयां हो नादान ।
लाग गई तब लाज कहां है जानि न जान तू जान
बेईमान
कृष्णरसिक अठिलात छाड़के करहि जान पहचान
मन मान ॥

४

नयनावालीरे जान भी वो खींचे तिरछी कमान ।
टेढ़ो भौंहें बांको चितवन लागो कलेजे तान ॥

५

समझ बूझके खैयो मुलक बेगाना ।
बालम काचो है सोपरिया काचा बंगला पान
बालम तोरे बगीचारे अन्त बैठा चोरको रखुार
चू चुषा फल सदाफल खावे गंवार ॥

खेमटा

बालम तुम चलो उहां हम गज बैल सारस हंसकी
जोड़या फिरें अकेले।
बालम बालम मत करो मत मरो रोय
चला जाता संसार अमर न कोय ॥

२

खैंचो न आवे कमनिया बिन बलका ज्वान ।
हाथ पकर क्यों जो तरसावत देखा मैं तेरा गुमान
नाहक मुख चुम्बत उर लावत क्यों मेटत कुलज्ञान ॥
अबही खेल खिलौना सिखहो क्यों खेलत चौगान ।
कृष्णरसिक यह तोहि उचित है मेरो मान तू जान ॥

३

दगा है गा बालम गई झूलनो टूट ।
चुन चुन कलियां सेज बिछायौं चढ़त सेजरियां
पर है गई लूट
मनसिज मदन नयनन भर आयो चितै न परत
लाज गई छूट ॥
कांपत तन जोबन सरसाने लपट झपट गड़गड़
भई जूट ।
कृष्णरसिक यह सांच छाड़के हिल मिल पियहु
अमृत नई घूंट ॥

४

पतली कमरकी जनिया तो से लागे मेरे नयन ।
जब ते न देखो तेरो सूरत वाण लागी हैं मैन ॥

५

मजा मार ले जान पतली कामर को गोरिया ।
बैंगनबाड़ी तेरी अजब बनिया तामें नीबू तोरिया ॥

६

जरा देखो नजर भर गोरिया नयन लागे मार ।
साल सरस कुसुमको अंगिया नीबो तनिया तोर ॥

७

मजा उड़ाय ले गोरिया ज्वानी भई मतवार ।
केहरि कटि कदली सी जङ्घा छाती बनो जैसे के
अनार ॥

८

बांको राम गुजरी नदिया किनारे ।
लहंगा भी लाए फरिया भी लाए अंगिया न लाए
सभी बात बिगरी ॥

९

गोरिया नीके चल रे तेरे सइयां हैं नादान ।
मों बालम को दोष लगावत मत कर मान गुमान ॥

यह यौवन तरुवरकी छांही समुझ देख कर ज्ञान।
कृष्णरसिक मन मान ले मेरी छांड़ अटपटी बान॥

१०

तोरे नयनवा को बान गुइयां जोरे परो बांको
तंबोलन डगरा बैठी चाबे नागर पान।
घूंघट अन्दर सैन चलावे तक तक मारे बाण॥

११

भावे तू जान न जान गुमानिड़ा हों तो थारो
बन्दी हो रहिया वे।
गले लगन मान जो तरसावदा इतनी अरज् मोरी
मान ले सिपाहिया वे॥

कलिङ्ग—यत्

नयना काहे को लगाए रसिया बालम ज़ालिम जोर।
रूप रङ्ग रस राते माते मनमोहन चितचोर॥

खेमटा

माई आज वृन्दावन रहस राधाकी नगरी।
जैसे हो चन्द्र चकोर चहत हैं तैसे हो गोपी रही
सगरी॥
राधा सखियां सहेलरी पूंछके माई रहस देखन
हम जात।
बहियां पकर हरि ले चले री आज सुहागकी रात॥

२

मेरो तू मानो सांवलिया तेरो तो कूंन रसी रैन
अंधेरिया अब कैसे आज जान।
पायन चुभो गुजरिया तलफे मेरा प्राण॥

३

वारा मोरा जियरा सइयां काहेको लगायारे।
जियको बातें वारो कोउ न जाने नेह लगी जो
टरत न टारारे॥

४

आधीरातके अमलमें बिछुवारे बैठा डब्बेमें बिछुवारे
काटा चढ़ी लहर भइल पिय आवनका।
पिय विन लहंगा कौन उतारे सोती थी मैं गफ़लतमें॥

आठ पहरको चौंसठ घड़ियां चायत अपने दरदमें
बेदरदो वहो मान सजन मैं०।
लाल पलङ्ग पर ज़रद बिछौना हरा दुपट्टा अतलसमें
पिय विन लहंगा कौन उतारे मैं०॥

कलिङ्ग—परज

धन्य धन्य धन्य धन्य विन्ध्यवासनो ए मा।
कनक मन्दिर मणि सुजड़ित चमकत अति चमत्कार
नव नौबत निशान बाजत गर्जत श्रीशिव
कैलासनो ए मा॥
छिनमें वृद्ध छिनमें बाल छिनमें तरुण छिन कुमार
असुर दण्डनि सुरन वन्दनि जगनिवासनो ए मा।
दीनदयालको भक्ति दीजे युगल चरण यश हि लीजे
आदि ज्योति महामाया दैत्यत्रासनो ए मा॥

२

मेरे मन वसोरी श्रीरघुनाथ क्रीट मुकुट मकराकृत
कुण्डल भाल तिलक उर लसोरी श्री०।
कोटिक शशिमुख ऊपर वारो अधर सुधारस सिन्धु
वसोरी श्री०॥
पीवत परम रसिकजन सादर नहीं अघात फिर
मन ललचारी श्री०।
श्यामसुन्दर कमलदल लोचन धनुष पीताम्बर
कमर कसोरी श्री०॥
रघुनाथ भक्त सुखदायक पावन जनक ग्रह
आय वसोरी।
भगवान्दास जानकी वर भजु यह नित सुध्यान
उरमें धसोरी॥

३

तुम कौन कहांते आए कौन नगरते किस कने
आए यहां किसके कहलाए।
किसने तुम्हें किस कामको भेजा कामभो उसका
किया के नाहीं वहां जाओगे या यहां रहोगे क्या
मन में ठहराए॥

ज्ञान ध्यान वामें सङ्ग लाए मूरख हो या मूल गंवाए।
माया मोह लोभमें अबतर सुध बुध सब विसराए॥

५

नींदरिया कालेको आई रे जाग परी रोई पछताई।
रात आए पिउ बहुत दिनन पर फिर गए जब मोहि सोवत पाई॥
ठाड़ रहे यहांके गए तब याकी नींद हको उड़ाई।
सोवे संयोगन जागे वियोगन आंख लगी कहुं आंख लगाई॥
नीके भाग जो होत सखारी पिया आवत मोहि लेत जगाई।
बलबल जाउं काजमके भागको भली भई घर तोड़ समाई॥

कलिङ्ग—धमा

आजको रैन सुहाग भरी लालन मेरे घाए।
बाजे बधावा सुहावन सजनी हरि मङ्गल लाए॥

२

अंगन हो वन ढूंढ़ पिया मैं नहीं पाये।
कानन मुद्रा गल बीच सेली अङ्ग विभूति रमाये॥

३

सुख देखि पै बहार रे ऊधो नहीं प्रीति कुबजा में सूधो।
जाके आठ पटरानी सुन्दर गोपी सोलह हजार सो पटरानीोंको जो टो गजमुक्ताके हार॥
झूठो वचन और नाव झांझरी को गए उतरे पार
राजकुल आ धर्म ओ अपने वानो राजनीति गई भार।
गावे गूदर ऊधो तुम कहियो प्रभुसे वारवार॥

४

हो तो चली अब देश विदेश बाबुल तेरा नगरी छूटो।
वांरन फेर कठिन है आवन आग मिलनको टूटो॥
ससुर जात हो सङ्ग पियाके माता पिता सों रूटो।
सइयां हंसत मैं अस रोवत हूं जैसे मारो लूटी॥
सांचा मित्र कोई नहीं जगमें प्रीति जगत्को झूटो।
ससुर के लोक तुराब से पूछो नैहर सों जो फूटो॥

५

अभय मुक्तिप्रद काशी जगमें।
जाको महिमा मुनी पुराणन कहि गए अकथ कथासी॥
कञ्चन मणि रतन पट भूषण राजत अति सुखरासी।
सकल पुरी तारागणके मध्य शोभित शशि उपमासी॥
अष्ट महासिद्धि पौर पौरियां मुक्ति है जाको दासी।
महापतित नर लहे परम गति परे न यमको फांसी॥
जहां राजे गौरीपति शङ्कर जगत् गुरु अविनाशी।
दण्डपाणि गणपति दरबानी भोजनदाता अन्नपूर्णासी॥
पग पग तीर्थ जहां सुर सरि धर्मद्रवो गङ्गासी।
भैरवनाथ करे कोतवाली गणपति विघ्नविनाशी॥
नर ते धन्य बसे नगरीमें धर्म कर्म सुखरासी।
असन वसन धन धाम नवो निधि बहुविध भोग विलासी॥
मङ्गल मरण जहां जग वाञ्छित अमर सकल पुरवासी।
विधिको कछु न बसाई सो कर सङ्ग ते रहत मैं वासी॥
योगी यती साधुजन जहां बसि तप करें सन्यासी।
प्रेमदास जन तारो मिलावहु हरि वैकुण्ठनिवासी॥

कलिङ्ग—परज

पियाके सङ्ग परो नार चौसर क्यों नहीं खेले।
इस अवसरको निपट सार जानो यह दिन है तीन चार॥
जो जीते तो पियको जीते हारे तो रहे पिया लार।
तेरो तो सब तरह जीत है जीत हेत न कर सोच विचार॥
सात पांचको कच्चो पच्चो तो सोलह है हार।
दाव रखे सो रङ्ग है वाको वाही जीते सौ बार॥
अब तो अदिया बन्द चले हैं कर है धों धन रार।
जब छक्के छूट जावेंगी तेरे तब क्या करोगे खेलार॥
आठ याम इनको सुध राखो यह जो खुले दश द्वार।
तेरो भलाई सजोसे प्यारका कामको ले नरद मार॥

और पांच तिथि हैं पन्द्रह को निहार चंवदे भुवन
खुले ता कों जब ते इनको सवार।
औस भरी॰ऋतुकी प्यास बुझावो दश्यों लगावो वार॥
निधिकी ऋद्धि सिद्धि हो तब हीं के जो तुझे है
अहंकार।
बारह हैं बाट अठारह हैं पेंड़ा और चाले हैं हज़ार॥
तू चल गुरुकी बताई चाल याही ते उतरेगो पार।
अब तू रङ्ग कर रङ्ग रहो जो न करत तकरार॥
जाकी जाको सत्रह सोलह हैं कौन करे
पिय को प्यार।
अब कुछ पासोंमें पे पासा हाथ एकनके सुख तार॥
चहिये कुछ और आवे कुछ और याहीते लाचार।
ऊपर चाल कब हूं तो सूझे हमको कहो मतवार
युग युग जिये अर्ज़ोज़र्दोन ऊपर उठना है एकबार॥

कजली—तिताल।

कान्ह वंशिया बजावे राधा खेले क़जरी।
नयनन अञ्जन आंजि राधिका सोहे शृङ्गार
आभरण सजरी॥
मोर मुकुट काछनो काछे बेसर हार कर सोहे
गुजरी।
इत ग्वाल बाल सब सखा सङ्ग लिए उत राधे सखी
लिए गुजरी
कृष्णानन्द प्रभु सावन मास में धूम मचो खेलत
कजरी॥

२

नाथ नैया रे नेवरिया नेरे लेके आव।
ना मोरे नैया नारे बेड़ा तुमही गुसैयां मोही
पार पहुंचाव॥

३

ककरेजवा मंगाय दे मोरे बांके जमादार
चुनरिया रंगाय दे मोरे लरकैया के यार।
लहरिया पहनके मैं चलली बज़रवा मिल गए
सइकूं बालापनके यार॥

४

मैं तो सइयांरे पवल्यूं न सुवाना।
चल चलनन सुइवा मोर नैहरवा तो के रखे
ओव तोन जुनवाना
सेइलन सुइवा नोकल बाज़ार भरे खेलइके मागे
झुनझुन बाना॥

५

करहैयां नइ नइ जाय गोरी बहियां यार।
रसलो चुड़ियां चुभि चुभि जाय सइयां महिकूं रे
गरहो लो लगाय॥

६

मजवा घेले कटरी सुरङ्गो खेले कजरी।
लचकत कटि वा गोरिया आवे सजरो
लचकत करहैयां आवे छमके धजरी॥

७

निबिया लहरिया ले मोरे अङ्गना।
कंहवां बैठा बे हरियल सुगवा कंहवा बैठा बे मोर
कहवांसे आइला हरियल सुगवा कहवांसे अइला मोर
मोरे अङ्गना॥
कहंवां पिया बोले हरियल सुगवा कहंवां पिया
बोले मोर मोरे अङ्गना
दुधवा पियाइब हरियल सुगवा मोतिया चुगाइब
मोर मोरे अङ्गना।
जोतहो के कहेलं मैं खेत खरियनवा जातिला
डाल चुलिया दुवार मोरे अङ्गना॥

८

खेले कजरी गोरिया सांवनके महिनवा खेले
सुरङ्ग चुनरिया गोरी।
लहरिया ले ज़रद किनारो अङ्गिया तनवा सजरो॥

९

नज़राय गइलो बालम तोरे अंगना।
तोरे सोनेको सुराहो मोरा हीरा कङ्गना तोरा
लाख रुपैया मोरा बाला जोबना॥

१०

खेले कजरी गोकुल मध्य कन्हैया छोटे मोटे लरका
सङ्ग सखी राधा लिए रङ्गिया।
नाचत कूदत आवे कुष्णन ठैया कृष्ण रसिक राधा रस
भरियां सांवनके महीना महकूं लागे रलिया॥

११

भले कइलेरे कबुतरी मचवले कजरी।
बाबूके बजरवामें लुटवे लंगरी॥

१२

फूल गेंदवा रे खेले गइलुरे हरी।
मोरे स्वामीजी जे मितवा सुन्दरवारे हरी
पुलगेवा छटक भूलनी टूटलरे हरी॥

१३

चल चल बसुमतिया बरैयाको दुकान।
जहां जहां बरिया कतरल पान तहां तहां
बसुमतिया को टिकुली हैरान॥

१४

फूल गेंदवाके आड़े आड़े आवे गोविया।
टपकल बूंद चवल अङ्गिया॥

१५

भला वे भला मोरे बपहो गोरखपुरवा।
गोरख पुकारे जनकपुरवा॥
नथिया मोरी टूट गई नैहरवा।
कैसे जाउं भला वे भला मोरे पुरवारे गोरखपुरवा॥

परज—कलिङ्ग

मृगनयनी बोल्यो के न राज थारे तो देश विलम्बो
राज।
आवोजी महरबान सगुन विचारो काहे करो छो
म्हासे खाज॥

२

बदरिया बरसन लागीरो निश अंधियारी कारो
दामिनी दमके प्राण तरफन लागीरो।
निजामुद्दीनके आजम लाड़ले पग तिहारे परसन
लागेरे॥

३

माई मेरा लाड़ला बनरा आया बनरो से रङ्ग
बन बन आया।
अचपल होके गावो मेरासन यह विधिनारे बने
संयोग बनाया॥

४

थे तो म्हांरो कदर न जानदा वे रसिया।
आप ही क्यारी वारो आप ही माली आपो खेल
खेलारो वे रसिया॥

५

म्हारे मारूजी से कह ज्यो राज अमलांरो
अमलांरो बात।
चन्द्र सरीखो थारो मुखड़ो विराजो उजरे
सेवती से गोरे गात॥

६

वे राज थाने खमा वो राज खमां माने राखे
दिलाशा दे दे मारा जायां।
म्हांने बुलाया वारो थे नहीं आया क्यों कर खाऊं
थारो गमां॥

७

मेरा अलवेलरा सांवलको आंखदानो सइयो।
पांच रुपैया वारो पानांदा बोड़ा मुझे मांगे
सारो रातरा॥

८

भला वो चाहको चाकरी कीजे अनचाहत
का नाम न लीजे।
औरांदे नाल हंसदा बोलदा नाहक क्यों सांड़ो
जान दीजे॥

९

घरी घरी मैंनू सतांदा यार वे मैं वेख रहियां
तेनू की वे यार।
तेनू तो नींद न आवे सोवन न दे ग्रानू आंखो
मलमल जांदा यार॥

१०

रूडो मारू आयो है म्हारे घेर।
कबको मैं ठाढ़ी ठाढ़ी अरज करेश्यां कहां लगाई
एतो देर॥

११

केशरिया मारूजी हो मान लोजो म्हारो अरज.।
राजीन्द्र चल श्यो चाकरो लाड़ो जोरा ढोला
साथ लोजो॥

१२

रूड़ो रूड़ो बे पना रूड़ो मांरो राज
शिर पर घड़ा घड़े पर गागर चाल चले रूड़ो रूड़ो॥

१३

अरे हो राजाजो म्हासे कांई बो गुना महल पधारो
अरज. करो हो पना।
अबको वार म्हा बख्शो साहबां मेहर करो अपना॥

१४

राज थांरो रूड़ो हो रङ्ग मैंने तोरे कारण सब
जग छांडो।
केशरिया जो थारो बाग़ बनो छे बूंदीवारो कमर
कटारो॥

१५

हाल मेरा तुझ कीं है मालूम तू तो मेरा दिल
जानिड़ा।
की करां कुछ वश नहीं चलदा क्यों कर आजं सांवल
गुमानिड़ा॥

१६

मजरां रो मेलो राज दोजो सांवलिया म्हाने हो।
छकंदपना थारा दूर करो साहबां इतनी अरज
सुन लोजो॥

१७

पइयां पइयां चलूं पियाके मिलन को ए सजनी।
या ऋतु वर्षामें फ़खर पिया परदेशवा विरम रहे
सतावन लागे मेरा जिया॥

कलिङ्ग—षट्

अतवित मिल किलक पानकपू शुदबुद आमद
चिनाचे मी न बूद पेशानो दोदारो गोशकानो
बोनो नक्क।
बनियां बकाल दलाल खुशहाल शूद्र ब्राह्मण जुनारदार
शिशियार निहाल शुद पालको सवार शुद आमद है
दोस्तां न मृजा शेरवें गमार खान शेख पपू
तिया जद आब जूद काबुल कन्धार बूद यार दिलदार
बुरदबार हुशियार बिनो शराब ख्याल बदस्त
गबरू कर्दान गायद गुफ्त टपू॥
अस्पशुतर खर फ़ोल दोद मन गोयम किश्तोनावतेरा
कसना वरवलो चपू अज मे चमेखाइवे गोग
डूगोर टपू।
यह फ़ारसो य दोदनो यदनोके साहब महरबान
कदरदान तोशदान लेकन इनशा अल्ला ताला बशोर
शाखु नजरू आधोन यगायद सनन्न सपू॥

२

नाचत नाचत सारो रन रण्डो जब थको भार भए
तान बैठ बोलेरो।
ख़फ़ा हो के नाक चड़ा नोचोसे कहने लगो
तबलेसे सुर कांई अब तू लेरो॥
मुख फार घुंघरू ठनकने लागे ठन ठन छवि भई
भावको बंक बलेरो।
सारङ्गो बेरङ्गो भई ताल से बेताल गावे फिटक
फिटक करे तबलेरो॥

३

रतियां न अइला गइला सइयां विलम रहिल
के ठइयां रे।
भकुवा भइला रहिला रतियां कवन तिया
विल मइला रे
शेषवा कइला रहिला अंदेशवा नवल तिया गर
लइला रे॥

४

जय जय राम जय जय कृष्ण जय माधव जय विष्णु।
जय लक्ष्मी मुखकमल मधुव्रत जय दशकन्धर-जिष्णु॥
हरि दामोदर दुरित निवारण अपनय भवभयमोहं।
भक्तजनप्रिय पङ्कजलोचन नारायण तव दासोहं॥
जनकसुतापति चरणपरायण राघव राम पवित्रं।
कलिविषनाशन दुष्टविनाशन त्वं हि बन्धु त्वं हित्वं॥
हरि मुरनरकरिपो मधुसूदन केशव कलमषभारं।
मामनुकम्पय दीनमनाथं कुरु भवसागरपारं॥
त्वं जननी जनकः प्रभुरच्युत त्वंहि सुहृद्कुलमित्रं।
त्वं चरणं शरणागतवत्सल त्वं भवजलधिविहित्रं॥
अपराधं मे मुरहरि परिहरि कुरु वै चरणं शरणं।
संसारार्णवतरणैककरुणावरुणालयभवतरणं॥
पुनरपि जननं पुनरपि मरणं पुनरपि गर्भनिवासं।
लोभमूलभवभीतिविभञ्जन मामुद्धर निजदासं॥
जय परमात्मन् जय पुरुषोत्तम जय वामन जय कंसारे।
मामुद्धर गोविन्द गोपालं पतित विषयसंसारे॥
श्रीगोपीजनवल्लभ विट्ठलनारद कृतमिति गीतं।
तारय नाथ परम पुरुषोत्तम माधवजन्म पुनीतं॥
जय श्रीपति जय केशव कृष्णा जय माधव जय गोपाला।
जय दामोदर सुन्दरमन्दिर नन्दनन्दन जगप्रतिपाला॥
यशोदानन्दन कंसनिकन्दन भक्तनवन्दनकृपाला।
कृष्णानन्द परमानन्द श्रीगिरिधर प्रभुदयाला॥

कलिङ्ग—मात्रा तिताला

भजन विन तीनो पन बिगरे।
बालापन तो खेल गंवायो तरुण भये अकड़े॥
वृद्ध भये तव कछु न सूझत अन्ध होय निवरे।
काहे को देह धरो मानुषको पशु समान गुजरे॥
मन तो धन यौवन मद मातो बोलत गर्व भरे।
कहे कबीर सुनो भाई साधो कर ले भजन हरे॥

२

नीको रवो यशोदा मैया तेरो लरका।
बछवा छोड़ाय मेरो गउवां दुखाय दोनो और
तारो मेरो छीको॥
दूध दहीको कमारो फोरो मथनिया माट फोरो
गहे छीको।
मीरांके प्रभु गिरिधर नागर हरि विन सब जग फीको॥

३

सदा हरि को रस पीजे हो।
हरि रस अमृत छांड़िके विष नाहीं गहीजे हो
तन मन धन हरि ऊपर सर्व वारि दीजे हो॥
सब हरिको अर्पण करि चरण गहीजे हो।
वृथा उमर योंही जात है वपु सब छीजे हो॥
दुर्लभ मानुष देह धर यो कारज कीजे हो।
हरि बिनु माणिक और जो तामें चित न दीजे हो॥

४

मारग चूका रे मुसाफिर।
हरिपुर मारग छांड़ि के ठग मारगमें ठूका रे॥
देह विषय मन इन्द्रिय सङ्ग ज्ञान ह्व रूका रे।
सज्जन सङ्ग को छांड़के कुसङ्गमें लूका रे॥
भ्रष्ट भए निज धर्मते सुनि वचन तिनका रे।
ज्ञान धर्म धन को हरे डारे भ्रमके भूका रे॥
महा अनर्थप्राप्त करे जैसे सङ्ग ठगों का रे।
माणिक जो चाहत भलो सङ्ग त्यागो बुरोंका रे॥

परज—मात्रा तिताला

जा कर हम यमुना पछतानी आग लगी है
भरत हूं पानी।
घाट पै ठाड़ो है तहां मनमोहन चितवत ही
सुध मोर भुलानी
लोक कहें सब भई का बावरो मोहन लख कोउ
रहत सयानी॥
अब तो गयो मन हाथ से मोरे मोरी चितवन
मोरे मुख बिसानी।
जा तन लागी सोइ तन जाने काजम पीर
कोउ नहीं जानो॥

कलिङ्ग—टेश

नगरिया चोरकी यामें गाफ़िल मारो जावे।
चोर सिरदार अहङ्कार है जामें काम क्रोध जरावे॥
ज्ञान ध्यान कछु मानत नाहीं अपनी अपनी फेरावे।
मन प्रधान चोर है जाको मोह कपट बसावे॥
लोभ राजा अमल है जामें नित उठ धूम मचावे।
भले लोक सब चुप रहे नेक न शीस उठावे॥
धर्म्म ज्ञान डरे दुष्टन सो कब हु न पास सङ्ग आवे।
क्षमा शील सन्तोष नहीं कबहूं तृष्णा जग भटकावे॥
इस नगरीमें बसके माणिक मूढ़ सुख सो सो जावे।
काल राजा मारत है तिनको छिन हो छिन में रोलावे॥

२

बटोही तू क्यों सोवे सोवे भवन माहे दाव लगी
जाग के नाहीं जोवे हो।
तन धन विषय लागिके वृथा वपु खोवे हो॥
विकट पंथ माहि पड्यो कर्म्म बोझ क्यों ढोवे हो।
मृत्युसिंहका दुःख सुनि तू हो क्यों खोवे हो॥
नाम अमृत रस राम को तामें गर्क न होवे हो।
माणिक राम सों लागिके सुख सो क्यों न सोवे हो॥

परज—माढ़ तिताला

पन्थीड़ा पन्थ विचारो रे।
विचार विचार कुपन्थमें पग मत धारो रे॥
विघ्न घने वा पन्थमें बड़ो पर्वत पहारो रे।
जो तर जाए नाम सो जिन जाव उधारो रे॥
साधुसङ्ग निर्मल हरिके पुर पधारो रे।
माणिक हरिपद पायके भव डंको डारो रे॥

परज—कलिङ्ग

अब क्यों करो है अबार हमरी बार हो नन्द कुमार।
गज अभिमान ग्राह जब पकड्यो कर गहि चक्र
संभार॥
दुष्ट दुःशासन चीर गह्यो जब द्रौपदी की करो
है सहार।
खम्भ फारि हिरनाकुश मार्‌यो प्रह्लाद लियो उबार॥
दशो शीस रावणके तोरे सीता लाय मुरार।
भक्त हित अवतार धर्‌यो प्रभु भूमि उतारन भार॥
सकल विलोकत ना कोउ अपनो जो जानो तो वार।
रामजोदास शरण तेरो आयो ए मोहि तारणहार॥

२

एरी ए मैं मूकरां मारी माई मैंने छेड़े छे कुंवर
कन्हाई।
मारग रोके जाने न देगो मेरो छान छोन दधि खाई
बरसानो खानो सांवलियो सब सन्तन मन भाई॥

३

जा दिन ते हरि लगन लगाई।
एक घड़ी बिन मूरत देखे गृह अंगना मोको कछु
न सुहाई
चन्द्रसखी हित बालकृष्ण प्रभु लोक लाजको
सब बिसराई॥

४

कहिये जो कहबेको होय।
जात न लगो माई तन जाने जा रे वैद्य कहा
परो तोय॥
लाख सयाने पच पच हारे मर्म व्यथा जाने
नहीं कोय।
चन्द्रसखी पीर तब ही मिटेगो मिले सांवरा वैद्य
जो मोय॥

५

जाने रे कोउ वैद्य न मनको।
जा तन लगी सोइ तन जाने अटपटी प्रीति
लगन है कठिनको॥
हीरेको सार सो हीरो जाने सम्मुख चोट सहे
घिर घनको।
चन्द्रसखी हित बालकृष्ण छवि चिन्ता है मोहे वा
सुरगनको॥

६

लीनो री मन मोहन हरके।
वंशीकी ध्वनि सुन भई हूं बावरी लोकलाज सब
गई है बिसरके ॥
रूप ठगोरी डारी मोरी सजनी बेंगां मिलो री
टोना गयो करके।
वृन्दावन को कुञ्जगलिनिमें कूटी री मैं पायन परके
चन्द्रसखी हित बालकृष्ण प्रभु हाथ बिकानी मैं
राधावरके ॥

परज—तिताला

चांदनी छाय रही आधीरात।
अति सुकुमारी लड़ेती प्यारी प्रीतम उर लपटाय रही॥
मन सों मन नयनन सों नयना तन सों तन
उरझाय रही।
नागरिया नागर दोउ राजत लाजत मृदु
मुसक्याय रही ॥

२

रघुवर आसरो म्हानें थारो छे जो।
एक आश विश्वास भरोसो और नहीं छे हमारो
भूल पर्‌यो संसार समुद्रमें भटकत फिरत दुखारो ॥
एक बेर करुणा कर मो पर अपनो ओर निहारो।
ऊधो पतितनाथ तुम पावन मन करो नौका हंसारो ॥

३

म्हारो राखो लाज मुरारीजी मारो मन लागो
हरिचरणनमां।
जिन चरणनको कमला सेवे ब्रह्मा आदि गणेशजी
सारद नारद श्रीशुकदेव शेष महेश फणीशजी
सुरपति नरपति गणपति नायक रस पिये
रसना सोजी ॥
ध्रुव तारे प्रह्लाद उबारे राख लियो यातृना सोजी।
चरणकमल में चित विलग्यो है पायो निगम
भना सोजी
जन हरिदास परम पद परसे रोम रोम रसना सोजी॥

४

राधे प्यारो हाथ थारे मेंहदी रची घनो।
नख पंक्ति छविके ऊपर वारूं लालमनो ॥
फुलड़ी फब रही टोनो करन पर शोभा सरस बनो।
हरराम मन ललचो लाल को रीझ रह्यो श्याम धनो॥

परज—कलिङ्ग

राधा प्यारी थारो वर रूड़ो।
बार बार मेल्यां वारना मारग नेह निभावन पूरो ॥
रूप लिए ही रहे नृत्यत सांवल शोभा नेक रङ्ग रूड़ो।
वृन्दावन हित रूप स्वामिनी धन्य सोहागन
अविचल चूड़ो ॥

२

वंशीवालड़ेने केहा जादू कीता।
राजबहादुर तानांदे मिश्र अजब मन्त्र पड़ लीता ॥

कलिङ्ग—तिताला

कान्हा रसिया वृन्दावन वासी।
यमुनाके नीरे तीरे धेनु चरावे वंशी बजावे
गावे करे सखी हांसी
उरझ रह्यो मन सुरझत नाहीं प्रेम फन्दको फांसी ॥
मोर मुकुट पीताम्बर सोहत मुरली बजावत आछी।
वृन्दावनको कुञ्ज गलिनमें रास रच्यो अविनाशी ॥
इत गोकुल उत मथुरा नगरी बीच मिल्यो व्रजवासी।
सूरदास प्रभु तिहरे दर्शका लगी प्रेमकी गांसी ॥

२

रङ्गरसिया मांका राज।
रङ्गरसियाजी म्हांके अन्तर वसिया जमोय नेह
निभाज्योजी ॥
केशरिया अत हंसिया बालम मालमवे के बुलाजाजी।
रङ्गीला प्रीतम म्हारो मनरो आशा तन का
तपन बुझा जो जो ॥

३

प्यारो थाने खमा हो म्हाने राख्याजी दिलाशा
दे दे दर्श।

राज बुलाया थे नहीं आया कोलो खायो मैं तो गर्मा॥
मीठा बोला वाो छाती छोला सांच नहीं छे
मूल जर्मा।
रङ्गीला प्रीतम थारो आश ही में वन आई
घांकावाया पगाने म्हे नर्मा॥

परज—कलिङ्ग

म्हारो मनुडो राजो।
कांई जी करेला म्हारा गुरुजन दुर्जन झकमारे
ला पाजो
यार आगे मैं तो केलि करश्यां हां हां जो अब मैं तो
रसिक सनेही जो सो मिलश्यां परत न हारों बाजी॥

२

थाको छवि प्यारो राज प्यारो म्हाने लागे।
छैल छबीला रङ्ग रङ्गीला अङ्ग मरगजे बागे॥
बड़े ही सवारे म्हारे भले ही पधार्यो
म्हारो आंखड़ल्यारे आगे।
रसिक गोविन्द अभिराम श्याम थांको मुख देखे
दुःख भागे॥

३

नयना अमलांरा जो माता आए राज।
रैन कहां थे रह्या जो सांवलिया सज केशरिया साज॥
पीक कपोल अधर पर अञ्जन सौंह करो को
विन काज।
रसिक गोविन्द पिया थे बहु नायक कांई थाने
आवे न लाज॥

कलिङ्ग—तिताला

हां जी म्हाको मारवन थाको देश रूड़ो।
प्याराजो के पचरङ्ग पाग विराजे प्यारीजो के
पंचरङ्ग गुलालो चूड़ो॥

परज—तिताला

वंशी ध्वनि बाजे यमुना तीर।
सांवन भादो नदी चली जैसे ब्रजनारिनको भीर॥
कैसो वंशी बजाई मोहनी मोहन बलके वीर।
सूरदास रसवश कर लीनो सुन्दर श्याम शरीर॥

कलिङ्ग—तिताला

सोवत राधे श्याम जगाई श्याम जगाई।
बैठे निकट श्याम कुञ्जनमें मूंदत नयन लेत अलसाई॥
कानन मोती गले बिच सोहे अलके छूट भुजन
पर आई।
सौनेका गड़ुवा लोग दतुनिया सखियन धाय
यमुना जल लाई।
सूरदास तुम्हरे दर्शको निरखत रूप हियरे लगाई॥

२

तुम कहांसे आए जगे पगे प्यारे रैनके उनींदे
हम जो पहचाने तेरो अंखियां खुमार भरीं।
अधरन अञ्जन लिलाट महावर पीक कपोलन लगे॥
अरसाने सरसाने मैं जाने पिय चरण धरत डगमगे।
चन्द्रसखी जो तुम यहां जावो नहीं लागे तुम्हरे सगे॥

परज—तिताला

मैं कैसे करि हों बात रो सइयो वा दिन सइयांके
सात रो।
गुण अवगुण मेरो चित नहीं धरि है जब निर्मल होंगे
गात रो॥

कलिङ्ग—तिताला

मैं गवने नहीं जइहों रे बालम।
जो गवनेकी चर्चा करि है तापर टोना
चलइहों रे बालम॥

परज—एकताला

बोलन लागे पपिहरा रो ननदी मह को न
भवनवा भावे।
मोरे सइयां सन्देशवा न भेजो अधिक शोच जिय
पछतावे॥

२

कौनि वन जइहोंरे बिरोगना।
गोंदलो गह कनो रोवे बार बार जिय भर भर
आवत यत्न जत सों पइहों रे॥
ले दे मोंहि चुनरिया सइयां सुवे रङ्ग बोरोरे।
बूटो जरद धानो मोको सोहे हमारे॥

नैया पार लगावो है टेरें कारा रे।
छोटी नाव विन गुणको ना पर बहत बयार रे
उमड़ घुमड़ नदिया भर आई क्यों कर उतरौं पार रे
तुम बड़े गरीबनिवाज़ रे ॥

७

मोर पायें चूड़ा चलो नहीं जाय।
दिल्ली शहर से चूड़ा मंगायो न‍ड़वाको कोल
मोरे छुम छुम जाय ॥

कलिङ्ग—एकताला

वाण धनुइयां कित धरे दे री मैया।
तोरी से सब मिल आंगन खेलें चारों भैया ॥
काल्हो दूरद अन्त गए सब सखा बुलैयां।
एक वाण जो खोय गयो सरयू तट मढ़ियां ॥
बाग सुभग बैठक बनी आछे बसन बनइयां।
नानाविध पत्ती बोलें और परम सुख पइयां ॥
सरयू किनारे ना गए बाबाको टहैया।
तुलसी घर घे बुलायके पूछो को न मैया ॥

२

बीती रैन हनुमान न आए को वाको पवन
छोहरानी को भारत भाई विरमाए।
कपि चञ्चल कौन भरोसो देख मधुर फल रहे लोभाए ॥
भोर होत लक्ष्मण संग जरिवे अनुज उठाय राम
उर लाये।
तुलसीदास प्रभु तुम्हरे दर्शको पवन सहित
भोर ले आए ॥

३

गोपाला रामा रे हरि हरि गोविन्दा रे जो
ककावार जात मन्दर दिलहा मारे सुजलदो भव नोर
तीर वासा रे।
गोपी गोपीनाथ गोपो ग्वाला मारे गणपति
मुखदुग गणपति ड़िढ़कतो ॥

४

धन धन केशवा हरत कलेशवा ध्यावत जाको
महेशवा हो।
जाके पद गावल हृदय लगावल गरद मिलावल
अघवा हो ॥
गो ब्राम्हण सधवाके कारण जल वरसत घट
मेघवा हो।
प्रागदास प्रह्लादवाके कारण रघवा हो गइल
बघवा हो ॥

५

भकुवा रे तोय चिन्ता काय राम कहत हूं परल रहो
जाहे जपल शेषवा महेशवा गणेशवा जाहे
जपल है दिनेशवा।
प्रागदास प्रह्लादवाके कारण रघवा होय गइल बघवा ॥

६

कांनुड़ो मारग लूटे हो राज।
ले ले रे कानुड़ा माखन मोपे छाड़ दे
मटुकी मेरी फूटे हो राज ॥
वृन्दावनकी कुञ्ज गलिन में कञ्चुकीके वन्ध
टूटे हो राज।
चन्द्रसखो हित बाल कृष्ण छवि लागो लगन क्यों
छूटे हो राज ॥

जयजयवन्ती—तिताला

हम जान लीनी रे पिया ऐसो तिहारो बात।
मुखको मीठे से जियको औरनसे घात ॥
आज मैं करन न पाई री पिया सन जियको बात।
ऊधो जो मैं तिहारो बलैया लेहों सद्द को ले चलो
उन हो सात ॥

२

कवन बे पियालरी जहां मोर भंवरूरे रहि
लो लोभाय।
वागे हमारी आलो उन विन रही मुरझाय ॥

३

अच्छो वंशो बजाई कान्हा जयजयवन्ती तानसो।
सा रे ग म प ध नि सा नि ध प म ग रे सा
ताल मान वखान सो ॥

४

आज नन्दको नन्दन आलो या मग हो वनको गयो।
शिर मुकुट दीनि कर बीच वंशी लीनि भाल तिलक
कीनि कोटि कामरूप उदयो॥

५

दामिनी दमके डर मोहे लागे उमगे दल बादल
श्याम घटा।
लिख भेजो सखी उन नन्दनको मेरो खोल
किताबको देखें व्यथा
आधी रैनके कारण सइयां बिछुरे हो तो होंगो
वैरागन खोल जटा॥

६

हां रे सइयां मोरा रे लुब्धानो कवन देशवा।
जबते गमन कीनो सुध हू न लीनो कासन भेजों
संदेशवा॥

७

माई नन्द जूके द्वार कोई माला मोरी ले गयो।
माला तो मैं फेर लाऊं दरशन कैसे पाऊं ऐसो
विश्वासघाती मेरो छाती छू गयो॥

८

कहा जानो री कहा जानो लालन हंस कर मन
वश कर लीनो।
ससकर मोरा हियरामा राजे कसक कसक मोरो
अंगिया कसके पिय सदारङ्ग अति हो रसभीनो॥

९

ननदी मोसों वैर परी पियसो कहत न बात।
आवत जात मोरे मनुवारे सदारङ्ग जिय ललचात॥

१०

म्हांसों कांई बोलो म्हारो राज गयलना परदेशो
मुलक बेगाना।
सगरी रैन सुखसों बीती भोर भए सतरात॥

११

माई आज तो आवाज़ आई मजनूंके आहकी।
जिन बिन गेल सूनी मेरो सैरगाहकी॥

चढ़ती अटारी देखती जारी वारी उन बिन सुनो
लागत नगरी संसारकी।
इश्क़ इश्क़ सब कोई कहे आशक़ भए अनेक
इश्क़-चमन के बीचमें पहुंचा मजनूं एक॥
पयसङ्ग बोसोद मजनूं खलके, पुरसीदिये।
चि बूद गुफ़ गोश गाहे कूय लैलो रफ़ बूद॥

१२

मदनमोहन बिन देखे री सजनी घर अंगना न सोहावे।
जब देखत तब होत चैन जिय बिन देखे अकुलावे॥
चित्त चढ़ी रहे सांवरी मूरत और ध्यान नहीं आवे।
जानकीदास विलास सकल सुख जो पिय दर्श
देखावे॥

१३

माई आज तो वंशी बाजो वृन्दावनदो कुञ्ज में।
श्रवण सुनत सब सुध बुध बिसरी सब गोपियनकी
पुञ्ज में॥

१४

ए री माई कासे कहों पीर मनकी व्याकुल
होत शरीर।
जासों लगी सोई नेक न जाने आखर जात अहीर॥

१५

ऋतुके आगम ये पच्छी तरुवर छाये पियाकी
सुध नहीं पाई जिया भटकत है।
दामनो दमकत है औरनसों कहा कहों देख देख—
घटा योगी जटा पटकत है॥

१६

बहुत दिन बीते री अज हूं न आए री लाल।
जबते भवन ते गमन कीनो कीनो विरह बेहाल॥
नेक न सुरत लई पिय मोरी पाती न पठाई हाल।
श्रवण सुनत युगराजदास प्रभु मोहन वचन रसाल॥

१७

वेखो दीवाने लोगो दिन दिल दिन जोणे
कोई मजनूं दे कारण ढूंढ़दो फिरेदो आई।
उसदो सूरत पर जींद साड़ी कुरबान कीती री
लैनी मानी सदके, गइयां रब करे सो होई॥

१८

सूरत लागी रे बलमा पिया और आवो गरवा
लाग मिले।
सदारङ्ग महमद शाह एक ढिग मन्दिर बैठे तब
सुख पावे हैं आनन्द दोऊ जने॥

१९

कौन देश पीउ गइल वा मा।
वहां माई मैं चलों सदारङ्ग परदेश॥

२०

आज तो भवन मेरे ऊधो आए पावना।
मथुरामें कंस मार्‌यो लङ्का मार्‌यो रावणा
गोकुल में मारो पुतना स्वर्ग पठावना॥

२१

तुम सुनियो रे तुम सुनियो ऊधो कपट कहांते,
लाया जोग रे॥
लिख लिख बैराग पठावत नन्दनन्दन हमकों
कुबजासे करें भोग रे।

२२

अजो तुम काहे हो जो तुम काहे रूस रहे
कहो और प्यारे सुरजन मिठबालना।
अनेक बातन किसे बारन रहत निमा जानो जियमें
और कहा कोऊ कैसो अजो॥

२६

तुम्हारे बिन कोई नहीं हमारे जो चाहे सो करा
तू घरी भर में रहीम सतार जब्बार जुलफकार।
अपनी करक लीनी मोरी बहियां पिय रखा कर
कलह बोलन लागे दादुर झिंगरवा
दादुर मोर पपीहा बोले और झिंगरवा सदारङ्गीलो
पायल बाजे छांड़ दे लङ्गरवा॥

जयजयवन्ती—तिताला

कृष्णके नाम ध्यान धरो मन रैन गई सगरो ढरको।
चार दिनाके सुवादके कारण भूल गए सुध वा घरको॥
शोच विचार करो घटमें गुण नाह छियो दूर
अब गुरको।
चाहे निहाल करे छिन में मोहि आश बड़ो
हरको हरिको॥

२

एक समय वृषभानु सुता अपने घरतें निकसो
चपलासो।
बीच ही ठौर मिले जब मोहन छूट गई निकसो
मुख हांसो॥
घूंघटको पट दूर कियो तब दूजते ह्वैं गई पूरणमासो।
कोउ कहे अति ही यह सुन्दर कोउ कहे यह
काम कलासो॥

३

तेरो कन्हैया कारो मेरो राधा गोरो है।
अति ही स्वरूप मानो चन्द्रसो उजियारो है॥
चम्पा जैसो कलो मानो डाल से उतारो है।
शङ्ख चक्र गदा पद्म पीताम्बर धारो है॥
ऐसे श्यामसुन्दर पर कोटि राधा वारो है।
उत तें आए नन्दनन्दन इत वृषभानु दुलारो है
राधा कृष्ण जोरी पर सूर वलिहारो है॥

इति श्रीकृष्णानन्द व्यासदेव रागसागरोद्भव रागकल्पद्रुमे खम्माच,
परज, कालिङ्ग जयजयवन्ती सम्पूर्णम॥

श्रीगणेशाय नमः

राग—भैरव

मङ्गल माधव नाम उचार।
मङ्गल वदनकमल कर मङ्गल मङ्गल जनका
सदा संसार॥
देखत मङ्गल पूजत मङ्गल गावत मङ्गल चरित उदार
मङ्गल श्रवण कथा रस मङ्गल मङ्गल तन वसुदेव
कुमार॥
गोकुल मङ्गल मधुवन मङ्गल मङ्गल रुचि
वृन्दावन चन्द्र।
मङ्गल कर गोवर्द्धनधारी मङ्गल वेश यशोदानन्द॥
मङ्गल धेनु रेणु भुव मङ्गल मङ्गल मधुर बजावत वेनु।
मङ्गल गोपवधू परिरम्भण मङ्गल कालिन्दी पयफेनु॥
मङ्गल चरण पथ मणि मङ्गल मङ्गल कीरति
जगत् निवास।
अनुदिन मङ्गल ध्यान धरत मुनि मंङ्गलमति
परमानन्ददास॥

२

मङ्गल रूप यशोदा नन्द।
मङ्गल मुकुट कान मङ्गल मधि कुण्डल झलक
विराजत चन्द॥
मङ्गल भूषण सब अङ्ग सोहत मङ्गल मूरति
आनन्दकन्द।
मङ्गल लकुट कांखमें चापे मङ्गल मुरली
बजावत मन्द॥
मङ्गल चाल मनोहर मङ्गल दरशन होत मिटे
दुखदन्द।
मङ्गल ब्रजपति नाम सबनको मङ्गल गावत हैं
श्रुति छन्द॥

३

उठो हो गोपाल लाल दुहो धोरी गैयां।
सद्य दूध मथि पीवहु पैयां॥
भोर भयो वन तमचर बोले।
घर घर घोष द्वार सब खोले॥
तुम्हरे सखा बुलावन आए।
कृष्ण कृष्ण कहि मङ्गल गाए॥
गोपी रई मथनियां धोवें।
अपनो अपनो दह्यो बिलोवें॥
भूषण वसन पलटि पहिराऊं।
चन्दन तिलक लिलाट बनाऊं॥
चतुर्भुज लाल गोवर्द्धनधारी।
मुख छवि पर बल गई महतारी॥

४

जागे हो मेरे जगत् उजारे।
कोटिक मनमथ वारों मुसकनि पर कमलनयन
अंखियनके तारे॥
सङ्ग में ग्वाल वत्स सब लेके यमुनाके तीर वन
जाउ सवारे।
परमानन्द कहति नन्दरानी दूर जिन जाहु
मेरे ब्रजरखवारे॥

५

आछो नीको लोनो मुख भोर हो देखाइये।
निशि के उनींदे नयन तोतराते मीठे बैन भावत
हो जी के मेरे सुख हो बढ़ाइये॥
सकल सुखकरण त्रिविध तापहरण उरको
तिमिर बढ़ो तुरत नशाइये।
द्वारे ठाढ़े ग्वाल बाल करहु कलेज लाल
मिश्रि रोटी छोटी मोटी माखन सों खाइये॥
तनिक सो मेरे कन्हैया वारी फेरि डारी मैया
बेगो तो गुहूं बनाय गहरु न लाइये।
परमानन्द जन जननी मुदित मन फूली फली फूली
उर न समाइये॥

६

उठो नन्दकुमार भयो भुनसार गावत नन्दरानी।
झारीके जल वदन पखारो सुत कहि सारङ्गपानी॥

माखन रोटी अरु मधु मेवा भावे सो लीजे हो आनी।
सूरश्याम मुख निरखि यशोदा मन ही मन गुसिह्वानी॥

७

उठे नन्दलाल सुनत जननी मुखवानी।
आलस्य भरे नयन उठे शोभाकी खानी॥
गोपीजन थकित हिये चितवति सब ठाढ़ी।
नयन करि चकोर चन्द्र वदन प्रीति बाढ़ी॥
मात जलझारी लिये कमल मुख पखारी।
नीर ही की स्पर्श करत आलस्य विसारी॥
सखा द्वार ठाढ़े सब टेरत हैं तुमको।
यमुना तट चलो श्याम चारण गोधनको॥
सखा सहित जेंवहु बलि भोजन कुछ कीजे।
सूर श्याम हलधर सङ्ग सखा बोलि लीजे॥

८

जागिये गोपाल लाल जननी बलि जाई।
उठो तात भयो प्रात रजनी को तिमिर गयो
प्रकटे सब ग्वाल बाल मोहन कन्हाई॥
उठो मेरे आनन्दकन्द गगनचन्द्र मन्द मन्द
प्रकट्यो द्युतिवान् भानु कमलनि सुखदाई।
सिङ्गो सब पुरत वेनु तुम विना न छुटे धेनु
उठो लाल तजो सेज सुन्दर वर राई॥
मुखतें पट दूर कियो यशोदाको दर्श दियो
और दधि सब मांगि लियो विविध रस मिठाई।
जेंवत दोउ राम श्याम सकल मङ्गल गुण निधान
थारमें कुछ जठ रही सो मानदास पाई॥

९

प्राणनाथ प्रात भयो जागो बलि जाऊं।
सोना केरो गोफन सुवेणुमें गुथाऊं॥
उगत सुरस ज्योति भई कुलहरो बनाऊं।
पाय बांधों घुंघरू अरु चालिबो सिखाऊं॥
सूरदास मदनमोहन गुण तिहारे गाऊं।
हरषि निरखि छवि ऊपर बलि बलि बलि जाऊं॥

१०

खेलिये आंगन छगन मगन कीजिये कलेवा।
छीकेतें सारो दधि ऊपर तें काढ़ि धरो पहरि
लेहु अंगुली फेंट बांधि लेहु मेवा॥
ग्वालनके सङ्ग खेलन जाहु खेलनके मिश भूषण लाहु
कौन परो प्यारे ललन निशदिनको टेवा।
सूरदास मदनमोहन घर हीं खेलो प्यारे ललन
भंवरा चकडोर देहों हंस चकोर परेवा॥

११

मदनमोहन पिय कीजे कलेऊ।
दूध में रोटी सानो माखन मिश्री आनो
जोइ जोइ भावे सोइ सोइ लेऊ॥
खांड़ खीर और घृत मिठाई आप खाहु और
ग्वालन को देऊ।
व्रजपति पिय फेर खेलन को जाहु वन
सबल श्रीदामा को सङ्ग करि लेऊ॥

१२

भोर निकुञ्ज भवन तें भामिनी।
आवति है लटकति गजगामिनी॥
अलक सुगन्ध सगवगी छूटी।
निशिके उनीदे नयन वीरबहूटी॥
पलटित वसन रसन मणिभूषण।
शोभा अङ्ग अङ्ग जित दूषण॥
गुणनिधान वृषभानु दुलारी।
दासगोपाल लाल जूको प्यारी॥

१३

रैन जागी पिय सङ्ग रङ्गभीनी।
प्रफुलित मुखकञ्ज नयन खञ्जरीट मीन मैन
बिथरि रहे चूरण कच वदन ओप कीनी॥
आतुर आलस जंभात पुलकित अति पान खात
मदमाते तन सुधि न रही शिथिल भई वेनी।
मांगतें टरि मुक्काहल अलक सङ्ग अरुझि रही
उरगण फणीश मानो कञ्चुकी तजि दीनी॥

विकसत ज्यों चम्पकली भोर भए भवन चली
लटपटात प्रेमघटा गजगति गति लीनी ।
आरति को करत नाम गिरिधर सुठि सुखकी राशि
सूरदास स्वामिनी गुणगण न जात चीनी ॥

१४

नागरी नवलाल सङ्ग रङ्ग भरी राजे ।
श्याम अङ्ग बाहु दिये कुंवरि पुलकि पुलकि हिये
मन्द मन्द हसनि पिया कोटि मदन लाजे ॥
तरु तमाल श्यामलाल लटपटी अङ्ग अङ्ग बेलि
निरखि सखी छवि सों केलि नूपुर धुनि बाजे ।
दामोदर हित सुवेश शोभित सखी सुख सुदेश
नव निकुञ्ज भंवर गुञ्ज कोकिल कल गाजे ॥

१५

नवकुञ्ज नयन रतिरङ्ग रङ्गे ।
प्रिया प्रेम वलि रासरस वश अलस वर माधुरी
अङ्ग अङ्गे ॥
रूप यौवन चपलता गुणन आगरे मधुप खञ्जन
मौन मान भङ्गे ।
कहे कृष्णदास कामिनी उरसि मध्यगति
गिरिधरन सुखद प्रतिबिम्ब सङ्गे ॥

१६

प्रातकाल प्यारे लाल आवनी बनी ।
उरसि मरगजी सुमाल डगमगी सुदेश चाल
चरण खूंदि मदन जीति करत दामनी ॥
प्रिया प्रेम अङ्ग राग सगबगी सुरङ्ग पाग
गलित बरह चूड़ श्रमज वारिकण सनी ।
कृष्णदास प्रभु गिरिधर कण्ठ सुरत पत्र लिख्यो
कर जो लेखनी सुनि पुन राधिका गुनी ॥

१७

आजु नीके बने नन्दनन्दा ।
वदन इन्दुकी ज्योति निरखि नभ चन्द्रमा वार
अम्बुधि परत सघन चन्दा ॥
श्रम खेद कण गात लाल गिरिधरण सुख
देत मलयज सुपीन मन्दा ।
कृष्णदासनि नाथ डगमगत पग चलत मानो
कुंचर गूंथ्यो प्रेमफन्दा ॥

१८

ललित वदन गलित कुसुम वलित केश
अति सुदेश नयन नलिन रगमगे शशि शरद शर्वरी ।
मरगजी उर माल शिथिल कहुं कहुं चन्दनकी
रेख रसभरे लटपटात गात मधुप अर्व्वरी ॥
शोभित उर उरज चिह्न परसत नहीं परत पछिम
नख छवि पर वारि डारों चन्द्र खर्व्वरी ।
वासुदेव लाल कल्याण गिरिधर को सुयश
गावत श्रीविठ्ठल पद कमल रज प्रताप गर्वरी ॥

१९

भोर अङ्ग अङ्ग शोभा श्यामके भली ।
मानहु विकसित विचित्र नील कमलकी कली ॥
प्रिया उरसि लग्न राग सरस कुरित छवि पराग
पीन परसि मन्द ले सुगन्ध को चली ।
करि प्रवेश प्राण द्वार हरति युवति चित्तसार
मर्म वेधि समरवाण प्रगटत बली ॥
पलटि वसन सुखनिधान मत्त मधुप करत गान
सुरति समय सुयश सुनि श्रवण दे अली ।
गोपालदास मदन मोहन कुञ्ज भवन वलित रङ्ग
मुदित आवनि भावनी सुमानिके रली ॥

२०

शोभित शुभग लटपटी पाग भीनि रसिक प्रिया
अनुराग ।
कुंकुम तिलक अलक ढुंदुर छवि अरुण
नयन घूमत निशि जाग ॥
कछु जंभात उर माल मरगजी पीक कपोल
अधर मसि दाग ।
चतुर्भुज प्रभु गिरिधर नीके लागत आलस वश
सब अङ्ग विभाग ॥

२१

भोर तमचर बोले दीनों जूद रसना ।

आतुर ह्वै उठि धाए डगमगात चरण आए आलसमें
नयन बैन अटपटे रसना ॥
सन्ध्या जू कहि सिधारे वन जियमें संभारे
सकुचिके मन्द मन्द प्रकटित दसना ।
चतुर्भुज प्रभु गिरिधरण सिधारो तहां जहां
रति रङ्ग रस लपटाए वसना ॥

२२

झूमत मत्त गज ज्यों चलत डगमगे ।
बतियां कहत रहै न मुख न आवत बैन
आलस उनींदे नयन शोभित रगमगे ॥
नागर नन्दकिशोर नीको छवि आए भोर
अङ्ग अङ्ग रतिरङ्ग चिह्न जगमगे ।
चतुर्भुज प्रभु गिरिधरन क्यौं लागे पलक चारि
याम जीति काम रहे जू टगमगे ॥

२३

आजु छवि देत नयन आलस भरे रगमगे।
नैन पलक न परो सुरत रण जय करो
भोर आए लाल धरत पग डगमगे ॥
तन और गति भांति कहत कहि न जाति कांति
अद्भुत सकल अङ्ग अङ्ग जगमगे ।
चतुर्भुज प्रभु गिरिधरन भला करो पलटि
आए वसन सोंधे मिले सगमगे ॥

२४

भोर डगमगात पग जीति मन्मथ चले ।
सकल रजनी जगे नयन नहीं पल लगे
अरुण आलस चलत नयन लागत भले ॥
कवि नागर नटत चिन्ह प्रकटित करत वसन
आभूषण सुरति रण दलमले।
चतुर्भुज दास प्रभु गिरिधरन छवि बढ़ो अधर
काजर कुंकुम अङ्ग अङ्ग रले ॥

२५

डगमगात आए नटनागर ।
कछु जंभात अलसात भोर भए अरुण नयन
घूमत निशि जागर ॥
रसिक गोपाल सुरति रण को यश सकल चिह्न
लाए उर कागर ।
चतुर्भुज प्रभु गिरिधरन कुञ्ज गढ़ रतिपति जीत्यो
ह्वै सुखसागर ॥

२६

भोर भए आए हो ललन नीकी भंतियां ।
जावकके उर चिह्न नील पट प्यारी दीने नयन
आलस भीने जागे रतियां ॥
छुटा ग्रीवा वनदा मन खैंचत अभिराम कैसेके
दुरत श्याम डगमगी गतियां ।
केशवदास प्रभु नन्द सुवन काहे लजात भलेजू
सांवरे गात जानो सब घतियां ॥

२७

आइयेजू भले आए कत सकुचत हो ।
सुरति संग्राम कीने सौतिन का सुख दीने
याहो रस भीने हा पै मोकों तो रुचत हो ॥
तुम देखे रिस गई उपजी है प्रीति नई भई सो
भई अब काहे धौं सोचत हो ।
नारायण मोहि जानो वहै वैरो करि मानो
कहा जीय एतो अभिलाषजू मुचत हो ॥

२८

अरुण नयन राजत प्रभु भोरे ।
अति सुख सुरति किये ललना सङ्ग जात समद
मन्मथ सर जोरे ॥
राति उनींदे अलसात मराल गति गोलक
चपल रहत कछु थोरे ।
मनहुं कमलके कोष ते प्रियतम ढूंढत रहत
छपि रिपुदल दोरे ॥
सजल कोप प्रतिमें जु शोभियत सङ्गम छवि
तारे पर डोरे ।
मनु भारतके भ्रमर मीन शिशु जात तरल चितवत
चित चोरे ॥

बरणि न जाइ कहां लों बरणौं प्रेम जलद बेला
बलघोरे।
सूरदास सो कौन प्रिया जिनि हरिके सकल
अङ्ग बल तोरे ॥

२९

नाहि टुरत नयना रतनारे।
जनु बन्धूक सुमन विशाल पर सुन्दर श्याम
शिलीमुख तारे ॥
रहो जो अलक कुटिल कुण्डल पर मोहन चितवत
चितै विसारे।
शिथिल भौंह धनु गहे मदनगुण रहे कोकनद
बाण बिसारे ॥
मंदे हो आवत हैं ए लोचन पलक आतुर उघरत
न उघारे।
सूरदास प्रभु सोई धौं कहो ऐसो को वनिता जासों
रति रण हारे ॥

३०

आवत लाल गोवर्द्धनधारी।
आलस नयन सरस रस रञ्जित प्रिया प्रेम नवतन
अनुहारी ॥
विलुलित माल मरगजी उर पर सुरति समरको
लगी पराग।
चुम्बन श्याम अधर रस गावत सुरभि मुख भाव
भैरव राग ॥
पलटि परे पट नील सखीके रसमें झीलत मदनतड़ाग।
वृन्दावन वीथिन अवलोकत कृष्णदास लोचन
बड़ भाग ॥

३१

भोर भावतो श्रीगिरिधर देखौं।
शुभग कपोल लोल लोचन छवि निरखिके नयन
सुफल करि लेखौं ॥
नख शिख रूप अनूप विराजत अङ्ग अङ्ग मनमथ
कोटि विशेखौं।
चतुर्भुज प्रभु रस रास रसिक को बड़े भाग बल
इकटक पेखौं ॥

३२

श्याम सुन्दर भोर भवन आगे होय आवे।
कबहुं मुख मन्द हास मेरे मेरे सखि सुखको रास
कबहुं वैन कबहुं नयन सैन हौं जनावे ॥
मेरो दधि मथन बार उनको उठनि सवार
रई नेत माट समेत सकल हौं विसरावे।
चतुर्भुज प्रभु गिरिधरन अङ्ग अङ्ग कोटि मदन
मूरति चलत वनको तनक मन कौं चिते हो चुरावे ॥

३३

जइये वह देश जहां नन्दनन्दन भेटिये।
निरखिये मुखकमल कान्ति विरह ताप मेटिये ॥
सुन्दर मुखरूप सुधा लोचन पुट पोजिये।
लम्पट लव निमिष रहित अंचय अंचय जोजिये ॥
नख शिख मृदु अङ्ग अङ्ग कोमल कर परसिये।
अरु अनन्य भाव सो भजि मन क्रम वच सरसिये ॥
रास हास भुव विलास लीला सुख पाइये।
भक्तनके यूथ सहित रसनिधि अवगाहिये ॥
इह अभिलाष अन्तरगत प्राणनाथ पूरिये।
सागर करुणा उदार त्रिविध ताप चूरिये ॥
क्षण क्षण पल कोटि कल्प वीतत अति भारी।
परमानन्द कल्पतरु दीनन दुखहारी ॥

३४

भोर भए नीको मुख हंसत दिखाइये।
रातिके दरशके बिछुरे दोउ पलक भेरे वारि
फेरि डारों नेकु नयननि सिराइये ॥
कोमल उन्नत बाहु ऊपर अमित भाव मेरो
तेरो छातो छवि अधिक बढ़ाइये।
छीतस्वामी गिरिधर सकल गुणनिधान कहा
काहूं सुख करि प्राण हो ते पाइये ॥

३५

विलुलित करपल्लव मृदु वैन।
हरषित हुंकारत आवत धेन ॥

कोटि मदन द्युति श्याम शरीर ।
विपति कल्पतरु यमुना तीर ॥
दक्षिण चरण चरण पर धरे ।
वाम अंश भ्रूकुण्डल चले ॥
बरह चन्द्र वन धातु प्रवाल ।
मणि मुक्ता गुञ्जाफल माल ॥
देखन चलहु नेम नन्दलाल ।
ललित त्रिभङ्गी मदन गोपाल ॥

३६

तोहि ध्यान लाग्यो सजनी री बारक दृष्टि परे मोहन।
देखियत चित्र लिखीसो ठाढ़ो मदन सिन्धुजल
बून्दसनी ॥
कृपनिधान कमललोचन तोहि मिले आजुकी रजनी ।
कृष्णदास प्रभु गोवर्द्धनधर रसिक युवति दुखहरनी ॥

३७

आंखिनमें दुराय प्यारो काह देखन न दीजिये ।
हृदय लगाई सुख पाई सुख सब गुणनिधि पूर्ण
जोइ जोइ मन इच्छा होइ सोइ सोइ क्यों न कीजिये ॥
मधुर मधुर वचन कहत श्रवणनि सुख दीजिये ।
निर्मल प्रभु नन्दनन्दन निरखि निरखि जीजिये ॥

३८

ऐसे हो धर्‍यो रे दधि विना मथन किये देह
यशमति नेकु अपनी दई ।
अपनहुं ढूंढि हारी तैसी निशि अंधिआरी पाऊं न
भवन मांझ कहां धौं गई ॥
कछु न जिय सुहाई याही तें आतुर आई लोनोकी
लालच जिय चटपटी भई ।
दिना चारि करौं काज बाढो नन्दजू को राज
जौलों बहुरि हौं ल्याऊं नई ॥
चतुर्भुजदास रानी मेरी अति चोप जानी है
प्रसन्न मणि महिया आनि दई ।
भोर ही देऊं असीस वारजि निखिसो सीस तिहारे
गिरिधरकी हौं बलि बलि गई ॥

३९

श्रीनाथ जीको ध्यान मेरे निशिदिना री माई
माधुरी मूरति सोहनी सूरति चित लियो चुराई ।
लाल पाग लटकि भाल चिबुक बेसर कण्ठमाल
कर्णफूल मन्दहास लोचन सुखदाई ॥
मोर पक्ष शीस धरें मोतिनके हार गरें बाजूबन्द
पहुंचिन कर मुद्रिका सुहाई ।
क्षुद्र घण्टिका जेहरि नूपुर बिछिआ सुदेश
अङ्ग अङ्ग देखत उर आनन्द न समाई ॥
मुरली अधर धरे श्याम ठाढ़े व्रज युवति माह
सप्त सुरन तान गान गोवर्द्धन राई ।
निरखि रूप अति अनूप छाके सुर नर विमान
वल्लभ पद किङ्कर दामोदर बलिजाई ॥

४०

श्रीकृष्ण जी को ध्यान मेरे निश दिनारी माई ।
मनके महल प्रीति कुञ्ज तामें यदुराई ॥
सांवरे वर्ण कोमल चरण नख देखे चकचौंधो
होत पाय नूपुर पंजनी सो विधिने बनाई ।
दाहिने पद पद्म तातें ठेढ़े धरत आली री
ऐसे चरण दुखके हरण हैं सदा सुखदाई ॥
लाल इजार ताके बीच कञ्चनके तार लगे काछनी
पचरङ्ग तापर किङ्किणी छवि छाई ।
वनमाल मुक्तामाल कण्ठ बनी कौस्तुभमणि
पीताम्बर चटक तामें दामिनी द्युति पाई ॥
बाजूबन्द अङ्गुरी मुन्दरी नगन की अति चमत्कार
अरुण अधर मधुर सुर मुरली बजाई ।
कमल नयन विमलकान्ति कुण्डल प्रतिबिम्ब
होत आनन्द सो मुख मानो रह्योरी मुसकाई ॥
घुंघरवारी अलक झलक किये चन्दन खोर
और मोर मुकुट शीस धरे बनी सुन्दरताई ।
कहे भगवान् हित राम राय प्रभु को निहारि
श्रीगोपाल श्रीगोपाल रसना रट लाई ॥

४१

सुमिरो नर नागरवर सुन्दर गोपाल लाल।
सब ही दुःख मिटि जैहैं चितवत लोचन विशाल॥
अलकनकी झलकन लखि पलकन गति भूलि जात
भ्रूविलास मन्दहास रदन छदन अति रसाल।
निन्दित रवि कुण्डल छवि गण्ड मुकर झलमलात
पिच्छगुच्छ कृतवतंश इन्दु विमल विन्दु भाल॥
अङ्ग अङ्ग जित अनङ्ग माधुरी तरङ्ग रङ्ग
विमद मद गयन्द होत देखत लटकीली चाल।
रतन रसन पीत वसन चारु हार वर शृङ्गार
तुलसी रचित कुसुम खचित पीन उर नवीन माल॥
व्रजनरेश वंशदीप वृन्दावन वर महीप
श्रीवृषभानु मान्यपात्र सहज दीनजन दयाल।
रसिक भूप रूपराशि गुणनिधान जान राइ
गदाधर प्रभु युवतिजन मुनि मानस मन मराल॥

४२

दीन्हौं दर्श सुपनेमें आई।
क्षण एक सुख उपज्यो मेरे मन गयो कहूं
हरि विरह बढ़ाई॥
हा हा पांइ परति हौं तेरे क्यों हूं करि लावे न बुलाई।
अब न परत मोहे कल पल क्षण विनु भेंटे जिय
अति अकुलाई॥
यह दुःख काहि कहों सखि तो विन मेरे तू हा
एक सहाई।
कहा विलम्ब करति जैबेको तोसे कहति सखि
सौंहैं खाई॥
वह मूरति गड़ि रही हियेमें निकसत नहीं
न और उपाई।
उठिए हे सुनि विनती मेरो यशुमति सुत
रसिकनिके राई॥

भैरव—चर्चरी

हरिके विमुखन को मुख जिनि दिखावे
जिनि दिखावे नाथ जिनि दिखावे।
जिनको सङ्गति किये होत दुर्मति हिये
हरिके गुण रूप यश तुर्त विसरावे॥
जिनके परसत सदा सरस मन विषय रस मगन ह्वै
जात अति पाप उपजावे।
करत कछु ना डरे गेहमें चित धरे सत्सङ्ग
परिहरे युवति चितु लावे॥
साधु निन्दा करे झूठ भाषे सदा प्रीति राखे
विषयी वचन मन भावे।
अनेक साधन करि जारि राख्यो मात्र छिनकमें
जल अग्नि ज्यों बुझावे॥
तेई जन विमुख जे करें औरे बात कृष्ण न सुहात
संसार धावे।
साधु सङ्गति रहे वचन हरि गुण कहे सतत
निबहे रसिक सोई सुख पावे॥

१

नाथ हा हा मोहि दर्श दीजे।
दोष जिनि मन धरो सहज करुणा करो
बिगर साधन मोहि दास करि लीजे॥
दुःखित क्षण होत जिय वदन देखे विना
रैन दिन तपत चित कैसे जीजे।
कासों कहिए हिये राखिए कौन विधि रहतु
नहीं क्यों हूं करि देह छीजे॥
लेत न उसास उर कैसे हो समाई नहीं सोचु
दृग भरि न पीजे।
वदन लावति अमृत रसिक प्रीतम सुखद पान
विनु सकल तन कैसे भीजे॥

२

नेकु बोलो नाथ अमृत रस वैन।
और न सुहाई ए री करति हों हाई मित चित
न लागत कहूं नेकु नहीं चैन॥
दीनजन मन मनोरथके पूरण कारण और तिहुं
लोकमें देखियत है न।

जो मिलत आइ ते लेत सर्व्व स्वभाव करि कहौ
कैसे हरि मनु रहै ऐन ॥
अर्थ मन रावरो है तिहारे हाथ नाथ कहो और
समर्थ है को दैन ।
रसिक पिय जिनि करो कठिन मन दीन पर
परसिके तजत यह लक्षण तो घटै न ॥

४

ए ललना जागो भयो भोर ।
दूध दही पकवान मिठाई लीजिये माखनचोर ॥
विकसे कमल विमल वाणी बोलन लागे पक्षी
चहुं ओर ।
रसिक प्रीतम सों कहति नन्दरानी सुनि आवो
बैठो गोद ह्यां हो नन्दकिशोर ॥

५

वृन्दावन नव निकुञ्ज ठाढ़े उठि भोर ।
बांह जोरि वदन मोरि हंसत सुरत रतिको करि
चितवत पुनि कछु लजाइ नयननको कोर ॥
करत कबहुं वेणु नाद अधरनि पाइ सुधास्वाद
पक्षीगण प्रमुदित मन बोलत चहुं ओर ।
रसिक प्रीतम छवि निहारि प्रकट्यो घन जिय विचारि
बार बार उमगित ह्यां नाचत है मोर ॥

६

श्रीवल्लभ सुयश सन्तत नित उठि गाऊं ।
मन क्रम वचन क्षण एक न विसराऊं ॥
पुरुषोत्तम अवतार सुकृत फल फलित
जगत् वन्दन श्रीविठलेश दुलराऊं ।
परसि पदकमल रज निरखि सौन्दर्य्य निधि
प्रेम पुलकित कलुष कोटिक नशाऊं ॥
श्रीगिरिधरन भवपति मान मर्द्दन करण
घोषरक्षक सुखद सुयश सुनाऊं ।
श्रीगोविन्द ग्वाल सङ्ग गाय ले चलत वन निरखि
नयन सिराऊं ॥
श्रीबालकृष्ण सदा सहज बालक दशा कमल
लोचन सुहर्षित रुचि बढ़ाऊं ।
भक्तिमार्ग सुदृढ़ करण गुणराशि व्रजभूषण
श्रीगोकुलनाथ हो लड़ाऊं ॥
श्रीरघुनाथ धर्म्मधुरन्धर शोभासिन्धु रूप लहरिन
दुःख दूरि वहाऊं ।
पतित उद्धरन महाराज श्रीयदुनाथ विशद
अम्बुज हाथ शिरसि परसाऊं ॥
श्रीघनश्याम अभिराम रूप वर्षा स्वाती आशा
लागि रसना चातक रटाऊं ।
चतुर्भुजदास पद्मा द्वार प्रणिपात करि सकल
कुलको चरणामृत भोर उठि पाऊं ॥

७

भज श्रीविट्ठल चरण सरोजं ।
नखमणि दीपति दमित मनोजं ॥
यिक्ष सिय दिसत तं सुखसारं ।
त्यजसि न किमिति विषय ध्रुत भारं ॥
यदि वाञ्छसि हरिभक्ति सुरत्नं ।
कुरु चपलं शरणागत यत्नं ॥
प्राप्य सुदुर्लभ नरवर देहं ।
परिहर सकल निगम सन्देहं ॥
मानय हृदय मयोदित वचनं ।
नदर्थामि नोचितदतिशय पचनं ॥
वत्सपद भावय भवजलधिं ।
सततमिमे भवाधिनववधिं ॥
नाथ तवाह मितोरगरावं ।
पूरय सतत मिमं मयि भावं ॥
तव गुणगण कथितामृत गाथे ।
प्रार्थ्यमिदं दिश तव रघुनाथे ॥

८

श्रीविट्ठलेश विट्ठलेश रसना जप मेरो ।
ग्रन्थनको यही सार याहीमें होत पार
बार बार कहत ता सों तू वहि तू मेरो ॥

अनत हू न भलो तोर वेगि कह्यो करहि मोर
भजि लेसिरमौर नाथहिं सकल सुखद केरो ।
जगत्‌जनकौ सहाय प्रेम पुञ्ज सुयश गाय दूर करो
असद् बात विषया अरुझेरो ॥

९

प्रकटित सकल सृष्टि आधार ।
श्रीमद्वल्लभ राजकुमार ॥
धेय सदा पद अम्बुज सार ।
अगणित गुण महिमा जु अपार ॥
धर्म्मादिक द्वारे प्रतिहार ।
पुष्टि भक्तिको अङ्गाकार ॥
श्रीविट्ठल गिरिधर अवतार ।
नन्ददास कीन्हो वलिहार ॥

१०

जय जय श्रीवल्लभ प्रभु विट्ठलेश साथे
निज जन पर करत कृपा धरत हाथ माथे ।
दोष सबै दूरि करत भक्तिभाव हिये भरत
काज सबे सरत सदा गावत गुण गाथे ॥
काहे कों देह दमत साधन मरि मूर्ख जड़
विद्यमान आनन्द तजि गहत क्यों अपाथे ।
रसिक चरण शरण सदा रहत हैं बड़भागी जन
अपना करि गोकुलपति भरत ताहि वाथे ॥

११

श्रीविट्ठलनाथ जूके चरण शरणं ।
श्रीवल्लभनन्दनं कलिकलुषखण्डनं परमपुरुषं
त्रयताप हरणं ॥
सकल दुःख दारणं भवसिन्धु तारणं जनहित
लीला देह धरणं ।
कान्हरदास प्रभु सब सुख सागरं भूतले दृढ़
भक्तिभावकरणं ॥

१२

जय जय जय श्रीवल्लभनन्द ।
कोटि कला वृन्दावन चन्द ॥
निगम विचारे न लहे पार ।
सो ठाकुर अक्काजूके द्वार ॥
लीला करि गिरि धार्‌यो हाथ ।
चीत स्वामी श्रीविट्ठलनाथ ॥

१३

नयन भरि देखों गिरिधर को कमल मुख ।
मङ्गल आरती करों प्रात ही वारन निरखत होत
परमसुख ॥
लोचन विशाल छवि सचि हृदयमें धरों
कृपा अवलोकन चारु भृकुटिनु रुख ।
चतुर्भुज दास प्रभु आनन्द निधिरूप निरखि
करों दूर सब रैनको विरह दुख ॥

१४

मङ्गल आरती गोपालको ।
नित उठि मङ्गल होत निरखि मुख चितवन
नयन विशालको ॥
मङ्गल रूप श्यामसुन्दर को मङ्गल छवि भृकुटी
भालको ।
चतुर्भुज दास सदा मङ्गलनिधि वानिक गिरिधर
लालको ॥

१५

मदनगोपाल हमारे राम ।
धनुष वाण धरि विमल वेणु कर पीत वसन
अरु तन घनश्याम ॥
अपनो भुजा जिनि जलनिधि बांध्यो रास
नचाये कोटिक काम ।
दशशिर हति सब असुर संहारे गोवर्द्धन
धार्‌यो कर वाम ॥
तब रघुवर अब यदुवर नागर लीला नित्य विमल
बहु नाम ।
परमानन्द प्रभु भेद रहित हरि निजजन मिलि
गावत गुणग्राम ॥

अथ रास-कीर्तन

राग रङ्गनिध मिलवत नई।
नाचति व्रज ललना तनु थई॥
मुखरित कटितट मणि मेखला।
अभिनव यत् चञ्चल करतला॥
नूपुर सञ्चित मोहित जना।
लेति उरप गति प्रमुदित मना॥
कृष्णदास प्रभु नेंअङ्गचारी।
विभ्रम लाल गोवर्द्धनधारी॥

२

नीकी मोहि लाग्यो गिरिधर गावे।
ततथेइ ततथेइ रव राग मिलि मुरलीको बजावे॥
नाचत नृप वृषभानुनन्दिनी औघर गति रङ्ग उपजावे।
नूपुर रणित मुखर मणि कङ्कण सखी यूथ
सुखराशि बढावे॥
सुरति देत मधुमत्त मधुपकुल एकताली मनके
मन भावे।
सुरति सिन्धु प्यारो पिय पदरज कृष्णदास
न्योछावरि पावे॥

३

प्यारी ग्रीवा भुज मेलि नृत्यत पिय सुजान।
मुदित परस्पर लेत गतिमें गति गुणराशि
राधे गिरिधरन गुणनिधान॥
सरस मुरली ध्वनि सों मिले सप्तसुर गावत भैरव
राग अवघर तान बन्धान।
चतुर्भुज प्रभु श्याम श्यामाकी नटन देखि रीझे
खग मृग वन थकित व्योम विमान॥

४

नृत्यत गोपाल सङ्ग राधिका बनी।
बाहुदण्ड भुजन मेलि मण्डल मधि करत केलि
सरस गान श्याम करें सङ्ग भामिनी॥
मोर मुकट कुण्डल छवि काछनी बनी विचित्र
झलकत उरहार विमल थकित चांदनी।
परम मुदित सुर नर मुनि वर्षत सब कुसुम अति
वारति तन मन प्राण कृष्णदास स्वामिनी॥

५

नाचत वृषभानु सुता हंस सुता पुलिन मध्य
हंसहंसिनी मयूर मण्डली बनी।
गावत गोपाल लाल मिलवत झपताल चाल
लज्जित अति मत्त मदन कामिनी अनी॥
पदिकलाल कण्ठमाल तरल तिलक झलक भाल
श्रवण फूल वर दुकूल नासिका मनी।
नील कञ्चुकी सुदेश चम्पकली गलित केस
मुखरित मणि दाम वाम कटि सुकाछनी॥
मरकत मणि वलयराव मुखरित नूपुर सुभाव
जावक युत चरण नखनि चन्द्रिका घनी।
मन्द हास भौंह पास रास लास भुव विलास
अलग लाग लेत सुघर राधिका गुनी॥
काम अन्ध कितव वन्ध रीझ रहे चरण गहे
साधु साधु कहत फिरत राधिका धनी।
भेंटत गहि बाहुमूल उरज परस भई फूल
व्यास वचन सानुकूल रसिक जीवनी॥

६

मोरनके मण्डलमें नाचत पिय प्यारी।
सिखवत सब तान मान सीखति लखि दुरनि मुरनि
हां हां हां हांके आप देत हैं कर तारी॥
मधुरे सुर राग लेत रागिणी सों मिले तान
रीझके लपटात दौज भरि भरि अंकवारी।
श्रीविट्ठल सङ्ग खेलति बोलति तताथेइ थेइ
विहरत गिरिधारी लाल सुन्दरि नव नारी॥

अथ श्रीयमुनाजीके पद

जय जय श्रीसूर्यजा कलिन्द नन्दनी।
गुल्म लता तरु सुवास कुञ्जकुसुम मोद मत्त
गुञ्जत अलि शुभग पुलिन वायु मन्दनी॥
हरि समान धर्म्मशील क्रान्ति सजल जलद नील
कटि नितम्ब भेदन नित गति उतङ्गनी।

सिक्ता जनु मुक्ताफल कङ्कण युत भुज तरङ्ग
• कमलनी उपहार ले पिय चरण वन्दनी ॥
श्रीगोपेन्द्र गोपी सङ्ग श्रमजलकणसिक्त रङ्ग
अति तरङ्गनी सुरसिक रस सुफन्दनी ।
चीत स्वामी गिरिवरधर नन्दनन्दन आनन्द कन्द
यमुना जनदुरित हरण दुःख निकन्दनी ॥

२

अतिमञ्जुल जल प्रवाह मनोरमा
सुखावगाहन नव द्युति राजत अति तरणि नन्दनी ।
श्याम वरण झलक रूप लाल लहरि वर अनूप
सेवत मन्मत मनोज वायुमन्दनी ॥
कुमुद कञ्जवन विकाश मण्डित दिश दिश सुवास
कूजित कलहंस कोक मधुर क्रन्दनी ।
प्रफुलित अरविन्द पुञ्ज कोकिल शुकसार गुञ्ज
सेवित अलि भृङ्ग पुञ्ज विविध वन्दनी ॥
नारद शुक सनक व्यास ध्यावत मुनि करत आश
चाहत हैं पुलिन वास सकल दुःख निकन्दनी ।
नाम लेत कटत पाप ऋषि किन्नर मुनि कलाप
करत जाप परमानन्द आनन्द कन्दनी ॥

३

श्रीयमुनादेवी कौन भलाई ।
नाम रूप गुण ले हरिजू को न्यारो ये अपनो
चाल चलाई ॥
उन वश देश कियो भ्राता को तुमहि परसि
कोउ उत हो न जाई ।
जे तन तजत तीर तुम्हरे ते तात किरणमें गैल लगाई ॥
मुक्तवधूको करि दूतत्वं अधमनिको ले आनि मिलाई ।
आपुन श्याम आनि उज्ज्वल करि तात तपत
आपु शीतलताई ॥
जल को छल करि अनल अघन को यह सुनिके
कोउ क्यों वपत्याई ।
निशदिन पक्षपात पतितन को तदपि गदाधर
प्रभु मन भाई ॥

४

यमुना यमुना नाम भजो ।
हरिवत् करो आराधन इनको और कुपन्थ तजो ॥
देहैं सकल पदारथ तुमको और का नाहीं गजो ।
व्रजपतिको अति हो प्यारो है तातें सकल
शृङ्गार सजो ॥

समुदाय

अरुझियो नीलाम्बर पीताम्बर मढ़ियां ।
कुण्डल सों लर लट वेसर सों पात पट हार हुमें
वनमाल बढ़ियां में बढ़ियां ॥
हंसगति अति छवि अङ्ग अङ्ग रही फबि उपमा
विलोकिवे कों पटतर नहियां ।
कामके कलोल छूटे सेज छुके सुख लूटे सूर
प्रभु विलसे कदम छकी छहियां ॥

२

आए लाल डगमगत प्रात ।
भाल महावर पीक कपोलनि अधरन मसि
नयननि अरसात ॥
मोतीमाल लसे उर विनु गुण शिथिल पाग
शिथिल सब गात ।
बोलत बोल अटपटे मोहन तापर सौंह
करत न लजात ॥
ओढ़े नील वसन तुम आए हेज चन्द्र छद
मांझ लखात ।
सांचे बोल निबाहे व्रजपति माया करि आए परसात ॥

३

अरुण उदय आए मेरे नन्दलाल ।
शिथिलित अङ्ग उनीदे नयननि धरणी धरत
डगमगी चाल ॥
अधरनि अञ्जन पीक कपोलनि लटपटी पाग
जावक लगो भाल ।
तापर सौंह करत हो व्रजपति उरसि विराजत
विन गुण माल ॥

४

प्रात समय आवत गिरिधारी ।
कुञ्ज महलनतें चले भोर उठि सङ्ग राजत
वृषभानु दुलारी ॥
घूमत नयन उनींदे निशिके निरखि सहचरी गई
वलिहारी ।
पीक कपोलनि लगी दुहुंनिके व्रजपति शिथिल
गात अति भारी ॥

५

घूमत रतनारे नयन सकल निशा जागी ।
लटपटो सुदेश पाग अलकनको छलक बीच
पीक छाप युग कपोल अधरनि मसि लागी ॥
विन गुण उर माल बनी बीच नखनि रेख ठनी
पलटि परे वसन पीत कङ्कण सौं दाग़ ।
चाक बन्यो चन्दन वनमाल लग्यो चन्दन सौं
डगमगात चरण धरत प्रिया प्रेम पागी ॥
वचन रचन कियो सांझ वेगि आये भोर मांझ
वलि वलि या वदन कमल शोभित अनुरागी ।
जाय वसो वही धाम विलसे जहां सकल याम
गोविन्द प्रभु वलिहारी कर जोरे मांगी ॥

६

आए भोर उनींदे श्याम ।
सकल निशा जागी प्यारी सङ्ग हारे हो रतिरण
संग्राम ॥
शिथिलित पाग भाल पर जावक हिये विराजत
विन गुण माल ।
कुङ्कुम तिलक अलक पर सेंदुर शुभग पीक
सोहत दोउ गाल ॥
कङ्कण पीठ गड्यो उर नख चत जनु घन मांध
दैजको चन्द ।
छीत स्वामी गिरिधरण भले तुम मोहि खिझावत
हो नन्दनन्द ॥

७

सुमिर मन गोपाल लाल सुन्दर अति रूपजाल
मिटि हैं जञ्जाल सकल निरखत सङ्ग गोप बाल ।
मोर मुकुट शीश धरे वनमाल शुभग गरे
सबको मन हरे देखि कुण्डलको झलक गाल ॥
आभूषण अङ्ग सोहे मोतिनके हार पोहे
कण्ठश्री मोहे दृग गोपी निरखत निहाल ।
छीतस्वामी गोवर्द्धनधारी कुंवर नन्द सुवन गाइनके
पाछे पाछे धरत हैं लटकीली चाल ॥

८

प्रात भयो जागो वलि मोहन सुखदाई ।
जननी कहे बार बार उठो प्राणके आधार
मेरे दुःखहार श्यामसुन्दर कन्हाई ॥
दूध दही माखन घृत मिश्री मेवा बादाम
पकवान भांति भांति विविध रस मलाई ।
छीतस्वामी गोवर्द्धनधारी लाल भोजन करि
ग्वालनके सङ्ग वन गोचारण जाई ॥

९

भई भेंट अचानक आई ।
हौं अपने गृहतें चली यमुना वे उततें चले
चारण गाई ॥
निरखत रूप ठगौरी लागी उत कौं गगर भरि
चल्यो न जाई ।
छीतस्वामी गिरिधरण कृपा करि मोतन चितए
मुर मुसकाई ॥

१०

जागिये व्रजराज कुंवर कमल कोष फूले ।
कुमुदवृन्द सकुचि गये भृङ्ग लता भूले ॥
तम चर खग रोर सुनहु बोलत वन राई ।
रांभति गौ षीर हेत बछरा हित धाई ॥
विधु मलीन रवि प्रकाश गावत व्रजनारी ।
सूर श्याम प्रात उठे अम्बुज करधारी ॥

११

कमल नयन हरि करो कलेवा।
माखन रोटो सद्य जम्यो दधि भांति भांतिके मेवा॥
खारक दाख चिरोंजो किशमिशि उज्ज्वल
गरो बादाम।
सफरी सेब छोहारे पिंवारे जे खरबूजा नाम॥
अरु मेवा बहु भांति भांतिके षट् रसके मिष्टान्न।
सूरदास प्रभु करत कलेऊ रीझे श्याम सुजान॥

१२

उठहु नन्दकुमार भयो भिनुसार जगावति नन्दरानी।
झारीके जल वदन पखारो सुत कहि कहि
सारङ्गपानी॥
माखन रोटो अरु मधु मेवा जो भावे सो लोजे आनो।
सूरश्याम मुख निरखि यशोदा मन हो मनहि
सिहानी॥

१३

भोर भए निरखत हरि को मुख प्रमुदित
यशुमति हर्षित नन्द।
दिनकर किरण कमल जनु विकशित उर प्रति
अति उपजत आनन्द॥
वदन उघारि जगावति जननो जागहु मेरे आनन्दकन्द।
मानहु मथि सुर सिन्धु फेन फटि दई दिखाई
पूरण चन्द॥
जा को ईश शेष ब्रह्मादिक गावत नेति नेति
श्रुति छन्द।
सोइ गोपाल सुगोकुल भोतर सूर सुप्रकटे परमानन्द॥

१४

तहिं जाहु जहां रैन हुते।
काहे को दुराव करत नन्दनन्दन मिटे न अङ्ग
उर चिह्न युते॥
बिन गुण हार मनोहर उर पर परम चतुर हिय
लाइ सुते।
बिथुरी अलक अटपटे भूषण लुटे काम
कुच बोच उते॥
दशन दाग़ नख रेख छबोलो भामिनि भवन
भाव भुगुते।
सूर श्याम देखिअत मम शोभा लोचन ललित
उनींद हुते॥

१५

तहीं जाहु जहां निशा वसे।
जानति हों पिय चतुर शिरोमणि नागर
जागर राग रसे॥
घूमत हो मानो पिया उरगण नव विलास
श्रम सेज उसे।
श्याम उरस्थल पर नख शोभित गगन
दुइज जनु इन्दु लसे॥
काजर अधर प्रकट देखिअत है नागवेलि
रङ्ग निपट खसे।
लटपटि पाग महावरके रङ्ग मानिनि पग
पर शोस घसे॥
विगलित वरस मरगजो माला पोठि
वलयके चिह्न वसे।
सूरदास प्रभु प्रिया वचन सुनि नागर नगधर
नेकु हंसे॥

१६

क्यों अब दुरत हो प्रकट भये।
कहत हैं नयन निशाके जागे मानो सरसिज
अरुण नये॥
जावक भाल नागरस लोचन मसि रेखा
अधरनि जो ठये।
वलया पोठि नितम्ब चरण मणि विनु गुण
कण्ठहार बनये॥
भुज टङ्कना ग्रोव सोइ चन्दन चिह्न कपोल
दसन ग्रसये।
आलिङ्गन चन्दन कुच चर्चित मानो द्वे शशि
उर उदये॥

चरण शिथिल भद चाल डगमगो घूमत घायल
समर भये।
सूर सखी कैसे मन माने सुन्दर श्याम कुटिल भये॥

१७

लालन आये हो रैन गंवाई।
निशि भई छीण बोले तमचर खग ग्वालिन
तब हिं हंसो मुसकाई॥
अरुण किरण मुख पङ्कज विकसित मधुप लियो
सुन्दर रस जाई।
चन्द्र मलीन भयो दिनमणिते कुमुद गये
सब हो कुंभिलाई॥
चारि याम जागत बीते मोहि तुम्ह विनु मोको
कछू न सुहाई।
सूर श्याम या दर्श पर्श विनु सब निश गई
मेरी नींद हेराई॥

१८

रति संग्राम वीर रस माते।
हो हरि शूर शिरोमणि ब्रज के नहिं न संभारे
सकल अङ्गनाते॥
औरे वरण भये यह लोचन अपने अपने सहज
विनाते।
मानहु भोर परी औधनको ताते भये क्रोध अतिराते॥
परिमल लुब्ध जहां अलि बैठत उड़ि उड़ि उड़ि
नहिं सकत तहांते।
जनु मनमथ सर वागि फाब्यो फांक होत सब
बाहरि घाते॥
बैठि जात अलसात उनींदे क्रम क्रम क्रम करि
उठत तहांते।
मन वरछा कटाच्छ नाटसल कढ़ता नाहि छुब्यो
हियराते॥
डगमगात घूमत ज्यों घायल शोभा अति भई
सुभट कलाते।
सूरदास स्वामी रण जीते अब सकुचत धौं हो
तुम काते॥

१९

जानति हौं जैसे गुणनि भरे हो।
काहे को दुराव करत मनमोहन सोइ पै कहो तुम
जहां ढरे हो॥
निशि जागत निज भवन न भावत आलसवन्त
सब अङ्ग धरे हो।
चन्दन तिलक मिट्यो कहां वन्दन काम कुटिल
कुच उर उघरे हो॥
तुम अति कुशल किशोर नन्द सुत कहो कौनके
चित्त हरे हो।
औचक हो जिय जानि सूर प्रभु सोंह करन को
होत खरे हो॥

२०

हा हा हो पिय बात कहो।
आपु कछु जिय तर्क गहत हो तो तुम सों हौं
मौन गहो॥
कहा चूक हम को पिय लागी रूसि रेहे हो काहे जू।
तब होते देसे हो ठाढ़े मोतन को नहिं चाहे जू॥
अब हमरो अपराध छमोगे कृपा करो मुख बोलो जू।
सूरश्याम अब तजो निठुरई घुण्डी हृदयकी खोलो जू॥

२१

जाहु तहां कहा सोचत हो।
जा संग रैन विहात न जानी भोर भये तेहि
मोचत हो॥
औरनि को छण युग बीतनि है तुम निहचीते
नागर हो।
घूमत नयन जम्हांत बार हो रति संग्राम उजागर हो॥
मैं अब कहति तुम्हारे हितको ताहीके गृह जाइ रहो।
सूरश्याम वैसो प्रिय को है वह रस वाहो विनु न लहो॥

२२

हम हो पर पिय रूसे हो।

बोलत नहीं मूक क्यों ह्वै रहे अन्तरङ्गहीन
कछू से हो ॥
तब निरखत और हि हित चितवन किधौं कहीं
तुम लूसे हो ।
तब हंसि वदन मिलत आजु हि कछु और भये
निठुरुसे हो ॥
डगमगात पग उत हि परत है चित चञ्चल
उत झूसे हो ।
सूरदास प्रभु सांचि भाषि गये त्रिया अङ्ग
अबला मूसे हो ॥

२३

जागिये गोपाल लाल आनन्दनिधि नन्दबाल
यशोमती कहे बार बार भोर भयो प्यारे ।
नयनकमल से विशाल प्रीति वापिका मराल
वदन ललित चन्द्र तनय ऊपर कोटि वारि डारे ॥
उगत अरुण विगत शर्वरी शशाङ्क किरण हीन
दीन दीप मलीन क्षीण द्युति समूह तारे ।
मानहुं ज्ञान घन प्रकाश बीते सब भुव विलास
आश त्रास तिमिर तोष तरणि तेज जारे ॥
बोलत खग मुखर निकर मधुकर ह्वै वे प्रतीति
सुनहुं परम प्राण जीवन धन मेरे तुम बारे ।
मनो वेद वन्दी मुनि सूतवृन्द मागधगण
विरद वदत जय जय जय जयत कैट भारे ॥
विकसित कमलावली चल प्रफन्द चञ्चरीक
गुञ्जत कलकोमल ध्वनि त्याग कञ्ज न्यारे ।
मानो विराग सकल पाय शोक कूपगृह विहाय
प्रेममत्त फिरत भृङ्ग गुणत गुण तिहारे ॥
सुनत वचन प्रिय रसाल जागे अतिशय दयाल
भागे जञ्जाल विपुल दुःख कदम्ब टारे ।
त्यागी भ्रमफन्द द्वन्द्व निरखिके मुखारविन्द
सूरदास अति आनन्द मेटे मद भारे ॥

२४

जागिये गोपाललाल प्रकट भयो हंसमाल
मिटि गयो अन्धकार उठो जननी मुख देखाई ।
मुकुलित भये कमल जाल कुमुदवृन्द वन बेहाल
मेटहु जञ्जाल त्रिविध ताप तन नशाई ॥
ठाढ़े सब सखा द्वार कहत नन्दके कुमार
टेरत हैं बार बार आइये कन्हाई ।
गैयनि भई बड़ी बार भरि भरि पय थननि भार
बछरागण करे पुकार तुम बिनु यदुराई ॥
ताते यह अटक परी दोहन काज सों हंकारी
उठि आवहु क्यों न हरी बोलत बलभाई ।
मुखते पट झटकि डारि चन्द्रवदन दे उघारि
यशुमति बलिहारि वारि लोचन सुखदाई ॥
धेनु दुहन चले धाइ रोहिणी को लइ बुलाइ
दोहनी मोहि दे मंगाइ तब ही ले आई ।
बछरा दियो थन लगाइ दुहत बैठिके कन्हाइ
हंसत नन्दराइ तहां माता दोउ आई ॥
दोहनी कहुं दूध धार सिखवत नन्द बार बार
यह छवि नहिं वार पार नन्दघर बधाई ।
तब हलधर कह्यो सुनाइ धेनु वन चलो लिवाइ
मेवा लीन्हे मंगाइ विविध रस मिठाई ॥
जेंवत बलराम श्याम सन्तनके सुखदधाम
धेनुकाज नहिं विश्राम यशोदा जल लाई ।
श्यामराम मुख पखारि ग्वाल बाल लिये हंकारि
यमुना तट मन विचारि गाइन हंकराई ॥
शृङ्ग वेणुनाद करत मुरली स्वर मधुर धरत
व्रजजन मन हरत ग्वाल गावत सुघराई ।
वृन्दावन तुरत जाय धेनु चरति तृण अघाय
श्याम हर्ष पाय निरखि सूरज बलि जाई ॥

२५

जननी जगावति उठो कन्हाई ।
प्रकट्यो तरणि किरणगण छाई ॥
आवहु चन्द्रवदन दिखराई ।
बार बार जननी बलि जाई ॥
सखा द्वार सब तुम हि बुलावत ।
तुम कारण हम धाए आवत ॥

सूरश्याम उठि दर्शन दीन्हो।
माता देखि मुदित मन कीन्हो॥

२६

भोर भये भोगी रस विलसि भये ठाढ़े।
जागि यामिनी जगाइ भामिनी अङ्ग सङ्ग समाइ
श्वास शिथिल डरनि डरत देत आलिङ्गन गाढ़े॥
घूमत रसमत्त मगन सुधे ह्वै डग परत पग न
छण छण चितु चोप चोजनि मौज मनोजनि बाढ़े।
अति रस में रसिक राय शोभा वरणी न जाय
वरु विहारनिदास लड़ाई प्रेमरङ्ग रङ्गि काढ़े॥

२७

प्रात ही किशोर जोरि कुञ्ज खेलनी।
अङ्ग अङ्ग गुणत रङ्ग गौर श्याम रूपराशि
मदन केलि सुरति सिन्धुकूल झेलनी॥
तरणिनन्दनी सुतीर गावत पिय भृङ्ग कीर
त्रिगुण मारत गन्धरी श्रम अम्बु झेलनी।
वरविहार राजनी सुनूपुरादि बाजनी
विट्ठल विपुल वारनें भुज कण्ठ मेलनी॥

२८

श्यामा सङ्ग श्याम नचत राम रङ्ग गुणनि बचत
शशि अखण्ड मण्डल हँसि शरत् यामिनी।
तरणितनया कूल मृदुल अछ शशि तरज पुनीत
त्रिविध पौन ताप वदन काम कामिनी॥
चरण चलित बाहु वलित ललित गान कलित तान
मान सुख निधान तिरप लेति भामिनी।
वर सुधङ्ग रङ्ग ताल मणि मृदङ्ग विन्द चाल
लाल सुघर श्रीघर गजराज गामिनी॥
रिझै पति हि गति दिखाइ लेत कुंवर कण्ठ लाइ
श्याम घटामांझ मनहुं दुरति दामिनी।
नयन सैन भ्रूविलास मन्द हास सुखनिवास
सुनि ध्वनि मुनि बोलत जय व्यास स्वामिनी॥

२९

जय गोविन्द माधव मुकुन्द हरि।
कृपासिन्धु कल्याण कंसअरि॥
प्रणतपाल केशव कमलापति।
कृष्ण कमललोचन अगतिन गति॥
रामचन्द्र राजीव नयनवर।
शरण साधु श्रीपति सारङ्गधर॥
वनमाली वामन विट्ठल बल।
वासुदेव वासी व्रज भूतल॥
खर दूषण त्रिशिरा शिर खण्डन।
चरण चिह्न दण्डक भुवमण्डन॥
वकीदमन वक वदन विदारण।
वरुण विषाद नन्द निस्तारण॥
ऋषिमख त्राण ताड़का तारक।
वन वसि तात वचन प्रतिपारक॥
गोकुल पति गिरिधर गुणसागर।
गोपी रमण रास रति नागर॥
रघुपति प्रबल पिनाक विभञ्जन।
जगहित जनक सुता मनरञ्जन॥
काली दमन केशि कर पातन।
अघ अरिष्ट धेनुक अनुघातन॥
करुणामय कपिकुल हितकारी।
वालि विरोध कपट मृगहारी॥
गुप्त गोप कन्या व्रत पूरण।
द्विज नारी दर्शन दुख चूरण॥
रावण कुम्भकर्ण शिर छेदन।
तरु वर सात एक शर भेदन॥
शङ्ख चूड़ चाणूर संहारण।
शक्र कहे मेरो रछ कारण॥
उत्तर कृपा रटइ कृतकारी।
दर्शन दे सेवरी उद्धारी॥
जे पद सदा शम्भु हितकारी।
जे पद परशि सुरसरी गारी॥
जे पद रमा हृदय नहिं टारी।
जिनि पद ते तिहुं भुवन तियारी॥

जे पद वृन्दावनहि विहारो।
जे पद पाण्डव गृह पग धारो॥
जिनि पद शकटासुर संहारो।
जे पद अहिफण फण प्रतिधारो॥
जे पद भक्तनके सुखकारो।
जिनि पदरज गौतम तिय तारो॥
सूरदास सुर याचत वेइ पद।
करहु कृपा अपने जन पर सद॥

२०

सोहत घूंघरवारे बार अरुझि रहे मुकुताहल
निरवारत बार।
रति मानो सङ्ग नन्दनन्दके छूटे बन्द कचुकी
टूटे हार॥
निशिके जागे दोउ नयन उरभि रहे चलति
यौवन मदभार।
सूरश्याम सङ्ग यह सुख देत रीझि बारम्बार॥

२१

नयन श्याम सुख लूटत है।
इहै बात मोको नहिं भावे हमते काहू छूटत है॥
महा अक्षय निधि पाइ अचानक आपु हि सबै
चुरावत है।
अपने हैं ताते वह कहियत श्याम इनहिं
भरुहावत है॥
क्षण क्षण प्रति सुखसागर लूटत वरजे
भौंहें तानत है।
सूरदास जो देत कछू एक कहो कहा
अनुमानत है॥

२२

श्रीकृष्ण नाम रसना रट सोई धन्य कलि में।
जाके पद पङ्कज की रेणुकी वलि में॥
सोइ सुकृत सोइ पुनीत सोई कुलवन्ता।
जाको निशदिन रहे कृष्ण नाम चिन्ता॥
योग यज्ञ तीर्थ व्रत कृष्ण नाम माहीं।
विना कृष्णनाम कलि उद्धार और नाहीं॥
सब सुखन को सार कृष्ण कबहुं न विसरैये।
कृष्ण नाम लै लै भवसागर को तरिबे॥
श्रीगोवर्द्धन धरण प्रभु परम मङ्गलकारो।
उधरे जन सूरदास ताको वलिहारो॥

भैरव—एकताला

कृष्ण नाम भावे मोहि कृष्ण नाम भावे।
वलिहारी ताकी जो कृष्ण नाम गावे॥
वसुधा को सार कृष्ण मेरे मनको आधार।
कृष्ण श्रवण मङ्गल रूप कृष्ण सब विचार॥
मन्त्रन को मूल कृष्ण हरण सकल खल कृष्ण
व्रज समुद्र को पार।
कृष्ण शिव को आधार मेरी रसना को भाग्य
कृष्ण ध्यान धार॥
मन को सुहाग कृष्ण रसना तन्त्रन को तन्त्र
कृष्ण सब मन्त्रन सुधार।
यह रामराय कहत कृष्ण ताहो जपत भगवान्
कृष्ण बारम्बार॥

२

हरे हरे हरे कृष्ण कृष्ण राम राम राम।
नारायण नारायण वासुदेव वासुदेव
गिरिवरधर गिरिवरधर श्याम श्याम श्याम॥
दीनबन्धु दीनबन्धु वैकुण्ठ धाम।
होत प्रात बड़ पुनीत लेत हरि को नाम॥
दामोदर दामोदर चक्रपाणि चक्रपाणि
नरहरि हरि नरहरि हरि मुररिपु मुरारी।
मधुसूदन मधुसूदन सांवरे वनवारी॥
यमुनाके नीरे तीरे वृन्दावन धाम।
सूर श्याम रटत रहत राधावर नाम॥

३

बांसुरी बजाइ आज रङ्ग सों मुरारी।
शिव समाधि भूलि गई मुनि मन तारी॥
वेद भणत ब्रह्मा भूले भूले ब्रह्मचारी।

सुनत हीं आनन्द भयो लागि है करारो ॥
रह्या सब ताल चूको भूलो नृत्यकारो।
यमुना जल उलट रह्यो सुधि ना संभारो ॥
श्रीवृन्दावन वंशी बाजी तीन लोक प्यारो।
ग्वालबाल मगन भए व्रजको सब नारी ॥
सुन्दर श्याम मोहन मूर्ति नटवर वपुधारी।
सूर किशोर मदनमोहन चरणों बलिहारी ॥

भैरव—तिताला

दर्धिके मतवारे कान्ह खोलो प्यारे पलकें।
शीस मुकट लटा छुटो और छुटो अलकें ॥
सुर नर मुनि द्वार ठाढ़े दर्श कारण किलकें।
नासिकाके मोती सोहैं बीच लाल ललकें ॥
कटि पीताम्बर मुरली कर श्रवण कुण्डल झलकें।
सूरदास मदन मोहन दर्श देहु भलकें ॥

२

राम कृष्ण कहिए निशि भोर।
वे अवधेश धनुष धरे वे व्रज जीवन माखन चोर ॥
उनके छत्र चमर सिंहासन भरत शत्रुहन
लक्ष्मन जोर।
उनके लकुट मुकट पीताम्बर गायनके सङ्ग
नन्द किशोर ॥
उन सागरमें शिला तराई उन राख्यो गिरिधर
नख कोर।
नन्ददास प्रभु प्रपञ्च तज भजिये जैसे निरत
चन्द्र चकोर ॥

३

देखो री यह कैसा बालक राणी यशोमत जाया है।
सुन्दर वदन कमलदल लोचन देखत चन्द्र लजाया है
पूरण ब्रह्म अलख अविनाशी प्रगट नन्द घर आया है॥
मोर मुकट पीताम्बर सोहै केसर तिलक लगाया है।
कानन कुण्डल गल बिच माला कोटि भानु
छवि छाया है ॥
शङ्ख चक्र गदा पद्म विराजे चतुर्भुज रूप बनाया है।
परमेश्वर पुरुषोत्तम स्वामी यशुमति सुत कह लाया है॥
मच्छ कच्छ वराह औ वामन रामरूप दर्शाया है।
खम्भ फारि प्रगटे नरहरि जन प्रह्लाद छुड़ाया है ॥
परशुराम बुध निःकलङ्क हो भुवकाभार मिटाया है।
कालीमर्दन कंसनिकन्दन गोपीनाथ कहाया है ॥
मधुसूदन माधव मुकुन्द प्रभु भक्तवत्सल पद पाया है।
दामोदर गिरिधर गोपाल हरि त्रिभुवनपति
मन भाया है ॥
शिव सनकादिक और ब्रह्मादिक शेष सहस मुख
गाया है।
सुर नर मुनिके ध्यान न आवत अद्भुत जाको माया है॥
सो परब्रह्म प्रगट हो व्रजमें लूट लूट दधि खाया है।
परमानन्द कृष्ण मनमोहन चरण कमल
चित लाया है ॥

भैरव—एकताला

मैं योगी यश गाया रे बाबा मैं योगी यश गाया।
तेरे सुतके दर्शन कारण मैं काशीसे धाया ॥
परब्रह्म पूरण पुरुषोत्तम सकल लोक जाकी माया।
अलख निरञ्जन देखन कारण सकल लोग फिरि आया॥
धन तेरो भाग यशोदा राणी जिन ऐसा सुत जाया।
गुणन बड़े छोटे मत भुलो अलख रूप घर आया ॥
जो भावे सो लीजे रावल करो आपनो दाया।
देहु अशीस मेरे बालक को अविचल बाढ़े काया ॥
ना मैं लेहों पाट पटाम्बर ना मैं कञ्चन माया।
मुख देखूं मैं तेरे बालक को यह मेरे गुरुने लखाया ॥
कर जोरे विनवे नन्दरानी सुन योगिन के राया।
मुख देखन नहीं देहों रावल बालक जात डराया ॥
काला पीला गोरा रूप है बाघम्बर ओढ़ाया।
काहू डायनकी दृष्टि लगी कहुं बालक जात दिठाया॥
जाकी दृष्टि सकल जग ऊपर सो क्यों जात दिठाया।
कर पसार चरणन रज लीनो शृङ्गीनाद बजाया ॥
अलख अलख कर पाय छुए हैं हंस बालक
किलकाया।

पांच बार परिक्रमा करके अति आनन्द बढ़ाया ।
हरि की लीला लाल मन अटक्यो चित नहो
चलत चलाया ॥
अखिल ब्रह्माण्डके नायक कहिये नन्द घर हो
प्रगटाया ।
इन्द्र चन्द्र सूरज सारद सनकादिक पार न पाया ॥
लाग श्रवण जो मन्त्र सुनाया हंसि बालक मुसकाया ।
कौन देशके योगी हो तुम कौन है नाम धराया ॥
कहां वास यह कहत यशोदा सुन यागिन के राया ।
तुम हो ब्रह्मा तुम हो विष्णु तुम हो ईश्वर कहाया ॥
तुम हो विश्वम्भर तुम हो जगपालक तुम हो
करत सहाया ।
सूर श्याम कहे सुनो यशोदा शङ्कर नाम बताया ॥

२

नन्द द्वारे एक योगी आया शृङ्गानाद बजाया ।
शीस जटा शशी वदन सोहायो अरुण नयन
छवि छाया ॥
रोवत खीजत कृष्ण सांवरे रहत नहीं लराया ।
लियो उठाय गोद नन्दरानी द्वारे जाय देखाया ॥
अलख अलख कर लियो गोदमें चरण चूम उर लाया ।
श्रवण लाग कछु मन्त्र सुनायो हंसि बालक
किलकाया ॥
चिरजीवे सुत महर तिहारो हों योगी सुख पाया ।
सूरदास रम चल्यो रावलो शङ्कर नाम बताया ॥

भैरव—तिताला

राम चरण अभिराम काम प्रति तीरथराज विराजे ।
शङ्कर हृदय भक्ति भूतलवर प्रेम अक्षय वट छाजे ॥
श्यामवरण पदपीठ अरुण तल लसत विशद
नखश्रेणी ।
मनो रविसुता सारद सुरसरि मिलि चलि
ललित त्रिवेणी ॥
अङ्कुश कुलिश कमल ध्वज रेखा भ्रमर तरङ्ग विलासा ।
मज्जन सुर सज्जन मुनिवरजन मुदित मनोहर वासा ॥

विन विराग तप याग योग व्रत विन तन तीर्थ त्यागी ।
सो सब सुलभ दासतुलसी प्रभुपद प्रयाग अनुरागी ॥

२

यदुवर मेरे दीनदयाल शरणागत को करें निहाल ।
केवट गृद्ध ऋच्छ कपि राक्षस कीट पतङ्ग किए
प्रतिपाल ॥
मुनि मनसा पूरण करवे कों गोपीनाथ भए नन्दलाल ।
तन मन धन तुम्हरो तुम को दे प्रेमरङ्ग छूटे यमजाल ॥

३

चलना रे प्रभुके दरबार ।
काल बली ठाढ़ो चोबदार ॥
इह हुज़ूर में याद तिहार ।
चलनेको कछु करो तैयार ॥
जिसमें हुरमत रहे तुम्हार ।
एसी करनी कर ला यार ॥
जिसको ख़ादिम पकर बुलावे ।
यत्न करे कछु बन नहीं आवे ॥
विन मरज़ी कोई रहन न पावे ।
क्या गरीब क्या साहु कहावे ॥
जब यम आवे कछु न वसावे ।
क्षणमें बांध पकड़ ले जावे ॥
तब तोको कहो कौन छोड़ावे ।
ढिग बैठा कलपे कलपावे ॥
मौजूदातकी तैयारी कीजे ।
दर्शन तलब वेग चल लीजे ॥
गो ख़ादिम तोहे देख पसीजे ।
कण्ठ लगाय रङ्गमें भीजे ॥
करणीका कर कमर कटारा ।
शील सिपर तप तेग दुधारा ॥
धरे तोपकर ध्यान पियारा ।
ज्ञान घोड़े ह्वजे असवारा ॥
ओ तू ऐसा होय चलेगा ।
मालक मनमें बहुत खिलेगा ॥

काम क्रोध मद मोह मद यह संसार स्वप्न दहैगा।
निशि वासर हरिनाम उचारके रसना जप ले
परम पद लहैगा॥
सूरदास सुख जो तू चावे। गोविन्दके गुण तो तू गावे॥
पतित उधारण विरद कहावें। चरण शरण नित ध्यावें॥

श्री कृष्णाय नमः

रामकली—तिताला

मोहन जागि हौं बलि गई।
ग्वालबाल सब द्वार ठाढ़े वेर वनको भई॥
पीत पट करि दूर मुखतें छांड़ि दे अरसई।
अति आनन्दित होत यशोमती देखि द्युति नित नई॥
जागे जङ्गम जीव पशु खग और व्रज सबई।
सूरको प्रभु दर्श दीजे अरुणकी किरण छई॥

२

भोर भयो जागो हो ललना कहा तुम अब हुं
रहे हो सोई।
पिओ धार अपनी धौरीकी जैसे देह बल होई॥
वेणी गुहूं दीउ दृग अञ्जन मसिविन्दुका मुख धोई।
हंसत वदन सुखसदन निहारों नान्हो नान्हो
दतियां दोई॥
टेरत ग्वालबाल खेलन को गोरअाग ह्व होई।
व्रजजन सब ठाढ़े मुख देखन अति आरत सब कोई॥
उठि बैठे लिए गोद यशोदा सुन्दर सुत तिहुं लोई।
रसिक प्रीतम लगि गरे जननीके मांगत रोटी रोई॥

३

मैया तेरे लाल को मुख देखन हौं आई।
काल्हि मुख देखि गई दधि बेचन जात हि गयो
है बिकाई॥
दिनते दूनो दाम लाभ भयो गाइनि बछिया जाई।
आई हवे थंभाय साथकी गिरिधर देहु जगाई॥

सुनि प्रिय वचन विहंसि उठि बैठे नागरि निकट
बुलाई।
परमानन्द सयानी ग्वालनि चलि सहेत बनाई॥

४

लालको दर्शन भये सवेरो।
बहुत लाभ पाऊंगी माई दह्यो बिके है मेरो॥
गली सांकरो जो एक नौकी भेंट भयो भटभेरा।
अङ्क दे चली सयानी ग्वालिन हरि को वदन फिरि हेरो॥
प्रात हो मङ्गल भयो सखो री ह्वै है सब काज भलेरो।
परमानन्द प्रभु मुख निरखत मिट्यो भवसागर उरझेरो॥

५

डगमग चलति और ही भांती।
तब निकुञ्जते राधा भामिनि अरुण उदय घर जाती॥
रतिकी केलि सुमिरि मृगनयनी बार बार मुसकाती।
वदन ज्योतिते सुन री भामिनि मेटत उड़पति कान्ती॥
नखके चिह्न प्रगट देखियत है काम केलि कुलकाती।
प्रियतम प्राण रत्न सम्पुट कुच भेंटि जो गई छाती॥
नन्दकुमार सुरति सङ्ग लीन्हें शरत् विमलकी राती।
कृष्णदास गिरिधर पियके सङ्ग अधर सुधारस माती॥

६

हरि अनुभवति युवति बड़ भागी।
राधा रसिक नन्दनन्दनके सुखनिधि चरण कमल
अनुरागी॥
कोककला सङ्गीत निपुण सखि पिय सङ्गम
रतिरस निशि जागी।
कृष्णदास प्रभु गिरिधर पिय मुख देखतते नट
नटनी लागी॥

७

बे सइयां मेरे रैन विदा होन लागी।
घटी ज्योति मन्द भये तारे फूल वासना पागी॥
सोरह शृङ्गार बतास आभूषण अपने प्रियतम
सङ्ग जागी।
सूरदास प्रभु तिहारे मिलन को कृष्ण हमारे
अनुरागी॥

८

हों बलि बलि जाऊं कलेऊ कोजै।
खीर खांड़ घृत अति मीठो है अबकी कवर
बल लीजै॥
बेणी बढ़े सुनो मनमोहन मेरो कह्यो जो पतीजै।
औट्यो दूध सद्य धौरीको सात घूंट जो पीजै॥
हों वारी या वदन-कमल पर अञ्चल प्रेम जल भीजै।
बहुरि जाय खेलो यमुनातट गोविन्द सङ्ग करि लीजै॥

९

ग्वालिन पिछवारे ह्वै बोल सुनायो।
कमलनयन हरि करत कलेऊ कवर न मुखलौं आयो॥
मैया एक गाय बन व्याई बछरा लाय बसायो।
बेणु न लई लकुट नहिं लीन्हीं अरबराय कोउ
सखा न बुलायो॥
चकित सुनयन चहुं दिश चितवत सत्य इहै किधौं
सपनो पायो।
फले अङ्ग न मात रसिकवर त्रिभुवन पूर रस
छलनि छायो॥
मिलि बैठे सङ्केत सदनमें विविध भांति कीनो
मन भायो।
परमानन्द सयानो ग्वालिन उलटि अङ्ग गिरिधर
पय पायो॥

रामकली—चर्चरी

जयति आभीर-नागरी-प्राणनाथे।
जयति व्रजराज-भूषण यशोमती ललित देत
नवनीत मिश्री सुहाथे॥
जयति प्रात प्रभात दधि खात श्रीदामा सङ्ग
अखिल गोधनवृन्द चरे साथे।
ठौर रमणीक वृन्दाविपिन शुभस्थल
सुन्दरी केलि गुण गूढ़ गाथे॥
जयति तरणिजा-तट निकट रासमण्डल रच्यो
तत्तता थेइ थेइ थेइ तत्तताथे।
चतुर्भुज दास प्रभु गिरिधरण बहुरि अब श्रीविट्ठल
प्रकट व्रज कियो सनाथे॥

१

माखन तनिक दे री माय।
तनिक कर पर तनिक रोटी मांगत चरण चलाय॥
कनकभूमि पर तनिक रेखा करन पकरयो धाय।
कम्पियो गिरि शेष सङ्क्यो दधि हँत अकुलाय॥
मेरे मनके तनिक मोहन लागो मोहि बलाय।
तनिक मुख पर तनिक बतियां बोलत हैं तुतराय॥
यशोमतीके प्राण जीवन धन लियो उर लपटाय।
नन्दकुंवर गिरिधरण ऊपर सूर बलि बलि जाय॥

२

लालहि जगाइ बलि गई माता।
निरखि मुखचन्द्र छवि मुदित भई मनहि मन
कहति आधे वचन भयो प्राता॥
नयन अरसात अति बार बार जंभात कण्ठ सों
लगि जात हर्ष गाता।
वदन पोंछियो यमुना जलनि सो धोइ के कह्यो
मुसकाइ कछु खाहु ताता॥
दूध औट्यो आनि अधिक मिश्री सानि लेहु
माखन पानि प्राणदाता।
सूर प्रभु कियो भोजन विविध भांति सों पियो
पय मोद करि घूंट साता॥

४

आज लाड़िलो लालहि जगाय जागो।
सकल निशि कुञ्ज वसि प्रिये बल बाहु कसि विलसि
अङ्ग अङ्ग अनुराग रागो॥
रोम रोमनि अरुझि सकति नेक न सुरझि
अति अधर मधुर रस प्रेम पागो।
विहारनिदास सकाम गौर श्याम सधाम चितै
चितवति याम लतनि लागो॥

५

राधिका श्याम तन देखि मुसकानो।
हार बिन गुण लेख अधर अञ्जन रेख नयन
तम्बूर तुतरात बानी॥

पाग लटपटी बनी उरह छूटी तनी अङ्गकी गति
देखि जीय लजानी।
उपटि कङ्कण पीठ वक्ष विह्वल दीठ ईठकी
ईठता लखी छानी ॥
पाणि पल्लव आधार दशन सों गहि रही अर्ध
वैन बोलि वचन हार मानी।
सूर प्रभु अङ्ग भरी प्राणपति नागरी नवल
नागर उरह घालि सानी ॥

श्यामसुन्दर रैन कहां जागे।
देखि विन गुण माल अधर अञ्जन भाल जावक
लग्यो गाल पीक पागे ॥
चाल डगमगी अति शिथिल अङ्ग अङ्ग सब
तोतरे बोल उर नख नि दागे।
गड्यो कङ्कण पीठ निपट विह्वल दीठ शर्वरी
लाल नहीं पलक लागे ॥
कहिये सांच बात काहे जिय सकुचात कौन
त्रिय जाके अनुराग रागे।
दासकुम्भन लाल गिरिधरण एते पर करत
झूठी सौंह मेरे आगे ॥

७

जैये तहां जहां रैन जागे।
बनी विनु गुण माल ओष्ठ अञ्जन भाल सेंदुर
लग्यो गण्ड पीक पागे ॥
आरक्त नयन अति शिथिल सब अङ्ग गति
डगमगत रात नहीं पलक लागे।
चपल चतुर दीठ उपटि कङ्कण पीठ देखियत
उर मांझ नखन दागे ॥
सकल व्रज-त्रियनमें कौनसी नारी वह जाके
तुम लाल अनुराग रागे।
चतुर्भुज दास प्रभु गिरिधरण काहे को करत
झूठी सौंह मेरे आगे ॥

८

भले आए भोर गिरिवरधरण।
अरुण नयन जंभात आलस धरत डगमगी चरण ॥
पाग लटपटी पलटि परे पट अटपटे आभरण।
शिथिल अङ्ग अङ्ग सबहि देखियत निशाके जागरण ॥
नव त्रिया सङ्ग प्रहर चारी पलन पाए परण।
चतुर्भुज प्रभु जीति रति रण कियो रतिपति शरण ॥

९

नीके आए गिरिवरधारी नागर।
जियकी कृपा हम तव हीं जानी भोर खोलाई आगर॥
तुम्हरे चितवत नयन अरुण भए सकल निशाके जागर।
जिन तुम पें यह खेल रच्यो है ऐसी कौन उजागर ॥
तुम अपने रङ्ग हो रीझि चतुर नारीके बागर।
वलि वलि जाउं मुखारविन्दकी सुरति कलेवर सागर॥
गुण कहियत कहि पार न आवत मसि पर्वत
छिति कागर।
सूरदास प्रभु हमें लाज आवत है तुम हो सदा उजागर ॥

१०

प्रात भए आए लाल छांड़हु अटपटी।
आजुकी रैन मोहि नक्षत्र गिनत गई मार्ग जोवत
आंखि न लागी चटपटी ॥
उर नख पदवर सुभु गिरिवरधर गलित वरुहा
चूड़ा पाग बनी लटपटी।
कृष्णदास प्रभु जानतर नित दाम निशान मदन
नृपति रण लीनो मानो झटपटी ॥

११

लाल रसमसे नयन आजु निशा जागे।
अति विशाल अरसात अरुण भए रतिरणके रङ्ग पागे॥
सुन्दर श्याम शुभगता अटपटी अङ्ग अङ्ग नखक्षत दागे।
मानहु कोपि निदरि सम्मुख शर साथ भए अरि भागे॥
चतुर्भुज प्रभु गिरिधरण अधिक छवि वन्दन
भृकुटी लागी।
मानहु मनमथ चाप भेंट धरि रह्यो जोरि कर आगी ॥

१२

आज हरि रैन उनीदे आए।
अञ्जन अधर ललाट महावर नयन तमोल खवाए॥
शिथिल ग्रन्त वसन मरगजी माला कङ्कण पीठ सुहाए।
लटपटी पाग अटपटे भूषण विन गुण हार बनाए॥
शिथिल गात अरु चाल डगमगी भृकुटी चन्दन लाए।
सूरदास प्रभु यही अचम्भा तीन तिलक कहां पाए॥

१३

आवत ललन पिया रङ्ग भीने।
शिथिल अङ्ग डगमगत चरण गति मोतिन हार
उर चीने॥
पारिजात मन्दार माल लपटात मधुप मधुपीने।
गोविन्द प्रभु पिय तहां जाहु जहां अधर दशन
चत कीने॥

१४

लाल न जागत रैन विहानी।
देखत पथ अंखियां अति हारीं कहां लाल रतिमानी॥
कह्यो लाल केहि काल सखिन सङ्ग पूरव विविध
कहानी।
रङ्ग अनङ्ग सुरति चित आवत छतियां अधिक पिरानी॥
भोर भए आए मेरे गृह देखत सखी हिरानी।
रसिक प्रियतम दोउ अंखियां अरुण भईं कहो
कहां रैन सिरानी॥

१५

नयन उनीदे भए रङ्गराते।
मनहु गुलाब कुसुम पर सजनी भिरत भृङ्ग मदमाते॥
प्रेम पराग पाखुरी पलदल प्रफुलित मदन लताते।
सदा सुवास विलास विलोकनि प्रकट प्रेमके नाते॥
तेसिये मारत मन्द जंभाई मिलत मुदित छवि ताते।
सींचे सूर श्याम मानिनि निज हित करि केलि कलाते॥

१६

केहि मिस यशोमतीके जाउ।
सकल सुखनिधि मुख निरखिके नयन तृषा बुझाउ॥
द्वारे आरज सभा जुरि रही निकसिवे नहिं पाउ।
विनु गए पतिव्रत छूटे हंसे गोकुल गांउ॥
श्याम गात सरोज आनन ललित लेले नाउ।
सूर है लगन कठिन मनको कहीं काहि सुनाउ॥

१७

सखी हरि दर्श को मोहि चाव।
सांवरे सों प्रीति बाढ़ी लाख लोग रिसाव॥
श्यामसुन्दर कमललोचन अङ्ग अगणित भाव।
सूर हरिके रूप राचो लाज रहो के जाव॥

१८

नन्द सदन गुरुजनको भीर तामे लालन वदन
नीके देख न पाऊं।
विनु जिय देखे अकुलाइ जाइ दुःख पाय यद्यपि बड़ेइ
खन उठि उठि आऊं॥
ले चल री मोहि यमुनाके तीर जहां बलवीर
सुन्दर वदन देखि नयन सिराऊं।
नन्ददास प्यासे को पानी पिवाय ले जिवाय
जियको तू जाने तो सों कहा हों जनाऊं॥

१९

मन मृग वेधो मोहन नयन वान सों।
गूढ़भावको सैन अचानक तकि तान्यो भृकुटी
कमान सों॥
प्रथम नाद बल घेरि निकट ले मुरली समक
सुर वन्धान सों।
पाछे व्यङ्गते मधुरे हंसि घात करो उलटी सुठान सों॥
चतुर्भुजदास पीर पातनको मिटत न औषध आन सों।
छूटे है सुख तब हीं उर अन्तर आलिङ्गन गिरिधर
सुजान सों॥

२०

अङ्गुरिया छाड़ि रे गति अरग थरग।
नूपुर बाजत त्यों त्यों धरणी धरत पग॥
कबहुंक यशोदा माइ भुज पसारि हंसि
डगमगायके उलटि डग।

जननी मुदित मन चितै चितै शिशुतन राखति
कण्ठ लगाइ सुन्दर श्याम शुभग ॥
मृदुवाणी तुतरात मांगि नवनीत खात भुजन भाव
जैसे जनावत बाल खग ।
चतुर्भुज प्रभु गिरिधरके बाल विनोद नन्द आनन्द
मुख देखें ठाढ़े ठग ठग ॥

२१

उपमा धीरज तज्यो निरखि छवि ।
कोटि मदन अपुनो बल हार्‌यो कुण्डल तेज
छप्यो रवि ॥
खञ्जन मीन मृग जे हैं जिते दीन रहे क्यों ह्व दवि ।
गिरिधर पटतर हम हि लजावत सकुचत नहीं
खोटे कवि ॥
ईषत् हास दशन द्युति निरखत वज्रशिखर सकुचाने ।
सूर श्याम लीला वपु कछियो पट तर मेटि विराने ॥

२२

ठाढ़ो री खरो माई कौन को किशोर ।
सांवरे वरण मनहरण वंशीधरण कामकरण
कैसो गति जोर ॥
पीन परसि जात चपल होत देखि पियरे पटको
चटकीलो छोर ।
शुभग सांवरी छोटी घटाते निकसि आवे
छवीलो छटा को जैसो छवीलो ओर ॥
पूछति पाहुनी ग्वारि हा हा हो मेरो आली कहा
नाम को है चितवित को चोर ।
नन्ददास जाहि चाहि चकचौंधी आइ जाइ
भूल्यो री भवन गमन भूल्यो रजनी भोर ॥

२३

माई गिरिधरणके गुण गाऊं ।
मेरे तो व्रत ए है निशदिन और न रुचि उपजाऊं ॥
खेलन आंगन आउ लाडिले नेकहुं दर्शन पाऊं ।
कुलनदास इह जगके कारण लाल चला गिरहाऊं ॥

२४

करत हो सबे सयानी बात ।
जौलों देखे नाहिं न सुन्दरि कमलनयन मुसकात ॥
सब चतुराई विसरि जात है खान पानकी तात ।
विनु देखे क्षण कल न परत है घरि भरि कल्प
विहात ॥
सुनि भामिनीके वचन मनोहर सखि मन अति
सकुचात ।
चतुर्भुज प्रभु गिरिधरण लाल सङ्ग सदा वसो
दिनरात ॥

२५

निपट छोटे कान्ह सुन जननी कहुं बात ।
होत जब समुदाय करत तब शिशु भाय एको
तपायके नयन भरि मुसिकात ॥
देखि रस रीतिकी प्रीति विपरीत गति मति
मान छाड़ि सङ्ग लगो रहों निशि प्रात ।
जात नहीं विसरि देखि बहुत यत्न धरि समुझि
कहुं चन्द्र देखे कमल ह्व विकसात ॥
दुरत घूंघर जब लाल यशोमति हृदय उझकि धसि
धरणि पांव धरि मुख किनकात ।
मनहुं आषाढ़ घन बादरी सूर तजि होत आनन्द
सब फूल अति जलजात ॥

२६

ग्वालिन आप तन देखि लाल तन देखिये ।
भीति जो होय तो चित्त अवरेखिये ॥
मेरो तो सांवरो पांच हो वर्षको अजहुं यह
रोय पय पान मांगे ।
तू महा मस्त अति ढोठरो ग्वालिनो फिरत
अठिलात गोपाल आगे ॥
मेरे एते श्यामको तनिकसी अङ्गुरिया बड़े
नखनके दाग तेरे ।
मष्ट करि सुनो लोग अगवारको कहां पाई
भुजा श्याम मेरे ॥

ठगठगी नयन बैनन हंसी ग्वालनी मुख देखे शोभा
अति ही बाढ़ी।
सुनि सखी सूर सर्वस्व हर्यो सांवरे अब उत्तर
महरके द्वार ठाढ़ी॥

२७

मेरि गति राधिका चरण रज में रहो।
इहै निश्चय कर्यो अपने मन में धार्यो भूलि
कोउ कछु और हु फल कहो॥
कर्म कोउ करो ज्ञानहु अभ्यसां मूर्तिके
यत्न अब करि देह दहो।
रसिकवल्लभ चरण कमल युग शरण पर आशा
धरि यह महापुष्टि पथ फल लहो॥

२८

मानिनी मानि जिनि मान एतो करे आपु पाइन
परे नाथ तेरे।
दर्श जाको करण जगत् तरसे सदा सो तो
इकटक तेरो वदन हेरे॥
यों कहति सुमति उठि वेग मिलि मीत सों मेरो
हित वचन जिनि भूलि फेरे।
रसिक प्रियतम सङ्ग विहरि रस रङ्ग सों क्यों न दुःख
अनङ्ग को सब निवेरे॥

२९

जयति श्रीराधिके सकल सुख साधिके
तरुणि मणि नित्य नवतन किशोरी।
कृष्ण तन नील:घन रूपको चातकी कृष्ण मुख
हिमकिरणकी चकोरी॥
कृष्णदृग भृङ्ग विश्राम हित पद्मिनी कृष्णदृग
मृगज वन्धन सुडोरी।
कृष्ण अनुराग मकरन्दकी मधुकरी कृष्ण गुणगान
रससिन्धु बोरी॥
परम अद्भुत अलौकिक मेरी गति लखि मन
सु सांवरे रङ्ग अङ्ग गोरी।
और आश्चर्य कहूं मैं न देख्यो सुन्यो चतुर चौसठि
कला तदपि भोरी॥
विमुख पर चित्तते चित्त जाको सदा करत
निज नाथको चित्तचोरी।
प्रकृत यह गदाधर कहत कैसे बने अमित
महिमा इते बुद्धि थोरी॥

३०

चतुर चारु चन्द्रावली मुख चकोरे।
अस्तमें चरण रति व्रज युवति भूषणी कमललोचन
नन्द नृप किशोरे॥
मानि मेरो कह्यो अति लाल रस रीति क्यों
करावति सखी बहु निहोरे।
मिले किनि धाइ अब कुंवर चूड़ा रत्न रसिकवर
भूपाल चित्त चोरे॥
नवरङ्ग कुञ्ज मह तव नाम हित नाथ कुणित कल
मुरलीका ठाठ मोरे।
सुनि कृष्णदास शुभ लग्न वह धन्य घरी लाल
गिरिधरण सों हात जोरे॥

रामकली—तिताला

देखो मेरे भाग्यकी शुभ घरी।
नवल रूप किशोर मूरति कण्ठ ले भुज धरी॥
जाके चरण सरोज गङ्गा शम्भु ले शिर धरी।
जाके चरण सरोज परसत शिला सुनियत तरी॥
जाके वदन सरोज निरखत आशा सगरी मरी।
सूर प्रभुके सङ्ग विलसत सकल कारज सरी॥

२

आज हरि पकर न पाए चोरी।
ले गये चोर चोरि मन माखन जो मेरे धन होरी॥
बांधो कञ्चन खम्भ कलेवर उभय भुजा दृग डोरी।
राखो कठिन कठोर कुचन बिच सके न कोऊ छोरी॥
अधर दशन खण्डो रस गोरस छुवे न काहू कोरी।
काम दण्ड दण्डो पर घर को नाम न लेइ बहोरी॥
तब कुलकानि आनि तिरछी भई क्षमा अपराध
किशोरी।
शिर पर हाथ धराइ सूर प्रभु सोच मोच शिर ढोरी॥

३

गोपाले माई बारे हो तें टेव।
जानों नहीं कौन पें सीखे चोरीकै छल छेव॥
कबहुंक दूरतें माखन खात सुनि रहती करि कानि।
अब हमपे क्यों सही परति है मणि माणिक
की हानि॥
बुद्धि विवेक वचन चातुरी सर्वस्व लई चुराय।
सूरदास प्रभुके गुण अवगुण कासों कहिये जाय॥

४

माखन चोर री मैं पायो।
जेयतु कहां जान कैसे पेयतु बहुत दिननु हो खायो॥
हौं जु कहति हो होत कहा है नित उठि भाजन
लगन छुछायो।
बहुत बार कोरें लगि देख्यो मेरो घात न आयो॥
वेणीकों कर गही चामटो घूंघट मांझ दिखायो।
मत रोवो तुम सों कौन कहत है लै उछङ्ग हुलरायो॥
श्रीमुख तें उघरि गई है दतियां तब हंसि
कण्ठ लगायो।
परमानन्द प्रभु प्राण जीवन धन विशद विमल
यश गायो॥

५

धन्य यह राधिकाके चरण।
शुभग शीतल अति सुकोमल कमलके से वरण॥
नखचन्द्र चारु अनूप राजत विविध शोभा धरण।
रणित नूपुर कुञ्ज विहरत परम कौतुक करण॥
रसिकलाल मन मोदकारी विरह सागर तरण।
विवश परमानन्द क्षण क्षण श्याम जीके शरण॥

६

बढ़ि बढ़ि बात लागी करन।
श्याम सुन्दर मदनमोहन आए तेरे घर न॥
उदित उरपर चिकुर छूटे चिकुर उरपर तरन।
कामको दल साजि आई आड़ दे दे लरन॥
विरह को संग्राम जीत्यो बांधि अपनो परन।
सूरके प्रभु तरण तारण राखि अपनो शरन॥

७

बोलत कोककला निधान।
मम वचन सुनि उठि चलहि सखि छांड़ि सुन्दरी मान॥
तव नाम सहित निकुञ्ज मह प्रियकरत मुरली गान।
केलि कौतुक रसिकनो त्रिय सुनहि दे किनि कान॥
शेष रजनी खसत उड़पति जनु कि भयो विहान।
कृष्णदास प्रभु गिरिधरण पर वारि हों तन प्राण॥

८

बहूं जो तबहि मानु धरि आवे।
सुन्दर श्याम बहुरि सम्मुख ह्वै अम्बुज वदन दिखावे॥
तबलग मान करहु कोउ कैसे जब लग वह
दर्शन नहिं पावे।
दृष्टि परे मन मधुकर तिहि क्षण सहज सरोजहि धावे॥
त्रिभुवन मांझ होउ वदें युवती आर्य पथहि दृढ़ावे।
कुम्भनदास प्रभु गोवर्द्धनधर कुल मर्यादा बढ़ावे॥

९

बे लाल तेरी पैंजनिया झनकेंदी।
माथे बे तेरे मुकट विराजे रीझ ग्वाल लटकेंदी॥
भई री चकोर चतुर चन्द्रावली गति मति रति
अटकेंदी।
आशाकरण प्रभु मोहन नागर चरण कमल चित देंदी॥

१०

हमारो दान दे री गुजरेटी।
नित उठि आवत जात चोरि दधि बेचन आज
आचानक भेटी
अति सतरात कैसे छुटोगी बड़े गोपकी बेटी।
कुम्भनदास गिरिधरण लाल सों भुज ओढ़नी लपेटी॥

११

अहो दधि मथति घोषकी रानी।
दिव्य चीर पहरे दक्षिणको कटि किङ्किणी
कम झुनवानी॥
सुतके कर्म गावति आनन्द भरि बाल चरित्र
जानि जानी।

श्रमजल बिन्दु राजे वदन कमल पर मनहुं
शरत् वर खानी ॥
पुत्रसनेह सुचात पयोधर प्रमुदित अति हर्षानी।
गोविन्द प्रभु घुटरुन चलि आये पकरी रई मथानी॥

१२

मोहि दधि मथन दे बलि गई।
जाउं बलि बलि वदन ऊपर छाड़ि मथानी रई॥
लाल देउं नवनीत लोंदा रारि कित तुम ठई।
इते हित विलोकि यशोमती प्रेम पुलकित भई॥
ले उछङ्ग लगाय उरसों प्राण जीवन जई।
बालकेलि गोपालकी व्रज आशाकरण नित नई॥

१३

श्रीयमुनाजी तिहारो दर्श मोहि भावे।
श्रीगोकुलके निकट बसत है लहरन की छवि आवे॥
सुखकरणी दुःखहरणी श्रीयमुना जो जन प्रात
उठि न्हावे।
मदनमोहन जूकी खरी पियारी पटरानी जू कहावे॥
वृन्दावनमें रास रच्यो है मोहन मुरली बजावे।
सूरदास प्रभु तिहारे मिलनको वेद विमल यश गावे॥

१४

नमो तरणितनया परम पुनीत जग पावनी
कृष्ण मनभावनी रुचिर नामा।
अखिल सुखदायिनी सर्व सिद्धि हेतु श्रीराधिका रमण
रति करण श्यामा॥
विमल यश सुमन नव कानन आमोद युत पुलिन
अति रम्य प्रिय व्रजकिशोरी।
गोप गोपी नवल प्रेम रति वन्दिता तट मुदित
रहत जैसे चकोरी॥
लहरि भांवरि ललितालुका शुभग व्रजबाल
व्रत पूरण रास फलदा।
ललित गिरिवरधरण प्रिय कलिन्दनन्दिनी
निकट कृष्णदास विहरत प्रबलदा॥

१५

निरखि हर्षि व्रज युवती घोष मुरारि।
थकित जित तित अमर मुनिगण नन्दलाल निहारि॥
बिनु बैन शिर केश लट चहुं दिसा छटका झारि।
शीश पर जानो जटा धरि शिशुरूप कियो त्रिपुरारि॥
रुचिर रचित ललाट केशर बिन्दु शोभाकारि।
रोष मनहु तृतीय लोचन रहे रिपुजन जारि॥
कुटिल हरिनख हृदय हरिके शुभग छवि अनुहारि।
ईश जनु रजनीश राख्यो भाल तेज उतारि॥
कण्ठ शोपज नीलमणिमय माल रची संवारि।
नील गिरिवर गरल मानो लाय लइ मदनारि॥
वदन रज तन श्याम मण्डित शोभा छवि अनुहारि।
मनहु अङ्ग विभूति राजत शम्भु सोइ मधुहारि॥
त्रिदशपति यशोमतीके आगे असन को करे आरि।
सूरदास विरञ्चि जाको जपत यश मुख चारि॥

१६

बलि बलि चरित्र गोकुल राय।
दावानल को पान कीन्हो पीवत दूध सिराय॥
पूतनाके प्राण शोषि रहे उर लपटाय।
कहति जननी दूध डारत खाझि कछुव न खाय॥
तृणावर्त आकाशतें गहि शिला पटको आय।
डरत लालन झूलत पलना खरे देत झुलाय॥
यमला अर्जुन तारि तारे हृदय प्रेम बढ़ाय।
झटक तात पलास पल्लव देहु देत दिखाय॥
कीर पिञ्जर देत अङ्गुलि लेत श्याम भजाय।
वकासुरकी चोंच फारी दृष्टि अचरज लाय॥
विना दीपक सदन में हरि नेकु धरत न पाय।
अघासुर मुख पैठि निकसे बाल वत्स जिवाय॥
हरे बालक वत्स नव कृत हेत टारी माय।
फूटि पशु जब रहत वनमें द्रुमनि ढूंढ़त जाय॥
लिखो हारे नाग कारो देखि श्याम डराय।
नृत्य कालो फणनि ऊपर सप्त ताल बजाय॥
धर्यो गिरिवर दोहनी कर धरत बांह पिराय।
शकटभञ्जन प्रसत कुच युग कठिन लागत पाय॥
घोष नारिन सङ्ग मोहन रच्यो रास बनाय।

कहति जननी व्याइको तब लजत वदन दुराय ॥
वृषभभञ्जन हतन केसी हन्यो पुच्छ फिराय ।
भजत सखन समेत मोहन देखि व्याई गाय ॥
शेष महिमा कहि न आवे अनेक रसना पाय ।
एक रसना सूर कहा कहै अङ्ग अगणित भाय ॥

१७

लटकत आवत कुञ्ज भवननें ।
ढरि ढरि परत राधिका ऊपर जागर शिथिल गमननें॥
चौंकि परत कबहुं मारग बिच चले सुगन्ध पौननें ।
भए उसास भरम राधाके सकुचत दिवस रमननें ॥
आलस मिस न्यारे न होत हैं नेक हु प्यारो तननें ।
रसिक टरो जिनि दृगा श्यामको कबहुं मेरे मननें ॥

१८

चरण कमलकी चेरी तेरी छाड़हु लालन नन्दके ।
कैसो है दान कहा किनि लियो दियो न कबहूं वचन वदन अरविन्दके ॥
देखत सखा सखीजन सगरी चरित चपल व्रजचन्द्रके ।
लालन सकुचत अञ्चल ऐंचत पार न पावत विविध अटपटे फन्दके ॥
मटुकी खसत हंसत सब ग्वालिनि निरखि तिहारे छन्दके ।
रसिक सदा मन बसो विविध गुण रसनिधि आनन्द कन्दके ॥

१९

हा हा लेउ एको कोर ।
बहुत बेर भई है भूखे देखि मेरो ओर ॥
मेलि मिश्री दूध औटो पीओ ह्वै है जोर ।
अब हो खेलन टेरि हैं तेरे ग्वाल भयो अति भोर ॥
जागि पञ्छो द्रुम द्रुमनि प्रति करन लागे शोर ।
खेलिवे को उठि भजोगे मानि मेरो निहोर ॥
लेहुं ललन बलाइ तेरी छोरि अञ्चल ओर ।
वदनचन्द्र विलोकि शीतल होत हिरदो मोर ॥
बैठि जननी गोद जेवन लागे गोविन्द थोर ।
रसिक बालक सहज लीला करत माखन चोर ॥

२०

मानहु बात लालन मेरो ।
करो भोजन रोष भूलो हौं जू मैया तेरो ॥
दुग्ध दधि नववीत घृतपक परसि राखो थार ।
कहा लोटत धरणिमें मेरे लाल होति अबार ॥
गोद बैठो हौं जिवाऊं गाऊं तेरे गीत ।
खेलिवे को तोहि बोलत ग्वाल तेरे मीत ॥
कहो जाको ताहि टेरों बैठे तेरे पास ।
करों दधि मन्थान उदयो सूर्य कमल विकास ॥
माइके सुनि वचन हंसि उर आइ लगे गोपाल ।
कियो भोजन दियो अति सुख रसिक नयन विशाल ॥

२१

खेलत मदन सुन्दर अङ्ग ।
युवतिजन मन निरखि उपजत विविध भाव अनङ्ग ॥
पकरि बछरा पूंछ ऐंचत अपनो दिये कर जोर ।
कबहुं बछ ले भजत हरिको युवतिजनकी ओर ॥
देखि परवश भए प्रियतम भयो मन आनन्द ।
मैन आकुल भई व्याकुल गई लाज अमन्द ॥
कोउ देखति गहति कोऊ हंसत छाड़ति गेह ।
करति भायो अपने मन को प्रकट करि निज नेह ॥
अति अलौकिक बाललीला काहुं न जानी जाइ ।
मुग्ध तासों महासुख रस देत रसिक मिलाइ ॥

रामकली—चर्चरी

व्रजानन्द कन्द व्रजानन्द कन्द घोषपति भाग्य भुविजातं ।
रसिकवर गोपिका पीत रस माननं तव जयतु मम दृष्टि सुजातं ॥
रुचिर दर दाम गल विमल परिमल लुब्ध मधुपकुल मुख कमल सदनं ।
अमृतचय गर्व निर्वासनाधर सिन्धु पायस मनोजाग्नि शमनं ॥
स्मित प्रकटित चारु दन्त रुचि वदन विधु कौमुदी हत निखिल तापे ।

विल सलिलता छद कनक कलस इये मरकत
मणिरिव दुरापे ॥
शुभग-सुमुखी कण्ठ-निहित निज बाहु रति-मत्त
गजराज इव रुचिरं ।
विरहो विरहानलं चारु पुष्कर चलन शीकरे
रूप शमय रुचिरं ॥
अरुण तरलापाङ्ग शर निहत कुलवधू धृति
तव विलोचन सरोजं ।
मम वदन सुखमा सरसि विनशतु सततमलसगति
निर्जित मनोजं ॥
नन्दगोहाल बालोदित स्वोरागसेकरूढ सुरवृत्तं ।
व्रजवर कुमारिका बाहु हाटक लता सततमाश्रय तु
कृतलचं ॥
व्रजस्लाघ गुण रसिकता गुण गोपनातिशय
रुचिरालापलोलं ।
ताहृगोचरणजनित कुसुम शर भाव भर युवतिषु
प्रकटतर निखिलं ॥
रुचिर कौमार चापल जय व्रीड़या वल्लवी हृदय
गृह गुप्तं ।
प्रकटयन्निज नख शरचयं रसमशरमिह
जयति हत भाव चित्तं ॥
घोषसीमन्तिनो विधुदुग्धदेण केलिनिनाद गर्जित
रुवमिह सततं ।
वचन करुणाकूत दृष्टि दृष्टि रङ्ग नव जलद
मपि कुरु सुहसितं ॥

२

हरि यश गावति चली व्रजसुन्दरी श्रीयमुनाके तीर ।
लोचन लोने बांह जोटि करि श्रवणनि झलकत वीर ॥
वेणी सुथिर चारु कांधे परे कटितट अम्बर लाल ।
हाथनि फूल लिये डलिया भरि अरु मुक्ता मणि माल ॥
जल प्रवेश करि मज्जन कीन्हीं प्रथम हेमन्तके मास ।
ए वर होहु नन्द सुत मेरे व्रत ठान्यो इहि आश ॥
तब ही चीर हरे हरि नागर चढ़े कदमकी डारि ।
परमानन्द प्रभु वर देवेको उद्यम कियो मुरारि ॥

३

हो मोहन हों हारी तुम जीते ।
नागर नट पट देहु हमारे कांपत है तन शीते ॥
रसिक गोपाल लाल अबलनिपर एती कहा अनीते ।
परमानन्द प्रभु हम सब जानत गाल बजावत रीते ॥

४

मोहन देषा वसन हमारे ।
कहेंगी जाय व्रजपति जूके आगे करत अनीत ललारे ॥
तुम व्रजराज किशोर नन्दसुत सब हिनके प्राण प्यारे ।
गोविन्द प्रभु पिय दासी तिहारी सुन्दर वर सुकुमारे ॥

५

बनत नहीं यमुना जू को नहैवो ।
चालो चीर कृष्ण ले भाजे कठिन भयो घर जैवो ॥
जो हरि हमसों ऐसो करि हो तो इह घाट न ऐवो ।
श्रीविट्ठल गिरिधरण लाल सों विनती करि घर जैवो ॥

६

ग्वालिन मांगति वसन अपाने ।
शीतकाल जल भीतर ठाढ़ी आवत नाहीं दयाने ॥
तुम व्रजराज कुमार प्रबल अति कौन परो यह बाने ।
हम सब दासी तिहारी व्रजपति तुम बहु निपट
सयाने ॥

७

मोहन वसन हमारे दीजे ।
बारने जाउं सुनो नन्दनन्दन शीत लगत तन भीजे ॥
कौन स्वभाव कृथा अन अवसर इन बातन कैसे जीजे ।
सुनि दुःख पावे व्रजमहर यशोमती जाइ कहे
अब छीजे ॥
ए सब अबला जल मांझ पधारी दारुण दुःख
कैसे सहीजे ।
प्रभु बलराम हम दासी तिहारी जो भावे सो कीजे ॥

८

हमारो अम्बर देहो मुरारी।
लेकर चीर कदम पर बैठे हम जल मांझ उघारी ॥
सुन्दर श्याम कमलदल लोचन हम हैं दासी तिहारी।
जो कछु कहो सोई हम करि हैं चरण कमल पर वारी॥
अङ्ग अङ्ग कम्पत मनमोहन विनती सुनहु हमारी।
सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि तुम जीते हम हारी ॥

९

ग्वालिनी अपने चीर लेहु।
जलतें निसरि निकट ह्वै दोऊ कर जोरि कें
शीस देहु ॥
कत हो शीत सहत व्रजसुन्दरि हीत असित
कृश गात सबै।
मेरे कहे आनि पहिरो पट इतनो अङ्ग
विधि हीन अबै॥
हों अन्तरयामी जानत सबन की कत दुरावत
लाजकैं।
करि हों पूरण काम कृपा करि शरत् समय
शशि रातकैं॥
सन्तत सूर स्वभाव हमारो कत डरपति हो
काम भय।
कैसोये भांति भजै कोउ मोकूं ते सबै संसार जय॥

१०

जयति श्रीवल्लभ सुवन उद्धरण त्रिभुवन फेरि नन्दके
भवनको कीन्हि ठानो।
इष्ट गिरिवरधरण सदा सेवत चरण द्वार चारो
वरण भरत पानो॥
वेद पथ व्यास से हनूमान् दास से ज्ञान को
कपिल से कर्म योगो।
साधु लक्षण निपुण मद्दु व्रजराज प्रकट सुखराशो
मनो इन्दु भोगो ॥
सिन्धु सम गम्भीर मिलन रङ्ग नीर प्रीति को जल
चीर व्रज उपासी।
ध्यान को सनकसे भक्ति को सनन्दनसे याही तें
वृश कियो ब्रह्मराशी ॥
मनहु इन्द्रको जीति कृष्ण सों करीप्रीति निगमको
चल नीति अति विवेकी।
रहित अभिमान ते बड़े सनमानके शील अरु
दान गोविन्द टेकी॥
सदा निर्मल बुद्धि अष्टसिद्धि नवनिद्धि द्वार सेवत
जहां मुक्ति दासी।
रामराय गिरिधरण जानि आयो शरण दीनके
दुःख हरण घोषवासी॥

११

रुचिर तर वल्लभाधीश चरणं।
अस्तु मे सर्वदा सुन्दराकृति जगन्मोहनं हृदि कृता
विहित करणं॥
विहित माया वादनादि दनुजादि जन सङ्ग
जनितात्मजन कुमति हरणं।
अखिल साधन रहित दोष शत कलुष मति
विमति भरभरित निज दास शरणं॥
अञ्जसा काम कोपादि दुष्ट नक्रयुत वासना भङ्ग
भवजलधि तरणं।
वदत हरिदास इति निज वरण मात्र कृत
गोकुलाधीशपद कमल वरणं॥

१२

जयति राधिका रमणकर चरण परि चरण
रति वल्लभाधीश सुत विट्ठलेशे।
दास जन लौकिका लौकिके सर्वथा कैव चिन्तो
दयति हृदय देशे॥
स्थापयति मानसं सतत कृत लालसं सहज सुखमा
रुचिर रूपवेशे।
भाल गत तिलक मुद्रादि शोभा सहित मस्तकावद्ध
सित कृष्ण केशे॥
सहज हासादियुत वदन पङ्कज सरस वचन रचना
पराजित सुदेशे।

अखिल साधन रहित दोष शत सहित मति दास
हरिदास गति निज लवलेशे ॥

१३

मनो वल्लभाधीश पदकमल युगले सदा वसतु मम
विविधरस भाव वलितं ।
अन्य महिमा भाव वासना वासितं मा भवतु
जात निज भाव चलितं ॥
भजतु भजनीय मतिशयित रुचिरं चिरं चरण
युगलं सकल गुण सुललितं ।
वदत हरिदास इति मा भवतु मुक्तरपि भवतु मम
देवसुत जन्म फलितं ॥

१४

जयति भट्टलक्ष्मण तनुज कृष्ण वदनानल
श्रीमदिल्लमुगाकगर्भरत्ने ।
दैवहत जनसमुद्धृति करणकृत निजाविर्भवन
विहित बहु विविध यत्ने ॥
महालक्ष्मीपती गोपीनाथ श्रीविट्ठलाभिध
शुभगतनुज तापे ।
प्रथित मायावाद वर्त्ति वदन ध्वंसि विहित निज
दास जन पक्षपाते ॥
पुष्टि पथ कथन रचितानेक सुग्रन्थमथित
भागवत पीयूष सारे ।
रास युवती भाव सतत भावित हृदय सदय मानस
जनित मोद भारे ॥
निज चरणकमल धरणी परिक्रमणकृति मात्र
पावित वितत तीर्थ जाले ।
कृष्ण सेवन विहित शरणागत शिक्षणर्च्चापित सन्देह
दासैकपाले ॥
निज वचन पीयूष वर्ष पोषित सतत साहित्य
पुरुष जन भृत्य युक्ते ।
विविध वाचोयुक्ति निगम वचनोदितैरपि च
दुरित दुष्ट जन दुरुक्ते ॥
ईदृशे सति शिरसि सर्वदा वल्लभे सकल कर्त्तरि
दयालौ ।
कैव परिदेवना भवति हरिदासके सकल साधनरहित
जन कृपालौ ॥

१५

श्रीमद्वल्लभ रूप सुरङ्गे ।
नखशिख प्रति भावनके भूषण वृन्दावन सम्पति
अङ्ग अङ्गे ॥
दर्श स्पर्श गिरिधर जुको नाईं एन रैन व्रजराज
उछङ्गे ।
पद्मनाभ देखे बनि आवे सुधि रही रास रसा भ्रूभङ्गे ॥

१६

हेलो नव निकुञ्ज लीलारस पूरित श्रीवल्लभ वन मोरे ।
अङ्ग अङ्ग विपुन छिपुन घन दामिनि द्युति
फल फल प्रति दोरे ॥
करत आवे सविरह विरहनी श्रुति भूतल बहुत
कठोरे ।
पद्मनाभ मथुरेश विचारत श्रीलक्ष्मण भट सुत भोरे ॥

१७

सखी री शोभा-रस-मय भाव प्रकट करि श्रीवल्लभ
वर देह ।
अङ्ग अङ्ग व्रजवधू विरहनी व्यापी युगल सनेह ॥
श्रीवृन्दारण्य इन्दु प्रकटित हृदय निगूढ़ कन्दरा देह ।
पद्मनाभ सुतहित कियो मारग नेह मुरलिका वेह ॥

१८

श्रीगोकुल नाथ निज वपु धर्‍यो ।
भक्त हेत प्रकटे श्रीवल्लभ जगते तिमिर हर्‍यो ॥
नन्दनन्दन भये तब गिरि गोप व्रज उद्धर्‍यो ।
नाथ विट्ठल सुवन ह्वै के परमहित अनुसर्‍यो ॥
अति अगाध अपार भवनिधि तारि अपनो कर्‍यो ।
दास माधव तास देखे चरण शरणों पर्‍यो ॥

१९

सुमिरो श्रीविट्ठलेश कुमार ।
अति अगाध अपार भवनिधि भयो चाहो पार ॥
रहत करुणासिन्धु कोमल सदा चित्त उदार ।
गोकुलेश हृदय वसो मम माल पाल निहाल ॥

माल तिलक नत जोत कहुं परो यदपि पुकार।
भक्त भक्तन दियो धोरज भए पद दातार॥
चार युगमें विशद कोरति भक्त हित अवतार।
नवकिशोर कल्याणके प्रभु गाउं बारम्बार॥

२०

रुकमनि चलन सिखावति पाइन।
सुतको गहे अङ्गुरिया डोलति शोभा कोटिक भाइन॥
ठुमकि ठुमकि पग धरत धरणी पर ले उछङ्ग
उर लाइन।
वृन्दावन को चन्द्र श्रीवल्लभ ले बलाय हुलराइन॥

अथ श्रीयमुनाके कीर्तन

नमो देवि यमुने नमो देवि यमुने हरिकृष्ण
मिलनान्तरायं।
निजनाथ मार्गदायिनो कुमारो कामपूरक कुरु
भक्ति रायं॥
मधुपकुल-कलित कमलावली व्यपदेश-धारित
श्रीकृष्ण युत भक्त हृदये।
सतत मतिशयित हरि भावना जात तत्सारूप्य
गदित निज हृदये॥
निज कूल-भव विविध तरु कुसुम युत नोर शोभया
विलसदलिवृन्दे।
स्मारयसि गोपीवृन्द-पूजित सरसभोग
वपुरानन्दकन्दे॥
उपरि चलदमल कमलारुण द्युति रेणु परिमिलित
जलभरेणामुना।
व्रजयुवती कुच-कुम्भ कुङ्कुमारुणसुर: स्मारयसि
मारपितुरधुना॥
अधिरज निहरि विहृति मोचितं कुलतयाभिध
शुभग नखनान्यशति तनुषे।
नयन युग मत्स्यमिति बहुतराणि च तानि रसिकता
निधितया कुरुषे॥
रजनीजागर-जनित रागरञ्जित नयन पङ्कजैरहनि
हरि मोचसे।
मकरन्द भर मिषेणानन्द पूरिता सतत मिह
हर्षेश्रु मुञ्चसे॥
तटगतानेक शुकसारिका मुनिगण-स्तुत०विविध
गुणसिन्धु सागरे।
सङ्गता सततमिह भक्तजन ताप हृति राजसे
रासरस सागरे॥
रतिभर-श्रम-जलोदित कमल परिमल व्रजयुवती
जलविहृति मोदे।
ताटङ्क चलन सु निरस्त सङ्गोत युत मदमुदित
मधुप कृत विनोदे॥
निज व्रजजनावनायात्त गोवर्द्धने राधिका हृदयगत
हृद्य करकमले।
रतिमतिशयित रस विठ्ठलस्याशु कुरु वेणु
निनादाह्वान सरले॥

२

व्रजपरिवृन्दवल्लभे कदा त्वच्चरणसरोरुह मोक्षणा-
स्पदं मे।
नव तटगत वालुका कदाहं सकलनिजाङ्गगता
मुदा करिष्ये॥
वृन्दावने चारु बृहद्वने मन्मनोरथं पूरय सूरसुते।
दृग्गोचर: कृष्ण विहार एव स्थितिस्त्वदीये
तट एव भूयात्॥

३

पिय सङ्ग भरि रङ्ग करि कलोले।
सबन को सुख देन पिय को करत सैन चित न
परत चैन जब हो बोले॥
अति हि विख्यात सब बात इनके हाथ नाम लेत हि
कृपा करो चतोले।
दर्श करि स्पर्श करि ध्यान हियमें धरें सदा व्रजनाथ
इन सङ्ग डोले॥
अति हि सुखकरण दुःख सबको हरण यह लीन्हों
है प्रण हिज हो कूले।
ऐसो यमुना जानि तुम करो गुणगान रसिक
प्रियतम पायनङ्ग मूले॥

४

नयन भरि देखि अब भानुतनया।
केलि पिय सों करै भंवर तब हो परें श्रमजलनि
भरत आनन्द मनया॥
चलति टेढ़ी होइ लेति पियको मोहि इन बिना
रहति नहिं एक छिनया।
रसिक प्रियतम रास करत यमुना पास मानो निर्धनन
को हो जु धनया॥

५

श्याम सुखधाम जहां नाम इनके।
निशदिन प्राणपति आय हियमें बसे जोई गावें
सुयश भाग तिनके॥
एहि जगमें सार कहत बारम्बार सबनके आधार
धन निर्धनके।
लेत यमुना नाम देत अभय पद धाम रसिक
प्रियतम प्रिया वश जो जिनके॥

६

कहत सुख सार निर्धार करके।
इन बिना ऐसो कौन करि है सखो हरत दुःखद्वन्द्व
सुखकन्द वर्षे॥
ब्रह्मसम्बन्ध जब करत हैं जीव को तब हि इनकी
वाम भुजा फरके।
दौरि करि शोर करि जाय पिय सों कहें अति हि
आतुर मनमें जु हर्षे॥
नाम निर्मोल न गले कोउ ना सके भक्त राखत हिये
हार करके।
रसिक प्रियतम को होत जापर कृपा सोई यमुना
जूको रूप परशे॥

७

यमुना सो नाहिं कोउ और दाता।
जे इनको शरण जात हैं दौरि के तिन्हें चण
करें सनाथा॥
एहि गुणगान रसखान रसना एक सहस्र
क्यों न दई विधाता।
गोविन्द बलि तन मन धन वारने सबनको जीवन
इन होके हाथा॥

८

श्याम सङ्ग श्याम ह्वै रहो री यमुने।
सुरति श्रमबिन्दुतें सिन्धुसो बहि चलो मानो
आतुर आली रहो न भवने॥
कोटि काम हि वारों रूप नयन निहारों लाल
गिरिधरण सङ्ग करत रमने।
हर्षि गोविन्द प्रभु देखि इनको ओर मानो
नव दुलहनो आई गमने॥

९

यमुनयश जगत्‌में जोइ गाया।
तार्के आसक्त ह्वै रहत हैं प्राणपति नयनमें वैन
में रस जो छायो॥
वेद पुराणको बात यह अगम है प्रेमको भेद
कोउ न पायो।
कहै गोविन्द यमुनाको जापर कृपा सोई वल्लभ-
कुल-शरण आयो॥

१०

चरण पङ्कज रेणु यमुना देनो।
कलियुग जीव उद्धारण कारण काटन पाप
अवधार पैनो॥
प्राणपति प्राण यह आय भक्तन नेह सकल
यह सुखको हो जु सैनो।
गोविन्द प्रभु बिना रहत नहिं एक क्षण अति हि
आतुर चञ्चल जा नयनो॥

११

धाइके जाइ जे यमुना तीरे।
तिन होको महिमा कहां लों वरणिये जाइ
परशत प्रेम सङ्ग नोरे॥
निशदिन केलि करत मनमोहन पियके सङ्ग
भक्तनको ह्वै जु भोरे।
छोत स्वामी गिरिधरण श्रीविट्ठल ता बिना
नेकु नहीं धरत धीरे॥

११

जोई मुख यमुना यह नाम आवे ।
ता ऊपर कृपा करत श्रीवल्लभ प्रभु सोई
यमुना जीको भेद पावे ॥
तन मन धन सब लाल गिरिधरणको दे करि चरण
जब चित हि लावे ।
छीत स्वामी गिरिधरण श्रीविट्ठल नयननि प्रकट
लीला दिखावे ॥

१२

धन्य यमुने निधि देनहारो ।
करत गुणगान अज्ञान अघ दूरि करि जाहि
मिलवत पिय और प्यारो ॥
जिन हो सन्देह करो बात जियमें धरो
पुष्टिपथ अनुसरो सुख जो कारो ।
प्रेमके पुञ्ज में रासरस कुञ्जमें एहि राखति
अति रङ्ग भारो ॥
यमुना अरु प्राणपति और सब प्राण सुत चहूं
जन जीव पर दया विचारो ।
छीतस्वामी गिरिधरण श्रीविट्ठल प्रीतिके लिये
यह सम्प्दारो ॥

१४

गुण अपार एक मुख कहां लो कहिये ।
तजो साधन भजो नाम यमुनाजी को लाल
गिरिधरण को तबहिं पइये ॥
परम पुनीत प्रीति रीतिको जान हो दृढ़ करि
चरण कमल जो गहिये ।
छीत स्वामी गिरिधरण श्रीविट्ठल एहि निधि
छाड़ि अब कहां जो जइये ॥

१५

चित्तमें यमुना निशिदिन जो राखो ।
भक्तके वश कृपा करत हैं सर्वदा ऐसो यमुना जी
को है जो साको ॥
जाहि मुखते यमुने नाम यह उचरे सङ्ग कीजे
अब जाइ ताको ।
चतुर्भुज दास अब कहत हैं सबन सों ताते
यमुने यमुने जो भाषो ॥

१६

प्राणपति विहरत यमुनाके कूले ।
लुब्ध मकरन्दके वश भए भ्रमर ज्यों रवि उदय देखि
मानो कमल फूले ॥
करत गुञ्जार मुरलीके सांवरो व्रजवधू सुनत
तन सुधि जो भूले ।
चतुर्भुज दास यमुना प्रेमसिन्धुमें लाल गिरिधरण
अब हर्षि भूले ॥

१७

बार बार यमुने गुणगान कीजे ।
एहि रसनाते जो नाम रस अमृत भाग्य जाके
सोई जो लीजे ॥
भानुतनया दया अति हि करुणामया इनको
करे आशा सदा जीजे ।
चतुर्भुज दास कहे सोई प्रिय पास रहे जोई
यमुनाके रसमें भीजे ॥

१८

हेत करि देत यमुना वास कुञ्जे ।
जहां निशि वासर रासमें रसिक वर कहां लो
वरणिये प्रेमपुञ्जे ॥
थकित सरितानीर थकित व्रजवधू और कोऊ
न धरत धार मुरली सुनिञ्जे ।
चतुर्भुज दास यमुने जो पङ्कज जानि मधुपकी
नाई चित लाइ गुञ्जे ॥

१९

भक्त पर करि कृपा यमुना ऐसो ।
छांड़ि निज धाम विश्राम भूतल कियो न प्रकट
लीला दिखाई जो तैसो ॥
परम परमार्थ करण है पवनि का रूप अद्भुत
देत आप जैसो ।
नन्ददास जो जानि दृढ़ चरण गहै एक रसना
कहा कहूं वैसो ॥

२०

नेह कारण यमुना प्रथम आई ।
भक्तकी चित्त वृत्ति सब जान हीं ताहिते अति ही
आतुर जो धाई ॥
जैसो जाके मन हती मन इच्छा ताहि तैसी
साध जो पुजाई ।
नन्ददास प्रभु नाथ ताहि पर रीझत
यमुनाजूके गुण जो गाई ॥

२१

यमुने यमुने यमुने जो गावो ।
शेष सहस्त्र मुख गावत निशदिन पार नहीं
पावत ताहि पावो ॥
सकल सुख देनहार ताते करो उच्चार कहत हौं
बार बार भूलि जिनि जावो ।
नन्ददासकी आशा यमुना पूरण करो ताते कहूं
घरी घरी चित्त लावो ॥

२२

भाग्य सौभाग्य यमुना जो दे री ।
बात लौकिक तजी पुष्टि यमुना भजी लाल गिरिधरण
को ताहि वर मिले री ॥
भगवदी सङ्ग करि बात उनको ले सदा सान्निद्ध
रहे केलि में री ।
नन्ददास जो जाहि वल्लभ कृपा करे ताके यमुने
सदा वश जो रहे री ॥

२३

नाम महिमा ऐसो जो जानो ।
मर्य्यादादिक कहें लौकिक सुख लहें पुष्टिको
पुष्टिपति निश्चय मानो ॥
स्वाति जलबुन्द जब परत हैं जाहिमें ताहिमें
होत तैसो जो बानो ।
यमुना कृपा जान सिन्धु जल वहिमान सूर गुणपूर
कहां लो बखानो ॥

२४

भक्त को सुगम यमुना अगम ओरे ।
प्रात ही न्हात अघ जात ताके सकल यम हू रहत
ताहि हाथ जोरे ॥
अनुभवी विना अनुभव कहा जान हीं जाको
प्रिया नहीं चित्त चोरे ।
प्रेमके सिन्धुको मर्म जान्यो नहीं सूर कहि
कहा भयो देह बोरे ॥

२५

फल फलित होत फलरूप जाने ।
देखि हू नहीं सुनो ताहि कहि आपनो ताको
यह बात कोऊ कैसे माने ॥
ताहीके हाथ निर्मोल नग दीजिये जोई नीके
करि परखि जाने ।
सूर कहि क्रूरतें दूर बसिये सदा यमुनाको नाम
लीजे जो छाने ॥

२६

यमुनापति दासके चिह्न न्यारे ।
भगवदीको भगवद् सङ्ग मिलि रहे ताके बसत हिये
प्राण प्यारे ॥
गूढ़ यमुना बात जोई अब जान ही ताके
मनमोहन नयन तारे ।
सूर सुखसार निर्द्धार वहे पाव ही जापर होय
वल्लभ कृपारे ॥

२७

यमुने रसखानि को शीश नाऊं ।
ऐसो महिमा जानि भक्तको सुखदानि जोई मांगों
सोई जो पाऊं ॥
पतित पावनकरण नाम लीन्हें तरण दृढ़ करि
गहे चरण कहूं न जाऊं ।
कृष्णनदास गिरिधरण मुख निरखतें एही चाहत
नहीं पलक लगाऊं ॥

२८

यमुना अगणित गुण गने न जाई ।
यमुना तट रेन इतने होय बेन इनके सुखदेनकी
कहूं बड़ाई ॥

भक्त मांगत सोई देत तेही छिन सोई ऐसो करै
कौन प्रण निभाई ।
कुम्भनदास गिरिधरण मुख निरखते कहो कैसे
करि मन षघाई ॥

२९

यमुना पर तन-मन-प्राण वारौं ।
जाको कीर्ति विशद कौन अब कहि सकै ताहि
नयननतें नेकु न टारौं ॥
चरण कमल इनके जो चिन्तत रहौं निशिदिन
नाम मुखतें उचारौं ।
कुम्भनदास कहे लाल गिरिधरण मुख इनको
कृपा भई तो निहारौं ॥

३०

भक्त इच्छा पूरण यमुना जो करता ।
विन हि मांगे देत कहां लो कहूं हेत जैसे काहूको
कोऊ होय धरता ॥
यमुना पुलिन रास व्रज वधू लिये पास
मन्द-मन्द हास मन जो हरता ।
कुम्भनदास जो प्रभु को मुख देखत एहि जिय
लेखत यमुना जो भरता ॥

३१

रासरससागरा यमुना जानो ।
प्रति छण नूतन वहत धारा तनें राखत अपने
उर मांझ ठानो ॥
भक्तको सहे भार देत प्राण आधार अति ही
बोलत मधुर-मधुर वानी ।
श्रीविठ्ठल गिरिधरण वरवश किये कोन पै
जात महिमा बखानी ॥

३२

भक्त प्रतिपाली जञ्जाल टारै ।
अपने रस-रङ्गमें सङ्ग राखत सदा सर्वदा जोइ
यमुना उचारै ॥
इनकी कृपा अब कहां लो वरणिये जैसे राखत
जननी पुत्र बारे ।
श्रीविठ्ठल गिरिधरण सङ्ग विहरते भक्तको एक
छण ना विसारे ॥

३३

कौनपै जात यमुना जो वरणो ।
सबहिन को मन मनमोहन हरत सो प्रियको मन
ए जो हरणो ॥
इन विना एक छण रहे न जीवन धन्य व्रजचन्द्र
मन आनन्द करणो ।
श्रीविठ्ठल गिरिधरण सहित आय भक्तके हेत
अवतार धरणो ॥

३४

यमुना जो नाम ले सो सभागो ।
सोइ रस रूप को सदा चिन्तन करे नेक नहिं
काल परे जाहि लागो ॥
पुष्टि मार्ग परम अति हि दुर्लभ छाड़ि
सगरे कर्म प्रेम यागो ।
श्रीविठ्ठल गिरिधरण सिद्धि निधि अब भक्त को देत हैं
विन हि मांगो ॥

३५

यमुने तुमसी एक हो जु तुम हो।
करि कृपा दर्श निशि वासर दीजिये तिहारे
गुणगान को रहे उद्यम हो ॥
तुम ज पाए तें सकल निधि पाव हो चरण कमल
चित्त भ्रमर भ्रम हो ।
कृष्णदास नि कहे कौन यह तप कियो तिहारे
ढिग रहत है लताद्रुम हो ॥

३६

एसो कीजे कृपा लीजिये नाम ।
यमुना जगवन्दनी गुणन जात योगिनी जिनके
ऐसे धनी सुन्दर श्याम ॥
देत संयोगरस ऐसे प्रिय हैं जो वश सुनत
सुयश तिहारो पूरे सब काम।
कृष्णदास नि कहे भक्तके कारणे यमुना एक छण
नहीं करे विश्राम ॥

३७

यमुनाके नाम अघ दूर भाजे ।
जिनके गुण सुनिके लाल गिरिधरण प्रिय आय
सम्मुख ताके विराजे ॥
तेहि क्षण काज ताके जो सगरे सरत जाइके
मिलत व्रजवधू समाजे ।
कृष्णदास नि कहे ताहि अब कौन डर जाके
ऊपर यमुनासो गाजे ॥

३८

यमुनाके नाम तेई जो ले हैं ।
जिनकी लगन लागो नन्दलाल सों सर्वस्व देके
निकट रे हैं ॥
जिनहि सुगम जानि बात मनमें बानि
विना पहिंचानि कैसे जो पे हैं ।
कृष्णदासनि कहे यमुना नाम नौका भक्त भवसिन्धु
ते यों जो तरे हैं ॥

३९

यमुनाको आशा अब करत हैं दास ।
मन-क्रम-वचन कर जोरिके मांगत निशदिन
राखिये अपने ही पास ॥
जहां अब रसिकवर रसिकनो राधिका दोउ जन
सङ्ग मिलि करत हैं रास ।
दास परमानन्द पाय अब व्रजचन्द्र देखि सिराने
नयन मन्दहास ॥

४०

यमुना सुखकारणी प्राणपतिको ।
प्रिय जो भूलत जिन्हे सुधि करि देत तिन्हे कहां
लो कहिये अति हि इनके हितको ॥
पिय सङ्ग गान करें अति रस उमगि भरें देत
तारी करें लेत जितको ।
दास परमानन्द पाय अब व्रजचन्द्र एही जानत
अति प्रेम गतिको ॥

४१

यमुनाके साथ अब फिरत हैं नाथ ।
भक्तके मनके मनोरथ पूरत सबे कहां लों कहिये
अब इनकी जो बात ॥
विविध शृङ्गार-भूषण अङ्ग-अङ्ग सजे वरणो न
जात शोभा बनी गात ।
दास परमानन्द पाय अब व्रजचन्द्र राखे अपने
शरण बहे जो जात ॥

४२

यमुने पियको वश तुम कीने ।
प्रेमके फन्दते घेरि राखे निकट ऐसे निर्मोल
नग मोल लीने ॥
तुम जो पठावत तहां अब धावत निशदिन
तिहारे रसरङ्ग भीने ।
दास परमानन्द पाय अब व्रजचन्द्र परम उदार
यमुना जो दीने ॥

४३

जगमें ए ही सार भजु तू बारम्बार ।
श्रीयमुना जीको नाम जप निशदिन जातें
उतरेगो भवसागर पार ॥
जाके भजनते हरि हियमें बसें करे कृपा सर्वदा
अपनो पितुमार ।
कहत व्रजपति तुम सबन सो समुझाय परो
इनके चरण और नाहिं आधार ॥

४४

एक रसना गुण अपार क्यों करि वरनो ।
साधन सबे तजो भजो इनको नाम जाके सुमिरन
ते होगो तरनो ॥
एक मनमें निर्धार करिके करो सदा तट इनके
निकट रहनो ।
कहत व्रजपति तुम सबनसों समुझाय जपो
हरिनाम और कछु न करनो ॥

४५

पिय सङ्ग रङ्ग भरि करि विलासे ।
सुरति-रससिन्धुमें अति हि हर्षित भई कमल
ज्यों फूलत रवि प्रकाशे ॥

तनतें-मनतें-प्राणतें सर्वदा करति है
हरि सङ्ग मृदुल हासे।
कहत व्रजपति तुम सबन सों समुझाय मिटे
यम त्रास इन ही उपासे ॥

४६

यमुनासी नाहीं कोउ दुःखको हरणी।
जाके न्हानतें मिटत हैं सब पाप होत है आनन्द
सुखकी करणी ॥
महिमा अगाध अपार इनके गुण सकल यश
वेद-पुराण वरणी।
कहत व्रजपति तुम सबन सों समुझाय छूटे
यम डर जो आवे इनकी शरणी ॥

४७

जयति भानुतनये चरण युगल वन्दे।
जयति व्रजराज नन्दन प्रिये सर्वदा देत आनन्द
ज्यों शरत् चन्दे ॥
जयति सकल सुख कारणी कृष्ण मनोहारणी
श्रीगोकुल निकट बहत मन्दे।
जाके तट निकट हरि रासमण्डल रच्यो तंहा
निर्तत तथा थेइ थन्दे ॥
जयति कलिन्द गिरिनन्दिनी देति आनन्दनी
भक्तके हरे सब दुःख द्वन्दे।
चित्तमें ध्यान धरि मुदित व्रजपति कहे जयति
यमुने जयति नन्दनन्दे ॥

४८

श्रीयमुने तुम सों और न कोई।
करो कृपा निज दीन जानिके व्रज निज वासो होई ॥
राखो चरण-शरण तरणितनये जन्म आपदा खोई।
इह संसार अपने स्वार्थको सुत-पति सगो न कोई ॥
प्रेमभजनमें करत विघ्नता सन्त सन्तापत सोई।
ताको सङ्ग मोहिं सपने न दीजो मांगत नयनन रोई।
गरल पान डारत अमृतमें विष क्यो रसमें मोई।
रसिक कहत दीन ह्वे याचूं लहरि समुद्र समोई ॥

४९

श्रीयमुना जी दीन जानि मोहिं दीजे।
नन्दको लाल सदा वर मांगूं सब गोपिनकी
दासी कीजे ॥
तुम हो परम उदार कृपानिधि सन्तजनन सुखकारी।
तिहारे वश्य वसत राधावर तट खेलें गिरिधारी ॥
सब सखियन मिलि हरि संग खेलें
अद्भुत रूप निहारी।
तिहारे पुलिन मध्य निकट कुञ्ज द्रुम कमल
पुहप हैं सुवासी ॥
श्रमजल सहित नाथ अति रस भरे जलक्रीड़ा
सुखकारी।
मनो तारा मध्य चन्द्र विराजत भरि भरि
छिरकति नारी ॥
राणी जूके पाइ लागि विनती करि टहलको कारज
सब कीजे।
परमानन्द प्रभु सब सुखदाता इह रस नयन
भरि पीजे ॥

५०

श्रीयमुनाजी तिहारो दर्श मोहि भावे।
श्रीगोकुलके निकट बहत हो लहरनको छवि आवे ॥
सुखकरणी दुःखहरणी श्रीयमुना जो जन प्रात उठि न्हावे।
मदनमोहन जूको खरी पियारी पटराणी जो कहावे ॥
वृन्दावन में रास रच्यो है मोहन मुरली बजावे।
सूरदास प्रभु तिहारे मिलनको वेद विमल यश गावे ॥

५१

श्रीयमुनाजी यह प्रसाद हौं पाऊं।
तुम्हरे निकट रहों निशिवासर रामकृष्ण गुण गाऊं ॥
मज्जन करों विमल पावन जल चिन्ता कलुष बहाऊं।
तिहारो कृपा भानुकी तनया हरिपद प्रीति बढ़ाऊं ॥
विनती करों यहे वर मागूं अधम सङ्ग विसराऊं।
परमानन्द चार फलदाता मदन गोपालहिं भाऊं ॥

५२

श्रीयमुनाजी यह विनती चित धरिये ।
गिरिधर लाल मुखारविन्द रति जनम जनम
मोहि करिये ॥
विष सागर संसार विषम अति विमुख सङ्गते डरिये ।
काम क्रोध अज्ञान तिमिर अति उर अन्तरते हरिये ॥
तुम्हरे निकट वसौं निजजन सङ्ग रूप देखि मन ठरिये ।
गाऊं गुण गोपाल लालके दुष्ट वादते डरिए ॥
त्रिविध दोष हरि हो कालिन्द्री नेक कृपा करि ढरिये ।
गोविन्द सदा इहै वर मागूं तुम्हरे चरण अनुसरिये ॥

५३

श्रीयमुना जी अधम उद्धारणी मैं जानी ।
गोधन सङ्ग श्यामघन सुन्दर तीर त्रिभङ्गी दानी ॥
गङ्गाचरण परशते पावन हर शिर चिकुर समानी ।
सात समुद्र भेदि यमभगिनी हरि नख शिख लपटानी ॥
आलिङ्गन चुम्बन रस विलसत प्रेमपुञ्ज ठकुरानी ।
गोविन्द प्रभु रवितनया प्यारी भक्ति-मुक्तिकी खानी ॥

५४

श्रीयमुना जी तिहारो दर्श हौं पाऊं ।
श्रीगोवर्द्धन श्रीवृन्दावन व्रजरज अङ्ग लगाऊं ॥
दिन दश पांच रहूं श्रीगोकुल ठकुराणी घाट न्हाऊं ।
दासन ऊपर करो कृपा निज सन्तनके सङ्ग आऊं ॥

५५

श्रीयमुना जी पतित पावन कह्यो ।
प्रथम ही जब दर्श दीन्हों सकल पाप जु हह्यो ॥
भुज तरङ्गन स्पर्श कीन्हों पयपान दे सुख भह्यो ।
नाम लेत हि गई दुर्मति कृष्ण-रस-वश तह्यो ॥
गोपकन्या कियो मज्जन लाल गिरिधर वह्यो ।
सूर श्रीगोपाल निरखत सकल कारज सह्यो ॥

५६

श्रीयमुना जी पतित पावनकरण ।
प्रथम ही जाको दर्श पायो कोटि कलिमलहरण ॥
पैठत ही भुज तरङ्ग परशत मिटत जियको जरन ।
नाम उचरत शुद्धवाणी बुद्धि पोषण भरण ॥
उपजी उग्र वैराग जाको खैंचि लावत शरण ।
सूर हरिको भक्तिदाता विश्वतारणतरण ॥

५७

जगतमें श्रीयमुना जी परम कृपाल ।
विनती करत तुरत सुनि लीन्हीं भई हैं मोपे दयाल ॥
जो कोऊ मज्जन करत निरन्तर ताते डरत यमकाल ।
व्रजपतिकी प्यारी कालिन्द्री सुमिरत होत निहाल ॥

अथ रासके पद

गाऊं रसिक नट भूपाल गुण अनन्त न पार
कमलनयन प्रिय यशोदा दुलारे ।
प्रकट पुरुष सार पृथ्वीतल हरे भार जानत महिमा
जाके डर हि उरग हारे ॥
रासकली एक तार नाचे अगाध विहार कालिन्द्री
पुलिन सखी लोचन निहारे ।
उत्तम भूषण धार तन लेपि घनसार वृन्दावन
चन्द्र चहुं दिशि उजियारे ॥
मोहन नन्दकुमार अङ्ग-अङ्ग सुकुमार गिरिवरधर
यश त्रिलोक विस्तारे ।
उभय कर उदार व्रजभामिनी शृङ्गार
कृष्णदास प्रभु हरि सर्वस्व दातारे ॥

२

रासरस गोविन्द करत विहार ।
सूरसुताके पुलिन रम्यमें फूले कुन्दमन्दार ॥
अदभुत शतदल विकसित कोमल मुकुलित
कुमुद कह्लार ।
मलय पौन बहै शारद पूरण चन्द्र मधुप झङ्कार ॥
सुघराई सङ्गीत कलानिधि मोहन नन्दकुमार ।
व्रजभामिनी सङ्ग प्रमुदित नाचत तन चर्चित घनसार ॥
उभय स्वरूप शुभगता सीमा कोककला सुखसार ।
कृष्णदास स्वामी गिरिधर प्रिय पहरे रसमय हार ॥

२

गोविन्द करत मोहन गान ।
सप्तसुर गतिभेद मिलवत वेणु सुरति संधान ॥

तरणिजा कर लहर विरचित पुलिन केलि बंधान।
शरत् रजनी विमल उडपति मलय पौन सुठान॥
राग वारि समुद्र ताण्डव नाट्य कला निधान।
व्रजवधू सङ्ग मुदित नाचत लेत अवधर तान॥
वश्रोकृत गण सिद्ध सुरगण थकित व्योम विमान।
कृष्णदास विलास रस गिरिधरण सब गुण जान॥

४

नृत्यत मोहन रसिक सखन सहित थथ ता
तत्तथे तत थे तत्ता।
मृदङ्ग धमु धमु ताल उपङ्ग मिलि श्रुति देत
मधुप मधुमत्ता॥
टिपारो शिर पीत अति लाल काछनी बनी किङ्किणी
झिनि झिनि गति लेत गावत सुरसता।
गोविन्द प्रभु गोपबालक जय-जय करत प्रेम अनुरक्ता॥

५

रहो मोहि श्रीवल्लभ गृह भावे।
सुनि मैया तू मो डर माखन दूध दही जो छिपावे॥
तू तो करुण कृपण कहा कहूं नित उठि मोहि
खिझावे।
मेरे प्राण जीवन धन गोरस मोते दूर दुरावे॥
खीर खांड पकवान विविध ले प्रात हि
मोहि जगावे।
तेल सुगन्ध लगाइ प्रीति सों तातें नीर न्हवावे॥
भूषण वसन विविध मन भाए पलटि-पलटि पहिरावे।
नयना आंजि तिलक मृगमद करि दर्पण मोहि
दिखावे॥
षट्‌रस व्यञ्जन माहि जेंवावे हित सों बीरा खवावे।
भंवरा चकई विविध खिलौना ले करि मोहि खिलावे॥
विविध कुसुम अपने कर गुहि दो ले माला उर लावे।
सुखद पर्य्यङ्क संवारि मृदुल अति तापर मोहि
सुवावे॥
डोल झुलावे रथ बैठावे हिंडोरा पलना झुलावे।
ऋतु वसन्त जानि जिय अपने ले सुरङ्ग छिरकावे॥

जन्म दिवस आवत जब मेरो आंगन चौक पुरावे।
बाजे बहुविधि द्वारे बाजे वन्दनवार,बंधावे॥
मेरे गुण गुणि जनपै मोंको सम सुरुणि जो सुनावे।
हरदो दूर्वाक्षत दधि कुङ्कुम मङ्गल कलस भरावे॥
धेनु दिवावे द्विजजनको आपै शुभग अशोष पढ़ावे।
कैतिक बात कहौं हों हितको आपै कहिय न आवे॥
मेरे प्रादुर्भाव दिवस दिन आनन्द उर न समावे।
नव दिन नए भोग करि मोकों हित सों
भोग लगावे॥
घसि गुलाबके नोर सुचन्दन ले कपूर सों वसावे।
शीतल वारि बयारि अति शीतल दे मेवा मोहिं
रिझावे॥
शीतल नीर सुगन्ध सुवासित करि अधिवासन लावे।
भरि भरि जल जनाय शोस पर मोतन ताप मिटावे॥
मेरे लिये पवित्रा राखो अति सुन्दर जो बनावे।
सबै भांति प्रीति व्रजजनको आपै करि जो सिखावे॥
दशमी विजय जानि रघुवरको जब अङ्कुर शोस धरावे।
बहुविधि पाक संवारि मोहि हित मणिदीपदान हो
दिवावे॥
शरत् पूर्णिमा रास दिन मेरो नटवर वेष बनावे।
मोर मुकट पीताम्बर काछनी मुरली करहि गहावे॥
सुरभी वरद ज्योति कुहकी निशि पुनि पुनि लाड़
लड़ावे।
सुरपति मानभङ्ग प्रतिपद तब गो गिरिराज पुजावे॥
कातिक शुक्ल एकादशीके दिन कुञ्ज महल
जो बनावे।
पाट सुरङ्ग वसन पहिरावत प्रबोधनी पर्व मनावे॥
अति मन्द कर्म जड़ कलियुग जन वृथा जन्म गंवावे।
रसिक कहे श्रीवल्लभ करुणा बिन इह फल कबहूं
न पावे॥

रामकली—चर्चरी

कुंवरि राधिका तव सकल सौभाग्य सीमा या वदन
पर कोटि शत चन्द्र वारों।

खञ्जन कुरङ्ग शतकोटि नयननि ऊपर वारने करत
जियमें विचारौं ॥
कदली शतकोटि जङ्घन ऊपर सिंह शतकोटि कटि
पर न्यौछावर उतारौं ।
मत्त गज कोटि शत चाल पर कुम्भ शतकोटि इन
कुचन पर वारि डारौं ॥
कीर शतकोटि नासा ऊपर कुन्द शत कोटि दशननि
ऊपर कहि न पारौं ।
पक्क कन्दूर बन्धूक शतकोटि अधरनि ऊपर वारि
रुचि गर्व टारौं ॥
नाग शतकोटि वेणी ऊपर कपोत शतकोटि
ग्रीवा पर वारि दूरि सारौं ।
कमल शतकोटि कर युगल पर वारनें
नाहिन कोउ लोक उपमा जु धारौं ॥
दासकुम्भन स्वामिनो सुनख-शिख अङ्ग अद्भुत
सुठान कहाँ लगि संभारौं ।
लाल गिरिवरधरण कहत माहि तोलौं सुख
जोलौं वह रूप क्षण क्षण निहारौं ॥

अथ मङ्गलारती

मङ्गलं मङ्गलं व्रजभुवि मङ्गलं ।
मङ्गलमिह आनन्दयशोदा नाम सुकीर्त्तनमे-
तद्रुचिरोत्सङ्ग सुलालित पालितरूपं ॥
श्रीश्रीकृष्ण इति श्रुति सारं नाम स्वार्त्तजनाशयतापा-
पहमिति मङ्गलरावं ।
व्रजसुन्दरी वयस्य सुरभीवृन्द मृगीगण निरूपम-
भावामङ्गल सिन्धुचयाः ॥
मङ्गलमीषत् स्मितयुतमीक्षण भाषणमुन्नत
नासापुट गत मुक्ताफल चलनं ।
कोमल चलदङ्गुलिदल सङ्गत वेणु निनाद
विमोहित वृन्दावन भुवि जाता ॥
मङ्गलमखिलं गोपी शितुरति मन्थरगति
विभ्रम मोहति रासस्थित गानं ।
त्वं जय सततं गोवर्द्धनधर पालय निज दासान् ॥

२

आरती कीजे श्यामसुन्दरको ।
नन्दकुमार राधिका वरको ॥
भक्ति करि दीप प्रेम करि बाती ।
साधु सङ्गति करि अनु दिन-राती ॥
आरति व्रजयुवती मन भावे ।
श्याम लीला हितकरि हरिवंश गावे ॥

३

आरती कीजे सुन्दर वरको ।
नन्दकिशोर जयोशानन्दन नागर नवल
ताप तन हरको ॥
नव विशाल मृदु हास मनोहर श्रवण सुधा
सुख मोहन करको ।
विहारीदास लोचन चकोर नित अंश प्रिया
भुजधरको ॥

रामकली—चर्चरी

शुभग श्यामके सङ्ग राधिका विराजे ।
नयन आलस्य भरी सकल निशा सुख करी
कण्ठ हरि भुज धरी काम लाजे ॥
माणिक-कञ्चनतनो पीक दृग सोसनो अति हो
रसमें सनो रूप भ्राजे ।
छीत स्वामी गिरिधरणके मन बसी मन हो मन
हंसी सुख दियो आजे ॥

२

हारि मानी नाथ अम्बर दीजे ।
नन्दनन्दन कुंवर रसिकवर मनहरण सुनहु
गिरिवरधरण नीति कोजे ॥
सकल व्रज नागरी दासी तुम्हरी सदा तन मांझ
शीत अति होत भीजे ।
छीत स्वामी अमित गुणगणनि आगरे विनती
करति सबे मानि लीजे ॥

३

राधिका श्यामसुन्दर को प्यारी ।

नखशिख अङ्ग अनूप विराजत कोटि चन्द्र द्युति वारी॥
एक क्षण सङ्ग न छाड़त मोहन निरखि निरखि बलिहारी।
छीतस्वामी गिरिधर वश जाके सो वृषभानु दुलारी॥

४

जगावति अपने सुतको रानी।
उठो मेरे लाल मनोहर सुन्दर कहि कहि मधुरी बानी॥
माखन मिश्री और मिठाई दूध मलाई आनी।
छगन मगन तुम करहु कलेऊ मेरे सब सुखदानी॥
जननी वचन सुनि तुरत उठे हरि कहत बात तुतरानी।
नन्ददास कीन्हों बलिहारी यशुमति मन हर्षानी॥

५

करत कलेऊ मोहन लाल।
माखन मिश्री दूध मलाई मेवा परम रसाल॥
दधि ओदन पकवान मिठाई खात खवावत ग्वाल।
छीतस्वामी वन गाय चरावन चले लटकि पशुपाल॥

६

नव कुंवर चक्रचूड़ा नृपति सांवरो राधिके तरुणि मन पटरानी।
शेष ग्टह आदि वैकुण्ठ पर्य्यन्त लों लोक थाने तव जु राजधानी॥
मेघ छप्पन कोटि बाग सींचत जहां मुक्ति चारो भरत पानी।
सूर्य्य-शशि पहरुवा पौन परजन्य इन्द्र चरणदासी भाट निगम बानी॥
धर्म कोतवाल शुकसूत नारद चारु बाल सनकादि चर चारि ज्ञानी।
सत्य गण पौरिया काल अड़ुवा जहां डांड़िये काम जन सुकृत निसानी॥
नील मर्कत धरे कुञ्ज कुसुमित महल मध्य कमनीयसे पठानी।
पल न बिछुरत दोउ जात नहीं तहां कोउ व्यास महल में लिये पीकदानी॥

७

भली वृषभानु जानकी बेटी।
निविड़ निकुञ्ज कुसुम पुञ्जनिपर श्याम वाम अङ्ग लेटी॥
रति निशि जागी सोवत भोर किशोर कुंवरि गुजरेटी।
पियके हियमें जिय ज्यों राजत बाहु बाहु बल भेटी॥
नयननिकी सैननि कल मानो मन्मथ आमिष खेटी।
लोभीलाल व्यासको स्वामिनी कञ्चन राशि समेटी॥

८

दधि मथति नन्द नरेन्द्र राणी करति सुत गुणगान।
नील नीरद अङ्ग दिव्य दुकूलवर परिधान॥
नैति कर्षति हर्ष धरकति वलय कङ्कण पान।
स्वेदकणगण वदन विधु पर सुधाविन्दु समान॥
केश कुसुमनि करत मणि ताटङ्क झलकनि कान।
पयोधर पय स्रवत चातक कृष्णपति निधरान॥
सहस आनन कहि सके नहीं व्यास भाग वखान।
जगत् वन्दत मात पित्तनि गदाधर धरि ध्यान॥

९

खञ्जरीट मोहे अलिकुल मोहे अम्बुजदल मोहे नयननि।
श्रीभगता मृग शावक मोहे मीन मोहे जल सैननि॥
मुक्ता मोहे मर्कत मोहे विद्रुम मोहे रस ऐननि।
प्रताप बल उडुराज मोहे नटवर मोहे गति नयननि॥
आलस बलित ललित भुव पल्लव वल्लभपति सुत युत चैननि।
बलि कृष्णदास आश परिपूरण गिरिधर मोहे सह मैननि॥

१०

नमो तरणितनया परम पुनीत जगपावनी कृष्ण मनभावनी रुचिर नामा।

अखिल सुखदायिनी सर्वसिद्धिहेतु श्रीराधिका-
रमण रति करण श्यामा ॥
विमल जल सुमन नव काननामोद युत पुलिन
अति रम्य प्रिय व्रजकिशोरा ।
गोप गोपी नवल प्रेम रति वन्दिता तट मुदित
रहत जैसे चकोरा ॥
लहरि भांवरि ललित तालुका शुभग व्रजबालव्रत
पूरणा रास फलदा ।
ललित गिरिधरण प्रिय कलिन्दनन्दिनी निकट
कृष्णदाम विहरत प्रबलदा ॥

११

राधे ये ढङ्ग हैं री तेरे ।
वैसे हाल मथत दधि कीन्हें हरि मनो लिखे चितेरे ॥
तेरो मुख देखत शशि लाजि और कहो क्यों बांचे ।
नयना तेरे जलज जात हैं खञ्जन ते अति नाचे ॥
चपलाते चमकति अति प्यारी कहा करेगो श्यामहि ।
सुनहु सूर ऐसे दिन खोवति काज नहीं तेरे धामहि ॥

१२

दूध दोहनी ले री मैया ।
दाऊ टेरत सुनि मैं आऊं तब लो करि विधि घैया ॥
मुरली मुकुट पीताम्बर दे मोहि ले आई महतारी ।
मुकुट धर्‍यो शिर कटि पीताम्बर मुरली
कर लई धारी ॥
राधे राधे कहि मुरलीमें खरिकहि लई बुलाई ।
सूरदास प्रभु चतुर शिरोमणि ऐसो बुद्धि उपाई ॥

१३

कुंवरि कह्यो मैं जाति महरि घर ।
प्रात हो आई खरिका दुहावन कहति दोहनी लेकर ॥
तब खरिकहि कोऊ ग्वाल गये नहिं तिहि कारण
व्रज आई ।
जो देखौं तो अजिर हि बैठे गैया दुहत कन्हाई ॥
तनक दोहनी तनक दुहत मोहि देखत रुचि लागो ।
तनक राधिका तनक सूर प्रभु देखि महरि अनुरागो ॥

१४

हरि सों धेनु दुहावति प्यारी ।
करति मनोरथ पूरण मन वृषभानु महरकी बारी ॥
दूधधार मुख पर छवि लागत सो उपमा अति भारी ।
मानो चन्द्र कलङ्कहि धोवत जहां तहां बुन्द सुधारी ॥
हाव भाव रस मगन हैं दोऊ छवि निरखति
ललितारी ।
गो दोहन सुख करत सूर प्रभु तीनहु भुवन कहारी ॥

१५

नन्दनन्दन एक बुद्धि उपाई ।
जे-जे सखा प्रकृतके जाने ते सब लये बुलाई ॥
सुबल सुदामा श्रीदामा मिलि और महर सुत आये ।
जो कछु मन्त्र हृदयमें हरि कीन्हों ग्वालनि प्रकट
सुनाये ॥
व्रज-युवती नित प्रति दधि बेचन वन वन मथुरा जाती ।
राधा चन्द्रावलि ललितादिक बहु तरुणी एक भांती ॥
कालिन्दीतट कालि प्रात हो द्रुम चढ़ि रहो लुकाई ।
गोरस ले जब हो सब आवें मारग रोकहु जाई ॥
भलो बुद्धि यह रची कन्हाई सखनि कह्यो सुख पाई ।
सूरदास प्रभु प्रीति हृदयको सब मन गये जमाई ॥

१६

प्रात हि उठी गोप-कुमारी ।
परस्पर बोल जहां तहां यह सुनो वनवारि ॥
प्रथम हो उठि सखा आये नन्दके दरबार ।
आइये उठिके कन्हाई कह्यो बारम्बार ॥
ग्वालटेर सुनत यशोदा कुंवर दियो जगाइ ।
रहे आपुन मौन साधे उठे तब अकुलाइ ॥
मुकुट शिर कटि पीत अम्बर मुरली लीन्हीं हाथ ।
सूर प्रभु कालिन्दी तट गये सखा लीन्हें साथ ॥

१७

भली करी उठि प्रात हो आये ।
मैं जानत सब ग्वारि उठी जब तब तुम मोहि
बोलाये ॥

अब आवति ह्वै हैं दधि लीन्हे घर घरतें व्रजनारी।
हंसे सबै करतारी दै-दै आनन्द कौतुक भारी॥
प्रकृति प्रकृतिके जे सब राखे मङ्गा पांच हजार।
और पठाइ दिये सूरज प्रभु जे-जे अति हो कुमार॥

१८

कहा हम हिं रिस करत कन्हाई।
यह रिस जाइ करो मथुरा पर जहां है कंस कसाई॥
हम अब कहा जाइ गोहरावैं बसति तुम्हारे गाऊं।
ऐसे हाल करत लोगनके कौन रहे येहि ठाऊं॥
अपने हो घरके तुम राजा सबको राजा कंस।
सूर श्याम हम देखत बाढ़े अब सीखे एगंस॥

१९

प्यारी पीताम्बर उर झटक्यो।
हरि तोरो मोतिनकी माला कछु गर कछु कर लटक्यो॥
ढोठ्यो करत श्याम तुम लागि जाइ गहो कटिफेट।
आपु श्याम रिस करि अङ्कम भरि भई प्रेमकी भेट॥
युवती न घेर लियो हरिका तब भरि भरि धरि अङ्कवारि।
सखा परस्पर देखत ठाढ़े हंसत देत किलकारि॥
हांक दियो करि नन्द दोहाई आय गये सब ग्वाल।
सूर श्याम को जानति नाहीं ढोठ भई है बाल॥

२०

हंसत सखा सिखों कहत कन्हाई।
मैयाको बाबाको दाऊ जूको सौंह दिवाई॥
कहति काहे हंसि हेरयो काहे भौंह सकोरयो।
यह अचर्य देखो तुम इनको कब हम वदन मरोरयो॥
ऐसो बातनि सौंह दिवावति अधिक हंसी मोहे आवति।
सूर श्याम कहि श्रीदामा सों तुम काहे न समुझावति॥

२१

यह कहि उठे नन्दकुमार।
कहा ठगो सो रही बाला परयो कौन विचार॥
दानको कछु कियो लेखो रहो जहां तहां सोचि।
प्रकट करि हमको सुनावहु भेटि जोरो टोचि॥
बहुरि यहि मग जाहु आवहु राति सांझि सकार।
सूर ऐसो कौन जो पुनि तुम हि रोकनहार॥

२२

राधा सों माखन मांगत।
और निके मटुकिन को खायो तुम्हरो कैसो लागत॥
लै आई वृषभानुसुता हंसि सद्य लवनो है मेरो।
लै दीन्हो अपने कर हरि मुख खात अलप हंसि हेरो॥
सब हिनतें मीठो दधि है यह मधुरे कह्यो सुनाई।
सूरदास प्रभु सुख उपजायो व्रजललना मन भाई॥

२३

धन्य बड़ भागिनी व्रजनारी।
खात ले दधि दूध माखन प्रकट जहां मुरारि॥
नहीं जानत भेद जाको ब्रह्म अरु त्रिपुरारि।
शुक सनक मुनि येउ न जानत निगम गावत चारि॥
देखि सुख व्रजनारि हरि सङ्ग अमर रहे भुलाइ।
सूर प्रभुके चरित अगणित वरणि का पै जाइ॥

२४

ग्वारिनी नन्द द्वारे नन्द गेह बूझै।
इत हो तें जाति उत उत हो तें फिरति इत निकट ह्वै जाति नहीं नेक सूझै॥
भई बेहाल व्रजबाल नन्दलाल हित अर्पि तनमन सबै तिनहिं दीन्हीं।
लोकलज्जा तजी लाज देखत लजी श्यामको भजी कछु डर न कीन्हीं॥
भूलि गयो दधिनाम कहति ले हो श्याम नहीं सुधि धाम कहूं है के नाहीं।
सूर प्रभुको मिलो भेटि भलो अनभलो चूनहरदी रङ्ग देह छाहीं॥

२५

तब एक सखी प्रीतम कहति।
प्रेम ऐसे प्रकट कीन्हीं धीर काहे न गहति॥

व्रज घरनि उपहास जहां तहां समुझि
मन किनि रहति।
बात मेरी सुनति नाहीं न कहति निन्दा सहति॥
मातपित गुरुजन नि जान्यो भलो खाई महति।
सूर प्रभुको ध्यान चित धरि अनि हि काढ़े वहति॥

२६

एक गांवको वास धीरज कैसे के धरों।
लोचन मधुप अटक नहि मानत यद्यपि यत्न करों॥
वे ए ही मार्ग नितप्रति आवत हैं हों दधि ले निकरों।
पुलकित रोम रोम गद्गद स्वर आनन्द उमगि भरों॥
पल अन्तर चलि जात कल्पवर विरहानल जरों।
सूर सकुचि कुलकानि कहां लगि आरज पथहि डरों॥

२७

मेरा मन हरि चितवनि अरुझानो।
फिरत कमल द्वार ह्वै निकसे करत शृङ्गार भुलानो॥
अरुण अधर दशन नि द्युति राजत मोहन
मुरि मुसकानो।
उदधि तनय सुत पांति कमलके वन्दन भुरके मानो॥
यहि रस मगन रहति निशिवासर हरि तजि
और न जानो।
सूरदास चित भङ्ग होत क्यों जो जेहि रूप समानो॥

२८

हों सङ्ग सांवरेके जे हों।
होनो होय होय सो अब ही यश अपयश काहू न
डरे हों॥
कहा रिसाइ करे कोउ मेरो कछु जो कहै
प्राण तजि दे हों।
दे हों त्यागि राखि हों यह व्रत हरिरति बोज बहुरि
कब पै हों॥
का यह सूर अजिर अवनो तनु तजि आकाश प्रिय
भवन समै हों।
कायह व्रजवासी क्रोड़ा जल भजि नन्दनन्दन सब
सुख ले हों॥

२९

कबको मही लिये शिर डोले।
झूठे हो इत-उत फिरि आवत यहां आनि पे बोले॥
मुंह लों भरी मथनिया तेरी तोहि रटत भई सांझ।
जानति हों गोरसको लेवा याही वाखरि मांझ॥
इत तो आइ गात सुनि मेरो कहे बिलग जिनि जाने।
तेरे घरमें तुही सयानो और बेचि नहिं जाने॥
भ्रमत हि भ्रमत भरमि गई ग्वारिनि विकल भई
बेहाल।
सूरदास प्रभु अन्तरयामी आइ मिले गोपाल॥

३०

भई मन माधवको अवसेरि।
मान धरे मुख चितवति ठाढ़ी ज्वाब न आवे फेरि॥
तब अकुलाइ चली उठि वनको बोले सुनन न टेरि।
विरह विवश चहुधां भरमति श्याम कहां कियो फेरि॥
आवहु वेगि मिलहु नन्दनन्दन दानन करो निबेरि।
सूरश्याम अङ्कमें भरि लीन्हों दूर किया दुःख टेरि॥

३१

यह कहि मौन सोध्यो ग्वारि।
श्याम रस घट पूरि उछलित बहुत धरो संभारि॥
वैसे ही ढङ्ग बहुरि आई देहदशा विसारि।
लेहु री कोउ नन्दनन्दन कहे पुकारि पुकारि॥
सखो सों तब कहति तू री का कहां को नारि।
नन्दके घर जाउं कित ह्वै जहां है बनवारि॥
देखि वाको चकित भई सखि विकल भ्रम गहमारि।
सूर श्याम हि कहि सुनाऊं गये शिर कहा डारि॥

३२

कहा करत है री माता मोसों।
ऐसे वहि गई को श्यामसङ्ग फिरे जो वृथा रिस
करति कहा कहुं तोसों॥
कहो कोने बात बोलि धो तेहि मेरे आगे कहे
ताहि देखों।
तात रिस करत भ्राता कहे मारि है भित्ति बिन चित्र
तुम करत रेखों॥

तुमहि दिस करति कछु कहा मोहि मारि हो धन्य
पिता माता भ्राता तुम हो।
ऐसो लायक नन्दमहरको सुत भयो तिनहि मोहि
कहति प्रभु सूर सुन हो॥

३३

श्याम नग जानि हृदय चुरायो।
चतुर वर नागरी महामणि लखि लियो प्रिय सखी
सङ्ग ताहि न जनायो॥
कृपण ज्यों धरत धन ऐसे दृढ़ किया मन जननी सुनि
बात हँसि कण्ठ लायो।
गांस दियो डारि कहि कुंवरि मेरो वारि सूर प्रभु
नाम झूठे उड़ायो॥

३४

सङ्ग व्रजनारि हरि रास कीन्हों।
सबनिको आशा पूरण करी श्याम ले त्रियन पिय हेत
सुख मानि लीन्हों॥
मेटि कुलकानि मर्यादा विधि वेदकी त्यागि गृहनेह
सुनि वेणु धाई।
सबी जय जय करी मन हि सबजि धरो शङ्क काहू न
करी आप भाई॥
ज्यों महामत्त गजयूथ करनि लिये कूल सब फारि
डर काहू न मानो।
सूर प्रभु नन्दसुत निदरि निशि रस करी नाग नर लोक
सुर सबे जानो॥

३५

प्रेम रस रास सुख कहत वीतो।
भोर भये गये पावन यमुनाके सलिल न्हात सुख करत
अति बढ़ा प्रीती॥
एक एक मिलत हँसि एक हरि सङ्ग रसिक एक
जलमध्य एक तीर ठाढ़ो।
एक एक डरति एक अङ्क भरि ले चलति एक सुख
लरति अति नेह बाढ़ो॥

काहु नहि डरति जलथल क्रीड़ा करति हरति
मन निदरि ज्यों कन्तनारी।
सूरप्रभु श्यामाश्याम सङ्ग गोपिका मिटी तन साध भई
मग्न भारी॥

३६

श्यामाश्याम शुभग यमुना जलनि भ्रमि करत विहार।
पीतकमल इन्दीवर मानो भौर हि भये निहार॥
श्रीराधा अम्बुज कर भरि-भरि छिरकति बारम्बार।
कनकलता मकरन्द झरत मानो हालत पौन सञ्चार॥
अतसी कुसुम कलेवर बून्दें प्रतिविम्बित मनोहार।
ज्योति प्रकाश सुघनमें खेलत स्वाति सुमन आकार॥
धाइ धरे वृषभानु सुता हरि सोहे सकल शृङ्गार।
विद्युत जलद सूर मानो विधु मिलि श्रवत
सुधाको धार॥

३७

रीझि श्याम नागरी रूप।
लसिये लट बगरी उरपर श्रवत नीर अनूप॥
श्रवत जल कुच परत धारा नहीं उपमा पार।
मनो उगिलत राहु अमृत कनकगिरिपर धार॥
कञ्ज परशत श्यामसुन्दर नागरी रस भाइ।
सूर प्रभु तन काम व्याकुल गये मननि जनाइ॥

३८

श्यामा श्याम अङ्कमें भरी।
उरज उर परशाइ भुजसों भुजा गाढ़े धरी॥
तुरत मन सुख मानि लीन्हों नारी तेहि रङ्ग ढरी।
परस्पर दोउ करत क्रीड़ा राधिका नव हरी॥
ऐसे हो सुख दियो मोहन सबे आनन्द भरी।
करति रङ्ग हिलोर यमुना प्रेम आनन्द झरी॥
रास निशि श्रम दूरि कीन्हों धन्य धन्य यह घरी।
सूर प्रभु तट निकसि आये नारि सङ्ग सब खरी॥

३९

कहा करों नीके करि हरिको रूप रेख नहि पावति।
सङ्ग हि सङ्ग फिरति निशिवासर नयन निमेष
न लावति॥

बंधी दृष्टि ज्यों गुड़ी डोरि वश पाछे लागी धावति ।
निकट भये मेरी ये छाया मोकों दुख उपजावति ॥
नखशिख निरखि निहारोइ चाहति मन मूरति
अति भावति ।
जानो नहीं कहांते निज छवि अङ्ग अङ्गमें आवति ॥
अपनो देह आपको वैरनि दुरत न दुरे दुरावति ।
सूर श्यामसों प्रीति निरन्तर अन्तर मोहि करावति॥

४०

मैं मन बहुत भांति समुझायो ।
कहा करों दर्शन रस अटक्यो बहुरि नहीं घट आयो ॥
इनि नयननके नेह रूप रस उनमें आनि दुरायो ।
बरजत हो बेकाज सुपत ज्यों पलट्यो जो न सिधायो॥
लोक वेद कुल निदरि निडर ह्वै करत आपनो भायो ।
मुख छवि निरखि चौंधि निशि खग ज्यों छूटि
आपुन पौ बंधायो ॥
हरिको दोष कहा कहि दोजे यह अपने बल धायो ।
अति विपरोत भई सुनि सजनी सूर गुमरि जो मदन
जगायो॥

४१

राधा तैं हरिके रङ्ग राची ।
तोतें और चतुर नहि काऊ बात कहूं मैं सांचो ॥
तैं उनको मन नहीं चुरायो ऐसो है तू कांचो ।
हरि तेरो मन अब हि चुरायो प्रथम हि तू है नाचो ॥
तुम अरु श्याम एक हैं दोऊ वाको नाहीं बाचो ।
सूर श्याम तेरे वश राधा कहत लोक मैं खाचो ॥

४२

राधा हरि अनुराग भरो ।
गद्गद मुख वाणो परकाशति देह दशा बिसरो ॥
कहति इहै मन हरि हरि ले गये ए हो परनि परो ।
लोक सकुच शङ्का नहि मानति श्याम हि रङ्ग ढरो ॥
सखो सखा सों कहति बावरो ए हि हमको निदरो ।
सूरदास प्रभु सों रति मानो भुरई हम सिगरो ॥

४३

कुल की लाज कहां लों करि हौं ।
तुम आगे मैं कहों न सांचो अब काहू नहि डरि हौं॥
लोग कुटुम्ब जगत्के जे कहियत पहिले सबहिं
निदरि हौं ।
अब यह दुख सहि जात न मोपै विमुख वचन
सुनि मरि हौं ॥
आप सुखो तो सब हीं के है उनके सुख कहा सरि हौं ।
सूरदास प्रभु चतुर शिरोमणि अब कैहों कुछ लरि हौं॥

४४

सुता सों कहति वृषभानुघरनो ।
कहां तू राधिका भोरतें फिरति है तेरो गति मोपैं
नहीं जाति वरनो ॥
तोरि मोती लरो तब गुप्त करि धरो कहुं एहि मिस
सकुचि रहो मुख न बोले ।
मनो खञ्जन चपल चन्द्र फन्द परे उड़त नहिं
ताहितें कहूं न डोले ॥
कहा तेरो प्रकृति परो है लाड़िलो अब होतें
कहा तू जात गोरो ।
सूर कहै जननो बोले नहीं आजु तू परसि
धरि हौं आइ खात खोरो ॥

४५

राधा अति हि चतुर प्रवीण ।
कृष्ण को सुख दे चलो गृह हंसगति कटि छोण ॥
हारके मिस यहां आई श्याममणिके काज ।
भयो सब पूरण मनोरथ मिले श्रोव्रजराज ॥
गांठि अञ्चर छोरिके मोतो लरो लोन्हीं हाथ ।
सखो आवत देखि राधा लई ताको साथ ॥
युवति बूझति कहां नागरि निशि गई एक याम ।
सूर व्योरो कहि सुनयो मैं गई तेहि काम ॥

४६

जागिये प्राणपति रैन वोतो ।
चन्द्रको द्युति गई पहै पोरो भई सकुच नाहीं दई
अति हि भोतो ॥
माता पिता बन्धु गुरुजन अब हि जानि हैं लखें
जिनि कहूं यह लाज भारो ।

सखिन आगे नहीं नहीं सब दिन कहो मोहि
घेरे रहतीं सबै नारी ॥
उठे मुसुकाइ अकुलाइ अतुराइकै निकसि गये
श्याम व्रजनारि जानी ।
सूर प्रभु नन्दनन्दन दर्श दे गये निरखि एकटक
रही पल भुलानी ॥

४७

राधा सखी मिलि मन भाई ।
जबतें इन सों नेह लगायो बहुत भई चतुराई ॥
और भई इतनो तुम को सखी गृह जनसों निठुराई ।
काहूको मन हो नहि आनति हमहुं सबनि बिसराई ॥
तुम हो कुशल कुशल हैं एउ आप स्वार्थी माई ।
सूर परस्पर दम्पति आतुर चतुर सखी लखि पाई ॥

४८

यह सखी अब लों कहां दुराई ।
इते दिवस हम कबहूं न देखी अब जु कहां ते आई ॥
त्रिभुवनकी शोभा सब गुणनिधि है विधि एक उपाई ।
विद्यमान वृषभानुनन्दिनी सहचरि सब दुखदाई ॥
अपने मन तकि तकि तनु तोलति विविजन
सुन्दरताई ।
दुसह रूपकी राशि राधिका कहो कौन पुर पाई ॥
राचि रही रस सुरति सूर दोउ निरखी नयन निकाई ।
चीन्हे हों चलि जाहु कुञ्ज गृह छाड़ि देहि चतुराई ॥

४९

ऐसी कुंवरि कहां तुम पाई ।
राधा हूतें नखशिख सुन्दरि अब लों कहां दुराई ॥
काको नारि कौनको बेटी कौन गांवतें आई ।
देखी सुनी न व्रज-वृन्दावन सुधिबुधि हरति पराई ॥
धन्य सुहाग भाग याको यह युवतिन के मन भाई ।
सूरदास प्रभु हर्षि मिले हंसि ले उर कण्ठ लगाई ॥

५०

नन्दनन्दन हंसे नागरी मुख चितै हर्षि चन्द्रावली
कण्ठ लाई ।
वामभुज रमणी दक्षिण भुजा सखी पर चले
बलधाम सुख कहि न जाई ॥
मनो विम्ब दामिनी बीच नवघन शुभंग देखि
छवि काम रति सहित लाजै ।
किधौं कञ्चन लता बीच हि तमाल तरु भामिनी
बीच गिरिधर विराजै ॥
गये गृहकुञ्ज अलि गुञ्ज सुमननि पुञ्ज देखि
आनन्द भरे सूर स्वामी ।
राधिकारमण युवतीरमण मनरमण निरखि छवि
होत मन काम कामी ॥

५१

मन तो हरि हो हाथ बिकानो ।
निकसो मान गुमान सहित वह मैं यह होत
न जानो ॥
नयन नि साटि करी मिलि नयननि उनहो सों
रुचि मानो ।
बहुत यतन करि हों पचि हारी फिरि इत को न
फिरानो ॥
सहज स्वभाव ठगौरी डारी शीस फिरत अवगानो ।
सूरदास प्रभु रस वश गोपिनि विसरि गयो
तनु ज्ञानो ॥

५२

लोचन भये श्यामके चेरे ।
एते पर सुख पावत कोटिक मोतन फेरि न हेरे ॥
हा-हा करत परत हरिचरण नि ऐसे वश भये उनहीं ।
उनको वदन विलोकत निशि दिन मेरो कहो न सुनहीं ॥
ललित त्रिभङ्गी छवि पर अटके फटके मोसों तोरो ।
सूरदास यह मेरो कीन्हो आपुन हरि सों जोरो ॥

५३

श्याम रङ्ग रंगे नयन ।
धोये छुटत नहीं यह कैसे हू मिले पघिलि ह्वै मैन ॥
ये गोधेनु हि टेरत वहां ते सासो लेन न देन ।
सूरज प्रभुके सङ्ग सङ्ग डोलत नेकहुं करत न चैन ॥

५४

लोचन भृङ्ग कोषरस पागे।
श्याम कमलपदसों अनुरागे॥
सकुच कानिवनबेली त्यागी।
चले उड़ाइ सुरति रति पागे॥
मुक्ति पराग रस हि इन चाखो।
भवसुख फूलरसहि इनि नाखा॥
इनते लोभी और न कोई।
जो पटतर दीजे कहि सोई॥
गये तब हितें फिरि न आये।
सूर श्याम वे गहि अटकाये॥

५५

नयन भये वश मोहन तें।
ज्यों कुरङ्ग वश होत नादके टरत नहीं ता गोहनतें॥
ज्यों मधुकर वश कमल कोषके ज्यों वश चन्द्र चकोर।
तैसेइ ए वश भये श्यामके गुड़िया वश ज्यों डोर॥
ज्यों वश स्वाती बुन्दन चातक ज्यों वश जलके मीन।
सूरज प्रभुके वश्य भये ए छण छण प्रति जु नवीन॥

५६

नयना मान अपमान सहा।
अति अकुलाइ मिले री वरजत यद्यपि कोटि कहो॥
जाको बानि परी सखी जैसो तैसो टेक रहो।
ज्यों मर्कट मूठो नहीं छांड़त नलिनी सुवास गहो॥
जैसे नीर प्रवाह समुद्रहिं मांझ बहो सो बहो।
सूरदास इन तैसिये कीन्हो फिरि मोतन न चहो॥

५७

सजनी मोतें नयन गये।
अब लों आश रही आवनकी हरिके अङ्ग छये॥
जबतें कमलवदन उन दर्शे दिन-दिन और भये।
मिलि जाइ हरदी चूना ज्यों एक हि रङ्ग रये॥
मोकों तजि भये आप स्वार्थी वा रस मत्त भये।
सूर श्यामके रूप समाने मानो बुन्द तये॥

५८

पिय निरखत प्यारी हंसि दीन्हीं।
रीझि श्याम अङ्ग-अङ्ग निरखत प्यारी हंसि नागर उर लीन्हीं॥
आलिङ्गन दे अधर दशन खण्डि कर गहि चिबुक उठावत।
नासा सों नासा ले जोरत नयन नयन परशावत॥
यहि अन्तर प्यारी उर निरखो झझकि भई तब न्यारी।
सूर श्याम मोकों दिखरावत उर लाये धरि प्यारी॥

५९

श्याम नारिके विरह भरे।
कबहुंक बैठत कुञ्जद्रुम नि तर कबहुंक ताने रहत खरे॥
कबहुंक तनकी सुधि विसरावत कबहुंक तन सुधि आवत।
तब नागरिके गुणहि विचारत तेइ गुण गुणि गुणि गावत॥
कहुं मुकुट कहुं मुरली रही गिरि कहुं कटि पीत पिछोरी।
सूर श्याम ऐसी गति भीतर आई दूतिका गोरी॥

६०

ठाढ़े नन्द द्वार गोपाल।
बोलि लीन्हें देखि ललिता सैन दे ततकाल॥
हंसत गये हरि गेह ताके कोउ न जानत ओर।
मिली हरि को लाइ उर भरि चापि कठिन कठोर॥
कहो मेरे धाम कबहूं क्यों न आवत श्याम।
सूर प्रभु कहि आजु नागरि आइ है यहि याम॥

६१

वाम सङ्ग श्यास तय याम जागे।
कोक विद्यानिपुण सकल गुणमें सपुण सुरति संग्राम जुरि नहीं भागे॥
अङ्ग आलस्य भरे नयन निद्रा ढरे नेक शय्या परे निशा बीती।
सूर प्रभु नन्दसुत चले अकुलाइके गये ता धाम रस काम जीती॥

९१

आजु बनो प्रियरूप अगाध ।
पर उपकार श्याम तन धारो पुरवत सब मन साध ॥
धर्मनीति यह कहां पढ़ी जू हम हूं बात सुनावहु ।
कहो कहां काको सुख दीन्हों काहे न प्रकट बतावहु ॥
धनि उपकार करत डोलत हो आजु बात यह जानी ।
सूर श्याम गिरिधर गुण नागर अङ्ग निरखि पहिंचानी ॥

९२

कहां हैं श्याम कहां गमन कीन्हों ।
कहां तुम कबहूं दर्श देत नहिं धोखे गये आइ हम मानि लीन्हों ॥
नयन आलस्य भरे चरण डग लरखरे कहा हो डरैहै कहो मोसों ।
रैन कहुं बसे प्रिय कौन सों रसे हो उर करज कसे सो कहो गोसों ॥
भले जू भले नन्दलाल वेज भलो चरण जावक पाग जिन हि रङ्गो ।
सूर प्रभु देखि अङ्ग अङ्ग बानक कुशल मैं रहो रीभि वह नारि चङ्गो ॥

९४

अणो वो बन्दीदा हाल न जाना ।
दर्श पियासे नयन विहारो मिलि महबूबा हुण वलिहार लुभाना ॥
तोपै वारी जामी वो आव पिया रे मनदो आशा पूजामो दर्श देखामो ।
वलिहारियांदा प्राण विहारो अरज़ हमारो सुन छिन जामो ॥
तेनू का परवा नेह लगाय न आय सांवल दरद बन्दो दा हाल विहारिन सुन हनकी सलाह ।
वलिहारियां दे दिलनू लगी तुझ दर्शनदी चाह ॥
पलकादे पड़े पाय घरी घरी जीव जिवाव विहारो ।
किसनू भाव पिया निरमोही अरज़ हमारो ॥
हुसन तुसाड़ा दिल विच वसिआ और न भावे प्यारो ।
वलिहारियां नू लग वो गया सांवलँ रङ्ग करारो ॥
जिअरा मोरा रे निशिदिन अकुलाय विहारो दर्शन विनि ।
गुरुजन डर बाहर कबहुं निकस न पाऊँ समुझि समुझि वलिहारि रहौं घर अरो देखे किनि ॥
नितदाना कर फेरा वो नन्ददे ।
वलिहारियां तैंनू की सिखलाया लोग हंसे गुरुजन बहुतेरा वो नन्ददे ॥
बैठे दम्पती रतिराजे कोटि वारो तन सुदेश अङ्ग अङ्ग भूषण बसन पहिरे बरन बरन ।
तैसिये कुञ्ज मृदुल सरस रसपुञ्ज तहां करत भ्रमर गुञ्ज जहां दोउ मिलि करत बातें मधुर मधुर हसन मानो लागी फूल झरन ॥
नील पीत पट दुकूल कालिन्द्री कूल मदन मवास कियो आस पास सखिसमूह गावत कलमधुर सुरन ।
रङ्ग राग जमि रह्यो जात नाहि कापै कह्यो रीझि रीझि छवि निहारि लेत वलिहारि राधामोहन दोउ मनके हरन ॥
कामकी रति पाय परत ।
जीति लोक लोकपति ब्रह्मादि इन्द्रादि सुर नर सिद्ध गन्धर्व नाग जीति अति मद बाढ़ि रह्यो ताहुको मन हासन हरत ॥
ब्रजयुवती मिलि नाचत गावत रङ्ग उपजावत केलि करत ।
वारो विहारो वलिहारो तिहारो सङ्ग राधा प्यारो जियतें न टरत ॥
तिहारो लालआल औरे हाल समुझि न परत धो कहा ।
ज्यों-ज्यों सुधि आवत मदन जगावत अति दुख पावत व्याकुल विरह महा ॥
गिनति वोतो रैन तारे सुनि श्याम नयन हमारे पल न पाये दोन भए हहा ।

जो ते जिवावो वलिहारो दर्श देखावो सूनी सेज लेत
देखो प्राण भहा ॥
क्यों वो सुनदा श्याम प्यारा मेंडी अरज् ।
कि करा साड़ा वसन विहारी वलिहारी या मन
लगानी अपनी ग़रज़् ॥
तेंड़ी वो आशा बंदिया ।
मेहर करो वो मिलि वलिहारियांनू इश्क़ तु सांडे
फंदिया ॥
मुरली बजाई क्यों रे तु औचक द्वार खड़ा कान्हा
मैनवाणसो तान रस भरो सोवत जगाई क्यों रे ।
भोर भावते गुरुजन मेते लाज गंवाई क्यों रे मो सूधे
हँसि वलिहारी अनोखे प्रीति लगाई क्यों रे ॥
नन्द दे निमाना यार बे सुनि वंशीवाले गल मैं परो ।
अरज् हमारो सुन वलिहारो कीतक सिरपई मैं डरो ॥
पलुड़ा नू छेड़ बे मेड़ो पनियांनू जादियां ।
आजिज् होइ या व्रजमोहन तेंड़े वलिहारियांदे
पायँ परेंदो सांई खांदियां ॥
लोगवा जागे क्योंकर आवो मितवा व्याकुल होत
मुरली सुनि जिभरा आन कान जब लागे ।
हियरा भरो उमंग अनुरागन लाज नहीं मोहि त्यागे
को यत्न वलिहारी मिलनको जाउं बड़ी भागे
मोहन रस पागे ॥
तंडेरे मैं वारी वारी जावां सुन प्यारी जीवन हमारो।
कुञ्ज भवन देवी सुरसेवी वलिहारियांनू अनो
जिवामी तोहि मिल वो विहारी ॥

९५

आरति करत सकल सुर साधा ।
चिन्तत चरण मिटे दुख वाधा ॥
मनकरि मारुत नन्दनन्दन गावो ।
सनमुख होत चारि फल पावो ॥
बाल अर्कको तेज विराजे ।
शोभा सिन्धु छत्र शिर छाजे ॥
सीताकी सुधि क्षण में लाये ।
रावणके जिन गर्व नशाये ॥
महावाहु बल विदित जगत पर ।
राचस कुल कमृपत जाके डर ॥
केशरिनन्दन कपिकुलनायक ।
मङ्गलकरण सन्त सुखदायक ॥
सीताराम भक्ति रति ताकी ।
लई वलिहारि चरण रज जाकी ॥

९६

और सबै सुख तजिये मन व्रज वसिये ।
कृष्णनाम कल कीरति गावत प्रेमपन्थमें धसिये
योग यज्ञ व्रत ध्यान न भावत काहेको काया कसिये ॥
धर्म कर्म बहकाये बौरे कर्म कोच क्यों फंसिये ।
पुलिन पवित्र वलिहारि परश रज ले-ले शिर
धर वसिये ॥

९७

वृथा मोह मेटो कि न रघुवर ।
मैं मेरो मायाको चेरो भयो रह्यों नाहीं यमके डर ॥
कपट कुचाल करों हों कर्मवश सूझत नहि तव
चरण कल्पतरु ।
जानकीमनभावन सुखसीमा करुणासिन्धु अयोध्या-
नागर ॥
जिन सुख पायो दशरथ सुत गायो गयो पार भवसिन्धु
अगम तर ।
इह दीन जानि जन अपनो सुनो वलिहारो कृपालु
धनुषधर ॥

९८

आनि जिवामी मेड़ा जिया ।
नन्दनन्दन प्यारे लाल दिलोदी दारू वतलामी ॥
जो तू सानू छाड़ि पहती विरह दे हाथ विकामी ।
बूझे नी हाल असाड़ानो भांवल वलिहारियांदे
घर आमी ॥
श्याम महोवत तेरो वो मन लोता नी महरदे ।

मुरली बजावदां गावदांनो मोहन इत वलिकरि
गयो फेरदे ॥

९९

बटोही जागु रे कहा सोवे ।
शिर पर काल चढ़ा शर साधे श्वास श्वास भरि क्यों
दिन खोवे ॥

श्रीगोपीजनवल्लभाय नमः ।

विभास—तिताला

जागो जागो हो गोपाल ।
नाहिं न अति सोइये भयो प्रात परम शुचि काल ॥
फिरि फिरि जात निरखि मुख क्षण क्षण सब
गोपनके बाल ।
बिनु विकसी मनु कमलकोषतें ते मधुकरको माल ॥
जो तुम मोहि न पत्याउ सूर प्रभु सुन्दर श्याम तमाल।
तो उठिये आपुन अवलोकिये तजि निद्रा
नयनविशाल ॥

२

जागिये व्रजराज कुंवर कमलकोष फूले ।
कुमुदिनिमुख सकुचि रहो भृङ्ग लता भूले ॥
तमचर खग रोर सुनिये बोलत वन राई ।
रांभत गो मधुर नाद बछरा हित धाई ॥
विधु मलीन रवि प्रकाश गावत व्रजनारी ।
सूर श्रीगोपाल उठे परम मङ्गलकारी ॥

३

प्रात भयो कृष्ण राजीवलोचन ।
सङ्ग सखा ठाढ़े गो मोचन ॥
विकसित कमल रटत अलिश्रेणी ।
उठो हो गोपाल गुहूं तेरी वेणी ॥
खीर खांड़ घृत भोजन कीजे ।
सद्य दूध धोरी को पीजे ॥
सुत हित जानि जगावे नन्दरानी ।
परमानन्द प्रभु सब सुखदानी ॥

४

लाले नाहिं न जगाय सकति सुनि सुबात सजनी ।
अपुने जान अजहुं कान मानत सुखरजनी ॥
जब जब हों निकट जाउं रहत लागि लोभा ।
तनकी सुधि बिसरि गई देखत मुखशोभा ॥
वचननको बहुत करत सोचत जिय ठाढ़ी ।
नयन नयन विचार परो निरखत रुचि बाढ़ी ॥
इहि विधि वदनारविन्द यशोमति जिय भावे ।
सूरदास सुखकी राशि कहत न बनि आवे ॥

५

भयो पाछलो पहर ।
कान्ह कान्ह कहि टेरन लागे बाबा नन्द महर ॥
ब्रह्ममुहूर्त भयो सांवरे राभन लागी धेन।
उठे बलभद्र बछरुवा छोलन गोपन पूरे वेन ॥
गोपवधू दधि मन्थन लागीं विप्र पढ़न लागे वेद ।
परमानन्ददासको ठाकुर गोकुलके दुख छेद ॥

६

प्रात समय उठि सोवत सुत को वदन उघाय्यो नन्द ।
रहि न सके अतिशय अकुलाने नयन निशाके द्वन्द ॥
शुभ्र सेज मधितें मुख निकसो गयो तिमिर मिटि मन्द।
मानहु पयनिधि मथत फेन फटि दई है दिखाई चन्द॥
सुनत चकोर शब्द उठि धाए सखोजन सखा सुछन्द ।
रह्यो न सुधि शरीर धीर मनु पिवत किरण मकरन्द ॥

७

भोर भयो जागो नन्दनन्द ।
सङ्ग सखा ठाढ़े जगवन्द ॥
सुरभि न पयहित वत्स पिवाए ।
पञ्छीयूथ दशहु दिश धाए ॥
मुनि सर तज्यो तमचर सुर छाय्यो ।
शिथिल धनुष रतिपति गहि डाय्यो ॥
निशा घटी रविरथरुचि राजी ।
चन्द्र मलिन चकई रति साजी ॥
कुमुदिनी सकुची वारिज फूले ।

गुञ्जत फिरत अलीगण टूले ॥
दर्शन देहु मुदित नरनारी ।
सूरदास प्रभु देव मुरारी ॥

८

भोर भयो नन्द यशोदा जो बोलत जागो जागो
मेरे गिरिधर लाल ।
रत्न जटित सिंहासन पर बैठो देखन को आईं
व्रजबाल ॥
नियरे जाइ सुपेती खैंचत बहुरो हरि ढांपत
वदन रसाल ।
दूध दही अरु माखन मेवा भामिनि भरि लाई
है थाल ॥
तब हरि हर्षि गोद उठि बैठे करत कलेज तिलक
दे भाल ।
दे बीरा आरति वारत हैं चतुर्भुज गावत गीत रसाल ॥

९

जागो कृष्ण यशोदा जू बोले इह अवसर कोउ
सोवे हो ।
गावत गुण गोपाल ग्वालिनी हर्षित दही
विलोवे हो ॥
गोदोहनध्वनि पूरि रही व्रज गोपी दीप संजोवे हो ।
सुरभी हूंक वच्छ़रुआ जागी अनिमिष मारग जोवे हो ॥
वेणुमधुरध्वनि महुवर बाजत बेंत गड़े कर सेली हो ।
अपनी गाय सब ग्वाल दुहत हैं तुम्हरी गाय
अकेली हो ॥
जागो कृष्ण जगत्के जीवन अरुण नयन मुख सोहे हो ।
गोविन्द प्रभु जो दुहत हैं धौरी व्रज गोपवधू मन
मोहे हो ॥

चिरइया चुहचुहानी सुनि चकईको वाणी
कहति यशोदा राणी जागो मेरे लाला ।
रविको किरण जानी कुमुदनी सकुचानी कमल
विकसानी दधि मथे बाला ॥
सुबल श्रीदामा तोकी उज्वल वसन लिये
द्वारे ठाढ़े टेरत बाल गोपाला ।
नन्ददास बलिहारी उठि बैठो गिरिधारी सब
मुख देख्यो चाहें लोचनविशाला ॥

११

उठ गोपाल भयो प्रात देखूं मुख तेरो ।
पाछे गृहकार्य करौं नित्यनेम मेरो ॥
विघटित निशा अरुण दिशा प्रकट भयो भान ।
कमलमेंके भ्रमर उड़े जागिये भगवान ॥
वन्दीजन द्वार ठाढ़े करत हैं केवार ।
मधुर बैन गान करत लीला अवतार ॥
परमानन्द स्वामी दयालु जगत् मङ्गलरूप ।
वेद पुराण गावत हैं महिमा अनूप ॥

१२

प्रात समय भयो सांवलिया हो जागो ।
नन्द यशोदाके मन आनन्द गाय दुहन को
भाजन मांगो ॥
रविके उदय कमल प्रकाशे ।
भ्रमर उठि चले तमचर वासे ॥
गोपवधू दधि मन्थन लागो ।
हरि जूको लीला के रस पागो ॥
विकसित कमल चलत अलिश्रेणी ।
उठो गोपाल गुहूं तेरो वेणी ॥
परमानन्ददास मन भायो ।
चरण कमल रज देखन आयो ॥

१३

उठो मेरे लाल गोपाल लाड़िले रजनी बीती
विमल भयो भोर ।
घर घर दधिको मथनिया बाजे द्विज करत
वेदको ध्वनि घोर ॥
करो कलेऊ दधि अरु ओदन मिश्री बांटि परोसौं
थोर ।
आशकरण प्रभु मोहन तुम पर वारों तन मन
प्राण अकोर ॥

१४

प्रात समय उठि चलहु नन्दगृह बलराम कृष्ण
मुख देखिये ।
आनन्दमें दिन जाइ सखी री जन्म सुफल
करि लेखिये ॥
प्रथम काल हरि आनन्दकारी लखि पाछे भवन
काज कीजिये ।
रामकृष्ण पुनि वन हि जाइंगे चरण कमल
रस लीजिये ॥
को इक गोपिका व्रजमें सयानी श्याम महात्मा
सोई है जाने ।
परमानन्द प्रभु यद्यपि बालक नारायण करि
सोई माने ॥

१५

हौं प्रभात समय उठि आई कमलनयन देखन
तुम्हरो मुख ।
गोरस बेचन चली मधुपुरी लाभ होइ मारग
पाऊं सुख ॥
करत कलेज श्याम मनोहर नेकु चिते कीजे
हमतन रुख ।
तुम सपने मोहि मिलिके बिछुरे कासों कहों इह
रजनीजनित दुख ॥
प्रीति जु एक लाल गिरिधर सों इह मिस करि
सब बात जनाई ।
परमानन्ददास वह नागरी नागर सों मनसा
अरुझाई ॥

१६

मैं जान्यों जागे कन्हाई तातें यशोमती तेरे घर आई।
मेरे पिछवारे वेसेंइ खरनिसों किन हू मधुरी
मुरली बजाई ॥
जन्म सफल करि विनती चित धरि अपने कान्ह
कि न देहु जगाई ।
ले उछङ्ग मोहनको यशोमती आंगन ठाढ़ी गोपी
मुख देख रसिक बलि जाई ॥

१७

प्रात समय घर घरते देखनको आई गोकुलनारी ।
अपुनो कृष्ण जगाइ यशोदा आनन्द मङ्गलकारी ॥
सब गोकुलको प्राण जीवनधन या सुत पर बलिहारी।
आशकरण प्रभु मोहन नागर गिरिगोवर्द्धन धारो ॥

१८

गोवर्द्धन गिरि सघन कन्दरा रैन निवास कियो
पिय प्यारी ।
उठि चले भोर सुरति रस भीने नन्दनन्दन
वृषभानु दुलारी ॥
उत विगलित कचमाल मरगजी अटपटे भूषण
मरगजी सारी ।
इत हि अधर मसि पाग रही धसि दुहुं दिशि
छवि लागत अति भारी ॥
घूमत आवत रति रण जीतें करनि सङ्ग
गरिवर गिरिधारी ।
चतुर्भुजदास निरखि दम्पतिसुख तन मन धन
कीन्हीं बलिहारी ॥

१९

रजनी राज लियो निकुञ्ज नगरको रानी ।
मदन महीपति जीति महारण श्रमजल सहित
जंभानी ॥
परम सूर सौन्दर्थ्य भ्रुकुटिधनु अनियारें नयन
बाण सन्धानी ।
दासचतुर्भुज प्रभु गिरिधर रस सम्पति विलसी
ज्यों मनमानी ॥

२०

राधे जू हारावली टूटी ।
उरज कमलदल माला मरगजी वाम कपोल
अलक लट छूटी ॥
वर उर उरज करज कर अङ्कित बाहु युगल
वलयावली फूटी ।
कञ्चुकी चीर विविध रङ्ग रञ्जित गिरिधर
अधर माधुरी घूंटी ॥

आलस वलित नयन अनियारे अरुण उनींदे
रजनी खूटी।
परमानन्द प्रभु सुरति समय रस मदन नृपतिकी
सेना लूटी॥

२१

आजु श्यामा जुके नयनकी बात सुन री सखी
मोपें वरणि न जाई।
सुधाकिरण बिच युग शुभ खञ्जन किये पान
मानो सोवत अघाई॥
चुम्बन राग रङ्गीले रसमसे कहा कहूं सुन्दरि-
सुन्दरताई।
मर्कत विद्रुम कमल कोष में ले आवक को
रेखा बनाई॥
अलस तिरीछे चाहत बिच हीं बिच कछुक
विकसि जब लेति जंभाई।
मन्मथ जय करि हरि जीतन को दयो बाण
भ्रू-धनुष चढ़ाई॥
देखि लाल लोचन विथकित भई परम
चतुरता सब बिसराई।
सूर श्याम रस रीझ रहे तहां तुम हम सहचरी
कौन बड़ाई॥

२२

काहे को दुराव करति है री देखिये फूल प्रकट हिये।
तू वर मधुप प्रिय मुख कमल आय मकरन्द पिये॥
शिथिल अङ्ग निशाके जागे विथुरी अलकें स्वाद लिये।
यौवनके मद माती ग्वालिन डगत चरण धरणी पे दिये॥
नूपुर अरसात तरुणित मानो रति केलि किये।
कृष्णदास स्वामिनी गिरिधरण रसिक रसिये॥

२३

आजु पिय सों तू मिली री मानो।
श्रमजल कण भर वदनकी शोभा निरखि नभसि
उडुराज खिसानो॥
त्रिभुवन युवतिन को सुख सवस जानति हों तव
मांझ समानो।
कृष्णदास प्रभु रसिकमुकुटमणि सुवश किये
गोवर्द्धन रानो॥

२४

आजु कछु देखियत है रगमगी काहे न संभरति
छूटेइ अलक।
अधरनि रङ्ग कज्ज को चन्द टूटे नयन राते आई
आधेइ तिलक॥
मर्कतस्तम्भबाहु नन्दनन्दन मिलि रही री हेम ललक।
रतिरणरङ्ग जीत्यो काम-छत्रपति ताही तें तेरे
फूल किलक॥
कृष्णदास स्वामी सों प्यारी लीन्हीं तें सुरति
छिपाल झलक।
मोहन लाल गोवर्द्धनधारी वदन कान्ति है चन्द्रमलक॥

२५

नव निकुञ्ज ते आवति बनी राधा चाल सुहावनी
मनको हरणी।
विकसित वदन कमल को शोभा कहा कहों देखत
उदित तरणी॥
तरुण जलद नव श्यामके सङ्गम रस भरि भेंटत
भूतल जरणी।
कृष्णदास प्रभु गिरिधर प्रिय सों कीनी तें रसिक
रसीली वरणी॥

२६

मैं तेरो अधिक चतुराई जानी तें न कछुको संभारी।
आनन्दरसवश देह भूल गई मिलत गोवर्द्धनधारी॥
कहां कहूं गुणराशि अङ्ग अङ्ग चलत मधुर
गति भारी।
कृष्णदास प्रभु रसिक लाल के तू अति प्राण पियारी॥

२७

आई तू तिलक मिटाये।
रतिरण गोपाल अङ्ग नखशर उर लाये॥
कपोलन पर पीक लागी नैन कषाये।
हरि सो मिलि मदन जीत्यो दाव उपाये॥

कृष्णदास प्रभु सों मिलि निशान बजाये ।
ऐसो को निमिष तजे गिरिधर पाये ॥

२८

तें गोपाल हेत कसुम्भी कञ्चु को रँगाय लई
भलो भई सुफल करी आजु निशि सुहावनो ।
रोम रोम फूल चाय चपल नयन भृकुटी भाय
आभरण चल अङ्ग चाल डगमगो सुहावनो ॥
शुभग सारो झूमक तन श्याम पाट कुसुम नीवो
तनसुख पचरङ्ग छोट ओढनो सुहावनो ।
सोहत अलक विथुरो वदन मोहन लावण्यसदन
कृष्णदास प्रभु गिरिधर केलि अति सुहावनो ॥

२९

कञ्चुकीके बन्द तरकि तरकि टूटे देखत मदन-
मोहन घनश्यामहि ।
काहे को दुराव करति है री नागरी उमगत
उरज दुरत क्यों यामहि ॥
कछु मुसकात दशन-छवि सुन्दर हंसत कपोल
लोल भूभामहि ।
रवि-शशि युगल परे रति फन्दन श्रवणनि पालक
ताटङ्क के नामहि ॥
वदनकमल पर अलक मधुपवर खञ्जन नयन
लेत विश्रामहि ।
सुन कृष्णदास रसिक गिरिधर रङ्ग रङ्गित
सुमुखि लजावति कामहि ॥

३०

झूमत अलक तेरे वदन-कमल पर अधिक नीके
लागत नयन अलसरी ।
कहा कहूं रूप-शोभा उरज युगल नव ले चली
रसिकवर मञ्जुल कलसरी ॥
जानी मैं ते निधि पाई निकुञ्ज-मण्डप महं जाके
कारत हो नयन ललसरी ।
कृष्णदास प्रभु गिरिधर प्रतीति बाढ़ी नख-पद-
पंक्ति सोहे मोहन ललसरी ॥

३१

कहि न परे तेरे वदनकी ओप ।
झलकनि नव मोतिन हि लजावति निरखत
शशि-शोभा भई लोप ॥
पल न लागति चाहति प्रिय तन उन्नत भौंह
घटाटोप ।
चपल कटाक्ष कुसुम-शर तानत फुरत अधर
कछु प्रेम-प्रकोप ॥
प्रात-समय आए श्याम मनोहर तम हीं लड़ावत
अपनो चोप ।
कृष्णदास प्रभु गोवर्द्धनधर अति नागरवर धरे
वेष गोप ॥

३२

प्रात आवत बनी वृषभानुनन्दिनी रणित नूपुर
चरण लटक मन्दालसी ।
सुरति-सुख-भाव अङ्ग अङ्ग भूषण-वसन अलक
फरकत कछु भांति मन्दालसी ॥
अधर अद्भुत रेखा प्रिया प्रियतम वेश सखीमण्डल
रसद नयन मन्दालसी ।
कृष्णदासनि नाथ रसिक गिरिवरधरण मन
हरो चारु चल भौंह मन्दालसी ॥

३३

अरुणउदय नीके लागत सुन सजनी हां-हां तेरे
नयन रसमसे ।
मानहु शरत्-कमल-सम्पुट महं युग अलि
मधुलम्पट विवश वसे ॥
श्याम श्वेत आलस रस भावित भावसमूह
कषाय कसमसे ।
सुन कृष्णदास रसिक गिरिधर प्रिय सुखद
सहज अञ्जन सों ससमसे ॥

३४

ऐसो मानत हो अपने जिय मह पिय सों
मिलत हो करोंगो लड़ाई ।

देखत वदन धीरज न धरो मन लाल गिरिधरण
हों जानि पाई ॥
कहा करों प्रवेश चोरी सखी रूप दिखाय
ठगोरी लाई ।
कृष्णदास प्रभु रसिकशिरोमणि ले भुज बीच
बातन अरुझाई ॥

२५

नयन मन्दालस भरे हैं लसत वदनचन्द्र माहिं
प्रकाशित ।
गति मन हरति सकल जननाके उरज युगल
कर लिनु उपहासित ॥
रति नव कोक-कला-परिपूरण भौंह रुचिर चित्रलेख
विकाशित ।
सुन कृष्णदास विविध युवतिनके ले यौवन
गिरिधरण विकाशित ॥

२६

सुर तालसे दुराव कित करत मानहु मिले
गोवर्द्धनधारी ।
अधर सुरङ्ग पीक कपोलन नख पद उरज सोहत
हैं चरणगति भारी ॥
मरगजी ओढनी कञ्चुकीके बन्द टूटे नीवीपट
ग्रीव न होय सारी ।
कृष्णदास प्रभु गिरिधर सङ्ग जागी ताते
उमगति फूल अङ्ग अङ्ग सुखकारी ॥

विभास—चर्चरी

लाल गिरिधर सङ्ग लाड़िली भामिनी ललित
रतिरस केलि चारु सोहै ।
नव तमाल छवि मानो नवल मालती वेलि नवरङ्ग
विलासनिधि आरोहै ॥
कछुक मुसकात चमकात दशन झलमलनि जनु
कहुं मुक्तामणि हार पोहै ।
सुन कृष्णदास अङ्ग अङ्ग वैभव सुसुखि सघन
वृन्दाविपिन मार मोहै ॥

विभास—यत्

राधा रङ्गभरी नहीं बोलति ।
मोहन मदनगोपाल लाल सों अपनो यौवन तोलति ॥
चाहति मिलन प्राण प्यारे को मेरो हो मन
टकटोलति ।
छांटहि बहुत चातुरी भामिनी कहत हम सों
झकझोलति ॥
प्रात होन लाग्यो सुन सजनी अब हीं
तमचर बोलति ।
कृष्णदास प्रभु गिरिधर-प्रिय-हित सारङ्ग-नयन
सलोलति ॥

विभास—झपताल

श्याम सिन्धु अङ्ग चन्दनादि गन्ध पूजित पट पीत
मदन जलजवत् शुभग तरङ्गिमा ।
युवती सरिता अनङ्ग सम्मिलित शोभा सीमन्त
गुण गरिष्ठ भाव सिन्धु सङ्गिमा ॥
वदन-कमल अलक-मधुप नयन-खञ्जरीट बीच
अद्भुत तिल-कुसुम नाक भौंह अङ्गिमा ।
श्रवण श्रुति विमोहन चल कुण्डल ताटङ्क गण्ड
मण्डित मुसकानि अधर रङ्ग रङ्गिमा ॥
नखशिख भूषण अमोल मनहर मादक सुबोल
वैजयन्ती भूषित श्रीउर उतङ्गिमा ।
कृष्णदास प्रभु गिरिधर सुरतिनाथ राधावर वेणु-
गान तान-शब्द थुङ्ग थुङ्गिमा ॥

३

तेरे प्रभावते गोपाल प्यारो बोलत वन ।
चलहि मिलहि न राधिका न वसत साजे शृङ्गार तन ॥
नव देखो विद्युत्लता मन्द सुवन सावन घन ।
सोहहि किन कण्ठ लागि रति विलास उल्लसित मन ॥
नव निकुञ्ज कूजत कलवेणु युवतितापहरण ।
कृष्णदास प्रभु नटवर मोहन गिरिराजधरण ॥

४

जैसे तू कहति तैसे हो बने ।

भैर जान सखी लेहि संभारि भामिनी अपने धने ॥
सुरति-सुधा-निधि श्याम मृदुल रस यामैं कैसेके सने ।
कृष्णदास प्रभु गोवर्द्धनधर गुण रसाल कौन गने ॥

५

गोपाले देख हि कि न आई री ।
आजु बने गोविन्द नव कमलनयन तो को हौं
लेन पठाई री ॥
तरणि-तनया-पुलिन विम्ब-शरत्-निशा जुन्हाई री ।
राकापति-कर-रञ्जित द्रुम-लता-भूमि सुहाई री ॥
गोवर्द्धनधरण लाल गान सौं बोलाई री ।
कृष्णदास प्रभुको मिलन युवतिन सुखदाई री ॥

६

सुन्दर नन्दनन्दन जो हौं पाऊं ।
अङ्ग सङ्ग लागि मदन-मनोहर या जाड़ेको देश-
निकारो दिवाऊं ॥
मृगमद अगरु कपूर कुङ्कुमा मिले अरगजा
देह चढ़ाऊं ।
विविध सुगन्ध सुमन की सुनु सखि सघन निकुञ्जमैं
सेज बिछाऊं ॥
रागरागिणी उपज सुलय स्वर तानतरङ्ग कै
मधुर हि गाऊं ।
कृष्णदास प्रभु गोवर्द्धनधर रसिक-शिरोमणि
सुविधि रिझाऊं ॥

विभास—पटताल

जेहिं फन्द पिउ वेगि मिले करहि कि न सोई फन्द ।
विरह-पीर-हरण रसिक सुन्दरी सुन्दर गोविन्द ॥
तू व्रजसरकी कुमुदिनी हरि वृन्दावनको चन्द ।
वचन-किरण-विगत अमृत पीवहिं श्रुतिपट स्वच्छन्द ॥
तू करिणी वर ललना नन्द सुवन मदगयन्द ।
कृष्णदास प्रभु गिरिधर रति सुख आनन्द कन्द ॥

विभास—यत

हरि मोहनको मोहन बानक ।
मोहन रूप मनोहर मूरति मोहन मोही अचानक ॥
मोहन विरह चन्द्र शिर भूषण मोहन नयन सलोल ।
मोहन तिल भौंह मनमोहन मोहन चारु कपोल ॥
मोहन श्रवण मनोहर कुण्डल मृदु सुई मोहन बोल ।
कृष्णदास प्रभु गिरिधरण मनोहर नखशिख
प्रेम कलोल ॥

विभास—एकताला

तरणि-तनया-तट आवत हो प्रात समय कन्दुक
खेलत देखो आनन्दको कन्दवा ।
नूपुर पद कुणित पीताम्बर कटि बांधे लाल
उपरेना शिर मोरनको चन्दवा ॥
पङ्कज नयन सलोल मधुर मोहन बोल गोकुल
सुन्दरि-सङ्ग विनोद स्वच्छन्दवा ।
कृष्णदास प्रभु हरि गोवर्द्धनधारी लाल चारु
चितवन तोरे कञ्चुकीके बन्दवा ॥

विभास—यत्

जो भावे सो करति लाड़िलो हां री रसिक
गोपाल हि भावति ।
गुणकी राशि यत् ताल हि सम्मिलित प्रमुदित
राग विभास हि गावति ॥
तान बंधान सप्त स्वर सांचे गति बहु भांति मिलावति ।
कृष्णदास प्रभु गिरिधर नागर छैल छबीले सुविधि
रिझावति ॥

२

तेरे वदनकी शोभा तोहि पै कहत बने जो
मुख जीभ होय लख कोटिक ।
चिबुक सांवल विन्दु छैल चतुर विधाता देखें
जिनको उदियो चखोड़ा टोटिक ॥
तिलक आधो ललाट छूटो उरज सुलट शिथिल
अङ्ग अङ्ग भाव सलोटिक ।
कृष्णदास प्रभु गिरिधरण रसिक सङ्ग सुरति
हिंडोले प्यारी लिये निशि भोटिक ॥

३

रंगीले नयन तेरे हो कब देखौं गिरिधरन ।
अद्‌भुत सुख सुन्दरवर त्रिविध ताप हरन ॥

श्याम श्वेत अनियारे भाव विविध वरन।
मीन कमल खञ्जन अलि मृगज भए शरन॥
श्रीराधा रस लम्पट कुच सरोज चरन।
गायक कृष्णदास हेतु मुरली तान ढरन॥

विभास—एकताला

भृकुटि-धनुष-युत नयन-कुसुम-शर जिहिके लगत
सो परि परि तानि।
सहज हि त्रिभग छबीली सोई गोवर्द्धनधर
जाको मानि॥
हावभाव नव सुरति तरङ्गनि सब विधि कोक-
कला सोई जानि।
कृष्णदास प्रभु युवति-यूथ-पति करि लीन्हीं तिहि
अपनो लानि॥

विभास—यत्

इह मन कैसे के रहे राखो।
जीहि मधुव्रत हो गिरिधर प्रियको वदन-कमल-
रस चाखो॥
जो कछु मैं कीन्हीं परवश हो इतनो ही सत् साखो।
बारबार बहुविधि समुझायो ऊंचो नीचो भाखो॥
कोउ न मानति महा हठीली कही तुम्हारी आखो।
कहे कृष्णदास कहां लों वरणौं पांच चोर
मिलि काखो॥

२

वलि वलि जाऊं रसिक गिरिधर प्रिय नीके आए
प्रात तमचरके बोले।
इतो सङ्कोच कौन को हो मानत अधिक लजाय
रहे बिन बोले॥
सन्ध्या वदे बोल सांचे किये अनतसि मैं जानो
करि हैं यहां रहि आले।
कृष्णदास प्रभु ऐसो कौन तोसों कहि सके
त्रिजगमों त्रिभुवन तक ताले॥

३

आजु लाल अति राजे बैठे वानिक सी छाजे
सुधि न कछु री गात प्यारो प्रेम मगना।
लटपटी पाग अरु शिथिल चिकुर वाउ उपटत
उर-हार प्यारी कण्ठ लगना॥
आलस अरुण रस भरे री विलोचन भरि भरि
आवत प्रियसों अनुरगना।
गोविन्द प्रभु प्रिय जान शिरोमणि सुरति-रङ्गरस-
विभव-निशा जगना॥

४

एक रसना कहा कहौं सखी री ललनकी
प्रीति अमोली।
हंसनि खेलनि चितवनि जो छबीली
अमृत वचन मृदु बोली॥
अति रसभरे मदन मोहन प्रिय अपने कर-कमल
खोलत बन्द चोली।
गोविन्द प्रभुकी हों बहुत कहा कहूं री जे-जे
बातें कही मोसों अपुनो हृदय खोली॥

५

तू आज देख री मनमोहन ए बलबीर राजे।
मदनमोहन प्रिय मणिमन्दिरतें बैठे वानिकसी
आय छाजे॥
लटपटी पाग मरगजी माला लटपटात मधुप
मधु-काजे।
गोविन्द प्रभुके जु शिथिल अरुण दृग देखत
विथकित कोटि मदन लाजे॥

६

रसमसे नन्दलला रे आये हो उठि भोरे।
अरुण नयन बैन भूषण अटपटे देखियत अधरन
रङ्ग भारे॥
कैतव वाद कत करत गुसाईं तहां जाहु जाके हो
अति प्राण प्यारे।
गोविन्द प्रभु भले जु भले जानि पाए जैसे तन
श्याम तैसेइ मन कारे॥

७

मदनमोहन प्रिय भयो न भोर।

प्राची दिश् नहीं अरुण देखियत अरु सुनियत
नहीं वन खगरोर।
गृहीत कण्ठ परस्पर दम्पती विश्लेत कातर अति ज़ोर।
गोविन्द प्रभु प्रिय रसिकशिरोमणि प्यारीके
वचननि लियो चित चोर॥

८

लाल प्यारी अति विलचण वश किये री सुहाग।
विविध कुसुम सुवास शीतल विचित्र शय्या रची
जातें मदनमोहन निशा जाग॥
बैठे कुञ्जके द्वार तव पथ जोवत भरि भरि आवत
नयन विशाल तव अनुराग।
दूतीके वचन सुनि प्रेम व्याकुल भई मिली जाय
गोविन्द प्रभुको मेटा हृदय दाग॥

९

पक्क खजूर जम्बु बदरीफल लेहो काछिनि टेरी द्वार।
बालकयूथ सङ्ग बलमोहन चौकें करत विहार॥
सुन्दर कर जननी कैनो दियो धाये तब द्वौ कुमार।
हीरा रत्न सुपूरित भाजन ऐसे परम उदार॥
उदर अञ्जुलि लगाय खात खात चले मीठे
परम रसाल।
जूठी गुठली मारत गोविन्द को हंसत हंसावत ग्वाल॥

१०

तेरे वारनें जाऊं मह्वर-यशोदाके लाल।
काड़े उन भावत कैसे नीके लागत मधुरे
स्वर गावत मुरली बजावत परम रसाल॥
विभास राग जमायो मधुर मधुर गायो प्रात शुभकाल।
गोविन्द प्रभु प्रिय सुघर शिरोमणि अहो श्याम तमाल॥

११

जहां नयन लगत तहां सों खगत अङ्ग अङ्ग
माधुरी जु वरणि न जाई।
सुन्दर भाल भ्रू कपोल नासिका देखत रहे जु लुभाई॥
हंसत लालन सुख दशन जुन्हाई होति यह
छवि कहा कहौं देखि धों री माई।
गोविन्द प्रभुके जु सुन्दर वानिक पर वलि वलि
वलि वलि जाई॥

१२

तेरो मुख मानो जैसो री शरत्-शशि।
दशन-ज्योति जुन्हाई वचन शीतलताई अमृत
हास सुहाई बोलत नयन मसि॥
कस्तूरी तिलक भाल ऋतु कलङ्क छवि नचत्र माल
मणि मञ्जुलसि।
गोविन्द प्रभु नन्द सुवन चकोरवर पान करत
वर मन्मथ तापनसि॥

१३

इन्दु कुमुदिनी समेटो अरु चक्रवनि प्रिय भेंटी
मुकुलित अलि सरस कमल मुकुलित भए मलिन।
भयो प्रात मुक्ता गात सियरो अति सानो
लागी बोलन तमचर दीप-ज्योति भई मलिन॥
कैसो जै हौं रसिक राय नन्द-गोप दुहत गाय
जागी व्रजवासी मोहि जात देखि हैं गलिन।
गोविन्द प्रभु प्रेममगन दम्पती अति कण्ठ लगन
बढ़ाए कृपा फिरिके शशि पश्चिम सके चलिन॥

१४

नव निकुञ्ज महल रस दोऊ री राजत रङ्गभीने।
कुसुमित सेज भोर उठि बैठे आलस रस अंशनि
भुज दीने॥
गौर श्याम तन नील पीत पट सम्भ्रम पलटि वसन
तन लीने।
प्रिय विहारी प्रियासङ्ग सुरतिरङ्ग शुभग सिन्धु
ललितादिक दृग मीने॥

१५

बनी प्रिय राधा माधव केलि।
प्रात समय सखि नवनिकुञ्जमें बढ़ी परम रस वेलि॥
प्रियको मुरली अपने अधर धरि लीन्हीं तान नवेलि।
मोहन रीझि विवश ह्वै दीन्हीं हीराहार हमेलि॥
निरखि कमल मुख कहत भले जू भले सकल कला
प्रवेलि।

ऐसी कबहुं न मोपै बाजी कहैं कण्ठ भुजा उर मेलि ॥
ललिता निरखत ठाढ़ी ओट ह्वै रह्यो सुख
सागर झेलि ।
भाग सुहागै,कहत नहि आवै बढ्यो मन
आनन्द रेलि ॥

१८

अति ही कठिन कुच उच्च दोउ तुङ्गसिसे गाढ़े
उर लगायके मेटी काम हूक ।
खेलत में लर टूटी उर पर पीक परी उपमा
वरणनको भई मति मूक ॥
अधरामृत रस ऊपरतें अचवायो अङ्ग अङ्ग सुख
पायो गयो दुख दूक ।
छीतस्वामी गिरिधारी राजा लूट्यो मन्मथ
वृन्दावन कुञ्जनमें मैं हूं सुनी कूक ॥

१९

आज किशोर कुंवर कान्ह देखि री-देखि आव
गावत भावत नयनन चैन पावत सकल अङ्ग अङ्ग ।
मुरली कुणित शुभग वदन मदन मोचन लोल
लोचन मधुप टोल मधुर बोल गुञ्जित सङ्ग सङ्ग ॥
चरण नूपुर कटि सुमेखला रतिरण रस भरे री
श्याम कनक कपिस अम्बर समर करत मान भङ्ग ।
छीतस्वामी गिरिधरण हरण तनके मनके सन्ताप
मेटी री मेटी री विरह-वेदना प्रीति सों जीति अनङ्ग ॥

२०

यमुना-पुलिन शुभग वृन्दावन नवल लाल
गोवर्द्धनधारी ।
नवल निकुञ्ज नवल कुसुमित दल नवल नवल
वृषभानु दुलारी ॥
नवल हास नव नव छवि क्रीड़त नवल विलास
करत सुखकारी ।
नवल श्रीविट्ठलनाथ कृपाबल नन्ददास निरखत
बलिहारी ॥

२१

भोर ही छवि सों प्रवीण वीण बजावत ठाढ़ी ।
ललित राग अनुराग ललित गति ललिता
ललित रूप आढ़ो
लाड़िलो लाल महलमें पौढ़े तिन्हे जगाय रिझायवेओ
परम प्रीति गाढ़ी ॥

२२

केलि किये हरि नायकके सङ्ग भोर ही मज्जनको
उठि धाईं ।
नीलकी चोलीमें देह दोपे यमुना-जलमें जैसे
चन्द्रकी छाईं ॥
ले डुबकी अलकें बिथुरीं जलते छिटकीं मुख ऊपर
आईं ।
दोउ कर बार सुधारि लिये निकस्यो शशि फोरि
पङ्हार की ताईं ॥

२३

तैं निशा लाल सों रति मानी ।
पग डगमग मग न परत सूधे मैं तब हीं जानी
शिथिल वसन कवरी केश राजत आनन सुदेश
बोलत कछु लटपटात बानी ॥
यह छवि मो मन भाई मिटी है चपलताई पीक
लीक अधरन लपटानी ।
मदन-मोहन नव किशोर रिझये श्यामा प्यारी
धन्य धन्य धन्य नव निकुञ्जरानी ॥

२४

प्रात समय नव निकुञ्जके द्वारे ललिता ललित
बजाई वीना ।
पौढ़े सुनत श्याम श्रीश्यामा दम्पती चतुर नवीन नवीना ॥
अति अनुराग सुहाग लाड़िली कोटि कलान
प्रवीण प्रवीना ।
विहारीदास बलि बलि जोरी पर तन-मन-धन
न्यौछावर कीना ॥

२५

जागत ही जागत गई निशा बीति हो देखि
सखी सुख दैन ।

अपने अपने सुखसे हर्षत कर्षत सखी
भये मग मैन ॥
बिथुरी अलक पलक आलस बलित नयन बैन।
चारो पहर बिहरत यों सखी भोर भयो
बिहारनिदासके हास टरैं उर ऐन ॥

२६

लाड़तो लाड़िली नव रङ्ग अपने लाल बिहारीके सङ्ग।
अलसाने मैं लाने प्राण-प्रिया-पति बिपरीत रति सुख
यों दे अङ्ग अङ्ग ॥
बिगलित कच-कुसुम शिथिल पाग मरगजो मङ्ग।
बिहारनिदासिकी स्वामिनी श्याम हि देख
सखी सुख प्रेमकी परनि ढरनि रङ्ग अनङ्ग ॥

२७

रसिक लालके सङ्ग सङ्ग जागी री सुख चैन
सों रैन सगरी।
शोभित शीर्ष कुसुम शिथिल अलकैं तामैं कहूं
कहूं री मांग मोती बगरी ॥
अरुण नयन सलोल मोहन मधुर बोल रचो है
पीक कपोल प्रेम शुभगरी।
सुबश किये बिहारीदास बलि बलि प्यारी सुरति
निपुण नित सोहाग भाग-अनुराग अगरी ॥

२८

भोर हीं कर सों कर जोरें अङ्ग अङ्ग मोरें आलस
लेत जंभाई।
प्रियके अङ्ग निशङ्क सबै निशा हुलसि बिलसि
आनन्द मैं उनीदिये उठि आई ॥
अङ्गराग-अनुराग रह्यो फबि छबि बरणी नहि जाई।
अति सुख भरि भरि उमग बिहारनिदास सों
कहति ऐसे हों लाल लड़ाई ॥

२९

धन्य सुहाग अनुराग तेरो तूं सर्वोपरि राधे जू रानी।
नख-शिख अङ्ग अङ्ग बानो प्रियतम प्राण समानी
रसिक किशोर सुरति-सुखदानी ॥

को जाने बरणे बपुरो कबि अद्भुत छबि नहीं
जात बखानो।
बिहारी प्रियसों रति मानी मैं जानी सयानो
तोहि सब निशा सुखसों सिरानी ॥

३०

मुख पट ओट न करो पियारी।
काहेको झूठे ही झुक झुकति रसिकनी
जहत हैं रसिक बिहारी ॥
तू जो इतो हठ करति चतुर प्रिया रतिके चिह्न
देखिए निहारी।
नवलकिशोरैं मिलो किशोरी मान तजि
बिहारनिदास बलिहारी ॥

५४

करो कलेऊ बलराम-कृष्ण तुम कहति यशोदा मैया।
पाछे बत्स-ग्वाल सङ्ग लेके चलहु चरावन गैया ॥
पायस सिता घृत सुरभिन को हेत करि भोजन कीजै।
जग-जीवन व्रजराज लाड़िले जननी को सुख दीजै ॥
शीर्ष मुकुट कटि काछि काछिनी पीत बसन तन धारो।
लेहु लकुट मुरली कर मोहन मन्मथ दर्प निवारो ॥
मृग-मद-तिलक श्रवण कुण्डल मणि कौसुभ
कण्ठ बनावो।
परमानन्ददास को ठाकुर व्रजजन मोद बढ़ावो ॥

५५

प्रात समय उठि यशोमति-जननी गिरिधर-सुत को
उबटि न्हवावति।
करि शृङ्गार बसन-भूषण सजि फूलन रचि रचि
पाग बनावति ॥
छूटे बन्द वागो अति शोभित बिच बिच चोवा
अरगजा लावति।
सूथन लाल फुन्दना शोभित आजुको छबि
कछु कहत न आवति ॥
बिबिध कुसुमकी माला उर धरि श्रीकर मुरली
बेंत गहावति।
ले दर्पण देखे श्रीमुख को गोविन्द प्रभु चरणन
शिर नावति ॥

५६

शुभग शृङ्गार निरखि मोहन को ले दर्पण कर
कर पियहि दिखावे।
आपुन नेकु निहारिये वलि जाऊं आजुको छवि
कछु कहत न आवे॥
भूषण-वसन रहे ठांय ठांय फवि अङ्ग-अङ्ग
अद्भुत चित हि चोरावे।
रोम-रोम पुलकित तन सुन्दर फूलन रचि रुचि
पाग बनावे॥
अञ्चल फेरि करत न्योछावर तन-मन अति
अभिलाष बढ़ावे।
चतुर्भुज प्रभु-गिरिधर को रूप-सुधा पिवत नयन-
पुट तृप्ति न पावे॥

५७

आजु को शृङ्गार शुभग सांवरे गोपाल को कहत
न वनि आवे देखे ही बनि आवे।
भूषण सब भांति-भांति अङ्ग-अङ्ग अद्भुत कान्ति
लटपटो सुदेश पाग चित्तको चोरावे॥
मकर-कुण्डल तिलक भाल कस्तूरी अति रसाल
चितवनि लोचन विशाल कोटि काम लजावे।
कण्ठ श्रीवनमाल फेंटा कटि छोरनको चौरा
त्रिभुवन तियको धीरज मन न आवे॥
मेरे सङ्ग चल निहार कुञ्ज महल बैठे हरि
हितकी चित बात कहूं जो तेरे जिय भावे।
चतुर्भुज प्रभु-गिरिवर-धर कोटि मदनमूर्ति बड़
भागिनी ताहि गिनो जो जात ही लपटावे॥

५८

माई री आजु और का ही और दिन प्रति और ही
और देखिये रसिक गिरिराज-धरण।
नित प्रति नव छवि वरणै सो कौन कवि नित ही
शृङ्गार वागे वरण वरण॥
श्याम नयन अङ्ग-अङ्ग सोहत कोटि अनङ्ग
उपजो शोभा-तरङ्ग विश्वके मनहरण।
चतुर्भुज प्रभु-गिरिधर को रूप-सुधा नयन-पुट पान
कीजे जीजे रहिये सदा शरण॥

५९

मरगजो उर कुन्दमाल लोचन अलसात लाल
डगमगात चरण धरणी धरत रैन जागे।
शीर्ष ते खसि मोर-मुकुट भृकुटीके तट आयो
निकट शिथिल चपल चन्द्रिका सुबांधि पाट तागे॥
अतसी-कुसुम-तन सुभांति कहूं-कहूं कुङ्कुमको कान्ति
मदन नृपति पीक छाप युग कपोल लागे।
छीतस्वामी गिरिवर-धर सौरभ-रस-मत्त मधुप
सङ्गम गुण-गान करत फिरत आगे आगे॥

६०

कमल-नयन श्यामसुन्दर निशाके जागे हो
आलस भरे।
कर-नख उर राजत मानो अर्ध शशि धरे॥
लटपटो शिर पाग बनी खसत वदन तिलक टरे।
मरगजो उर कुसुम-माल भूषण अङ्ग-अङ्ग परे॥
सुरति-रङ्ग उमगि रहे रोम पुलकि होत खरे।
परमानन्द रसिक राय जाहीके भाग्य ताही के ढरे॥

६१

सांवरे भले हो रति-नागर।
अबके दुराये क्यों दुरत हो प्रीति जु भई उजागर॥
अधर कज्जल नयन रगमगे रचो कपोलनि पीक।
उर नख-रेखा प्रकट देखियत है परी मदनकी लीक॥
पलटि परे पट तिलक गयो मिटि जहां तहां
कङ्कण गाड़े।
परमानन्दस्वामी मधुकर गति भलो आपनो चाड़े॥

६२

आलस उनीदे नयन घूमत आवत मूंदे अधिक
नीके लागत अरुण वरन।
जागे हो सुन्दर श्याम रजनीके चारो याम
नेक हु न पाए मानो पलक परन॥
अधरन रङ्ग-रेखा और ही चित्र विशेष शिथिल
अङ्ग डगमगत चरन।

चतुर्भुज प्रभु कहां बसत पलटि आए सांचो कहो
गिरिराज-धरन ॥

६३

सांझ जु आवन कहि गए लाल भोर भये देखे।
गणत नक्षत्र नयन अकुलाने चारि प्रहर मानो
युग विशेखे ॥
कीन्हो भलो जु चिह्न मिटाये अधरनि रङ्ग अरु
उर नख-रेखे।
कृष्णदास प्रभु रसिक शिरोमणि गिरिधर
तुम्हरे कैसे लेखे ॥

६४

इतनो बार तुम कहां रहे।
सगरी रैन पथ चाहत चाहत नयन दहे ॥
कुम्भनदास प्रभु भए ताहीके वश जिन हौं गहे।
गिरिधर प्रिय भले बोल निबाहे सन्ध्या जु कहे ॥

६५

निशा के उनींदे मोहन नयन रसमसे।
काहे को लजात कहहुं धों कहा लालन कहां बसे ॥
डगत चलत आलस जंभात हो वदन रेखा
देखियत वसन खसे।
कुम्भनदास प्रभु गिरिधर तुम भुजबन्धन करि
उर हि लाय कसे ॥

६६

अरुण उनींदे आए हो रसमसे निशाके चिह्न
कहां दुराए।
नख पद प्राण प्यारीके मोहन कान्ति न छिपत
छिपाए ॥
कुङ्कुम रञ्जित उर वनमाला विलुलित मुख
मधुर जंभाए।
गिरिधर नव केलि कला रस प्रमुदित कृष्णदास
अलि गाए ॥

विभास—चर्चरी

आज सगरी निशा कहां जागी लाल कहो जु
सांचो शुभग सांवरे माधो।
घोष मन्थन शब्द प्राणपति गृह गृह रह्यो मोहन
स्वर अकट्ट भयो आधो ॥
कमल विकसित भए चक्रवाकी हंसी सुमुखि
पुलकित मुदित निज पति आराधो।
विश्वमोहन वदन निरखि नभ चन्द्रमा सगण
लज्जित भयो प्रेम गुण बाधो ॥
ललित सुन्दर राग चर्चरी ताल धरि मधुप गावत
सुयश पिकनिकर साधो।
कहे कृष्णदास गोवर्द्धन उद्धरण धीर प्रिय सुन्दरी
कृपण धन लाधो ॥

२

भली कीन्हीं लाल गिरिधर भोर आए बोल सांचे।
युवति वल्लभ विरध कहियत मोही सों सब
सुविध बांचे ॥
ताही पै जु सिधारिये पिय जाहीके तुम सुरङ्ग राचे।
यहां लौं केहिं सिख पठये मानहु मल्ली मते काचे ॥
अध सूचत श्वास स्थिर नहीं निशा प्रिया
रति बन्ध पाचे।
सुनहि कि न कृष्णदास नागरी ज्यों नचाए
त्यों हों नाचे ॥

३

अधिक नीके लागत रगमगी लाल आधी आधी
बतियां कहत मेरे प्यारे।
खेलत प्राण प्यारी सों मोहन निशा जागी नयन
रतनारे ॥
मरगज्यो मृगमद तिलक माथे पर कञ्चुक
जंभात अधर मसि कारे।
श्रम जल कण कपोल मण्डलवर सिन्धुर रङ्गराते
भौंह अनियारे ॥
आभरण वसन पलटि पहिरे अङ्ग नूपुर कुणित
चरण सोहें भारे।
सुन कृष्णदास रसिक गिरिधर प्रिय पाए हौं
नेक करहुं न न्यारे ॥

४

आवत बने सुन्दर नन्दनन्दन लटपटो पाग
डगमगति चाल।
अरुण कपोल अधर मसि-कारे चपल नयन
अलसौंधे लाल॥
रति जय लेख लिखि उर पद नख जीत्यौ
मदनगोपाल वत् अलिमाल।
तजि न सकत सौरभ-रस-लम्पट कुच कुङ्कुम
राञ्जत वनमाल॥
पलटि परे पट कहहु कहां ते शिथिल ग्रन्थि-
कटि किङ्किणि-जाल।
छूटे बन्द स्वेद-कणिका तन काहे को लजात विरह-
रिपुसाल॥
कृष्णदास प्रभु कितव दुरत हो मृगमद तिलक
मरगजो है भाल।
मोहनलाल गोवर्द्धनधारी प्रकट भयो प्रिय सुयश
विशाल॥

५

अरुण-उदय सुरति-केलि-रत लाल नीको बनो
नव निकुञ्जतें आवनो।
वनमाल रसमत्त सङ्ग अलिमण्डलो ता सौं
मिलि श्रीमुखहिं सरस गावनो॥
चरण नूपुर दीप्ति कटि क्षुद्र घण्टिका मधुर
मुखरित नील पट पर सुहावनो।
रगमगो ओढनी प्राण प्यारीको सुरति-अभिराम
तन देह विसरावनो॥
काम-जय-पत्र रस उरसि कामिनी लिख्यो नख
अङ्क पंक्ति रसिकन हृदय भावनो।
शिथिल अलकावली गलित वर्हापीड़ अरुण
लोचन भौंह मन्मथ नचावनो॥
श्रम-स्वेद-कण गात लाल गिरिधरणके निशा-कथा
सुमिरि मन रुचिर मुसकावनो।
मदन-रस रहसि गायक कृष्णदास कहां आपने
पीत पट दिये पहरावनो॥

६

काहे को दुरावत अपुनी केलि जाने हो हारं
प्रियतम नागर।
मोहि दिखावहु बांचि सुनावहु प्यारी करज
अङ्क तव उर जागर॥
निशाकी बातें सबै प्रकट भई कत लजात हो
कौतुक सागर।
कृष्णदास प्रभु गिरिधर चञ्चल युवति-तापहर
सुयश उजागर॥

७

सन्ध्या बदे बोल मनमोहन प्रात आय कीन्हें
सब सांच।
तनमन उहँ अभासत प्रियतम काहेको लाल
करत हो छ-पांच॥
इहा तो व्यथा सो जाने गिरिधर जाको लगी
विरहकी आंच।
सुन कृष्णदास जाउं बलि ताको जिन लीन्हें
सर्वस दे जांच॥

८

बने हो रसमसे आए प्रात।
आलस भरे वदनकी शोभा निरखि लजित जलजात॥
सन्ध्या बदे बाल किये सांचे काहे को लाल लजात।
कृष्णदास प्रभु गिरिधर चितवत युवति-मृगो तकि घात॥

९

बने हो रसमसे आए प्रात।
प्यारी नख-पद-रत्नावलि रस-रञ्जित नव रङ्ग गात॥
नखरेखा मोहनि युवतिन मन प्रमुदित पुलक जंभात।
कृष्णदास गिरिधर चित चञ्चल ज्यों तरवरको पात॥

१०

बलि बलि जाउं रसिक गिरिधर प्रिय नीके आए
तमचरके बोले।
इतो सङ्कोच कौन को मानत अधिक लजाय
रहे बिनु बोले॥

सन्ध्या बदे बोल सांच किये भनत बसे मैं जान्यों
करि हैं यहां रहि जोले।
कृष्णदास प्रभु ऐसो कौन तों सों कहि सकै
त्रिभङ्ग भौंह त्रिभुवन तक तोले॥

११

कौनके भोराए भोर आए हो भवन मेरे ऊंचो
दृष्टि क्यों न करो कौनतें लजाने हो।
जाहीके भवन भावे ताहीकें धारीये पायं काहे
ऐसी चाड़ परी कौन गहराने हो॥
भोरी भोरी बतियन भोरवन लागे मोहि श्रीगिरिधर
तुम अति हो सयाने हो।
कृष्णदास प्रभु छाड़ो अटपटी रहो हो लाल आज
हों तुम्हें देखि नीके पहिंचाने हो॥

१२

मदनमोहन प्रिय आए प्रात।
चार याम जागी प्यारी सङ्ग अरुण नयन आलस
जंभात॥
विन गुण मोतीमाल विराजत अञ्जन अधर
पीक लगी गात।
व्रजपति प्रिय तुम्हें ऐसो न बुझिये हम सों
फिरि तुम हंसि मुसकात॥

१३

मदनमोहन प्रिय जागी रैन।
आलस वश जंभात शिथिल अङ्ग अरुण तिहारे नयन॥
उपटे उरहार प्रकट देखियत प्यारी कण्ठ लागि
दियो सुख चैन।
व्रजपति प्रियकी चालचलनि पर कोटिक वारों मैन॥

१४

सुन्दर लाल गोवर्द्धनधारी कहां तुम रैन वसे
मेरे लाल।
आलस नयन बैन चल बोलत छूटे बन्द
डगमगती चाल॥
सारङ्ग अधर रुचिर वय नखक्षत कुच प्रसङ्ग
उर विलुलित माल।
करि रथहीन मीनपति जीत्यो चढ़ो धनुष
मानो भौंह विशाल॥
नहीं सत्‌भाव कहति प्रियतम सों फिरत हो
पात पात डाल डाल।
दासमुरारी प्रीति प्रौढ़नि सों देखति प्रकट
तुम्हारे हाल॥

१५

आए हो उठि भोर रसमसे नन्दललारे।
अरुण नयन बैन अटपटे भूषण देखियत अधरन
रङ्ग भारे॥
कितव विवाद करत हो गुसांई तहीं जाहु जाके
अति प्राण-प्यारे।
गोविन्द प्रभु भले जु भले जानि पाए जैसे तन
श्याम तैसे मन कारे॥

१६

निशाके उनीदे अति छवि लागत भरे प्यारी रङ्ग।
आलस वलित ललित लोचन युग भरि भरि
आवत कुञ्ज केलि सुधिके प्रेम उमङ्ग॥
शुभग उरसि पर विन गुण मोतीमाल कुङ्कुम
रचित उपटे हैं कुच उतङ्ग।
गोविन्द प्रभु कत करहु दुराव ए सब कहत
तुम्हारे अङ्ग अङ्ग॥

१७

प्रिय विनु जागत रैन गई।
अवधि बदि गए न आए बड़ी बेर भई॥
कछू कहत करत कछू कौन है सीख दई।
सांच नहीं एको अङ्ग कहा रीति लई॥
कैसे कीजे विश्वास भए हो विषई।
रसिक प्रियतम रावरी है क्षण क्षण गति नई॥

१८

ढीले ढीले पग धरत ढीली पाग ढरकि रही
ढीले से ढईसे ऐसे कौन पे ढहे हो।
गाढ़े जु पिय हियके पयि ऐसी गाढ़ी कौन तिय
गाढ़े गाढ़े भुजन सों गाढ़े कर गहे हो॥

लाल लाल लोचन उनींदे लागि लागि जात
साँचो कहो पिय यों तो लाल लहे हो।
नन्ददास प्रभु सांचो क्यों न बोलो भयो प्रात
कहो बात प्यारे तुम रात कहां रहे हो॥

१९

पाग खसी शिर पेंच लटपटो घूमत नयन उनींदे
उजागरि।
पीक कपोल अधर मसि दाग, कङ्कण पीठि
गड़यो अति सुन्दरि॥
जात उते इत पांव चले क्यों बोलत हो तुतरात
लिये टरि।
प्रात समय उठि कहति सूर प्रभु आवत हो
अनुराग भरे हरि॥

२०

चन्द्रावलि-धाम श्याम भोर भये आये।
अति रिस करि रही वाम रैन जागि चारि याम
देखे जो द्वार कान्ह ठाढ़े सुखदाये॥
मन्दिर तें रही निहारि मन हीं मन देति गारि
ऐसे कपटो कठोर आये निशा वीते।
रिस नहीं सकी संभारि बैठी चढ़ि द्वार बारि
ठाढ़े गिरिधारी निरखि छवि नख शिख होते॥
बिन गुण बनो हृदय माल ता बिच नख-क्षत रसाल
लोचन दोउ दर्शि लाल कैसी रुचि बाढ़ी।
जावक रङ्ग लग्यो भाल चन्दन भुज पर विशाल
पीक पलक अधर झलक वाम प्रीति गाढ़ी॥
क्यों आये कौन काज नाना करि अङ्ग साज
उलटे भूषण शृङ्गार निरखत हो जाने।
ताहीके जाहु श्याम जाके निशा वसे धाम
मेरे घर कहा काम सूरदास गाने॥

२१

मैं जानी पिय बात तुम्हारी।
भोर भये मेरे गृह आये ऐसे भोरे भारी॥
ह्यां आये मुख परसन मेरो हृदय टरत नहिं प्यारो।
कपट चतुराई दूरि करो जू अपयश लेत उतारो॥
कहा सांच में खोवत करतें झूठे कहा फदावत।
सूर श्याम नागर नागरि यह हम तुम्हरे मन भावत॥

२२

रैन जागी रति-रस पागी अनुरागी नव तिय सङ्ग।
मो सनमुख कत आये हो दहनि पिय रसमसे नयन
अटपटात बैननि तहह जाहु जाके रङ्ग॥
बिन गुण बनो माल पीक कपोलनि लाल जावक-
तिलक कीन्हे रस वश अङ्ग।
सूरदास प्रभु तुम रजनी विहाय आये प्रात भये
मेरे जीति अनङ्ग॥

२३

माई आजु लाल लटपटात आये अनुरागी।
शोभित भूषण अङ्ग अङ्ग आलस भरे रैन उनींदे जागी॥
लटपटो शिर पेंच पाग छूटे बन्दनि बागी।
सूर श्याम रसिक राय रस-वश कीन्हे सुभाव
जागी जहां सोई तिया बड़ भागी॥

२४

मङ्गलकरण हरण मन आरति वारति
मङ्गल आरती बाला।
रजनी-रस पागी अनुरागी जागी प्रात गात अलसात
शिथिल वसन अरु मरगजी माला॥
बैठे कुञ्ज महल सिंहासन श्रीवृषभानु कुंवरि
नन्दलाला।
व्रजजन मुदित ओट हो निरखत निमिष न लागत
नव निकुञ्ज-लता-द्रुम-जाला॥

२५

रत्न-जटित कनक थाल मध्य सोहैं दीपमाल
अगरादिक चन्दन अति बहु सुगन्ध माई।
घन-नन-घन घण्टा घोर झन-नन झालर टकोर
तनन ततत थेइ थेइ आरति है एकदाई॥
तन-नन-नन तान मान रागरङ्ग स्वर बंधान
गोपीजन गावैं गीत मङ्गल बधाई।

चतुर्भुज गिरिधरण लाल आरती बनी रसाल
वारत तन मन प्राण यशोदा नन्दराई ॥

२६

मङ्गल-आरती कीजे भोर।
मङ्गल जन्म करण गुण मङ्गल मङ्गल यशोदा
माखनचोर ॥
मङ्गल मुकुट वेणु वनमाला मङ्गल-रूप ललन
मन मोर।
जन भगवान् जगत्मय मङ्गल मङ्गल राधा
युगल किशोर ॥

२७

श्रीगोपाल जूकी आरती करतु हैं।
घण्टा ताल पखावज बाजे पञ्चमुखी बाती बरतु हैं ॥
शिव विरञ्चि नारद इन्द्रादिक सब मिलि गावत
वीणा बजतु हैं।
श्याम प्रभुको देखत सब तन-मन-धन
वारि वारि डरतु हैं ॥

२८

श्यामसुन्दर प्राण प्यारे क्षण क्षण जिनि होहु न्यारे।
नेककी ओट मीन ज्यों तलफत त्यों तलफत
नयननके तारे ॥
मृदु मुसकानि वङ्क अवलोकनि डगमग चलनि
सहजमें सुढारे।
चतुर्भुज प्रभु गिरिधर वामक पर कोटिक
मन्मथ वारे ॥

२९

वरणत तऊ न बने सुन सजनी रगमगो वेष बन्यो
गोपालको।
रसना जो होहि सदा कोटिक रूप गोवर्द्धनधारी
लालको ॥
श्याम धाम कमनीय वरण सखी मानो तरुण घन
तरु तमालको।
युवती-लता गात अरुझानी पान करत मधु
मधुप मालको ॥
नख शिख मदन कोटि लावण्य छवि भूषण वसन
नयन विशालको।
कृष्णदास प्रभु सुरति सुधानिधि ताप हरण तिय
विरह ज्वालको ॥

३०

श्यामा श्याम सेज उठि बैठे अरस परस्पर
करत विहार।
उन उनकी पहरी मोतिनकी माला उन उनको
पहिरो नौसरको हार ॥
लटपटी पेंच संवारति प्यारी अलकें संवारत
नन्दकुमार।
सूरदास प्रभु नागरि नागर विपरीत भूषण करत
शृङ्गार ॥

३१

चिरई चुहचुहानो चन्द्रकी ज्योति परानी
रजनी विहानी प्राची पियरी प्रवानकी।
तारका दुरानी तम घटो तमचर बोले श्रवण
भनक परी राग ललितके तानकी ॥
भृङ्ग मिले भार्या बिछुरी जोरी कोक मिले
उतरी प्रतिञ्चा अब कामके कमानकी।
अथवत आये गृह बहुरि उदय भानु उठो प्राणनाथ
महाजनन मणि जानकी ॥
व्रज घर घर यही करत चबाव लोग बार बार
कहनि करनि डरनि धरनि धरनि पग आनकी।
सूरदास प्रभु नन्द सुवन सिधारो धाम सुनत
उठे छवि कृपाल कृपाके निधानकी ॥

३२

काहे न सेइये गोकुलनायक।
भक्तनको ठाकुर भगवान् सकल सुखनिको दायक ॥
ब्रह्मा महादेव इन्द्रादिक जाके आज्ञाकारी।
सुरतरु कामधेनु चिन्तामणि वरुण कुबेर भाण्डारी॥
औरो नृपति कह्यो सब मानें सन्मुख विनती कीजे।
तुम प्रभु अन्तर्यामी व्यापक द्वितिय साखि क्यों दीजे॥

जन्म कर्म अवतार रूप गुण नारदादि गुण गावै।
परमानन्ददास श्रीपति यश अधम भले बिसरावै॥

३३

बलिहारी पद-कमलकी जिन मह शत लक्षण।
ध्वज वज्राङ्कुश यव रेखा ध्यान करत विचक्षण॥
ते चिन्तत भय-ताप हरत शीतल सुखदायक।
नख-मणिकी चन्द्रिका ज्योति उज्वल व्रज-नायक॥
वृन्दावन गोसङ्ग फिरत भूतल-कृत पावन।
गङ्गादिक तीर्थ प्रसाद भक्तन मन भावन॥
भक्तधाम कमला निवास माया गुण वादक।
परमानन्द ते धन्य जन्म जे सगुण अराधक॥

३४

माई हौं आनन्द गुण गाऊं।
गोकुलकी चिन्तामणि माधव जो मांगों सो पाऊं॥
जबतें कमल-नयन व्रज आए सकल-सम्पदा बाढ़ी।
नन्दरायके द्वारे देखो अष्ट महासिद्धि ठाढ़ी॥
फूल्यो फल्यो सकल वृन्दावन कामधेनु दुहि लीजै।
मांगे मेह इन्द्र वर्षावै कृष्ण कृपा सुख जीजै॥
कहति यशोदा सखियन आगे हरि उत्कर्ष जनावै।
परमानन्ददास को ठाकुर मुरली मनोहर भावै॥

३५

बिलगु जिन मनो री कोउ हरिको।
भोर ही आवत नाच नचावत खात दह्यो घर घरको॥
प्यारो प्राण दीजै जो पइये नागर नन्द-महरको।
कुम्भनदास प्रभु गोवर्द्धनधर रसिक राधिका वरको॥

३६

सखी तेरे चपल नयन अरु बड़े बड़े तारे।
हरि मुख निरखि न मात पटनिमें निशदिन
रहत उघारे॥
जो आगे ते पन्थ रोकते न श्रवण तो ना जानो
कहां चले जाते अपटारे।
कुम्भनदास प्रभु गिरिधरण रसिक ए कृपारस
सींचे अति बाढ़े भारे॥

३७

तेरे मुखकी निकाई मोपे वरणि न जाई।
अङ्ग अङ्ग छवि छाई नयनन लागी सुहाई
ऐसी रचि पचि विधि विधिकै बनाई॥
भौंहनकी कुटिलाई नयनन अरुणताई नासिका
सुमन बनी अधर सुधाई।
धीधौ प्रभुके मन ऐसी भाई कहत न कछु बनि आई
और मोहिंको सोहैं तेरियै दोहाई॥

३८

कोऊ मैया बेर बेचन आई।
सुनत हि टेर नन्दराव वरमें भीतर भवन बुलाई॥
सूखत धान परे आंगनमें कर अञ्जुली बनाई।
ठुमक ठुमक चलते अपने रंग गोपीजन बलि जाई॥
लियें उठाय रिझाय कर गोपी मुख चूमत न अघाई।
परमानन्द स्वामी आनन्दे बहुत बेर जब पाई॥

३९

नन्दकिशोर पै री करन बांहनी न पाऊं।
गोरसके मिस रस ही ढूंढत मोहत मोहन मीठो
तानन कैसेके दधि छिपाऊं॥
गोरस मेरो घर हि बिकै है काहेको वृन्दावन जाऊं।
आशकरण प्रभु मोहन नागर यशमति जाय सुनाऊं॥

४०

भोर ही दान मांगत मोसों गिरिधर।
प्रातहि उठिके चली जो नगर को बेचन दधि
मटुकी धरि शिर पर॥
जो तुम हमसो रारि करहुगे तो हम सब मिलि
उलटि जाहिं घर।
सांची कहो धौं बात व्रजपति प्रभु तुम कौन टेव
परी तिहारी मनहर॥

४१

हौं तकि लागि रही री माई।
जब गहते दधि ले निकसे तब मैं बांह गही री माई॥
हँसि दीन्हों मेरो मुख चितयो मीठो सी बात
कही री माई।

ठगि जु रही देटक सो लागो परि गई प्रीति
सही री माई ॥
बैठो नेकु जाउं बलिहारो लाऊं दौर दही री माई।
परमानन्द सयानी ग्वालिन सर्वस्व दे निवही री माई॥

४२

सुन्दर सांवरे मुरली अधर धरी।
मुनि सिद्ध समाधि टरी ॥
सुनि थके व्योम विमान।
सुरवधू चित्र समान ॥
ग्रह नखत तजत न रास।
वाहन बंधे धुनि पास ॥
मुनि आनन्द उमगि भरे।
चल थके अचल टरे ॥
चल अचल गति विपरीत।
सुनि वेणु कल पद गीत ॥
झरना झरे पाषान।
कन्दर्प मोहे गान ॥
सुनि खग मृग मौन धरो।
फल तिन छुको सुधि विसरो ॥
सुनि धेनु मृग थकि रहे।
तृण दन्त हू नहिं गहे ॥
बछरा न पीवे छीर।
पक्षी मनो मुनि धीर ॥
द्रुमवेली चपल भई।
नव अङ्कुर प्रकट नई ॥
तहां विटप चञ्चल पात।
हरि निकट को अकुलात ॥
अङ्कुरित पुलकित गात।
अनुराग नयन चुचात ॥
सुनि चञ्चल पवन थक्यो।
सरिता जल चलि न सक्यो ॥
सुनि थक्यो मन्द समीर।
उलट्यो जु यमुना नीर ॥
सुनि ध्वनि चलो व्रजनारि।
सुत देह गेह विसारि॥
मनमोहन रूप धरो।
तब काम को गर्व हरो ॥
नव नील तन घनश्याम।
नव पीत पट अभिराम ॥
नव मुकट नव वनदाम।
ए लावण्य कोटिक काम ॥
मन मोह्या मदनगोपाल।
तन श्यामल नयन विशाल ॥
श्रीमदनमोहन लाल।
संग नागरी नव बाल ॥
नव कुञ्ज यमुना कूल।
देखत सूरदासहिं फूल ॥

४३

चलोरी मुरली सुनिये कान्ह बजाई यमुना तीर।
तजि लोक लाज कुलको कानि गुरुजनकी भीर ॥
यमुना जल थकित भयो बछरा न पीवें छीर।
सुर विमान थकित भए थकित कोकिल कीर ॥
देहकी सुधि विसरि गई विसरा तनको चीर।
मात तात विसरि गए विसरो बालक बीर ॥
मुरली धुनि मधुर बाजे कैसेके धरों धीर।
सूरदास मदनमोहन जानत हो परपीर ॥

४४

गोकुल गांव रसीलो पिय को।
मोहन देखि मिटत दुख जिय को ॥
मोर मुकुट कुण्डल वनमाला।
या छवि सों ठाढ़े नन्दलाला ॥
कर मुरली पीताम्बर सोहे।
देखत रतिपति को मनमोहे ॥

चाल

देखत रतिपतिको मन मोहे चकितसो डोलत फिरे।
और कछु न सुहाय तनको बैठि उठत गिरत फिरे ॥

मोहि मदन बाण समान लागी पीर नेकु न आवहीं।
और कछू उपाय नाहीं श्याम वैद्य बुलावहीं ॥
मैंतो तजी लाज गुरजनकी।
अबै मोहि सुधि न परे या तनकी ॥
लोक कहै दह भई मति बौरी।
सुत-पति छाड़ि फिरत वन दौरी ॥

चाल

छाड़ि सुधि न संभार तनकी कृष्ण छवि हिरदे बसी।
मदनमोहन देखे भावे विहंसि कुञ्जन में धसी ॥
कुञ्जधाम किशोर ठाढ़े केसर खौर बनाइके।
चन्द्रिका पर वारि डारों वलि गई या भाइके ॥
भार परो दह घर पर वास।
नित उठि कौन करे यह सास ॥
इत नयन बांधो प्रण भारो।
निरखत रहत सदा गिरिधारो ॥

चाल

निरखिबो करै श्यामसुन्दर सहस कनक प्रकासरी।
कालिन्दीके तीर ठाढ़ो श्रवण सुनिये बांसरी ॥
मदन मूरति श्याम देखत मरी मनकी आसरी।
सूर हरिको सुयश गावत सदा चरण निवासरी ॥

४५

वृन्दावन नव निकुञ्ज ठाढ़े उठि भोर।
बांह जोरि वदन मोरि हंसत सुरत रतिको करि
कछु सकुचत पुनि लजात नयनन की कोर ॥
करत कबहुं वेणुनाद अधर प्याइ सुधास्वाद
पचीगण प्रमुदित मन बोलत चहुं ओर।
रसिक प्रियतम छवि निहारि उदयो जनु घन विचारि
बार बार उमगि उमगि नाचत हैं मोर ॥

४६

आजु प्रभात लता मन्दिरमें सुख वर्षत अति
निरखि युगलवर।
गौर श्याम अभिराम रस भरे लटकि लटकि
पग धरत अवनिपर ॥
कुच कुङ्कुम रञ्जित मालावलि सुरतिनाथ
श्रीश्याम दामधर।
प्रिया प्रेमके अङ्ग अलङ्कृत चित्रित चतुर शिरोमणि
निज कर ॥
दम्पति अति अनुराग मुदित कल गान करत
मन हरत परस्पर।
हित हरिवंश प्रशंस परायण गायन अलि
स्वर देत सुघर तर ॥

४७

जोई जोई प्यारो करे सोई सोई मोहि भावे
भावे मोहि जोई जोई सोई सोई करे प्यारो।
मोको ता भावतो ठौर प्यारेके नयनन में
प्यारो भयो चाहै मेरे नयनन को तारो ॥
मेरे तन मन प्राण हते प्रियतम प्रिय
अपने कोटिक प्राण प्रोतम मोसों हारो।
हित हरिवंश हंस हंसनो श्यामल गौर
कहो कौन करे जलतरङ्गनि न्यारो ॥

४८

प्रात समय दोउ रस लम्पट सुरति युद्ध जय युत
अति फूल।
श्रम वारिज घन विन्दु वदन पर भूषण अङ्ग अङ्ग
प्रतिकूल ॥
कछु रह्यो तिलक शिथिल अलकावलि वदन
कमल पर अलिकुल भूल।
हित हरिवंश मदन रंग रंगि रहे नयन वैन
कटि शिथिल दुकूल ॥

४९

आजु तो युवती तेरो वदन आनन्द भयो पियके
सङ्गमके सूचत सुख चयन।
आलस वलित बोल सुरङ्ग रंगे कपोल विथकित
अरुण उनींदे दोउ नयन ॥
रुचिर तिल लेस कोरति कुसुम केश शिर सोमन्त
मानो तैन।

करुणाकर उदार राखत कछु न सार असन
वसन लागत जब दैन ॥
काहे को दुरत भोर पलटे पीतम चोर वश किये
श्याम सखी शत मैन।
गलित उरसि माल शिथिल किङ्किणी जाल हित
हरिवंश लतागृह सैन ॥

५०

प्यारे बोली भामिनी आज नीकी यामिनी।
भेंटि नवीन मेघ सौदामिनी ॥
मोहन रसिक राय री माई तासे जो मान करे
ऐसी कौन कामिनी।
हित हरिवंश श्रवण सुनत प्यारी राधिका रमण
से मिली गजगामिनी ॥

५१

कौन चतुर युवती प्रिया जाहि मिलत लाल
चोर ह्वै रैन।
दुरत क्यों बदुरे सुन प्यारे रङ्गमें गहेल चैन में नैन ॥
उर नख चन्द्र बिराजे पट अटपटे से बैन।
हित हरिवंश सुरति राधापति प्रमथित मैन ॥

५२

प्रात समय उठि हरि नाम लीजे
गोविन्द नाम लीजे आनन्द सों सुखमें दिन जाय।
चक्रपाणि करुणामय केशव विघ्न विनासन
यशोदा माय ॥
कलि मल हरण तरण भवसागर भक्त चिन्तामणि
कामधेनु।
ऐसो मोरन नाम कृष्णको वन्दनीक पावन पदरेनु ॥
शिव विरिञ्चि इन्द्रादि देवता मुनिजन करत
नामकी आस।
भक्तवत्सल ऐसो नाम कल्पद्रुम वरदायक
परमानन्द-दास ॥

५३

छबीले लाल छवि तेरी मोहि नीको लागतु है हों
तन मन यौवन वारों रे।
भोर भए आए मेरे अङ्गना हों पलकन सों
पग भारों रे ॥
सुख दीजे रस लीजे रैन को हों चितते नेकु न टारों रे।
कृष्णजीवन लछिरामके प्रभु सङ्ग नव ऋतु शृङ्गार
सिंगारों रे ॥

५४

नयन मेरे घूंघट में न समात।
सुन्दर वदन नन्दनन्दन को निरखि निरखि न अघात ॥
अति रसलुब्ध महामधु-लम्पट जानत न एको बात।
कहा कहों दर्शन सुख माती ओट भये अकुलात ॥
बार बार वरजत हों हारो तज टेव नहिं जात।
सूर रसिक गिरिधर बिनु देखे अलप कलप शत जात॥

५५

अंखियन वाही टेव परी।
कहा करों वारिज मुख ऊपर लागत ज्यों भ्रमरो ॥
चितवत रहत चकोर चन्द्र लों नहीं बिसरत
एक घरी।
यद्यपि हटकि हटकि हों राखति त्यों त्यों होति खरी॥
चुभि जु रही वा रूप जलदमें प्रेम पीयूष भरी।
सूरदास गिरिधर तन परशत लूटत निधि सगरी ॥

५६

राधे वसन श्याम तन चीन्हीं।
सारङ्ग वदन विलास विलोचन हरि सारङ्ग जानि
रति कीन्हीं ॥
सुधापान करिके नीकी विधि रह्यो शेष शशि
मुद्रा दीन्हीं।
सूर सुवेश आहि रतिनागर भुज आकर्षि
वाम कर लीन्हीं ॥

५७

राधे तू अति रङ्गभरी।
मेरे जान मिली मोहन सों अञ्चल पीक परी ॥
छूटी लट टूटी नकवेसरि मोतिनकी दुलरी।
मैं जानो तू फ़ौज मदनकी लूटि लई सगरी ॥

अरुण नयन मुख शरत् निशाका सत् कुसुम
गलित कबरी ।
सूरदास प्रभु नगधरके सङ्ग सुरति समुद्र तरी ॥

५८

श्याम श्यामा सों अति रति कीनी ।
श्रमजल बिन्दु वदन यों राजत मनो शशि पर
मोतिन लर दीनी ॥
मुक्तामाल टूटि यों लागति जनु सुरसरी
अधोगति लीनी ।
सूरदास मनहरण रसिकवर राधा सङ्ग सुरति
रस भीनी ॥

५९

श्यामा श्याम सेज उठि बैठे अरस परस दोउ
करत शृङ्गार ।
इन पहिरो वाको मोतिन माला उन पहरो
वाको नौसर हार ॥
पंच संवारि वृषभानु नन्दिनी अलक संवारत
नन्दकुमार ।
हंसि मुसकाय करत दोउ बातें वदन निहारत
बारम्बार ॥
लटपटी पाग मरगजी माला कहि न जात शोभा
सुखसार ।
श्रीभटके प्रभु युगलकी दूती मेरे आंगन करत विहार ॥

६०

सखी री और सुनहु एक बात ।
आजु गोपाल हमारे आए उठत प्रात ही प्रात ॥
कछुके नयन उनींदे मोहन अपने घरको जात ।
आगे हार नन्द हुते ठाढ़े ताते गए न सकात ॥
लटपटी पाग अटपटे भूषण आलस युक्त जंभात ।
मानो शाह दण्ड ले छाड़े दे दे चुहटी गात ॥
ऐसी भांति कहां हुते मोहन मैं बूझे मुसिकात ।
ताते कछु उत्तर नहिं आयो सूर श्याम सकुचात ॥

६१

सुन्दर घनश्याम लाल पङ्कजलोचन विशाल
आंगन व्रजरानी जूके ठुमक ठुमक धावे ।
पहुंची कर बनी चारु कण्ठमें विचित्र हार लटकन
लटकें सुढारु कहत न बनि आवे ॥
झनन झुनन धरे पाइ निरखि मुदित यशोदा माइ
किङ्किणी कटि नूपुर ध्वनि श्रवण सुख बढ़ावे ।
श्रीविट्ठल विहारी अङ्ग कोटि वारिके अनङ्ग ठाढ़ो
युवती अपार मनमें सचु पावे ॥

६२

प्रात समय आवत लालस भरे युगल किशोर
देखे कुञ्जनकी खोरी ।
लटपटी पाग छुटे बन्द प्रियके प्रियाकी वेणी
बिथुरी छूटी कच डोरी ॥
ललितादिक देखति जु नयन भरि अति अद्भुत
सुन्दर वर जोरी ।
विट्ठल विपुल पुहुप वर्षत तन तृण टूटत है
अब हो हो होरी ॥

६३

आज बनी लाड़िली प्रियतम सङ्ग आवति ।
मांथे भाजी लट छूटी प्रियके अंश भुजा पाछे
सखी सुघर विभास हिं गावति ॥
श्रमजल बिन्दु निशाके सुख सूचित मोहन वदनसों
वदन मिलावति ।
विपुल विपुल कल रसिक विहारीलाल आनन्द
समुद्र मथि मदन झलावति ॥

६४

आई भोर भये प्यारी छूटी लट बगरी ।
बांह जोरि लाल सङ्ग निशा किये कुञ्ज रङ्ग
स्ववश किये विहारी कुंवरि अगरी ॥
निशाके चिह्न फीके गौर श्याम तन छवि पदनख
पर वारों जेती तेरी नगरी ।

विट्ठल विपुल केलि मनहु कञ्चन वेलि अवझी
कुञ्जतमाल आवे कुञ्ज डगरी ॥

६५

प्यारी तेरो चाल चितवनि बांकी।
बांके वसन आभरण बांके वङ्क रेख उर आंकी ॥
वङ्क स्वभाव मिलन बांको प्रिया वङ्क कोर ही झांकी।
विट्ठल विपुल विहारी बांके मिले तातें तू
फिरत निशांको ॥

६६

ज्यों ही ज्यों ही तुम राखत हो त्यों ही त्यों ही
रहियत है हो हरि।
और अचरचे पाइ धरे सु तो कहो कौन के पेंड भरि ॥
यद्यपि हों अनभायो कियो चाहों कैसे करि
सकों जो तुम राखो पकरि।
हरिदासके स्वामी श्याम कुञ्जविहारी पिञ्जराके
जनावरलों तरफराइ रह्यो उड़िवेको कितो कुकरि ॥

६७

काहूको वश नाहीं तुम्हारी कृपातें सब होय
विहारी विहारनि।
और मिथ्या प्रपञ्च काहूको भाषिये सो तो है हारनि ॥
जाहि तुम सों हित ता सो तुम हित करो
सब सुख कारनि।
हरिदासके स्वामी श्याम कुञ्जविहारी
प्राणनके आधारनि ॥

६८

कबहुं कबहुं मन इत उत जात यातें कौन है
अधिक सुख।
बहुत भांतिनतें घर आनि राखो नाहिं तो
पावतो दुख ॥
कोटि काम लावण्य विहारी ताम मुहचहां सब
सुख लिये रहत रुख।
हरिदासके स्वामी श्याम कुञ्जविहारी दिन
देखत रहों विचित्र मुख ॥

६९

आइये जू आइये जिनि दिवाइये मो मन रिस।
शिथिल अङ्ग पग धरत डगमगे झूठे ही करत
मातेको मिस ॥
अब जु आये हो मेरो जो समोध करत तरसाए
प्राण सगरो निस।
गोविन्द प्रभु पिय जाय शिरोमणि ओसन कैसे
जात तिस ॥

७०

नवल निकुञ्ज महल रस दोऊ री राजत हैं रङ्गभीने।
कुसुमित सेज भोर उठि बैठे रस आलस
अंशनि भुज दीने ॥
गौर श्याम तन नील पीत पट सम्भ्रम पलटि वसन
तन लीने।
प्रिय विहारी प्रिया सङ्ग विलसे अति सुरति रङ्ग
शुभगसिन्धु ललितादिक दृग मीने ॥

७१

चञ्चल ले चली री चित चोर।
मोहन को मन यों वश कर लियो ज्यों चकरी
सङ्ग डोर ॥
जोलों न देखत तव मूर्ति तोलों पलकन लागत
निमिष न ओर।
नन्ददास प्रभु प्रेम मगन भये नागर नन्दकिशोर ॥

७२

प्रात समय जागी अनुरागी सोवत उठी री श्याम
जूकी सङ्गिया।
बार संवारति उठी री दक्षिण कर वाम भुजा बकुटी
भरि अङ्गिया ॥
भालमें सुहाग भारी कञ्चुकी की छवि न्यारी
पहरे कसूंभी सारी सोंधे रंगबगिया।
अग्र स्वामिनी लड़ाई बहुत कीन्हीं बड़ाई
फूली फूली फिरे सब रैन रङ्गरङ्गिया ॥

७३

हौं जु निभर्मी बैठो पिय मीचक मूंदे री
पाछे तें नयन।
अछन अछन पग धरत धरणिपर आवत जाने मयन॥
हौं इतने हो चौंकि परी मेरी आली मेरी छतिया
धीर धरय न।
जगन्नाथ कवि रायके प्रभु रीझि हंसे तब हौं हु
हंसी वह सुख कहत बनय न॥

७४

आवनि कुञ्जतें पोढ़ पारी।
पिय जंभात अरसात रसमसा ललन खवावत बीरी॥
सुरति शिथिल अङ्ग अङ्ग परस्पर अङ्क भुज
भरि लीन्हीं श्याम गसीरी।
विट्ठल विपिन विनोद विहारी नहीं ललितादिक नीरी॥

७५

श्यामके भुजन बीच राखि हैं सुरति सींच साई
सुकुमारी जागी तमचर ररतें।
हा हा कान्ह उदय भान अब हौं होय गो जान
धुकर धुकर छाती गुरुजन डरतें॥
मधुर वचन कहो प्यारे को भलो मनायो चुम्बन
अकोर देति निरवारि गरतें।
आंगनमें ठाढ़े आइ ललिता लेति बलाइ
सूर स्वामीनी राजे आनन्दके भरतें॥

७६

तेरे नयन लोने री जिन मोहे श्याम सलोने।
अति हो दीर्घ विशाल विलोल कारे भारे पिय
रस रिझये कोने॥
वदन ज्योति चन्द्र द्युति निर्मल कुच कठोर अति
ठोन बोने।
तानसेन प्रभु सौं रति मानी कञ्चन कसोटी कसोने॥

७७

हौं गई बछरा मिलावन श्यामने वा मारी।
धरणो मूर्छि परी सुन सजनी तन हु की सुधि बिसारी॥
सखी एक जब जल मुख धोयो क्रम क्रम अंचरा
संभारी।
सूरके प्रभु बरजो इन अंखियन ये सब हो तें न्यारी॥

७८

चले उठि कुञ्ज भवन तें भोर।
डगमगात लटकत लर छूटी पहरे पीत पटोर॥
अरुण नयन आलस युत घूमत विवि मुख
चन्द्र चकोर।
गिरि गिरि परत गलित कुसुमावली शिथिल शीर्ष
कच डोर॥
लपटित वसन रसन मणिभूषण कुण्डल सौं लट छोर।
परमानन्द मिलो गिरिधर सौं रससागर झकझोर॥

७९

गुजरी शशिवदनी सुन्दर यौवन वाली।
शिर कनक मटुकिया गो-रस बेचन चाली॥

छन्द

चली दधि बेचन किशोरी कुंवरि है गजगामिनी।
नखशिख रूप अनूप सुन्दर दशन द्युति मानो दामिनी॥
श्यामा पियारी कुल उज्यारी विमल कीरति जजरी।
यौवन वाली सरस सुन्दर चन्द्रवदनी गूजरी॥
वृन्दावन भीतर श्याम मनोहर घेरी।
हौं तुम्हें जान न देहों लेहों दान निबेरी॥

छन्द

लेहों दान निबेरि आपनो करौं नन्द दुहाइयां।
जाति चोरी बेचि नित प्रति आजु पकरन पाइयां॥
बोलि ग्वाल लुटाय दूं दधि करों जो भावे मना।
घेरी मनोहर श्यामसुन्दर ग्वालिनी वृन्दावना॥
छाड़हु मेरो अंचरा हट जिनि करहु गोपाला।
सुन्दर मनमोहन प्यारे अवार होत नन्दलाला॥

छन्द

नन्दलाल होत अवार प्रति छण सघन वनमें
अति डरौं।
मेरे सङ्गकी सब बेचि बगदीं कहा उत्तर घर करौं॥

कब कब तुम्हारो दान लागै वादि झगरो ठान हु।
बलि आउं मानो कह्यो मेरो लाल अंचरा छाड़ हु॥
अति चतुर ग्वालिनी अन्तर नेह बढ़ायो।
श्याम मनोहर जिय को प्यारो पायो॥

छन्द

पायो मनोहर श्यामसुन्दर सुरति सुख मानो रली।
नव नेह अति रस रङ्ग बाढ़्यो दान दे उठि घर चली॥
कहत श्रीहरिदास नागर कामिनी गुणसागरी।
जिन रसिक श्रीहरिराय मोहे अधिक चातुर नागरी॥

८०

दधि मथति ग्वालि गतिभेद सौं ठाढ़ी।
यौवन मदको झुकति नागलोक लौं वेणी करकत
कटि छवि बाढ़ी॥
तनसुख सारी घनवेलि को लहंगा कञ्चुको
रेशमको बनी उरोज गाढ़ी।
सूरको प्रभु तहां फिरि फिरि देखत मानो
सांचे भरि काढ़ी॥

८१

अति हो अरुण हरि नयन तिहारे।
मानहुं रति सौं भए रगमगे करत केलि पिय
पलक विसारे॥
मन्द मन्द डोलत शङ्कित ह्वै शोभित मध्य,
महा रतनारे।
मानहु उकसि कमल सम्पुटमें उड़ि न सकत
चञ्चल अलि बारे॥
छिलि मिलि तमगण रैन जनावत रतिरस घुगत
भ्रमत अनियारे।
मनहुं सकल युग जीति करन को काम वाण
खरसार संवारे॥
अटपटात अरसात युगल पुट कहुं घूमत कहुं
करत उघारे।
मनहु मत्त मर्कत मणि अङ्गण खेलत खञ्जरीट
चटकारे॥
बार बार अवलोकि कुरखियन कपट नेह मन
हरत हमारे।
सूर श्याम देखत सचुपावत दुख मोचन लोचन
रतनारे॥

८२

उठे प्रात तोतरात कहत तोतरी तोतरी बात
मांगत हैं दधि माखन लाइये यशोदा मात।
बाजत नूपुर सुहात नाचत त्रैलोक्यनाथ
देखत सब गोपी ग्वाल नयनन नाहीं अघात॥
नन्द सुवन सुखदायी चिरञ्जीवो री कन्हाई
जोवति सुख चाहि चाहि या निधि को माई।
बाल केलि देखि आई रोम रोम सचुपाई
श्रीवल्लभ हरखि निरखि लेत हैं बलाई॥

८३

कटि पीत पट मुख मुरली मुकट शीर्ष
कांख लकुट नटवरको चटक।
तिलक ताटङ्क कान कुण्डल कपोल वनमाला को
लटक तामें चटक मटक॥
वपु घनघटा तामें मोतीहार बग ठठा सुन्दर शुभग
पग पावरी खटक।
व्रजको भटक दधि चोरी को सटक ऐसो सिंह
मूर्ति पुनि मनको अटक॥

८४

जो लौं हरि आपुनपो न जनावे।
तो लौं सब सिद्धान्त स्मृति युत पढ़े सुने ते न पावे॥
सुनि विरिञ्चि नारायण पै नारद सौं कहि दीन्हों।
नारद कह्यो वेदव्यास सौं आपुन खोज न कीन्हों॥
वेदव्यास औषधको नाईं पढ़ि मन ताप नशायो।
तिन पै सुनि शुकदेव परीक्षित राजाको जु सुनायो॥
यद्यपि नृपति सुनी व्रजलीला दशम कह्यो शुकदेवा।
सर्वात्मा भाव नहिं उपज्यो तातै करो न सेवा॥
श्रीभागवत अमृत रस मथिके श्रीवल्लभ सर्वोत्तम।
करि आवर्ण दूरि व्रजजनके हाथ दिये पुरुषोत्तम॥

सखा सब शृङ्गार भोग रस श्रीवल्लभ प्रकटायो।
करि कृपा अपने जोवन पर जगजीवन स्वाद चखायो॥

८५

गोविन्द दधि न विलोवन देही।
बार बार पाय परति यशोदा कान्ह कलेज लेही॥
बांधि कटि पट क्षुद्र घण्टिका मुदित नन्दजू की राणी।
कञ्चन चीर हार उर मणिगण वलय घोष मृदु वाणी॥
एक-एक ते होय देव दैत्य सब कमठ मन्दराचल जानी।
देखत देव लक्ष्मी कम्पी जब गह्यो गोपाल मथानी॥
कृष्णचन्द्र व्रजराज रमापति भूतल भार उतारे।
परमानन्ददास को ठाकुर व्रज वसि जगत् उधारे॥

८६

जान्यौं जान्यौं री सयान तेरो प्राणेश्वर सौं
ते कियो मान भयो है विहान।
प्रिय को तेरो हि ध्यान मेरो शोक्ष सुन कान
जामें बसे प्रान ता सा कैसो धौं गुमान॥
सुन री मुरली गान आछी मोको मीठी तान
सङ्केत-स्थली रचो कुसुम-वितान।
सूरदास प्रभु जान सकल शिरोमणि मान
मदनमोहन तेरे सुखको निधान॥

८७

प्रिय हृदय राखत हैं निशि दिन आजु कहां तू
रात रह्यो री।
बिच बिच नाहीं नाहीं करत सब तियनमें तुम सो
कठिन कह्यो री॥
मो ग़रीब पर कीजे कृपा ऐसी मति तेरी किन हूं
धोई सह्यो री।
रसिक प्रियतम सो मिलि प्रभात अति रुचि
ता सो निबह्यो री॥

८८

वारो कन्हैया री मोहि भावे।
आछो मीठी तान गावे मुरली बजावे नयनन
मांझ रिझावे॥
निरखि परखि देखि जिय को भरम गयो सांवरो
मूर्ति मेरो सर्वस्व चुरावे।
अति ही अचगरो गैन को प्रभु प्यारो सब गोपिन
को नायक कहावे॥

८९

आली री पोरी पड भई है निकसि ठाढ़ी भई
हार कुच्च ऐनके।
रथ खींचो वदन निरखत ही जो मीं आन्यो चन्द्रमा
ताते धोखे रैनके॥
नयन कुरङ्ग जानि जियमें आयो सत् भाव
आधो विम्ब द्युति आधो हित रक्षा चैनके।
सूरदास सखि श्याम मोतीमाल तारागण और उपमा को
देखि मदनमोहन प्रिय सङ्ग सुख मैनके॥

अथ श्रीयमुनाके पद

तू यमुना गोपाल हि भावे।
यमुना यमुना नाम उच्चारे धर्मराज ताको न चलावे॥
जो यमुना को जानि महातम जो यमुना
जल पान करे।
जो यमुना अवगाहे निशिदिन चित्रगुप्त
लेखो न धरे॥
पद्मपुराण कथा इह पावन धरणी सुख वाराह कह्यो।
तीर्थ महात्म्य जानि जगत् गुरु इह प्रसाद
परमानन्द लह्यो॥

२

दोऊ कूल खम्भ तरङ्ग सीढ़ी मानो श्रीयमुना
जगत् वैकुण्ठ नसेनी।
अति अनुकूल कलोलनके भर लिये जात हरिके
चरणन सुख देनी॥
जनम जनमके दुष्कृत दूर करणी काटत कर्म
धर्म धार पेनी।
छीत स्वामी गिरिधरण पियारो सांवल गात
कमल दल नैनी॥

३

निरखत ही मन अति आनन्द भयो प्रात ही देखि
प्रभाकर कन्या।
जल परसत ही सकल अघ भाजे ज्यों हरि देखि
हरिणकी सन्या॥
और जीव का औरनकी गति मेरी गति ही
तुम ही अनन्या।
व्रजपतिकी तुम अति ही पियारी तुम सङ्गमते
सुरसुरि धन्या॥

४

मेरे कुल कर्म्म कलि मघ नाशन देखि प्रवाह
प्रभाकर कन्या।
वह देखो पाप जात जित तित बहे ज्यों मृगराज
देखि मृग सन्या॥
दे पयपान पुत्र लों पोषत जननी कृतार्थ
धन्यवह धन्या।
दियो चाहि गदाधर नृपे चरण शरण अति
प्रीति अनन्या॥

अथ श्रीगङ्गाजीके पद

आगे आगे रथ भगीरथ नृको चल्यो जात
पाछे पाछे आवति तरङ्ग रङ्ग भरी गङ्ग।
झलमलात अति उज्वल जलकी ज्योति अवनि
रवनि मानो शीर्ष भरे मोती मङ्ग॥
जाय परसे हैं भूप कबके भस्म रूप ठौर ठौर
जागि उठे होत सलिल सङ्ग।
नन्ददास मानो अग्निके यन्त्र छूटे ऐसे
सुरपुर चले धरे देव अङ्ग॥

विभास—चर्चरी

जय भगीरथ नन्दनी मुनिचय चकोर चन्द्रनी
नर नाग विबुध वन्दनी जय जह्नु बालिका।
विष्णुपद सरोज जासि ईश शीर्ष पर विभासि
त्रिपथ गाथ पुण्य पाथ पाप छालिका॥
विमल विपुल वहसि वारि शीतल त्रयताप हारि
भ्रमरवर विभङ्ग तर तरङ्ग मालिका।
निज जन पूजो पहार शोभित शशि धवल धार
भञ्जन भवभार भक्त कल्प थालिका॥
निज तटवासी विहङ्ग जलचर स्थल पशु पतङ्ग
कीट जड़ित ताप शिरस सरस पालिका।
तुलसी तव तीर तीर सुमिरत रघुवंश वीर विचरत
मति मेह गेह महिष कालिका॥

२

श्रीगङ्गा जगतारण को आई।
भगीरथ तपस्या कीन्हीं शिव ले शीर्ष चढ़ाई॥
पापी दुष्ट अजामिल गणिका पतित परम गति पाई।
परम पुनीत प्रीति ब्रह्मादिक वेदव्यास मिलि गाई॥
नाम लेत तुव ध्यान धरत है तारत वार न लाई।
विप्र गदाधर भरद्वाज कुल केवल गङ्गा सहाई॥

३

जो जन गङ्गा गङ्गा कहे।
जन्म जन्मके कोटि दुष्कृत सब छिन ही मांझ दहे॥
स्नान करत ते मन वाञ्छित फल तत्क्षण तुरत लहे।
व्रजपतिको प्यारी सङ्गमते बहु सुख देन चहे॥

श्रीवल्लभ गुणगान

प्रात समय श्रीवल्लभ सुतको श्रीविट्ठल प्रभुको
उठत ही रसना लीजिये नाम।
आनन्दकारी मङ्गलकारी अशुभ हरण जन पूरण काम॥
इहलोक परलोकके बन्धु को कहि सकत तिहारे
गुणग्राम।
नन्ददास प्रभु रसिक शिरोमणि राज करो
श्रीगोकुल सुखधाम॥

२

प्रात समय श्रीवल्लभ सुतको पुण्य पवित्र विमल
यश गाऊं।
सुन्दर शुभग वदन गिरिधर को निरखि निरखि
दृग दृगन सिराऊं॥
मोहन मधुर वचन श्रीमुखके श्रवण सुनि सुनि
हृदय वसाऊं।

तन मन प्राण निवेदि वेद विधि यह अपुनपो
हौं सुफल कराऊं ॥
रहौं सदा चरणनके आगे महाप्रसाद उच्छिष्ट पाऊं ।
नन्ददास यह मागत हौं श्रीवल्लभ कुलको
दास कहाऊं ॥

३

प्रात समय श्रीमुख देखन को सेवक जन ठाढ़े
सब द्वार ।
जय जय जय श्रीवल्लभ नन्दन दर्शन दीजे परम उदार ॥
सुन्दर श्याम सुभगता सीमा मेघ गभीर मधुर
गिरि धार ।
नयनन निरखत होत परम सुख श्रवण सुनाए
वचन सुढार ॥
श्रवण मङ्गल जगभवन मङ्गलरस पुरुषोत्तम
लीला अवतार ।
जन भगवान् जाय वलिहारी अगणित लीला
महिमा नहिं पार ॥

४

प्रात समय उठि के जो सदा श्रीवल्लभ नन्दनके
गुण गैये ।
फिरि कर जोरि रूप चिन्तन करि उन हींके
चरणन शिर नैये ॥
सब साधनको सार इहै पद बार बार समुझैये ।
कहे हरिदास मानि शिख मेरो श्रीविट्ठलनाथके
दास कहैये ॥

५

प्रात समय उठिके जो सदा श्रीवल्लभ नन्दनके
गुण गाऊं ।
श्रीगिरिधर गोविन्द जूको नाम ले श्रीबालकृष्ण
जूको शीर्ष नवाऊं ॥
श्रीगोकुलनाथ जूको प्रणाम करि रघुनाथ जू
देखे नयन सिराऊं ।
श्रीयदुनाथ जू सङ्ग खेलत घनश्याम जू इनकी
प्रीति हौं कहा सराऊं ॥
यह अवतार भक्त हित कारण जो गाऊं तो
परम पद पाऊं ।
विनती करि करि मांगत व्रजपति निशदिन
इनको दास कहाऊं ॥

६

प्रात समय सुमिरो श्रीवल्लभ श्रीविट्ठनाथ परम
हितकारी ।
भवदुःख जात भजन सुख पावत कलि मल हरण
प्रताप महारी ॥
आये छोड़ि शरण नहिं कब हूं बांह गहेकी
लाज विचारी ।
आन आश्रय छाड़ि भजो पद हारिकेश प्रभुकी
वलिहारी ॥

७

प्रात समय श्रीवल्लभ सुतको परम पुनीत विमल
यश गाऊं ।
अम्बुज वदन शुभग नयना अति श्रवणन ले
हिरदे बैठाऊं ॥
जब जन निकट रहत चरणन तर पुनि पुनि
निरखि निरखि सुख पाऊं ।
विष्णुदास प्रभु करो कृपा मोहि श्रीवल्लभनन्दन
दास कहाऊं ॥

८

विशद सुयश श्रीवल्लभ सुत को प्रात उठत
अनुदिन नव गाऊं ।
कलि मल हरण चित्त धरि राखूं उपजे परम
सुख दुःख बहाऊं ॥
भक्त भ्रमर औ भक्तिरस जाने माने मन सों तिन हू
को छाऊं ।
छीतस्वामी गिरिधारीके सुमिरण अष्ट महासिद्धि
नवनिधि पाऊं ॥

९

श्रीलक्ष्मण सुत कमल प्रफुल्लित प्रकटे श्रीवल्लभ
कुलके दिनेश ।

आनन्दे तिहुं पुरके सब जन आनन्दे शिव
सनक सुरेश ॥
श्रीभागवत विस्तार करण को निज जन सब को
अति सुख देन।
जन त्रैलोक्य जाय बलिहारी शीतल भए श्रीमुख
निरखत नयन ॥

१०

गायो न गोपाल मन लायो न रसाल लीला
सुनी न सुबोधिनी न साधु सङ्ग पायो है।
सेया न सवाद करि घरो अध घरो हरि
कबहुं न कृष्ण नाम रसना कहायो है ॥
वल्लभ श्रीविट्ठलेश प्रभुको शरण आय
दीन ह्वै के मूढ़ छण शीर्ष न नवायो है।
रसिक कहाय अब लाज हू न आवे ताहि
मानुष शरीर धरि कहा धौं कमायो है ॥

११

गायो न गोपाल मन लाय के निवारि लाज
पायो न प्रसाद साधुमण्डलीन जायके।
धायो न धमकि वृन्दाविपिनके कुञ्जनमें
रह्यो न शरण जाय विट्ठलेश रायके ॥
नाथ जू न देखि छक्यो छण हूं छबीलो छवि
सिंह पौरि पर्यो नाहीं शीर्ष हू नवायकें।
कहे हरिदास तोहि लाज हू न आवे जिय
जनम गंवायो न कमायो कछु आयके ॥

१२

रूपरस माधुरी भय्या सलोनो पिय मुख देखें
प्रभात बात कछू कछू रतिरो।
अरसात गात औ जंभात मिले जात दृग
उर भुज ग्रीवा छवि रस उभरतिरो ॥
कुण्डल कपोल अधर अरुण रहे लसि
अङ्ग अङ्ग रङ्ग सों तरङ्गता ढरतिरो।
प्यारे लाल वल्लभ रसिक पर तन मन
रीझि रीझि अंखियां न्योछावरि करतिरो ॥

१३

भोर ही श्रीवल्लभ वल्लभ कहये।
आनन्द परमानन्द श्रीकृष्ण मुख सुमिरे
अष्टसिद्धि पइये ॥
और सुमिरो श्रीविट्ठल विट्ठल श्रीगिरिधर गोविन्द
द्विजवर भूप।
श्रीबालकृष्ण गोकुलपति रघुपति यदुपति
नवघनश्याम स्वरूप ॥
पढ़ो सुसार श्रीवल्लभ वचनामृत जपो अष्टाक्षर
मन्त्र करि नेम।
अन्य श्रवण कीर्तन तजि निशिदिन सुनो सुबोधिनी
धरि जिय प्रेम ॥
और सेवो सदा नन्द यशोमति-सुत प्रेम भक्ति
सहित जिय जानि।
अन्याश्रय असमर्पित लेनो असद् अलाप
असद् सङ्ग हानि ॥
नयननि निरखो श्रीकालिन्दी और निरखो सुखद
व्रजधाम।
इह सम्पति श्रीवल्लभ ते पैये हरिजन नहीं
काहू सों काम ॥

१४

प्रात ही लीजे श्रीवल्लभ नाम।
श्रीविट्ठल श्रीगिरिधर गोविन्द श्रीबालकृष्ण सुखधाम ॥
श्रीगोकुलनाथ अनाथके तारण श्रीरघुनाथ
परिपूरण काम।
विष्णुदास सुमिरो तन-मन सों सुन्दर सुन्दर
श्रीघनश्याम ॥

१५

प्रात समय नन्दनन्दन श्यामा देखे मैं आवत कुञ्जगली।
नव घनश्याम तरुण दामिनी मिलि राजत रूप
अनूप अली ॥
लटपटी पाग शीर्ष कर मुरली लोचन घूमत
भांति भली।

शिथिलित चीर मरगजो अंगिया काम कामिनी
देखि छली ॥
चार याम निशि जागत बीती उर उमग्यो
अनुराग बली ।
कज्जल अधर नयन बीरी रङ्ग मदन नृपतिकी
चमू दली ॥
सूर वदन पङ्कज रस पीके अलक मधुपकी पांति चली।
प्रफुलित प्रीति परस्पर निरखति तरणि उदय
जैसे कमल कली ॥

१६

उनींदो आंखें रङ्ग भरी दुरत नहीं पट ओट ।
मीन खञ्जन मृग हीन भए हैं और कमलदल वारि
डारों लख कोट ॥
ढुरत मुरत झपकत अनियारी चञ्चल करत हैं चोट।
चतुर विहारी प्यारीकी छवि निरखत बांधत
सुखकी पोट ॥

१७

पल झपकि झपकि आवत उनींदी अंखियां भई ।
हरबरात उठे पट पलटि परे पह फाटन क्यों न दई।
नेक करो विश्राम वाम बोलिए मेरे ही धाम हौं
करों टहल जो तुम सों है चाप नई ।
सकुचो जिनि सांची मानिये चतुर विहारी
गिरिधारी पिय जे नई रिझवार रिझई ॥

१८

सपने हू न विछुरिये हो हरि सों मन यों वाछे ।
श्यामसुन्दर बहु नायक सुखदायक सबहिन की
मोहि कबहूं न पूछे री पाछे ॥
नन्दनन्दन जु अनत रस कीन्हीं काम जरावत री
सौति साल दूजे ताछे।
तानसेन प्रभुके विछुरे जरद भई मोहि निहोरन
आवे री जो कोऊ पाछे ॥

१९

प्रात समय उठि आये हो मेरे नन्दनन्दन आलस
भरे नीके ।
पीक कपोल अधर मसि सोहत विन गुण माल
विराजत हीके ॥
पाग लटपटी भाल महावर पर्ग परसी तुम काहू तीके।
छीतस्वामी गिरिधरण भले तुम और विराजत
वन्दन टीके ॥

२०

भोर भये नवकुञ्ज सदनते आवत लाल गोवर्द्धनधारी।
लटपटी पाग मरगजी माला शिथिल अङ्ग डगमग
गति न्यारी ॥
विन गुण माल विराजत उर पर नख छत द्वैज
चन्द्र अनुहारी।
छीतस्वामी जब चितए मोतन तब हौं निरखि
गई बलिहारी ॥

२१

भोर भए आये मेरे तुम आज कहां निशि
बसे नन्दसुत।
कहा कहों अङ्ग अङ्गकी शोभा पीक कपोल
नयन आलस युत ॥
कहा निहोरत हो मोको अब जिनि परसो
मोहि चले जाउ उत।
जानी बात तिहारे मनकी छीतस्वामी गिरिधरण
बड़े धुत ॥

२२

लला जिनि मेरी बांह गहो ।
मारग में लोग देखें दूरि ठाढ़े रहो ॥
मनमें है कौन बात सोई क्यों न कहो ।
ढीठो कहा देत ऐसो नेक लाज लहो ॥
कहेंगो जाय राय जू सो बाट रोकत हो ।
कैसे हम आवें जाहिं पनिघट पथ हो ॥
तुम हि तो कछु नही विचार लरकाई बश हो ।
रसिक प्रीतम छाड़ि देहु हंसत हैं सब हो ॥

२३

पैंजनी पकर मौन रही चुरी चुप कर
सुनिये न वैन ब्रजराज ब्रजनारीके।

सांझ होते सोए किधों रिसमें समोए कहूं
कालिदास को री जाने चरित्र बिहारी के ॥
बरषाके मनोरथ करण करण चारु
चरणके सङ्गी रङ्गी अति सुकुमारीके।
जानिये न देहु हा हा एजू महा मुखर है
मुखर हैं मन्द काहे नूपुर प्यारीके ॥

२४

शोध लेत ननद जेठानी देवरानी मिलि
सोइबेके मिसु न उसास लेत सास है।
कालिदास दोऊ रूप देख देख पाय तन
यों हो उन मानो काम केलि को बिलास है ॥
आली वनमाली को न ख्यालो पर एक दिन
देखे बिन कियो जात का मों उपहास है।
दूती सङ्ग रसिक मुरारि को पहुंचि रहे
नारि सुकुमारि जो बयार सङ्ग बास है ॥

२५

स्वामी को कहा है सब नख तन जाइ जाके
भीतर सुहाये भांति भांतिके बहुत है।
कालिदास लागि पुष्प पौनके झकोरन ते
आए चहूं ओरन ते छाय इत उत है ॥
जगत् जलधि मध्य जम्बू द्वीप रच्यो विधि
सोय सम काशी ताके गुण अद्भुत है।
पञ्च कोस भर जाको कोस भर भर सब
जवोन को पुञ्ज होत पलमें मुकत है ॥

२६

चूमों कर कमल ए अमल अनूप तेरे
रूपके निधान नेक मोतन निहार दे।
कहै कालिदास मेरे पास हंसि हेर हरि
धरि माथे मुकुट लकुट गहि डार दे ॥
कुंवर कन्हैया मुखचन्द्रको जुन्हैया नेक
मेरो ओर लोचन चकोरन विचारि दे।
मेरे कर मेहदी लगी है नन्दलाल मेरो
लट अटको है नेक बेसर सुधार दे ॥

२७

प्यारी तन भूमि तामें रूप मार सागर है
यौवन गभीर मुख शोभा को धरत है।
दीपत तरङ्ग नयन वारिज से शोभित हैं
उरग सो वेणी जिय देखत डरत है ॥
कहै कालिदास गाल गाड़न भ्रमर मध्य
लाल मन वाह तामें दौर पसरत है।
बेसरको मोती मानो कर है सिकन्दर को
बार बार डोलके मने सो करत है ॥

२८

प्यारी चलो कि न लालन पै ए री
लालन को मन ताप सिरावन।
तू को री है मैं तो दूती हों लालको
आई है क्यों इत ताको बोलावन ॥
ठाढ़े कहां हरि हैं यमुना तट
छोड़े कबे भई बेर मों आवन।
नीके हैं श्याम कहे सहजा कवि
पाई निकाई कहां मनभावन ॥

२९

द्वादश नयन एकादश से कुच
प्यारी कहां दश है हमते।
नव से बने भूपण आठ लसे नहि
सात कोऊ षट् है तुमते ॥
मणि पञ्च सो मध्य कटि चित चार
यथा बिनु बार तथा बिनुते।
त्रटिके रचि तीन दोऊ मति छोड़ि
कहा रहो एक सो है हठते ॥

३०

कोयला भई कोयल कुरङ्ग तन कारो कियो
कूट कूट केहरि कलङ्क लङ्क हदलो।
जर जर जम्बू नद अधरङ्ग विद्रुम भो
हिया फाट दाड़िम त्वचा भुजङ्ग बदलो ॥
ए री चन्द्रमुखी ते कलङ्की कियो चन्द्र अब
बोले व्रजचन्द्र वे किशोर आप अदलो।

छार शीर्ष डारे गजराज वे पुकार करे
　　पुण्डरीक वृद्योरी कपूर खायो कदली ॥
३१
नवल नवोढ़ा यह ओढ़नी न वोढ़ जाने
　　प्रिय पास पोढ़वेको सार कहा जानी है।
मेरे लायवेको लाज कीजे आज वलि जांव
　　आतुर न हूजे इह अब ही अयानी है॥
यह रस रीति कहा जानत है मेरे लाल
　　रस ही में रस ही में बातें कहे मानी है।
मैना सी पढ़ाई जब पहर अढ़ाई पर-
　　तीन में बढाई तब केहू केहू आनी है॥
३२
आज लौं अछूती छाती काहू के न रङ्ग राती
　　यौवनके मद माती मोठे मन रौनेको।
खञ्जन से नयन रातो चूनरी औ चुरी राती
　　देख देख सकुचाती बोल नाहि मौनेको॥
केतिक मनौतो सा मानो यह चन्द्रमुखी
　　है तो चित चोर नन्दलाल बड़े भौनेको।
झूठ नाहि बोलत यदुनाथ कौ सौं बार बार
　　या को ठग लाई हों वेव्याही विन गौनेको॥
३३
मेरी सौ जो करि मेरी सौ आंखन
　　जो ते विकोल ही जो करि गाढ़ो।
आए री आय चिते क्यों न देख
　　यहे चितचार चितौत है ठाढ़ो॥
ब्रह्म भने माई कान्हके भौ घर
　　बाहर वैरीको वारिद बाढ़ो।
यहे मुख देख कहे दुखदाई री
　　लाज करो ओर घूंघट काढ़ो॥
३४
तिय सांझ समय हरि आवन जानि
　　शृङ्गार संवारि महा सुख दे।
अति आतुर हार निहार अटार
　　विचार मनोभव चित्त मुदे॥
मणि वेद प्रकाश प्रभाकरनाथ
　　लखे वकवा नहि होत जुदे।
निश हू दिनको सुख पाय भले
　　चकई इमि चाहति चन्द्र उदे॥
३५
विरह अनल वरी खरी प्रेम मनकरी
　　चटपटी परी विन हरि अकुलात है।
सुध बुध हरी कुलकान लोक लाज टरी
　　नाथ चित धरी आश अति विललात है॥
घरी घरी दीरघ उसास ले उदासन री
　　लगी ठग मुरी खेद कम्प सब गात है।
नयन जल चलै ए री पावसकी झरी जैसे
　　रैन भरी घरी चली जात दिन रात है॥
३६
सुख नेह नहीं सुध देह नहीं
　　तजि गेह वहीं न रही अटकी।
टकि एक तके कार टेक विके
　　कन नैक लजै हटकी छटकी॥
चकि कै तकि कै छल ते छकि कै
　　थकि नौथ चिते सुखमा नटकी।
फटकी मन ते झटकी तन ते
　　भटकी अंखियां टटकी अटकी॥
३७
सुन्दर सरोवर में वांके हैं कमल किधों
　　फूल नरगिस कैसे नये नये जात हैं।
दौरे मधु छके मीन देखत दुरत जल
　　कैधों खेलें खञ्जन खरे से न जुगात हैं॥
कैधों मृगनाथ सब शीर्ष नाय नाय रहे
　　कैधों अलि गुञ्जमाल केतको सुहात हैं।
नाथ नयो ग्वारिनिसी आचका हीं देखि कान्ह
　　लाज सौं लजानि नयन लाज सौं लजात हैं॥
बारहमासा
सुफल फूल सोहै हरी वेलि सोहै
　　लपटाने द्रुम सो प्रफुल्लित जहां है।

भ्रमर मत्त बोले करें खग कलोले
सखी नाथ डोले रसिक रस मढ़ा है ॥
नहीं गरम शीतल पौन त्यों त्रिविध बल
अचल साज सुखके सुखी सब तहां है।
अहो नाथ मानो सुखद चैत्र जानो
धनुष ले मदन ढूंढ़ विरही कहां है॥

वैशाख

विमल रूप सर है अचल प्रेम थिर है
वरुण नाल कर नयन परमान लीजे।
कछु कपट लाजे रुचे पत्र राजे
वितै मौनलांवण्यका नीर जीजे॥
मुदित देखि माधव तरुण प्रात बांधव
सहित नाथ साधव सुमकरन्द पीजे।
तुम्हें तो पुहुपको इहै नेम एकै
मधुप काज्ञ मेरे दृगन वास कीजे॥

जेठ

तरुण के दवनमें अवनि के तपनमें
निकसि को भवनतें दिने रैन जानो।
जहां सदन शीतल तजें तिय न पिय ले
छुटें यन्त्र जल रस बरस मेघ मानो॥
सघन कुञ्जवन वन तरङ्ग जाग वन गण
सखी नाथ बनके बनो केलि ठानो।
तजो द्रोह उरतें वसो साथ कर नाथ
सुख जेठ के हो कहां लो बखानो॥

आषाढ

घटाश्याम सागर लहरि दौर बादर
गरज फेर धुरवा अनल बीज बोहै।
सुमन भूमि मणि है लसैं देव धन है
सो बोहित भरी छबि सुधा वृष्टि मोहै॥
करि मद गवन ऐनहि मकर दवन
काहू कहिये चलन डर न मारुत समो है।
सलिल जन्तु खग नेह गम्भीर पग नाथ
आषाढ़ मानो उदधि ह्वै लसो है॥

श्रावण

सुशोभैं अचल कन्दारा वारि कुञ्जे
सदन फूल फल चारु हरिये वसुन्धर।
बरस मेह बुन्दें छुटें यन्त्र जल त्यों
पुहुप पुष्पहर नीर सारङ्ग पुरन्दर॥
गरज खग भ्रमर नाद बाजे वधू इन्दु
वामा लसै ज्यों सुमन को धनुर्धर।
प्रिया ले तड़ित् साथ यों श्याम घननाथ
श्रावण बनो है मदन बाग़ सुन्दर॥

भादू

लसैं दन्त बकपंक्ति मारुत महावत
नमैं है सो खररगा चाप राजै।
रुधिर सो वलित अङ्ग सौदामिनी त्यों
तजै शुण्ड जल मध्य भरे मेह छाजै॥
गरज वीर धुरवा धुजा चित्त कांपै
देखि गढ़दार खग मैन सङ्ग्राम काजै।
बनो नाथ सुख सैन सज देखिये मोसों
भादों सघन कामहस्ती विराजै॥

आश्विन

सुमन श्वेत जे तें धरा मध्य ते ते
बिछाए किधौं भूमि हीरा लसै सो।
सुधा वृष्टि कर पूरकै सुरसरी फैल
पारे परो पत्ररूपा त्रिभे सो॥
किधों नाथ लै कर खरी सारदा जौन
अस्तुत लिख्यो ऐन क्षीरोद जैसो।
विमल चन्द्र आश्विन विमल चांदनी है
विमल रूप जैसो विमल साज तैसो॥

कातिक

गरम भौन यौवन सो अङ्ग अङ्ग सोहावन
सनै हो सगुण ज्योति सुखदायका।
चारु शिरपर बसै श्याम तम नायक अभिराम
सायक मदनके अलन पायका॥

बाट कटतें बुझे रात रसमें जगे
कोट सोचे भसमके करण लायका ।
नाथ नेह न घटे छवि प्रकाश न मिटे
दीप कार्तिक कि धौं यूथ नव नायिका ॥

मार्गशीर्ष

पावन सरस जे अपावन सलिल न्हात
पावन परे सङ्ग ले चारु सोहै ।
बसे कोक विरही लखे नायका वन्द
नायक कदाचित् विगसो लसो है ॥
बढ़े रैन ज्यों ज्यों टूढ़े शीत त्यों त्यों
सुसंयोग सुखमें बिना गन को है ।
बड़ो चाह करतें बड़ो बार लों नाथ
हिल मिल रह्यो नेम अगहन गह्यो है ॥

पौष

पौषमास तन व्यापत शीत ।
मिल हैं कब सांवरे मीत ॥
बिन प्रिय को जाड़ा नहिं जाय ।
ससक ससक सारी रैन विहाय ॥
हरि बिन मोहे नेक न सुहावे ।
विरह धूम अत ही मचावे ॥

माघ

छिप्यो शीतकर शीतकर और देख्यो
बली भीतिकरको कुहिर यो छयो है ।
कप्यो सूर यों सूरको तेज कर मन्द
डरके कारण शीघ्र नभ छिपि गयो है ॥
बसें घरनि मंदन सबे मारके शङ्क
तू लो अतूलोक वच तन दियो है ।
नहीं कम्प छू अति शिशिर माघ त्रास
अहो साथ हो नाथ यह प्रण लियो है ॥

फालगुन

बने वन सुमन अलि सघन घन चहूं यूथ
वन वन तिया दामिनी सी हसे ।
छविन दिशि उमड रङ्ग बरष मेघ पिचका
गरज गान खग आन उरमें वसे ॥
तिय गुलाल भरी इन्दु वामा छई वेल
तैसो पवन पथ पथि चलतखे ।
नाथ ऐसे समय कौन मग पग धरे
मास फालगुनको ए साज पावस लसे ॥

३८

आनन तड़ाग पर राजत गभीर नीर
मरल सेवार सम कूल केश छायो है ।
भृकुटी भ्रमर पात मानो वितरात जात
तें उर तरङ्ग आड़ अधिक सोहायो है ॥
मीन सेन वीशा नयन ताराखे करनफूल
ताको झुक झुक आवे मिसाल लिख पायो है ।
ललित निचो झिन बंच फरकत ऐसे
मानो मन्मथ घेर जालमें बझायो है ॥

३९

लागि मन मूठ और जउसी लगी है उर
औरे छू गई सुध रह्यो न शरीर है ।
है है गयो मोहि सो तो पूछ तब है है कोऊ
केतको कहै है न सुने है ले लगी रहे ॥
जाहि लागे प्रेत ताहि केतिक दुख देत याके
लागि जिअत याते अधिक अधीर है ।
एरी मेरो वीर मेरी छाती पर पीर तब ही
मिटेगो जो पै छाती पर पीर है ॥

श्रीकृष्णाय नमः

राग—तिताला

जागे हो रैन सब तुम नयन अरुण हमारे ।
तुम कियो मधुपान हमत हमारो मन काहे
तें ज नन्ददुलारे ॥
नखक्षत प्रिय अङ्ग पीर हमारे उर कारण कौन
पियारे ।
नन्ददास प्रभु न्याय श्याम घन बरसे अनत जाय
हम पर झूम झुमारे ॥

२

आलस उनींदे नयन लाल तिहारे कहां तुम रैन विताए।
पीक कपोल देखियत है प्रिय अधरनि अञ्जन लखाए॥
जावक भाल उर विन गुण माल हृदय नख चिह्न दिखाए।
नन्ददास प्रभु बोल निवाहे भोर होत उठि धाए॥

३

प्यारी तेरे आनन दृग आलस्य युत राजत रसमसे।
नव किशोर अङ्ग अङ्ग रैन रङ्ग रसे॥
शिथिल बसन रसन दशन अधरन क्षत लसे।
पीक छाप युग कपोल प्रिय मुख लगि हसे॥
मैं जाने पहिचाने सब विधि प्रियतम गुण ग्रसे।
प्रिय विहारी लाल ललित उरोजन बिच बसे॥

४

कहां तुम सांचो कहां ते जु आए भोर भए नन्दलाल।
पीक कपोलनि लागि रही है घूमत नयन विशाल॥
लटपटी पाग अटपटी बन्दिश उरसि मरगजी माल।
कृष्णदास प्रभु रसबस करि लीन्हों धन्य वही व्रजबाल॥

५

कौन पुण्य करी नारि ह्व अवतरी श्रीहरि दीन भई मान मांगि।
जिनको अविगति अमर जनन कहत है तेरे कमलावर कमल लागि॥
यज्ञ याग करी योग ध्यान धरी बहुत ए आदरी देह कष्टे।
तोहे ते हरि स्वपने न पेखिये प्रेम इष्टे॥
शेष सिंहासन सहज सोहिये सदा भुवन वैकुण्ठ तनु मन्मभावे।
तेह थी अधिक छे मन्दिर माहेरु प्रेम पीताम्बर पलङ्ग आवे॥
भक्तवत्सल तनु विरद पोत वहे एम कहे समर्थ वेदवाणी।
नरसैयानो स्वामी सुखतनो सागर कीधो करुणा सुनी दीन जाणी॥

६

आज उजागर अङ्ग आलस्य भरो माहेरे मन्दिर केम आव्या।
भुवन भूल्या वर भामिनी भोगिया साथे साहेलड़ी सैन लाव्या॥
पीत पट बिसारा नील अम्बर धरा अधर अञ्जन तनो रेख लागी।
धन्य ते पुण्य पूर्व तप करी कामिनी तुम्हारे साथ जो रैन जागी॥
अलस अलता तना रङ्ग ललता थया तिलक अर्ध रह्यो शुभग भाले।
श्रमजल केलि करीगोलं सोहे घन् अधर तनो धक लोचन विशाले॥
कारज कह्यो कांई कारण मन तनु भले पधारे प्रात पेहलां।
मन विना मलनूं ते नरसैयो एम कहे वलीने पधारजो काल बेलां॥

७

पलङ्गा या थरे कुसुम माला बड़े बांधि सबेङ्ग कर लाज लोपी।
जोऊं माहरे मन्दिर थी कौन मूका वसे शुरे करसे पेली रोक कोपी॥
तज्यो वनमालीनें अम्यो वन बेलड़ी नीर नहीं सींचो तोश्राने रोपी।
भ्रमर जायातना फूल मकरन्द मा हृदयकमल माहां रह्यो रे ओपी॥
प्रीति करो तम्यो प्रेमता पालसीं तन मन प्राण सङ्ग रहे रे सोंपी।

कहे नरसैयो ताहरी रोस जेम उतरे तेम
सुख सेन ए मलीरे गोपी ॥

८

ध्यान धरि ध्यान धरि नन्दजीना कुंवरनूं थको
अखिल आनन्द पाम्ये ।
अष्ट महासिद्धि ते द्वार ऊभी रहे देहना दूक्षत
ते दूर वाम्ये ॥
मोरना पुच्छनो मुकट मस्तक धर्‍यो मकराक्षत
कुण्डल श्रवण झलके ।
भीलवट तिलकते शुभग केसर तनूं कण्ठ मुक्ताहल
हार ललके ॥
पीताम्बर तनो पलवट कटितटे त्रिभङ्गी
उभला वेणु वाए ।
कदम ना द्रुमतले राधिका रस भर्‍यां हरि जोने
सङ्गे अलापि गाए ॥
वृन्दावन महा मुरलीको ध्वनि सुनि गोपिका
के रड़ा वृन्द आवे ।
नरसयाने मने आनन्द अति घनो पुष्प मुक्ताफल
लेइ वधावे ॥

९

रहत रजनी ज्यारे पाछलौ घट् घरो साधु पुरुषे
त्यारे सुइ नरि रेहेवुं ।
निद्राने परहरि सुमिर वा श्रीहरि एकतू एकतू
एम केहेवुं ॥
योगिया होय तेने योग संभालवो भोगिया होय
तेने भोग तजवो ।
वेदिया होय तेने वेद उच्चारवो वैष्णव होय तेनो
विष्णु जपवो ॥
शुक वो होय तेने सकल ग्रन्थ साधवो दातारे
दम्म धावन करवुं ।
पतिव्रता नारिने कन्तने पूछवुं बचन कहेते
शीर्ष धरवुं ॥
आपना धर्म थी कथा कहुं प्रीछवो मन शुद्ध
बुद्धि करो कपट मेहली ।
भणे नरसैयो हरिनो कृपा थका जाता आवा
रुड़ा दात देहली ॥

१०

आजुकी बानिक पर हो लाल हों वलि वलि गई ।
विगलित कच सुमन पाग ढरकि रही वाम भाग
अङ्ग अङ्ग अरसई ॥
अरुण नयन झपकि जात अरु जंभात बार बार
कपोलनि छवि छई ।
धन्य सुहाग भाग ताको गोविन्द मुरलो प्रभु
सङ्ग सब निश वितई ॥

११

मैया तेरो रो मोहन अति हो सयानो देत
अटपटी गारो ।
कुञ्जमहलमें अञ्चल फारो हंसि हंसि दे दे तारो ॥
गोरस ढोरे मनको जोरे माट दहाके फोरे ।
उठांउको डोरो कस बांधो चौदह भवन बन्द तोरे ॥
अधरपान परिरम्भण चुम्बन कहीं कहा लजानो ।
शुक नारद सों लीला अगोचर सूर कितिक वर वानो ॥

१२

तुमसों बोलिवेको नाहीं ।
घर घर गमन करत गिरिधर प्रिय चित नाहीं
एक ठाहीं ॥
कहा कहुं सुन्दर घन तुम सो जो होत मन माहीं ।
कृष्णदास प्यारोके वचन सुनि हृदय मांझ मुसकाहीं ॥

१३

नन्दजीनूं आंगन परम सोहामनुं अतिरलि आमनुं
कृष्णको धूं ।
व्यापि वैकण्ठ कैलाश ब्रह्मा सदन इन्द्रना लोक था
अधिक को धूं ॥
सकल तीर्थ जहां विट्ठल वासो वसे इन्द्र अज
ईश जहां देव सघला ।

भक्त बिना भूधरो वश्य नहीं कोयने एकतें
एकपें अधिक डगला ॥
मात उमाहसे नाथ सनमुख धसे एम विलसे
प्यारो प्रेम प्रीते ।
नरस्यानो स्वामी श्रीकृष्णजी बाललीला रमे
एह जु रीते ॥

१४

जिनि बोलो पिय मोसों आज ।
जहां बसे निशि नहीं सिधारो मोतें कहा है काज ॥
सगरी रैन मोहि सग जोवत गई दह्यो मदनकी दाज ।
छीतस्वामी गिरिधर दृग जोरत आवत नाहि न लाज ॥

१५

अरुण नयन देखियत हैं आज ।
बसे जहां निशि नहीं सिधारो रसिकनके सिरताज ।
मग जोवत मोहि रैन विहानी तुम्हें नहीं कछु लाज ।
छीतस्वामी सा कहति भामिनी यहां नहीं कुछ काज ॥

१६

हरिजूको बालक लीला भावति ।
माखन दूध दहीका चोरी माई यशोदा गावति ॥
शकट विभञ्ज पूतना शोषण तृणावर्त वध कीन्हों ।
ऊखल बन्धन जमल उधारन भक्तन को सुख दीन्हों ॥
वत्स चरावन मुरली बजावन यमुना काछ विहारी ।
परमानन्द दासको जीवनि वृन्दावन सञ्चारी ॥

१७

जागत जागत रैन विहानी ।
कहि गये सांझ आवन मेरे गृह बसे अनत
रति मानी ॥
उर बिच नख क्षत प्रकट देखियत यह शोभा
अति बानी ।
भाल महावर अधरनि अञ्जन पीक कपोल निशानी ॥
निशि समग्र जोवत बीती मोको आये प्रात
यह जानी ।
चतुर्भुज प्रभु गिरिधरण सिधारो तहां जो तुम्हरे
मनमानी ॥

१८

प्रियसुत मुग्ध विनोदे वद विपिने किं किं विहितं ।
पल्लवचय मतिवल्लभ मधुना कुत्र शिरसि निहितं ॥
गैरिक चित्र विचित्रित वदनं कुत्र कृतं ललितं ।
कचचय मतिसय मेचक रूपं वरहि तेन प्रेषित
पिञ्छ कलितं ॥
पायित मति घर्म निवारण कृत ये निर्मल नीरे ।
उपविष्ट विटप च्छाये सुत कुत्र गोपसहित मितो-
माया वद भुक्तं भवतावन तीरे ॥
चारित मति कोमल तृणवति देशे गोकुल मथ कुत्र
कण्टकनिचय मिथो खलु लग्नचरणं ॥
विलसित मिति वद कया लीलया भवता बालकुले ।
वृष्टि कुत्र मिलिते रथ धावित मति विपिने विपुले ॥
स्थेय मितो बलभद्र युतेन सदा भवतातिभयेन ।
रति विज्ञापित महरु मदीयं मानय बहु विनयेन ॥
कृपय सदा सुहृदावर सूनो गृह दासे हरिदासे ।
श्रीवल्लभ वर चरण कमल सेवन विरचित पटवासे ॥

१९

कुत्र गतं निशि गोकुल नायक अन्य हृदय हित
पञ्चम शायक ।
नैवं करण महो समुचित मिह व्रजयुवती जन
बहु सुखदायक ॥
वदसि विनय वचनानि नतानि विमन्ति हृदय
मतिमानं ।
चित्त मितर युवतीषु लग्नमिति नैव मानये तव
सम्मानं ॥
प्रकट मखिल मङ्गेषु दृश्यते संप्रति चिह्नचयं ।
कृत विरहित मथ कथं मानये नाथ वचन विनयं ॥
दर्शयसि शिथिल मुष्णीषं रूप मथो विकलं ।
चित्त मिदं निज दुःख कृतं भवता सुन्दर सकलं ॥
कुङ्कुम मृगमद गन्ध रेणु युत वनमाला हृदये ।
कथमेवं करणं घटने शृणु मदभि मखं सदये ॥

नक्षत्राणि मया गणितानि निखिल निशि रहसि
निकुञ्जे ।
अहमपि सुखीयता हताशाभूवसन्नि आभिर पुञ्जे ॥
जागरणारुण नयन युगं कुरु निर्मल मिह नीरेण ।
विहितं कथ मुनि युद्धं भवता वद युवती वीरेण ॥
श्रीवल्लभ पद कमल रेणु वल्लभ हरिदास वरापि
विपाके ॥

२० .

साय मिह सो जयति बालकं माता ।
अति मुग्ध मृदुल दुग्धोदनं निज मुखे सपदि
विदधातु मम सकल सुखदाता ॥

ध्रुव

प्रति कमले यदपि वचन मभियाचते तदपि तेन
खलु भोजनीयं पुरा ।
खेलनीयं ततो बालक रखिल गोकुल जनैरिति वदति
डिम्भ किमिति त्वरा ॥
विपिन चरितं तया किं मिति वस मत्पुरं दर्शति
प्रायशो गोपकुल पालकं ।
वीजयति दक्षिण करेण कमलालयं मार्जयति
वामतो वदन मपि शालकं ॥
मुख विगलितं पयोविन्दुचय मद्भुतं प्रोच्चति प्रबलतर
दन्त दृष्ट्या ।
भवति सुखिता परं निज सुनु दर्शने वदन लावण्य
पीयूष वृष्ट्या ॥
लोकसिद्धा मथो कथयति प्रिय कथा मतिस्मित
मुग्ध मुख दत्त नयना ।
नैव सहते परं भोजन विलम्बनं भावित स्वच्छ
पर्य्यङ्क शयना ॥
बालचरितानि ललितानि खलु गायति प्राण
सदनानि रदनानि दृष्ट्वा ।
शीत करोतीह रोमाञ्चति प्रति पदं हसति रोदिति
परं मनसि हृष्टा ॥

अङ्क सुपवेश कर युगल मनु धावयति मुखगतं
ताम्बूल मथ सुखे दत्वा ।
उत्सङ्गमारोग मृदुल शयने मुदा शाययति
वनखिन्न रूप मत्वा ॥
निज वदन चर्वितं पीयूष गर्भितं भुक्त शोषित
मथो यच्छ हरिदासके ।
वल्लभाधीश पदकमल सेवन विहित भाव भर
संजात भक्ति सुख याचके ॥

२१

उषसि वद गोकुलाधीश कुत आगतं ।
इतर युवती जनित चिह्न शत वलित वर मृदुल
देहेक्षणं सपदि मानसा गतं ॥
किमु गृहं विस्मृतं नाथ मनिमि स्थितं मद्गृहं
दुःखजन स्मरण मागतं ।
याहि निज भवन मति भाषणं त्यज मया शृणु दया-
रहित मम नैव सुरुषा गतं ॥
मान मुन्मूलयितु मुग्धे तो भवमि वद कथ
मुत्रि स्मारयसि विरह परिषागतं ।
अधिक मधिकं सपदि समुदयति मानसे दोष गणनं
निखिल नाथ कुपथागतं ॥
यत्र तव मानसं विषय कृत लालसं गच्छ तत्रैव यत्र
सुखमागतं ।
तन्मनोरथ मखिल माशु पूरय हरे विरह हर
दुःखभर महह विरहागतं ॥
परमहं वेद्मि ननु विस्मरा मीशनहि विस्मर त्वहह
गोकुलनृपहृद्यागतं ।
त्वमपिहि स्मारयितु मागतो गोकुलाधीश कर वै
किमुत कल्प ससुपागतं ॥
एत देवास्ति विज्ञापनं नाथ मतिष्ट हृदये सतत
मद्य तु यथागतं ।
याहि कुरु शयन मति जागरारुण तरे लोचने समय
परिताप मनसागतं ॥

इति वचन जातमति मानिनी वदन सञ्जात माकर्ण्य
तनु हृदय कमलागतं।
पूरयतु गोपिकाजन मनोरथ मखिल मद्भुताकार
गति शयित शरणागतं ॥
देहि वल्लभ चरण राजीव रेणुमपि विषयि जनसङ्ग
दुर्मति विरोधागतं।
धर्म रहितं महित मति दोषकारकं रहह हरिदास
मथ चरण शरणागतं ॥

२२

वन्दे वल्लभ वर तनुजं।
भक्ति शरण शरणी कृत साधन साधन रहित
सकल मनुजं ॥
सुन्दर रूप विबोधित भाव वशीकृत गोकुलनाथं।
निरुपम भाव विभावित चतुर नमं मम विट्ठलनाथं ॥
हरिसम्बधवती समुदाय विविध सम्बन्ध सहायं।
अतुल वचन तोषित तरुणीजन जीवन पतिमतिमायं॥
मनो वचो गोचर कृत विस्थापित निजगण महिमानं।
निज सेवक सेवित पदकमल युगाहित हृदयालानं॥
प्रकटी कृत व्रत जीव सुखालय रसमय रञ्जुल रूपं।
श्रीभागवत विवृति बोधन निज जनमति शोधन भूपं॥
निज पीयूष विजित विधु मण्डल मण्डित मदन
सरोजं।
अखिल मनोमोहन निज सुखमा विरहित
मान मनोजं ॥
मृगमद सम्भ सहज तिलक शोभित शोभगनिधिभालं।
कुञ्चित चिकुर समावृत वदन विनिर्जित
मधुकर मालं ॥
कृपयति समयि कदापि हृदाकिङ्कर किङ्कर हरिदासे।
भवतु परं गोपीपति चरण-कमल भावं पदवासे ॥

२३

भजे सखि गोकुलेशं।
नन्द भवन भूषणं नख भूषित हृदयेशं ॥

ध्रुव

मन्दहास फुल्ल नास रुचिर मुख सरोजं।
वदन चन्द्रकिरण कान्ति रहित मानमनोजं ॥
वदन कमल मधुप वदति राज दर्लक पुञ्जं।
वर्हमुकुट तट विलासि बहु विचित्र गुञ्जं ॥
युवती मुख कमल मधुप चञ्चल तर नयनं।
अनुपम निज निहित भाव सतत कृत मृगनयनं ॥
भ्रूतट धृतमाट विहित वर्त्तलमसिविन्दुं।
मुखजित पीयूष भरित चारु विलस दिन्दुं ॥

श्रीकृष्णाय नमः।

ललित—तिताला

जागहु जागहु हो गोपाल।
नाहिं न रहति सोइयत है प्रात परम शुचिकाल ॥
फिरि फिरि जात निरखि मुख छण छण सब
गोपनिके बाल।
बिन बिकसे मानो कमल कोषते ते मधुकरको माल ॥
जो तुम मोहि पत्याउ न सूर प्रभु सुन्दर
श्याम तमाल।
तो उठिये आपुन अवलोकिये तजि निद्रा नयन
विशाल ॥

२

प्रात समय आवत हरि राजत।
चन्द्र जड़ित कुण्डल सखि श्रवण नि ताको किरण
सूर तन लाजत ॥
सातइ राशि मिली द्वादशमें ता भूषण अवलङ्कृत
छाजत।
जलज तातत्य कण्ठ नाम धरि ताको पंक्ति मुकुट-
शिर साजत ॥
पृथ्वी दही तात ताके कर मुख समीप मधुर
धुनि बाजत।

सूरदास प्रभु सुनहु मूढ़ हो भगत नि वश अभगनते
भाजत ॥

३

आजु अति शोभित है तन श्याम ।
मानहु री जीते नन्दनन्दन मनसिज सों सङ्ग्राम ॥
मुकुलित कच न समात मुकुट रुचि रोष अरुण
दोउ नयन ।
श्रम सूचित गति भांति आलस्य वश बोलत
बनत न बैन ॥
नखचत श्रेणि प्रस्वेद गातते चन्दन गो कुछ छूटि ।
मदन सुभट के शर सुदेश मानो लगी कवचपट फूटि ॥
दशन अङ्ग सह पीक प्रकट भए सनमुख शुभग प्रहार ।
सूरदास प्रभु परम शूर मैं जाने नन्दकुमार ॥

४

आए आए सुरति रङ्ग रस माते ।
मानहु चण विश्राम निमित्त प्रिय श्रमित भए
हैं ताते ॥
डगमगात मग धरत परत पग उठत न वेगि तहांते ।
ज्यों गज मत्त चरण संकल कर गहि आनत ता ठाँते ॥
उर नख चत कङ्कण चत पाछे शोभित हैं रुचि राते ।
मदन सुभटके वाण लागि तनु निकसि गए उहि घांते ॥
सांचे करत बोल अपने हैं टरत न मर्यादाते ।
सूर श्याम कहि गए आइ हैं पगु धारे तेहि नाते ॥

५

उनींदे कान्ह आए री मेरे नयन भरे रसमाते ।
डगमग पाइ धरत धरणी पर वेणु बोलत अरुझाते ॥
सब अङ्ग शीतल श्रमजल भीने बारम्बार झपाते ।
कज्जल रेखा रही अधरन पर काहेको श्याम लजाते ॥
विन गुण माल विराजे उरपर नखचत नाहिं छिपाते ।
सूरदास प्रभु सांचो कहो तुम कौन त्रिया रङ्ग राते ॥

६

आजु श्यामाजूके नयनकी बांते सुनरो सखी मोपे
वरणि न जाई ।
सुधा किरण बिच युग शुभ खञ्जन किये पान मनो
सोवत अघाई ॥
चुम्बन राग रङ्गीले रसमसे कहा कहूं सुन्दरि
सुन्दरताई ।
मर्कत विद्रुम कमल कोष में ले जावकको रेखा बनाई ॥
आलस तिरछे चाहत बिच हो बिच कछुक विकसित
जब लेत जंभाई ।
मन्मथ जय करि हरि जीतन को दयो वाण भ्रू
धनुष चढ़ाई ॥
देखि लाल लोचन विथकित भए परम चतुरता
सब बिसराई ।
सूर श्याम रस रीझि रहे तहां तुम हम सहचरिको
कौन बड़ाई ॥

७

भोर हु भए प्रकट श्यामा जू तउ रजनी मन आनति ।
प्रिय अङ्ग रुचि लोचन पथ पूरित निशि अंधियारी
मानति ॥
अलिगण श्रेणी रटत नीरजनिपर सुनि रसना
रट लागति ।
पर न छत करणी माधव सों आनन्द शयन सुवानति ॥
सूरदास सहचरी सब प्रमुदित विरह यतन क र
भानति ।
दिन पुनि प्रकट विनोद रजनीके तरणि उद्योत न
मानति ॥

८

कहां ते लाए हो इन साथ ।
आलस्य भरे री जंभात जे अलि निपुण वसे तुम्हरे सङ्ग
मधुप गन्ध ले और न भावत गावत गुणगण गाथ ॥
ज्यों तुम ते सूधे हो बूझति तुम तो उलटे हो तरजत
हमपर हम जो कहा भरि लीन्हीं भाथ ।
ब्रजपति रसिक तुम वेज रसिक जिन किये
चतुर्भुज सुनि प्रिय गोकुलनाथ ॥

९

कहांते आए हो उठि प्रात अङ्ग अङ्ग हो अरसात ।
सब अङ्ग हो अरसात नयन अरुण रगमगे दोउ घूमत
आवत सुधि न कछु तन चिह्न बने सब गात ॥
लटपटो पाग मलगजी माला पोताम्बर उरपर जु
विराजत मन्दमन्द मुसकात ।
यह छवि निरखि निरखिकें व्रजजन हसति
परस्पर लेति बलैया फूलि अङ्ग न मात ॥

१०

आए आए हो तुम प्रियतम प्रात हो रैन अनत बसे ।
रजनी मुख अवधि बदो हमसों बोल तिहारे नसे ॥
अञ्जन अधर भाल जावक रङ्ग प्यारो पग शीर्ष घसे ।
अटपटे भूषण मलगजी माला आधे शिर पाग लसे ॥
आलस्य वश डगमगत चरण गति जित तित
जात खसे ।
व्रजपति प्रिय ललनाको वचन सुनि नगधर नेकु हसे ॥

११

आए आए हो तुम श्याम कहांते भोर हि भवन
हमारे ।
कहि गए हमसों बसे औरके सांचे बोल तिहारे ॥
सगरो रैन मोहि मग जोवत गई विरह व्यथा
भई भारे ।
व्रजपति प्रिय तुम हो बहु नायक तऊ मेरे
नयननके तारे ॥

१२

आए आए हो मनभावन कहां तें भोर हि नन्ददुलारे ।
तुम कियो रति सुख हमे दियो अति दुःख
सांचे हो बोल तिहारे ॥
तुम कियो मधुपान हमको तिहारो ध्यान
ऐसे कैसे बने प्राण प्यारे ।
अब तो सिधारो तहां रैन बसे हो जहां गोविन्द प्रभु
पीय हमारे ॥

१३

रङ्ग रसिक नन्दनन्दन रसिक भामिनी मृगनयन
कमल नयन नागर नागरी ।
गिरिधर कल हंस हसनी मानो गोपतरुणि दोउ
सम तूल गुणन सागर सागरी ॥
करत केलि वनविहार निरखि जोट लाजत मार
गावत मिलि वदन चारु ललित रागरी ।
खग मृग पशु सुनत नाद पिवत अधरसुधा स्वाद
कृष्णदास वदत वाद सुफल भागरी ॥

१४

प्यारी तेरे नयन रगमगे निश पिय सङ्ग जागे ।
अरुण वरण शोभित आलस्य भरे अतिशय
रति रस पागे ॥
पलक पीक भौंहें रमि रहीं आली मानो कमल परागे ।
कृष्णदास गिरिधरण प्रिय सङ्ग हसि हसि हनि
मुख लागे ॥

१५

नींद न परी रैन सिगरी मुंदरिया मेरी जु गई ।
याहीतें झटपटात उठि आई चटपटी जियमें
बहुत भई ॥
तुम्हरो कान्ह पनघट खेलत हो बूझहु महरि हांस
होय लई ।
विसरत नहीं नगीनो चोखो जिय ते टरत न
झलक नई ॥
चतुर्भुज प्रभु गिरिधर चलो मेरे घर देहों दधि
चाहो जितई ।
मेरो व जीवनि मोहि को देहा तव चरण को चेरो
हो हों युग वितई ॥

१६

कहि धों री नवेली कहूं ते देखे नन्दनन्दन ।
बूझो री मालती कहां ते पायो तन चन्दन ॥
कहि धों कुन्द कदम्ब वकुल चम्पक ताल तमाल ।
कहि धों कमल कहा कमलापति सुन्दर नयन
विशाल ॥
कहि धों री कुमुदिनी कदली कछु कहि कोविद
कण वीर ।

कहो तुलसी तुम सब जानत हो कहां घनश्याम
शरीर ॥
कहि धौं भृंगी मया करि हम पर कहि धौं मधु
पर शाल।
सूरदास प्रभुके सङ्गी तुम हो सब दीनदयाल ॥

१७

नवल लाल वृषभानु दुलारी आवत कुञ्ज भवनतें भोर।
इन तन बनो मलगजी सारी प्रिय उर माल रही
विनु डोर ॥
आलस्य वश अंश नि भुज धरि धरि आवत अति
छवि पावत।
मधुपमाल सौरभ वश गुञ्जत सुयश तिहारे गावत ॥
वृषभानु पुरातन गई लाड़िली नन्द सदन गए श्याम।
छीत स्वामी गिरिधरण रङ्गीले विलसे चारो याम ॥

१८

मेरे तुम आए भोर भए पिय रैन कहां गंवाई।
कौन नारिके वश परे मोहन सांचो कहो कि
न जानि परो चतुराई ॥
उर हि हार विनु डोर विराजत शिथिल अङ्ग सब
नखक्षत देत देखाई।
छीत स्वामी गिरिधर कहो मोसो रसिक शिरोमणि
जावक पाग रङ्गाई ॥

१९

राजत दोउ रतिरङ्ग भरे।
सहज प्रीति विपरीत निशा सब आलस्य सेज परे ॥
अति रणवीर परस्पर दोउ नेक हु कोउ न मुरे।
अङ्ग अङ्ग बल अपने अस्त्र नि सो रति सङ्ग्राम लरे ॥
मगन सुरभि रहे सेज खेतपर इत उत कोउ न डरे।
सूर श्याम श्यामा रति रणते एक पग पल न टरे ॥

२०

करि शृङ्गार दोउ अरसाने।
प्रथम बोल तमचर सुनि हर्षे पुनि पौढ़े दोउ
अरसाने ॥
रतिरण जूझि याम त्रय नोके सेज परे उठि पुनि
मुरझाने।
मानो सूर खेत सम लरिके गिरे उठत फिरि गिरत
लजाने ॥

२१

बोले तमचर चारो यामको गजर मारो पवन भयो
शीतल तमित गमिता नई।
प्राची अरुणानी भानु किरण उजारी नभ छिपे उड़गण
चन्द्रमा मलीनता लई ॥
मुकुले कमल वत्स बंधन विछोहो ग्वाल चरै
चली गाय दुजपैतो करको दई।
सूरदास राधिका सरस वाणी बोलि कहै जागो
प्राणप्यारे जू सवारे को समय भई ॥

२२

छोटो छोटो गोड़ियां अङ्गुरियां छोटो छबीलो नख
ज्योति मोती मानो कञ्ज दलनि पर।
ललित आंगन खेले ठुमुकु ठुमुकु डोले झुनुनु झुनुनु
बाजे पैंजनी मृदु मुखर ॥
किङ्किणी कलित कटि हाटक रत्न जड़ो मृदु कर
कमल नि पहुंचियां रुचिर वर।
पियरी पिछोरी झीनी और न उपमा भीनो बालक
दामिनी मानो ओढ़े ठाढ़ो वारिधर ॥
उर बघ नख कण्ठ कठुला झड़ूले बार वेणी लटकन
मसि विन्दु मुनि मनहर।
अञ्जन रञ्जित नयन चितवनि चित्त चोरै मुखशोभा
पर वारौं अमित असम शर।
चुटकी बजावत नचावत नन्दघरनि बालकेलि
गावति मलहावत प्रेमसों भर ॥
किलकि किलकि हंसे दुहुं दूध दंतुली लसै सूरदास
मन वसै तुतरे वचन वर ॥

२३

आई तू डगमगाति ऐंड़ाति जंभाति रगमगो
रङ्ग भरिके।

चन्द्र उदय मुख देखति ह्वै री कर दर्पण प्रतिबिम्ब
निहारि धां पीकलीक नयन छवि परिकै ॥
बिथुरे अलक सुथरे मुख ऊपर मनो सुधा पीवत
अलिमाल आनन्द हरिकै ।
सूरज प्रभु रसिक राय रस बश कीन्हीं बनाय सुख
दीन्हीं मन अघाय नवला नव रीझे मन ढरिकै ॥

२४

नवल निकुञ्ज नवल रस दोऊ राजत रङ्ग हि भीने ।
कुसुम नि सेज भोर उठि आवत आलस्य युत
अंशनि भुज दीने ॥
अरुण नयन कुच नखरेख विराजत श्रमजल वसन
पलटि तन लीने ।
सूरज प्रभु प्रिय प्यारी को मुख निरखत सखिन
सहित ललिता दृग कीने ॥

२५

दोउ वनते व्रजधाम गये ।
रति सङ्ग्राम जीति पिय प्यारी भूषण सजत नये ॥
वे व्रज गये आपु अपने गृह चितते कोउ न टारत ।
मनसा वाचा कर्मणा ए दोऊ एको पल न विसारत ॥
जैसे मीन नीर नहि त्यागत खण्डित ह्ठ पूरन ।
सूर श्याम श्यामा दोउ देखो इत उत कोउ न अधूरन ॥

२६

रास रमि अमित भई व्रजबाल ।
निशि सुख दै यमुना जल लै गये भोर भयो
तिहिं काल ॥
मन कामना भई परिपूरण रह्यो न एको साध ।
षोड़श सहस्र नारी सङ्ग मोहन कीन्हो सुख आगाध ॥
यमुना जल विहरत नन्दनन्दन सङ्ग मिली सकुमारि ।
सूर धन्य धरणी वृन्दावन रवितनया सुखकारि ॥

२७

राधे छिरकत छैल छबीली ।
कुच कुङ्कुम कञ्चुकि बन्द टूटे लटकि रही लट गीली ॥
चन्दन गिर ताटङ्क गण्डपर रत्न जड़ित मणि लीली ।
गति गयन्द मृगराज सुकटि पर शोभित किङ्किणी
ढीली ॥
मच्यो खेल यमुना जल अन्तर प्रेम मुदित
रस भीली ।
नन्दसूनु भुजग्रीव विराजित भाग सोहाग भरीली ॥
वर्षत सुमन देवगण हर्षित दुन्दुभि सरस बजीली ।
सूर श्याम श्यामा रस क्रीड़त यमुन तरङ्ग थकीली ॥

२८

प्यारी चितै रही मुख पियको ।
अञ्जन अधर कपोल नि वन्दन लाग्यो काहू त्रियको ॥
तुरत उठी दर्पण कर लीन्हे देखो वदन सुधारो ।
अपनो मुख उठि प्रात देखिकै तब तुम अनत सिधारो ॥
कज्जल वन्दन अधर कपोल नि सकुचे देखि कन्हाई ।
सूर श्याम नागरि मुख जोवत वचन कह्यो नहि जाई ॥

२९

क्यों मोहन दर्पण नहिं देखो ।
क्या धरणी पर नख नि करोवत क्यों मोतन नहिं
पेखो ॥
क्यों ठाढ़े बैठत क्यों नाहीं कहा परी हम चूक ।
पीताम्बर गहि कहो बैठिये रहे कह्यो ह्वै मूक ॥
उघरि गयो उरते उपरैना नख क्षत बिन गुण माल ।
सूर देखि लटपटी पाग पर जावकको छवि लाल ॥

३०

भोर ही श्यामा श्याम खरे ।
जलद नवीन मिलो मनो दामिनी वर्षि निशानि भरे ॥
शिथिल वसन तन नीलपीत द्युति आलस्य युत पहिरे ।
कञ्चुक बुन्द पर रति श्रमकणिका बादर वरण करे ॥
भूषण विविध भांति मिड़वारो रतिरस उमगि भरे ।
कज्जल अधर तमोल नयन रङ्ग अङ्ग अङ्ग झीलपरे ॥
प्रेमप्रवाह चली मनो सरिता टूटी माल गरे ।
शोभा अमित विलोकि सूर प्रभु क्यों सुखजात तरे ॥

२१

ऐसे हि ऐसे रैन बिहानी।
चन्द्र मलीन चिरैया बोली सुनो काककी बानी॥
वे लुबुधे अनृत हि काहु के मनको आश भुलानी।
कपटी कुटिल क्रूर कहा जाने श्याम नाम जिय आनी॥
कोकिल श्याम श्याम अलि देखो श्याम रङ्ग है पानी।
श्याम जलद अहि श्याम कहावत सूर श्याम सो बानी॥

२२

मैं जानी जहां रति मानी।
तुम आये हो मेरे ललना जब चिरियां चुहु चुहानी॥
मुखकी बात कहा कही ठानी बात नहीं पहिचानी।
इत पर अंखियां रसमसानी अरु पगिया लटपटानी॥
भाल जावक रङ्ग बनानी अधर अञ्जन प्रकटानी।
बिन गुण बनी माला सब अङ्ग अङ्ग उलटी निशानी॥
सूरदास प्रभु गुण निधानी अम्बर गतिकी जानी।
धन्य प्रिय तुम को भी सुखदानी सङ्ग जागत रैन
बिहानी॥

२३

ऐसे हि सुख सब रैन बिहानी।
भोर भये निज धाम चले दोउ मन मन नारि
सिहानी॥
प्यारी गई वृषभानु पुरातन श्याम जात नन्दधाम।
प्रमोदा महल द्वार हो ठाढ़ी उनि देखी वह बाम॥
प्रात चले बन ते ब्रज आये मन मन करति विचार।
सुनहु सूर सकुचत ठठुकत ता गृह गये नन्दकुमार॥

२४

बन तनते आये अति भोर।
राति रहे कहुं गाइन घेरत आये हो ज्यों चोर॥
अङ्ग अङ्ग उलटे आभूषण बन कुमें तुम पावत।
बड़ भागी तुम ते नहि कोई कृपा करत जहां आवत॥
औचक आइ गये घर मेरे दुर्लभ दर्शन दीन्हीं।
सूर श्याम निशि हो कहुं जागे भावति अङ्ग अङ्ग चीन्हीं॥

२५

आजु अति रैन उनीदे लाल।
तुम पीढ़ो मैं चरण पलोटौं जिय जिनि आनो ख्याल॥
सुमन सुगन्ध सेज है डासी देखति अङ्ग बेहाल।
मेरे कहे कान्ह कछु भोजन करौ न मदनगोपाल॥
निशि श्रम भयो पोर मोहि आवति सुनति परस्पर
बाल।
सूर श्याम सुनि वचन कपट प्रिय भरि लीन्हो अङ्क माल॥

२६

राधा हरिके गर्व भरी।
सखियन को आगम जब जान्यो बैठो रही खरी॥
उत ब्रजनारि सङ्ग जुरिके सब हंसति करति परिहास।
चलो न जाइ देखिये री वा राधाको उजुहास॥
कैसो वदन शृङ्गार कौन विधि अङ्ग दशा भई कैसी।
सूर श्याम सङ्ग निशि रसकी ये निधरक ह्वै वह बैसी॥

२७

श्रीकृष्ण कृपाल कृपानिधि दीनबन्धु दयाल।
दामोदर वनवारी मोहन गोपीनाथ गोपाल॥
राधारमण विहारी नटवर सुन्दर यशोमतिबाल।
माखन चोर गिरिधर मनहारी सुखकारी नन्दलाल॥
गोचारण गोविन्द गोपपति जिय भावन मञ्जुल ग्वाल।
छीतस्वामी सोई अब प्रकटे कलिमें वल्लभ लाल॥

२८

हरि सों तू बैठी दे कपोल कर।
मानत नाहि नयन नीर डारति उसकति छतियां
करत धर धर॥
चरणनि शीश नाइ मनाइ लइ ले ले पहपहे
निकुञ्ज घर।
तोरि गढ़ मान गोविन्द को प्रभु जाति रतिपतिरूप
सुखद भर॥

२९

पहरि केसरी सारी प्रिया प्रिय मुख चारखत।
देखत निज रूप नयन निभरि भरि अङ्ग अङ्ग परसत
अरु परखत॥
बोलत तुतरात लागत सुहावन सोंचे ब्रजजन
अमृत वर्षत।

गोविन्द प्रभु गति गयन्द चलत भावत सब नि जिय हंसि हर्षत ॥

४०

प्रात ही आये हो नन्दलाल।
जावक भाल अधर मसि अञ्जन पोक लगाये भाल ॥
लटपटी पाग उनींदे नयननि उरसि मलगजो माल।
चीत स्वामी गिरिधरण बनी छवि चलत मन्दगति चाल ॥

४१

मृदु कपोल लोल युगल कुण्डल कृत शोभं।
हीरक कृत चिवुक भूषण विरचित विक्षोभं ॥
कण्ठ शोभि मुक्ता मणि भूषण धृत ग्रीवं।
भाव भरतया वशीकृत युवती जन जीवं ॥
कटितट गत पीत वसन शोभित निज रूपं।
पद नख सुखमा विमान सुर नर मुनि भूपं ॥
विज्ञापन मेतदेव मानय मम वचनं।
श्रीवल्लभ चरण कमल कृपया कृत रचनं ॥

४२

प्रिय सखि विरहे विपिन विचरणं विरहि मभुज शरणं।
गोकुल पति पद भावता मति शयितशो करणं ॥

ध्रुवं।

विविध विटप युत लतावृन्द सन्दर्शन जनितानन्द।
शिशिरित निखिल शरीर पवन विचलित नव कुसुम मकरन्दं ॥
मुदिर मुदित मानस घननाद विलासि रव श्रवणं।
अद्भुत पक्षति युग दर्शन कृत हृदय दुःखय विहरणं ॥
फलित रसाल शाल शाखागत पिक कूजितक सुखं।
स्थल कमलाङ्कित शोभोपमित युवति जन सरस मुखं ॥
हरित रसालोकन चिन्तित हरिरूप नाम युगलं।
संवर्द्धित हृदयाहित राग गान कृति रचित गलं ॥
गगन विलसदति घन घनवृन्द विलोकन कृत सुखदानं।
कम्पित शाखागत मृदु पल्लव चलन विहित सन्मानं ॥

विविध स्थल विरचित लीला विज्ञापन बहुतर निपुणं।
प्रिय सन्निधि सुख निचय विचारण पटुमानस सपणं ॥
इत्थं दशायुतं हरिदासं दर्शय गहन विहारं।
हृदय निहित हरिवल्लभ वर पद नख विधुति मणिहारं ॥

४३

मानिनि भो मा सहसे किमिति वियोगं कुरु हरिणा सम्भोगं।
वारय तदधर पीयूषेण विषम चेतो भवरोगं ॥

ध्रुवं।

निज हस्तौ रचितातिमृदुल तर कुसुम रचित शयनेन।
प्रति पद मवलोकित पद विकृत चपल चकित नयनेन ॥
भावित शयन शयित भवती सन्दर्शन जनित सुखेन।
कृपयिष्यति दयितेति तोषभसन्तति हसित मुखेन ॥
पुनरपि तालवृन्द कृत पवन विशेष वशित हृदयेन।
श्रम विन्दु निकलयता वदन कमल मनसा सदयेन ॥
कूट लाल कतति नयन समागति रति जागरभितेन।
मार सरै रति परुष तरैरिह विरह दशनितेन ॥
मुख कमलाङ्कित गन्ध लोभ गुण भर गणित या सेन।
स्तन तट ललित हीर शोभा भर सतत स्मृत रासेन ॥
संवाहित सरसिज सुन्दर भावित पद कमल युगेन।
सकरुण हृदय कमल सम्पादित भाव वदेक सुगेन ॥
श्रीवल्लभ पद कमल विमल मति हरिदासे सदयेन।
मनसा सखि भावय निज भावं भाववतो विनयेन ॥

४४

हरि मनसर सरसिज नयने।
कुरु शयनं हरिणा सह सुन्दरि रचित कुसुम शयने ॥

ध्रुवं

विरह भाव समुदित हृदि ताप निवारय गीत गुणं।
प्रत्य वठा टागगिनि रूपम सुखमा परिभावन निपुणं ॥
चिर मवलोकित पद कमलाकृति तरु पल्लव निचयं।

चिन्हित चरण चमत्कृति चित्रित दृष्टि रचित
विलयं ॥
भाववशाशयं विहित विनोद विशेष निधान विचारं।
भावित रुचिरावयव विलोकन विहित नयन सञ्चारं ॥
भावित भवतो परिरम्भण कृत सम्भ्रम जनित सुखं।
मधुराधर पीयूष प्राण सम्पुटित सलाल मुखं ॥
भावित मानापनयन करयुग धृत पद कमल वरं।
नख विधु किरण कौमुदी मोद विनोद विशेष परं ॥
अनुसंहित निज विरह दशा समुदित मानस सन्तापं।
अन्तेर्शततनु दाहि विनाशक शीतल कमल कलापं॥
शिशिरोपाय विधान विहित निज जन्म सफल विवासं।
श्रीवल्लभ वर चरण कमल परिमल लोभित हरिदासं॥

४५

मानिनि तव पद पतिताहं।
अङ्गी कुरु गोकुल पति सङ्गं येन सपदि भविता
हरि ताहं ॥

ध्रुवं।

मानय विनय वचन मति दानं तवमेलन करणे
सुहिताहं।
नैव अुचित मति रोषवती भवति कृपया दासी
विहिताहं ॥
अवलोकयति पथं तव सुन्दरि मान वारणे सखि
निहिताहं।
इति जानी हि चरण परिचरण निरन्तर करण दोष
रहिताहं ॥
भवतो रति सम्पादन कृतये निरुपधि गोकुलपति
रचिताहं।
यदि ना यासि तथैव भवामि तदा निपुणैकमध्य
लिखिताहं ॥
त्यजसि न मान मशो कथमपि तदीतर युवतीभीरतो
वर्जिताहं।
यदि न भवति मम विहित मिदं सखि किमु
कथयामि मध्य वनिताहं ॥

वदनामृत कर किरण चकोरं दर्शय सुखितं
भूलुठिताहं।
इतर सखी जन साहं कृत बहु वचन रचन शोचन
मतिदाहं॥
जीवन मपि मम दुर्लभ मधुना यदि निज सङ्ग भङ्ग
गमिताहं।
कथं दर्शयिष्यामि मुखं पुनरपि हरिणा बहुधा
लपिताहं ॥
इति सहचरि वचनानि कृदाकरण मति वदति
सखि सखि चलिताहं।
श्रीवल्लभ वर चरणरेणु हरिदास मदीय कृपा
वलिताहं ॥

४६

विरहे सुन्दर वर्षा समये।
वद जीवामि कथं मम दोषे रतिशयिते रिह सखि
विपरीते सदये ॥
वर्षति जलदे विरहा नलदे गोवर्द्धन शिखरे।
पर पुष्पे शत युष्टं कूजति वदति केकि मुखरे ॥
लसति भूमि रति हरिता पवन विचलिते तृण निचये।
इन्द्रगोप कैतव निज मूल विलसदनुरागमये ॥
विविध शिलासु अत्र निज रूप युता सुविराजति नाथे।
निज मुख दर्शन जनितानन्द विलास गीत गुण गाथे॥
नव घन मध्य शोभिता सुमुखि दृश्यते सित
स्तवकमाला।
मेघनाद मनुगंजति मुरली चरति रसं सुरशाला ॥
उदयति विद्या दतीव चञ्चला चालयतीह जनं।
असित मेघगण विरचित तमसा बहु भीषयति वनं॥
रञ्जित रुचिर कुसुम्भ वसन परिधान विराजित रूपे।
गायति मेघ समागम राग निरुपधि गोकुल भूपे ॥
इति विज्ञापित मतिशय करुणे विरहित हरिदासेन।
श्रीवल्लभ पद कमल पराग धारिणि विरचित वासेन ॥

४७

सततं विचरति वृन्दा विपिने।

गोकुल पति रति गोपाल बालकै रारुदैपि दिनै ॥
निज वदनेन वदति नामानि गवामति रति वचनेन ।
मनसि मोदते विपुल रसागत सरस कुञ्ज रचनेन ॥
निर्मल नीर धौत शिखरोपरि रुचिर शिला सुपविष्ट ।
भुङ्क्ते भवन समागत मन्नं निज गोपेषु निविष्ट ॥
अत्यङ्गुलि दल विविध कलानि दधानि रुचिर हस्ते ।
मध्य मोदकं नवनीत दृष्टिं जननी क्रत शस्ते ॥
पिवति विमल पानीयं यमुनाया मञ्जलि बन्धेन ।
प्रतिविम्ब पश्यति सुचिरं निज लोचन सम्बन्धेन ॥
मृदु वादयति वेणु मति मधुरं चलति धेनु सङ्गे ।
हरति ताप मध्य कानन देशा विरचित तृण भङ्गे ॥
कनक चषक गत फेन समूहं पिवति गोप मथितं ।
शिशिरयतीह बालकुल हृदयं बहु विरह व्यथितं ॥
श्रीवल्लभ पद कमल पराग राग रञ्जित हृदयं ।
हरिदासं सुखितं भादे रपि कुरु दुर्जन विलयं ॥

४८

चरणं वहि सरस हृदये ।
व्यथतेसि तृणमूले रतिपदमिति चिन्तकमये ॥
नाहि समुचित मिह धरणि विचरणं सुन्दर
सति कमले ।
उत्कटभाव निरन्तर निर्गत नयन नीर विमले ॥
शौरपि कुरुते सपदि सहायं ।
यद्यपि वन चलने तदपि वाधते मामक हृदयं ॥
चरण चिह्न कलने यद्यपि भूमि रथो रस
सहिता त्यजति तथापि हरे ।
इह यदि गन्तुं क्षण मुत्सहसे कर वै सपदि करे ॥
व्रज सम्बन्धि गवा मुनरं किमु गोपाजनवृन्दे ।
दोषमयो चेतसि चिन्तयसे लौकिक मति मन्दे ॥
किमिति विभेषि ताप संस्पृष्टे धारयितं चरणं ।
फणिफण धृत पदपद्म किमद्भुत मेव तव करणं ॥
कर्दमजनित दुःख मधर्यसि पदा जनितानन्देन ।
भूमेरहह वियोगी विहितं किमु मयि गोविन्देन ॥

श्रीवल्लभ पदकमल सदागति सङ्गत गन्धयुतेन ।
योजय निज चरणं करुणामय दास सरस हृदयेन ॥

४९

मिश्र मायाहि करवै पयो मन्थन मिह
भोजनीयं त्वया ।
पत्रं विरचित रुचिर पात्र निहितं हरे ननु विधेया
ममो परि दया ॥
शीतलं भये ति ननु भाव सुन्दर हरे शृणु वने यत्र
विहितं मया ।
किमिति हि विलम्बसे तिष्ठ मम सन्निधौ
गोपसुतमण्डली विहित विनया ॥
दर्शनानन्द गोविन्द सम्प्रति यथा भवति दुःखालि
रथ रचित विलया ।
इष्टतर नीलमणि मञ्जु मुखलग्न मधु दुग्ध कण
परम शोभैकनिचया ॥
तिष्ठ कथयामि परमद्भुता मथकथा मयि किमपि
मधुवचन मुदित मथ चैकया ।
मामहह कानने करुणया योजय प्रणत पति
गोकुलाधीश पदवया ॥
गायामि किमपि कथयामि तव कर्णयो
रतिशयित गुणमथ लोक विरचित भया ।
मञ्जु कुञ्जे रचय सङ्केत मद्भुतं शीघ्र मह मायायामि
चरणगति क्रतरया ॥
विजयिष्यामि परमति रमण सम्भ्रमे दर्शनीयो
हरे भक्त कृपया ।
योजनीयो स्मिननु सपदि भवता कदा कार्य करणे
रसिक जननाथ सहितया ॥
दर्शयिष्यति कदा मत् प्रभु स्वामिनी सहस वदनं
विहित विपरीत मिच्छया ।
मदभिनन्दन मथोदत मनसा कदा कर्णयिष्यति
सुरति सङ्ग्राम क्रत जया ॥
देहि निज दास्यमिह वल्लभाधीश पदकमल सेवन
विहित भक्तिज फलाशया ।

सतत-सहितेपि हरिदासके कल्पतम-विलस-
विपिने सरस नृत्यत तथिया ॥

५०

यथाह शृणु मा याहि वनं किमुचितमितिगमनं।
चारयोयमिह गोपैरभितो व्रजनृपधेनुधनं ॥

ध्रुवं

करवैधृत-वसन-भूषाभिरलंकरणं तव देहे।
रहसि विराजित-विपुल-विताने वस मामक-गेहे ॥
अतिसुगन्धमुद्वर्त्तनमतिशयशुद्ध-गन्धतैलं।
स्नानमथ कुरु नीरे कर्पूरोकुरु चैलं ॥
कच्छपटं परिधेहि तिलकमपि वितनु विपुलभाले।
तनुमुष्णीषं शिरसि विधेयं ग्रथितालकमाले ॥
नूपुर युगमतिचपलं पदयोरत भुजयोरपि धेयम्।
कङ्कणचयमथ मध्यमङ्गदं गुच्छसहितमपि देयम् ॥
हृदय-मध्य-मणि-मुक्ताजड़ित-पदकं नाथ विधेयम्।
मुक्ताकनकमालिकायुगलं जय जगदखिल भजेऽयम् ॥
उपविश पर्य्यङ्के मृदुरम्ये कुरु सुन्दर-शयनम्।
तनु वै कर-कृत-मङ्ग-मर्दनं शिशिरीकुरु नयनम् ॥
इति सरसं वचनं राधाया रतिरसभावयुतम्।
शृणु वल्लभवर-चरण-कमल-तलगत-हरिदासनुतं ॥

५१

हरिरिह दिवसेवसति वने।
गोचारणमपि कुरुते गोपै रभितो विटप-घने ॥

ध्रुवं

नैव रोचते किमपि सुमुखि मम हरि-विरहित-सदने।
विरहवह्निरपि तनुते दाहं हृदये नृप-मदने ॥
द्रष्टुमहो कामयते नयनं गोपतनय-वदनम्।
अलिकुल-सदृशालकमतिसहितं मुग्ध-दुग्धरदनं ॥
नासासततं विहितदुराशा देहकमल-गन्धम्।
आदातुं तस्या ननु तनुते सैव हृदयबन्धम् ॥
रसना कुरुते सततं मनोरथमधर-रसं पातुम्।
वागपि रमानुरागवती विदधाति मनो गातुम् ॥

——o——

श्रीकृष्णाय नमः

घट्—तिताला

बने आज नन्दलाल सखि प्रेम मादक पिये
सङ्ग ललना लिये यमुना तीरे।
फूली केशर कमल मालती सघन वन मन्द सुगन्ध
शीतल समीरे ॥
नीलमणि वरण तन कनक मण्डित वसन परम
सुन्दर चरण परसि माला।
मधुर मृदुहास परकाश दशनावली छवि भरे
इतरात दृग विशाला ॥
किये चन्दन खौर वदनारविन्द मकरन्द लुब्धे
भ्रमर कुटिल अलके।
झलत कुण्डल लटकि चलत जब श्यामघन मणिनको
कान्ति कल गण्ड झलके ॥
एक चम्पक तनी कृष्ण रस माती करे राग पञ्चम
सङ्ग लागि सोहै।
एक हरि मुख निरखि धरि रह्यो ध्यान मन चित्र
सम भई हरि हियो मोहै ॥
एक दामिनसी भुज मेलि ग्रीवा बात कहन मिस
आय मुख मुख सों लायो।
एक नव कुञ्जमें खेंचि रह्यो कटिबन्ध आपनो लाल
चित चोर पायो ॥
एक श्याम छि हेरि शुभग लोचन भरि विहंसि
बोली भले कान्ह कपटी।
एक सोंधे भरी छूटे बारन खरी चन्द्रमुखी विन
कञ्चुकी रीझि लपटी ॥
एक श्यामा कनक कञ्ज वदनी प्रेम मकरन्द भरी
हरि निरखि विकसी।
ताके रस लोभि रह्यो लपटि सांवरो भ्रमर प्राण
प्यारी भुजन बीच लुलसी ॥
रसिक मणि रङ्गभरे विहरे वृन्दा विपिन सङ्ग सखि
मण्डली प्रेम पागी।

कहै भगवान् हित राम राय प्रभु सुमिरि सोई
आनें जाहि लगन लागी ॥

२

आज नन्दलाल मुख चन्द्र नयनन निरखि परम
मङ्गल भयो भवन मेरे।
कोटि कन्दर्प लावण्य एकत्र करि वारों तव हौं
जब हि नेक हेरे ॥
सकल सुख सदन हर्षित वदन गोपवर प्रबल दल
मदन जनो सङ्ग घेरे।
कहो कोउ कैसे हु नाहि सुधि बुद्धि रहै गदाधर
मिश्र गिरिधरण टेरे ॥

३

नवल ब्रजराज को लाल ठाढ़ो सखी ललित
सङ्केत वट निकट सोहै।
देखि री देखि अनिमिष या वेषको मुकटकी लटक
त्रिभुवन मोहै ॥
स्वेद कण झलक कछु झुकी सो पलक मानो प्रेमकी
ललक रसरास किये।
परम बड़ भाग वृषभानु नृपनन्दिनी राधिका
अंश पर बाहु दिये ॥
मणि जड़ित भूमि रही नव लता झूमि रस पुञ्ज
शुभ कुञ्ज छवि कहि न जाई।
नन्दनन्दन चरण स्पर्श हित जानि यह मुनिनके
मन नि मिलि पांत लाई ॥
परम अद्भुत रूप सकल गुणभूप यह मदन मोहन
विना कछु न भावे।
धन्य हरिभक्त जिनकी कृपाते सदा कृष्ण गुण
गदाधर मिश्र गावे ॥

४

पाछली रात परछांही पातनकी मेरो लालजी
रङ्ग भीनो डोलत द्रुम द्रुम तरनि।
मन हि देखत बने लागि अद्भुत मनो ज्योतिकी
घातसों निकसि रही सब धरनि ॥
कृष्णके दर्शको अङ्गके स्पर्शको भई री मग्न
तब मई हां मज्जन करण।
नूपुर ध्वनि सुनत चकित ह्वै थकि रही परि गयो
दृष्टि गोपाल सांवरे वरण ॥
जरकशी पाग पर मोर चन्द्रिका बनी कमलदल
नयन भ्रू वङ्क छवि मनहरण।
धाई तब गहन को रस वचन कहन को आवति
छवि सों अति चरण सों धर धरण ॥
रोम रोम रमि रह्यो मेरो मन हरि लयो नाहि
विसरत वाको झुकनिमें भुज भरन।
कहै भगवान् हित राम राय प्रभु सों मिली लोक
लज्जा गई भई ह्वै परवश परन ॥

५

मुकुट माथे धरे खौर चन्दन करे माल मुक्ता गरे
कृष्ण हेरे।
पीत पट कटि कसे कान कुण्डल लसे निशिदिना
उर वसे प्राण मेरे ॥
मुरलिका मोहनी कर कमल सोहनी ले कनक
दोहनी खरिक नेरे।
लाल लोचन बने ललित रस मैं सने मैनसे
अनगने ग्वाल टेरे ॥
किङ्किणी काछनी देत शोभा घनी देखि कौस्तुभ
मनो सुर हकेरे।
प्रभु छवीले रङ्गीले रसीले आली लग्नकी
मगनमें मन वसेरे ॥

६

कृष्ण कथा विन कृष्ण नाम विन कृष्णभक्ति विन
दिवस जात।
ते प्राणी काहे को जीवत नहि मुख वदत
कृष्णकी बात ॥
श्रवण कथा नि श्यामसुन्दरकी रामकृष्ण
रसना न रटात।
मानुष जनम कहां पावे गो ध्यान धरे घनश्याम गात ॥

जो यह लोक परम सुख राखत अरु पर लोक
करत प्रतिपाल।
परमानन्द दासको ठाकुर अति गम्भीर दीनानाथ
दयाल॥

७

आज उठि भोर नव कुञ्ज कानन सखी ठाढ़ी
भई राधिका रङ्ग भीनो।
विलसि सुख सङ्ग नवरङ्ग प्रिय श्यामघन कामको
सैन सब जीति लीनो॥
सुभग विकसित वदन नयन अति रसमसे मोरि
मुख हंसी कछु सकुच कीनो।
श्रीविट्ठल गिरिधरण सङ्ग नागरी जागि सब रैन
आनन्द दीनो॥

८

हौं चली री जाऊं जहां मोहन मुरली मधुर
मधुर ध्वनि बाजी री।
यमुना पुलिन सुभग वृन्दावन मदन गोपाल
विराजे री॥
सजल नील घन वरण श्याम तन दशन दामिनि
छवि छाजे री।
मोर मुकुटकी शोभा निरखत इन्द्रधनुष द्युति लाजे री॥
कुण्डल श्रवण कण्ठ कौस्तुभमणि आनन्द मुख हि
प्रकासे री।
चरण धरण चाहत न बनि आवे कौतुक कुञ्ज
विलासे री॥
घूंघरवारे अलक नि झलके चन्दन तिलक ललाट री।
अमल कमलदल मञ्जुल नयनन जोहत हैं
मम बाट री॥
हरि ठाढ़े हैं कल्पतरु वर तरे मोहि देखि हंसि
देहैं री।
अति ललचाइ बाटक सं चले अब सुध बुधि सब
हरि लेहैं री॥

जाको मन मिलि रह्या री कृष्णसों ताको अकथ
कहानो री।
कहै भगवान् हित राम राय प्रभु सुमिरण माझ
समानो री॥

९

हौं मिली री तहां जहां खोरि सांकरी सुन्दर
श्याम सलोना री।
इत ते हौं जात उत ते वे आवत ओढे पोत
उढौना री॥
हंसि मुसिकाइ लटकि जब बोले पूछत हैं वधू को
नारी।
हौं सकुची मोपें उत्तर न आयो इन ठग ठगी
ठगौना री॥
चित्र लिखो सी रहि गइ ततक्षण मनो पढ़ि डारो
टोना री।
घूंघट चापि चिबुक चितवनिमें भूलि गई
सखि भौना री॥
मात पिता सुत बन्धु खिजोरी मेरो मन मोह्यो
मोहना री।
वंशीधर गिरिधर पर वारो अब कछु और न होना री॥

१०

धरो मोर मुकुट कुण्डल झलकत अलकन उर
मन मेरो जो हरो।
मुरली ध्वनि श्रवणन सुनि सजनी काम धाम
सब को विसरो॥
बावरे लोग मारे भटको घरको नहीं जानत
पेड़ परो।
भावे सो होय हरि सङ्ग न छाड़ौं यह व्रत जिय
निश्चय जो धरो॥
काहेको लोक लाज आवे सखि काहु सों काहुको
काज सरो।
चन्द्र सखी सोई बड़भागिन बालकृष्ण प्रभु
वारो वरो॥

११

अरी आज सखी वसंत बने आवत गावत श्याम
सखागनमें।
गति गुञ्जत अमित गयन्द झुको लखि कौन रहे
अपने मनमें॥
पगिया सिर लाल रही झुकि भाल सों पीत झगा
झलके तनमें।
ए उपमा उपजी जियमें मानो चपला लपटी
श्याम घनमें॥
घुंघरारी लट लटके मुख पर राजत है रज गोधनमें।
चित्र लिखी सी रहि गई ततक्षण वृन्दावन प्रभु
वृन्दावनमें॥

१२

काम्हर कारो नन्द दुलारो मो नयन नि को तारो री।
प्राण पियारो जग उजियारो मोहन मित्र हमारो री॥
दृगमें राजत हियमें छाजत एकक्षण नाहिन न्यारो री।
मुरली टेर सुनावत निशिदिन रूप अनूप संवारो री॥
चरण कमल मकरन्द लुब्ध ह्वै मन मधुकर
गुञ्जारो री।
रसरङ्ग केलि छबीले प्रभु सङ्ग हित सों सदा
विहारो री॥

१३

आज व्रजभूमि नवरङ्ग शोभा बनी रास खेलत
नवल सङ्ग प्यारो।
माधुरी रूप रस केलि सोहावनी चन्द्रिका मोर
छवि देत न्यारो॥
हलत कुण्डल तिलक पीत पट अति सरस कर
कमल फूल लीन्हें विहारी।
लगनमें मगन मोहन निरखि नेह सो रङ्ग
रसमूल राधे विहारी॥
सखी निरतत घनी बनी ठनी हित सनी बजत
मुरली मधुर स्वर सुखारो।
युवतीके हृदयमें प्रेम पूरण पगी युगल जग प्राण
जीवन अधारो॥
गगन सुर गण देखन छयो ए भलो शिव
विरिञ्चि सबन सुधि बुधि विसारी।
छवि छबीलो छबीले छको होइ जब युवतिन
श्रीजु सर्वस्व हारी॥

१४

निरखि त्रिभुवन धनी प्रेम पूरण सनी माधुरी
रूपरसमें लुभानी।
छवि छको सांवरी अब कित जावरी लगन मन
मोहनी सुधि भुलानी॥
लाग सों चित्त लुभ्यो नेह हियमें खुभ्यो लाज
कुलकानि जियते छुड़ानी।
अङ्ग सब रङ्ग हरिके रङ्गी ह्वै अङ्गी कोउ कह्यो
बावरी कोउ सयानी॥
देखि सुन्दर वरण मनहरण सुखकरण नागरी
नवल हित बनिके ठानी।
रसिक जीवन छबीले प्रभु प्राणधन चरणके शरण
सुखमें समानी॥

१५

जयति गोकुलानन्द गोविन्द गोपालक तालक
तालगीत-नृत्यकारी।
हेम-मणि-मण्डलो मध्य घन नीलमणि-मोहनी
नन्दमन्दिर-विहारी॥
जयति बालगोपाल सुविशाल लोचन-युगल
गरे रुचिर व्याघ्रनखमणि-मुरारी।
सुघट कटि किङ्किणी नाद उन्माद पदनूपुर-रणित
गति नृत्यधारी॥
जयति ललाटपटघटित-तिलक कस्तूरिका कुटिल
अलकावली मुख विकाशी।
दक्ष दक्षिण हस्त पूपपर पायस वाम कर नवनीत
ब्रह्मराशि॥
जयति पूतनाप्राण-हत शकट उच्चाट करि असुर
तृणावर्त धरि धरणी आने।

नीलगिरि श्रीजगन्नाथ शिशुरूप ज्ञात कौन मति दास
माधव बखाने ॥

१६

सरस रस रङ्ग भीने नवल हरि रसिक वर प्रात ही
जात इतरात सोहे ।
परम प्रीतिके ऐन हित हुलसि जागे रैन चैन चित
निरखि द्युति मन मोहे ॥
मन्द मृदुल हसनि छवि लसनि मुख माधुरी
ललित कच कुटिल दृग वङ्क भौहे ।
मदन गोपाल अवलोकि धीरज धरे कहो री सजनी
ऐसो बाल को है ॥
चकित चितवत चित्त करत चञ्चल चखनि
बिसरि गति विवश बावरी हो हे ।
शोभा को सदन सुवदनकी ज्योति लखि होत है
कोटि रवि शशि लजो हैं ॥
लपटि उद्दार उरहार कञ्चन वसन प्रेम शृङ्गार
तन मन लगो है ।
केवलराम वृन्दावन जीवन छकि सब सखी
दृगनिसों रूप जोहे ॥

१७

शरत् रजनी रुचिर शशि सुखद चांदनी मुदित
मोहन रसिक रास राचे ।
लीत गति लटकि भ्रू मटकि मदन मोद सों
नवल नटवर ललित स्वरूप नाचे ॥
रीझि भोजी कुंवरि लाल सङ्ग ताल क्रम उचरे
मधुर स्वर सरस साचे ।
उरपति लइ दुर मई नई नई गति सों सङ्गीतके
रङ्ग माचे ॥
मेन मोहित चन्द्र थकित खग मृग विवश बांसुरी
ध्वनि सुनत मुनिन बांचे ।
केवलराम वृन्दावन जीवन धन्य युगलवर सदा
विलसत दृगनि दर्श जांचे ॥

षट्—चर्चरी

राधिकारमण गिरिधरण गोपीनाथ मदनमोहन
कृष्ण नटवर विहारी ।
रास लीला रसिक व्रज युवति प्राणपति अकल
दुःख हरण गो गणन चारी ॥
सुख करण जगतरण नन्दनन्दन नवल गोपपति
नारिवल्लभ मुरारी ।
चीत स्वामी हरि सकल जीव उद्धार हित
प्रकट वल्लभ मदन दनुजहारी ॥

२

आज दधि मन्थन करे भामिनी प्रेमथी हर्ष
आनन्द भरी गीत गाए ।
रई माहे करी रज्जु वे छ कर धरी घमरनो शब्दतें
अति सुहाए ॥
प्रेम पुलकित तनी कृष्णरस मा सनी किङ्किणी
नाते अति घोष थाए ।
उरजना भार थी कटिते लचका करे सुन्दरी
शोभा ते कह्यो न जाए ॥
ते समय कान्हजी आवाने ओचका पेठो घर माहे
नवनीत खाए ।
युवती ए जाण्यु को धंसी गयु ओरडे मेली मंथानते
चाली धाए ॥
सुन्दरी अवतां जोइ श्रीकृष्णजी तजीने माखनतें
जण पलाए ।
नरसैना स्वामी थी गोपी विनती करे माजसो
माजसों चित चुराए ॥

श्रीकृष्णाय नमः ।

देवगान्धार—तिताला

आजु अति राजत दम्पती भोर ।
सुरतिरङ्ग के रसमें भीने नागर नन्दकिशोर ॥
अंशन पर भुज दिये विलोकत इन्दुवदन विवि ओर ।

करत पान रस मत्त परस्पर लोचन तृषित चकोर ॥
छूटी लटन लाल मन करष्यो ये वाके चित चोर ।
परिरम्भण चुम्बन आलिङ्गन सुर मन्दिर कल घोर ॥
पग डगमगत चलत वन विहरत नव निकुञ्ज घनघोर ।
हित हरिवंश लाल ललना मिलि हियो सिरावत मोर ॥

२

व्रज नव तरुणि कदम्ब मुकुटमणि श्यामा आजु बनी ।
नख शिखलों अङ्ग अङ्ग माधुरी मोहे श्याम धनी ॥
यों राजति कवरी गंथति कच कनक कञ्ज वदनी ।
चिकुर चन्द्रकण बीच अर्ध विधु मानो ग्रसत फनी ॥
शौभग रस शिर श्रवत पनारी प्रिय शीमन्त टनी ।
भृकुटी काम को खण्ड नयन शर कज्जल रेख अनी ॥
तरुण तिलक ताटङ्क गण्ड पर नासा जलज मनी ।
दशन कुन्द सरसाधर पल्लव प्रियतम मन समनी ॥
चिवुक मध्य अति चारु सहज सखि श्यामल
विन्दु कनी ।
प्रियतम प्राण रत्न सम्पुट कुच कञ्चकी कसि व तनी ॥
भुज मृणाल बल हरति वलय युत स्पर्श सरस अवनी ।
श्याम शीष तर मानो मिड़वारी रची रुचिर रमनी ॥
नाभि गम्भीर मीन मोहन मन खेलन को हृदनी ।
कृश कटि पृथु नितम्ब किङ्किणि वृत कदलि
खम्भ जघनी ॥
पद अम्बुज जावक युत भूषण प्रियतम उर अवनी ।
नव नव भाव विलोकि भाम इमि विहरत है
वर करनी ॥
हित हरिवंश प्रशंसित श्यामा कीर्ति विशद घनी ।
गावत श्रवणनि सुनत सुखाकर विश्व दुरित दमनी ॥

३

देखत नव निकुञ्ज सुनि सजनी लागत है अति चारु ।
माधविका केतकी लता ले रच्यो मदन आगारु ॥
शरत् मास राका निशि शीतल मन्द सुगन्ध समीर ।
परिमल लुब्ध मधुव्रत विथकित नदत कोकिला कीर ॥
बहुविध रङ्ग मृदुल किसलय दल निर्मित
प्रिय सखि सेज ।
भाजन कनक विविध मधुपूरित धरे धरणि पर हेज ॥
तापर कुशल किशोर किशोरी करत हास परिहास ।
प्रियतम पाणि उरज वर परशत प्रिया दुसवती वास ॥
कामिनि कुटिल भृकुटि अवलोकित दिन प्रतिपद
प्रतिकूल ।
आतुर अति अनुराग विवश हरि धाइ धरत भुजमूल ॥
नागर नीवी बन्धन मोचत ऐंचति नील निचोल ।
वधू कपट हठ कोप कहति कल नेति नेति मृदु बोल ॥
परिरम्भण विपरीत रति गति सरस सुरति निज केलि ।
इन्द्रनील मणिमय तरु मानो लसत कनकको वेलि ॥
रति रण मिथुन ललाट पटल पर श्रम जल
सीकर सङ्ग ।
ललितादिक अञ्चल झक झोरति मन अनुराग अभङ्ग ॥
हित हरिवंश यथा मति वर्णन कृष्णरसामृतसार ।
श्रवण सुनत प्राण वारति राधा पद अम्बुज सुकुमार ॥

४

आजु वन क्रीड़त श्यामा श्याम ।
शुभग बनी निशि शरत् चांदनी रुचिर कुञ्ज अभिराम ॥
खण्डन अधर करत परिरम्भण ऐंचत जघन दुकूल ।
उर नखपंक्ति तिरीछी चितवनि दम्पति नीरस समतूल ॥
वे भुज पीन पयोधर परशत वाम दिशा प्रिय हार ।
वसननि पीक अलक आकर्षत समर श्रमित शत् मार ॥
पल पल प्रबल चोपरस लम्पट अति सुन्दर सुकुमार ।
हित हरिवंश आशु त्रण टूटत हौं वलि विशद विहार ॥

५

आजु वन राजत युगल किशोर ।
नन्दनन्दन वृषभानुनन्दिनी उठे उनींदे भोर ॥
डगमगात पग धरत शिथिल गति परशत नख
शशि छोर ।
दशन वसन खण्डित मुखमण्डित माला तिलक
कछु थोर ॥

दुरत न कच करजनिके रोके नयन अरुण अलि चोर।
हित हरिवंश संभारत तन मन सुरति समुद्र झकोर॥

६

वनकी कुञ्ज निकुञ्जनि डोलनि।
निकसत निपट सांकरी वीथिन परशत नाहि निचोलनि॥
प्रातकाल रजनी सब जागी सूचत सुख दृग लोलनि।
आलस्य बलित अरुण अति व्याकुल कछु उपजति गति गोलनि॥
निर्तन भृकुटी वदन अम्बुज मृदु सरस हास मृदु बोलनि।
अति आसक्त लाल अति लम्पट वश कीन्हें बिनु मोलनि॥
विलुलित शिथिल श्याम छूटी लट राजत रुचिर कपोलनि।
रति विपरीत चुम्बन परिरम्भण चिबुक चारु टक टोलनि॥
कबहुंक अमित किसलय शय्या पर मुख अञ्चल झक झोलनि।
हित हरिवंश दास हिय सींचत वारिद केलि कलोलनि॥

७

प्रीतम दोउ बने मरगजे बागे।
नव निकुञ्जते निकसि प्रात हो पिय पाछे धन आगे॥
खण्डित अधर पयोधर मण्डित गण्ड विराजत दागे।
छूटी लट टूटी मणि माला अ घूंघट छवि पागे॥
नख शिख विशिख कुसुमकी सेना छूटे हेरन बागे।
व्यास स्वामिनी को सुख सर्वस्व विलसो श्याम सभागे॥

८

कहांलो अलके देहो ओट।
चञ्चल चपल सुरङ्ग छबीलो आनि बन्यो मग जोट॥
खञ्जन मीन कमल अति लाजत उपमा दीजे कोट।
सूरदास प्रभु कहां लग वरनों नाहि न रूपको टोट॥

९

भलो यह खेलिवेकी बानि।
मदनगोपाल लाल काहूकी नाहि न राखत कानि॥
देखि यशोमति कर्तव्य सुतके यह ले माट मथानि।
फोरि ढोरि दधि डारि अजिरमें कौन सहे दिन हानि॥
अपने हाथ ले देत वनचर को दूध भात घृत सानि।
जो वरजों तो आंखि दिखावे पर घर कूद निदानि॥
ठाढ़ी हसति नन्द जूकी रानी मूंदि कमल मुखपानि।
परमानन्द दास जानत है बोलि बूझि दे आनि॥

१०

ठाढ़ी यशोदा कहे।
यह ब्रजके लोग लालके गोहन लागे रहे॥
जाके भवन जात न कबहूं सो झूठे आनि गहे।
एक गांउ इक वास वसे वो कैसे जात निबहे॥
तुम जिन खीजो मात यशोदा सबनि को जीवन यहे।
परमानन्द आंखि जरो जाकी जू टेढ़ी दृष्टि चहे॥

११

सुनहु धों अपने सुतकी बात।
देखि यशोमति कानि न राखत ले माखन दधि खात॥
भाजन भानि डारि सब गोरस बांटत है करि पात।
जो वरजों ता उलटि डरावत चपल नयनकी घात॥
जो पावत सो लेत चपल हठि नेक हु नाहि डरात।
हों सकुचति अञ्चल कर धरिके रही ढांपि मुख गात॥
गिरिधर लाल हाल ऐसे करि चले धाय मुसिकात।
चतुर्भुज दास सङ्ग हों आयो बुझि मोह दे सात॥

१२

जो तुम सुनहु यशोदा गोरी।
नन्दनन्दन मेरे मन्दिरमें आजु करत थे चोरी॥
हों भई आनि अचानक ठाढ़ी कह्यो भवनमें को री।
रहे छपाइ सकुचि मोचक होइ मनहु भई मति भोरी
मोहि भयो माखन पछितावो रीतो देखि कमोरी।

जब गहि बांह कुलाहल कीन्हो तब गहि चरण निहोरी ॥
लागी लेन नयन जल भरि भरि मैं हरि कानि न तोरी।
सूरदास प्रभु देव निशा दिन ऐसो चलक सलोरी ॥

१३

हा हा और सुनै गो कोउ।
बहुरि गारि मुखतें जिनि काढ़े जो हम जानें दोउ॥
बालक कान्ह निपट भोरो है पांयो चलन सिखायो।
तासो कहति भवन अपनेमें चोरी माखन खायो ॥
घर ह्व करत कलिज क्रम क्रम जो कोउ बहुत निहोरे।
सो क्यों अनत सकुचको लरिका कर्युकि कै बन्द तोरे॥
चतुर्भुज प्रभु गिरिधरण चन्द्र को झूठेंही लावति खोरे।
ह्वै है काहु और गोप को इनहीके अनुहारे ॥

१४

नित उठि देन उराहनो आवे।
यह जु ग्वाली यौवन मदमाती झूठे ही दोष लगावे॥
कहि धों भाजन धरे वराये कहां मेरो मोहन पावे।
लरिका अति सकुमार गहें कर हलधर सङ्ग खिलावे।
कबहुं क कहति कञ्चुकी फारो कबहुंक और बतावे।
कबहुं क रई मथानी लेके आंगन शोर मचावे ॥
मन तेरो लाग्यो कमल नयन में उत्तर बहुत बनावे।
चतुर्भुज प्रभु गिरिधर मुख इह मिस क्षण क्षण देखो भावे ॥

१५

अरी मेरो तनक सो गोपाल कहा करि जाने दधिकी चोरी।
काहे को आवति हाथ नचावति जीभ न कर हो थोरी॥
कब छीके ते माखन खायो कब दधि मटुकी फोरी।
अङ्गुरिन करि कबहूं नहीं चाखत घर हो भरी कमोरी ॥
इतनो बात सुनी जब ग्वालिन बिहसि चली मुख मोरी।
परमानन्द नन्दरानीके सुत सो जो कछु कहे सो थोरी॥

१६

ढोटा रञ्चक माखन खायो।
काहे को हरई होति री ग्वालिनि सब व्रज गाजि बुलायो ॥
जाको जितनो तुम जानत हो दूनो मोपे लेहु।
मेरो कान्ह रहे इकलो तब सबे आशिष मिलि देहु ॥
कमल नयन मेरो अंखिय नि तारो कुल दीपक व्रज गेह।
परमानन्द कहत नन्दरानो सुत प्रति अधिक सनेह ॥

१७

तुम नीके दुहि जानत गैया।
चलिये कुंवर रसिक नन्दनन्दन लागों तिहारे पैया ॥
तुम हि जानि करि कनक दोहनो घरसे पठई मैया।
निकट हि है यह खरिक हमारो नागर लेउं बलैया॥
देखियत परम सुदेश लरकई चित चुहव्यो सुन्दरैया।
कुम्भनदास प्रभु मानि लई रति गिरि गोवर्द्धन रैया ॥

१८

मोहन पूरे हो सत् भाइ।
कहत लाल नीके दुहि देहों ग्वालि तिहारी गाइ ॥
आतुर ह्वै दोहनो कनककी करते लीन्हीं धाइ।
देखों वेगि पाटकी नोई बछरा चोखे जाइ ॥
हंसि हंसि दुहत अरु कहत रसीली बातें बहुत बनाइ।
चतुर्भुज प्रभु सहज हि रति जोरो गिरिगोवर्द्धन राइ ॥

१९

लाल तुम कैसे दुहत हो गाइ।
कहुं बैठे कहुं दृष्टि दोहनो धार कहूं चलि जाइ ॥
यह दुहिबो हम कबहुं न देख्यो ग्वालि कहति समुझाइ।
जो कछु हुतो तनक सो वामें सिरतो दियो लुढाइ ॥
मेरी सास खरी रिसहारी अब मोहि देखि रिसाइ।
श्रीविट्ठल गिरिधरण लालपै सर्वस्व चलो हराइ ॥

२०

पिछौंड़ी बांडि देहौं दान ।
सूधे मन तुम लेहु गुसाईं राखो हमारो मान ॥
मार्ग रोकि रहे नन्दनन्दन सब गुण-रूपनिधान ।
वदन मोरि मुसकाइ भामिनी नयन बाण सन्धान ॥
नन्दरायके कुंवर लाड़िले सबके जीवन प्राण ।
परमानन्द स्वामी मोहन हो तुम ते कौन सुजान ॥

२१

मोहन तुम कैसे हो दानी ।
सूधे रहो गहे पति अपनी तिहारे जीकी मैं जानी ॥
हम गूजरी गंवारि अहीरी तुम हो सारङ्गपानी ।
मटुकी लई उतारि शीशते सुन्दरि अधिक लजानी ।
कर गहि चीर कहा ऐंचत हो बोलति चतुर सयानी ।
सूरदास प्रभु माखनके हित प्रेम प्रीति चित ठानी ॥

२२

आज दधि देखौं तेरो चाखि ।
कहि धौं मोल किते बेंचेगी सत्य वचन मुख भाखि ॥
जोई तू कहे सोई हौं देहौं सङ्ग सखा सब साखि ।
जो न पत्याइ ग्वालि तू हमको कण्ठश्री ले राखि ॥
ले चले सङ्ग घर दाम देन को जनायो नेकु कटाछि ।
कृष्णन दास प्रभु गोवर्द्धन धर रसवश लियो तताछि ॥

२३

रञ्चक चाखन दे री दह्यो ।
अद्भुत स्वाद श्रवण सुनि मोपे नाहिन परत रह्यो ॥
ज्यों ज्यों कर अम्बुज कुच भ्रमपति त्यों त्यों
मर्म लह्यो
नन्दकुमार छबीलो ढोटा अञ्चल धाइ गह्यो ॥
हरि हठ करत दास परमानन्द इह मैं बहुत सह्यो ।
इन बातनि खायो चाहत हो सेंत न जात बह्यो ॥

२४

किशोरी अङ्ग अङ्ग भेंटी श्याम हि ।
श्यामतमाल तरल भुज शाखा लटकि मिली ज्यों
दाम हि ॥
गिरिवर धरण सुरति रति नायक रति जीत्यो
सङ्ग्राम हि ।
सूर कहे ए उभय सुभट बिच क्यों जु बसे रिपु
काम हि ॥

२५

किशोरी देखत नयन सिरात ।
वलि वलि जाउं मुखारविन्दकी चन्द्र मन्द ह्वै जात ॥
श्याम कञ्चुकी तामें शोभित कञ्चन कलस न मात ।
मानो मदन दोउ कुच ऊपर नील वस्त्र फहरात ॥
नकबेसरि मोर उरझि पीताम्बर देखत मुनि मुरझात ।
या मुख देखे सूरदास प्रभु उड़े पुराने पात ॥

२६

सघन कुञ्जते उठे भोर हो श्यामा श्याम खरे ।
जलद नवीन मिया मिलि दामिनि वर्षि निशा उघरे ॥
शिथिल रसन पट नील पीताम्बर आलस्य युत पहिरे ।
कञ्चुक बुन्द रति श्रम कणिका बादर वरण करे ॥
भूषण विविध हुतो मिड़वारो अतिरस उमड़ि परे ।
कज्जल अधर तमोल नयन रस अङ्ग अङ्ग झिल परे ॥
प्रेम प्रवाह छुटो मानो सरिता टूटो माल गरे ।
शोभा अमित विलोकि सूर सुख नाहि न जात तरे ॥

२७

देखि सखि चार चन्द्र इकठोर ।
चितवति रही नितम्बिनि प्रिय सङ्ग सार सुताकी ओर ॥
है विधु नील श्याम-घन जैसे है विधुकी गति गोर ।
ताके मध्य चार शुक राजत है फल आठ चकोर ॥
शशि शशि सङ्ग प्रवाल कुन्द अलि तहां अरुझि
दो मोर ।
सूरदास प्रभु उभय रूपनिधि वलि वलि युगल
किशोर ॥

२८

यशोमति आनन्द कन्द नचावति ।
पुलकि पुलकि हुलसाति देखि मुख अति सुख
पुञ्ज हि पावति ॥

बाल युवा वृद्ध किशोर मिलि चुटकी दै दै गावति।
नूपुर स्वर मिश्रित ध्वनि उपजत शिव विरिञ्चि
विस्मावति॥
कुञ्चित ग्रन्थित अलक मनोहर झपकि वदन
पर आवति
जनु भगवान् मनहुं घन विधु मिलि मकर चांदनी
लजावति॥

२९

मांगत दधि माखन उठि प्रात।
जहां दधि मथन करनको बैठो तहां आई अररात॥
कह्यो यशोदा रियो रोहिणी हंसि हंसि बैठे खात।
व्रजपति प्रिय और मागत हैं कहि कहि तोतरी बात॥

३०

तुमपे कौन दुहावत गैया।
गूढ़ भाव सूचित अन्तर गति अति सुकामकी नैया॥
गूढ़ प्रीति तासों मिलि कीजे जो छाड़ तिहारो दैया।
ज्यों भावे त्यों मिलत सबनि सों इन्हें सिखाई मैया॥
ले जु रहे कर कनक दोहनी बैठे हो अधपैया।
परमानन्द स्वामी हठ मागो ज्यों घर खसम गुसैया॥

३१

बसे मेरे नयन में नन्दलाल।
सांवरी सूरत माधुरी मूरति राजीव नयन विशाल॥
मोर मुकुट मकराकृत कुण्डल अरुण तिलक दिये
भाल।
शङ्ख चक्र गदा पद्म विराजत कौस्तुभ मणि वनमाल॥
बाजूबन्द जरी के भूषण नूपुर शब्द रसाल।
दास गोपाल मदनमोहन प्रिय भक्तनके प्रतिपाल॥

३२

क्यों बिसरे वह गाइ चरावनि।
वाम कपोल वाम भुज पर करि दक्षिण भौंह
उचावनि॥
कोमल कर अङ्गुलि गहि मुरली अधर सुधा वर्षावनि।
चढ़ि विमान जे सुनत देव तिय तिन हु मोह
उपजावनि॥

हार हास उर स्थिर चपला अरु अद्भुत रूप
मिलावनि।
दन्त धरे तृण रहति चित्र ज्यों गैयन सुधि बिसरावनि॥
मोर मुकुट श्रवण नि पल्लव कटि मन्मथ स्वरूप
बनावनि।
चरण रेणु वाञ्छत कम्पत भुज सरितन गमन
थंभावनि॥
आदि पुरुष जो अचल श्रुतिबंधे सङ्ग सखागुण गावनि।
वन वन फिरत कबहुं मुरली कर गिरि
चढ़ि गाइ बुलावनि॥
लता विटप मन माह प्रकट ह्वै फलभर भूमि
नवावनि।
तत्क्षण हरित होत प्रति अवयव मधुधारा उपटावनि॥
सुन्दर रूप देखि वन लाला मत्त मधुप स्वर गावनि।
आदर देत सरोवर सारस हंस निकट बैठावनि॥
बल सङ्ग श्रवण पुहुप शोभा गिरिशिखर नाद
पुरवावनि।
विविध भांति वन गमन विचक्षण नूतन तान बतावनि॥
सुनत नाद ब्रह्मादिक सुरगण अधिक चित्त मोहावनि।
चलत ललित गति हरत ताप व्रजभूमि शोक
विनशावनि॥
व्रज युवती मन मेन उदय करि स्थिरता ठहरावनि।
दिव्यगन्ध तुलसी माला उर मणि धर गाइ गनावनि॥
वेणुनाद वञ्चित करि सब हरिणी भौंह छिड़ावनि।
कुन्ददाम शृङ्गार सकल अङ्ग यमुना जल उछरावनि॥
मुदित सकल गन्धर्व देवगण सेवा उचित करावनि।
गिरिधर वल्ल ले व्रजगैयनके आवत चरण छुवावनि॥
वेणु बजावत व्रज सुख देवे गाय नि ले व्रज आवनि।
गावत गोप विशद कीर्ति सङ्ग फिरत वर भावनि॥
घूमत मद दृग देत मान कछु श्रुति कुण्डल
झलकावनि।
बदर सदृश आनन सब सूचित विधु ज्यों अङ्ग
सिरावनि॥

गुण गावत ह्वै प्रकट रूप सों घोष वियोग बुझावनि।
चारि याम हरिके सङ्ग क्रीड़त लीला माह समावनि॥
यह लीला चित बसो लसो नित गोपीजन सुख
पावनि।
दीजे दास रसिक को यह फल व्रज जनपद
रज धावनि॥

२३

जब ते श्याम शरण मैं पायो।
तब ते भेंट भई श्रीवल्लभ निज पति नाम बतायो॥
और अविद्या छाड़ि मलिन मति श्रुतिपति सों
दृग दृढ़ायो।
कृष्णदास सब युग जन खोजत अब निश्चय
मन आयो॥

२४

प्रकटे श्रीवल्लभ राजकुमार।
जय जय श्रीगिरिधर श्रीगोविन्द बालकृष्ण जु उदार॥
गोकुलपति व्रजपति श्रीयदुपति शोभित तन घनश्याम।
करुणापति श्रीकल्याण राय जू रसिक जननि
सुखधाम॥
श्रीमुरली धर प्रभु बालक श्रीवल्लभकुल सकल समान।
विष्णुदास गोपाल लीला वपु गावत वेद पुरान॥

२५

श्रीगोकुल युग युग राज करो।
या सुख भजन प्रतापते चण इत उत न टरो॥
पावन रूप दिखाय प्राणपति पतितन पाप हरो।
विश्वविदित दीन गति प्रेत निज गति नियम धरो॥
श्रीवल्लभकुल कमलनि दीपक यश मकरन्द भरो।
नन्ददास प्रभु षट्गुण सम्पन्न श्रीविठलेश वरो॥

२६

जे जन शरण गए ते तारे।
दीनदयाल प्रकट पुरुषोत्तम श्रीविट्ठल नाथ ललारे॥
जितनी रवि छायाकी कणिका तितने दोष हमारे।
तुम्हरे चरण प्रताप तेजते ते-ते ततृचण तारे॥

माला कण्ठ तिलक माथे दे शङ्ख चक्र वपु धारे।
माणिकचन्द्र प्रभुके गुण ऐसे महापतित निस्तारे॥

२७

महा श्रीवल्लभ के ह्वै गाजो।
चरण अम्बुज गहि मान अन्य तजि स्वामी
पदते भाजो॥
गीता भागवत निगमसे साखी तो काहे को लाजो।
गीतगोविन्द विल्वमङ्गल सोमा को कहि सके
अनदाजो॥
श्रीपुरुषोत्तम इनहीं ते पैये यह दृढ़ मति तुम साजो।
सगुण दास कहे युवती सभामें गिरिधर महल
विराजो॥

२८

अपुन पै अपनो सेवा करत।
आपुन प्रभु आपुन सेवक ह्वै अपनो रूप उ धरत॥
आपुन धर्म कर्म सब जानत मर्यादा अनुसरत।
छीतस्वामी गिरिधरण श्रीविट्ठल भक्तवत्सल वपु धरत॥

२९

हम तो श्रीविट्ठल नाथ हि जाने।
आन देव सेवन कत करिए नहि कछु उरमें आने॥
कोउ भजो सुरपति कोउ गणपति व्रत कोउ
भजो वेद पुराने।
कोउ रवि चन्द्र भजो शिव शङ्कर कोउ भजो
प्रकट प्रमाने॥
कोउ भजो सनकादिक मुनि नारद कोउ भजो
कर्म निदाने।
कोउ भजो अंश कला अवतारे कोउ अचर
चर थाने॥
कोउ भजो नेति नेति कहि निर्गुण कोउ भजो
पद निर्वाने।
कोउ भजो तन्त्र मन्त्र यन्त्रनको फिरत सबै भहराने॥
कोउ भजो नव अरु सात पदार्थ मुक्ति ले सके दाने।
करुणानिधि गिरिधर भजि दृढ़ करि हरिलीला
रस पाने॥

४०

श्रीवल्लभके नन्दन फिरि आए ।
वेई रूप वेई फिरि क्रीड़ा करत आपु मन भाए ॥
वे फिरि राज करत श्रीगोकुल वेई रीति प्रकटाए ।
वेई शृङ्गार भोग क्षण क्षणके वेई लीला गाए ॥
जे यशोमति को आनन्द दीन्हों सो फिरि व्रजमें आए ।
श्रीविट्ठल गिरिधर पद अम्बुज गोविन्द उर में लाए ॥

४१

प्रगट्यो प्राची दिशि पूरण चन्द्र ।
यों ही प्रगटे श्रीवल्लभ गृह सुर नर मुनि आनन्द ॥
अद्भुत रूप अलौकिक महिमा जन जनता यों भाख्यो ।
छीतस्वामी गिरिधरण श्रीविट्ठल लोक वेद मत राख्यो ॥

४२

यह कलि परम सुभग जन धन्य श्रीविट्ठलनाथ
उपासी ।
जो प्रकटे व्रजपति विट्ठलेश्वर तो सेवक व्रजवासी ॥
व्रजलीला भूलगो चतुरानन कुल टारो व्रतरासी ।
अब लों शठ अवगणत अभागी करत परस्पर हासी ॥
आत्या सहित आपु भए हैं हितू दीन्हों नर प्रकासी ।
देखियत लोक स्वरूप अलौकिक ज्यों गङ्गा सरिता सी ॥
परिहरि सदन सदा हरि यश गावत मुक्ति
भक्तकी दासी ।
वदत न कछु भीम भव-वैभव भजनानन्द उपासी ॥

४३

यशोदा कहा कहों हों बात ।
तुम्हरे सुतके करतब मोपे कहत कहे नहिं जात ॥
भाजन फोर ढोरि सब गोरस ले माखन दधि खात ।
जो वरजो तो आंखि दिखावे रंचहु नाहिं सकात ॥
और अटपटो कहां लों वरनों छुवत पाणि सों गात ।
चतुर्भुज प्रभु गिरिधरके गुण हों कहति कहति
सकुचात ॥

४४

ग्वालिन तोहि कहत क्यों आयो ।
मेरो कान्ह निपट बालक क्यों चोरी माखन खायो ॥
बूझि विचारि देखि जिय अपने कहा कहों हों
तोहि ।
कछुकि बन्द तोरे यह कैसे सो समुझि परति
नहिं मोहि ॥
चतुर्भुज दास लाल गिरिधर सों झूठी कहति बनाय ।
मेरो श्याम सकुच को लरिका पर घर कबहुं न जाय ॥

४५

बालक हो ते चोरी ए हो जानत ।
माखन दूध धर्‍यो उन छाड़्यो बहोरि अचानक
भाजन भानत ॥
अब हीं लाल मेरो सर्व्वस्व मूस्यो और उलटे तुम
कैसो कैसो वानत ।
कुम्भन दास प्रभु सङ्ग लागी डोलति गोवर्द्धनधर
अज हुं न मानत ॥

देवगान्धार—अठताला

मानि मानि री मोहन द्वार ठाढ़े ।
तेरो तो प्रकृति आने पियको पीरो न जानि बातें तो
बहुत उफाने त्यों त्यों तें हृदय आगार कपाट
दिये गाढ़े ॥
वर्षे रैन कारो तो सों बहि लगी भारी ऐसे री
लालन पर तन मन धन वारि फेरि प्राण दीजे काढ़े ।
सुनत वचन प्यारी कण्ठ लागी गिरिधारी गोविन्द
प्रभुको हृदय प्रेम जल सों बुझायो आए विरहानल
दाढ़े ॥

२

कछु व कही न जाइ तेरी उनकी विकट बात ।
आन आन प्रकृति कैसे बनि आवे जो तू डार डार
ता वे हैं री पात पात ॥
अब कहा कहति सोइ जाइ कहों प्रियतम सों छाड़ि
देहु हठ उतको पांच सात ।
अब एते पर गोविन्द प्रभु सुमुख मनावत तेरो
बातनि बातनि भयो प्रात ॥

३

विनती करत प्यारी की सखी लालन मुरली नेक बजाइये ।
जानति हौं सकल कला गुण नि शिरमौर ढौव्यो
दीजत तातें चोष राजकुंवर हम हु तान दे सुनाइये ॥
जैसे खग मृग द्रुम पशु वेली सरिता मोही तैसे
हमारो सखि निको मन रिझाइये ।
गोविन्द प्रभु सकल कला प्रवीण तातें हमारे
श्रवणनि सुख उपजाइये ॥

४

लहेंत दे मेरो उरहार ।
जाइ कहौं गो नन्द राय सों यह तेरो व्यवहार ॥
मेरो दुलरी मेरो कङ्कण मेरो गजरा हार ।
तेरे घरको मोल सबेई मेरो सहज शृङ्गार ॥
बहुत दिनन को झगरो ठान्यो उर मणि कञ्चनहार ।
झगरति झगरति गई कुञ्जमें व्यास कियो निर्वार ॥

५

कुञ्ज सदन तें मदन जीति उठे घन दामिनो से भोर ।
व्रज तरुणी वृषभानु नन्दिनी नागर नन्दकिशोर ॥
राजत है वनमाल ग्रीव उर बनी बलाका डोर ।
मनहु पाकशासन शरासन सो शीर्ष चन्द्रिका मोर ॥
परिभृत वेणु हंस हंसिनि मन चातक नयन चकोर ।
मुरली अधर मधुर कल गरजत ललित राग
मिलि घोर ॥
वर्षे प्रेम नीर रस सरसे दर्श अनुपम जोर ।
देखे प्रभु ऐसे मनमोहन आवत ब्रजकी ओर ॥

६

भले तुम आए मेरे प्रात ।
रजनी सुख कहुं अनत कियो प्रिय जागे सारो रात ॥
झपि झपि आवत नयन उनींदे कहा कहौं यह बात ।
ज्यों जलरुह तकि किरण चन्द्रको अति सभीत
मुंदि जात ॥
कहुं चन्दन कहुं वन्दन लाग्यो देखियत सांवल गात ।
गङ्गा सरस्वती मानो यमुना अङ्ग हि मांझ लखात ॥
भली करी प्रण बोल निबाहे मेरे यह प्रभात ।
चीत स्वामी गिरिधर सुनि यातें वदन मोरि
सकुचात ॥

७

सांचे भए आए प्रभात ।
नन्दनन्दन रजनी कहां जागे कहिये सांवल गात ॥
पीक कपोल नि लगी तुम्हारे जावक भाल लखात ।
उर हि विराजत विनगुण माला मोतन लखि
सकुचात ॥
भली करी अब तहीं पग धारो जहां बिताई रात ।
चीत स्वामी गिरिधर काहे को भूठो सौंहें खात ॥

८

मोहन करतें दोहनि लीनी गोपद बछरा जोरें ।
हाथ धेनु स्तन वदन त्रियातन छोर छांकि छल छोरें ॥
आनन रह्यो ललित पय छींटें छाजत छवि तृण तोरें ।
मानहु निकसि कलङ्क कलानिधि दुग्धसिन्धु
मधि खोरें ॥
दे घूंघट पट ओट नोल हंसि कुंवर मुदित मुख मोरें ।
मनहु शरत् शशि कों मिलि दामिनि घेरि लियो
घनघोरें ॥
यह विधि रहसत विलसत दम्पति हेत हिये
नहिं थोरें ।
सूर उमगि आनन्द सुधानिधि मनो विलावलि फोरें ॥

९

अब हो देखे नवल किशोर ।
घर आवत ही तनक भए हैं ऐसे तनके चोर ॥
कछु दिन करि दधि माखन चोरी अब चोरत
मन मोर ।
विवश भई तन सुधि न संभारति कहति बात
भई भोर ॥
यह वाणी कहत ही लजानी समुझि भई जिय बोर ।
सूरश्याम मुख निरखि चली घर आनन्द लोचन लोर ॥

१०

युवती एक आवत देखो श्याम ।
द्रुमकी ओट रहे हैं आपुन यमुना तट गई बाम ॥
जल हलोरि गागरि भरि नागरि जब ही शीश उठायो ।
घरको चलो जाइ ता पाछे शिरते घट ढरकायो ॥
चतुर ग्वालि कर गह्यो श्यामको कनक लकुटिया पाई ।
और निसों करि रहे अचगरो मोसों लगत कन्हाई ॥
गागरि लै हंसि देत ग्वालि कर रीतो घट नहिं लेहों ।
सूर श्याम ह्यां आनि देहु भरि तब हि लकुट कर देहों ॥

११

गोपिका अति आनन्द भरी ।
माखन दधि हरि खात सखनि सङ्ग अति आनन्द खरी ॥
कर लै लै मुख स्पर्श करावति उपमा बड़ी सुभाई ।
मानहु कञ्ज मिलत शशि को लिये सुधा कौर कर आई ॥
जा कारण शिव ध्यान लगावत शेष सहस्त्र मुख गावत ।
सोई सूर प्रकट ब्रज भीतर राधा मन हि चोरावत ॥

१२

मन मन हंसति राधिका गोरो ।
ऐसे श्याम रहत ब्रज भीतर बूझति है भई भोरी ॥
तुम उनको कहुं देखे हैं के सुनो कहति हो बात ।
चतुराई नीके गहि राखो मुख मुरिके मुसिकात ॥
कब हूं ता कहूं सङ्ग परि हो तब हो लीजे चीनि ।
सूर श्यामको पीताम्बर मेरो बेसरि लीजो छीनि ॥

१३

तुमको कैसे श्याम लगी ।
न्हात रही जलमें सब तरुणी तब तुम कहां खगी ॥
अङ्ग अङ्ग अवलोकन कीन्हों कौन अङ्गपर रहे पगी ।
भूल्यो न्हान ध्यान तन भूलो नन्द सुनु उतते न डगी ॥
जानति नहीं कहूं नहिं देखे मिलि गई ऐसे मनहु सगी ।
सूरश्याम ऐसे तैं देखे मैं जानति दुःख दूरि भगी ॥

१४

श्याम अति राधा विरह भरे ।
कबहूं मटन कबहूं आनि हीं कबहूं पौरि खरे ॥
जननी आतुर करति रसोई देखि देखि हरि जात ।
कहा अवेरे करति तू अब री भूख लगी अति प्रात ॥
मैं वलि जाओं श्याम घन सुन्दर अब बैठो तुम आइ ।
सूर सखा सङ्ग सबै बोलावहु हलधर नहीं बताइ ॥

१५

मेरे नयन निहीं सब खोरि ।
श्यामवदन छवि निरखि जु अटके बहुरे नहीं बहोरि ॥
जो मैं कोटि यत्न करि राखति घूंघट ओट अगोरि ।
तो उड़ि मिले वधिकके खग ज्यों पलक पिञ्जर नि तोरि ॥
बुद्धि विवेक बल वचन चातुरी पहिल हि लई अंजोरि ।
अति अधीन भई सङ्ग डोलति ज्यों वगुड़ो वश डोरि ॥
अब धौं कौन हेत हमसों बहुरि हंसत मुख मोरि ।
मनहु सूर दोउ सिन्धु सुधा भरि उमगि चले मिति फोरि ॥

१६

मैं जानो पिय मनकी बात ।
धरणी पगनख कहा करावत अब सीखे ए घात ॥
तुम जानत जिय हम हि सयाने अरु सब लोक अयाने ।
रैन वसत कहुं और हमारे आवत नहीं लजाने ॥
यह चतुरई पढ़ी ताहो पे सो गुण हमते न्यारो ।
धन्य धन्य सूरदास के स्वामी काहे हमन विसारो ॥

१७

पिया पिय नाहिं मनायो माने ।
श्रीमुखवचन मधुर मृदु मादक कठिन कुलिश्य छुते जाने ॥

शोभित सहित सुगन्ध श्याम कच कल कपोल
अवभाने ।
मनहुं विधुन्तुद ग्रस्यो कलानिधि तजत नहीं
विनु दाने ॥
बाल भाव अनुसरति भरति दृग अग्र अंशुकन आने ।
जनु खञ्जरीट युगल जठरातुर लेत सुभच्छ अकुलाने ॥
नयन निकट ताटङ्क गण्ड मण्डल पर कविन वखाने ।
जनु खद्योत चमकि चलि सकत न निशिगत
तिमिर हिराने ॥
यह सुनिकै अकुलाय चले हरि छत अपराध छमाने ।
सूरदास प्रभु मिले परस्पर मानिनि मिलि मुसकाने ॥

१८

कितते आये हो नन्दलाल ऐसो कौन बाल जा
धोखे तुम आइ द्वार ह्वै झांके ।
मिटति नहीं चितवनि हित चित की आ है टेव
तिन तिन में पहिंचाने नयन बांके ॥
कबहुं जंभात कबहुं अङ्ग मोरत अटपटात
मुख बात न आवत रैन कहूं धों थाके ।
सूरदास प्रभु रसिक शिरामणि रसिक रसिकई
जानि नाम लेहु रहे जाके ॥

१९

मैं जाने हो जू ललना तहीं निशि धरिये जहां नयो
नेहरा ।
मुंह को हलभराई मोह सों कहन आये जियकी
जासों ताही सों तुम विनु सूनो वाको गेहरा ॥
निशाके सुखकी बात कहे देत अधर नयन उर
नख लागे छवि देहरा ।
वेग सवारे पग धारिये सूरके स्वामी ना तरु भीजे
गो पियरो पट आवतु है पिय मेहरा ॥

२०

जोई जोई प्यारे करें सोई मोहि भावे भावे मोहि
जोई सोई सोई करें प्यारे ।
मोको व भावति ठौर प्यारेके नयन निमें प्यारे भये
चाहें मेरे नयननिके तारे ॥
मेरे तन मन प्राणहु ते प्रियतम प्रिय अपने कोटिक
प्राण प्रियतम मो से हारे ।
श्रीहित हरिवंश हंस हंसिनी श्यामल गौर कहो
कौन करे जलतरङ्गिनो न्यारे ॥

२१

प्रात समय दोऊ रस लम्पट सुरति युद्ध जय युत
अति फूल ।
प्रेम वारिज घन इन्दु वदन पर भूषण अङ्ग छि
अङ्ग विकूल ॥
कछु रह्यो तिलक शिथिल अलकावलि वदनकमल
मानहु अलि भूल ।
श्रीहित हरिवंश मदन रङ्ग रङ्गि रहे नयन वैन कटि
शिथिल दुकूल ॥

२२

आजु ती युवति तेरो वदन आनन्द भरो पियके
सङ्गमके सूचत सुख चैन ।
आलस्य वलित बोल सुरङ्ग रङ्गे कपोल विथकित
अरुण उनीदे दोउ नयन ॥
रुचिर तिलकलेश कीर्ति कुसुमकेश शिर सोमन्त
भूषित मानो तैन ।
करुणाकर उदार राखत कछू न सार अशन वसन
लागत जब दैन ॥
काहेको दुरति भिरु पलटे प्रियतम चोर वश किये
श्याम शिखै शत् मैन ।
गलित उरसि माल शिथिल किङ्किणी जाल श्रीहित
हरिवंश लता गृह सैन ॥

२३

आजु प्रभात लता मन्दिरमें सुख वर्षत अति हर्ष
युगल वर ।
गौर श्याम अभिराम रङ्ग भरे लटकि लटकि
पग धरत अवनि पर ॥

कुच कुङ्कुम रञ्जित मालावलि सुरतिनाथ श्रीश्याम
धाम धर ।
प्रिया प्रेमके अङ्क अलङ्कृत चित्रित चतुर शिरोमणि
निज कर ॥
दम्पति अति अनुराग मुदित कल गान करत
मन हरत परस्पर ।
श्रीहित हरिवंश प्रशंस परायण गायन अलि स्वर
देत मधुर तर ॥

२४

प्यारे बोलि भामिनी आजु नीको यामिनी ।
भेंटु नवीन मेघ सौदामिनी ॥
मोहन रसिक राय री मारी ता सौं जु मान करै ऐसी
कौन कामिनी ।
श्रीहित हरिवंश श्रवण नि शुनत श्रीप्यारी राधिका
रमण सौं मिली गजगामिनी ॥

२५

कौन चतुर युवती प्रिया जाहि मिलत लाल
चोर ह्वै रैन ।
दुरवत क्यौं बहुरे शुनि प्यारे रङ्गमें गहीले चैन
में नयन ॥
उर नख चन्द्र विराजे पट अटपटे से बैन ।
श्रीहित हरिवंश सुरति राधापति प्रमथित मैन ॥

२६

आजु निकुञ्ज मञ्जुमें खेलत नवल किशोर नवीन
किशोरी ।
अति अनुपम अनुराग परस्पर शुनि अभूत
भूतल परयोरी ॥
विद्रुम स्फटिक विविध निर्मित घर नव कर्पूर
पराग न थोरी ।
कोमल किशलय शयन सुपेशल ता पर श्याम
निवेशित गोरी ॥
मिथुन हास परिहास परायण पीक कपोल कमल
पर भोरी ।
गौर श्याम भुज कलह मनोहर नीवी बन्धन
मोचत डोरी ॥
हरि उर मुकुर विलोकि अपनपौ विभ्रम विकल
मान युत भोरी ।
चिबुक सुचारु प्रलाइ प्रबोधित प्रिय प्रतिविम्ब
जनाइ निहोरी ॥
नेति नेति वचनामृत शुनि शुनि ललितादिक
देखति दुरि चोरी ।
श्रीहित हरिवंश करत करधूनन प्रणय कोपि
मालावली तोरी ॥

२७

अति हि अरुण तेरे नयन नलिन री ।
आलस्य युत इतरात रगमगे भये निशि जागरमे
खिन्न मलिन री ॥
शिथिल पलक में उठति गोलक गति विधयो
मोहन मृग सकतु चलि न री ।
श्रीहित हरिवंश हंस कल गामिनि सम्भ्रम देति
भंवरिनी अलिन री ॥

२८

बनो राधामोहन की जोरी ।
इन्द्र नीलमणि श्याम मनोहर सात कुम्भ तन गोरी ॥
भाल विशाल तिलक हरि कामिनी चिकुर चन्द्र
बिच रोरी ।
गजनायक प्रभु चालि गयन्दिनिगति वृषभानु
किशोरी ॥
नील निचोल युवति मोहन पट पीत अरुण
शिर खोरी ।
श्रीहित हरिवंश रसिक राधापति सुरतिरङ्ग में बोरी ॥

२९

आजु भावारी किशोर भावतो विचित्र और कछा
कहौं अङ्ग अङ्ग परम माधुरी ।
करत केलि कण्ठ मेलि बाहुदण्ड गण्ड गण्ड अंश
सरस हास रासमण्डल युरी ॥

श्याम सुन्दरी विहार बांसुरी मृदङ्ग तार मधुर घोष
नूपुरादि किङ्किणी चुरी।
देखति हरिवंश आलि नृत्यनी सुगन्ध चालि वारि
फेरि देति प्राण देह सों दुरी॥

१०

मञ्जुल कुल कुञ्जदेश राधा हरि विशद वेश
राकानभ कुमुदबन्धु शरत् यामिनी।
श्यामल द्युत कनक अङ्ग विहरत मिलि एक सङ्ग
नीरद मनो नील मध्य लसति दामिनी॥
अरुण पीत नव दुकूल अनुपम अनुराग मूल
सौरभ युत शीत अनिल मन्द गामिनी।
किसलय दल रचित शयन बोलत प्रिय चाटु बैन
मान सहित प्रति प्रतिकूल कामिनी॥
मोहन मन मथत मार परशत कुचनी विहार वेपथ
युत नेति नेति वदति भामिनी।
नर वाहन प्रभु सुकेलि वहु विधि भर भरित झेलि
सौरत रस रूप नदी जगत् पावनी॥
चलहि राधिके सुजान तेरे हित सुख निधान
रास रच्यो श्याम तट कलिन्द नन्दिनी।
नृत्यत युवती समूह रागरङ्ग अति कतूह वाजति
रस मूल मुरलिका आनन्दिनी॥
वंशीवट निकट जहां परम रमण भूमि तहां सकल
सुखद वहे मलय वायु मन्दिनी।
जाती ईषद् विकाश कानन अतिशय सुवास
राका निशि शरद् मास विमल चन्दिनी॥
नरवाहन प्रभु निहारि लोचन भरि घोष नारि
नख शिख सौन्दर्य्य काम दुःख निकन्दनी।
विलस हि भुज ग्रीव मेलि भामिनी सुखसिन्धु झेलि
नव निकुञ्ज श्यामकेलि जगत् वन्दिनी॥

११

नन्दके लाल हरो मन मोर।
हों अपनो मोतिन लर पोवति कङ्कर डारि गये
सखि भोर॥
वङ्क विलोकनि चालि छवीली रसिक शिरोमणि
नन्दकिशोर।
कहि कैसे मनु रहे श्रवण शुनि सरस मधुर
मुरलीकी घोर॥
इन्दु गोविन्द वदनके कारण को भये नयन चकोर।
श्रीहित हरिवंश रसिक रस युवती तू ले मिलि
अखि प्राण अकोर॥

१२

अरुण अधर तेरे कैसे के दुराऊं।
रवि शशि शङ्कि भजन किय अपवश अद्भुत रङ्गनि
कुसुम बनाऊं॥
शुभ को सेवक शिव कौस्तुभ मणि पङ्कजदल नि ले
अङ्ग नि लुपाऊं।
हर्षत इन्दु तजत जैसे जलधर सो भ्रम ढूंढ़ि
कहां हों पाऊं॥
अम्भ न दम्भ कछू नहिं व्यापत हिमकर तपे ताहि
कैसेके बुझाऊं।
श्रीहित हरिवंश रसिक नवरंग पिय भृकुटि भौंह
तेरे खञ्जन लराऊं॥

१३

अपनो बात मोसों कहि रो कामिनी औंगी मौंगी
रहति गर्वको माती।
हों तोसो कहत हारो सुनि री राधिका प्यारी
निशिको रङ्ग क्यों न कहत लजाती॥
गलित कुसुम वेणी सुनि री सारङ्ग नयनी छूटो लट
अंचरा वदत अरसाती।
अधर नि रङ्ग रङ्ग रच्यो री कपोलनि युवती चलत
गजगति अरझाती॥
रहसि रमी छवीले रसन वसन ढीले शिथिल
कसनि कञ्चुकी उर राती।
सखि सों शुनि श्रवण वचन मुदित मन चली
श्रीहित हरिवंश भवन मुसुकाती॥

२४

आजु मेरे कहे चलो मृगनयनी।
गावति सरस युवति मण्डल में प्रिय सङ्ग मिले भलो
पिक बैनी ॥
परम प्रवीण कोक विद्या में अभिनय निपुण
लाग गति लैनी।
रूपराशि सुनि नवल किशोरी पल पल घटति
चांदनी रैनी ॥
श्रीहित हरिवंश चली आतुर मन राधारमण
सुरति सुख दैनी।
रहसि रभस आलिङ्गन चुम्बन मदन कोटि कुल
भई कुचैनी ॥

२५

आजु देखि व्रजसुन्दरी मोहन बनी केलि।
अंग अंग बाहु दै किशोर जोर रूपराशि मानो
तमाल अरुझि रही सरस कनक बेलि ॥
नव निकुञ्ज भ्रमर गुञ्ज मञ्जु घोष प्रेमपुञ्ज
गान करत मोर पिकनि अपने स्वर सो मेलि।
मदन मुदित अङ्ग अङ्ग बीच बीच स्वर तरङ्ग
पल पल हरिवंश पिवत नयन चषक झेलि ॥

२६

सुनि मेरो वचन छवीली राधा।
तैं पायो रससिन्धु अगाधा ॥
तू वृषभानु गोपकी बेटी।
मोहनलाल रसिक रस भेटी ॥
जाहि विरिञ्चि उमापति नाए।
तापै तैं वन फूल बिनाए ॥
तेरो रूप कहत नहिं आवै।
श्रीहित हरिवंश कछुक यश गावै ॥

२७

खेलत रास रसिक व्रज मण्डन।
युवति नु अंश दिये भुज दण्डन ॥
शरद विमल नभ चन्द्र विराजै।
मधुर मधुर मुरली ध्वनि बाजै ॥
अति राजत घनश्याम तमाला।
कञ्चन वेलि बनी व्रजवाला ॥
बाजत ताल मृदङ्ग उपङ्गा।
गान मथत मन कोटि अनङ्गा ॥
भूषण बहुत विविध रङ्ग सारी।
अङ्ग सुगन्ध दिखावति नारी ॥
वर्षत कुसुम मुदित सुरयोषा।
सुनियति दिवि दुन्दुभि कल घोषा ॥
श्रीहित हरिवंश गमन मन श्यामा।
श्रीराधारमण सकल सुख धामा ॥

२८

मोहन लालके रस माती।
बधु गुपत गोवति कत मो सों प्रथम नेह सकुचाती ॥
देखि संभारि पीत पट ऊपर कहा चूनरी राती।
टूटी लर लटकति मोतिनकी नख विधु अङ्कित छाती ॥
अधर बिम्ब खण्डित मषि मण्डित गण्ड चलत
अरुझाती।
अरुण नयन घूमत आलस्य युत कुसुम गलित
लटपाती ॥
आजु रहसि मोहन सब लूटी विविध आपनी थाती।
श्रीहित हरिवंश श्रवण सुनि भामिनि भवन
चली मुसुकाती ॥

२९

तेरे नयन करत दोउ चारी।
अति कुलकात समात नहीं कहुं मिले हैं कुञ्ज
विहारी ॥
विथुरी मांग कुसुम गिरि गिरि परे लटकि रही
लट न्यारी।
उर नख रेख प्रगट देखियति है कहा दुरावति प्यारी ॥
परी है पीक सुभग गण्डन पर अधर नि रङ्ग सुकुमारी।
श्रीहित हरिवंश रसिकिनी भामिनि आलस्य
अङ्ग अङ्ग भारी ॥

४०

नयन नि वारो कोटिक खञ्जन।
चञ्चल चपल अरुण अनियारे अग्रभाग बन्यो अञ्जन॥
रुचिर मनोहर वङ्क विलोकनि सुरति समरदल
गञ्जन।
श्रीहित हरिवंश कह्यो न बनै छवि सुखसमुद्र
मनरञ्जन॥

४१

राधा प्यारी तेरे नयन सलोल।
तै निज भजन कनक यौवन तन लिये हैं
मनोहर मोल॥
अधरनि रङ्ग अलक लट छूटी रञ्जित पीत कपोल।
तू रस मगन भई नहिं जानति ऊपर नील निचोल॥
तेरे कुचयुग पर नखरेखा प्रगटानो शङ्कर
शिर शशि टोल।
श्रीहित हरिवंश कहति कछु भामिनी अति
आलस्यसों बोल॥

४२

री सजनी आजु गोपाल रास रस खेलतु पुलिन
कल्पतरु तीर।
शरद् विमल नभचन्द्र विराजै रोचक त्रिविध समीर॥
चम्पक वकुल मालती मुकुलित मत्त मुदित
अलि कीर।
देशी सुगन्ध राग रङ्ग नीको व्रज युवतिनकी भीर॥
मघवा मुदित निशान बजायो व्रत छाड़्यो मुनि धीर।
श्रीहित हरिवंश गमन मन श्यामा हरत मदन
घन पीर॥

४३

आजु नीको बनी राधिका नागरी।
व्रज युवति यूथ में रूप अति चतुरई सोलह शृङ्गार
गुण सबनते आगरी॥
कमल दच्छिण भुजा वामभुज अंश सखि गावति
सरस मिलि मधुर स्वर राग री।
सकल विद्याविदित रहसि हरिवंश हित मिलित
नव कुञ्ज वर श्याम बड़ भाग री॥

श्रीकृष्णाय नमः

विलावल—तिताला

धन्य आजु यह दर्श दियो।
धन्य धन्य जासों अनुरागी तन जानो नहिं और वियो॥
हम ता श्याम यह भलो भावतो भले भलो मिलि
भलो करो।
यह मेरे जिय अति हि अचम्भित तो विछुरत क्यों
एक घरी॥
जाहु तहीं सुख दीन्हों मोको वे शुनि के रिस पावैगो।
सूर श्याम अति चतुर कहावत वह सों मन न
मिलावैगो॥

२

क्यों आये उठि भोर यहां।
काहे को इतनो शरमाने रैन रहे फिरि जाहु तहां॥
हम को कहा इतो गरुवाई उनहो वरो न
संभारो जू।
उन आये ह्यां नाहीं जान्यो अज हूं ले पग धारो जू॥
हम हूं बोलि वहां हीं लीजो डर उनके हम हू कोले।
सूर श्याम तिन हो सुख दीजियो विलसे सङ्ग
तुम को ले॥

३

रसिक रसिकई जानि परी।
नयन निते अब न्यारे हूजे तब हो ते अति रिस
निभरी॥
तुम यौवन अरु सो नवयौवनि एते पर सब गुण
नि भरी।
लाज नहीं मेरे गृह आवत जाहु जाह करि प्रिय
भावरी॥

अञ्जन अधर कपोल नि वन्दन पीक पलक छवि देखि डरी।
सूरश्याम रति चिह्न दिखावन मेरे आये भले हरी ॥

४

बार बार मैं कहति हौं पिय तहीं सिधारो।
आये हो मनहरण का हरि नाम तुम्हारो ॥
भली बनी छवि आजु की क्यों लेत जंभाई।
रैन आजु सोये नहीं रति काम जगाई ॥
वह रति तुम रति नाथ हो हम कैसे भावे।
सूर श्याम तुम बहु गुणी जे तुम हि रिझावे ॥

५

आय गई व्रजनारी तहां।
सौंह करत प्रिय प्यारी आगे आनन्द विरह महां ॥
प्यारी हंसी देखि सखियनि को अन्तर रिस है भारी।
नयन सैन दे अङ्ग अङ्ग निरखति प्रिय शोभा अधिकारी॥
श्याम रहे मुख मूंदि सकुचि के युवति परस्पर हेरे।
सूर प्रभु अङ्ग अङ्ग अनूप छवि कहं पायो केहि केरे ॥

६

तब नागरी कहति सखियनि सों एते पर ए सौंह करे।
दर्शन प्रात देत हैं हमको निशि और निके चित्त हरे॥
तुम हौ देखि लेहु अङ्ग बानिक एते पर क्यों सखी परे।
कृपा करे अब तहीं सिधारो मो आगेतें अब जु टरे॥
यह छवि देखि सनाथ भई मैं अब ताही पर जाइ ढरे।
सूर श्याम रिस देखि चले डरि कह्यो सखी अब ह्यां न फिरे॥

७

प्रिय छवि निरखत नागरी अङ्गदशा भुलानी।
अन्तर्गत आनन्द भरा ललिता हर्षानी ॥
सहचरि सों कहि सुमन ले हरि फेंट भराये।
अति अधीन पिय ह्वै गये वश परे पराये॥
मांग सुमन विछाव हो पग निरखि निहारे।
फूले फूल धर धरे डलिया चुनि डारे ॥
ऐसे वश प्रिय वामके सुख सूरज जाने।
जे जेहि भाव निहारि भजे तेहि तैसे माने ॥

८

लाल उनीदे भये।
राजत हैं रतनारे नयन मानहु नलिन नये ॥
पीक कपोल ललाट महावर वन्दन वलित खये।
जनु तन जामें सद्य अरुण दल कामके वीज बये ॥
विन गुण हार पयोधर मुद्रा हृदय सुदेश ठये।
अञ्जन अधर सुधामन्त्र लिख्यो रति दिच्छा ले न गये।
सूर श्याम विथुरे कच मुख पर नख नाराच हये।
ता ऊपर आनन्द इन्दु जनु मानहु समर जये ॥

९

नयन उनीदे भये रङ्ग राते।
मानहु सुरङ्ग सुमन पर सजनी फिरत भृङ्ग मदमाते ॥
प्रेम पराग पांखुरी पलदल प्रफुल्ल मदन लता ते।
शुभग सुवास विशाल विलोकनि प्रकट प्रीति करि ता ते ॥
तैसो ई मारुत मन्द जम्हावरि मिलत मुदित छवि या ते।
सींचे सूरश्याम माननि कर हित सों केलि कला ते ॥

१०

काहे को पिय भोर हो मेरे गृह आये।
इतने गुण हमपे कहां जे रैन रमाये ॥
ताहो पै पग धारिये चकित मैं जाने।
विनगुण गड़ि माला रहो नहीं कहुं विहराने ॥
आये हो सुख देन को ऐसो हितकारी।
सूर श्याम तुम को का वैसो नारी॥

११

कृपा करी उठि भोर ही मेरे गृह आये।
अब हम भई बड़ भागिनी निशि चिह्न देखाये ॥
जावक भाल नि सोहियो नीके वश पाये।
नयन देखि चकित भई क्यों पान खवाये ॥
अधर नि पर काजर बन्यो बहु रङ्ग कढ़ाये।
वन्दन विन्दली भाल की भज आप बनाये ॥
यह मो सों तुम हो कहो उर क्षत अरुणाये।
सूर श्याम यश राशि हो धन्य त्रिया हंसाये॥

१२

हरि श्याम शिरवांह गहो ।
चूक परी हमें को यह बखूशी आवन को कहि गये हरो ॥
रिसनि उठी झहराइ झटकि भुज छुवत कहा पिय शरम नहो ।
भवन गई आतुर ह्वै नागरि जे आई सुख सब कहो ।
मेरे महल आजु तें आवहु सौंह नन्दकी कोटि कहो ।
सूरदास जब लों जग जोवों मिलो नहीं वह काम दहो ॥

१३

बहुरि मिलहुगो कालि हो चित समझि सयानो ।
मेरो कह्यो न क्यों करे क्या होहि अयानो ॥
अमल हि औषध अनल है सब जानि रहो हो ।
काहे को हठ करति हो बे काज बहो हो ॥
धरणीधर व्याकुल खरे री गर्व गहेली ।
सूर कह्यो सुनि मानि ले मैं कहति सहेली ॥

१४

नन्दसूनु बहुनायक अनत हि रहे जाई ।
वह अभिलाष करति रही ता को बिसराई ॥
बासर ऐसो हो गयो निशि याम तुलानो ।
नारि परो अति सोचमें विरह अकुलानो ॥
आवन कहि गये सांझ हो अज हूं नहीं आये ।
को धौं कतहुं रमि रहे फग परे पराये ॥
वे हो है बहु नायको लायक गुण भारो ।
सूर श्याम कुमुदा भवन सुधि करि पग धारो ॥

१५

भलो कीन्हीं आए हो ललना हमारे भोर भए भोरें ।
हम हिं दिखावन रतिके चिह्न जानति हों उनि किये बहुत निहोरे ॥
काहे को होत उघारे प्रीतम लोक निहारि देखि हैं खोरे ।
रसिक प्रीतम तुम ह्वांई सिधारो जाके निशि बसि भए दृगनि लाल लाल डोरे ॥

१६

भलो करो जू आए सवारे ।
बहुरि प्रभात काउ दोहोहगो प्रकट देखिये आइ नि मारे ॥
पहने पीत नोल पट ओटे ऐसोको चतुर धन भावत ।
एते मान देह सुधि भूलो तुम हो आपुनपो बिसरावत ॥
पाउ धारिये बहुत बेर भई कर गहि कनक तलय बैठारे ।
परमानन्द प्रभु तुम से और को सन्ध्या वचन वदे नहिं टारे ॥

१७

रसिक शिरोमणि नन्दलाल । (रङ्ग भीने हो)
लाड लड़ाई नवल बाल ॥ ,,
जावक लागो सोहे शिथिल पाग । ,,
प्रिया मनाये भूरि भाग ॥ ,,
रूप छके लोचन घुमात । ,,
प्रेम उमगि ऐंड़ात गात ॥ ,,
उर सोहे मलगजी माल । ,,
मदन मत्त डगमगी चाल ॥ ,,
बाहु औं उगव्योक फूल । ,,
दिये है उसीसो सुखको मूल ॥ ,,
अलक निकसि रहो शोभा देतु । ,,
काम केलिके विजय केतु ॥ ,,
महकि रहो तन अति सुवास । ,,
अलि गावत कोर्ति रास रास ॥ ,,
जाहो सों मिले हमें चैन । ,,
सहि न सकत वह गूढ़ सैन ॥ ,,
राम राय प्रभु सुनत हसे । ,,
कोउ भागवान्‌के हिये बसे ॥ ,,

१८

रति रसकेलि विलास हास रङ्ग भीने हो ।
कोउ सुन्दरि नारिके लगे गात रङ्ग भीने हो ॥
अरुण नयन अति रसमसात रङ्ग भीने हो ।

मनो भोर भये जलजात रङ्ग भीने हो ॥
बोलत बोल प्रतीतिके रङ्ग भीने हो।
सुन्दर सांवल गात लाल रङ्ग भीने हो ॥
प्रिया अधर रस पान मत्त रङ्ग भीने हो।
कहत कछु बात लाल रङ्ग भीने हो॥
अति लोहित दृग रगमगे रङ्ग भीने हो।
मनो भोर जलजात लाल रङ्ग भीने हो ॥
चाल शिथिल भ्रू भाल शिथिल रङ्ग भीने हो।
शशि मुख शिथिल जंभात लाल रङ्ग भीने हो ॥
केश शिथिल राकेश शिथिल रङ्ग भीने हो।
वयक्रम शिथिल सिरात लाल रङ्ग भीने हो ॥
गोविन्द प्रभु नन्दसुत किशोर रङ्ग भीने हो।
बहुनायक विख्यात लाल रङ्ग भीने हो ॥

१९

सांझके सांचे बोल तिहारे।
रजनी अनृत जागि नन्दनन्दन आए हो निपट सवारे॥
आतुर भए नील पट ओढे पीरे वसन विसारे।
कुम्भनदास प्रभु गोवर्द्धनधर भले वचन प्रतिपारे ॥

२०

तुम्हारे पूजिये पिय पाइ।
कैसी कैसी उपजत तुम पें कहत बनाइ बनाइ ॥
असन अधर क्यों श्याम भए क्यों परे पट पलटाइ।
रुचिर कपोल पीक कहां लागी उर जयपत्र लिखाइ।
गिरिधर लाल जहां निशि जागी तहीं देहु सुख जाइ।
कुम्भनदास प्रभु छाड़ो अटपटो अब तुम्हें का
पतिआइ ॥

२१

कहो धौं आज कहां बसे लाल भोर भए आये
डगमगत पग।
खरे सकारे क्यों उठे मोहन बोलत तमचर खग ॥
कज्जल अधर लटपटी पाग उर विलुलित कुसुम
माल कुच पर स्रग।
अरुण नयन आलस्य जंभात प्रिय रैन कियो जग ॥

रतिके चिह्न तन प्रकट देखियत काहेको दुराव
करत श्याम सुभग।
कुम्भनदास प्रभु रसिक गिरिधर परे चतुर
नागरी फग ॥

२२

कहो धौं कहां तुम रैनि गंवाई लाल अरुण
उदय आये।
कौन सकोच श्याम घनसुन्दर तमचर बोलत
उठि धाये ॥
आंखि देखि कहा साखि बूझिये रतिके चिह्न
तन प्रकट लगाये।
कुम्भनदास सुजान गिरिधर काहे को दुरत प्रिय
जानि पाये ॥

२३

ऐसी बात न लालन क्यों मन माने।
उत्तर बनाइ बनाइ तासो कहिये जो इह न जाने ॥
रतिके चिह्न प्रकटत देखियत है कैसे दुरत दुराने।
कुम्भनदास प्रभु गोवर्द्धनधर हो तुम खरे सयाने ॥

२४

आज अरुण अरुण डोरे लालके दृगनि लागत हैं भले।
वन्दन परे पगन अलि मानो कञ्ज दलनि पर चले ॥
लालकी पगिया में न समात कुटिल अलि संभिले।
नन्ददास मधुप पुञ्ज मानो सोवततें कलमले ॥

२५

आवत लाल गोवर्द्धनधारी डगमगो चाल लटपटी पाग।
आलस्य रैन सरस रङ्ग रञ्जित प्रियाप्रेम नव नव
अनुराग ॥
विलुलित माल मलगजी उरपर सुरति समरको
लगो पराग।
चुम्बन श्याम अधर कल गावत रतिसुख भाव
विलावल राग ॥
पलटि परे पट नील सखीके रस मद्य झीलत
मदन तड़ाग।

वृन्दावन वीथिनि अवलोकत कृष्णदास लोचन
बड़ भाग ॥

२६

कहां दुरति प्रिय जान शिरोमणि रतिके चिह्न
देखियत हैं न्यारे।
अरुण नयन घूमत आलस्य मह कछुक जंभात
अधर मसि कारे ॥
श्याम अङ्ग नभ नख पद न्यारे चन्दन छांट बने
मानो तारे।
अवर अनेक कहां ला वरणों इह नागरता जु
आए हो सवारे ॥
मोहनलाल गोवर्द्धनधारी कटितट नील वसन
बने प्यारे।
कृष्णदास कहहु धों प्रीतम चतुर पीत पट कहां
बिसारे ॥

२७

माया कीन्हीं बलवीर आए तमचुरके बोल।
नागर नन्दलाल कुंवर पहिरे नील निचोल ॥
मोहन रगमगे अलसात कमल नयन अति सलोल।
अधरनि नख रेख बनी अरुण श्याम कपोल ॥
मृगमदको तिलक रच्यो सिन्दूरके झोल।
ऊपर नख चिह्न रतन क्यों दुरत अमोल ॥
कृष्णदास प्रभु गिरिधर मांगत मनमोल।
अपनो पीताम्बर दै लियो मदन मोल ॥

२८

मोहन कुन्ददाम उरपर कुच कुङ्कुम रञ्जित बनी।
गन्ध लुब्ध अलि पंक्ति न तजत केलि धन धनी ॥
मोहन अधर श्याम मुख जंभानि सङ्गम श्वास सनी।
अवर चिह्न अगणित प्रिय न गनी गणना गनी ॥
कृष्णदास प्रभु नवरङ्ग युवति नि चिन्तामनी।
गोवर्द्धनधरण धीर रसिकनि चूड़ामनी ॥

२९

लाल तेरे चपल नयन अनियारे।
नन्दकुमार सुरति रस भीने प्रेम रङ्ग रतनारे ॥
कछु असरौधे चकित चहुं दिशि नव वर यौवन वारे।
मानो शरद् कमल पर खञ्जन मधुप अलक घुंघरारे ॥
ए जु मीन घनश्याम सिन्धु में विलसत लेत झुलारे।
गोवर्द्धनधर जान मुकुट मणि कृष्णदास प्रभु पारे ॥

३०

सोई भली जिन तुम विरमाये।
पूजा करि भामिनी सब निशि तव पद उर नख
कुसुम चढ़ाये ॥
अरुण दिशा अब हो नहिं देखो रटत मधुप
कमल नि समुदाये।
कृपनिधान रसिक नन्दनन्दन कौन सकोच
सवारे आये ॥
सन्ध्या वदे बोल मनमोहन कीन्हीं भली और
अवराए।
आलस्य नयन जंभात अधर वर रतिके चिह्न नहिं
दुरत दुराए ॥
अपने पीत पट दिये सखी को छीनि लए नील
वसन पराए।
कृष्णदास प्रभु गिरिवर धर प्रिय युवति सदसि
उदार कहाए ॥

३१

लालन तहां हो जाहु जाके रस लम्पट अति।
आलस्य नयन देखियत रसभरे प्रकट करत
प्यारी रति ॥
अधर दशन क्षत वसन पीक सह अरु कपोल
श्रमविन्दु देखियति।
नख लेखनि तन लिखी श्यामपट जयपताका रण
जीत्यो रतिपति ॥
कैतव वाद तजो पिय हम सों जैसे तन श्याम
तैसे हो मन हो अति।
गोविन्द प्रभु पिय पाग संवारहु गिरत कुसुम
शिर मालति ॥

११

आजु भरे हैं शिथिल देखियत हो बहु रसभरे लाल।
सब निशि जागे अति शिथिल अरुण दोऊ अम्बुज
नयन विशाल॥
शिथिल भूषण कटि वसन शिथिल अति शिथिल
मलगजी माल।
लटपटी पाग शिथिल अलकावलि विगलित
कुसुम गुलाल॥
शिथिल शिखण्ड शीश लटकि रहे आए भोर
डगमगत चाल।
शिथिल वेणु कछु कहत आनको आन गोविन्द
प्रभु पिय हो बेहाल॥

बिलावल—एकताला

जागि पाए हो ललना वलि वलि व्रज नृपति कुंअर।
जाके सब निशि जागि आये तहां ई अनुसर॥
अपनी प्यारीके रतिके चिह्न हम हि दिखावत
आए देत लोन दाढ़े पर।
गोविन्द प्रभु सांवल तन तैसे ई हो मन जनमत हो
तब हुं युवति प्राण हर॥

२

वलि वलि पाउ धारिये आजु कछु मेरो लहनो
व्रजनृप सुत भोर आए हो रसभरे।
भई बड़ो बार पाउ धारिये हमनि वाजो वास्या
अगर जावा से वोरा ले आगे धरे॥
कहि न सकति एक बात लालन जाके निशि वसे
ताके वसन पलटि परे।
गोविन्द प्रभु प्रिय जान शिरोमणिके बल दोऊके हरे॥

३

प्रात समय दधि मथति यशोदा प्रमुदित कमल
नयन गुण गावति।
अति हि मधुर गति कण्ठ सुघर अति नन्द
सूनुके चित हि बढ़ावति॥
नील वसन तन सलिल सजल मन दामिनि
विम्ब भुजदण्ड चलावति।
चन्द्रन वनि लट लटकि छवीली मनहु अमृत
रस राहु चुरावति॥
गोरस मथत नाद एक उपजत किङ्किणी सुनि सुनि
श्रवण रमावति।
सूर श्याम अञ्चल गहि ठाढ़े काम कसोटी कसि
दिखरावति॥

४

नन्दजूके बारे कान्ह छांड़ि दे मथनिया।
बार बार कहे माता यशोमति रनिया॥
नेकु रहो माखन देहों मेरे प्राण धनिया।
आरि जिनि करो वलि गई हों न्योछनिया॥
सूर नर मुनि जाको ध्यावे मुनि जनिया।
सूर श्याम देखि सब भूली गोप धनिया॥

५

नेक रहो माखन द्यों तुम को।
ठाढ़ी मथति जननि दधि आतुर लवनी नन्द सूनु को॥
मैं वलि जाओं श्याम घनसुन्दर भूख लगी तुम्हें भारो।
बात कहूं को बूझति श्याम हि फेर करत महतारो॥
कहत बात हरि कछू न समुझत झूठे हि भरत
हुंकारो।
सूरदास प्रभुके गुण तुरत हि विसरि गई नन्दनारो॥

६

वातन हो सुत लाइ लयो।
तब लों मथि दधि जननी यशोदा माखन करि
हरि हाथ दयो॥
लै लै अधर परस करि जेंवत देखत फूल्यो
मात हियो।
आपु हि खात प्रशंसत आपु हि माखन रोटी
बहुत प्रियो॥
जो प्रभु शिव सनकादिक दुर्लभ सुतहित वश
करि नन्द लियो।
यह सुख निरखत सूरज प्रभु को धन्य धन्य पल
सुफल जियो॥

७

दे री मैया दोहनी दुहि हों मैं गैया।
माखन खाये बल भयो करि नन्द दुहैया ॥
कजरी धेंदुरी धूमरी धौरी मेरी गैया।
दुहि ल्याऊं मैं तुरत ही तू करि दे घैया ॥
ग्वालनि की सर दुहत हूं बूझहु बल भैया।
सूर निरखि जननी हंसी तब लेति वलैया ॥

८

बाबा मोकों दुहन सिखायो।
तेरे मन प्रतीति न आवे दुहत दुहत अङ्गुरिय
नि भाव बतायो ॥
अङ्गुरिन भाव देखि जननी तब हंसिके श्याम हि
कण्ठ लगायो।
आठ वर्षको कुंवर कन्हैया इतनी बुद्धि कहांते पायो॥
माता ले दोहनी कर दीन्हीं तब हरि हंसत
दुहन को धायो।
सूर श्याम को दुहत देखि तब जननी मन अति
हर्ष बढ़ायो ॥

९

जननी मथति दधि दुहत कन्हाई।
सखा परस्पर कहत श्याम सों हम हूंते तुम
करत चंड़ाई ॥
दुहन देहु कछु दिन अरु मोकों तब करि हो
मो सम सरिआई।
जब लों एक दुहोगे तब लों चारि दुहों तो
नन्द दोहाई ॥
झूठे हि करत दाहाई प्रात उठि देखहिंगे तुम्हरो
अधिकाई।
सूर श्याम कह्यो कालि दुहेंगे हम हु तुम ह
मिलि होड लगाई ॥

१०

उठि प्रात ही राधिका दोहनी कर लाई।
महरि सुता सों तब कह्यो कहं चली अतुराई ॥
खरिक दुहावन जाति हो तुम्हरी सेवकाई।
तुम ठकुराइनि घर रहो मोहि चेरी पाई ॥
रीती देखी दोहनी कत खीझत धाई।
कालि गई अवसेर के ह्यां उठे रिसाई ॥
गाइ गई सब ल्याइके प्रात हि नहिं आई।
ता कारण मैं जाति हों अति करत चंड़ाई ॥
यह कहि जननी सों चली व्रज को समुहाई।
सूर श्याम गृह द्वार ही गौ करत दुहाई ॥

११

सुता महर वृषभानुकी नन्द सदन हि आई।
गृह द्वारे ही अजिरमें गउ दुहत कन्हाई ॥
श्याम चिते मुख राधिका मन हर्ष बढ़ाई।
राधा मुख हरि देखिके तन स्मृति भुलाई ॥
महरि देखि कीर्ति सुता तेहि लियो बोलाई।
दम्पति को सुख देखि के सूरज वलि जाई ॥

१२

आजु भोर ही राधिका यशोमति गृह आई।
महरि कह्यो हंसि दधि मथो वृषभानु दुहाई ॥
शुनि आयस ठाढ़ी भई कर नेत सुहाई।
रीती माट विलोव ही चित जहां कन्हाई ॥
उनकी गति ह्यां कहा कहों जिन दृष्टि चुराई।
लई या नोई वृषभ सों गइया विसराई ॥
यशोदा निरखे दूरितें मनमें मुसिकाई।
सूरदास दम्पति कथा मोपे वरणि न जाई ॥

१३

महरि कहति री लाड़िली किहि मथन सिखायो।
कहु मथनी कहु माट है चित कहां लगायो ॥
क्यों मेरे घर आइ कें तें सब विसरायो।
मथन नहीं मोहि आव ही तुम सोंह दिवायो ॥
तिहि कारण मैं आइके तव बोल रखायो।
तब नन्द घरनी मथि दधि यहि भांति बतायो ॥
हंसि बोली तब राधिका कह्यो अब मोहि आयो।
सूर निरखि मुख श्यामको तहं ध्यान लगायो ॥

१४

दधि मथति ग्वालि गर्वीली री।

ठनक झुनक कर कङ्कण बाजे बाहु डुलावति
ढोलो री॥
आपादेव दधि माखन मांगत नाहिं न देति
हठीलो री।
भरी गुमान विलोवनि लागो अपुने रङ्ग रङ्गीलो री॥
हँसि बोल्यो नन्दलाल लाड़िलो कछु एक बात
कहोलो री।
परमानन्द नन्दनन्दनको सर्वस्व दियो है छबोलो री॥

१५

दधि मन्थन करे नन्दरानी हो।
बारे कन्हैया आरि न कीजे छाड़ि न देहु मथानी हो॥
वारी मेरे मोहन कर पिरांइगी कौन चित्तमें ठानी हो।
हरि मुसिकाइ जननि तन चितयो सुधि सागरकी
आनी हो॥
जे गुण सरस्वती छन्दनि गाए नेति नेति मधु
बाणी हो।
परमानन्द यशोदा रानी सुत सनेह लपटानी हो॥

१६

प्रात समय उठि यशोमती दधि मन्थन कीन्हीं।
प्रेम सहित नवनीत ले सुतके मुख दीन्हीं॥
औटि दुग्ध धैया कियो हरि रुचि सो लीन्हीं।
मधु मेवा पक्वान्न ले हरि आगे कीन्हीं॥
इह विधि नित्य क्रीड़ा करे जननी सुख पावे।
गोविन्द प्रभु आनन्दमें आंगनमें धावे॥

१७

भूली दधिका मन्थन करिवो।
देखत रसिक नन्दनन्दन का डगमगी पग धरिवो॥
रहि गई चितै चित्र जैसे एकटक नयन निमेष
न धरिवो।
चतुर्भुज प्रभु गिरिधरण जनायो नाहीं मैं मणि
माणिक हरिवो॥

१८

देखा री माई कैसो है ग्वालिन उलटी रई मथनिया
बिलोवे।
बिनु नेती कर चञ्चल पुनि पुनि नवनीते टकटोवे॥
निरखि स्वरूप चाहटि चित्त लाग्यो एकटक
गिरिधर मुख जोवे।
कुम्भनदास चिते रही थकथक औरे भाजन धोवे॥

१९

ए री आनन्द में दधि मथति यशोदा कनक
मथनिया घूमे।
नितंत कान्ह ललित लोचन पग परत अटपटे भूमे॥
चारु चखोडा मध्य कुटिल कच श्रम मुकुता ताहू मे।
मनो मकरन्द विन्दु ले मधुकर सुत हित प्यावत भूमे॥
बोलत श्याम तोतरी बतियां हंसि हंसि दतियां दूमे।
सूरदास वारी छवि ऊपर जननी कमल मुख चूमे॥

२०

आज सखी री प्रात समय दधि मन्थन उठी अकुलाई।
भरि भाजन मणि खम्भ निकट धरि नेत लियो
कर जाई॥
सुनत शब्द हरि ता समीप हंसि उठि आए हरवाई।
मोही बाल विनोद मोद अति नयननि नृत्य दिखाई॥
भूलो तन प्रतिबिम्ब विलोकति रीझो सहज स्वभाई।
चितवनि चलनि हरो चित चञ्चल चिते रही
चित चाई॥
माखन पिण्ड लयो दोउ कर तब ग्वालि रही
मुसिकाई।
सूरदास प्रभु सर्वस्वको सुख सको न हृदय समाई॥

२१

छवि सों डोलति भुज छवि सों डोलति कटिपर
वेणी या विलोवनि पर वारों री कोटि नाच।
दधिको घुमर अरु ध्वनित चाल अरु ध्वनित
घण्टिका ध्वनित जे नूपुर करत सांच॥
गौर आरक्त अति शोभित सुख श्रमको वदन ऐसो
मनहु कनक लागो आंच।
धौंधोके प्रभुको मन मोहति एई कर भेद इह नेतको
खेंच खांच॥

२२

भावत हरिके बाल विनोद ।
कैसो राम निरखि सुख प्रहसित प्रमुदित रोहिणी
मात यशोद ॥
अञ्जन पङ्क राग तन शोभित चल नूपुर ध्वनि सुनि
मन मोद ।
परम सनेह बढ़ावत मात निरख किरख
किठत उठि गोद ॥
अतिशय चपल सदा सुखदायक निशदिन रहत
केलि रस ओद ।
परमानन्द प्रभु अम्बुज लोचनि फिरि फिरि चितवत
व्रज जन कोद ॥

२३

बालदशा गोपालकी सब काहू भावे ।
जाके भवनमें जात हैं ले गोद खिलावे ॥
श्यामसुन्दर मुख निरखि के अविरल सचु पावे ।
लाल बाल कहि गोपिका हसि भलो मनावे ॥
चुटकी दे दे प्रेमसो करताल बजावे ।
परमानन्द प्रभु नाच हों शिशुता हि जनावे ॥

२४

बालविनोद गोपालको देखत मोहि भावे ।
प्रेम पुलकि आनन्द भरी यशोमती गुण गावे ॥
बल समेत घन सांवरो आंगनमें धावे ।
वदन चूमि कोरा लियो सुत जानि खिलावे ॥
शिव विरिञ्चि मुनि देवता जाको पार न पावे ।
सो परमानन्द ग्वालि को हसि भलो मनावे ॥

२५

हरिको विमल यश गावत गोपाङ्गना ।
मणिमय अङ्गण नन्दरायके बालगोपाल तहां
करे रङ्गना ॥
गिरि गिरि उठत घुटुरुअनि टेकत जानि पाणि
मेरो छगनको मङ्गना ।
धसर धुरि उठाय गोद ले मात यशोदाके प्रेमको
भंजना ॥
विपद पुहमिना पोत वन आलस्य भयो अब जो
कठिन भयो देहरो को लङ्घना ।
परमानन्द प्रभु भक्त वत्सल हरि रुचिर हार वर कण्ठ
सोहे बङ्गना ॥

२६

मणिमय अङ्गण नन्दके खेलत दोउ भैया ।
गौर श्याम जोरो बनी बलि कुंवर कन्हैया ॥
नूपुर कङ्कण किङ्किणी रुन झुन झुन बाजे ।
मोहि रहि व्रजसुन्दरी मनसा सुत लाजे ॥
सङ्ग सङ्ग यशोमति रोहिणी हित कारण मैया ।
चुटकी दे दे नचाव हो सुत जानि कन्हैया ॥
नील पीत पट ओढनी देखत मोहि भावे ।
बाललीला विनोद सों परमानन्द गावे ॥

२७

यह तन वारि डारों कमल नयन पर सांवलियो
मोहि भावे रे ।
चरण कमलको रेणु यशोदा ले ले शिरसि चढ़ावे रे ॥
ले उछंग मुख निरखन लागी राई नोन उतारे रे ।
कौन निरासो दृष्टि लगाई ले ले अञ्चल झारे रे ॥
तू मेरो बालक तू मेरो ठाकुर तोहि विश्वम्भर राखे रे ।
परमानन्द स्वामी चिरञ्जीवहु बार बार यों भाखे रे ॥

२८

तनक कनक की दोहनी दे दे री मैया ।
तात दुहन सिखवन कह्यो मोहि धौरी गैया ॥
हरि विषमासन बैठिके मृदु कर थन लीन्हों ।
धार अटपटी देखिके व्रजपति हंसि दीन्हों ॥
गृह गृहते आई सबे देखन व्रजनारी ।
सचकित तन मन हरि लियो हंसि घोष विहारी ॥
द्विज बुलाइ दक्षिणा दई मङ्गल यश गावे ।
परमानन्द प्रभु लाड़िलो सुखसिन्धु बढ़ावे ॥

२९

बाबा जी मोहि दोहन शिखाउ ।
गाय एक सूधो सो मिलवहु हों नीके दुहुंके बछराउ ॥

ले गोद्द मैलो चरण निमें लाडिलो कुंवर मोवत
वत्सराज ।
पाणि पयोधर धरे धेनुके भाजन वेगि भरो उबटाज ॥
तब नन्दरानी नयन सिरानो द्विज बुलाइ दक्षिणा
दिवाज ।
वारि फेरि पीताम्बर हरि पर परमानन्द दासहिं
पहिराज ॥

२०

बोलन लागे भया मैया ।
बाबा कहत नन्दरायसों अरु हलधर सों भैया ॥
खेलत फिरत सकल गोकुलमें घर घर बजत बधैया ।
परमानन्द दासको ठाकुर व्रजजन केलि करैया ॥

२१

नन्द जूजे लालनको छवि आछी ।
चरण पैंजनियां घुम घुम बाजे चलत पूंछ गहि वाछी।
अधर अरुण दधि मुख सों लपट्यो अति राजत
तन छोटें छाछी।
परमानन्द प्रभु बालक लीला चितवनका फिरि पाछी॥

२२

हरि लीला गावति गोपीजन आनन्द हो में
निशि दिन जायो ।
बाल चरित्र विचित्र मनोहर कमल नयन व्रजके
सुखदायी ॥
दाहन मण्डन खण्डन लेपन गृह मज्जन सुत
पति सेवा ।
चारि याम अवकाश नहीं क्षण सुमिरन कृष्ण
देवदेवा ॥
भवन भवन प्रति दीप विराजित कर कङ्कण नूर बाजे।
परमानन्द प्रभु घोष कुतूहल देखि भांति सुरपति
लाजे ॥

२३

सो गोविन्द तुम्हारो व्रज बालक ।
प्रकट भए घनश्याम चतुभज धरे दनुजकुल कालक॥
कमला पति त्रिभुवन पति नायक भुवन चतुर्दश
नायक सोई ।
उतपत्ति प्रलय कालको कर्ता जाके क्रिये सबे
कछु होई ॥
सुनहु नन्द उपनन्द कथा इह ईश क्षीर समुद्र को
वासी ।
वसुधा भार उतारन आयो परब्रह्म वैकुण्ठ निवासी ॥
ब्रह्मा महादेव इन्द्रादिक विनती के इहां ले आए ।
परमानन्द दासको ठाकुर बहुत पुण्य तप के
तुम पाए ॥

२४

प्रात समय गोपी नन्दरानी ।
मिश्रित धन्य उपजत हियो सर दधि मन्थत
अरु माट मथानी ॥
तोरुण लोलके पोल विराजत कङ्कण नूर कुणित
एक रस ।
रज्जु कर्षत भुज लागत छवि गावत मुदित
श्यामसुन्दर यश ॥
चञ्चल अचपल कुच हारावलो वेणो चल खसित
कुसुमाकर ।
मणि प्रकाशन हो दीप अपेक्षा सहज भाव राजत
ग्वालिन घर ॥
चढ़ि विमान देवता गोकुल अमरावती विशेषो ।
परमानन्द घोष कुतूहल जहां तहां अद्भुत
छवि पेखो ॥

२५

आछे आछे बोल गड़े ।
कहा करों उत्तर नहिं निकसत श्याम मनोहर
चतुर बड़े ॥
मेरे नेक आव री भामिनि रहसि बुलावत रुख चढ़े।
परमानन्द स्वामी रति नागर प्रीति वखवन
कुंवर लड़े ॥

२६

देखो माई हरि ज को लोटनि ।

यह छवि निरखि निरखि नन्दरानी अंसुआ पूरि
ढरि परत करोटनि ॥
अर्धंत आनन मनु रवि कुण्डल अम्बुज श्रवत सोप
सुत जोटनि ।
चञ्चल अधर चरण कर चञ्चल चञ्चल चञ्चल
गहत बकोटनि ॥
लेति छिड़ाइ महरि कर सों कर दूर भई देखति
दुरि ओटनि ।
सूर निरखि मुसिकाइ यशोदा मधुर मधुर बोलत
मुख ओटनि ॥

३७

माधव तनिकसो वदन तनिकसे चरण भुज
तनिक माखन ।
तनिकसो कपोल तनिकसी भृकुटी तनिक हसनि
हरि लेत हैं मन ॥
तनिकसे अधर तनिकसी दतियां तनिकसे वसन
तनिकसे आभरन ।
तनिक हिं तनिक सूर निरवारों तनिक कृपा कीजे
तनिक शरन ॥

३८

बाल विनोद अङ्गनमें की डोलनि ।
मणिमय भूमि शुभग नन्दालय बलि बलि गई
तोतरी बोलनि ॥
कठुला कण्ठ रुचिर केहरि नख वज्र माल लई
नन्द अमोलनि ।
वदन सरोज तिलक गोरोचन लट लटकनि
मधुपगण टोलनि ॥
लोन्यो कर अर्धंत आनन पर कछुक खात कछु
लग्यो कपोलनि ।
कहे जन सूर कहां लों वरणों धन्य नन्द जीवन
जग तोलनि ॥

३९

गोपाल दुरे हैं माखन खात ।
देखि सखी शोभा जो बढ़ो है श्याम मनोहर गात ॥
उठि अवलोकि ओट ठाढो ह्वै किहि विधि है
लखि लेत ।
चकित नयन चहुं दिश् चितवत और सखनिको देत ॥
सुन्दर कर आनन समीप हरि राजत इह आकार ।
जनु जलरुह तजि वैर विधु सों लिये मिलत उपहार ॥
गिरि गिरि परत वदनतें उर पर हे दधि सुतके विन्दु ।
मानहु शुभग सुधाकण वर्षत प्रियजन आगम इन्दु ॥
बालविनोद विलोकि सूर प्रभु थकित भई व्रज नारि ।
फुरत न वचन वर्जिवे को मन रह्यो विचारि विचारि ॥

४०

देख्यो मैं दधि सुतमें दधि जात ।
एक अचंभो सुनि री सजनी रिपुमें रिपु जो समात ॥
तापर कीर कीर पर पङ्कज पङ्कजके हे पात ।
सुन्दर वदन विलोकि श्यामको चिते नन्द मुसिकात ॥
ऐसो प्रीति बढ़ी पसुयाले कहत कह्यो नहीं जात ।
ऐसो ध्यान धरत जे हरि को तिन ह्वो सूर वलि जात ॥

४१

शोभित कर नवनीत लिये ।
घुटरुन चलत रेणु तन मण्डित मुख दधि लेप किये ॥
चारु कपोल लोल लोचन छवि गोरोचन को
तिलक दिये ।
लट लटकन मानो मत्त मधुपगण मादक मधुहिं पिये ॥
कठुला कण्ठ वज्र केहरि नख राजत रुचिर हिये ।
धन्य सूर एको पल यह सुख का शत कल्प जिये ॥

४२

बाल विनोद खरे जिय भावत ।
मुख प्रतिविम्ब पकरिवे कारण हुलसि घुटरुवनि
धावत ॥
कमल-नयन माखनके कारण करि करि सैन बतावत ।
शब्द जोरि बोल्यो चाहत हरि प्रकट वचन नहिं
आवत ॥

अनेक ब्रह्माण्ड खण्डको महिमा शिशुता माह दुरावत।
सूरदास स्वामी सुखसागर यशोमति प्रीति बढ़ावत॥

४१

नन्दधाम खेलत हरि डोलत।
यशोमती करति रसोंई भीतरि आपुन किलकत बोलत॥
टेरि उठी यशोमती मोहन कहि आवहु घुटुरुनि धाई।
बैन सुनत माता पहिंचानो चले घुटरुवनि पाई॥
लै उचाइ अञ्चल गहि पोंछति धूरि भरी सब देह।
सूरज प्रभु यशोमती रज झारति कहां भरी यह खेह॥

४४

धन्य यशोमति बड़ भागिनि लिये कान्ह खेलावे।
तनक तनक भुज पकरिके ठाढ़े होन शिखावे॥
लरखरात गिरि परत हैं चलि घुटुरुवनि धावे।
पुनि क्रम क्रम भुज टेकिके पग द्वेक चलावे॥
अपनें पाइन कब चलो मो देखत धावे।
सूरदास यशोमती इह विधि सो जु मनावे॥

सूहा-बिलावल—तिताला

चलन चहत पाइन गोपाल।
लै लगाय अङ्गुरी नन्दरानी मोहन मूर्ति श्याम तमाल॥
डगमगात गिरि परत पाणि पर भुज भ्राजत नन्दलाल।
जनु श्रीधर श्री धरत अधोमुख धुकति धरणि मानहु नमि माल॥
धूलि धौत तन नयन नि अञ्जन चलत अटपटी चाल।
चरण क्वणित नूपुर ध्वनि मानो सर विहरत जैसे बाल मराल॥
लट लटकनि मानो चारु चखौंड़ा सुठि शोभा शिशु भाल।
सूरदास ऐसो सुख निरखत जो जीजे जगमें बहुकाल॥

२

गहे अङ्गुरिया सुतुकी नन्द चलन शिखावत।
अरबराय गिरि परत हैं कर टेकि उचावत॥
बार बार बकि श्याम सों कछु बोल बोलावत।
दिधा द्वे दतियां भई अति छवि मुख पावत॥
कबहुं कबहुं कर छांड़ि नन्द पकरें फिरि गावत।
कबहुं धरणि पर बैठि जात मनमें कछु आवत॥
कबहुं गोद ले हर्षिके जियमें बहु भावत।
सूर श्याम मुख देखि महर मन मोद बढ़ावत॥

३

बलि बलि जाउं मधुर स्वर गावहु।
अब की बेर मेरे कुंवर कन्हैया नन्द हि नाचि दिखावहु॥
तारी दे दे अपने कर की परम प्रीति उपजावहु।
आन यन्त्र ध्वनि श्रुनि उर तपकत मो भुज कण्ठ लगावहु॥
जिन शङ्का जिय करहु लाल मेरे काहे को भरमावहु।
बाहु उचाइ कालिको नाईं धोरी धेनु बुलावहु॥
नाचहु नेक जाउं बलि तेरी मेरे साध पुरावहु।
रत्न जड़ित किङ्किणि पग नूपुर अपने रङ्ग बजावहु॥
कनक खम्भ प्रतिबिम्ब आपनो नव नवनीत खवावहु।
परम दयालु सूरके उरते हरि टारे नहिं भावहु॥

४

चलत श्यामपै राजत पैंजनि पग चाय मनोहर।
डगमगात डोलत अङ्गणमें निरखि विनोद मगन मोहे सुर॥
अरु मन मुदित यशोदा जननी पाछे फिरति गहे अङ्गुरी कर।
मनहु धेनु तृण छाड़ि वत्स हित प्रेम पुलकि चित द्रवत पयोधर॥
कुण्डल लोल कपोल विराजत लटकन ललित लटुरिया भ्रूपर।
सूर श्याम सुन्दर अवलोकनि विहरत बालगोपाल नन्द घर॥

५

कल बल ते हरि हारि परे।
नव तरङ्ग कमीन जलद पर मानहु हे शशि
आनि धरे॥
तब गिरि कमठ सुरासुर सर्प हिं धरत न मन
मह नेकु डरे।
तिन भुज भूषण भार परत कर गोपिनके आधार धरे॥
बिम्ब वदन मानहु मथि काढ्यो बिहसनि मनहु
प्रकाश करे।
सूरश्याम दधि भाजन भीतर निरखत मुख मुखते
न टरे॥

६

सिखवति चलन यशोदा मैया।
अरबराइ कर पाणि गहावति डगमगाय धरणो
धरे पैया॥
कबहुंक सुन्दर वदन विलोकति उर आनन्द भरि
लेति बलैया।
कबहुंक कुलदेवता मनावति चिरजीवो मेरो
लाल कन्हैया॥
कबहुंक बलको टेरि बुलावति इह अङ्गण
खेलहु दोउ भैया।
सूरदास स्वामी सुखसागर अति प्रताप बलकत
नन्दरैया॥

७

भावत हरिके बालविनोद।
श्याम राम मुख निरखि निरखि सुख प्रमुदित
रोहिणि जननि यशोद॥
अङ्गन पङ्क परसत तन मण्डित चलत कुणित नूपुर
मनोमोद।
परम सनेह बढ़ावत मातिन निर्विकार बैठत
चढ़ि गोद॥
आनन्दकन्द सकल सुखदायक निशदिन रहत
केलि रस ओद।
सूरदास प्रभु अम्बुज लोचन फिरि फिरि चितवत
ब्रजजन कोद॥

८

आंगन श्याम नचाव हो यशोमति नन्दरानी।
तारो दै दै गाव हो मधुर स्वर बानी॥
पायन नूपुर बाज हीं कटि किङ्किणी कूजे।
नान्हीं नान्हीं एड़ियन अरुणता फल बिम्बन पूजे॥
यशोमति गान सुने श्रवण तब आपु हि गावे।
तारो बाजत देख हो पुनि तारो बजावे॥
केहरि नख उरपर रुरे सुठि शोभाकारो।
मनहु श्याम घन मध्य में नव शशि उजियारो॥
गभुवारे शिर केस हैं बने घूंघरवारे।
लटकन लटके भाल पर विधु मध्य गण तारे॥
कठुला कण्ठ चिवुक तरे मुख दशन विराजे।
खञ्जन बिच शुक आनिके मनो परो हि राजे॥
यशोमती सुत हि नचाव हो छवि देखति जियते।
सूरदास प्रभु श्यामके सुख टरत न हियते॥

९

माधव तनक चरण अरु तनक तनक भुज तनक
वदन बोले तनक से बोल।
तनकसे करनि पर तनक माखन लिये देखत
तनक याके सकल भुवन तनक कपोल॥
तनक सुने जो यश सो पावत परम गति तनक कहत
ता सो नन्द सुवन।
तनक रीझ पर देत सकल तनु तनक चितौनि
चितके हरन॥
तनक हसनि मुसकानि तनक पुनि तुतरे वचन
उचरण।
तनक हि तनक तनक करि आवे सूर हि तनक
दीजे तनक शरण॥

१०

आज सखी मणि खम्भ निकट जहां है
गोरसकी गोरी।

निज प्रतिबिम्ब निरखि सिसुवत शिशु प्रकट करो
जिनि चोरी ॥
अर्ध विभाग आज तें हम तुम भली बनी यह जोरी।
माखन लेहु कतव डारत हो तुम बालक मति भोरी॥
हिस्सा न लेहु सबै चाहत हो यहै बात है थोरी।
मिश्री रुचिर और चाहत हो देउ कहा भरि झोरी॥
शुनि प्रिय वचन धैर्य न रह्यो तब रसिक हसो
मुख मोरी।
सूरदास प्रभु सकुचि चले हरि सघन कुञ्जको खोरी॥

११

बाल गोपाल विराजत आज।
इन्दु वदन दधि विन्दु परे तन कर नवनीत
मनोहर साज॥
किधों प्रकट मकरन्द कमल में कीन्हों उदित समाज।
कुञ्चित केश सुदेश नवल तन मिलि आए हैं
करनको राज॥
चुटकी दे जु नचावति सुन्दरी कटि किङ्किणि
नपुर कल बाज।
दास गोपाल मदनमोहन छवि चितवत सकल
बिसारे काज॥

१२

बड़ भागिन गोकुल की नारि।
माखन रोटी दे जु नचावति पगदाता मुख लेत
पसारि॥
शोभित वदन कमलदल लोचन शोभित केश मधुप
अनुहारि।
शोभित मकर कुण्डल छवि शोभित मृगमद
तिलक लिलारि॥
शोभित गात चरण भुज शोभित शोभित
किङ्किणी करत उचारि।
शोभित नृत्य करत परमानन्द गोपवधू वर
भुजा पसारि॥

१३

खेलत घर आंगन गोविन्द।
निरखि निरखि यशोमती सुख पावति वदन
मनोहर राका इन्दु॥
कटि किङ्किणी चन्द्रमय मणिको लट मुकताहल
जाल।
परम सुदेश कण्ठ केहरि नख विच विच वज्र प्रवाल॥
कर पोहोंची पाइन पनसूरा तन राजत पट पीत।
घुटुरुन चलत वत्स सङ्ग विहरत मुख मण्डित
नवनीत॥
सूर विचित्र चरित्र कान्हके वाणी कहत न आवे।
बालदशा अवलोकि सनक मुनि योगध्यान विसरावे॥

१४

हों वलि वलि जाओं छबीले लालकी।
धूसर धूरि घुटुरुवनि डोलनि बोलनि वचन रसालकी॥
छिटकि रही चहुं दिश् जु लटुरिया लटकनि
लटकन भालकी।
मोतिन सहित नासिका नथुनी कण्ठ कमलदल
मालकी॥
कछु एक हाथ कछुक मुख माखन चितवन नयन
विशालकी।
सूरदास प्रभु प्रेम मगन ह्वै ढिग न तजत
व्रजबालकी॥

१५

बार बार यशोमती सुत बोधति आओ चन्द्र तोहि
लाल बुलावे।
मधु मेवा पकवान मिठाई आपु खात पुनि तोहि
खवावे॥
हाथ हि पर तोहि लीन्हे खेले नेकु नहीं धरणी
बैठावे।
जल भाजनमें करि के उठावे याही में तू तन
धरि आवे॥

जलपुट आनि धरयो पर राख्यो गहि आन्यो
वह चन्द्र दिखावै।
सूरदास प्रभु हंसि मुसिकाने बार बार दोऊ
कर नावै॥

१६

ल्योंगो री मैया चन्द्र हि ल्योंगो।
कहा करौं जलपुट भीतरको बाहिर लपकि
गहौंगो॥
इह तो कलमलात जब महिमां कैसे कर जु गहौंगो।
वह तो निपट निकट ही देखत बरजे हू न रहौंगो॥
तेरे प्रेम उदित भयो माता बौराये न बहौंगो।
सूर श्याम कह कर गहि ल्यावों शशि तन ताप दहौंगो॥

१७

ले हो हरि चन्द्र ले।
कमल नयन बलि जाइ यशोदा नीचे नेकु चितै॥
जा कारण तुम शुनि सुन्दर सुत कीन्हीं इती अनै।
सोइ सुधाकर देखि दामोदर या भाजन में है॥
नभतें निकट आनि राख्यो है जलपुट यत्न जुते।
अब अपने कर काढ़ि मनोहर जाहि भावै ताहि दे॥
अगम गगन गति तें आन्यो है पचो एक पठे।
सूरदास प्रभु इतनो बातको कत मेरो लाल हठे॥

१८

सोहत दधिकी छींट श्याम गात।
जब जननीके करतें ले दोऊ करें करि कछु डारत
उरपर कछु कलकें हसि खात॥
और मांगत में होत विलम्ब तब धरणी में लोटि जात।
रसिक प्रीतम सों करति निहोरे रानी यशोमति मात॥

१९

महा महोत्सव गोकुल ग्राम।
प्रेम मुदित गोपी यश गावति ले ले श्यामसुन्दरको
नाम॥
जहां तहां लोला अवगाहति खरिक खोरि दधि
मन्थन धाम।
परम कुतूहल निश अरु वासर आनन्द ही बीतत
सब याम॥
नन्दगोप सुत सब सुखदायक मोहन मूर्ति
पूरण काम।
चतुर्भुज प्रभु गिरिधर आनन्द निधि नख सिख
रूप सुभग अभिराम॥

२०

हौं वारी नवनीत प्रिया।
दिन उठि देन उराहनो आवति चोरी लावति
घोष तिया॥
तुम बलराम सङ्ग मिलिके इह आंगन खेलो
दोऊ भैया।
निरखि निरखि नैननि सुख पाऊं प्राण जीवन
तन सांवरिया॥
जोई भावे सो लेहु मेरे प्यारे मधु मेवा दधि दूध घैया।
चतुर्भुज प्रभु गिरिधर काके घर तुम हू ते कछु
बहुत श्रेया॥

२१

कान्ह सो कहति यशोदा मैया।
मेरे मोहन अनत न जइये घर हि खेलो दोउ भैया॥
ए तरुणी यौवन मदमाती झूठे हि दोष लगावै देया।
तुम तो मेरे प्राण जीवन धन मथिके दूध
पिवाऔंगो घैया॥
चतुर्भुज दास गिरिधरण कह्यो तब हौं वन जाऔं
चरावन गैया।
सुनि जननी मन अति हर्षानी मुख चुम्बति
अरु लेति बलैया॥

२२

घर घर डोलत माखन खात।
ग्वाल बाल सब सखा सङ्ग लिये सूने भवन धंसि जात॥
जब ग्वालिन जल भरि घर आई तब हिं भजे
मुसिकात।
चतुर्भुज प्रभु गिरिधरण लाल सों नाहिं न कछु
बिसात॥

२३

मोहन चलत बाजत पैंजनो पग।
शब्द सुनत चकित ह्वै चितवत त्यों त्यों ठुमकि
ठुमकि धरत हैं डग॥
मुदित यशोदा चितवति शिशु तन ले उछङ्ग लावे
कण्ठ शुभग।
चतुर्भुज प्रभु गिरिधरण लाल को व्रजजन निरखत
ठाढ़े ठग ठग॥

२४

मैया मोहि बड़ो करि ले री।
दूध दही घृत माखन मेवा जब मांगों तब दे री॥
कछू हवस राखहु जिनि मेरो जोइ जोइ मो हो
रुचे री।
हों हुं सबल सबहिन मह्ं जे से सदा रहों निर्भे री॥
रङ्गभूमि मह कंस पछारों घोसि बहाऊं नेरी।
सूरदास स्वामोको लोला राख्या मथुरा जे री॥

२५

क्रीड़त प्रात युगल यदुवीर।
माखन मांगत मात न मानति झुकत यशोदा तीर॥
मध्य जननी सन्मुख सङ्कर्षण ऐंचत कान्ह
सिरो शिर चीर।
मानहु सर सुनि सङ्ग उभय द्विज कर मराल
अरु नील कटीर॥
सुन्दर श्याम गहे कबरी कर मुक्ता माल गही
बलवीर।
तारन नभ कयो आपापनु मानहु लेत निवेरं सोर॥
सूर सु छवि इह वर्णि न आवे उपमा कहा परति
नहिं धीर।
सनक सनन्दन नित्य उठि ध्यावत अरु गावत
जाको मुनि कीर॥

२६

बाल दशा गोपालको सब काहु प्यारो।
ले ले गोद खिलाव ही यशोमति महतारी॥
पीत झगुलि तन सोह ही सिर कुलह विराजे।
क्षुद्र घण्टिका कटि बनी पाय नूपुर बाजे॥
मुरि मुरि नाचे मोर ज्यों सुर नर मुनि मोहे।
कृष्णदास प्रभु नन्दके आंगनमें सोहे॥

२७

ऐसे लरिका कतहुं न देखे बाट सुचालि
गांउकी माई।
माखन चोरत भाजन फोरत उलटि गारि दे
मुरि मुसिकाई॥
तब हों देन उराहनो आई कहा करों जो ना
कहि आई।
सुनहु यशोदा तुम ठकुरायनि तुम सों कहत
मेरी बोराई॥
पाछे ठाढे मोहन चितवत धोरे होतें चारो लाई।
परमानन्द दासको ठाकुर पचयो चाहत चोरो खाई॥

२८

तेरे लाल मेरो माखन खायो।
घोर दुपहरी देखि घर सूनो ढोरि ढंढोरि अब हिं
घर आयो॥
खोलि कपाट पैठि मन्दिरमें सब दधि अपने
सख नि खवायो।
छींकें हु तें चढ़ि ऊखल पर अनभावतो धरणो
ढरकायो॥
दिन दिन हानि कहां लो सहिये ए ढोटा जु भले
ढङ्ग लायो।
परमानन्द प्रभु बहुत बचति हों पूत अनोखो
तें हि जायो॥

२९

बहुते उपजत या ढोटा पे कैसो धों ले ले आवत।
हरि हरि हरि देखो री माई जानो जू बात दुरावत॥
विघमानद दधि दूध चुरायो फिरि फिरि मोहि
बोरावत।
चतुर चोर विद्या सम्पूरण गढ़ि गढ़ि छोलि बनावत॥

जो न पतियाहु सौंह ले मो सों सांचो शपथ करावत।
तेरे वच जात जी हे शिव ता पर हाथ दिवावत॥
वदन मोहि मुसकाइ चलो है फिरि उरहन मिस
आवत।
परमानन्द दासको ठाकुर श्याम मनोहर भावत॥

१०

भाजि गयो मेरो भाजन फोरि।
कहा कहों शुनि मात यशोदा सब खायो माखन
सब चोरि॥
लरिका शत पचास सङ्ग लोन्हें रोके रहत
गांवको खोरि।
मार्गमें कोउ चलन न पावत लेत दोहनो हाथ
मरोरि॥
समुझि न परे या ढोटाकी रोति घोष गोरस ढंढोरि।
आनन्द फिरत फागु सो खेलत तारो दे दे
हसत मुख मोरि॥
को यह कुंवर कौनको ढोटा सब व्रज बांध्यो
प्रेमको डोरि।
परमानन्द दासको ठाकुर लेति वलैया अञ्चर छोरि॥

११

आओ गोपाल शृङ्गार बनाऊं।
अति सुगन्धको करों उबटनो उदमोदक नहवाऊं॥
अङ्ग अङ्गोछि गुहं तेरो वेणी फूलन रचि रचि भाल
बनाऊं।
सुरङ्ग लाल जरतारो चोरा रतन खचित शिर पेंच
सजाऊं॥
वागो लाल सुनहरी छापा हरी इजार चरण विरचाऊं।
पटुका सरस बैंजनी रङ्गको हसली हेम हुमेल धराऊं॥
गजमोतिनके हार मनोहर वनमाला ले उर
पहिराऊं।
ले दर्पण देखो मेरे वारे निरखि निरखि उर नयन
सिराऊं॥
मधु मेवा पक्वान मिठाई अपने कर ले तुम्हें जेवाऊं।
विष्णुदास को इह कृपाफल बालचरित्र हों
निशदिन गाऊं॥

१२

पीताम्बरको चोलना पहिरावति मैया।
कनक छाप ता पर दियो झीनो एक तैया॥
सूथन लाल सुनावको जरकशो चोरा।
हसुलो हेम जगावको उर राजत होरा॥
ठाढ़ो निरखे यशोमती फूली अङ्ग न माय।
कज्जर ले विन्दुका दियो व्रजजन मुसिकाय॥
नन्द बबा मुरलो दई एक तान बजावे।
जोई सुने ताको मन हरे परमानन्द गावे॥

१३

नयनन देखि री गिरिवरधर।
सहचरो कहति द्वितीय सहचरो सों प्रेम मुदित
प्यारी राधावर॥
भूषण भूषित अङ्ग मनोहर कनक कान्तिहर।
चित्त वृत्त हरत विश्व युवतिनके सर्वस्व देत
उदार कमलकर॥
उपमा काहि देहुं को लायक वरणों कहा किशोर
वयसवर।
सुरति अन्त लटकत व्रज आवत कृष्णदास बड़ भाग
कल्पतर॥

१४

राधे वसन श्याम तन चोन्हीं।
सारङ्ग वदन विलास विलोचन हरि सारङ्ग जानि
रति कोन्हीं॥
सुधा पान करिके नोको विधि रह्यो शेष मुद्रा
फिरि दोन्हीं।
सूर सुवेश आहि रति नागर भुज आकर्षि वाम
कर लोन्हीं॥

१५

कमल मुख देखत तृपति न होइ।
इह कहा जाने वात सुहागिन रह्यो निशा भरि सोइ॥

ज्यों चकोर चाहत उडराजै रही चन्द्र मुख जोइ।
नेकु चकोर देति नहिं राधे चाहति पिय हि निचोइ।
हरि तो अपुनो सर्वस दीन्हों एक प्राण वपु दोइ।
भजन भेद न्यारो परमानन्द जानत बिरला कोइ॥

३६

कमल मुख देखत को न अघाय।
सुनि री सखी लोचन अलि मेरे मुदित रहे अरुझाय॥
मुक्तामाल लाल उर ऊपर जनु फूलो बन घाय।
गोवर्द्धनधर अङ्ग अङ्ग पर कृष्णदास बलि जाय॥

३७

माई कौन गोपके ए दोउ नागर ढोटा।
इनकी बात कछू कहत न आवे गुणन बड़े देखत के छोटा॥
अग्रज अनुज सहोदर दोऊ गौरश्याम ग्रंथित शिर चोटा।
नन्ददास बलि उभय सुरतकी लीला ललित सर्व विधि नोटा॥

३८

तू मेरी लाज गंवाई हो यशोमतिके ढोटा।
देश विदेशी ह्वै गई मिलि घूंघट ओटा॥
कमल नयन तुम कुंवर हो हलधरतें छोटा।
छैल छबीले रूप सम्भई लोट कपोटा॥
श्रीगोपाल तुम चतुर हो हम मतिकी खोटा।
परमानन्द सो जान हो जाहि प्रेमको नोटा॥

३९

मद गजराज कैसो चाल।
भुजवर दण्ड सुण्डको शोभा हरि लीन्हीं नन्दलाल॥
चूरण कच कुञ्चित अनेक अङ्कुशसे लटकत भाल।
चामर चारु अवतंश मञ्जरी मदकण श्रमजल जाल॥
गन्ध अन्ध आवत अलि घेरे गुञ्जत मञ्जु रसाल।
मोर पच्छ फहरात वात वश जनो झलकत हैं ढाल॥
धातु विचित्र बनी तन शोभा गल गल दामन माल।
हठि कुलधर्म ढाह ढाहत हैं नयन कटाच्छ विशाल॥

घनन घनन घण्टिका क्वणित कटि उपजत शब्द सुताल।
खनन खनन सङ्कुल से नूपुर बाजत लज्जैत मराल॥
युवतीहृदय सरस सरसिजमें जनु खेले बहु काल।
मानो अङ्ग अङ्ग लपटाने उनके मनके बाल॥
मुरली रव गुञ्जार सुनत ही कम्पित चित्त व्रजबाल।
रस रूसनो गदाधर यों भयो बन बैलौ बेहाल॥

४०

आजु शृङ्गार निरखि श्यामा को नीको बन्यो श्याम मन भावत।
यह छवि तन हि लिखायो चाहत कर गहि के नख चन्द्र दिखावत॥
मुख जोरै प्रतिबिम्ब बिराजत निरखि निरखि मनमें मुसिकावत।
चतुर्भुज प्रभु गिरिधर श्रीराधा अरस परस दोउ रीझि रिझावत॥

४१

प्रात समय नन्दनन्दन श्यामा आवत देखे कुञ्जगली।
नवघनश्याम तरुणि दामिनि मिलि राजत रूप अनूप अली॥
लटपटो पाग शीर्ष कर मुरली लोचन घूमत भांति भली।
शिथलित चीर मलगजो अङ्गिया काम कामिनी देह छली॥
चार याम निशि जागत बीती उर उमग्यो अनुराग बली।
कज्जल अधर नयन रङ्ग बीरी मदन नृपतिकी सैन्य दली॥
सूर वदन पङ्कज रस पीके अलक मधुपकी पंक्ति चली।
प्रफुल्लित प्रीति परस्पर देखियत तरणि उदय ज्यों कमल कली॥

४२

देखि री वाके चञ्चल तारे।

कमल मीन कहं कहां एती छवि खञ्जन हू न जात
अनुहारे ॥
वे देखि चारु कुटिल भुज ऊपर कुञ्चित अलक
मनो अलि वारे।
बिहरत भजत मानहु छाड़े रथ जनु समझ शशि
लङ्कर डारे ॥
वे देखि निमिष नमत मुरली पर कर मुख नयन
एक भए चारे।
मानो जलरुह सो वे ऋतु जी विधु करत नाद वाहन
चुचुकारे ॥
हरिको रूप सकल व्रजमोहन सब युवती जन
प्राणधन वारे।
सूर सखी निज रही चिते तन मन क्रम वचन चित्त
अनृत न जा रे ॥

४३

बने हैं विशाल कमलदल नयन।
ताहू में अति चारु विलोकनि गूढ़भाव सूचित
सखि सैन ॥
वदनसरोज निकट कुञ्चित कच मनहु मधुप
आए रस लैन।
तिलक तरुण शशि कहत कछुक हसि मोहन
मधुर मनोहर बैन ॥
मदन नृपतिके देश महामद बुद्धि बल बसि
न सकत है चैन।
सूरदास प्रभु दूत दिन हि दिन पठवत चरित
चुनौती देन ॥

४४

मनोहर नयन की यह भांति।
मानो दूरि करत बल अपने शरत् कमलकी कांति ॥
इन्दीवर राजीव कुशेशय जीते सब गुण जाति।
अति शोभा आनन्द कन्द हग फूले दिन अरु राति ॥
खञ्जरीट मृग मीन विराजत उपमाको अकुलाति।
चितवनि चारु विलोकनि चञ्चल एको चित्त न समाति ॥

अन्तर करत निमेष लगि अन्तर युग हि समान
बिहाति।
सूर सखी अति रसिक राधिके निमिष खरे अनखाति ॥

४५

आलस्य युत देखियत जो भामिनी।
राजत हैं रतनारे नयननि प्रिय सङ्ग जागत
गई यामिनी ॥
बाहु उठाय जोरि जमुहानी एड़ानी कमनीय
कामिनी।
भुज छूटत छवि यों लागत मानो टूटि भई है टूक
दामिनी ॥
कुच उतङ्ग पर रही कञ्चुकी शोभित त्रिबली उदर
स्वामिनी।
मानो मदन नृपतिके तंबू हरि मन जीत्यो
राधिका नामिनी ॥
बिथुरी अलक शिथिल कच डोरी नख क्षत स्फुरित
मराल गामिनी।
द्विगुण सुरति करि श्रीगोपाल भजि प्रमुदित
विद्यादास स्वामिनी ॥

४६

जा रस रसिक कीर मुनि गायो।
याही रटत रटत निशि वासर शेष सहस्र मुख
पार न पायो ॥
गावत शुक नारद मुनि सारद कमल कोकरस
तउ न चखायो।
तरणितनया तट निकट वंशीवट वृन्दावन वीथिन
बहायो ॥
सो रस रसिकदास परमानन्द ले राधा उर बीच
दुरायो।
यद्यपि रमा रहत चरणन तर निगमनि अगम
अगाध बतायो ॥

आनन्दको निधि नन्दकुमार।

परब्रह्म नट भेष नराकृति जगमोहन लीला अवतार ॥
श्रवणनि आनन्द लोचन आनन्द मनमें आनन्द
आनन्द मूर्ति ।
गोकुल आनन्द गोपिन आनन्द आनन्द यशोदा
आनन्द मूर्ति ॥
सब दिन आनन्द धेनु चरावत वेणु बजावत
आनन्द कन्द ।
खेलत हसत कुतूहल आनन्द राधापति
वृन्दावन चन्द ॥
शुक मुनि आनन्द भक्तन आनन्द निज जन
आनन्द हास विलास ।
चरण कमल मकरन्द पान करि अलि आनन्द
परमानन्द दास ॥

बिलावल—तिताला

सेवा श्री गोपाल की मेरे मन भावे ।
मनसा वाचा कर्मणा उर आन न आवे ॥
करि दण्डवत सनेहसों सन्मुख शिर नावे ।
लोचन भरि भरि भावसों हरि दर्शन पावे ॥
प्रेम नियम निश्चय करि हरिके गुण गावे ।
यह प्रताप फल परशुराम हरिभक्ति दृढ़ावे ॥

२

यह न होय जैसे माखन चोरी ।
आत किते बल बाहु छड़ाए मूसे धन समृपत्ति
सब मोरी ॥
तब तिन दिनन कुमार कान्ह तुम अपने जान
हम हु मति भोरी ।
अब भए कुशल किशोर कान्ह तुम हम भई सजग
समान किशोरी ॥
नख शिखते चित्त चोरि सकल अङ्ग चीन्हें पर कत
करत मरोरी ।
एक सुनि सूर हरो मेरो सर्वस्व अब उलटो
डोलों सङ्ग डोरी ॥

३

अब मेरो खेलन जात बलैया ।
जब हो मोहि देखि लरिकन सङ्ग तब हो खिझावत
हैं बल भैया ॥
मोसों कहत तात वसुदेव हैं देवकी तेरी मैया ।
मोल लयो कछु दे वसुदेव हि करि करि यत्न
बड़ैया ॥
अब बाबा करि कहत नन्दसों अरु यशोमतिसों मैया ।
ऐसे कहि कहि मोहि खिझावत तब उठत मोहि
खिसैया ॥
पाछे नन्द सुनत हैं ठाढे तब हसि हसि उर लैया ।
सूर नन्द बलराम हि हटक्यो शुनि मन हर्ष कन्हैया ॥

४

माखन खात पराये घरको ।
नित प्रति सहस्र मथानो मथिये मेघ शब्द
दधि माट घमरको ॥
कितक अहीर जीवत घर मेरे दधि मथि लेत
माखन कोमरको ।
नव लक्ष धेनु दुहत जिनके नित बड़ो नाम है
नन्द महरको ॥
ताके पुत्र कहावत हो तुम चोरी करत
उघारत फरको ।
सूर श्याम तुम कितनो क खैहो दधि माखन
मेरे जहां तहां ढरको ॥

५

नन्द घरनि सुत भलो पढ़ायो ।
व्रज वीथिनि पुर घरनि घरणी में बाट घाट
सब शोर मचायो ॥
लरकनि मारि भजत काहूके काहुको
दधि दुग्ध लुढ़ायो ।
काहूके घर करत भंड़ाई मैं ज्यों त्यों करि
पकरि शु पायो ॥

अब तो याहि जकरि करि बांधौं इन सब
तुम्हारो गांव भजायो।
सूर श्याम भुज गहि नन्दरानी बहुरि कान्ह
अपने हित लायो ॥

६

लालन वारी तेरे या मुख ऊपर।
माई मेरी दीठि जिनि लागे कबहुं मसि बिन्दु
काधौं भूपर ॥
सर्वस्व मैंने पहिले ही दियो नान्हीं नान्हीं दतियां
दूपर।
अब कहा सूर करे न्यौछावर अपने हो
लालन लटूपर ॥

७

अब नन्दलाल नयन भरि देखे।
एकटक रह्यो संभार न तनको मोहन सूरति पेखे॥
श्यामवरण पीताम्बर काछे अरु चन्दनकी खोर।
कटि किङ्किणि कलराव मनोहर सकल त्रियनके
चितके चोर॥
कुण्डल झलक परत गण्डनि पर आइ अचानक
निकसे भोर।
श्रीमुख कमल मन्द मृदु मुसकनि लेत कर्षि
मन नन्दकिशोर॥
मुक्तामाल राजत उर ऊपर चितए सखी जबे
इह ओर।
परमानन्द निरखि अङ्ग शोभा ब्रज वनिता डारति
तृण तोर॥

८

बांधौं आजु तोहि को छोरे।
बहुत लङ्गरयो कीन्हों मोसो भुज गहि अब
ऊखलसों जोरे॥
जननी अति रिस जानि बंधाए चिते वदन लोचन
जल ढोरे।
ऊखलसों कटिसों गहि बांध्यो दाम बहुत सब तोरे॥

यह सुनि ब्रज युवती सब धाईं कहति कान्ह अब
काहे न छोरे।
सूर श्यामको बहुत सतायो चूक परी हमते यह भोरे॥

९

कहा करौं हरि बहुत खिझाई।
सहि न सकी रिस रिसमें भरि गई दई बहुत
ढीठ्यो जु कन्हाई॥
मेरे कहे नाहिंने मानत करत आपनो टेक।
भोर उराहनो ले ले आवति ब्रजकी वधू अनेक॥
फिरत जहां तहां धूम मचावत घर नहिं रहत सचेत।
सूर श्याम त्रिभुवनके कर्ता ता सों यशोमती
कहत अचेत॥

१०

यशोदा तेरो मुख हरि जोवे।
कमल नयन हरि हिलक नि रोवे बन्धन छोरि री
जननी यशोवे॥
जो तेरो सुत खरोई अचगरो अपनो कोख को जायो।
कहा भयो जो घरको ढोटा चोरो माखन खायो॥
तुरत दोहनी दह्यो जमायो जा क्षण पूजन पायो।
ता घर देव पितृ काहे को जा घर कान्हर आयो॥
जाको नाम लेत अघ भाजे कर्म फन्द सब काटे।
सोई हरि प्रेम दांव री बांधे जननी सांटि लिये डांटे॥
सूरदास प्रभु भक्त हेतु ह्वै देह धरे तुम पाए।
दुःखित जानि दोऊ सुत कुबेरके तिन हित आपु
बंधाए॥

११

जाहु चली अपने अपने घर।
तुम सब हिन मिलि ढीठ कह्यो यह अब आई
बन्धन छोरन वर॥
मोकों अपने बाबाकी सौं कान्ह हि अब न पत्याउं।
भवन जाहु अपने अपने सब लागति तिहारे पाउं॥
मोको जिनि बरजोरो कोऊ देखो हरिके ख्याल।
सूर श्याम सों कहति यशोदा बड़े नन्दके लाल॥

१२

तब हि श्याम एक बुद्धि उपायो।
युवती गई घरनि सब अपने गृह कार्य जननी
अटकायो॥
आपुन गए यमल अर्जुन तर सर्शत पत्र
उठे भहरायो।
दिये गिराय धरणि दोउ तरु वर तब कुवेर सुत
प्रकटे आई॥
द्वै कर जोरि करत दोउ स्तुति चारणजाति न
प्रकट दिखाई।
सूर धन्य व्रज जन्म लियो हरि धरणीकी
आपदा नशाई॥

१३

धन्य धन्य धन्य ऋषि आप हि पाए।
आदि अनादि निगम नहिं जानत ते हरि प्रकट
देह धरि आए॥
धन्य नन्द धन्य मात यशोदा धन्य अङ्गन जहां
बैठि खिलाए।
धन्य श्याम जहां दाम धाए धन्य उखल धन्य
माखन खाए॥
दीनबन्धु करुणानिधान प्रभु राखि लिये
शरणागत आए।
सूर श्यामके चरण शीर्ष धरि स्तुति करि
निज धाम सिधाए॥

१४

कौन मेरे आंगन ह्वै जु गयो।
जगमग ज्योति वदनको माई सपनो सो जु भयो॥
हौं दधि मेलि भवन शून सजनो लेनु गई जु मथानो।
कमलनयनको नाईं चितयो वह मूर्ति मैं जानो॥
कर नहिं चलत देहगति थाको बहुत खेद मैं पायो।
परमानन्द प्रभु चरण शरण गहि रहतो कित
गृह आयो॥

१५

नन्दके लाल हरो मन मोर।
हौं अपने मोतिन लर पोहति कांकर डारि गए
सखि भोर॥
बङ्क विलोकनि चारु छबीलो कुटिल कमान
भौंहको कोर।
कछु जाको मन रहे श्रवण सुनि सरस मधुर
मुरलीको घोर॥
शशि विचित्र वदनके कारण तरसत हैं दृग
विहङ्ग चकोर।
सूरदास प्रभुके मिलिवेको कुच श्रीफल हौं करत
अकोर॥

१६

इनि नयन निसों मानी हारि।
अनुदिन हो उपरान्त आन रुचि बाढ़ी सब लोग
निसों रारि॥
तदपि निडर चलि जात चपल दोउ घूंघट सघन
कपाट उघारि।
निगम ज्ञान प्रतिहार महाबल लाज लकुट कर
रहत निवारि॥
श्रीगोपाल कौतुक मन अर्पौ तबते चतुरनि भई
चिन्हारि।
सूरदास लोभनि के लोने सिरपर सही जगत्‌की गारि॥

१७

सखी हौं जागों तो कोउ ढिग नाहीं उठि लागो
अकुलान।
मैं जान्यो सांच हि मिले माधव भूलि रह्यो अनुमान॥
नींद हि मैं सुरझाइ मदन हौं राखो प्रथम पञ्च सन्धान।
तामैं और तिमिर माई री चपल छुटे छवि वान॥
सूर शक्ति जैसे लक्ष्मण तन वह व्रणको कछु
अङ्ग न आन।
लाऊं सुजीवन मूरि मुकुन्द हि ज्यों व रहै तव प्राण॥

१८

रहि री ग्वालि यौवन मदमाती।
मेरे छगन मगन से लाल हि कत ले उछंग
लगावति छाती॥

खीझत ते अब ही राखे हैं नाहीं नाहीं उठति
दुग्धकी दांती।
खेलन देखूं जाहि आपने डोलति कहां
इतो इतराती॥
उठि चली ग्वालि लाल लागे रोवन तब यशोमती
लाई बहु भांती।
परमानन्द ओट दे अञ्चल फिरि आई नयननि
मुसिकाती॥

१९

गावत गोपी मृदु मधुवाणी।
जाके भवन वसत त्रिभुवन पति राजा नन्द
यशोदा रानी॥
गावत वेद भारती गावत गावत नारदादि मुनि ज्ञानी।
गावत शिव कालगण गन्धर्व गोकुलनाथ माहात्म्य
जानी॥
गावत चतुरानन गज-आनन गावत शेष सहस्र
मुख रास।
मन क्रम वचन प्रीति पद अम्बुज अब गावत
परमानन्द दास॥

२०

अङ्ग सब मिलि लागे दुःख देन।
अपनी पिशुनता कहा कहौं सखि वध ना कियो कुचैन॥
लोचन भ्रमर भए उड़िवेका वदनकमल मधु लेन।
कान नेम व्रत लियो सुननको विना वदन विधु वैन॥
नासा खसत वचन नहिं निकरत मन न धरत
कछु सैन।
पग न चलत इक पेंड़ नोठि के तन पुर पसरो मैन॥
अब लाऊं व्रजनाथ निकट तोहि तो लौं इह सबै सहै न।
सूर निमिष सम होत युग हि युग क्यों विरमाऊं रैन॥

२१

इह बल कितकु जानि यदुरायो।
तुम जु चले हम अबल निपें तें तरकि वहां छिटकायो॥
कहियत है अति चतुर सकल विधि जानत
और उपायो।
तो जानों जो अब एको क्षण सको हृदय ते जायो॥
सूरदास स्वामी श्रीपतिको भावत अन्तर भायो।
सहि न सके रति वचन उलटि हसि लीन्हीं
कण्ठ लगायो॥

२२

श्यामा तू अति श्याम हि भावे।
बैठत उठत चलत गोचारत तेरो ही नाम ले ले गावे॥
पीत हि पीत सुमन भूषण सजि पीताम्बर उर लावे।
चन्द्रवदनि शुनि मोर चन्द्रिका शीर्ष सुमुकुट बनावे॥
अति आसक्त दर्श सम्भ्रम मिलि अङ्ग अङ्ग सचु पावे।
विछुरत तोहि क्वासि राधे कहि कुञ्ज कुञ्ज प्रति धावे॥
तेरोइ ध्यान धरे तन निरखत वासर विरह नसावे।
सूर श्याम रसराशि रसिक सखि कैसे अन्तर आवे॥

२३

मानि मनावो मौन रहो।
सकुच समेत सखो उठि आतुर वनको गैल गहो॥
विधु मुख निरखि मूंदि करि लोचन पुनि
विधुवदन चहो।
दर्श स्पर्श तद्रूप आजु निज भूमि नख लेखि कहो॥
पुहप सुरङ्ग सारङ्ग रिपु ओढि दिखावत चतुर लहो।
पाणिसे परसत शीर्ष परस्पर मुसकानि तब हो॥
तृण तोरे दिन जात जिते गुण काटति रेख महो।
सूर श्याम बहुरों मिलि विलसहु जानि अवति अब हो॥

२४

न्याय दिन दूलह हो नन्दलाल।
रीझि विकाय तहां बसे जहां नव दुलहो व्रजबाल॥
शिथिल पाग गति डगमगे हो वमन मलगजे गात।
शोभित हो तुम रसभरे मानो व्याह भए जागे रात॥
नयन ललोहे घूमरे हो चितवत चित्त हरि लेत।
कहे भगवान् हित राम राय प्रभु हसन बधाई देत॥

अलय्या-बिलावल—तिताला

ग्वालिनि पूरण प्रगट्यो नेहु।
दधि भाजन शिरपर धरे ताहि कहति गोपाल हि लेहु॥

व्रज वीथिनि व्रजपुर गलो हो जहां तहां हरिनाम।
समुझाई समुझे नहीं ताहि सिख दे वियको ग्राम॥
लज्जा लहरि तरङ्गिणी हो गुरुजन गहिरी धार।
दुहु कूलनि परिमिति नहीं ताहि तरत न लाई बार॥
सरिता निकट तड़ागके दोन्हें कूल विदारि।
नाम मिट्यो सरिता भई अब कौन निवारै वारि॥
दीपक तो मन्दिर जरै हो बाहर लखै न कोय।
तृण परसत प्रज्वलित भई अब गुप्त कहांते होय॥
पान किये ज्यों वारुणी हो मुख बोलत न संभार।
धरणि धरत पग डगमगै वाके बिथुरी अलक ललार॥
कौन सुनै कासों कहौं हो कौनै सुरति सकोच।
कौने डर पथ अपथको अब को उत्तम को पोच॥
विधु भाजन ओको रच्यो हरि शोभासिन्धु अपार।
उलटि मगन तामें भई अब कौन निकारन-हार॥
चित्त चुरायो नन्द के हो मुरली मधुर बजाय।
जिहि लज्जा जग लाजिये सो लज्जा गई है लजाय॥
प्रेम मगन भई ग्वालिनी हो सूरदास प्रभु सङ्ग।
श्रवण नयन मुख नासिका हो ज्यों कञ्चुकी भुजङ्ग॥

२

कहा करों वैकुण्ठ हि जाई।
जहां नहीं नन्द जहां नहीं यशोदा जहां नहीं गोपी ग्वाल नहीं गाई॥
जहां नहीं जल यमुना को निर्मल और नहीं कदम्बकी छांई।
परमानन्द प्रभु चतुर ग्वालिनी व्रजरज तजि मेरी जाइ बलाई॥

३

अद्भुत एक अनुपम राग।
युगल कमल गजपर क्रीड़त ता पर सिन्धु करत अनुराग॥
हरि पर सरवर सरपर गिरिवर गिरिपर फूले कञ्ज पराग।
रुचिर कपोत बसत ता ऊपर ता पर एक अमी फल लाग॥
फल पर पुष्प पुष्पपर पल्लव तहां रहत शुक पिक मृग खाग।
खञ्जन धनुष चन्द्रमा ऊपर तहां बसत एक मणिधर नाग॥
इह रस विरस होत नहिं कबहुं शोभा क्षण हु करत नहिं त्याग।
सूरदास स्वामिनी रसिकवर तव हेतु बाढ़ो सिन्धु सुहाग॥

४

ललित कथा इक कहों लड़ेते नेक हक सुनहु छाड़ि दे आरि।
सूर्य वंश नृपति दशरथ के भए सुभट सुन्दर सुत चारि॥
तामें बड़ो रामचन्द्र राजा जनक सुता जाके वर नारि।
पञ्चवटीको चले राज्य तजि तात वचन माथे पर धारि॥
श्रीवैकुण्ठनाथ धरणीधर विहरत वन तापस अनुहारि।
मार कुटिल सबल राक्षस अति कानन बसत विघ्न सब टारि॥
कपट रूप रावण सीताको ले गयो लङ्का सिन्धुके पारि।
जानकी हरण सुनत सूरज प्रभु चौंकि उठे लयो धनुष संभारि॥

५

सुनु सुत एक कथा कहुं प्यारी।
कमल-नयन मन आनन्द उपज्यो रसिक शिरोमणि देत हुंकारी॥
दशरथ नृपति हुते रघुवंशी तिनके प्रकट भए सुत चारी।
तिनमें राम एक व्रतधारी जनक सुता ताके वर नारी॥
तात वचन मानि राज्य तज्यो है भ्राता सहित चले वनचारी।

तिन उठि जाइ कनक मृग मारो राजीवलोचन
केलि विहारी ॥
रावण हरण सीय को कीन्हों सुनि रघुनन्दन
नींद निवारी ।
परमानन्द प्रभु चाप रटत कर लक्ष्मण देहु जननि
भ्रम भारी ॥

६

कहो मेरो प्राण पियारी ।
भोर हि खेलन कहां धों सिधारी ॥
कुङ्कुम भाल तिलक किन कीन्हों ।
किन मृगमदको बिन्दु दीन्हों ॥

छन्द

बिन्दु जु मृगमद दियो माथे निरखि शशि
संशय परो ।
एक शरत् निशाको कला पूरण मान मद दर्पहि हरो ॥
हेरि मुख हसि कहति जननी अल्प वेणी किन गुहै ।
सूरके प्रभु मोहि आश्चर्य रची किन मन्मथ मई ॥

७

नन्द-महर घर मैया सोहै ।
जिन मेरो वदन जू फिरि फिरि जोहै ॥
खेलत बोलि निकट बैठारो ।
कछु मनमें आनन्द कियो भारो ॥

छन्द

मनमें जो आनन्द कियो भारी निरखि सुत
विह्वल भई ।
बाबा जूको नाम बूझो ताहि हसि गारी दई ॥
पाटी तो पारि संवारि भूषण गोदमें मेवा भरी ।
सूरके प्रभु हर्षि मनमें विधाता सों विनती करी ॥

८

इह सुनि बात कीर्ति मुसिकानी ।
मैं नन्दरानीके जियकी जानी ॥
मेरी सुता है रूपकी रासी ।
वे तो कान्ह बनवासी उदासी ॥

छंद

कान्ह उदासी बनवासी रङ्ग ठङ्ग इह कहा बने ।
कनक मणि ढिग रत्न अमोलिक कांच कञ्चन
क्यों सने ॥
ललिता विशाखा सों कह्यो झुकि लखो तजि तुम
कित रही ।
सूरके प्रभु भवन बाहिर जान मति दीजो कहीं ॥

९

दिन दश पांच अटक जब कीन्हीं ।
कुंवरिको कृष्ण दिखाई दीन्हीं ॥
मुरझि परी तन सुधि न संभारे ।
कुंवरि कुण्डली भुजङ्गम कारे ॥

छन्द

कारे भुजङ्गमसो ग्यारो गारडू हारे सबै ।
एक नन्दनन्दन मन्त्र बिनु कालो इह विष दाको
नहीं दबै ॥
मनुहारि करि मोहन बुलाए सकल विष देखत नसै ।
सूरके प्रभु जोरी अविचल जीयो युग युग मन बसै ॥

१०

विहसि उठी तब वदन पखारो ।
निरखि मोहन तन अम्बर संभारो ॥
मुरि बैठी मन भयो हुलासा ।
कीर्ति गई अपुने पति पासा ॥

छन्द

अपुने जु पतिपें गई कीर्ति प्रीति रीति बढ़ाइये ।
मन्त्र कीन्हीं ब्याहको सब सखी मङ्गल गाइये ॥
वृन्दावन में रच्यो स्वयंवर पुष्प मण्डप छाइये ।
सूरके प्रभु श्याम दूलह राधिका वर पाइये ॥

११

विधिवत् विधि सब कीन्हीं ।
मण्डल भरि के भांवरी दीन्हीं ॥
विविध कुसुम वर्षावे ।
तहां भामिनि मिलि मङ्गल गावे ॥

छन्द

गावे जु मानिनि मिलिके मङ्गल कहति कङ्कण
छोर हू।
ऐसे नहीं गिरि उचकि लीन्हों लाल हसि मन
मोर हू॥
छोरो न छूटे डोरना दृढ़ प्रीति रीति अनिमन भई।
सूरके प्रभु युवति जन मिलि गारो मन भावती दई॥

१२

जिन व्रत धरिके देवी पूजी
तिनके मन अभिलाष न दूजी॥
देवी नन्द सुत होहु पति मेरे।
याही होय अनुग्रह तेरे॥

छन्द

करि अनुग्रह वर दियो जब वर्ष भर लों तप कियो।
त्रैलोक्य सुन्दर पुरुष भूषण शील गुण नाहिं न बियो॥
उबटि खोरि शृङ्गारि सखिय नि कुञ्ज चोरी आनी।
वर्षभर जा का तप किया साधरी विधना वानी॥
मुकुट रचि कै मोर बनायो।
सो माथे धरि हरि वर आयो॥
तन सांवर है पीत दुकूल।
जाहि देखि घन दामिनी भूल॥

छन्द

दामिनी घन छवि कोटि वारीं अब निहारों मुखछवी।
कुण्डल विराजत गण्ड मण्डित नहिं न शोभा
शशि रवी॥
या छविकी उपमाको नाहीं सकल है गुण जाही।
मानो मोर निर्त्तत सङ्ग डोलत मुकटकी परछांही॥
गोपी न्योते आई।
मुरली ध्वनि पठे ज बुलाई॥
तहां सब मिलि मङ्गल गाए।
बहु विधि फूलन मण्डप छाए॥

छन्द

छाए जो फूल निकुञ्ज मण्डप पुलिनमें वेदी रची।
बैठे श्रीश्यामा श्यामवर त्रैलोक्यकी शोभा सची॥
इत कोकिल गण करे कुलाहल उत सकल व्रजनारी।
आई जु न्योते दुहूं दिशतें देति आनन्द गारी॥
रास मण्डलमें सब भुज जोरी।
हरि हैं श्यामल राधा जू गोरी॥
पाणि ग्रहण विधि जब कीन्हीं।
मण्डल भरि भांवरी दीन्हीं॥

छंद

दीन्हीं जो भांवर रास मण्डल प्रीति गांठि
हृदय परी।
शरत् निशा पूर्णिमा विमल शशि निकट वृन्दा
शुभ घरी॥
गाय गीत पुनीत सखियनि वेद रुचि मङ्गल ध्वनी।
इत नन्दसुत वृषभानुतनया रासमें जोरी बनी॥
मन मनसे नव राती।
द्रुम फूल अनगन अनभांती॥
वन्दी जन हरि यश गावे।
मघवा बहु वादित्र बजावे॥

छन्द

बाजे सुबाजे सकल नभ सुर पुष्पाञ्जलि वर्षहीं।
मुनि दिव्य व्योम विमान दीपक जैसे मधुकर हर्षहीं॥
शुनि सूरदास हि भयो आनन्द पूजी मनकी आशा॥
श्रीनन्दनन्दन लाल दूलह दूलहिनी श्रीराधा॥

१३

श्रीललिता जूके आजु बधायो।
श्रीवृन्दावन व्याह रचायो॥
आली न्योति पठाई।
वे मङ्गल निधि न्योती ल्याई॥

छन्द

ल्याई जु न्योती साजि सखियनि मण्डली
अदभुत रची।
बांधि वन्दनवार चहुं दिश व्याह विधि वेली सची॥
सङ्केत देवी पूजि ललिता रहसि अति आनन्द भरी।

नवल राधे दुलहिनो को दूलह वर पायो हरो ॥
देयो बहु भांति पुजाई ।
विधना इह विधि आनि मिलाई ॥
सोइ राधे जिन हरि आराधे ।
प्रेम लग्न सोई हरि सङ्ग साधे ॥

छन्द

साधि हरि सङ्ग लग्न ललिता रहसि मङ्गल गाइयो ।
विविध कुसुम विचित्र सों रचि महा मण्डप छाइयो ॥
उबटि राधे दुलहिनो तन श्यामके उबटन कियो ।
शृङ्गार करि सिर गूंथि मौरो मुकुट मोहनके दियो ॥
कर सों कर जोरि बैठाये ।
भांवरि दे दे हसिके फिराये ॥
तब हंसि ललिता दई है बधाई ।
वे ता फूली अङ्ग न माई ॥

छन्द

फूली अङ्ग न माइ ललिता रङ्ग भरि अङ्ग अङ्ग रहो ।
या व्याहको रस रोति सखि री जाति नह
मोपे कहो ॥
धन्य धन्य दिन इह रात्रि धन्य धन्य धन्य निज
कुल शुभ घरो ।
धन्य धन्य नन्दकुमार दूलह दुलहिनो राधा वरो ॥
दूलह वो होत सयानो ।
श्रोराधा जूके रूप लुभानो ॥
क्षण एक विलम्ब न कीजे ।
आंचर सो जोरनो कीजे ॥

छन्द

कियो अञ्चर जोरनो मिलि सखो चार गोनेको कियो।
करि दियेे कुञ्ज प्रवेश दोज धन्य ललिता को हियो॥
नवल सखो अनेक छवि पर वारने हो वलि गई ।
आजु अचल सुहाग को कछु जात नहीं मोपे कहो ॥

१५

व्रज दूलहको सुघर घोरो ।
विधना मानो साचे ढोरो ॥
वाको ललित वदन मन मोहे ।
श्रवण कपोल चमकि चित पोहे ॥
वाके लोचन चञ्चल तारे ।
मानो है नग दीप उज्यारे ॥
वाके काननकी छवि ऐसो ।
काम कतरनी चञ्चल जैसो ॥
वाके दन्त बतीसो होरा ।
जोभ लज्जित खाये मानो बीरा ॥
वाके अरुण अधर अति दीसे ।
फूल भरे जब हरे हरे होसे ॥

फूल भरे सुदेश होसत दृगनि अति सुख पाइये ।
मेरे नन्दनन्दन प्राणपतिको सुघर घोरो गाइये ॥
वाके केस वार सुढार मनो मखतूल मोतिन गुहो ।
मन रिझावन मनहु सावन मासमें फूलो जुहो ॥
वाको पोठिको जिनि डोठि लागो मिलि रहो
मोटो पुठो ।
झिलमिले प्रतिविम्ब तापर मानो मैन घटा उठो ॥
वाको पूंछ चामर अति बाढ़ो ।
मन्मथ मानो सांचे धरि काढ़ो ॥
वाके कञ्चन नाल बनाए ।
चरण शरण चन्द्र चलि आए ॥
वाके चारो खुर अति झलकें ।
दृग निरखत लागे नहीं पलकें ॥
वाको छैल छबोलो छातो ।
मखमलको पश्म सुहातो ॥
वाको चाल विचक्षण सोहे ।
देखत सबके मन मोहे ॥
वाको नख शिख रूप सुहायो ।
मखमली उर तान बनायो ॥

छंद

मखमलो उरतान झलमले पर रत्न जटित
लगाम जो ।

जोन परम प्रवीण जगमगी मानो मूर्ति काम जो ॥
सवार नन्दकिशोर दूलह चित्त सब छिनके हरे।
हर्षि राई लोन वारे आरती यशोमती करे ॥
धन्य धन्य यह सुख श्याम घन प्रभु दृगनि अति सुख पाइये।
मेरे नन्दनन्दन प्राणपतिको सुघर घोरी गाइये ॥

१८

बूझति जननी कहां हुती प्यारी।
कहां इह भाल तिलक रुचि दीन्हों किन कच गूंथि मांग शिर पारी ॥
नन्दघरनि यशोमती कहियत है मोसों कह्यो हमारो आरी।
तिल चांवरो मेलि गुंझामें फरिया फारि दई मोहि सारी ॥
मेरो नाम बूझि बूझि बाबाको तेरो नाम बूझि दई हसि सुगारी।
मोतन चिते चिते ढोटा तन कछु सविता तन ओल पसारी ॥
बोलि लये वृषभानु भावती हसि हसि बातें बूझि दुलारी।
सूरदास रससिन्धु बढ़ो अति दम्पती मनमें इह विचारी ॥

अथ कुब्जा मङ्गल

सेरन्ध्री सोई उठि फरकत बाहु सुलोचन वाम।
सुन्दर सगुन भए आजु ऐहें मेरे सुन्दर श्याम ॥

छंद

श्यामसुन्दर आइते इह साइके गरे लाइ हैं।
दे अलिङ्गन प्रेम सो मन सुखसमूह वर्षाइ हैं ॥
मन हि मन हुलसाति अति हो प्रेमपुञ्ज बढ़ाइ हैं।
पूरण करि हैं मनोरथ सब अङ्ग सङ्ग लगाइ हैं ॥
भूषण विविध रचे अङ्ग अङ्ग प्रति कहे न जाई।
कञ्चुकि कसि जो लई श्याम अङ्ग झलके अधिकाई ॥

छंद

अधिकाइ झलके सुरङ्ग चूनरि लाल रङ्ग सुहावनी।
पीत लहंगो बन्यो हि अतलस देखि मनको भावनी ॥
दोउ जो लोचन आंजि सूक्ष्म नयन सेनं बनावनी।
चूरी दई कर पहरि हरी सुपरम फाब फबावनी ॥
वेणी शुभग गुही सुगन्ध तेल लगाइके नीके।
सब हि बनाव कियो जाति हरण होय मन पीके ॥

छंद

प्रियके मन हरहि जैसे ऐसी मोतिन मांग भरी।
टीकावली बहु परम सुन्दर जटित नग जगमग करी ॥
वेसरि रुचिर नासा विराजे माणिक्य बनी अति कण्ठसरी।
हार हाटक जटित नग सब चलत मोती थरथरी ॥
फूलन सेज रची परम मृदुल पय फेन समान।
तकिआ रुचिर धरे गलमसुरी मानहु चन्द्रभान ॥

छंद

चन्द्रभानु सम गलमसुरी मानो देत शोभा अति घनी।
चादर बिछाइ लगाइ सौरभ बहु सुगन्धन सों सनी ॥
इह विधि मनोहर साजि बैठी महा सुभट कञ्चनतनी।
हुलसाति पुलकति मन हि मनमें आइ हैं त्रिभुवन धनी ॥
फूल हरा जो धरो अपने हाथ सुधारि संवारी।
नखशिख रूप बना मन्मथ कोटि देउं वलिहारी ॥

छन्द

वलिहारि मन्मथ कोटि छवि पर और उपमा लाज हो।
क्षण भवन क्षण बाहर विलोकति साज सब विधि साज हो ॥
मुसिकाति मन मन विवश ह्वै के अद्भुत छवि छाज हो।
मञ्जुल मनोरथ करति मन मन आइ हैं प्रिय आज हो ॥

प्राणपति आइ गए निरखत ही भई उठि ठाढ़ी।
हृदय लगाइ लई आनन्द लहरि उमगि अति बाढ़ी॥

छन्द

बाढ़ी जु आनन्द लहरि बहुविधि श्यामसुन्दर
वश परी।
रतिकेलि भोगविलास सब निशि जागि याके
सङ्ग करी॥
जो गाइ है इह रसिक लीला परम रस आनन्द भरी।
कहि सूर वाके सब मनोरथ पूरि हैं मधुहा हरी॥

श्रीयमुनाजीके पद

श्रीयमुना करुणा मई विनती सुनि लीजे।
दर्शन ते पावन सदा सुमिरत अघ छीजे॥
मज्जन तब जल पावनी मन शुद्ध करि लीजे।
गावत वेद पुराणमें यश ते सुख जीजे॥
भाव भक्ति वरदान हो मोको वर दीजे।
श्रीविट्ठल गिरिधरणके गाथा गुण रस भीजे॥

२

श्रीयमुना गोपाल हि भावे।
जे यमुनाके दर्शन कीन्हें कोटि जनमके पाप नसावे॥
जे यमुना स्नान करत हैं धर्मराज लेखो न गणावे।
जे यमुना जल पान करत हैं बहुरों सङ्कट और
न आवे॥
पद्मपुराण कथा सब ऊपर धरनी सारवाह यश गावे।
ते तीर्थ ए प्रगट जगत्में परमानन्द प्रसादे पावे॥

श्रीगङ्गाजीके पद

परमेश्वरी देवी मुनि वन्दे पावन देवी गङ्गे।
वामन चरण कमल नख रञ्जित शीतल वारि तरङ्गे॥
मज्जन पान करत जे प्राणी त्रिविध ताप दुःख भङ्गे।
तीर्थराज प्रयाग प्रकट भयो जब बनी यमुना
वेणी सङ्गे॥
भगीरथ राज सगरकुल तारण वाल्मीक यश गायो।
तव प्रताप हरि भक्ति प्रेमरस जन परमानन्द पायो॥

अथ आरती

बाती कपूरकी ज्योति जगमगे आरती विट्ठलनाथ
विराजे।
घण्टा ताल पखावज आवज सप्त स्वरनि
सारदा साजे॥
या छविकी उपमा कहा कहौं कोटि काम
निरखत लाजे।
श्रीवल्लभ प्रेम प्रताप भरे नित आनन्द मङ्गल
गोकुल गाजे॥

२

श्रीवल्लभ पुरुषोत्तम रूप।
सुन्दर नयन विशाल कमल रङ्ग मुख मृदु बोलत
वचन अनूप॥
कोटि मदन वारौं अङ्ग अङ्ग पर भुज मृणाल अति
सरस स्वरूप।
देवीजो बड़ धारण प्रगटे दास शरण लक्ष्मण
सुत भूप॥

३

रूप स्वरूप श्रीविट्ठल राय।
वेद विदित पूरण पुरुषोत्तम श्रीवल्लभ गृह
प्रकटे आय॥
लटपटी पाग मल्हारस भीने अति सुन्दर मन
सहज स्वभाय।
छीत स्वामी गिरिधरण श्रीविट्ठल अगणित महिमा
कही न जाय॥

४

श्रीवल्लभ सुत परम कृपाल।
तैसेइ श्रीगिरिधर श्रीगोविन्द बालकृष्ण जू
नयन विशाल॥
महामोह दीन दुःखी जन प्रकट भए पद्
दर्शन ईश।
जीव अनेक किये कृतार्थ कोमल कर धरत पर शीश॥

जाको दर्शन सुर नरको दुर्लभ शरणागतको
सुलभ अपार।
जन्म मरण भवबन्धन छूटे जिन श्रीमुख देख्यो
इक बार॥
श्रीवल्लभ व्रजपति श्रीयदुपति मोहन मूरति
श्रीघनश्याम।
जन भगवान् जाय बलिहारी इह मुनि जपों
तिहारो नाम॥

५

धन्य धन्य माता तू तुलसी बड़ी।
नारायण ले माथे चढ़ी॥
जे कोउ तुलसी को सेवा करे।
कोटि पाप छणमें परिहरे॥
जे कोउ तुलसी को फेरी देत।
सहज जन्म सुफल करि लेत॥
दान पुण्यमें तुलसी होय।
कोटिक फल पावे नर सोय॥
जे घर तुलसी करत निवास।
ता घर सदा कृष्णको वास॥
कृष्णदास कहे बारम्बार।
तुलसीकी महिमा अपरम्पार॥

६

यमुना जल घट भरि चली चन्द्रावली नारि!
मार्गमें खेलत मिले घनश्याम मुरारि॥
नयन निसों नयन जुरे मन रह्यो लुभाइ।
मोहन मूर्ति जिय बसी पग धरो न जाइ॥
तबकी प्रीति प्रकट भई यह पहिलो भेंट।
परमानन्द ऐसे मिले जैसे गुर चेंट॥

७

सुन्दर ढोटा कौनको सुन्दर मृदु बानी।
कौन बतायो ग्वालिनी जायो नन्दरानी॥
सुन्दर भाल तिलक दिये सुन्दर मुसकानी।
सुन्दर नयननि हरि लियो कमलनि को पानी॥
सुन्दरता तिहुं लोक की या व्रजमें आनी।
परमानन्द यशोमती सब सुख लपटानी॥

८

कमल-नयन कमलापति त्रिभुवनके नाथ।
एक प्रेमते सब बने जो मन होय हाथ॥
सकल लोकको सम्पदा जो आगे धरिये।
भक्ति विना माने नहीं जो कोटिक करिये॥
दास कहावत कठिन है जो लों चित्त राग।
परमानन्द प्रभु सांवरो पैयत बड़ भाग॥

९

आवति भोर भये कुञ्ज वन ते कहुं कहुं अरुझे
कुसुम केशमें।
रति रस रङ्ग भीनी सोहे सारी तन भीनी भूषण
अटपटे अङ्ग अङ्ग छवि देखियत सुदेशमें॥
ओपमें ओप भई विरहज ताप गई शरत् चन्द्र
नहीं गणति लेशमें।
चतुर्भुज प्रभु गिरिधर सङ्ग निशा जागी युवती
शिरोमणि घोष देशमें॥

१०

मांग मलगजी तिलक आधो अधर नि रङ्ग
आई सगसगाति।
चपल नयन आलस्य हि बनावत भौंह भुजङ्गिनि
लसलसाति॥
मानके शृङ्खल छूटे चोली के बन्द टूटे वदनकी
ज्योति कछु अवर हि भांति।
कुच नखरेखा बनी किलकत काम तनो मानहु
कनक घट माणिक्य कांति॥
पलटि परे पट कहहु कहे ते बोलत बाल कछु
अटपटाति।
केश कुसुम शशि पद नख पूजत चलत मधुर
गति डगमगाति॥
सुरति समर जीत्यो मदन नृपति ते ताहो ते अधिक
फुली अङ्ग न माति।

कृष्णदास स्वामी लाल गोवर्धनधारी सङ्ग रति
विलास सुख भले बीती राति ॥

११

आई रति रण जीते भामिनी बांधी काछ कटितट
पट फेटक ।
रिझयो सकल कला गुण नागर कछु तेरे नयननि
मह चेटक ॥
भले नछत्र भले सगुण निर्मे सखो कमल नयन
सों ते बदी सहेटक ।
ऐसो कहो अब हौं आवति हौं आपुन चलो जहां
वस हेटक ॥
डगमग चरण धरति धरणी तल गजमद त्रसत
निरखि गतिको लटक ।
त्रसत भुजङ्ग निरखि शिर वेणी भूषण निरखि
त्रसत मणि हाटक ॥
मोहन लाल गोवर्धनधारी कर वर कमल गह्यो
तुम्हारी लट ।
काम केलि शय्या पर नचई कृष्णदास प्रभु
सुरतिरङ्ग नट ॥

१२

याही गुणते सुन हो प्यारी तू मोहन गोपाल हि भाई ।
सकल शृङ्गार साजि मृगनयनी अवसर भले वेगि
चलि आई ॥
लहंगा लाल झुमकको सारी पचरङ्ग शिर
ओढ़नी बनाई ।
नव रङ्ग उर तनसुखकी चोली कसुंभी वरण
प्रिय हेतु रंगाई ॥
मृगमद पत्र लिखि कुचयुग बिच कुसुमनि
माल अनुपम माई ।
उर कर शिरसि कनक मणि अलङ्कृत निरखत
रतिपति रह्यो लजाई ॥
कृष्णदास स्वामी सुखसागर तासों सखिन मा
भरभाई ।

मोहन लाल गोवर्द्धनधारी अपनो जानि हसि
कण्ठ लगाई ॥

विलावल—चर्चरी

तू जु प्रीतमको भावती लाल भावतो तेरो ।
मन ही मन मिलि रह्यो मोहि देखत कियो
रतिरण भेरो ॥
हिलग हृदय महंको जानिये शुभग दूरते नेरो ।
कृष्णदासनि नाथ छैल गिरिधर पायो
रसिक सुख केरो ॥

२

अति रगमगो देखियत है प्यारो हसति वदति
आलस्य सों बोल ।
डगमगि चलति प्रकट दश हिमकर पद नख
पूजत चञ्चल लोल ॥
गौर अङ्ग महं अधिक बने सखि कदम्ब कुसुम
रङ्ग पीत निचोल ।
पलटि परे तेहूं नहिं जाने रसमें मगन माना
मदन कलोल ॥
कृष्णदास स्वामी सङ्ग सजनी निशि झूली प्रिय
सुरति हिंदोल ।
मोहन लाल गोवर्द्धनधारी दे सर्वस्व तू लीन्हीं मोल ॥

३

कहां लो वरणों तेरे वदनको ज्योति झलक ऊपर
वारों कोटि चन्द ।
श्रवण पाल ताटङ्क सोहत मानो रवि शशि युगल
परे मन फन्द ॥
उपमा कहत न ब कमलको नाक शुक मोहित
भौंह स्वच्छन्द ।
खञ्जन भीत न तजत अलक अलि अति शोभन
लपट मकरन्द ॥
कृष्णदास प्रभु गोवर्द्धनधर अब मिले मैं देखे
टूटे कञ्चुको बन्द ।
भिन्न सेतु विहरत तू करिणी अति नागर हरि
मत्त गयन्द ॥

४

शोभा वर्णि न जाई री माई जो मुख जीभ होइ लख कोरी।
नन्दरायकी अङ्गरी लागी गिरिधर प्रिय बलरामकी जोरी॥
बड़े भाग देखे नी तन भई जेतिक कहूं तें तो तें तो थोरी।
कृष्णदास बलि बलि चरणनकी तनमन फूल गावे नाचे छोरी॥

५

कञ्चन मणि मर्कत रस ओपो।
नन्द सूनके सङ्गम सुख वर अधिक विराजत गोपी॥
करति विधाता गिरिधर प्रिय हित सुरति ध्वजा सुख रोपी।
वदन कान्ति से सुनि री भामिनि सघन चन्द्र श्री लोपी॥
प्राणनाथके चित्त चोरन को भौंह भुजङ्गनि कोपी।
कृष्णदास स्वामी वश कीन्हें प्रेमपुञ्जकी चोपी॥

६

कटितट सोहत है मणिदाम।
पीत काछ पर अधिक विराजित न्याय लजावत काम॥
कोहे न मोहन को चित्त मोहति चपल कुटिल भ्रू वाम।
अनुछण रटत वेणु कल कूजित शुनि राधे तव नाम॥
तेरे नील पट ओढि रसिक वर लेत दिवसके याम।
कृष्णदास प्रभु गोवर्द्धनधर शुभग सोभा अभिराम॥

७

छैल छबीलो लाल रङ्गीलो देखहि किन कानन आई।
रूपनिधान रसिक गिरिधर प्रिय हौं तोको लेन पठाई॥
सघन निकुञ्ज नवल चित्रसारी विविध लता कुसुम नि छाई।
पिक अलि सङ्ग करत कोलाहल मलय पवन वहे सुखदाई॥
रतिपति मृग बांध्यो खेलनको कमल पत्र ले सेज बिछाई।
कृष्णदास प्रभु सुरति सुधानिधि युवति सभा इह कीर्ति गाई॥

८

सांवरे गोविन्द सङ्ग रङ्ग निशि जागी सोहे लोचन उनींदे मानो बन्धुकाके फूल।
सुनहि सुन्दर सुजान गोवर्द्धननाथ मिले सुरतिके हिन्दोलना तें लीन्हीं प्रेमभूल॥
मदन कला अति रसाल सङ्गीत कला सुनि पुनि रूपराशि ऐसो कौन तेरे सम तूल।
कृष्णदास स्वामिनी मनोज भेष राधिका वदन ज्योति निरखि नभसि सघन चन्द्र भूल॥

९

ए तेरे तन लागो प्यारे अङ्गको ओप सो रङ्ग शुनि सखि काहे को दुरावति।
अपने सयान न गणति अवरको जैसे तैसे हमारे तू नयन चुरावति॥
बोलनहार तुही युवतिनि महं मो सिन क्यों बातन बौरावति।
घरके भेद न जानति नागरि मनकी प्रीति आंखिनि समुझावति॥
मोहन लाल गोवर्द्धनधारी सों रहसि मिलो कोकिल स्वर गावति।
कृष्णदास प्रभु नटवर नायक रसिक शिरोमणि सुविधि रिझावति॥

१०

ए मेरे मन भावत मदनगोपाल।
केल मनोहर हेम लता युवतिनि श्याम तमाल॥
ए री शम्भु दग्ध मन्मथके अनुछण अबहि करत प्रतिपाल।
वृन्दावन भुवि सुरति सुधानिधि कूजित वेणु रसाल॥
कृष्णदास प्रभु रसिक शिरोमणि अम्बुज नयन विशाल।
नव भूषण कुच बिच धरि राख्यो गोवर्द्धनधर लाल॥

११

अरुणोदये आवति है रसमसो सुमुखि उरसि
वर लचकत हार।
पीत काछनी कटितट बांधे तू हि भई मानो
नन्दकुमार॥
मोर चन्द्रिका मुकुट धरे शिर युवति भावको
विगत विचार।
प्रियको मुरली अपने अधर धरे कर कूजति सह
लोचन अनुसार॥
तन्मय रसिक लाल गिरिधर सों देखति दृश दिशि
सुरति विहार।
कृष्णदास प्रभु अपने रूपरस वश कियो सर्वस्व
दान उदार॥

१२

प्रियके प्रीतिको फूल जनावत री तेरे नव लोचन चल।
अरुणोदय सरसीरुहको श्री जीतन चाहत अरुण
तेज बल॥
मिटत नहीं अभ्यास अधरको सुरति सेज कूजो
सुकण्ठ कल।
कृष्णदास प्रभु गिरिधर सङ्गम भीजे उरज विमल
सुख श्रमजल॥

१३

तेरे उर सोहत सुनि सुन्दरि प्रिय सङ्गमको
श्रमजल बूंद।
कुच ऊपर मञ्जरी विराजत मनहु अमृत घट
दीन्हीं रति मूंद॥
मुख जंभात जीतति अम्बुज वन मोहति रसिक
दशन कलि कूंद।
कृष्णदास प्रभु गिरिधर रस भरि वश कियो मदन
डगत पद खूंद॥

१४

हरि भज भामिनि शुभग सयानी।
शरत् कालकी घटा सदृश तू कत गरजति अभिमानी॥
हों पठई नवरङ्ग राय पति सांचि अमृत मधुबानी।
विरह अनल सशङ्कित प्रीतम रसिक राय सुखदानी॥
दूत धर्म अति निपुण दूतिका सरल स्वभाव हि मानो।
कृष्णदास प्रभु गिरिधर प्रिय के अङ्गको कण्ठ
लपटानो॥

१५

तेरे चपल नयन युग खञ्जन ते नीके।
तापहरण अति विदित विश्व महं देखत शतदल
लागत फीके॥
श्याम श्वेत राते अनियारे गिरिधर कुंवर विशद
सुख जीके।
सुनि कृष्णदास सुरति कौतुक वश प्यारी दुलरावति
अपने पीके॥

१६

तेरे चरण की हों शरण।
राखो राखो दयाल मूर्ति रसिक गिरिवरधरण॥
काम क्रोध यदा दाख्यो कुविधि लाग्यो शरण।
कृपा दृष्टि जिवावन घनश्याम अम्बुज चरण॥
निरखि नखमणि ज्योति वैभव मुदित अन्तःकरण।
कृष्णदास नि तेरोई बल विरह जलनिधि तरण॥

१७

अधरचन्द्र तिलक श्रीराधेके कुङ्कुमको ता महं
मृगमद रसविन्दु।
मानहु श्याम मन लागि रह्यो श्यामसुन्दरको
चिबुक मोहन श्याम विन्दु।
सखिन ते दुराउ करत पोंछत बिच कुच युगमहं
श्रमजल विन्दु।
कृष्णदास प्रभु गिरिधर जानो रीझि दियो चुम्बन
सोहत पीक विन्दु॥

१८

देखि री नयननि गिरिवर धर।
सहचरी कहति द्वितीय सहचरी सों प्रेम मुदित
प्यारी राधावर॥

भूषण भूषित अङ्ग मनोहर बसन मनोहर कनक
कान्तिहर ।
चित्तवृत्त हरत विश्व युवति निके सर्वस्व देत उदार
कमलकर ॥
उपमा कहा कहौं को लायक बरणों कहा
किशोर वयसवर ।
मुरति अन्त लटकत व्रज आवत कृष्णदास बड़ भाग्य
कल्पतर ॥

१९

राधा रङ्ग भरी नहिं बोलति ।
मोहन मदन गोपाल लाल सों अपनो यौवन
त लति ॥
चाहति मिलन प्राण प्यारे को मेरो ह मन टक
टोलति ।
छांट हि बहुत चातुरी भामिनि कत हमसो झक
झोलति ॥
प्रात होन लाग्यो सुनि सजनी अब हो तमचरी
बोलति ।
कृष्णदास प्रभु गिरिवर धर हेतु सारङ्ग नयन
सलोलति ॥

२०

एक हि हाथ टेके ठाढ़ी दधि मथनियां शीर्ष लिये ।
झगरति झरि बात कहति ढीठ भई दुजो कर
हरिमुख निपट निकट किये ॥
चलति फिरि चलति जाति नाहीं चलि जानत
सतर भौंहें किये ।
कृष्णदास प्रभु तन भुकि सयँति नयन औरं
बैन और हिये ॥

२१

चली जाति उत गेहको मुरि मुरि हरि देखति इत ।
कबहुं कें इहि मिस ठाढ़ी ह्वै लावण्य हि सुधारति
कबहुं ओढ़ति अञ्चल बनाइ बनाइ ढिग जित तित ॥
झूठेइ सोच सोच सोच रहति पुनि डगरति
अटपटाति कछु भूली सो भ्रमित चित ।

कृष्णदास प्रभुके रूपगुण मन अरुझो ताते सुरझि
न सकति थकति थकति हित ॥

२२

काहे बांधति नाहिं न छूटे केश ।
शशिमुख पर घन धारा छूटी कछुक जु चली उर देश ॥
अङ्ग अङ्ग यह शोभा कहा कहूं निशि जागि आई
और हो वेश ।
कुम्भनदास अति ओपति ओप भई गोवर्द्धनधर
मिले व्रज युवति नरेश ॥

२३

मोतिन मांग बिथुरी शशिमुख पर मानो नक्षत्र
आये करन पूजा ।
अञ्चल फरहरात उरपर बांधो कामध्वजा ॥
विरह राहुते छूटि सकल कला विमल भई देखत
सुखुजा ।
कुम्भनदास प्रभु गोवर्द्धनधर अधर सुधा कियो पान
कण्ठ मेलि उदार भुजा ॥

२४

तू तो आलस्य भरी देखियत है री रसो ।
रजनी चोरि ताते आंखिन लागी अरु अकेली
भामिनी कुञ्ज बसी ॥
घर बिरोधते रूसी काहु जानो नवनको दिन
गति होनसी ।
कुम्भनदास गिरिधरके कण्ठको यह जानति हों
तैं तो गिरी पाई मोतिन माल लसी ॥

२५

अजब देखियत वदन उहडह्यो प्यारी रगमगी
नयन तेरे रङ्गभरे ।
मानहु शरद् कमल ऊपर उन्मद युगल खञ्जन लरे ॥
रसिक शिरोमणि लाल सुशीतल कमल कर उर धरे ।
कुम्भनदास कहि काहे न फूले गिरिधर प्रिय
सब दुःख हरे ॥

२६

काहेते आज बिथुरी प्यारी क्यों न बांधइ अलक।
भौंह कमान नयन रतनारे मानो न लागी पलक॥
रतिरस सुखकी फूल जनावति मद गयन्दकी
चाल मलक।
कुम्भनदास मिली गिरिधर को मानो कोटि चन्द्रकी
झलक॥

२७

जानो मैं आजु मिलो प्यारे सों ते अपनो भावतो
ही री कियो।
सकल रैन साथ रसरङ्ग खेलत पलक सों पलक न
लागन दियो॥
कण्ठ लागि भुजा दे शिरहाने रसिक लालको
अधर सुधारस पियो।
कुम्भनदास प्रभु गिरिवरधर को अङ्क भरि भेंटि
जुड़ायो हियो॥

२८

रसमसे नयन तेरे निशाके उनींदे।
काहेको दुरति जू उलटो बात प्रात ही जो ध्वनो दे॥
वदन आलस्य में आलस्य की जंभाय वो अति
अलसात वचन छोदे।
कुम्भनदास प्रभु गिरिधर मिले तो हि सकल
अङ्ग सेवो दे॥

२९

सखो री जिनि व सरोवर जाहि।
अपने रसको तजि चक्रवाको विछुरि चलति
मुख चाहि॥
सकुचत कमल अकाल पाइके अलि व्याकुल
दुःख दाहि।
तेरे सहज आन यह गति इह अपराध कहि काहि॥
यह अदभुत शशि रच्यो विधाता सरस रूप
अनुसाहि।
कुम्भनदास प्रभु गिरिधर सागर देखत उमंगे ताहि॥

३०

नन्दनन्दनके अङ्कते मुरली सुन्दर चतुर हरति।
नूपुर सुख मूंदिके अक्रन अक्रन पग धरणि धरति॥
कनक वलय कङ्कण भुजानि युग उछे पुकरति।
कुम्भनदास गिरिधरके मुद्रित नयन देखति चकित
मन्द हास रस जागनते डरति॥

——o——

श्रीगणेशाय नमः।

श्रीसरस्वत्यै नमः।

श्रीगोपीजनवल्लभाय नमः।

अथ ध्रुपदादि गान प्रारम्भः।

देवीं सरस्वतीं नत्वा गणेशं प्रणमाम्यहं।
सङ्गीतरागकल्पद्रुम रागसागरप्रकाशितः॥
नीलाम्बरा वेष्टितगौरदेहां
विम्बाधरां कुण्डलमण्डितास्यां।
श्रीकृष्णवक्त्राम्बुजदत्तनेत्रां
भजामि राधां सकलार्थसिध्यः॥

भगवानुवाच—

नाहं वसामि वैकुण्ठे योगिनां हृदये न च।
मद्भक्ता यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद॥

अथ नादमहिमा—

सुखनि सुखनिधानां दुःखितानां विनोदः
श्रवणहृदयहारो मन्मथस्याग्रदूतः।
अतिचतुरः सुगम्यो वल्लभो कामिनीनां
जयति जयति नादः पञ्चमस्योपवेदः॥

अथ भैरवरागध्यान—

गङ्गाधरः शशिकलातिलकस्त्रिनेत्रः
सर्पै विभूषिततनुः गजकृत्तिवासा।
भास्वत् त्रिशूलकर एष नृमुण्डधारी
शुभ्राम्बरो जयति भैरव आदिरागः॥

धैवतांस ग्रहन्यास क्वचित् गान्धार ईरित: ।
प्रथमा मूर्च्छना ज्ञेया भैरवे परिकोर्त्तिता ॥

भैरव—चौताला

सा रे रे ग म प ध नि सप्त स्वर मो मनमें ऐसे आए।
आरोही अवरोही सरगमको ऐसे होत
नि ध प म ग रे सा ॥
पुनि द्विगुण कोज्ये ता ऐसे लोज्ये स्वरनको तब
आवे सबनको मतिमें कण्ठ को सुधार।
धानिसा निसारे सारेग रेगम गमप मपध पधनि
धनिसा सानिध निधप धपम पमग मगरे गरेसा ॥

दूसरा आभोग

द्विगुण सरगम कियो विचार गुरुनपे सिखके
स्वरन को सुधार।
सारेसा सारेगरेसा सारेगमगरेसा सारेगम पमगरेसा
सारे गम पध पम गरेसा सारे गम पधनि सा ॥
निध पम गरेसा नि ध प म ग रे सा धप मगरेसा।
पमगरे सा मगरेसा रेसा सारेसा सारे गसा सारे
गमसा सारे गमपसा ॥
सारे गम प ध सा सारे गमपधनिसा सानि सानिधसा
सा नि धपसा सानिधप मगसा सानि धप मगरे सा।
सा नि नि धनि नि धप सानि नि धप मग पमगरेसा
मग रेसा धुरपद मध्य सदा रङ्ग बनाई ॥

२

ग नि रे साग ममपनि नि पग सम्पूरण गुणियन
मिल गायो।
सप्तस्वर तोन ग्राम कोमल अति लेहो नि नि नि
धधध पपप ममम गगरेसा ॥

३

गाग मगरेसा सामगा पनिध प म म प म गमगरेसा।
मपधसा सा रे सा नि नि सा नि नि ध निनिसा
नि निध सासा निध निनि धप धधपम पपमग
मम गरेसा ॥

सप्तसुर समपूरण में यों सरि गम विचारि सा सा रे सा।
रे रे रे गरेग गगमगम ममपम पपपध प धध धनि
धनि निनि सानि सासा ॥
सानि सानिनिनि धनि धध धपध पप पमप मम म
गम गग गरे गरे।
रे रे सारेसा सोई गुरुन मन मान अति डरे ॥
निरे सासा गम प ध सा राग भैरव भ्रमत
सङ्गीत गायो।
मम पप मम पधसा सासारे सामगरेसा नि सानि
ध प नि नि नि धधध पपप ममम मगरे सा ध्यायो ॥
संपूरण सप्तस्वर इकईस मूर्च्छना गमधप मगरे
सानि ध सारे गसारे गम ध सानि ध प मगरे सा।
गम धनि सा नि सा नि ध नि धप सप्तगसा मननि
ध प म ग रे सा ॥

४

जय सारदा भवानी भारती विद्या नाम वेद यश गावे।
वाणी वाक् इड़ा देवी सरस्वती मन भावे ॥
मङ्गला ज्ञानरूपा वरणमालनो वीणा पुस्तकधारिणी
जे तोहे ध्यावे।
कहे विलास त्रय ताप मिटे निर्बोध बोध होवे
वाञ्छित फल पावे ॥

५

महा वाक्‌वादिनो सन्मुख हूज्ये अब हूज्ये हो।
याहि तें त्रिभुवन मानो याते तू भवानी ज्यों
ज्याके मनको इच्छा सोई सोई पूजे हो ॥
रिद्धि सिद्धि तब हो पाइये मात जब तव चरण
छूजे हो।
तानसेन यह प्रसाद मांगत जहां तहां जुरत फुरत
रसरङ्गकी तहां करतु जे हो ॥

६

चन्द्रवदनो मृगनयनो तारा मध्य तारका गङ्गपुतरी
कालिन्दी इह विधि डोरे बनाय कोन्हीं त्रिवेनी।
छूटि पोत कण्ठ दोपक मुखको ज्योति होत तामें
गुप्त सरस्वतो मिलो ऐन मैनी ॥

सुन्दर रूप अनुपम शोभा त्रिविध रजोगुण सतोगुण
तामस गुण राजत लाल श्वेत श्याम तरण तारणी
मुक्ति देनी।
निर्भय हो आनन्द होत तव दर्श स्पर्श हो
तेरो रूप अपरम्पार कहां लों बखाने तानसेनी॥

७

सरस्वती सुप्रसन्न हो मोको वाक्‌वानी।
षड्‌ज ऋषभ गान्धार इन इन स्मरण साधे तव
रागरङ्ग गुरुप्रसाद आवत तानसानी॥
रूपको निधानी इन्द्राणी सिंहलानी महिषासुरमर्दनी
जगज्जननी गुणनिधानी।
तानसेन मांगे तान ताल स्वर श्रीदुर्गे भवानी
कीजिये दया मोहे दीन जानी॥

८

जो कोई ध्यावे सरस्वती चरण शरण को ताको
देत विद्या वाक्‌वानी।
अर्थ धर्म काम मोक्ष चारो फल की दानी॥
वाक्यवादिनी तू हो माता आदि ज्योति रूप निधानी
इन्द्राणी शिवानी मङ्गला ज्ञानरूपा सारदा वरदानी।
तानसेन सेवक यह मांगे तान ताल राग रङ्ग दे
दया कर मोहे दीन जानी॥

९

तू आदि भवानी जगजानी मानी सर्वाणी
सर्व कला दे विद्या वरदानी।
अम्बे जगदम्बे असुर संहारणी तरण तारणी
तान ताल शुद्ध रागरङ्ग अच्चर देवानी॥
सप्तस्वर तीन ग्राम इकईश मूर्च्छना उञ्चाश कोटि
तिनके लच्छन सब जियमें आनी।
बैजू बावरो रावरो सेवक यह मांगे मूर्तिमान
राग मेरे गरेमें समानी॥

१०

जय सरस्वती गणेश महादेव शक्ति सूर्य सब देव
देहो मोय विद्यावर कण्ठ पाठ।
भैरव मालकोष हिण्डाल दीपक श्रीमेघ मूर्तिवन्त
हृदय रहे ठाठ॥
सप्तस्वर तीन ग्राम इकईश मूर्च्छना बाईश स्रुते
उनञ्चाश कोट ताल लाग डाट।
गोपाल नायक हो सब लायक आहत अनाहत
शब्दसों ध्यायो नाद ईश्वर बसे मो घाट॥

११

तुम हो गणपति देव बुद्धिदाता शीर्ष धरे गज शुण्ड।
सिद्धेश्वर नाम तुम्हारो कहियत जे विद्याधर
तीन लोक मध्य सप्त द्वीप नव खण्ड॥
जे जे ध्यावे ते ते फल पावे चन्दन लेप किये
भुजदण्ड।
तानसेन तुमको नित्य सुमिरत सुर नर मुनि
गुह्य गन्धर्व झुण्ड॥

१२

पूजो रे गणेशको गुनि।
रिद्धि सिद्धिके दाता विघ्नहरण दुनि॥
जिन ध्यायो तिन पायो मन इच्छा भनि।
बख्‌शके प्रभुको ध्यावत सुर नर मुनि॥

१३

लम्बोदर गज-आनन गिरिजासुत गणेश एक रदन
प्रसन्न वदन अरुण वेश।
नर नारि गुह्य गन्धर्व किन्नर यक्ष तुम्बर मिलि
ब्रह्मा विष्णु आर्ती पुजवत महेश॥
अष्ट सिद्धि नवनिद्धि मूषक वाहन विद्यापति तुही
सुमरत तिनको शेष।
तानसेनके प्रभु तुमको ध्यावे अविघ्न-रूप
विनायक रूप स्वरूप आदेश॥

१४

साधो विद्याधर गुणनिधान गुणदाता सरस्वती
माताको कर आदेश।
नमोनमः रिद्धि सिद्धिके स्वामी सकल विद्या प्रवेश॥

ज्यो इनकों ध्यावे मन इच्छा फल पावे
दूर होत तनके क्लेश ।
तानसेन प्रभु तुम होको ध्यावे ब्रह्मा विष्णु महेश ॥

१५

ए गणराज महाराज दे विद्या जगदीश ।
सप्त स्वरसों गाऊं बजाऊं सर्व राग रागिणी
पुत्रवधुन सहित छतीश ॥
लेत बाईस सुरति इक्कीस मूर्च्छना उनचास
कोटि तान आवे देन ।
तालताय सङ्गीत मत सो सप्त ध्याय सो बुद्धि प्रकाश
होय तानसेन प्रथम छ: राग तीस रागणी ए देन ॥

१६

आगु नो प्रोस सप्तस्वर तीन ग्राम उरपति रप लाग
उठि भेश ।
अतीत अनाघात सम विषम लेश तानसेन सब
गुणी कहावे वरेश ॥

१७

प्रथम नाम गणेश को लेहे जा सुमरे होवे
सर्वसिद्ध काज ।
गौरीनन्दन जगवन्दन लम्बादर नाम जपत सकल
सृष्ट सुर नर मुनि शेष राज ॥
विघ्नविनाशन सब दु:खनाशन मङ्गलदायक ढुण्ढिराज।
तानसेन तेरो स्तुति करे सब देवन सरताज ॥

१८

गौरीनन्दन सदा सुखदायक जय जय जय गुरु गणेश।
कोटि विघ्न भञ्जन खण्डन सर्वदु:ख शत्रु गञ्जन
जाके पिता महेश ॥
भक्ति मुक्ति अभय वर प्रसन्नवदन पूजे इन्द्रादि देव
औ दिनेश ।
महानाद सेन कहे मैं मांगत हूं तुमसो दोजे अनेक
सुख सम्पत्ति स्तुति कर थके फणीश ॥

१९

प्रथम मनाऊं गणेश ।
गौरीनन्दन जगवन्दन लम्बोदर नाम जपत सकल
सृष्ट सुख शेष ॥

२०

प्रथम नाम गणेश को लोजिए जा सुमरे होए
सिद्धि काम ।
जय गिरिजानन्दन जगवन्दन लम्बोदर तोहि जपत
आवे रिद्धि सिद्धि होय सुख धाम ॥
अष्ट सिद्धि नव निद्धि पाये सुख विश्राम ।
कहे बैजु बावरो निशदिन सुमिरो नाद विद्या
प्राप्त होय लिए नाम ॥

२१

मुरारी त्रिभुवनपति इन्द्र ऐरावतपति शेष नाग हैं
फणपति ।
क्षीर उदधि सलिलपति कौस्तुभ मणि रतन पति ॥
दिनकर दिनपति शशि उडगणपति हनुमान् बलपति
नारद भक्त पति मृदङ्ग साजन पति ।
चिर चिरञ्जीव रहो शा अकबर नरपति तानसेन
ताननपति ॥

२२

सङ्गत समुद्र सों भेद उक्त युक्ति साधे वानी ।
प्रथम आकार भूमि साधे सप्तस्वर तीन ग्राम
स रि ग म प ध नि कण्ठ वर्ण बनाए तानसानी ॥

२३

कर्तार तुमको कीन्हों सब लायक मेरो मुश्किल
कर दो आसान ।
जो तोहे तक आवे मन इच्छा फल पावे सब दान ॥
गुणियनको सुखदायी महाराज बहादुर गुणनिधान।
राखत सब को मान सुन्दर सुजान ॥

२४

प्यारे पठई कि धों तू आप होति लागी री मनावन ।
प्राणेश्वरके मुखकी बतियां पै न होये री हो नीके
जानत जैसो तुमहो सिरी लागी बनावन ॥
या स्वरनको कान न कराइं ॥

२५

अनन्त ब्रह्माण्ड नायक परब्रह्म श्रीश्रीधर महाराज।
कृपासिन्धु भक्तपाल सुखकर रख ले मेरी लाज॥
यह विनती कबूल कीजिए तुम जगत् शिरताज।
श्रीलक्ष्मीनारायण कार्य पूर्ण करो सरो आछे काज॥

२६

जात न मोपें चल्यो सजनी री जाय कहो क्यों न
आवे सवेरे।
कि धों उपाय तु हीं कर वेग न पाय परे॥
कछु आगे को औरो भांति भई उरकी अब और
लखे रङ्ग डारत घनेरी।
काहे ते हो बढ़ आए नितम्ब गई कटि काहे ते
अब मेरी॥

२७

महम्मद रसूल अल्लह कीन्हों तुम्हें जातपाक।
तुम जो रहे क़ादर की बन्दगी में मन बिच
करम कर एक ही ताक॥

२८

कीजिए कृपा मोपे दुर्गे भवानी दया करो
जगज्जननि तेरे ही चरण लागी।
योगयोगेश्वरि भोग महेश्वरि जगत्तारणि
तव नाम जपत भय भागी॥

२९

चली चण्डमुण्ड मारवे को महाकाली कठिन कर
मुख लाली दरसत है।
भर भर घटे घट कलस ढ़ाावन दानव विड़ारत
अट अट कह विहसत है॥
ओढे गज खाल गरे मुण्डन के माल नयन लाल हसे
लाल जजमो लसत है।
महा विकराल देवी दैत्यनको काल ताको वदन
विशाल जगी ज्वाला निकसत है॥

३०

सर्वाणी सर्वकला माई सरस्वती सारदा
श्यामसुन्दरी शूलहरणी।
कुमदहरणी कामदायिनी काली कल्याणकरणी
कुन्दरदनी॥
कमलवदनी क्रूरक्रन्दनी नित्य कारका चन्द्री
काशीरानी कारिणी कालहरणी।
परमेश्वरी पार्वती परम पुण्य पावनी॥
परम्परा चण्डपापहरणी पावनी पृथुकरणी।
जगराज दास श्यामवर्णा महाकाली तारण तरणी॥

३१

सरस्वती आदिरूप नाद ब्रह्म वीणा बजावत।
मनावत पूर्ण गुणी मन इच्छा फल पावत॥
मणिकी मन्दिर सोनेकी कलसा जगमग ज्योति
लागी धाता पग ध्यावत।
इड़ा देवी वाक्वाणी सारदा तानसेन की दीजे
स्वरताल रागरङ्ग शुद्ध मुद्रा गावत॥

३२

मोहन दृष्टिके आधार तन को अब राख
लीजे गोपाल।
नयन प्राण सुख दीजे तनते दुःख दूर कीजे
इतनी विनती मेरी सुनि लीजे हाल॥
पतितपावन करुणासिन्धु दीन दुःखभञ्जन अनेक
रूप लीलाधारी भक्तवत्सल युग युग भए कृपाल।
मदनमोहन मधुसूदन मुरारी गज सुदामा द्रौपदी
सहायकारी तानसेन प्रभु भक्त प्रतिपाल॥

३३

मो सों ज्यों अवध बद गए सांझ किए आए भोर भए।
ऐसी को चतुर सुघर नारी जिन तुम्हें बिरमाए
ऐसे सुख दए॥
अधरन अञ्जन कहुं पीक पलक लीक औरन सो
चित्त ही बहु भांतन सों लए।
माहनके माह आज वहां पाय धरो जहां कीन्हें
नेह नए॥

३४

तोको प्यारे पठई कि धों तू आपते आई मनावन।

प्राणेश्वरके मुखकी बतियां ऐन होवे नारी हौं मोके
जानत जैसी तू मोसो री लागी बनावन ॥
या मुख की अब कान न करहौं अनमिल पियसो
कह्यो न परत तेरो भौंहें तनावन।
कहा कहौं राजाराम सो तो सी री पठावे हमारे
गृह बनावन ॥

अथ होली रङ्गीन गान प्रारम्भः

मङ्गलाचरणम्—

नमामि हृदये शेषलीलाक्षीराब्धिशायिने।
लक्ष्मीसहस्रलीलाभिसेव्यमानकलानिधे ॥
येषां श्रीमद्यशोदासुतपदकमले नास्ति भक्ति नराणां।
येषामाभीरकन्याप्रियगुणकथने नानुरक्तारसज्ञा।
येषां श्रीकृष्णलीलाललितपदकथास्वादरो नैव कर्णौ
धिक् तान् धिक् तान् धिगेतान् कथयति नियतं
कीर्तनस्थो मृदङ्गः ॥
जन्मान्तरसहस्रेषु तपोध्यानसमाधिना।
नराणां क्षीणपापानां कृष्णे भक्तिः प्रजायते ॥
मङ्गलं भगवान् विष्णुः मङ्गलं गरुड़ध्वजः।
मङ्गलं पुण्डरीकाक्षः मङ्गलायतनो हरिः ॥
गोलोके गोकुले राधाकान्तो यद्दिभुजः स्वयं।
वासुदेवगृहे साक्षात् चतुर्भुजः स्वयं हरिः ॥
ब्रह्मेति परमात्मेति कृष्णस्तु भगवान् स्वयं।
परब्रह्म स्वयं ज्योतिः कुतस्तेजस्विना विना ॥
कृषिर्भूवाचकः शब्दः णश्च निर्वृत्तिवाचकः।
तयोरैक्यात् परब्रह्म कृष्ण इत्यभिधीयते ॥
वसन्ते वासन्ती कुसुमसुकुमारैरवयवै
र्भ्रमन्ती कान्तारे बहुविहितकृष्णानुसरणां।
अमन्दं कन्दर्प ज्वरजनित-चिन्ताकुलतया
वलद्बाधां राधां सरसमिदमूचे सहचरी ॥

अथ वसन्तध्यान—

चूताङ्कुरे नेव कृतावतंसो विघूर्णमानो ऽरुणनेत्रपद्मः।
पीताम्बरो काञ्चनचारुदेहो वसन्तरागो युवतीप्रियश्च ॥

वसन्त—यत्

ललित-लवङ्गलता-परिशीलन-कोमल-मलय-समीरे।
मधुकरनिकर-करम्बित-कोकिल-कूजित कुञ्ज-कुटीरे ॥
विहरति हरिरिह सरस-वसन्ते।
नृत्यति युवतिजनेन समं सखि विरहिजनस्य दुरन्ते ॥
ध्रुव
उन्मद-मदन-मनोरथ-पथिक-वधूजन-जनित-विलापे।
अलिकुल-सङ्कुल-कुसुमसमूह-निराकुल-वकुलकलापे ॥
मृगमद-सौरभ-रभस-वशंवद-नवदल-माल-तमाले।
युवजन-हृदयविदारण-मनसिज-नखरुचि-किंशुक-जाले ॥
मदन-महीपति-कनकदण्ड-रुचि-केशर-कुसुम-विकाशे।
मिलित-शिलीमुख-पाटलि-पटल-कृत-स्मर-तूण
विलासे ॥
विगलित-लज्जित-जगदवलोकन-तरुण-करुण-
कृतहासे।
विरहि-निकृन्तन-कुन्त-मुखाकृति-केतकि-दन्तुरिताशे ॥
माधविका-परिमल-ललिते नवमालिकयातिसुगन्धौ।
मुनि मनसामपि मोहन-कारिणि तरुणाकारण-बन्धौ ॥
स्फुरदतिमुक्त-लता-परिरम्भण-पुलकित-मुकुलित-चूते।
वृन्दावन-विपिने परिसर-परिगत-यमुना-जल-पूते ॥
श्रीजयदेव-भणितमिदमुदयति हरिचरण-
स्मृति-सारम्।
सरस-वसन्त समय-वनवर्णनमनुगतमदन-विकारम् ॥

भैरवी—धमार-यत्

कान्ह ऐसा वंशी बजाई मोह लई नई नार।
श्यामसे सैन कर रहो है सनमुख रीझ रहो है
रिझवार ॥
ऊदे वर्णको जो पहरे है चूनर अंगियाको रङ्ग
गुल अनार।
दे अञ्चर मुख ऊपर ठाढ़ी सोहत अरद किनार ॥
२
कान्ह जू कहा दोगे मोको देखो ऐसो मोको नार।
नख शिख ठीक चन्द्र जैसो मुख वाको कुच मानो
जैसे अनार ॥

वयस की है थोरो उमङ्गकी है पूरो विष शिकारी
ज्यों कचनार।
मतिको चतुर ज्यों परख को पारखी तुम हू सों
सरस सुनार॥

३

ए री मोसों होरी खेलन आये श्याम कुंवर नन्दलाल।
अबीर गुलाल की झोरी भर भर डारत रङ्ग गुलाल॥
केशर रङ्ग पिचकारी छिरकत डार प्रेमको जाल।
कृष्णानन्द रङ्गमें भीजोई फगुवा लए व्रजबाल॥

४

डारत केशर पिचकारी सखी मोपै कुंवर कन्हैया।
बाट घाट मोहे रोकत रुंधत कहा करूं मेरो दैया॥
वन कुंजनमें कुच भुज टकटोरत सङ्ग हो लोग
खरे हैं चवैया।
लाज सकुच काहूकी न माने देऊंगो मैं नन्द दुहैया॥

५

मोरं सइयां ले आए गवनवां री मैं तो खेलों
होरी गर लाय लाय।
बहुत रहो बाबुल घर सजनो अब पियके रङ्ग में
रङ्गी हूं आय
गुण अवगुण सब माफ करे है कृष्णानन्द में
रहो हूं समाय॥

६

श्याम जू डार दई हो धूमधाम होरी की व्रजमें
मग चलन न पावे कोऊ नार।
लरे झगरे मुख मींजि वरवश गारो गावे दे दे तार॥
अबीर गुलाल लाल घुमड़नमें रहो न काहूकी संभार।
रसिक सनेह रस वश कर लई मोहन कृष्ण मुरार॥

७

भली वेणु बजाई रावरे हो कान्ह होरी धूम मचाई।
सप्त स्वरन इकईश मूर्छना मधुर मधुर सुखदायो॥
डफ मृदङ्ग औ रबाब स्वरमण्डल मुरली तानन छाई।
रसिक छैल रस वश कर डारो भैरवो गाय सुनाई॥

८

बाबुल घर दुलहन बहुत रही अचपल ह्व
पिया पय धाय।
बाबुल तेरो व्याह रच्यो है हरे हरे बांस मंगाय॥
गुड़िया खेलोनो रहै ताकमें नहीं खेलनको दाय।
सात सहेली में रहो अकेलो सइयांके देश चलि जाय॥
गुण अवगुण ले चली गही शरण पिया पे जाय।
श्रीकृष्णानन्द में रङ्ग गई दुलहन ब्रह्म में रही समाय॥

९

ऐसो ढीठ सांवरो री गोरी कर धर लिपट रह्यो
वरजोरी।
तक झुक झिझक रहो मो मनमें सास ननदको
है मोहे चोरी॥
का करूं कित जाऊं सखी री श्यामसुन्दर को लागो
मोहे तोरी।
सुन्दर श्याम मनोहर मूर्ति डारो रङ्ग मले मुख रोरी
कृष्णानन्द रङ्ग भरि सुरति फगुवा लेहों कृष्ण पे
किशोरी॥

१०

कछु कहो संभार मनमोहन लाल होरी खेलन
मो से आए हो।
काहू सों लपटत औ झटपत काहू सों काहू से
अङ्ग लगाए हो॥
अतर अबीर अरगजा केशर पिचकारिन रङ्ग छाए हो।
रसिक छैल अब मानत नाहीं होरी धूम मचाए हो॥

११

मोरे बाबुलके घर आज सखी मोरे बाबुलके घर
आज पिया होरी खेलन आए लेके साज।
लोक सकुच सब हो दूर डारूं खोल घूंघट
पट तज हूं लाज॥
पांच पचीस लिए सङ्ग सखियां नानाविध ले समाज।
श्रीकृष्णानन्द में रङ्ग रङ्गे हो नेक न आइ हों आज॥

१२

मोरे बाबुल दीन्हों गवनवा मैं तो चली हूं सइयांके
नगर।
आ मोरो गुइयां गरे लागो हमरे फेर के न होइ है
मिलनवा॥
नैहरमें हमं खेल गंवायो सासुर भए है चलनवा।
पांच सहेली तामें अकेली सइयांको भयो है
अवनवा॥
चार कहार मिल डालिया ले आवो कहां को
करो हो रवनवा।
न्हाय धोय नए वस्त्र पहर केशर तिलक चन्दनवा॥
सज शृङ्गार दुलहन बन बैठो लाज सकुच उनमुनवा।
बिदा करन कुटुम्ब सब आये नाऊ और बम्हनवा॥
निरखत हो सब रह गये लोगवा नैनन नीर पुरनवा।
अनृत चले हो बने अब होत कहा है काहूको
वश न चलनवा॥
अब बिदा हो चली है दुलहन पिय पिय लगी
रटनवा।
कहै कबीर सुन री दुलहन पियके घर ले चरणवा॥

१३

कछु कह न गए समझाय मोरे राम यौवन
हमसे बिदा मांगे।
काहूके हाथ लिखूं व्रज पाती काहुके हाथ सन्देश
मोरे राम॥
आये वसन्त बिरहके मांझ में पियके मिलन
सन्देश मोरे राम।
एक बन ढूंढ़ सकल बन ढूंढ़ा करि योगनके भेश॥
जबते गए पिया भए वहां होके फेर नहीं मिल्यो
प्राणेश।
कृष्णानन्द में रङ्ग रहो हों आय मिलो मोहै
नटवर वेश॥

१४

मोरे नयनके ऊपर मारी सइयां पिचकारी।
भर पिचकारी मुखपर मारी भीज गई तन सारी॥
अबीर गुलाल ले रङ्ग में बोरी गावत दे दे तारी।
कृष्णानन्द सों फगुवा लीन्हें तब छांड़े बनवारी॥

१५

इन मोहन बनवारी ने मोहे भोर ही आन जगाई।
कह न सकत कछु लाजकी मारी नई नई प्रीति
लगाई॥
अङ्ग छुवो जिनि बांह गहो मेरी हा हा करूं परूं पाई।
हा हा सरक जा इस्क रङ्गीले देती मैं राम दुहाई॥

१६

कोऊ मेरो कहा करेगो मैं तो पिया सङ्ग खेलों होरी।
अपने अपने मन्दिरसे निकसो कोई सांवरो कोई गोरो॥
पिया मेरो पियकी सजनी पिय मोंको रङ्गमें बोरो।
कृष्णानन्द में रङ्ग गई हों फगुवा ले हों बहोरी॥

१७

अजी तुम सांची कहो होरी खेल कहां आए।
अधरन अञ्जन पीक कपोलन भाल महावर लाए॥
डगमगात पग धरत धरणी में तीन तिलक कहां पाए।
रसिक छैल भ्रमर घर घरके वैन तिया विलमाए॥

१८

कैसे समझाऊं कान्ह यौवन कहा मानत नाहीं।
उमंगे यौवन ज्यों श्रावण भादों देती मैं राम दुहाई
अब के पिया मिल ले हमसे करो हो मेरो सहाई॥

१९

हम से आंख छिपाए जात गोरी तेरो फैल
रहो कजरा।
नासर पिया सों मिल आई सजनी टूट गई दुलरी
तिलरी गजरा॥

२०

मोरी चटक चुनरिया रङ्गाव सइयां तो से ना खेलों।
सालू सरस कुसुमको अंगिया मैं अपने रङ्ग में रलों॥

२१

मोरे सइयां ने कीन्हों अवनवा मैं ते खेलूंगो होरी
पीके नगर।

पांच पचीस लीन्हों सङ्ग सखियां अबीर गुलाल ले
अङ्ग रङ्गी ई सगर ॥

२२

काहे मार गैए पिचकारी मोरे श्याम सुरङ्ग
चुनरिया में दाग़ परो।
रपट झपट लपट गहो बहियां नयन सैन दे
आय अरो॥

२३

आवो बलमजी हमारे डेरे अबीर गुलाल मलों
मुख तेरे होरीके दिनन में ना कर भेरे।
महम्मद शा पिया चतुर रङ्गीले दूर बसो या बसो
मेरे नेरे॥

२४

कान्ह जो आवेंगे मेरे होरी खेलनको देखूंगी मैं बड़े
खेलार।
फगुवा लूंगी तब जान दूंगी रसिक छैल रिझवार॥

२५

आज रङ्ग है री ब्रज रङ्ग है लिये ग्वाल सखा
सब सङ्ग है।
रङ्ग हो रङ्ग चहुं ओर सखी री फागु खेलनमें
उमङ्ग है॥
रङ्गमहल ओ रङ्ग हो मजलिस रङ्ग वसन
कृष्ण रङ्ग है।
रङ्ग सुरङ्ग पिचकारी रङ्ग ले बाजत मधुर मृदङ्ग है॥

२६

रे होरी खेलनको प्यारो आवो नो हमार गली।
अबीर गुलाल उड़ावो मनमान्यो फूलो गुलाब की
कली॥
अतर अरगजा पिचकारी केशर ले घूंघट ओट चली।
प्यारे जियको प्यारो वल्लभ गावत होरी अली॥

२७

होरी खेलनको कैसे जाऊं रे प्रिय मुखसो न
बोले एक बार।
हों अजान कछु जानत नाहीं परम चतुर प्रिय
सब गुणन भरे हैं श्रीकृष्ण रङ्ग कर्तार॥

२८

जिन भिजवो कृष्ण मुरारी कर गहे पकरत
जात नार।
लपट झपट बरजोरी करत है गावत दे दे तार॥

२९

ए हो निपट ढीठ गिरिधारी लाल मोहे रङ्ग
होमें बोरे री।
अबीर गुलाल मलत मुख मेरे हियसो हियजोरे री॥

३०

छवि तोरी मोहे प्यारी लगत है कहां लगाए
गुलाल लाल।
सुन्दर छवि देख मन अटक्यो वंशी बजावत नन्दलाल
खेलन आए बनवारी लाल॥

३१

लङ्गर माती फागुनमें एक ओर भोर भई गोपिनकी
एक ओर ग्वालके बाल।
चहुं ओरते मारत पिचकारी भीजी अतर गुलाल॥

३२

अलबेले बारे कान्ह लाल तेरी मुरली
अधिक सोहावे।
नयन प्राण सब तेरे हो वशमें जो मन रङ्ग बन आवे॥
मधुर मधुर स्वर अधरन धर हरि रस भरी
तान सुनावे।
सुन्दर श्याम मनोहर मूर्ति बार बार बलि जावे॥

३३

सखी मोरे अंगियामें अबीर मली री।
बहियां मरोरी चुरियां फोरी ऐसो रङ्ग करो री॥

३४

आगे मेरे भाग्य में तो तुम सङ्ग खेलूं होरी।
रसके कारण वश कर लीन्हीं कम्पन लागी छाती मोरी
अपने प्रियसे मैं होरी खेलूं सास ननदकी चोरी॥

२५

सांवरे रसिया अनेक खेल कहां सीखे वेणु बजाय।
तानन माननसों वश कीन्हीं जादू साज सजाय॥

२६

नयन बिरछिया तेरे प्रियारे रङ्ग रस वश कर लीन्हीं
जिया रे।
बांक बख्श कहे जादू डारो सुन्दर श्याम मेरी
सूरत बिसारे॥

२७

अलबेली भई मदमाती सइयां पे रङ्ग डारोंगी।
चोवा चन्दन अतर अरगजा मुख मींड़के बदला
लेओंगी॥

२८

ए री मैं तो बार बार नित्य नई होरी खेलन
प्रिय पैठाई।
अम्बा बौरे टेसू फूले और फले जाही जुही॥

२९

मैं तो डारूंगी रङ्ग गुलाल लाल सइयां मेरे आए।
मैं तो भर भर केशर पिचकारी पियपै नाए॥
धन्य भाग्य सुहाग है आए श्याम दर्शाए।
मैं तो सोती थो रङ्गमहलमें सुख नींद लगाए॥
अब मैं तो पड़ी हूं अचानक जाग पिया मेरे धाए।
इन बिरहने खायो मांस हाड़ भयो साये॥
अब मैं हाड़ ले के कित जाऊं सइयां मोहे चाहे।
इन अंसुवनकी बड़ी बूंद धरणोमें पड़त है
मेरो जरत हियरा बुझाय सइयां मोहे चाहे॥
साभीषमालोकी प्रीति पुरानो नित्य नई।
अब मेरो दिन दिन बढ़त सुहाग सइयां मोरे
आए मैं तो डारूंगी रङ्ग०॥

भैरवी—खेमटा

छि छि हारिले श्याम राधार काछे पारिले ना राधाय।
जिनिलेन किशोरी होरी काज किरे खेलाय॥
जित्वो बोले कुञ्जे एले बस्ले प्रतिज्ञाय।
दिये खेलाय भङ्ग हे त्रिभङ्ग धर्ले राधार पाय॥

२

यदि खेलबे होरी बंशीधारी श्याम निकुञ्जे चल।
राजपथेर माझे मरि लाजे ननदी कि बलबे बल
श्यामल॥

३

सोइ केमने आनबो जल केमने मुख वांचाय।
हाथे लिये पिचकारी आबीर खेलाय॥
मत्त गज जिनि गति हेरि श्यामराय।
हृदय कांपिछे पद भये नयन नाचाय॥
आमार रूप आमार हैल जञ्जालेर प्राय।
व्रजवासी कुञ्जे आसि होरी खेलबे गांवो वासो,
छड़ाइचे कुङ्कुम आबीर खेलाय गुलाल उड़ाय॥

४

यमुनाते नीरे याइते ना पारी पथे
मत्त होइये फिरे बङ्कविहारी।
एकें मोरा गोपवाला नाहि जानि होरी खेला
तबु नाहि छाड़े काला देय रङ्ग भारी॥

५

भोर हो आये मेरे गृह लाल होरी खेलन को
मदनगोपाल।
लाल गुलाल में लाल बने हैं लालो लाल बने हैं
लाल॥

६

होरी दे ख्याल बिचो दिल साड़ा अटका।
सांवरे देखल साड़ा दिल सटका॥
मनमोहन सोहन गवरू रङ्ग डारत असाड़ा चीर
झटका।
अलबेलो पाग सलोनो अंगिया जरकशी जामा
कटि तट पटुका॥
लाल गुलाल ले गालां मलदा अजब खेल है नागर
नटका।
रसिक छैल वृन्दावन कुञ्जन में लगा रहत ध्यान
निशा दिन घटका॥

७

सखी मेरे श्यामने धूम मचाई।
या आंगनमें कोऊ निकस न पावें पिचकारिन
रङ्ग छाई॥

८

जन मौंजो अनार गुलाबो कर लाई कुम्हलाई
जात नार।
फूलसी होत है चतुर नार काहू जाने नाजुक
नरको सार॥

९

तोरो गारो मोहे प्यारो लगतु है निकस गई सुन्दर
मुख ते।
चन्द्रमुखी मृगलोचनी कामिनी ऐसे दीप्त चन्द्रको
झलकते॥

१०

सन्तो खेलो होरी समाज जगमें माच रही है धमार।
दम्भ कपट लिए करमें डफ और रबाबों कर दे तार॥
पांच पचीस लिए सङ्ग अबला हंसि हंसि मिलि
गावत गार।
ज्ञानको रङ्ग ध्यान पिचकारी हंस हंस नाम रङ्ग
दो डार
कहे कबीर सुनो भाई साधो जगमें खेलो संभार॥

११

नागर है के आप रूप है रो।
हारो या नु हारो तरे मोको ये माना चूरो॥
चोखे देह कागू पुन कारे राग नारो पाइये बरजोरी।
को रे इह निवेदन फेरि देवा मानक जो नाहीं
ए मत होरी॥

१२

फगुवा मांगन आयो री मेरो बारो कान्ह मोसे।
अबीर गुलाल केशर रङ्ग ले के उमड़ घुमड़ रङ्ग
छायो॥
ग्वाल बाल सब सखा सङ्ग ले होरी राग जमायो।
कृष्णानन्द में रङ्ग रङ्गे हैं फगुवा लयो मन भायो॥

१३

रङ्ग भर दीन्हों बसन हमारे रे सांवरे हो कान।
औचक आय झकझोरी मटुको लपक झपक गही
छाड़ दई कुलकान॥

१४

कान्ह ऐसे अनोखे खेलारो बनवारी ने रङ्ग डार
दई पिचकारो।
सालू सुरङ्ग कुसुम्भी अंगिया भीज गई रङ्ग सारो॥

१५

मस्तो फागुनको कोजिए ज्यों चाल चलत गज हस्ती।
गुलाब अतर चोवा चन्दन मुख मलि जाने न पावे
नार दूर खिस्तो॥

१६

बरज्यो माने नहीं न नार होरी खेलत सब द्वार द्वार।
बाजत बोन मृदङ्ग झांझ डफ और साज कटो तार
दे दे तार गार गावत हे रहो नहीं काहु संभार
डफको ध्वनि धुंकार॥

१७

मोपे मोहन मदनगोपाल दए रङ्ग डार।
नख शिख अङ्ग रङ्गमें बोरो मारि केशर पिचकार॥

१८

मोरे नयनके मार चला पिचकारो।
भर पिचकारो मोरे मुख पर मारी
भीज गई तन सारो॥

१९

सखि मेरे यौवन धूम मचाई।
जो कोउ पकरत बांह लोगनमें देति मैं रामदुहाई॥

२०

पिया मोको सुरख चुनरिया रङ्गा दे।
चोवा चन्दन और अरगजो केशर रङ्ग भरा दे॥

२१

होरी खेलत ताहे आवत लाज काहेको प्रीति लगावत।
एक तो रहो करहैंयाको पातर उ'मगी जोबनवां
सतावत॥

२२

ता दिन रङ्ग भये हूं जा दिन प्रियको मैं देखन पैहूं।
योगिनी होके मैं बन बन डोलूं अङ्ग विभूति रमैं हूं ॥
बालकी गलसेली बनै हूं झपक झपक गर लै हूं।
प्रिय मीरा मैं प्रियकी सजनी प्रिय पर जियरा रमैं हूं ॥

२३

सखी नयनसे नयन मिलाय रही सैन में फागुवा मनाय रही।
ताश्रिकी अंगिया जालीकी कुरती छतियनसों छतिया जुड़ाय रही ॥

२४

अलबेली अकेली प्रियसों खेले होरी रे वृन्दावनकी कुञ्जगली।
लाल सरस कुसुम्भी अंगिया और रङ्गमें रली मली ॥

सिन्धु-भैरवी—यत्

होरी खेले यौवन मदमाती इन सांवरेनै वेणु बजाई।
व्रजकी सखी सब दूर निकस गईं गोकुल धूम मचाई
राधा रुक्मणी और सत्यभामा कुब्जा खेल खेलाई ॥

२

मैं तो आप ही रङ्ग में बोरी कन्हैया मोपे रङ्ग न डारो।
व्रजकी सखी सब बन बन आईं हम ही पे रङ्ग मारो॥
भर पिचकारी मुख पर मारी भीज गई रङ्ग सारी।
बरज रही बरजो नहीं माने ऐसे ढीठ बनवारी
रसिक छैल व्रज कुञ्जविहारी हा हा कर मैं हारी ॥

३

जात कहां हो आज होरी जान न पाय।
सासके तोर छैल नहीं माने गारी देत बनाय
खैंचत चीर श्याम नहीं मानत मुरली देहे बजाय ॥

४

बौरी प्रियको मनाय ले फागुनके दिन चार।
रूप यौवनको गुमान न करिए बीती जात बहार ॥
प्रिय चातुर तू निपट अनारी प्रिय चरणन चित्त धार।
कृष्णानन्द में रङ्ग री सुहागन लोक लाज तज डार ॥

५

मेरो हरवा चुभि चुभि जाय होरी मैं ना खेलूं गी फाग।
अञ्चल पकर मेरो सब रस लीन्हों नैक न आई लाग
नासर पिया सों होरी खेलों घर घर तेरो भाग ॥

६

कान्ह मैं खेलों तोसों फाग मोरे गरवा लग लग जाय।
बहियां मरोरत कुच मुख मोड़त नयनसे नयन मिलाय ॥

७

सखी मैं कैसे खेलूं होरी मोरे नयन वा लग लग जाय।
मनमोहन मन रस वश कर लीन्हों मेरे मनवाने पग पग जाय ॥

८

पिचकारी मो पर मारी लली घेर घेर बोरत सारी।
अपने री अपने मन्दिर से निकसी कोई सांवरी कोई गोरी ॥

९

कौनके व्रजको हजारदार मेरी अंगिया कर दीन्हीं तार तार।
मेरो ही रङ्ग मेरो पिचकारी मोहे भिजावत बार बार ॥

१०

चितै फागुन गावत गारी भगवत भजन बिसार बिसारी।
हो हो करत हलाक दिवस निशि घर घर फिरत है रतनारी ॥
नाचत गावत ताल बजावत तरह तरह के वेश सुधारी।
अशुभ अनेक बनाय विविध विधि मुखसे कहि सपेति डारी ॥
ले ले धूरि उड़ावत धावत मदमाती नहीं टारत ते टारी।

नग्न गात्र नहिं होश वसन के हंसत हसावत
लागन गारो ॥
देखत लाखन पुरजन रिपुजन मागत फागुन
हा तपसों चोरो करि जनको तन डारत छाती पीटत
होरो जारो।
लक्ष्मीपति नहीं मिले लाभ कछु नाहक हो नर
भरे कुचारो ॥

मुलतानी-भैरवी—पश्तो

होरी बा महर आमद वक्त् बहार आमद।
मे पा अम्बर आरज़े ख़ूबां अतर अबीर गुलालरा ॥
रङ्ग आमेज़ बख़ूबी करदम् ये गुले रुख़े लालरा।
अज़ मए नाब वरामदे के मौसमे अजब
किनार आमद ॥

२

तुमने ए गुलसन चमन मचाई होरी।
गुल तो सब ख़ार हुये तेरी बन आई होरी ॥
अब गुलाल उठता है और रङ्गकी पड़ती फुहार
जिस तरफ़ देखते हैं अब्रमी छाई होरी।
कुङ्कुमाबाज़ी है और खेल है मस्त मगन
प्यारे क्या ख़ूब तेरे दिलको ख़ुश आई होरी ॥
यह मज़े हमने जो देखे प्यारे के यहां आकर
ख़ूब सा ख़ुश हुवा दिल आई क्या भाई होरी।
बुलबुल चहचहे करे कुमरियां मस्त फिरें
फूल फल झूम रहे हाय क्या आई होरी।

सिन्धु-भैरवी—पश्तो

आया फागुनका महीना होरी सब गाय रहे।
कोई वीण और कोई चङ्ग मृदङ्ग बजाय रहे ॥
कोई कुङ्कुमा उड़े गुलाल घुमड़ उड़ाय रहे।
कोई नाच नाच सङ्गीत भाव देखाय रहे
इश्क़ रङ्ग में रङ्ग के होरी धूम मचाय रहे ॥

सिन्धु-भैरवी—यत्

लाल तेरे बलिहारी प्यारी मान न कीजे।
शेष विहाय धाय हिय सों लग अधर सुधारस पीजे ॥
मौज सरोज भरे हरि हा हियरा हियरा धर लीजे।
भाग्यन सों फाल्गुन प्रिय पायो जन रामलला
सुख दीजे ॥

२

बीरी मान न कर री तेरे यौवन की नवल बहार।
यह यौवन तरुवर की छैयां रहत नहीं दिन चार ॥
भाग्यन से फाल्गुन प्रिय पायो तन मन कर बलिहार।
प्रिय चतुर तू निपट अयानी लाज सकुच तज डार ॥

३

प्रिय विदेश में तो भई हूं बावरी का सङ्ग
खेलों मैं होरी।
निशिदिन तरफत बीतत जात है कारी भई
रङ्ग गोरी ॥

४

रे मोरे होरी के खेलैया रङ्ग भरि मारी पिचकारी।
अबीर गुलाल कुङ्कुमा मारत हमदम मैं तुमपे
वारी ॥

५

गोरी कुञ्ज भवन में हरि सङ्ग खेलो फाग।
धन्य यौवन गुण तेरो तरुणता धन्य धन्य तेरो सुहाग ॥

६

गोरी मनमोहन ते काहे करत हो मान।
भाग्यनसे फाल्गुन प्रिय पायो ऐसे सुन्दर नवल वर
कान ॥

७

गोरी सोच समझ तू का पर करत गुमान।
यह संसार कोउ नहीं तेरो शरण गहो हरि आन ॥

सिन्धु-जङ्गला भैरवी—तिताला

सांवरा साड़ा भीज गई रङ्ग चोलियां मानू क्यों
मारदा पिचकारियां।
नागर नन्द महरदा वे छैला तू अलबेला रङ्ग रङ्गीला
मैं भी अकेली तू भी अकेला मैं तेड़े नाल राज़ी होइयां ॥

२

रे मैं ता भौचक हो रही पिचकारिन काहे को मारी।
भर पिचकारी मुखपर मारी भीज गई तन सारी॥

३

रे दयो मारि पिचकारिन काहे को मारी।
रंग पिचकारी मुख कुच मारी भीज गई तन सारी॥
तैंने मेरी सारी भिजाई दैया कुञ्जभवन गिरिधारी लाल।
अतर गुलाल कुच मुख मींजत गावत है दे दे कर ताल॥

४

होलने डारो गुलाल री मैं तो सगरी भीज गई आज।
चोवा रे चन्दन और अरगजा मारी पिचकारी व्रजराज॥

५

हरे हरे हरि हरे हरे होरी हर हरे बेर मेरे घरे खरे।
हरि हरि हेर हेर हरत कहरत मन बेर बेर रङ्ग भरे॥
हरे हरे वसन आभूषण हरे हरे हरि हरि मित सब हरे हरे।
हरि हरि बोलत सब कुञ्जन हो हो हो हो बोलत ररे॥

६

धन्य भाग्य सइयां सङ्ग सोई चूक परि जाते प्रिय
बिछुरे योग नेम धन्य रे ई भ्रमत फिरत हार दशो दिशा उरन देवे कोई कोई।
प्रिय सङ्ग न जाऊंगी यह कुसाज बिन धोए
जाके पिया जग मांझ सराहें सोई सोहागन होई होई॥
जिन नहीं प्रीति करी सइयां सङ्ग विषय बीज ले बोई।
निशदिन लहर देत उर भीतर मन्त्र न लागी कोई कोई॥
गावे गूदर यह प्रीति पुरानी उदित रहे नहीं गोई।
को हरिका गुण गावत सराह रे पिसत तिन पोई पोई।

७

सजनी अज हूं न आयो प्रिय मेरा।
एक विरह जैसे सेज दीपक नाहीं अंधेरा॥
को ऐसे बिच प्रिय को मिलावे सारीं जहां बिच डेरा।
योगिनी होके डारूं फेरा॥
आन पड़ी विरहके सागर विषय पान न बेरा।
बिन प्रिय को मोहे पार उतारे प्राण जीवन धन मेरा अब रे लहर भावत बहु बेरा॥
अवध नियरानी प्रिय नहीं आए आगम होत अन्धेरा।
गावे गूदर मोहे शपथ सइयांकी काम कटक दल घेरा अब रे जगत् दो दिनका बसेरा॥

८

जो कोई राम ररे सोई जाने।
जे जे भजे सो सुरपुर गएज नरज भक्ति सयाने॥
ताकी महिमा क्या कहिवे को सागर दुहु सकुचाने अजी सागर दुहु सकुचाने॥
प्रिय मिलवे को सहज भाव है सहज दीनता बानी।
जाके जप तप मान महीये वेदहु कहत बखानी॥
जाकी गति मति ऐसी आवत है तबे भाग कछु जानी।
गावे गूदर जब गुरुकी दया तब भी लगी अरु ध्यानी॥

९

पिया मनमोहन मेरे प्यारे ने सखी भार हो होरी मचाई।
अबीर गुलाल कुङ्कुमा केशर सारी सुरङ्ग भिजाई॥
लपट झपटके बहियां गह पकरी हरि हंस कण्ठ लगाई।
सुन्दर श्याम कमलदल लोचन चित्त मेरो लियो चोराई॥
बाजत वंशी अधर मधुर स्वर रसभरी तान सुनाई।
कृष्ण रसिक रङ्गभीने रङ्ग में होरी धूम मचाई॥

१०

होरीके रङ्ग माते आए कौन बिया सारी रैन खेलाए।
लाल गुलाल सो लाल बने हो बोलत वचन प्यारे तोतराए॥

मोतियन हार तुभे हैं उर में अबीर अरगजा
गाल लगाए।
भर पिचकारी मोहे मारी बागी अङ्गके सब ही रङ्गाए
कृष्ण रसिक प्यारे वहीं सिधारो जिन कुच भुज
सो तन लिपटाए॥

११

साची कहो हमसे पिय प्यारे आज होरी रङ्ग
कहां मचाए।
अबीर गुलाल कुङ्कुमा केशर कौन तिया सो
मुख हि मलाए॥
अधर अञ्जन भाल महावर बोलत वचन सइयां
तोतराए।
होरीमें वनवारी तिहारी कारी किशोरी जेने रैन
जगाए॥
हमसो अवध बद अनत विलम रहे भोर भए तब
वदन देखाए।
सूरश्याम तुम वहीं सिधारो को पहिचानत
काके आए॥

१२

सइयां होरी खेलो ताहीं जहां सारी रैन गंवाई।
कौन नवल तिया तुम्हें रङ्ग रङ्गे रस वश कर
बिरमाई॥

१३

मेरे नयनके ऊपर मारी सइयां पिचकारी।
भर पिचकारी मोरे मुखपर मारी अंगिया भीज
गई सारी॥
वरज रहो वरजो नहीं मानत हा हा कर कर हारी।
रसिक कृष्ण रस वश कर डारी बार बार बलिहारी॥

१४

कोई मेरा कारे करे गो मैं तो पिय सङ्ग
खेलूंगी होरी।
अपने री अपने मन्दिरसे निकसी कोई सांवरी
कोई गोरी॥

भैरवी—तिताला

सुन्दर मनमोहन प्यारे नन्ददुलारे होरी खेलन
आए मेरे धाम।
कौन नवल तिया तुम्हें खेलाए रङ्गाए जगाए
चारो याम॥
अधरन अञ्जन पीक कपोलन आवक तिलक लगाए।
अबीर गलाल मुखसे लपटाए तीन तिलक
सूर प्रभु कहां पाए॥

भैरवी—यत्

होरी खेल कहांते आए कौन तिया सारी रैन जगाए।
अबीर गुलाल लाल मुख लागे रोरी अधिक सुहाए॥
जागे पागे अनुरागी श्याम जू होरी रङ्ग रङ्गाए।
सूरश्याम सांची कहो मोसे तीन तिलक कहां पाए॥

भैरवी—तिताला

पिचकारी मारी वनवारी रे बिगारी है सारी
हमारी रे
बहियां मरोर डारी मुखसे दई गारी हा हा हा
कर हारी रे॥
सङ्गकी सखी सारी देखें निहारी गावत सभी
दे दे तारी।
अबीर गुलाल मुखमें मल डारी फाग रच्यो अति हो
हरि भारी
व्रजकी नारी रस वश कर डारी छाड़ो सूरश्याम
तेरे जाऊं बलिहारी॥

२

भैरवी उदय आए हरि मेरे सांझके वचन कहां गए
तेरे होरी में कहां रङ्गे रे।
लाल गुलाल लाल ललित लखि लीला लाली ले
लालन लिये संगेरे॥
काके केलि किये कौनके काहूको काम करी
त्रिभङ्गे रे।

रस बस कर लिए सूरके प्रभुको भगुवा लीन्हें कौन
रङ्ग पगी रे ॥

भैरवी—यत्

मोरे प्रियके यौवन वा ढरकि जात ए हो काहे
कहूं मैं जियको बात।
सूनी सेज प्रीतम नहीं देखो ता पर बिरह
लायो घात ॥
सुख सपने को सम्पत् सजनी नयन खुले नहीं
आवे हाथ।
गावे गूदर मोहे चैन न पावे जबते प्रिय मेरो
बिछड़ो साथ ॥

काफ़ी-भैरवी—यत्

मोरे प्रियके जोवन वा करत ज़ोर ए रो ए हो सूनी
सेज मैं करत शोर।
ताशकी अङ्गिया मसकन लागी उमग आए दोउ
बन्दको तोर ॥
ए तो यौवन सइयां का खेलोना कहां छिपाऊं
अङ्गके चोर।
सारी अवध मोहे कैठ गंवाई तरप तरप जिय
भयो हू भोर ॥
योगिनी होके मैं भस्म चढ़ाऊं प्रियको मैं ढूंढूं
कौन ओर।
गावे गूदर प्रीतम वश नाहीं जनम गंवायो कहीं
मोर मोर ॥

भैरवी—यत्

हमसे कहा छिपावे छिनरिया तोरी भोज गई
सब सारो।
कर्म करावत नयन दुरावत सैन लगावत मारो ॥
वसन भूषण तेरे काहूंके कहूं देखे रङ्ग परे
तोपे भारी।
हों जो गई थी खेलनको अचपल अबके फाल्गुन
तोरी बारी ॥

सिन्धु-भैरवी—यत्

चलो प्यारी होरीके मौसमको बहार री।
तोबे खेलों फाग चलके फगुवा ले हों मन भाए
वाही सुमनके बाग़ री ॥

पीलू-भैरवी—यत्

होरी खेलन सइयां अजहूं न आए बोती जात
बहार री।
तुम बिन लाल गुलाल अंधेरो बनी अंसुअनको
पिचकार री ॥

भैरवी—यत्

अनी मैंड़ा सांवलिया यानी होरी खेले उसी दे नाल।
सांवली सूरत माधुरी मूरत करदा होरी दा ख्याल ॥

२

सूरत दा मतवाला मैंड़ा होरी खेलन
योगीया यानी।
कानन कुण्डल गल बिच सेली अलख अलख
बुलायानी ॥
अमानी एक योगी आया लाल दुशाले वाला।
भिक्षा दे दो लेंदा नाहीं सूरत दा मतवाला ॥
बाग़ लगाया बगीचा लगाया बीच लगाई क्यारी।
उस क्यारी में क्या क्या बोया इश्क़ मुहब्बत यारी ॥

३

श्याम कैसो धूम मचाई होरी खेलत रङ्ग रचाई।
अबीर गुलालके बादर छाए नई नई तान सुनाई ॥

भैरवी—चर्चरी

ए हो नन्दनन्दन व्रजराज आज मोसे नाहक़
रार करी।
अचर पकर रङ्ग मोपे डारे आंखन अबीर भरे ॥
देखत बाल वृद्ध ज्यों ठाढ़े तनक न लाज करे।
हविनायक हम बचवो छाड़ो को नित उठ झगरे ॥

२

छिप छिप कुञ्जन में रहत कन्हैया।
जिन कोउ बेचन जावो ले दहिया ॥

अरज वरज काहू की न मानत दिन हो लूटत कोऊ
नाहीं पूछैया।
सुन लो सीख हमारी सब हो राखो लाज चाहे
जो गुसैंया
बैठ रहो गृहमें छविनायक नाहीं तो हंसि हैं
व्रजके बसैया॥

३

मेरी अंगिया भीजी पिचकारी ना लावो।
ऐसे ढीठ लङ्गर न देखो मनमें कछू तो लजावो॥

४

क्यों फेकत हो गुलाल लाल मेरी आंखन में खटके।
हों यमुना जल भरण जात थी गिरको चुनरिया
झटके॥

५

धूमधामसे खेले होरी डफ मृदङ्ग लागी बाजन।
चित्त वृत्त तघन शिखर सङ्गे ले खेल मचावे साजन॥
अपने रो अपने मन्दिरसों निकसो कञ्चन थार सब
विध ले साजन
कोई लपट कोई झपट रङ्ग ले कोई मरो जात है
लाजन।
रसिक छैल गोकुलकी गैल मध्य खेल मच्यो ऋतु
फाल्गुन॥

होरी धूम मचाई हो कान्ह बाजत वीणा मृदङ्ग
मुरली तान।
अबीर गुलाल केशर रङ्ग छिरकत चन्दन वन्दन
सों धो सान॥
ग्वाल बाल सब सङ्ग शोभित नाचत गावत
ले ले तान।
रसिक कृष्ण प्रभु रस वश कर लीन्हों यौवनको
मांगे मोसे दान॥

७

ए हो री हो री चलो री नन्द महर जू को पौरी
होरी होय रही री।
बहोरि न पैहो रो ऐसो री समय री उठो री
निरखो री मनमोहन जो होरी॥
कहो री किशोरी गुलाल लहो री पीत पिछोरी
छिरकि रङ्गोरी।
कृष्णरूप प्रभुको परसो री फगुवा लहो री मन
मानो री गोरो॥

८

श्याम तैं ने होरो में धूम मचाई कोऊ गैल चलन
नहीं पाई।
काहूको लपटत झपटत दपटत काहू काहूको
कुच मकाई॥
अबते लगी है वसन्त पञ्चमी तबते मति बौराई।
कृष्णरूप रङ्गो व्रज वनिता जादू टोना चलाई॥

९

इन मनमोहन मोहे रस वश कर रङ्ग डारो।
व्रजके विहारी वनवारी गिरिधारी मोरी सुरङ्ग
चुनरिया भरो सारो॥
चोवा चन्दन वन्दन कुङ्कुमा अबीर गुलाल केशर
पिचकारो।
बाजत वीणा मृदङ्ग चङ्ग झांझ झनक रबाब किन्नरी
गावत सब मिल दे दे तारी
कृष्णरूप रसवश कर लई सब व्रजवनिता चरण
स्पर्श कर भई वलिहारी॥

१०

लङ्गर बिच ठाढ़ो हो रो हम हो सों बरजोरी करत है
भर भर मारे पिचकारी।
लपट झपटके मोहे पकर लीन्हीं है अंगिया दई
मोरी फारी॥
बरज रही बरज्यो नहीं माने मैं हा हा हा
कर हारी।
अबीर लगावत कुच मुख मोड़त रङ्गरस देत है
तारी॥

११

मैं तो डारूंगी रङ्ग गुलाल लाल मेरे आए।
केसर रङ्ग बनाय राखूंगी अबीर गुलाल उड़ाए॥

१२

तेरे मनमें कहा रे कन्हैया गुलाल मुख मींजत
बरजोरी अटके।
नयन लगावत अङ्गुरी नचावत हंस हंसके देया
कैसेके मटके॥
तरुणी वारी काहू नहीं छांड़ी आय देखावत
अपनी अटके।
रसिकराय पुरुषोत्तम प्यारे अपनो बेरको गयो रे
सटके॥

१३

मैं लाज भरी नहीं बोली सांवरे कैसो धूम
मचावत है।
पहले तो मोहन सूधे बोलत पाछे गारी सुनावत है॥
अबीर गुलाल कुङ्कुमा केसर पिचकारिन
बरसावत है।
झपट झपट बहियां गहे डारी पुरुषोत्तम अङ्ग
लगावत है॥

१४

मैं गमने नहीं जइ हूं राम॥
नवल बहुरिया चली गमनको कर दुलहनके भेश।
नयन रोवें जो हंसे मैं तो चली हूं पियाके देश॥
गमने न जइ हूं टौने चलइ हूं नैहर धूम मचे हूं।
जो मेरे गमनेकी बात चले है तापर विष खे हूं॥
चलत चलत मोरे पांव पिराने सासुर है बहु दूर।
गुण अवगुण मो में एको नाहीं क्याले मिलहुं हुजूर
कहे कबीर पिया मैं पायो बाजत अनाहत तूर॥

१५

अलबेली भई मदमाती सइयां पे रङ्ग डालूंगी।
चोवा चन्दन अतर अरगजा मुख मीड़के बदलो
निकालूंगी॥
फगुवा लेहों पकर मोहनको सुन्दर रूपछवि
भालूंगी।
पुरुषोत्तम प्रभुसों होरी खेलन नन्द महर
घर चालूंगी॥

१६

सइयां नयन मारो पिचकारी रे।
आय अचानक पकर लई मोहे दई है गारी
उघारो रे॥

१७

मैं तो चली हूं सइयांके देश नगर मोरे बाबुलदी तो
गमनवा रे।
आवो सइयां गरे लागो हमारे भोर कद होवै
मिलनवा रे॥

१८

कहां खेले हो होरी अजी तुम सांचो कहो।
छलकी बतियां हमसों करत हो चले जावो छैला
वाहीके रहो॥
नयनन किन यह अञ्जन दीन्हों नवल तिया को
चाह चहो।
पुरुषोत्तम कहां होरी खेले सगरी रैन मोको
अनङ्ग दहो॥

१९

इन मोहन बंशीवारेने अरे मोहे भोर ही आन
जगाई रे।
कह न सकत कछु लाजको मारो नई नई
प्रीति लगाई रे॥
अङ्ग न छुवो भुज न गहो मेरो हा हा करूं पकूं
पाई रे।
हा हा सरक जा इशक रङ्गीले देतो मैं राम
दुहाई रे॥

२०

अब तो रँगाऊंगी सारी सइयां मिले मोहे चतुर
खेलारी।
रङ्ग वाही रङ्गरेज, वाही है हरी रङ्गकी छवि न्यारी॥

बहु रूप बहु भेष किये है सुन्दर सरस पधारो।
व्रजरङ्ग प्रभुसों होरी खेले एक ही रङ्ग रङ्गारी॥

२१

ए री मेरे पिचकारी मारो चटक सों कहा री कहीं
सांवरे की मटक।
हा हा करों सङ्ग लागो हो आवे काहूको नहीं है
सांवरेको अटक॥
लपट झपट अम्बर गह लीन्हीं बहियां पकर लीन्हीं
मोरी झटक।
अबीर गुलाल केशर पिचकारी पुरुषोत्तम नहीं
माने हटक॥

२२

सांवरे सङ्ग खेलन दे री अबके फालगुनमें सुन री
सजनी।
मोहे जिन हटक एरी ननदिया तरपत बीतत
दिन और रजनी॥
अबीर उड़ाऊं गरे लगाऊं लाज छाड़ कुलकाने
तजनी।
तब यश गाऊं मोहन रिझाऊं कहा काम है काहू
सों वाही भजो जो तेरो भजनी॥

२३

वे छैला रङ्ग डार गयो री भीज गई मोरी सारी
सगरी।
हों यमुना तट भरन गई जल वरजोरी मोरी
फोरी गगरी॥
मानत नाहीं आन काहूकी चलन न पावै कोउ
मग डगरी।
मोहन ढीठ भयो या व्रजमें कैसे बसै यह ऐसी
नगरी॥

२४

आज रङ्ग है री व्रज रङ्ग है री मनमोहन मिले
मनभावन री।
श्यामसुन्दर प्रिय मेरे हेरे आइला मेरे जियाके
जियावन रिझावन री॥

२५

वरजोरी कन्हैया मोसे आय कीनो रे।
आय अचानक रङ्ग भरो मोहे वरवश गरवा लगाय
लीनो रे॥
हौं गुरुजनकी लाज सकुच रही अम्बर झपटके
लपट छीनो रे।
मोहनकी छवि देखत रङ्ग गई विवश भई कछु कहत
न आवे अनोखो छैलवा रङ्गभीनो रे॥

२६

नयो होरी को खेलार होरी खेल न जाने।
काहूको दलत और मलत काहूको काहूको
सुनावत ताने॥
लाज सकुच सब डार दई है मानत न काहूकी
आने।
रसिक रङ्ग रङ्ग ही में बोरो काहूको न पहिचाने॥

२७

होरी खेलन कैसे जाऊं री पिया मुखसे न बोलत
मोसे श्याम।
औरनके सङ्ग रलियां करत है री सकुचावत मोरी
देख छाम॥
यह गति मोरी भइली सजनी सौजसे जानत
सगरो ग्राम।
कंत न पूछत बात री मेरो धन्य सुहागिन
भयो है नाम॥

२८

चटक चुनरिया रङ्गा दे रे मइको रङ्गा दे।
यह चुनरो मेरे मई ओढ़ने को लाख यतनसे
बना दे रे
मैं तो करूंगी भेष योगिनीका लागी लगन मोरी
तुमसे काफायत ढढूंगी वन वन तहको लगा दे॥

२९

कहां खेले हो होरी अजी तुम सांची कहो
नन्दनन्दन सांवरे पूजों तिहारे दोउ पांव रे।

हमसों खेल कहि और सङ्ग खेले कौन नवल तिय
घर धरे पांव रे॥
भाल महावर अधरन अञ्जन तीन तिलक कहां
पाए रावरे।
रसिक रङ्ग रगमगे रङ्गमें पाग पेंचके सवारों ठांव रे॥

१०

उठ चल री पिया सङ्ग खेलें फाग आछे रहस रहस
गरे लाग लाग।
यह अवसर नहीं है रूठनको मेरे कहे तू तज वैराग
छविनायक आए तोहे मनावन सौत सराहत
तेरे भाग॥

११

फगुवा मांगे नन्दको छैल मोसे।
सुन री सखी मैं क्या कहूं तोसे इतनो बात मैं
पूछूं तोसे॥
तनियां टटोलत हो हो बोलत आय जुरत है
मोरे अगोसे।
रसिक छैल छाड़त न गैल बहियां पकर सारी
अंगिया कोसे॥

भैरवी—यत्

होरी खेलन आई है बन बन चतुर सुघर हिल
मिलके नार।
हम तो चाहत रससों खेलन वे तो मारत
पिचकार धार॥
बाजत वीणा रबाब मृदङ्ग डफ मुहुचर झांझ
मुरचङ्ग कटतार।
चन्दन वन्दन बूका रोरी छिरकत सबपे
रसरङ्ग डार॥

२

सनमुख आय यशोमतीको लालन मेरे मन को
मोह लियो।
जात रही यमुना जल भरण को कीधों मुरली
फूंक गयो॥
एको घरी नहीं चैन है जीको तबसे वैसे जरत हियो।
कुलकी लाज तजी गोकुल मा सुन्दर श्यामने
दर्श दियो॥
तन मन धन है मोहनी मूर्ति करों न्योछावर
लोक लियो।
नाहीं तो मीच मृत्यु है वियोगिनी विन मनमोहन
नीज जियो
मोहनको हियो वश के तुम काजिम प्रेमके मद भर
भरके पियो॥

३

होरी खेलन नहीं आए नन्दलाल कौन नवल तिया
तुम्हें विरमाए।
रजनी अनृत कहां जागी मोहन रहस रहस गर लाए॥
मोतियन हार चुभे कर कङ्कण अधरन तंबोल खवाए।
रसिकराय रगमगे रातके फगुवा दिए मन भाए॥

४

सखी इन मोहन ने धूम मचाई।
होरी अवसर पायके रङ्गरस वश कर डारी सब
प्यारो हमरी चूनर भिजाई॥

५

आज सुहागकी रैन री गावो बधावा सब मिलके
सुवासन।
गुणी गन्धर्व सब मिल मङ्गल गायो जैसों सुमन री
वासन॥

६

कछु कहे न गए समझाय मोरे लाल हमसे
विदा मांगे यौवनवा मोरे राम।
कागके हाथ लिखूं व्रज पाती कागके हाथ
सन्देशवा मोरे राम॥
जबसे गए पिया भए हैं वाहीके किन सौतिन
विरमाए मोरे राम।
अब तो दर्श वेग दो प्यारे तलफत जिय वेग आए
मोरे राम॥

७

ए री मैं तो बार बार नित्य गई होरी खेलन
पिय पै गई।
अम्बा मौरे टेसू फूले और फूली है सुई॥
नए नए द्रुम नए पल्लव नई ऋतु और तरुणी नई नई।
नवल तिया नव पिया नव यौवन रसिक रङ्ग
पिचकारी दई॥

८

क्या गुलाल पिया मोपै डारो ऐसो चटक रङ्ग
अङ्ग हमारो।
आवो सइयां मुझे देख सेजपर चन्द्र जैसा मुखड़ा
यौवन जैसे तारो
कृष्णानन्द लागि उर मेरे आनन्द केलि मदन
विस्तारो॥

९

अनो आई सइयो होरो दी बहार री।
अबीर गुलालके बादर छाए रङ्गकी परत फुहार री
केशर दी पिचकारो चलां दे मानो बरसत मेघ
अपार री॥

१०

सूहो सारो मेरो बिगर जायगो मत मारो पिचकारी
हो लाला मत मारो पिचकारी हो।
अधिक मोलकी सारी हमारो जरकशी कोर
संवारी हो॥
कारी कामर कटि काछनी तुम्हारे कोज न सकत
बिगारी हो।
प्रेमरङ्ग पिचकार सों भिजई चितवत वश कर
डारी हो॥

११

नयन गुलाल से लाल बने हो लाली न छिपत
ललाकी सलोनी।
कुच्छ गलिनमें अलिन की टोली में टोहो कपोल
मिली है मिलोनी॥
रङ्ग रङ्गीली सी पीली पिछौरी छोर सों गीली
गुलाब कलोनी।
प्रेमरङ्ग प्रभु परकीया मोहन हारे सो हियसो
लगाए लोनी॥

१२

मेरी चुनरी वनवारी भिजई।
अब कैसे जाऊं व्रज मोरी सजनी दधिकी मटकिया
छीन लई॥
बहुत सही न कही यशोमती सो कौन कौन
सुतको सिखई।
कविनायक जो रही सोई राखे जान दे जौन
गई सो गई॥

१३

देखो अब ह्यीं जात है वनवारी मेरी आंखन चोवा
रङ्ग भर डारो।
धाय धाय पकरे गर लावे बहियां पकर
अंगिया फारो॥
राज करे यशोदा तेरो नन्दन दिनके होत है ठगवारो।
बरज रही बरजो नहीं मानत लपट झपट
खैंचत सारो
कृष्णानन्द फाग रस मातो चितरातो तेरी बलिहारो॥

१४

रङ्ग भरे घर आए सइयां मोरे धन्य विरहिनोको
भाग री।
सब सखियन मिल मङ्गल गावो चलो हो
सुमनके बाग़ री॥
चलि के पूजो गौरी गणपति जिन मोरे दिहल
सुहाग री।
कञ्चन थार कुसुम केसर रङ्ग तब खेलो प्रियसे
मैं फाग री
गावे गूदर पिया अपना पायो रङ्गसों गरवा लाग री॥

१५

ऐसो निठुर रङ्ग डारो कन्हैया मोरी अंगियामें लग
गयो दाग़ री।

अबीर गुलाल कुङ्कुमा केशर हमसे मचायो फाग री॥
ग्वाल बाल सखा चहुं दिश घेरे केह मग जाऊं मे
भाग री।
गावे गूदर घर जाने दे मोहन रहों चरणमें लाग री॥

१६

कासे कहूं मैं तो जियको हाल कोन्हीं सांवलिया
ने बावरी।
जा तन लगे सोई तन जाने जाको विरह को घाव री॥
मेरे मन बसो सांवरी सूरत अब पति रही के जाव री।
विरहको सागर सूझत नाहीं भई हूं भ्रमरको मैं
नाव री॥
एक विरह दूजे लाज गुरुजनको तीजे मिलन को
चाव री।
नहीं रोवत नहीं हसत दुर्जन लखि सौतिन
लगायो दाव री
गावे गूदर उर बसहु बिहारो मोहे छवि भावत
राव री॥

१७

होरो खेलन अजहूं नहीं आयो मेरे यौवनको नवल
बहार री।
तब कहा करि हो प्रीतम प्यारे ज्यो अब हीं लेहु
सभार री॥
हम को नहीं सइयां तुमको लाज है लायो तू
केहको डार री।
जबते गयो भयो वांहो के दे गयो विवश पहार री॥
गावे गूदर मैं तेरो कहाऊं अब भरमों केह हार री।
ढरक जात अज हूं नहीं आयो यौवनको नवल
बहार री॥

१८

मैं छोटो तोहे लाज न आवे धरवश गरवा
लगावत री।
झपट झपट झकझोरी मइको नयनसो नयन
मिलावत री॥
मैं अबला तुम सुघर चतुर हो पिचकारिन
रङ्ग चलावत री।
रसिक रङ्ग रस वश कर डारी फगुवा लेत मन
भावत री॥

१९

हमारे कर्मगत याहो लिखो तुम करहु सौत सङ्ग
राज री।
सब सखियां मिल फाग खेलत हैं नानाविध
कर साज री
कृष्णानन्द तिहारी तिहारो सों तोहि न आवत
लाज री॥

२०

महिमा छाय रही चारो युग अवध पुरो खेले
फाग री।
सीताहरण मरण दशकन्धर लङ्कपुरी लायो आग री॥
तेंतीस बन्ध छूटे देवतनके आनन्द करण शुभ
लाग री।
लङ्काराज्य विभीषण दीन्हीं मिलते हो बड़ भाग री॥
गावत वेद भेद रघुपति को नारद शारद नाग री।
अज महेश औ वाल्मीक मुख खग हूं भाख्यो काग री॥
त्रेता चरित्र कियो नानाविध ताहो भजो भय त्याग री।
गावे गूदर रङ्ग सेऊं सियावर या रङ्ग को अनुराग री॥

२१

मेरो मन उरझियो बार बार होरी खेलत अकेलो
नार री।
जाकी इच्छा सब जगको मोह्यो ब्रह्मा रुद्र त्रिपुरार री॥
जो कोई गए भए वांहो के मार्ग रङ्ग मोहनी
डार री।
खेलत हार गए मही ऊपर बड़े बड़े नर अवतार री॥
नर बपुरनको कौन चलावे डूबे बहें मंझ धार री।
गावे गूदर मन समझके खेलो फाल्गुन रूप
बाजार री॥

२२

कौन नगरसे मैं खेलन निकसी वाही नगर को मैं
जांव री।
है वा नगर डगर बहु तेरा लखो न परे वह गांव री॥
जो हेरो मोहे रामनगरमें अनाहत वाको ठाव री।
गावै गूदर गुरुदेव बतायो सब रङ्ग वा को नाव री॥

२३

इच्छाकारी प्रगट भई होरी खेलत उतपत्ति माया री।
आदि ज्योति कर्तार ग्रब्द करि उत्पत्ति तीन
बनाया री॥
इन तीनो विस्तार किए महिमा सब उपजाया री।
पति आप ही उत्पत्ति पुनि आप ही आप ही
आन लखाया री॥
निर्गुण ब्रह्म सगुण हो आए वेद विदित गुण गाया री।
आदि अन्तमें सब जग मोह्यो किन हूं अन्त
न पाया री॥
अक्षर ब्रह्म नाम अनन्त एक है घट घट में
लखाया री।
गावै गूदर यह रङ्ग अलौकिक लौकिक रङ्ग
समाया री॥

२४

इन्द्रादिक सुर सङ्ग लिये उमापति फाग मचायो री।
वृषभ चढ़े शिव शोभित सुन्दर सिंहोनाद बजायो री॥
चमकत शिखर रविकी किरण सम लाल पुष्प
रङ्ग छायो री।
नारद मुनि कर वीणा बजावत सारद सङ्कुचित
गायो री॥
मुण्डमाल आभूषण तत्वन नन्दीगणको पठायो री।
सुनत खबर रम्भादिक आयो नृत्यत सबको
रिझायो री॥
सामवेद ब्रह्मा मुख उच्चारत आनन्द प्रेम बढ़ायो री।
शिवसों फगुवा लीन्हीं गौरी बहुविध नाच नचायो री
रामरङ्ग हर वर धर दीन्हीं लीन्हीं कर सुख पायो री॥

२५

होरी हो रही है नन्दके द्वार।
अबीर उड़त औ कुङ्कुमा मार॥
कोउ ब्रजनारी चलत नहीं गैलन गारी गावत
नन्ददुलार।
मृदङ्ग वीणा औ ताल डफ झनकत पिचकारन
परी धार॥
राधा धाय आय मुख मीड़त मोहन तन
धर लीन्हों हार।
श्याम देख सकुचाने मन ही मन ले गुलाल कर
कुच पै डार
रामरङ्ग प्रभु अपने रङ्ग में बोर दई सब ब्रज को नार॥

२६

कौन स्वरूप संवारू सखी री मोरी आज
गमनवाको रात री।
जब सनमुख होइ हूं प्रीतम सों कैसे करूंगी
मैं बात री॥
जो सुख कियो भयो दुःख आखर मोरे जिय
कछू न सुहात री।
मिलनेको आई सखी सहेली भई सइयां के
मैं सात री
गावै गूदर मेरो नैहर छूटो अब सासुरके मैं जात री॥

२७

आज संदेसा आयो सइयांको मोरे करह गमनवाको
साज री।
नैहरमें हम खेल गमायो सासुरको बड़ लाज री॥
सासुर में धौं कहा सुख होइ है मेरो छूटो नैहरको
राज री।
गावै गूदर जो पिया नहीं राजी तो नैहर आवै
मोहि बाज री॥

२८

फाग सुहाग मोरे घर नित्य है भीजो हूं मैं तो
पियाके रङ्गमें।

मो पे कोई पिचकारी न मारे लाल बसत है
मोरे अङ्गमें
झुरमट तनक उ नहीं मोहे भावत जबसे परी हूं
तुराबके सङ्गमें ॥

१९

मोहे बोरो सोई रङ्गमें कान्हा और कीन्हों जोई
मनमाना।
भिजवत मइको सब छिन जाना घर करि हूं
मैं कौन बहाना ॥
कौन अपना कौन बिगाना राखोंगी जाको काना।
दास रङ्गो है श्यामके रङ्गमें वाहो भावे रङ्ग न आना॥

२०

मनमोहन मोहे अपनाय लई और सबनसों
छोड़ाय लई
मनमोहन रङ्ग मोरे रङ्गमें मैं मनमोहन रङ्ग मई ॥
जान अजान जाम भए दई ये कैसी आन ठई।
नहीं जानो कछु हरि अन्तर गति दास फंसी है
आय नई

२१

जा दिन सइयांको देखन पइ हौं वा दिन रङ्ग
मचे हौं री।
पिय मेरा मैं पियाकी सजनी पिया पे जियरा
लुभे हौं री ॥
रङ्ग वही रङ्गरेज वही मैं तो सुरङ्ग चुनरिया
रङ्गे हौं री।
मेरे तो जिय में ऐसो आवत है लपट झपट गरे
ले हौं री ॥
बालनकी सेली जो बने हौं अङ्ग विभूति रमे हौं री
लथ्यानन्द यही आशा चित्त हर्षि धाय उर ले हौं री॥

२२

फाल्गुन का मस्त महीना।
अबीर गुलालके बादर छाए बसन रङ्गाय सब ही
को दीना ॥
हो हो हो कर गारी गावत कोऊ काहू को नाहीं
सखी चीना।
कोई नाचत कोई मृदङ्ग बजावत कोऊ डोलत है
रङ्ग में भीना ॥

२३

चले जावो लला अब हां रे अबीर गुलाल मो पे
जिन डारो।
भर पिचकारी मेरे मुखपर डारो सारी अम्बर फारो ॥

२४

श्याम कैसी मुरलिया बजाई है ए हो ध्वनि सुन
उठ धाई व्रजकी नार।
मुरली बजाय सबको मन मोहो मारो केसर
पिचकार ॥

२५

आयो बसन्त कन्त घर नाहीं कैसे के चैन आये
मोरी गुइयां।
एक बन फूल सहस बन फूले कोयल कुहुक सुनाये
मोरी गुइयां ॥

भैरवी—तिताला

साधो खेल लो जगमें होरी राम नाम है सांचा।
धरणी जल तेज पवन आकाश ए पांचो पचीसो
मिलके जांचा ॥
काहेको भ्रम भूलत हो झूठ तजो सब वाचा।
जलसे उपजे जलसे फूले कुबुद्धि तजे यह कांचा
कहै कबीर गूंगेका सपना गूंगा होय कर वाचा ॥

भैरवी—यत्

गोरी आया होरीका खेलार री।
अबीर गुलालके बादर छाए रङ्गको परत फुहार री
लथ्यानन्द हर्ष उर बाढ़ो नव तनमन दोन्हों
मैं वार री ॥

२

ए हो नन्दनन्दन जू ढीठ लङ्गरवा सखी मोरी
बहियां मरोरे री।

सौतन के वे घरण गए हैं सखी मोरा हरवा तोरे री
उनकी चुनरिया रङ्गमें भिजोई मेरी तनियां
टटोरे री ॥

३

ए हो निपट ढोठ गिरधारी लाल ए री मुझे
रङ्ग ही में बोरे री।
रसिया नेक कहा नहीं माने कर बरजोरे री ॥
अबीर गुलाल मलत मुख सखी री टुक नयन
जोरे री।
ख्याल खुशाल करत अलबेला नन्द जूका किशोरे री ॥

४

ए हो मनाय लेत गोरी को सांवरो सनमुख
अबीर चलावे।
सङ्ग मोरे सोवत अङ्ग ही छिपावत अपनो
भेद न बतावे
अङ्गुरी सैन पिया मोहे जगावे बरबश गरवा लगावे ॥

५

कहि दीज्यो हमारो राम राम जो काहू को
मिलहिं श्याम।
वगर नगर और द्वारे ही द्वारे होरीके खेलनकी
धूमधाम ॥
उमड़े यौवन पिया मानत नाहीं कैसे के राखूं मैं
थाम थाम।
भूख पियास राधिका छाड़ा ध्यान तिहारो अष्ट याम
कृष्णानन्द अरज इतनी मोरी क्यों छोड़ी प्रभु
ऐसी बाम ॥

भैरवी—तिताला

हो होरी खेलदा कुंवर कन्हाई।
कित वल जावां असी जाने न पइयां वे भर
पिचकार चलाई ॥
ले अबीर असी मुख डारदा कुच धर कण्ठ लगाई।
हा हा करे दियां मन सकुचे दियां मैंनू अकेली पाई
रामरङ्ग मोहन मैंड़ी गाल सुन कर धर रंगमें
भिजाई ॥

२

हो सांवरिया भर पिचकार चलाई।
कोटि उपाय कियो री सजनी तब हूं दर्द न आई ॥
कुच मुख करते धर लियो मेरो ग्वाल सों गारो गवाई।
उरहन देन चली री नन्द पै यशोमती आगे सुनाई ॥
मगमें चली भेंट भई श्याम सो अङ्गमें भर समुझाई।
रामरङ्ग दोऊ रङ्ग एक भए घरको सुध बिसराई ॥

३

डफ ताल बजावे होरी खेले कन्हाई हो नव
ग्वाल बाल।
मोहन पीत वसन तन पहिरे उर सोहे वनमाल
पूर्ण चन्द्र बनो मुख जाको कंस को है यह काल ॥

४

ए सखी आय भुलाई हो।
दूरते निरखत है नन्दनन्दन देखत चली पराय
झपट श्याम धर लीन्हीं मन ही मन पछताय कुच
धर लाल बनाई हो ॥
गोरस खाय मटकी धर फोरत कंसको करत पुकार हूं
मैं अबला कछु जोर न मेरो आखर जात गंवार
और अबीर उड़ाई हो।
सङ्ग सखा मिल इत उत देखत कण्ठ सों कण्ठ लगाय
हा हा करत है चरण परत है कोई न होत सहाय
रामरङ्ग प्रभु लपटाई हो ॥

५

होरी याहू व्रजमें नन्दनन्दन जू खेलत।
बाजत बाजे बहुविध साजन भर भर भर रङ्ग मेलत ॥

पिचकारी मारन आई रे हो सांवरो सलोनी
पिय प्यारी।
सांवरो सलोनी गोरी बन बन आई मैं अपने
साहब पर वारी ॥

नन्द महरवाके सुघर लाल मो को गेंद की चोरी
लगावत री।

कुच तनियां और अङ्ग निहारत तापर घात
लगावत री ॥
लागो रहत सघन बनकुञ्जन जब देखत मोहे
आवत री ।
ठाढ़े देखत है सब ब्रजवासी ता बिच आपत्ति
मचावत री
गावे गूदर मैं तेरी चेरी काहे को हास करावत री ॥

८

कौन खेलाए साजन बिन बावरी ऐसो डोलूं
हरि बिन होरी ।
तेल फुलेल सभी तज दीन्हों पान खान बिसरो री
अब घिर दीन्हों सइयां तोरे बश मैं जावो तो जावो
रहो तो रहोरी ॥

९

होरी के दिनन तोको लाज न आवे
मो को बर बश नयन लगावे री ।
एक तो रही करईयांको पातर उमंगी यौवन
सतावे री ॥

१०

कहा कहों वाको सब नारी गणमें ए री मेरे
पिचकारी मारी चटक सो ।
एक तो ढीठ और पैंड़ा न छोड़े हो जो डरो मैं
वाके अटक सो ॥
कुछ मुखसे कहीं तो निपट लजात है और अधर
गहत है झटक सो ।
हा हा करी और हो हो अचपल फिरके नाचे देया
और हो मटक सो ॥

सिन्धु—भैरवी

मेरा हरवा चुभि चुभि जाय होरी मैं ना खेलौंगी
फाग ॥
अधर पकर मोरा मुख मल लीन्हों नेक न आई लाज।
अबीर गुलाल मल्यो मुख मेरे लक्ष्मानन्द ब्रजराज ॥

पील—भैरवी

अतर गुलाब और चोवा चन्दन मेरे मल मल
जात बदन में ।
गहे पकरूं तो हाथ न आवे छिप छिप जात कुञ्जनमें ॥
लपट झपट बहियां गहे लीन्हीं चिपट जात
छैला तनमें ।
बरज रही बरज्यो नहीं माने कहा जानूं क्या
वाके मनमें ॥
हा हा करत हौं पइयां परत हौं पिचकारी
न मारो अंगियनमें ।
अचपल होके लागो हो आवे जब देखूं तब ठाढो
अङ्गनमें ॥

१

होरी खेलत नन्दनन्दन री भानुसुता प्रिया
चन्द्रबदन री ।
भोड़ल अबीर गुलाल विविध ले अतर गुलाब
चन्दन री ॥
पिचकारिन की मार परस्पर देख रतिपति
लज्जित मदन री ।
वृन्दावन मध्य खेल रच्यो है कुञ्जभवन बन सघन
सदन री
जानकीदास रङ्ग ब्रज छायो बीथिन बीथिन सुख
सदन सदन री ॥

२

लाल गाय गाय ले ले नाम हमार मो को गारी
देत सबनमें ।
जात रही गोकुल दधि बेचन जब देखूं तब बन घनमें ॥
और सखिन सों मुख हू न बोले मोरे लपट जात
अङ्ग अङ्गनमें ।
कौन उपाय करौं ब्रज आली ऐसी बसो वाके
तन मनमें
गावे गूदर सास ननद चवाइन झठ सांच लगावे
भवनमें ॥

४

अब जान न पइयो हो लला तुम आन पड़े
वश मेरे लला।
गारी मैं दूंगी दिखाऊं सबनमें मुख मोडूंगी
मैं तेरे लला॥
पिचकारिन मार गए कुञ्जनमें कलका बदला
हेरे लला।
कुन्दनदास प्रभु पकर लिए हैं मन माने फगुवा
देरे लला॥

५

होरी खेलत हो हो रे लला बहियां न गहो बहियां
न गहो तुम जावो चला।
काहू को लपट और झपट काहू को पकरत
हो जू चपला॥
अबीर गुलाल कुङ्कुमा केशर पिचकारन मार दई
है भला।
नन्द महरके ढीठ लङ्गरवा सुन्दर रूप देखाय छला॥
आज रङ्ग होरी मा रङ्ग है साजन मिला बुरा भला।
निज़ामुद्दीन औलिया जग उजियारा मुंह मांगी
वर मला॥

६

पिया मोंसे आंख छिपाए कहा होत ए री तेरो
फैल रहो कजरा।
पिया नाग्नर को मिल आई जो तुम टूट गई
दुलरो हार गजरा॥

७

को खेले तो से होरी बहियां पकर झकझोरी लला।
बरज रही बरजो नहीं माने बरवश मलत
मुख रोरी लला॥

८

यशोदा लाल ब्रजराज लाडलो होरी खेलन
मोसे आयो री।
कर लीन्हें कञ्चन पिचकारी केशर रङ्ग भरायो री॥
अबीर गुलाल लिए भर झोरी चोवा चन्दन
लिपटायो री।
ख्याल करत अलबेलो मोहन रसिया छैल कहायो री॥

९

फाल्गुनकी ऋतु आई सखी होरी खेलौं गो
कुञ्जविहारी से।
केशर रङ्ग रंगूंगी पीताम्बर फगुवा लूंगी
गिरिधारी से॥
चोवा चन्दन लिपटाऊंगी अङ्गमें केलि करूं
बनवारी से।
ख्याल खुशाल मन भाए फगुवा लूंगो खेल
खेलारी से॥

१०

अनियारी घनश्यामके नयन रङ्गमें भरे रतनारे री।
निरखत लगत छके री तरसके उमंग भरे कजरारे री॥
चितवत चित्त चोराय लेत हैं चञ्चल चपल अपारे री।
ख्याल खुशाल लोभाय लियो मन नख शिखते
सुकुमारे री॥

११

आज होरी खेले पिय प्यारो री।
अबीर गुलाल की धूम मची है रङ्ग भर मारी
पिचकारी री॥
बाजत ताल मृदङ्ग झांझ डफ गारी देत सब नारी री।
जानकीदास निरखि या छवि पर बार बार
बलिहारी री॥

१२

खेलन आए नन्द गांवते रङ्गभीने बरसाने।
मृगमद रङ्ग अरगजा चोवा नरनारी सब साने॥
बिन काजर कजरारी अंखियां चढ़ीं मदन खरसाने।
कृष्णजीवन लछीरामके प्रभु प्यारे जो घर घर
बरसाने॥

१३

तक तक मारे पिचकारी मोरी अंगिया रङ्ग सों
भर डारी।

बरजोरी मलत गुलाल बदनमें भीज गई तन सारी ॥
देखत पुरजन गुरुजन सब ही मानो विनती हमारी।
पकर पकर बहियां झकझोरी तापर देत हो गारी ॥
अबीर उड़ावत धूम मचावत गावत दे दे तारी।
कृष्ण रसिक प्रभु होरी खेलत गोकुल गैल में न्यारी ॥

१४

केशर को पिचकारी भर मारी मेरे लग लग
जावे तनमें।
अबीर गुलाल और चोवा चन्दन ले मल मल जावे
बदनमें ॥
मेरे लपट झपट कर बहियां गहे लीन्हीं चिपट
गयो मेरे अङ्गनमें।
जहां देखूं तहां आगे हो ठाढ़ो घर घर ब्रज
बन घनमें ॥
लपक झपक मेरे पाछे परो है भाग जात है सदनमें।
कृष्ण रसिक सङ्ग लागो ही आवे होरी खेलावे
फाल्गुनमें ॥

१५

छवि स्वामीको रङ्ग अनादरी किये बहुत निखेद री।
सूत्रकारको वाणी सुनकर अजमुख भाष्यो वेद री ॥
पायो न आदि अन्त बिन वाको ज्ञान ध्यान
कर भेद री।
गावे गूदर सब थाके खेल कर रह गयो भेद
अभेद री ॥

१६

मनमोहन चतुर खेलार बन बनके समझ क्यों न
जइये री।
बनके जइए प्रिय को रिझइए तब मन वाको
लुभइए री ॥
सुघर न होय सुघर ह्वै जइए ना तर क्रूर कहइये री।
अशरफ पिया मेरो अति ही रङ्गीलो वा सों प्रीति
लगइए री ॥

१७

अपने रङ्गमें रङ्ग ले रङ्ग रङ्गीले छैल छबीले।
निज़ामुद्दीन औलिया महबूब इलाही प्रेमप्रीति
प्रसङ्गीले ॥

भैरवी—यत्

उमड़े यौवन पर रङ्ग न डार ए हो मैं ने करूं
तोसे बार बार।
यह बिरहन भई नींदको माती यौवन भयो तेरे
गरे को हार
गावे गूदर पिया बेग खबर ले सूखे पत्र नहीं
जुड़ेंगे डार ॥

२

नयन बिरहिया तेरे पिया रे रङ्ग रस वश कर लीन्हीं
जियारे।
अंधियारे कारे कजरारे चञ्चल रतनारे हैं मतवारे
बांक बख़्श कहे यदुरायो सो बिन सइयां पियारे
सुरत बिसारे ॥

३

पिया को मनाऊं मैं पइयां परोंगी करूं योगिनको
भेश री।
गेरुवा बसन भस्म तन ल्याऊं शीर्ष बढ़ाऊं मैं केश री॥
पिया बसै हिय में जानत नाहीं ढूंढू जङ्गल परदेश री।
गावें गूदर पिया अपनो मैं पायो जब गुरु दयो
उपदेश री ॥

भैरवी—तिताला

जो यह फाग रच्यो भवसागर अजब खेलारी को
खेल री।
नटवा एक कला बहुतेरो रङ्ग सबन में मेल री ॥
समझ बूझ मन आदि अन्त तक राख्यो न कोई
अकेल री।
गावे गूदर जो जियके डरे नहीं सोई सोई रङ्ग
बिच हेल री ॥

२

ओगणेश अहिवात दे हमको फाल्गुन पियको
मनावत री।

कञ्चन थार सुगन्ध पुहुप ले नित्य उठ देव
मनावत री ॥
सोनेको छत्र धरों शिर ऊपर धूप दीप मन भावत री।
अबीर गुलाल कुङ्कुमा केशर ताल मृदङ्ग
बजावत री
कहे गूदर सुनो गौरीसुत मैं तेरे यश नित्य गावत री॥

३

सुघर पिया हो रसिया होरी खेलन मो पै आए।
सब ही वसन रङ्गाए तनमन रङ्ग बनाए ॥
गोप ग्वाल बार ब्रजके सखा लिए अबीर गुलाल
उड़ाए।
चोवा चन्दन और अरगजा केशर रङ्ग छिरकाए ॥

जंगला—भैरवी

होरीके खेलैया भर भारी पिचकारी हो।
सुरङ्ग चुनरिया सब ही बोरी ले गुलाल मुख
डारी हो ॥

४

होरी के खेलैया मोसे कीन्हीं बरजोरी हो।
हौं यमुना जल भरन जात रही वर वश बहियां
मरोरी धर झकझोरी हो ॥
कञ्चनकी पिचकार केशर रङ्ग भर छिरकत
मेरी ओरी हो।
चीर झटकावत ढिग ढिग आवत प्रेमरङ्ग प्रभु मांगे
मो सों दोउ करजोरी हो ॥

५

रे खेलवैया स्वामी आज मैं पायो नन्दकुमार
ऐसो कौन देहौं रङ्ग डार !
अबीर गुलाल केशर कुसुम रङ्ग भर भर अपने हार॥
ऐसी होरी खेलो मोहन ले कर गहे करो विहार।
उरझियो सखी मानो तलाहुमन में इन मोहे
नाच नचायो बहु बार ॥
सोई सोई नाच करो मोहनके अबके दाव है हमार।
जाने न पावे नन्दमहर को सब सखियन को
करो जुहार ॥

दो कर में बांधो मनमोहनको प्रेम मोहनो डार।
फगुवा लेहु देहु रङ्ग भरि भरि डार सुमनको हार
गावे गूदर प्रभु पद गहे लीजे जीवन तन मन सुधार॥

६

श्याम मोहे भोर हो आन जगाई।
कहे न सकत कछु लाजको मारो नई नई तान सुनाई
कृष्णानन्द निरखि प्रभुको मुख आनन्द उर न समाई ॥

७

हमरी उमङ्ग चाहे होरी खेलनको सखो तेरे यौवन
ने धूम मचाई।
सोती थी मैं अपने मन्दिर में मोहे गिरहने
आन जगाई ॥
सब गोपिनमें नाचत राधा कान्ह ने मुरली बजाई।
जो लागन में बांह पकरि है टूंगा मैं राम दुहाई
अपने सइयां को मैं बालो भोला अंगिया कहां
मसकाई ॥

८

रे कन्हैया गुलाल मले और कुच पकरत है तेरे
जिय में कपट।
नयन सैन करे और अङ्गुरी नचावे कहा होत है
लाख मटक ॥
तरुणो बारी नारी आये ब्रजमें सबको देखावे
अपनी चटक।
राज करो ऐसो खेल यह अचपल आपो खेले
और जावे सटक ॥

९

मोरे सब अङ्ग भीजे मारो सइयां पिचकारी।
अति बारी सुकुमारी नवल तिय अपने सइयां को प्यारी॥

सिन्धु—भैरवी

बौरो डोले डगरमें तुम समझत नहीं गंवार।
फाल्गुन के मिस उर अञ्चल दे यौवन भार संभार ॥

१

सखो री आज डगरमें खेलूंगो पिय से फाग।
पिया मेरा मैं पिया को रे सजनी धन्य धन्य
मेरो भाग ॥

१

री बौरी पिय को मनाय ले फाल्गुनके दिन चार।
प्रिय चतुर तू निपट अयानी बीतो जात बहार॥

३

हमरी सुध बालम अज हूं न लई री।
आए वसन्त कन्त घर नहीं तो यौवन जात दई री॥

४

मैं तो सगरी भिजोई सङ्करवाने केसवाने डारो
गुलाल री।
चोवा रे चन्दन और अरगजा अबीर
उड़ावत लाल री॥

झंझोटी-भैरवी—चौताला

सुन्दर वदन पे सोहत लाल गुलाल मदन गोपाल।
मुकुट लटक भृकुटी मटक कुण्डल झलकन
दृगन चमकन कटि पट पीत बजावत मुरली तान
रसाल॥
बाजत वीणा मृदङ्ग चङ्ग मुरचङ्ग औ जलतरङ्ग रङ्ग
छिरकत हर्षत ब्रजवधू डार दई उर सुमन बनमाल।
मन इच्छा सो फगुवा लीन्हों कीन्हों सब भातो
नयनन अञ्जन आंज पकर बेवश कीन्हों नन्दलाल॥

२

अधर धरे री बांशरी नृत्यत मण्डल श्याम।
ध्वनि सुन गोपी झुक झूमत बढ़ो अधिक तन काम॥
ले गुलाल मुख मीड़त मेरो देखत सगरो वाम।
चर्चे रहो ब्रजको वनिता सब जाय कहोंगी धाम॥

जङ्गला—भैरवी

फाल्गुनके दिन चार खेल ले होरी।
इस यौवनका मान न करिए यह यौवन दिन दो री॥
इत तें आए कुंवर कन्हैया उत तें राधा गोरी।
सखी सखन को सङ्ग ले दोउ खेलत लख्यो किशोरी॥

झंझोटी-भैरवी—तिताला

गोरी अंगिया तोरी सोंधे में बोरी।
नयन तिहारे कटाच्छ लगत हैं अधरन पर
मोतियनकी जोरी॥
चन्द्र सो वदन तेरो री गोरो होरी को ऋतु थोरी।
कटि केहरि कदली सो जङ्घा औ श्रीफल कुच
दोउ बनो री
रसिक रङ्ग को रस वश कर लीन्हों चितवन
दृगन ठगोरी॥

२

रङ्ग में बाट चलत यशोदाके लालन बोर दई
मोरी सारी।
आवत थी मैं अपने घरते मिल गयो मोहे अचानक
भारी॥
सागर रङ्ग बनाय मुहब्बत बहियां पकर दे मारी।
सारीके बदले सारी लेऊंगी और देऊंगो गारी॥

३

बोर दई अंगिया मेरी रङ्गमें।
धर बहियां झकझोरी मोरी रस वश कर लई
अपने ढङ्गमें॥
गारी गावत नयन नचावत पिचकारी भर
मारी अङ्गमें।
चन्दन वन्दन अबीर गुलाल ले बरजोरी मुख मीड़त
रसरङ्गमें॥

४

ए नन्दनन्दन ब्रजराज कुंवर सो एरी मेरो
बाढ्यो अधिक सनेह।
सब सखियन मिल आई महर घर मोहन मांग्यो
दो चार दिना होली को अवसर घटे तो दूनो लेह॥
अबीर गुलाल चन्दन वन्दन ले केशर कुङ्कुम
गालन देह।
रसिकराय को रस वश कर लियो मनमान्यो
फगुवा लेह॥

५

चलो जात मदमाती गोरी।
आगे नाचत कान्हर प्यारे पीछे नाचत राधा गोरी॥

बाजत ताल मृदङ्ग चङ्ग रङ्ग बीणा रबाब बांसरी
भोरी ।
भरत परस्पर सखियन मोहन बलिहारी बोलत
हो होरी ॥

६
होरी खेलत ब्रजराज आज बनकुञ्जन में ।
अम्बवा मोरे बन घन फूले भ्रमरन पंक्ति
कोयलिया बोले रसिक आनन्द पुञ्जन में ॥

७
चला जा रे कन्हैया मैं गारी देत हूं काहे को
खड़ा मोरे तीर रे ।
भर पिचकारी मेरे मुखपर मारी भाखर जात
अहीर रे
कृष्णानन्द रहत अलबेलो काहूको होर न पीर रे ॥

८
मनमोहन ने मेरी अंगिया रङ्ग भर डारी ।
इस अंगिया में लाल लगी हैं मोतिन लगी है भारी ॥

९
तोरे लला ने मोसे अचानक प्रीति करी रे ।
प्रीत करी कुछ रीति करी रे ॥
हौं यमुना जल भरण जात रही शिरपर गागर
रङ्ग की भरी रे ।
वृन्दावन की कुञ्ज गलिन में हंस हंस बहियां
आन धरी रे ॥
ऐसो ढीठ लंगर मनमोहन चोलिया टटोलत
घरी घरी रे ।
कृष्णानन्द भई मैं बावरी खड़ो पुकारत हरी हरी रे ॥

१०
मनमोहन बनवारी सांवरो होरी को छैल बन
रह्यो री रङ्गमें ।
ग्वालबाल सङ्ग लिए होरी गावे उत राधे सखी
लिए है सङ्ग में ॥

११
सांवरे ने मरोरी गोरी बहियां मोरी ।
मेरो रङ्ग मेरी पिचकारी और अबीर गुलाल
की झोरी ॥
कर झकझोरी छीनके हंस हंस और सखियन सों
खेलत होरी ।
कारे कहूं काहु बन नहीं आवे घर सों निकसी थी
सासको चोरी
नहीं तो वज्रहन ऐसो रिझावती जात भूल
वाकी बरजोरी ॥

१२
मैं अपने मोहन सों होरी खेलौंगी बनाय बनाय ।
अबीर गुलाल कुङ्कुमा केशर रङ्ग बरसाय बरसाय ॥

१३
कान्हा कारी कमरिया तो पै कौन रङ्ग डारो ।
सुरङ्ग चुनरिया हमारी भिजोई तुम्हरो कहा बिगारो ॥

१४
रसिया होरी खेलन मोसे आए ।
रंगे वसन अङ्ग लगत सुहाए चोवा चन्दन लिपटाए ॥
अबीर गुलाल उड़ावत गावत ऋतु रस छकन छकाए ।
ख्याल खुशाल करन चित चाहत यौवन उमङ्ग
उठाए ॥

१५
नन्दराय को कुंवर लाड़लो भयो री अनोखो
खेलारी ब्रजमें ।
रङ्गत केशर रङ्ग अबीर लगावत करत फिरत
मतवारी ब्रजमें ॥

१६
होरी खेलन आई सब ब्रज गोरियां ।
कोई कर लिए कञ्चन पिचकारी कोई लिए
भर भर रङ्ग कमोरियां ॥
कोई लिए अतर अरगजा केशर कोई लिए कुङ्कुम
चन्दन रोरियां ।
कोई लिए अबीर गुलाल सखी कर कोई चतुर
कोई लागत भोरियां

करत ख्याल श्याम रङ्ग मिलके व्रजकुञ्जन में मिल
एक ठोरियां ॥

१७

श्याम तेरे देखन को मोरे नयनन बान परी।
मोहनी मूर्ति निरखत हारी चितवन नेह भरी॥
अब चित चाहत केलि करों व्रज कुञ्ज कुञ्ज सगरी।
ख्याल खुशाल मदनमोहन प्रिय निज वश प्राण करी॥

१८

अभी मन मेरा सखी री मनमोहन मोह लिया।
रूप मोहनी डार ठगोरी चित्त वश कियो हिया॥
कहा री करूं कछु कहत न आवे क्या जानूं
कहा किया।
ख्याल खुशाल देखाय प्रीति को छकन छकाय दिया॥

१९

होरी माच रही है आज नन्दनन्दन जू के द्वार।
एक गावत एक मृदङ्ग बजावत एक नाचत दे तार॥
भर भर झोरी गुलाल उड़ावत रही न काहू संभार।
आवो सबै मिल होरी खेलें यह फाल्गुन दिन चार॥
एक ओर झांझ डफ बाजत ओर मुरली झनकार।
एक ओर तरुणी ओर बारी गावत दे दे तार॥
ऐसी धूम मची है व्रज में होरी होरी पुकार।
अबीर अरगजा चन्दन वन्दन केशर की पिचकार॥
अम्बर भिजोवत काहू को न मानत ऐसे लङ्गर
बट पार।
काहू को झपट और लपट काहू को काहू को
देत हैं गार
सूरदास प्रभु फागु रचो है बार बार बलिहार॥

२०

हो मृगनयनी चलो होरी खेलन को।
वृन्दावन में खेल रच्यो है उधर उधर रङ्ग झेलन को॥
मनमोहन सोहन हैं रसिया ता सों छाड़ो मान
उठो मेलन को।
कृष्ण रसिक को रस वश कर लो छाड़ देहो सब
फैलन को॥

२१

दोऊ सुघर लाल होरी खेलत नीके समाज।
इत श्रीराधारानी गोरी उत सांवरे व्रजराज॥
नाना वसन आभूषण पहनके युगल अङ्ग छवि छाज।
राजत हैं गौरश्याम अङ्ग द्युति कोटि कोटि रतिराज॥
गोपी गोप सब आए बन बन विविध मण्डली साज।
चित्त उमङ्ग सब गावत नाचत बाजत एक स्वर साज॥
डारत रङ्ग गुलाल उड़ावत नेक न आवत लाज।
कुलकी कान मान गुरुजनकी मन चित्त सों
गई भाज॥
लखि लखि हंस हंस करत परस्पर मनमाने
सब काज।
नर नारी सब यह सुख विलसत कोऊ घटा
कोऊ छाज॥
हैं सुरनी सिर मन्दिर मोरी है देव शिरताज।
दासी दास हिय उर निरन्तर यहि छवि सों विराज॥

२२

मोहे भोर हो जगावत रे काहेको आनके।
जिन सखियन सङ्ग रैन गंवाई आशक् वही
जावो जानके॥

२३

हाथ मटुकिया रङ्गकी भरी रे सइयांको बाट देखों
कब को खरी रे।
उनहीं के रङ्ग में भर पिचकारी मुख पर मार
दा घरी घरी रे॥

२४

कान्ह रङ्ग डार दियो मो पर मोर सास सुने
देहे गारी।
मैं तुमको पहंचानत नाहीं स्वामी सुने मोहे
मारे अनारी॥
ऐसे लङ्गर तुम लाला काहे बिगारो सारी।
कृष्ण रसिक मन भायो अब तो मैं तेरे बलिहारी॥

भैरवी—तिताला

रे कन्हैया सांवरे मोहि रङ्ग भर डारो।
भर मारी पिचकारी केशर रङ्ग सुरङ्ग चुनरिया बिगारो॥
सङ्गकी सखी सब दूर सटक गई हा हा हा कर हारी।
कृष्ण रसिक ने रस बश कर लीन्हों गावत दे दे तारी॥

२

रङ्ग डारी अंगिया भीजी चुनरी अब कैसे घर जाऊं कन्हैया।
सास ननदिया और जेठनिया हंसी करेंगी नरनारी रे दैया॥
सखी सहेली कोउ ढिग नाहीं बरबस मोरी बहियां मरोरी रे बैया।
कृष्ण रसिक रस बश कर डारो अब तो छोड़ लागूं तोरी पैया॥

३

लाला अर नहीं कर रे मोहि छाड़ दे मोहे जान दे यमुना जीके घाट।
होली में तुम धूम मचाई गारी गावे नचावे ले काट॥
अगर बगर के लाग सुनत है मोहे सास ननदी नाट।
बङ्कर ढीठ बनवारी सांवरे रोक रह्यो मांझ बाट॥

४

री ग्वालनी खेलतमें मेरो गेंद क्यों लई है चुराई।
ग्वालबाल सङ्ग खेल मच्यो ते अंगियामें डराई॥
झपट झपट बहियां गहे लीन्हीं एक गई दो पाई।
अबीर गुलाल मलो मुख रोरी पिचकारिन सों भिजाई॥
कृष्णरूप हो गई री ग्वारन सुधबुध सब बिसराई॥

५

श्यामसुन्दर ब्रजमोहन प्यारे होरी खेलन आए हैं।
अबीर गुलाल कुङ्कुमा केसर पिचकारिन रङ्ग छाए हैं॥
चन्दन वन्दन बुक्का रोरी सब थारन में भर लाए हैं।
सखी श्याम को श्याम सखिन को ले ले मुख लपटाए हैं॥
वीणा मृदङ्ग मुरचङ्ग डफ बाजत होरी राग जमाए हैं।
गोकुल महावन और वृन्दावन ब्रजमें धूम मचाए हैं॥
हो हो कर बोलत सब डोलत आनन्द उरन समाए हैं।
सुर नर मुनि सब देखत ठाढ़े सुधबुध सब बिसराए हैं
कृष्णरूप अनूप महा छवि निरख सब ही लुभाए हैं॥

झूम—भैरवी

मोहे गरवा लगावे रे अकेली जानके।
भौंह कमान नयन मृगलोचन तक तक मारत बानके॥

२

डगर मोरी रोके कन्हैया श्याम तोहे मारूंगी सैनन में।
सुन री सखी मैं का कहूं ता को गारी दे गया बैनन में॥

३

मोहे होरी खेलावे लाल मनमोहन।
भर पिचकारी मुखपर मारे अबीर गुलाल लगावे लाल मनमोहन॥

गारा-भैरवी—तिताला

ऐसो खेलारी रसिया मोरा होरी में करत है बरजोरी।
आप खेले और मइको खेलावे बहियां पकर मोहे रङ्गमें बोरि और कहे हरि हो हरि होरी॥
ब्रजकी सखी सब बन बन आई मनमोहन घर मची है होरी।
हाथ लिए पिचकारी प्यारी अबीर गुलाल मले मुख गोरी॥

२

रस नाहीं रे बालम बहुत दिनन को थोरी।
जो तेरा जी नहीं माने बालम खोल चोली मोरी॥

१

सखो री खेलों पियासे मैं फाल्गुनके दिन चारो।
पिया मोरा मैं प्रियका री सजना सइयां मेरा
प्राण अधारो॥

४

सांवरे ने मगमें जात नन्द जूके लाड़लेने रङ्ग भर
मारो पिचकारो।
बरज रही बरज्यो नहीं माने बहुविध से समझाय
बर बस हो मेरो बहियां मरोरत ऐसे निपट अनारो॥

५

नन्दमहर जूके सुघर कन्हैया सो मैं तो उनहीं सो
रङ्ग मचाऊंगी।
कृष्णानन्द सोहाग फाग को हर्षि श्याम सङ्ग
लाऊंगी॥

झंझोटी-भैरवी—तिताला

गोरिया होरिया खेल री ले पिय सङ्ग कर कर प्यार।
नन्दनन्दन तेरे द्वारे आए भर ले रङ्ग पिचकार॥
भाग सोहाग तिहारा री आली घर बैठे आए हैं
मुरार।
कृष्णरसिक रसबश कर ले री अबीर गुलाल को डार॥

२

छैल मेरो अंगिया में पिचकारो मार गयो।
लपट झपटके बहियां गहे लीन्हीं अचरा पकर लयो॥
होरी के मिस पाय के प्यारे जो तुम कहो सो सयो।
कृष्ण रसिक अब छाड़ दे प्यारे जो कुछ भयो
सो भयो॥

३

क्यों भर मारी पिचकारी वे छैला।
सुरङ्ग चुनरिया सब ही भिजोई ता पर दई है
गारो वे छैला॥
सङ्गकी सखी सब दूर निकस गई हा हा हा कर
हारी वे छैला।
कृष्ण रसिक सब रङ्ग में बोरी अपने बश कर डारी
वे छैला॥

४

सांवरा सलोना मेरा प्यारा वे होरो खेलन
मेरे घर आया वे
गावदा बजावदा धूम मचावदा साडा जिय
ललचाया वे॥
अबीर गुलाल उड़ावदा आवदा सब सखियां दे
मन भाया वे।
कृष्णरसिक रस रङ्ग दे नालो रहस रहस गर
लाया वे॥

५

होरी खेल ले हरिके सङ्ग प्यारी मान न करिए।
मदनमोहन सोहन ते पायो चरण कमल
चित्त धरिए॥
अबीर गुलाल कुङ्कुमा केसर पिचकारिन रङ्ग भरिए।
कृष्णरसिक को रसबश कर ले चरण जाय तुम परिए॥

६

होरी को छैल बन रह्यो री रङ्ग में।
मनमोहन व्रजवासी सांवरो इत ग्वाल बाल
लिए होरी गावे उत राधे सखी लिए है सङ्गमें॥
ताल पखावज आवज मुरली बीणा मृदङ्ग रबाब
गावें अङ्गमें।
रसिक रङ्ग व्रज धूम मचाई खेल मच्यो भारी
भोजे अङ्गमें॥

७

मैं अपने मोहन सो होरी खेलोंगी रङ्ग बनाय बनाय।
अबीर गुलाल कुङ्कुमा केशर रङ्ग बरसाय बरसाय॥
लपट झपट मोहे पकर लीन्हीं है कलका
बदला चुकाय चुकाय।
रसिक छैल सो फगुवा लूंगी पीताम्बर लेहुं
छिनाय छिनाय॥

८

सब ही छाड़ मोही रंग में भिजोई आज कान्ह
होरी खेलत हैया।

काज तजो सब जगको रङ्गीले कौन धरा याको
नाम कन्हैया ॥

९

होरी खेलत मनमोहन केसवा ब्रजमें सखी ऐसो
धूम मचो है।
केसर रङ्ग लिए फिरत रङ्गीले कोऊ न ग्वालि वाके
रङ्ग में बचो है॥

१०

मनमोहन सो तेरी अंखियां लगी होरी खेल ले
गूजर बाल।
फेंट अबीर गुलालको भर ले तेरे घर आए
मदनगोपाल
कुङ्कुम केसर घोरके मल ले रसिक रङ्गीला ग्वाल॥

११

प्यारो तेरे नयन दो पिचकारियां।
तन मन प्राण सब हो भिजावत गावत यश
सुकुमारियां॥
तोहो ते हरो रहत वृन्दावन मून फूल फल डारियां।
सुन मृदु वचन लाल ब्रज जीवन भर लीन्हों
अकवारियां॥

१२

अब हो जिन लीजे पिचकारी।
काजे लाज बड़नको तेरे अङ्ग अङ्ग पीताम्बर
ता में दूर गहो विहारी॥
आवन दे आगे लागे जब तोहे भरण सुकुमारी।
कृष्णदास हित फेर पाछे ह्व भर लीजे अकवारी॥

१३

सखी मेरो मन हुलसानो वसन्त बहार आई।
कोकिल कूंजत भ्रमरन गूंजत अंबुवा मोराई॥
अबीर गुलाल कुङ्कुमा केसर पिचकारिन रङ्ग छाई।
टेसू फूले और फूले कुसुम द्रुम कृष्ण रसिक पाई॥

१४

ब्रज में धूम मचो होरी खेले नन्दको लाल।
घर घर तें वनिता सब आई अबीर लिए भर थाल॥
कोई सखी ठाढ़ी रङ्ग छिरकत है कोई मुख
मलत गुलाल।
बाजत ताल मृदङ्ग झांझ डफ घुंघरू औ कठताल॥
प्यारो लाड़लो श्याम नचावत देत सखी सब ताल।
कोऊ सखी पटका गहे ठाढ़ी कोई रोक रही
ब्रजबाल॥
फगुवा दे घर जाओ लला यशोमती नन्दके बाल।
लाल सखी चरणन बलिहारी निरखत भई निहाल॥

१५

खेले सांवरो ब्रज में फाग।
डगर बगर में धूम मचो है डफ मृदङ्ग सङ्ग मुरली
बजावे गावत वंशो में झिंझोटी राग॥
काहूके भाल गुलाल लगावे अपनो बार को
जावे भाग।
विष्णुदास को पास बुलावे पकर लगावे लाग॥

१६

खेलन लागी ब्रज में होरी नन्दमहरके लाल।
बाजत वीणा मृदङ्ग चङ्ग बांसुरी औ रबाब कठताल॥

१७

पायन दूंगी मैं जो दान हो कोऊ ऐसो पिय को
मिलावे प्यारो रे।
सांवरे होरीके दिनन में मो पै सब रङ्ग डारो रे॥
अबीर गुलाल केसर पिचकारी भर भर मारो रे।
भर बहियां झकझोरी मोरी फेर हो गयो न्यारो रे॥
सास ननद सों अब कहा कहि हूं लाजन मारो रे।
रसिक रङ्ग रस वश कर डारो कछु चेटक डारो रे॥

१८

काहो छैल मोरी गैल चतुर तोहे मारूंगी सैनन में।
तेरो ई रङ्ग तेरो पिचकारो ताहे बोधूंगी रे नयननमें॥
दृग कटाक्ष पिचकारी कर हो वश करूं बैननमें।
रसिक रङ्ग सों फगुवा ले हों जब देहों जानननमें॥

१९

रब्बा आन मिलावे फाल्गुन में माहोवाला।
अपने रो अपने मन्दिरसे निकसो ओढ़े जरद दुशाला॥

कोई नाचत कोई गावत धावत कोई बजा
देत है ताला।
रसिक छैल प्रभु आन मिलो तुम मोहन
मदनगोपाला॥

२०

अंगिया ताशको रङ्गभीनी यौवनवाके साथ।
दूर से वचन कहो मेरे प्यारे छुवन न देहौं हाथ॥
भूषण ढील भए अङ्ग अङ्गके मोतियन बिथुरे माथ।
गावै गूदर दोऊ समय बराबर अब जिय होत सनाथ॥

२१

आज मथुरके भयो है जगाती।
छीन लेहौं लकुट कामरी मूर्ख ग्वालिन
मद्दो को माती॥
दुग्ध लुटाय छीन लेहुं वसन तेरी कर मींजत
रहि हौ पछताती।
आकर कहि हौं कंसरावसे पकर मंगावे तेरो
जन्म संघाती॥
असुर संहारन जन प्रतिपालन माता यशोदाको
पूत न नाती।
मारों कंस संशय जिन जानो को सनमानै अहीर को
जाती॥
तव डर वश प्रभु चरण गह्यो है जब सर्वज्ञ
लगायो छाती।
अज महेश सुर नर मुनि गन्धर्व जाको रटना करत
दिन राती
गावै गूदर सो कियो वन क्रीड़ा जो भावे मन
चोर सांहाती॥

२२

छैल मेरे नयनन में मनमोहन लागि रह्यो।
दृष्टि परे नन्दनन्दन जब ते सब व्रत नेम बह्यो॥
बिन देखे मोहिं कल न परतु है दर्द न जात सह्यो।
सुन्दर श्याम कमलदल लोचन जब ते मो चित हा॥

मेरे चित्त बसो है सांवरो सूरत जो कछु भयो
सो भयो।
जानकीदास श्याम रङ्ग राची जग उपहास सह्यो॥

२३

छूंगी मैं नन्द दुहैया बहियां नाहीं गह्यो।
देखत है सब लोक नगरके मानो श्याम कह्यो॥
होराके मिस मोहन प्यारे जो तुम कह्यो सो सह्यो।
जानकीदास प्रभु फेर मिलोंगो अब टुक
चिपटि रह्यो॥

२४

कौन बड़ो ऐसो हारी रे छैला।
पचरङ्गी चूनर एकरङ्गी कीन्हीं रङ्ग सरबोरी रे छैला॥
अबीर गुलाल कुङ्कुमा केसर अङ्ग अङ्ग रङ्ग
बोरी रे छैला।
जानकीदास हा हा कर हारी ताऊ रसिक नहीं
छोरी रे छैला॥

२५

मेरो मन उमग्यो होरी खेलनको।
मोहनके कुङ्कुम को चोटे उघर उघर अङ्ग झेलन को॥
उमग्यो मनुवा रहत न रोक्यो पियको भुजन
भुज मेलन को।
जानकीदास विलास रास सुख सरस रङ्ग रस
रेलनको॥

जङ्गला—भैरवी

अरे आयानो हो माई होरीको शृङ्गार रो।
अबीर गुलालको बादर छायो रङ्गकी
परत फुहार रो॥

१

रे मेरे होरीके खेलैया रङ्ग भरि मारो पिचकारो।
उड़त गुलाल अबीर कुङ्कुमा हमदम मैं तेरे
बलिहारो॥
सइयां मो से रूसो रो कोऊ जाके मना लारो।
जो पिया मोसे रूस रहो है विनतो करूं तिहारो
लिख लिख पतियां पठवौं मैं पियाको ऐसा सखो
कोऊ जा रो॥

३

जिन मोरी अंगिया भिजोई देया मैं तो उन्हीं को
रङ्ग में भिजाऊंगी।
सङ्गको लेओ सखा सब ले मैं तो कुञ्जगलीन को
जाऊंगी॥
गारी भी दूंगी और रार करूंगी मैं तो राधा कन्हैया
बनाऊंगी।
बदला लूं तो अबीर उड़ाऊं जद अघपल हो होरी
गाऊंगी॥

४

मेरी अंगिया रङ्ग में बोरी भला मेरी जान भला
तुम से खेलौंगो हो हो होरी।
बरजोरी हाथ लगावत छतियां सकुचावत है गोरी
हा हा करूं घर जान दे छैलवा बहुत दिननकी
थोरी॥

५

आए फाल्गुन मास झमाझम खेलूंगी होरी।
मुख मोड़ूं गर लाय पिया सी फगुवा लो री॥
सइयां को सुहाग होडुं फाल्गुन में काको चोरी।
पिचकारिन रङ्ग केसर छिरकों अबीर गुलाल
ले हों भर झोरी॥

६

होरी मैं ना खेलूंगी फाल्गुन री मोरे हरवा
चुभि चुभि जाय।
मुख मोड़त बरजोरी कान्ह मोहे बरबस गरवा लगाय
कृष्णानन्द लाल गिरिधरके लागत फिर फिर पाय॥

७

आए फाल्गुन में चल गोरी मद गज चाल चलाए।
लोकलाज कुलकान तजी सब पिय लए गरवा लगाए॥

८

बनवारी गही मोरी बहियां आज।
अब देख सखी गई सगरी लाज॥
हों ज्यों अचानक घरते आई मोहे मिल्यो है
जोर समाज।
धाय लई लपटाय चाय सो निपट ढीठ वाको
नाहीं लाज॥
निश दिन रार करत है सब सो अब बसबो
यहां नाहीं काज।
छविनायक यासो तज दोजे अचल करे अब
ब्रज में राज॥

भैरवी—यत्

उठ चल री पिया सो खेल फाग आछे रहस रहस
गरे लाग लाग।
यह अवसर नहीं रूठनके मेरे कहे तू तज वैराग
छविनायक आए तोहे मनावन सौत सराहत
तेरो भाग॥

२

बन बन होरी खेलैं ब्रजकी नारी मनमोहनके
सङ्ग कर शृङ्गार।
बाजत वीणा रबाब झांझ डफ मुरचङ्ग औ
मुरली सितार॥
कोउ गावत मीठे स्वर रवि सो कोउ नाचत गति
दे दे तार।
कोउ गुलाल कोउ अबीर उड़ावत कोउ कुङ्कुम
पिचकारी मार॥
कोउ कर गहे हंस हंस मुख मोजत कोउ गर
लावत बहियां डार।
शिव ब्रह्मादिक औ सनकादिक निरख हर्ष बहु
सुमन झार
छविनायक सुख कहां लग वरणों थाक रह्यो
रवि रथ अपार॥

३

सांवलिया अब न सहौंगी बहुत सही तेरो गारी।
ऐसे भए तुम नन्दके लायक, ब्रज को रीति बिगारी॥
जो तुम कहियो एक सांवरे तो मैं कहियों चारी।
जाय कहौं मैं नन्द बबा सो तुर्त देहि निसारी॥
खेलत फाग श्रीवृन्दावन में गावत दे दे तारी।

अबीर गुलाल कुङ्कुमा केसर मारत भर भरके
पिचकारी
ऐसा ढीठ सूरको स्वामी कैसे बचै कोउ
व्रज को नारी ॥

४

री जोवन कैसे होय गो इन कान्हा ने चेटक लायो।
उरभ रही मोरी सुरभत नाहीं इन अंखियन
बैर बसायो ॥
ए मन मानत ना सजनी कोटि भांति समभायो।
कल न परत बिन देखे सजनी मोहन रूप लुभायो ॥
तन मन नयन में सांवरो सूरत दर्शन हो सुख पायो।
सुन्दर श्याम कमलदल लोचन कोटिक मदन लजायो
मगन रूप दृगन में बस गयो कान्ह हिं कान्ह
छवि छायो ॥

काफी—भैरवी

ग्वाल बाल पिचकारी सङ्ग ले आज कान्ह चढ़ि
आयो री।
होरी गार सुनावत मद को कर में कुङ्कुमा
छिपायो री ॥
छिपत न बनत कहत है राधिका ललितादिक को
बुलायो री।
आय जुरी प्यारी ढिग गोपी होरी को साज
मंगायो री ॥
दोउ दल झुकत कहत आवत है नयन की सैन
बतायो री।
झांझ मृदङ्ग ताल डफ धुमकत मोहन वंशी
बजायो री
रामरङ्ग श्रीवृन्दावन में होरी खेल रचायो री ॥

पील—भैरवी

पकर ले जैहों नन्द बबापे हारे पे धूम मचावत री।
आप गावत गारी मो को सुनावत झपट झपट
ढिग आवत री ॥
कोउ एक ग्वाल अबीर ले आवत कोउ पिचकार
चलावत री।
लेके कुङ्कुमा फेंक्यो सखिन पर ओढ़ल अबीर
उड़ावत री ॥
बाजत वीणा ताल डफ धुमकत होरी राग
जमावत री।
निकसन नहीं पावे व्रजवनिता फिर फिर वंशी
बजावत री ॥
महल सो भुंड निकल सन्मुख भई पकड़ मोहन
को छकावत री।
रामरङ्ग गिरिधर पर वश भए फगुवा लिए मन
भावत री ॥

जङ्गला—भैरवी

धन्य धन्य भाग्य जीवन जन्म आज होरी खेलन
मोहन मेरे आयो री।
कौन रङ्ग डारों सांवरे पे जिन मेरे मनको
लोभायो री ॥
कञ्चन थार कुसुम केसर रङ्ग अबीर गुलाल
उड़ायो री।
कौन पुण्य प्रगटे मोरे सजनी घर बैठे धन पायो री ॥

काफी-सिन्धु-भैरवी—यत्

आज होरी खेलत में जबसे देखो वा सुन्दर सांवरे
की झलक पे झलक।
सखी कहा कहों मेरी अब लो न लागो नेक हू
तबसे पलक पे पलक ॥
एक तो मुकट पीताम्बरको शोभा निरख
दूजे दृगनकी छवि और दशनको चमक पे चमक।
तीजे चाल चलत अति लागो भलो वाके दोउ
कपोलनको थलक पे थलक ॥
बनमाला गरे श्रवण कुण्डल परे मीठे बैन करे गाय
मनको हरे नृत्य करत खरो नीको लागो वाके
मुख ते श्रमको बुन्दनको ढलकपे ढलक।

चोवा चन्दन अरगजा काहू से मलत काहू पे अबीर
गुलाल फेंकत काहूके मुखपर पिचकारन भर भर
देत है रङ्गको छलक पे छलक
एते गुण देख प्यारेके एरी सखी वाके प्रेमको
जियामें मौज भई मोहि और भी ऐसो के सुध न
रही वाको वंशीकी सुन के ललकपे ललक ॥

२

इतनी कोई कहियो हमारो मनमोहन व्रजराज
सांवरे सो ए हो नारी।
पाय स्पर्श कर दर्शन कीज्यो हूं जो दोउ जोर
कर ठाढ़ी
फिर पाछे इतनी कह दोज्यो मोहे काहे को
विसारी न लो सुध एक हू बारी ॥
फाल्गुन आयो झांझ डफ बाजे भोर भई अति भारी
मोहे तो आशा तिहारे मिलनको भूल गई सुध सारी
पिया तरफत हूं न्यारी।
मोहे गुलाल लाल विन तेरे भई है रैन अंधियारी।
अंसुअनको अब रङ्ग बनो है नयन बने पिचकारी
पिया छोरत हूं हारी ॥
वृन्दावनको कुञ्ज गलिन में ढूंढ़त ढूंढ़त हारी।
दो दर्शन मोहि अपनो मौजसे ए हो कृष्णमुरारी
पिया मोहि आशा तिहारी ॥

३

अरे बारे मनको कपट कहां तज रे।
जो तू आपन भलो रे चाहत बोरे नीको वचन
मेरो मान ले रसिया देख प्यारे समज रे ॥

४

आज श्याम मेरे द्वारे हो आए होरी खेलन
अति चाव भरे।
अङ्ग अङ्ग रङ्ग सो भीज रहो है अबीर गुलाल
भुजन पे परे ॥
मोर मुकट पीताम्बर सोहै और मुरली अधरान धरे।
मौज ऐसी छविके बलिहारो निर्खत हो दुःख
दन्द हरे ॥

५

क्या खूब ऐसो आन बजाई बन में कान्ह बांसरी।
सखी ध्वनि सुन निकसन लागो सांसरी ॥
यमुनाके तीरे गऊ गोकुलको भूल गई सब चरन
घासरी।
होरी को धूम मची या व्रज में आयो फाल्गुन
मास री
मौज हो तो मोहो या वंशीवारे विरहका
मनमें लागी फांस री ॥

परज—भैरवी

होगो खेलन को जो आए हो मो सों तो आवो
श्याम पर मांझके घटको।
सुखसे विराजो धाम तिहारो उतारो पीताम्बर
खोलो कटको।
कारते मुरली धरो औ बढ़ावो शीशं ते अपने या
मोर सुकट को।
सरज रङ्ग डारो हरे गुलाल मलो नेक नेक सो
उघारो घूंघट को
ऐसे नरम करके कर पकरो जो न लगे मोरो
बांह को झटको ॥

२

ए तो खेल है मन मिलबे को ना तो वरजोरो
को है नहीं नटको।
जब हम तुम मिल मौज करन लागे तब है
का को डर कौन को खट को ॥

टाड़ो—भैरवी

आज होरी खेलनको में आई हों चित्त धर ले
कर अबीर गुलाल रङ्ग।
सुन्दर चतुर सुघर खेलारी जब जानोंगी तब
दोगे मेरो सङ्ग ॥
बाजेंगे वीणा रबाब सुरलिका झांझ चङ्ग और मृदङ्ग।

मौज होवेगी तन तन मेरे जब जिय होवेगी
प्यारे उमङ्ग ॥

२

सुनो री मोगी सकल सभा ए री बूबाके खेलसे
राम बचावे।
काहू सो लपट और झपट काहू सो धर पटके
अङ्ग लगावे ॥
हौं जो गई होरी खेलन को लाख तरे से रचावे।
हौं जो कहत वे मानत नाहीं अपनि हो बात
मन भावे ॥
चोवा चन्दन और अरगजा अबीर गुलाल उड़ावे।
धर बहियां झकझोरी मोरी अचपल होके आवे ॥

३

फाग में स्वांग मचावे अरी तू तो आपी खेले
कोउ खेल न पावे।
काहू को दलत और काहू को मलत है कोउ
गोकुल कैसेके जावे॥
वाके रङ्ग को सब ही जानत है पकर करके भिजावे।
उन को कहा कोउ कह न सकत है वो तो अचपल
होरी गावे ॥

४

जिन जावोरी आज जल यमुना भरण मग ठाड़ो
है कान्ह जोरी पकरत रन।
बरजोरी करत खेलत है होरी आपन देह नहीं
काहू घरन ॥
भर पिचकारी मोरे मुखपर मारी छतियन पर
रङ्ग लाग्यो है ढरन।
या रङ्ग से कैसे घर जाऊं सास ननद लख
लागी लरन॥
वाही सोचकी मारी मरत हूं धक धक जियरा
लाग्यो है करन।
विष्णुदास प्रभु से कहा कहिये उनकी हंसो औरन
जो को डरन ॥

५

नन्दलालने देखो री चुनरिया रङ्ग बोरो।
दया री करत फिरत बरजोरी ॥
होरी धूम मचाई मोरी माई निपट निर्लज्ज भयो
कंवर कन्हाई कुञ्जगलिन में मटकत डोलत बरजोरी।
हंस हंस घूंघट खोलत विष्णुदास घर सास लरेगी
मोतियन की लर तोरी ॥

६

मन देखत मोर मुकुटकी लटक गयो आलो री
आज हियते सटक।
केसर तिलक अलक घुंघरारी श्रवण दोउ कुण्डल
है चटक ॥
हौं दधि बेचन जात वृन्दावन मार्ग सो जो गई री
भटक।
बीच मिले यशोमती के छैल होरी खेलत आवत
झटक मटक ॥
बहियां पकर मेरो चूनर झटकी मटकी दधिकी
दई जो पटक।
बुद्धिविहारी खेलारी होरी को न मानत काहूकी
नेक अटक ॥

७

जिन निकसो कोउ आज डगर होरी खेलत श्याम
कन्हैया।
वीणा रबाब झांझ डफ बाजे जलतरङ्ग मुरली
सनैया ॥
ग्वालबाल मधुमाते आवत गावत नाचत दे घुमरैया।
पिचकारिन मारत भर भर वा दिन ते जो अचानक
आई मोपर दृष्टि परी बलभैया
झपट करी ठाढ़ी सखियन में छीन लयो मेरो
दूध दहैया ॥

८

बरजोरी तोरी तनो अंगिया विहंस गरे लायो
गहे बहियां मुख मलो अबीर गुलाल अतर।

कोटि यतन कर सौंह देवाई दोउ करजोर परी हूं
पइयां बहु विनती हारो कर कर
ब्रजवासी सब लोक बुरे हैं देत दोष मोहे लाग लगैया
हविनायक जैसे हम देखे तैसे न देखे काहू ठगैया
सुध आवे कांपों थर थर ॥

९

अब मोसे होरी खेलो सांवरे मनकी कपट तज दे रे।
लाखन काहे को बहियां मरोरत रसिया अंगिया
फारी आवे आवे लजा रे ॥

१०

सांवरो रङ्ग डार गयो मोरी आंखन बीच अबीर ।
यमुनाके नीरे तीरे बंसिया बजावे आखुर जात अहीर ॥

११

लागत निकस जात सुन्दर मुखते तेरी गारी
मोहे प्यारी ।
बेसर की मोतियन झमक चन्द्रकी चमक सोहत
न्यारी ॥

१२

होत है मूर्ख क्या जाने नारि को सार री कलाई
फूल हू से सुकुमार ।
मुख मीजत निपट गंवार री कर लाई कुम्हलाई
जात मार ॥
फूलसी होके चतुर कुम्हिनी कहा जाने मूर्ख
मारको सार ।
केहरिसो कटि शुक नासिका कदली जङ्घा कुच है
मानो अनार
सुन्दर प्यारी निहार रसिक रङ्ग बार बार बलिहार ॥

काफी जंगला—तिताला

कोउ चलन न पावे बाट ।
फाल्गुन में जो देखे सोई मातो डोले रङ्ग
गुलालके ठाट ॥
अबीर गुलाल की धम मची है गोकुल गांवके घाट ।
रसिक हंस प्रिय होरी गावे राग तानको लिए डाट ॥

२

खेले सांवरो होरी यमुनाके तीर ।
बाजत ताल मृदङ्ग झांझ डफ स्वरध्वनि मिल
उठत गम्भीर ॥
सुन ध्वनि मन्द मधुर मुरलीकी मुनिजन धरत
न धीर ।
दुरो-मुरी झपट लपट नन्दनन्दन केसर छिरकत
नीर ॥
बहियां पकर मुसक्याय राधिका हरि मुख लाय
अबीर ।
औरसरङ्ग रीझ यह ब्रजको हम क्यों न होत अहीर ॥

३

ए हो मनाय लेत गोरी को सांवरो सन्मुख
अबीर उड़ावे ।
सङ्ग मेरे सोवत अङ्ग छिपावत अपनो भेद न बतावे ॥
अङ्गुरी में पिया मोहि जगावे लाख तरेसे रिझावे ।
ठौर ठौरको भ्रमर है रसिया चितवत मोहि लजावे ॥
लपट झपटके पकर लेत है अङ्ग सो अङ्ग लगावे ।
रसिक रङ्ग रस वश कर डारो पइयां पर जो मनावे
कर लिए पिचकारी केसर को भर भर रङ्ग चलावे ॥

४

सांवरो मोहि दे गयो गारी ।
भर पिचकारी मेरे मुखपर मारी भीज गई तनसारी
गारीको गारी टोनाको टोना चितवन में छवि न्यारी ॥

५

हो जानी रा तेरे वश में नहीं आई रे ।
आप तो बैठो मानमन्दिर में मेरे जियरा को लयो
है लोभाई रे ॥

६

आन पड़े वश मेरे लला कैसे जान पावोगे
जान न दूंगी ।
गारी मैं देऊं देलाऊं औरन सो फेंट पकर कर
फगुवा लूंगी ॥

७

ऐसो ढीठ बलबीर तेरो बीर री दैया ।
अंगिया फार मेरो भाजन तोरो या यमुनाके तीर
री दैया ॥

काफ़ी—सिन्धु

होरी खेलत भ्रमर सुजान अपने पियाके संग में ।
वाको खेल सब वोही जाने आपी मगन है अपने
रङ्गन में ॥
तननन तार तम्बूरा बजत है कहुं कामर कहुं
नीके वरन में ।
साज समाज ध्वनि सुन सारो व्रजके खेलैया लुकाने
घरन में
अपने कन्हैया ले यौवन धन्न देखावत हरिके चरण में ॥

२

यह दोउ खेलत हो हो होरी ।
नन्दनन्दन व्रजराज सांवरो श्रीवृषभानु किशोरी
परमानन्द रूप रसभीने अबीर लोए भरझोरी
चला तब खेलन होरी ॥
भुज भर अङ्क सकुच गुरुजनकी मिल फिर जात
छुटो री ।
छूटी लट कुण्डल सो उरझो वेसर पीत पिछोरी
चलो सुरझावन को री ॥
कर कङ्कण कञ्चन पिचकारी ले केसर रङ्ग बोरो
छिरकत रङ्ग हुलस हिय हर्षत निरखत हरि
मुख मोरी करे चितवन चित चोरी ।
धन्य वृन्दावन धन्य वंशीवट जहां यह रास रचो री
श्रीरसरङ्ग रीझ व्रज ऊपर वारो वैकुण्ठ करो री ॥

३

ए री मोहे श्यामसुन्दर रङ्ग डारो केशर रङ्ग
पिचकारिन मारी ।
बरजोरी कर पिया मुख मीडत है देखत है
सखी सारी ॥
विनती करत हूं मानत नाहीं ऐसो अनोखो
खेलारी ।
गरवा लगावत नाहीं डरत है गावत मीठी गारी ॥
या व्रज में भयो अनोखो कन्हैया न जानी कहा
गति करी है हमारी ।
रसिकरङ्ग प्रभु धूम मचाई तक तक के मारत
पिचकारी ॥

४

देखो री बरजोरी मो से खेलत है हो हो हो होरी ।
अबीर लगाकर सारी भिजोई अंगिया फारी
तनिया टटोरी ॥
कञ्चनकी पिचकारी चलावत नाजुक बहियां
अचानक मरोरी ।
रसिकरङ्ग व्रज धूम मचाई हो हो हो हो
धूम मचो री ॥

५

आज डफ बाजन लागी री श्यामरो मेरो सगुन
मनावे री ।
घरी घरी पल छण कल न परत है उन बिन कछु न
सुहावे री ॥

६

समुझ दे हो कान्ह लाजको गारी ।
गारी देत है तारी देत है सुन ले सीख हमारी ॥
तुम तो भए हो व्रजके ठाकुर सास सुनेगी हमारी ।
कृष्णानन्द कहत मनमोहन देखहु हृदय विचारी ॥

७

देखो चलो जात है बनवारी मेरो आंखन चोवा
रङ्ग भर डारी ।
कौन जात तेरो मथुरा नगरिया बीच मिले मोहे
ठगवारी ॥
चितवतके मन लियो है मोहन गावत है नाचत
दे तारी ।
रसिक रङ्गरस वश कर डारो व्रजमें धूम मचो है
भारी ॥

८

नाहक हम सो रार मचावे बरजोरी हम सो
सेन चलावे ।
नित्य ही वसंत रहत वृन्दावन बंशीके बीच बीच
तान सुनावे ॥
हा हा करूं मैं पईयां पड़ूं मैं धर मद को सब
रङ्ग रङ्गावे ।
पूर्णानन्द आया व्रजचन्द्रकी फगुवा मांगूं यही
मन भावे ॥

९

रसिया ना माने मोरी अंखियन भरत गुलाल ।
अछन अछन पाछे अलबेलो निरख नवेलो बाल ॥
रङ्ग भरी गोरी गई बोरो करत अटपटे ख्याल ।
दया सखी घनश्याम लाडले भुज भर करत निहाल ॥

१०

तैं मेरी सारी भिजोई सारी रे ।
रसिया मूर्ख अनारो रे ॥
घेर लियो आ सब सखियन में पिचकारी मो पै
मारी रे ।
बार दियो मोहे आपन रङ्ग मा विनती करके
हारी रे ॥
बहियां पकर मोहे गरवा लगायो सास सुने देगी
गारी रे ।
कहा करूं कछु बन नहीं आवत नेह लगायो
कारी रे ॥

११

होरी में ना खेलों मेरी अंखियन डारो गुलाल ।
सारी भिजोय रसिया गारी गावत है मुंह आपन तू
संभाल ॥

१२

री मन समझत नाहीं कैसेके मन समझाऊं ।
फाल्गुनके दिन रस रहे हैं जिय चाहे पिया को
ले आऊं ॥
कहा करौं गुइयां कौन यत्न सो रसिया के मन भाऊं ।
कृष्णानन्द अब निशि वासर मैं श्याम सुरति
चित्त लाऊं ॥

१३

सांवरे को मे रङ्ग में रङ्गूगी ।
यह फाल्गुन ऋतु आई सखी री चित्त में उमङ्ग
भरूंगी ॥
ले नन्दनन्दन कुञ्ज कुञ्ज व्रज होरीकी रैन जगूंगी ।
काहूसे मैं नाहीं डरूंगी ॥
फगुवा लेहों मनाय मोहन को मनमाने हाल
करूंगी ।
वृन्दावन वीथिनके माहीं केलि अनेक करूंगी
नेहरस माहिं परूंगी ॥
अबीर गुलाल मलूंगी कपोलन मिल पिया ना
हट लूंगी ।
रीझ रिझाय करूं वश अपने मन ही मोह हरूंगी
चिते चित्त माहिं ठगूंगी ॥

१४

होरी की व्रज धूम मचाई ।
नन्दनन्दन वृषभानुनन्दिनी सो भांवरमान जाई
रङ्ग रहे रङ्ग वसन केशरके अबीर गुलाल उड़ाई
कुञ्जन बिच छवि रही छाई ॥
नाचत गावत ग्वाल ग्वालनी मिल स्वरराग सुहाई
कोई लिए ताल तम्बूरे सारङ्गी कोई डफ मृदङ्ग
बजाई सरस बाजत सहनाई ।
कोई फगुवा मांगत हरि जी सों दोजी कुंवर कन्हाई
नित्य प्रति ख्याल खुयाल देखावे मदनमोहन यदुराई
चिते चित्त लियउ चोराई ॥

१५

होरी खेलन आए हमारे ।
केशर रङ्ग भरे पिचकारी उमंग उमंग उमंगा रे ॥
फेंटन भरे गुलाल कुंवर नन्द लागत अधिक पियारे ।
छैल व्रजराज दुलारे ॥
ग्वाल बाल सङ्ग शोभित शोभा उर बिच उमंग अपारे ।

बरजोरी रङ्गत मुही मेरो सारो मुखमें अबीर लगा रे
टरत कहीं नाहिं न टारे ॥
डर लावत न डरत हो रसिया यौवन उमंग अपारे।
ख्याल खुश्याल करत ब्रजमोहन महिमा अगम
अपारे परे गुण जान तिहारे ॥

१६

होरी खेले कुंवर ब्रज गोरी।
अबीर गुलाल उड़ावत गावत ललित केशर रङ्ग बोरी
चोवा चन्दन लिपटावत अङ्ग अङ्ग लेत चिते
चित्त चोरी रूपकी डाल ठगोरी ॥

१७

मचो कैलासमें होरी।
इत गौरी उत शङ्कर शम्भु भारी रङ्ग रचो री ॥
सुर नर मुनि सब देखत ठाढ़े बोलत हो हो होरी।
बजत डमरू घनघोरी ॥
नन्दी भृङ्गी कार्तिक स्वामी सङ्ग लम्बोदर हु बहोरी।
उड़त गुलाल लाल भए अम्बर बाजित्र
बहुत बजोरी
बोले सब हो हो होरी ॥
ब्रह्मा सनक सनन्दन शौनक सनातन प्रेम रहो बोरी।
सारद गुणी गन्धर्व हाहा हूहू नाना यन्त्र सजोरी
नारद सङ्ग वीणा नचोरी ॥
शिवके दास तहां निरखत हर्षत आनन्द उरमें
बढ़ोरी।
वृषभ वाहन जटा गङ्गा है जाके शेष गरे लिपटो री
बोले हर हर हो होरी ॥

१८

ललना नागोहो आवे या गोहन सोहन।
हौं तरुणी और नहीं ब्रज में है कोई तू
समझावे या मोहन ॥

१९

होरी बाजना बाजम।
निशिदिन मुझको ध्यान है उसका गोयद मजा
जान हैं राजम ॥
मुद्रा पहरों भस्म चढ़ाऊं खुदरा चूं वैराग साजम।
दिल खुश होके फाग मचाऊं दस्त बगर दम यो
अन्दाजम ॥
जो गोरीं सब उसके देखं बर खुशरो फिरहाद
विनाजम।
आशक् हो के होरी खेले गर बीनद जानाए जाजम ॥
मदके माते रैन न सोए खूनी नयन मस्त चि
साजम।
मुश् औघड़ बल बल जावे गर आयद यां बन्दे
नेवाजम ॥

खमाच—चर्चरी

या मोहनसे कोऊ पूछो तो भला मेरी नाहक
बहियां मरोर डारी।
मैं ने कहा कियो याको नाम लियो मुंहसे बात
कही कोई गारी ॥
दही कछु डारो बिगारो देखो नयन मिलाय कुई
करते पिछोरी।
या तो भई सो भई हौं कोन्हीं गई ताहू पर देखो
लङ्गरको निठुराई चूमो मुख उर लाई अंगिया
दरकाई खोल घूंघट ले अबीर गुलाल दियो
आंखन डारो री
और सिगरो अङ्ग चारो रङ्गसे रङ्ग सखो कहां
लोक हूं वाको मौजमें आयो सो कियो मो सङ्ग
होरी होरीके मिश करके बरजोरी ॥

२

मैं तो आई छैल तेरे द्वारे किये प्रेम अति मनमें
आश होरी खेलनको मेरे प्यारे।
एक चण में मेरे पाप कटे मेरो चूनर पर पिया
अपना रङ्ग जो तू डारे ॥
हौं निर्गुण गुण एक न मोमें तुम्हरे चरण निहारे।
बहियां गहो मेरी अपनी मौजसे नन्दनन्दन
ब्रजराज दुलारे ॥

३

हो रही रङ्ग हो हो हो होरी।

डगर डगर बगर बगर धूम मची सगरे नगर
आे मद भरे निरखत नर नारी चहुं ओरो ॥
रङ्ग सो भरत काहूं सो न डरत निशदिन माहि
चितवो करत नटवर वपु भेष धरे छैल नन्दको री।
गहत हार करे विवाद कुच भुज सो करत रार
ऐसे धरो मोहिं आय लाज गई मोरी ॥
बाजत मृदङ्ग ताल वोणा खञ्जरी रसाल
झनक झनक घनन घनन आनन्द घनघोरी।
नन्दनन्दन आनन्दकन्द सब जग उजियारो चन्द्र
वर्षत रसरङ्ग आज नन्द जू की पोरी ॥

४

कान्हा सुन ए री सखी मो से होरी मचाई।
लपट झपट बहियां झकझोरी अबीर गुलाल लगाई॥

५

ए सुन मन मेरे यार।
अपने बिसात को सोच तनक चल रीतिको चाल
कुचाल को तज रङ्ग कुरङ्ग समय को देख या
जग को जब जाने गो तू चौसर खेलनको सार॥
घटके घरसे दगावाज़ी को नरदको बाहर वेग निकास
धर्म सत्य को बांधके युग रख पांच तत्त्वके पंजे में
गर्वके छक्के रोक ले पहले कपटको पौ पै न पौ
पानी अपमानको अपने पासे फेंक डार।
कचो पको सोख ले न काहूको घटी बढ़ी को समझ
जिया में कोज लपेटे तोड़े फूल संघाके चार खूंटके
वान गमेके वाके न दावमें आ वरसे जसर मेहके गुण
कहीं खेत को होवत है रख अपने हो दमको
गोटों पै शुमार॥
वचन और मेरे तीन कोनी सुन एक तो बद
विचारका नियम मत कर दूजेका भाग काहू पे
न कर सुझे पांच दो छे दो आठ नव दश ग्यारे दो
कोई सी जिनस होवे किन दिए साहबके पूरो नहीं
परत है काहू को मांग बाहो पै जो पालत है
सब संसार।
तीजे और सन सोख न कचे बारे गुण चौदह विद्या
मेरो पन्द्रह याद सोले तो से कहत हों जामें तेरो
सत्य रहे पूरे अठारे बोसे फिर तो सब खेलारो
तेरे आगे है अनारो
कर मौज मेरे मित्र तेरे हाथ रहो जीत नहीं
आवेगी कबहूं ढिग तेरे हार॥

काफ़ी—देश

आज होरी खेल को ए होरो कहो री चलो होरो
होरा होरो कान्ह सों कहीं क्यों न होरो।
गुलाल झोरिन धर होरो रङ्ग पिचकारी भर हारो
कर कर के हो हो री
अपनी मौजसे फगुवा लेन कारण फेंट गहो री॥

२

मैं भिजाऊंगो पाग मेरो चूनर भोजी फेंट पकर
मोसे फगुवा मागे अपनो वेर जावे भाग।
कहा करूं कछु बन नहीं आवे पिचकारन लिए
हाथ आज आदिल पिया मैं विनती करत हूं रङ्ग
डारोंगो आज॥

३

फाल्गुन काम हते तरकारो मेवा भरके लाया है।
सो लोन्हों है वनवारीने यह बात मदनको व्रज घर
घर सुन हर एक एक अपनो धाम छोड़ बाहर
यहो कहता धाया है॥
बन बनके सगरी व्रजसुन्दरो चलो अपने अपने
मन्दिरसे घर मोहनके यहो कहते हुई हो हो के
मगन अन्दरसे ए वीर वर्ष दिनके पाछे हम
व्रजवधुअनके भाग्यन ने फिरके यह बोल सुनाया है।
जो जो गई ताहे ठठोलो से कान्हर कहो आगी
आ री आ री आ देखोरा तेरो मैन बहमका कड़ो
लीज मो कहे रतालूको निर्मूलो भूल गई तू तो
आप जो शृङ्गार आई अब कहीं तूने यह सुन
पाया है॥
तुझ कारण क्या क्या स्वांग करे रूप रनकदू देख ले

तू वख मन में फट रह्यो फटकी थी मोसे जो लागा
जरने तोसे मैं पूछुं सांच बता कित गई सुकचरो
वो तारो किन सेंध लगा यह बताया है।
गुंइया गई और देखावन को अपने यौवन डेरे
वाके रङ्ग राता लुगरा पहर छारक पग सुकच नाल
धरतो भुई पर गुजरी दहने जाटिन डेरे और बीच
अहीर सब ने मिल यह गीत बनाया है॥
जो ना रस बेगुण पूरो थी वा पै ठाकुरको भयो
कर्म गो भोर में थो सो आए आप गए ले पलकमें
रस पागने वाके मोठे बैनन आगे शकरकन्द दोऊ
भए फीके फिर यह कह गरे ले लगाया है।
तब वो नेह चोलाई घट में कह्यो भई कुशल गम
दूर हुवा मनसे गइयां दुःखकी बतियां चित्त चुका
अब सांवत हुवा कुवखो धरको आमधोयाले सुईका
अघरा करमें वाके यह कह मुसक्याया है॥

४

एक छेर छार गोपिनयको प्यारे यह सोच भयो
प्यारो जो रूसो है तिन्हें अब मनाइये।
करके मन में विचार एक नार समझदार पठवाई
उनके द्वार कह्यो बुला लाइये॥
सुन कं यों उठ बोली मोहे न समझाइये।
कहोंगो करोर वा पर हों नहीं जाऊंगो कहे दोन्हीं
तुमसे एक बार आप जाइये॥

जङ्गला—तिताला

सुन सुनके सुघर चतुर सजनी ले ले कुछ कुछ बनके
नाम समझाने लगी उस नारी जग उजियारोको।
सरस संवारी सब गुण भारी पीतम प्यारी भानु
दुलारी को॥

१

किस मिस तोहे समझाऊं प्यारो मोर कहूं तो है
कैसे अनार।
जगत् को सब ग्रान जी रहों तेरे तो सो अष्ट याम
फल पावे मरनार॥
दाना होय क्यों बनत वे दाना सहे तू तो प्यारे
को वचन न टार।
काहू को सिखाए मोको आलोवालो मूह दे अङ्गूलो
पकर चलवार॥
तो पै तो है आ सेवत मोगो बेर बेर जो करत है रार।
याते में क्यों चिरञ्जीव अपने परखो प्रात हो बोल
तिहारे हटको खोवानो समझ जा मनमें कम रख
जिन अदरख पो सो प्यार॥
को ए भी नासपाती है कहा तू और जीव पिस्ता है
हर बार बार।
अब हो आम होंगो बात गाव में फलसे पै लोग
करेंगे विचार॥
हरवा खरबूज़ा पगी फैल यह भी तरबूज़ के मनमें
निहार।
सङ्ग तेरे को लेके लगेइ रहत है आय अकेले
दुष्ट हज़ार॥
वे खांगी कर बाना रङ्गी फाल्गुन में चरचेंगे पुकार।
मान वचन वाहे दबा दाम में अलख अपने नो
उधार॥
छेर छुवार नो कर ते कर देख दाख वा को व्यवहार।
उन तो अब लों तेरो है राखो न नोको भांति सों
बात सुधार॥
सुंघबनो बूतनको बनेके निरख परख रोट को
दे बिसार।
भलो हो तू इत में अनन्या सोखो तेरो वसफ़ तालु
रसना वे है न्यार॥
कंथ ज्यो होवे मो ठाकुर है वांको नाम नखटा
कर डार।
जैसे सोरी सीताफल पायो रामचन्द्रकी दयासे अपार
अपनो मौजसे सदा फल देगो राधा तोहे कृष्ण मुरार॥

२

अब इतनी इतनी समझायो वाको उस सखी
सयानी ने।

तब बारो आभरण सोले शृङ्गार किए ले दर्पण
महरानीने
हंस हंस के यही अपनी मौजसे कहतो चलो वा
सजनी से क्या सुनके जिय हुलसाया है
फाल्गुनका महतानीने ॥

४

चञ्चल चवैया री आलो यशोदाको लाल देखो
हां मोरे ललना हों दधि बेचन जात रहो ब्रज
नाहक् रार मचाई ।
तेरो चेरो तेरे चेरे को चेरो ऐसे नाच नचाई ॥
हा मोरे ललना हमरे सङ्गको दूर निकस गई
मोहन बहियां मरोरो ।
सास ननदिया रिसावे मो सों सुख मल दई रोरी ॥
मैं तो बरसानेको ग्वारनी रे तुम हलधर जोके वीर ।
मीराके प्रभु फगुवा लीन्हों मोहन श्याम शरीर ॥

५

आज हरि ब्रज गोपिन पकरे ।
मोर मुकट मुरली पीताम्बर सब ले छोर धरे ॥
पहेराई चूरी चुनरिया बेंदी अति कजरे ।
चरण गूजरी कर कङ्कण बाजूबन्दन बांह वरे ॥
सीसफुल और नासर वेसर को मोती मांग भरे ।
केश पकर के कंस पछाड़ो ताइ मो नाह डरे ॥
उस मोहन को वश ज्यो कियो नारी न छूटो
पांव परे ।
फगुवा देत लेत नहीं सुन्दर अब धौ कहा करे ॥
नारी शृङ्गार सबे पहराए नाच नचाए लगाय गरे ।
सूर श्याम वैकुण्ठ निवासी हा हा करत खरे
मन भाया सखी फगुवा लीन्हों प्रेम मगन में
आन ढरे ॥

६

सखी हों तो रङ्गीली अपने रङ्गमें कोउ जिन
मारो पिचकार ।
हों बौरी छोरी खेल न जानों सब जग चतुर खेलार ॥
ना मुख मलों अबीर अरगजा ना तन सजों शृङ्गार ।
जब से भई हूं मगन वैरागन बाढो रूप अपार ॥

७

अनोखे कान्ह मेरी चूनर रङ्ग भर डारी ।
बाट चलत मेरो मुख मसकत हो और देत हो गारी ॥
कहा करूं कछु कहन सकत हूं लागी लाज तिहारी ।
मगन कहत निपट जिन बिगरो मानो बात हमारी ॥

८

सुन ए री सखी आज ए री ए री सखी आज
विलम्ब रहे कहूं काना ।
हम को कहत तुम पलङ्ग बिछावो उनको बात
हम माना ॥
आवन दे पिया अपनी बार काहूं नित्य उठ ठग
ठग जाना ।
सोले शृङ्गार बतीसों आभरण अङ्ग सजे मन माना ॥
डोलत फिरत और तियनमें मोसे हंस हंस जाना ।
खेलत होइ है ब्रजकी सखिन में भई है तो
करि है बहाना ॥
गोकुल ढूंढ़ो वृन्दावन ढूंढ़ो उनका कौन ठिकाना ।
सुन्दर श्याम कमलदल लोचन नन्दमहर जूके छाना ॥
मोर मुकट पीताम्बर सोहत कुण्डल झलकत काना ।
सांवरे मुखपर तिलक विराजे जा सों लग्यो
मेरो ध्याना ॥
बंशी बजावत गावत नीके मोह लिया मेरा प्राना ।
सूरदास स्वामी तेरे दर्श को हरि चरण कमल
लगो ध्याना ॥

९

सांवरे मो पे डार दियो मेरे आंखन बीच अबीर ।
यमुनाके तीर मुरली बजावे आलूर जात अहीर ॥

१०

ए री अबीर गुलाल मो पे डार दियो
अचानक आन परो री ।
डफ बजावत गारी गावत नाहक उलझ परो री ॥

११

सारी मेरी सारी भिजोई केशर भर मारी पिचकारी।
अंगिया रंगिया रङ्ग में रङ्गी है ऐसे चतुर खेलारी
सङ्गकी सखा सब दूर निकस गई बहियां मरोर
दई गारी ॥

१२

श्याम मोहि चोरी लगाई ऐसी होरी मचाई।
खेलत गेंद गिरो यमुना में तै मोरी गेंद चुराई ॥
हाथ डाल अङ्गिया बीच देखौं एक गई दोय पाई।
दोऊ भुज पकर लपट अङ्गन मेरो मुख चुम्बत
मुसकाई ॥
नेक न लाज करत काह्नको ऐसो लगर कन्हाई।
कृष्णानन्द श्याम चोरी मिस लियो मोहि अपनाई ॥

१३

मेरे आंगन खेले फाग री माई सांवलिया।
हमरी चुनरिया रङ्ग से भिजोई अपनो बचाई
पाग री माई सांवलिया
कृष्णानन्द बलिहारी गई मैं धन्य धन्य मेरो
भाग री माई सांवलिया ॥

सोरठ—तिताला

अब मेरो दुनरो में दाग़ परो अनारी से काम परो।
यह मतवरवा मानत नाहीं जियरं के वैर परो
कृष्णानन्द न मानत ग्वालिन दोऊ भुज गहि पकरो॥

२

गोरी ए री सांवलिया तै रङ्ग बोरी भीज गई
रङ्गरस में।
श्याम रङ्ग निशदिन सुख बरसत बलिहारी तेरे वश में
कृष्णानन्द अथाह प्रेम में गावत तेरो यश में ॥

काफ़ी—तिताला

अपनो लाल मोहि मांगि दे री फाल्गुनके दिन
चार सखी री।
गजमोतियन सों थार भरौंगी करि के सोरहो
शृङ्गार सखी री
कृष्णानन्द आश मेरो पुजवहु पइयां परों बार
हज़ार सखी री ॥

सोरठ—तिताला

सइयां विदेश मोरे आयो फाग री।
जिनके पिया परदेश गए हैं उनके भाग्य भयो
विरह दाग़ री
कृष्णानन्द मनावत ठाढ़ी आव पिया हंस गरे
लाग री ॥

२

आज कान्ह सङ्ग खेलौं मैं होरी सुन्दर वार
सुगन्ध लगाए।
अधर विद्रुम मुख पानको लाली दर्शन चमक
चपला चमकाए
दृगन देख मृग हू ललचाने चन्द्रवदन मानो
चन्द्र लजाए ॥

धानी—काफ़ी

नन्दके छोहरा मेरो मन लियो मुरली बजाय।
इत मथुरा उत गोकुल नगरी बीच में ठाढ़ो लजाय ॥

परज—काफ़ी

आज अनोखी नारी श्याम सङ्ग खेलत होरी।
सब सखियां मिल बन बन आई अबीर गुलाल
लिए भर झोरो
कृष्णानन्द प्रेमरस माती चित्त राती सब
ब्रजकी गोरी ॥

काफ़ी—चलैया

आज होरी खेलत देखो छवि जो मोहनकी लागी
सुन्दर मेरे मनमें निपट।
उर वनमाला मकराकृत कुण्डल कटि पीताम्बर
शीर्ष मुकट ॥
उत ठाढ़ी ब्रजवनिता सकल इत ब्रजराज
कुमार किये इट।
वे मारत पिचकारिन तक तक ये फेंकत अबीर
गुलाल झपट ॥

ये उघटत वे नृत्यत हंस हंस त त त ता थेई थेई
उलट पलट ।
मौज निरख प्रभु को ए शोभा को सारद को गई
बुद्धि उचट ॥

काफ़ी—सिन्धु

ए री तू तो कहत हो जात है लेन यमुनातट
चिरपरको बूटो ।
उत जाय अकेलो नन्दलाल सो होरी खेलन पे छूटो ॥
भीजे वसन गुलाल मुख लागी अंगिया दरको
माला टूटो ।
तेरो सांच तो प्रगट है मौज भी कैसे कहै हम झूटो ॥

काफ़ी—टोड़ी

जैसो तू खेलत है गो होरी मोहन ऐसो तो काहू
नयन देखो न सुनो ।
तेरे चलन को निरख निरख कर कहत हैं सब
नरनारी पुराने गुनो ॥
चन्दन अबीर गुलाल केशर रङ्ग यह देखो नेक
वहां न दुनो ।
मेरे तो मनको मौज में यह आवत उर लाऊं
मुख चूमूं तेरे पगको झुनझुनो ॥

२

होरी खेलत लपट झपट मनमोहन मनमें कपट
नाहीं काहूको अट ।
झपट पट झटक डारो गुलाल अबीर भीज गई
सारो ह्वे गई गट
पट लट छुट हट अङ्ग अङ्ग में बिथरो मौज मेरी
रङ्गी चुनरी चटक ॥

३

मोरे सइयांके मनमें परी है गांठ ए री ए मैं कौन
यत्न सों खोलौं ।
सब सखियां मिल बन बन आई मैं बैठी विष घोलौं ॥
अबके फाग पिय भए हैं वैरागी नगर नगर मैं डोलौं ।
कृष्णानन्द बिसूरत निशदिन धीर धरौं मैं को लौं ॥

४

मन छल लीन्हों छैल छलैया छलक ।
नेक देखाय यौवनको झलक ॥
मनमोहनको मोहिनी मूर्ति छूट रही मुखड़े पे
अलक ढलक ।
जब ते चितवन देखी तबते नाहीं लागत है पलक ॥
अब कहा करि हो उपाय सखी री चित्त चाहत
पिया मिलन कुलक ।
ख्याल खुशाल करूंगी कुञ्जन में जोलौं चाहै
जिय तौलौं तलक ॥

५

बारी वयस या रस में भरे तेरे नयन मैन है
कन्हैया रे ।
निरखत करत प्राण वश वेग हो चञ्चल चपल
छलैया रे ॥
उरझ रहे पर सुरझत नाहीं ऋतु रस सुख
विलसैया रे ।
यौवन उमङ्ग भरे चित्त चोरत नेहके रङ्ग रङ्गैया रे
ता पर ब्रजमें विहार करत है ख्याल खुशाल
करैया रे ॥

६

तनक सुनी मुरलीकी भनक मेरो मन गयो
हाथ सों देया ।
वंशी सुनो बहुतेरी बाजत बहुत देखे हम
वीणा बजैया ॥
रूप स्वरूप लखे हम लाखन नैन मिले चितवनके
हरैया ।
काहू सो अटको न मन अबतक चैन गई जबसे
दिन रजनी या दुःखको है कौन हरैया ॥
विरह व्यथाकी मारी मरत हूं औषधको है कौन
देवैया ।
जासों मिटत मोरे जियको कसक काहू ब्रजवासी
गरे डारी फांसी कित गयो ज़ालम फांसी देवैया ॥

चित्त वश गयो अब फन्द परो है फांसी डार गयो
घोर कन्हैया।
ऐसो फंसो मैं ता तपक तपक मो पै जादू चलाई रे
मोहन लूट गई अब नाहीं पुछैया॥
मोहनके छल सोई है काज़म बांच रहे बलराम
दुहैया।
याही सुरत में परो अबतक राम हो सो अब
काम परैया॥

काफी—सिन्धु

पायो री धर कुंवर कन्हैया।
गृह गृहतें निकसी व्रजवनिता आपु अकेले न
सङ्ग सहैया॥
काहू छीन लई कर मुरली काहू मुकुट काहू
पीत पिछैया।
पहरायो घांघरो चीर अनवट बेसर और हंसैया॥
कर चूरी कङ्कण जरावके तरवन कनक कनी
चमकैया।
मोतिन मांग भरी मोहनको अञ्जन दृगन दिए
वरऐया॥
हरि हि नचावत ता ता थैया अद्भुत खेल खेलावै
लुगैया।
अर्जुन छाड़ दयो अपने के पग पग देत है राज दुहैया
सूर श्याम सों फगुवा लीन्हों रसवश कर लीन्हें
बल भैया॥

२

प्यारो तेरे नयनन में कछु टोना।
मोह लियो रस फाग लाग में सुन्दर श्याम सलोना॥
खेल छांड़ तक लाग रह्यो मैं प्यारो नन्द ढिटोना।
व्रजनिधिकी मूठ उड़त है जीव करत है ज्यों
मृग छौना॥

३

मैं तो सांवरे सङ्ग खेलन जइहूं घर बैठे कहां लौ
जीव तरसैं हूं।
मत कोई मुझे हटको री सखी आज बशाको सों
मैं विष खै हूं॥
और रङ्ग सब फीके लागे पियरे पट सों हियरा
हुलसै हूं।
प्यारे गोपाल सोहात यही मनमोहन मित्र हिए
लपटै हूं॥

४

झटको मेरो चीर मुरारी।
रङ्ग गागर शीश से झटको बेसर मुकर गई सारी॥
रेशम बन्ध कुचन के तोड़े ऐसे अनोखे खेलारी।
पार परोसन सखी सहेली हा हा हा कर हारी॥
ऐसो गिन्हा दई काहू तिय ने मानत ना वनवारी।
यमुना तट चीर जो फारी॥

५

आज खेलूंगी फाग बनाय लाल मेरे हारे ही आए।
हमरी चुनरिया रङ्ग सो भिजाई अपनो पाग बचाए॥

६

तुम छीन लो छिना लो करसे पिचकार।
अबीर गुलालके बादर छाए केशर रङ्गकी
परत फुहार॥

७

श्यामा श्याम सों आज खेलत फाग नई।
नन्दनन्दनको राधा कीन्हीं माधव आप भई॥
यमुना तट विहरत प्रमोद में नव छवि रङ्ग रई।
बाजत ताल मृदङ्ग झांझ डफ अबीर आकाश छई॥
सखा सखी हो सखी सखा हो यशोमती भवन गई।
उलट्यो रूप देखि श्रीपति को मति गति पलट गई॥
फगुवा दियो मंगाय सांवरे कञ्चन रतन मई।
सूरश्याम को वदन विलोकत उघर गई कुलई॥

८

गोकुल में खेलत होरी।
नन्दनन्दन वृषभानुसुता मिल अरस परस झकझोरी
राधा भिजोई पाग पिछोरी उन चूनर रङ्ग में बोरी
निरखि छवि काम लजो री॥

अबीर गुलाल कुङ्कुमा चन्दन वन्दन ले छिरको री
भर पिचकारी श्याम जू मारो भानुसुता रङ्ग बोरी
कहे हरि होरी है होरी।
सखा सखी मिल देखत ठाढ़े भारी खेल रच्यो री
उन तोरी वाकी मोहनमाला उन लई है पीतपिछौरी
कहां जावो माखन चोरो॥
उत तें सखी सब दौरके आई श्याम को पकर लयो री
नारि शृङ्गार बनायके सुन्दर भूषण सब हि सजो री
नचाए है नन्दको पोरी।
फगुवा दे हो तब जाने पै हो मोल देहु बलकारी
वा दिनकी सुध भूल गए हो ता दिन चीर हरो री
करो अब काहे न ठगोरी॥
अब कैसे जावोगी नन्दलला जू आन पड़े बश मोरी
मुरली बजावो नाचो गावो रिझावो व्रजगोरी
ततार्थैया नाच नचो री।
सूरश्याम सो फगुवा लीन्हों मन इच्छा फल कोरी
नन्द यशोमती देखत ठाढ़े हर्षी सखी चहुं ओरी
आनन्द अति उर हि बढ़ो री॥

९

व्रज में हरि होरी मचाई।
इत सों निकसी कुंवरि राधिका उत सो कुंवर कन्हाई
खेलत फाग परस्पर हिलमिल सो सुख वरणि न जाई
सो घर घर बजत बधाई॥
बाजत ताल मृदङ्ग झांझ डफ मञ्जीरा सहनाई
वरसत अबीर कुङ्कुमा केशर रह्यो सकल व्रज छाई
मानो मेघवा झर लाई।
राधा सैन दई सखियन को झुंड झुंड उठ धाई
लपट झपट गई श्यामसुन्दरको वर वश पकर ले आई
लालको नाच नचाई॥
फगुवा दए विन जाने न पै हो करि हो कोटि उपाई
लेहों चुकाय सरस वा दिन को तुम मम चोर चवाई
बहुत दिन दधि मेरी खाई।
मुसकति हो मुख मोर मोर तुम कहां गई चतुराई
कहां गए वो पिता तुम्हारे कहां गई यशोमती माई
लालको लेत छुड़ाई॥
छीन लियो पीताम्बर मुरली शिर सो चुनरी ओढ़ाई
बेंदी भाल नयन बिच कज्जल नकबेसर पहराई
मनो नई नारी बनाई।
रहस विलास रच्यो वृन्दावन व्रजवनिता यदुराई
राधा श्याम युगल जोरी पर सूरदास बलि जाई
प्रीति उर रहत समाई॥

१०

राधामोहन खेलत फाग व्रज रङ्ग छाय रह्यो।
सखी सङ्ग ले भानुनन्दिनी सखा लिए व्रजराज
मुरली बजाय रह्यो॥
अबीर गुलाल लाल पै डारत मारत केशर पिचकार
लाली समाय रह्यो।
बाजत वीणा मृदङ्ग चङ्ग डफ झांझ ताल करताल
साज सब माहब बजाय रह्यो॥
सखा सखिन को सखी सखनको झकझोरत
रङ्ग छाय रह्यो।
व्रजमण्डल बीच धमार गोपी सब खेल रह्यो घन
ज्यों घुमड़ाय रह्यो
सूर श्याम श्यामा मिलि विहरत व्रजकुञ्जन
उमड़ाय रह्यो॥

११

आयो है फाल्गुन मास कहै सब होरी होरा।
एक ओर वृषभानुनन्दिनी एक ओर हरि
हलधर का जोरा॥
व्रजनारी गारी देवै कोऊ भजि भजि आवत
तजि तजि खोरा।
जान न पावे गहो री श्यामको सबै धरे
यौवनको तोरा॥
रहि न सकी कोऊ अपने घर मनो कामको
फिरो है ढिंढोरा।

कृष्ण जीवन लछीरामके प्रभु सों होत है झकझोरी
झकझोरा ॥

१२

तुम चलहु सबै मिलि जाहिं खेलन होरियां।
अपनी अपनी सुरङ्ग चूनरी मोतिन मांग भरी
रोरियां ॥
थरहरात अधरन पर मोरी अंगिया केशर बोरियां।
चोवा चन्दन अगर कुङ्कुमा भरि भरि लई
कमोरियां ॥
अङ्ग सुअङ्ग गोपाल विराजत भली बनी यह जोरियां।
केहरि लङ्क नितम्ब विराजत गजगति चाल
चलोरियां ॥
पिचकारी मोहन पर डारत विहंसी घूंघट मोरियां।
बाजत ताल मृदङ्ग और डफ पढ़ पढ़ बोलत बोलियां॥
नयन आंज मुख मांड़ श्यामकी सब मिल करत
कलोलियां।
सूरदास प्रभु सब सुख क्रीड़त विहसत व्रजकी
खोरियां ॥

सिन्धु—भैरवी

आज सांवरे को मैं रङ्ग सो भरोंगी अबीर गुलाल
लिए मुख मोड़ोंगी।
जो सांवरो मोसे एक कहैंगे एकको लाख करोर
कहोंगी ॥

२

जावो रे सइयां को ले आवो रे सइयां नहीं आयो रे
मेरे धन्य धन्य बढ़ो है सुहाग।
मैं सोती थी चढ़ मन्दिर में सुख नींदड़ी मैं तो
पड़ी हूं अचानक जाग ॥

३

अंगिया बैंजनी चटकीली है सुन्दर बाल।
लाल पलङ्ग पर ज़रद किनारी ता पर उड़त गुलाल॥

४

अब लालनको खबर पाई ऐसी होरी मैं खेलूंगी
माई।
तेल फुलेल सखी हम देवे अबीर गुलाल उड़ाई
यौवन हार शृङ्गार सब भूषण अङ्ग अङ्ग रहे
छवि छाई ॥

५

सांवरेके चरित्र सुनो री।
एक समय व्रजकी बनिता सब हर्षि चलीं
जल भोरी ॥
मज्जन हेत धसी यमुना में कोई सांवरी कोई गोरी।
करे जल सों झकझोरी ॥
वाही समय व्रजराज सांवरो अम्बरतट पहुंचो री।
लेके चीर कदमके ऊपर चढ़ गयो नन्दकिशोरी
मुदित मन आनन्द थोरी ॥
ताही समय सब ढूंढ़न निकसी काहु न दृष्ट परो री।
ता में प्रवीण सखी एक बोली देखो कदम पर को री
चीर सब के ले धरो री ॥
जामें एक सुघर व्रजवनिता प्रेम अधिक रसबोरी।
शीर्ष निवाय कहत पट दीजे हा हा करत बहोरी
श्याम सों दोउ कर जोरी ॥
बोले श्याम मधुर रस बतियां तुम सब लाज तजो री।
लाज छोड़ जब सन्मुख ऐहो तौ पट देहौं गोरी
टेक यह जानो मोरी ॥
तब सब मिल मन यही विचारी कृष्ण टेक
नहीं छोरी।
लाज छोड़ जब सन्मुख भई वनिता प्रेम प्रीति उरझो री
वसन सब ही के दियो री ॥
मोर-मुकुट-मुरलीवालेको यह छोरो रङ्गबोरी।
पलमें पार कियो भवसागर ता सो मन अटको री
सूर सुरझावत गोरी ॥

६

व्रज में चलो खेलिये होरी।
कञ्चन थार बनावो सखी री तामें अबीर भरो री ॥
भर भर लो रङ्गकी पिचकारी सब मिल खेलें चलो री।
ऐसो गति उनकी करो री ॥

अबीर गुलाल कुङ्कुमा केशर मोहन मुख हो
मलो री।
नारो भेष बनाय श्यामको पीत पिछोरो छोरी
नचावो नन्दको पोरी ॥
सब सखियन मिल धरो है कृष्णको दोज कर
पकरो री।
आंख आंज लहंगा पहरायो चूनर रङ्गमें बोरो
कहे हरि हो हरि होरी ॥
पकर कान्ह यशोमती पै लाई मन भावतो करो री।
सूर श्यामसों फगुवा लीन्हों मन इच्छाफल को री
मोहनको रङ्गमें रङ्गो री ॥

७

मेरे सइयां के मन में परी है गांठ ए री ए मैं
कौन यतनसों खोलूं।
सब सखियां मिल बन बन आईं ऐ री ए मैं बैठी
विष घोलूं अबके फाग पिया भए वैरागी नगर नगरमें
ढढोलूं ॥

८

समुझ क्यों न दे रे ए रे कान्ह लाजकी गारी।
ससुर हमारे अस्सी वर्षके सास हमारी बारी॥
सइयां हमारे पलना झूलत हैं हूं मैं झुलावन हारी।
अगर सुने मेरी बगर सुने रे सास सुने दे गारी॥
भर पिचकारी मेरे मुखपर मारी भीज गई तनसारी।
मोहे भिगोवत मोहे विगोवत देत सबनमें तारी॥
कहा भए व्रजके ठाकुर तुम सास सुनेगी हमारी।
ऐसो ढीठ कह्यो नहिं मानत लोक लाज कुल डारी
कृष्णानन्द कहत हौं फिर फिर हौं तेरे बलिहारी॥

९

काहे हमसे रूसे विधाता गुण अवगुणके हो
तुम दाता।
तुम हो एक और नहीं स्वामी और झूठ जगत्
कर नाता॥
जनकी चूक सदा प्रतिपालक गुण अवगुण कर सब
जग जाता।
गावै गूदर जन शोक निवारण जस बालकके पिता
और माता॥

१०

गोकुल कैसे जाऊं री दैया बीच बसे बटपार कन्हैया।
ता मग नाच नचावत आवत मानत नाहिं न
नन्द दुहैया॥
एकसे एक सखी गुण आगर मधुवन देखो न
कोई जवैया।
गावै गूदर कोज कैसेके निबहै सब गलियन बिच
धूम मचैया॥

११

बीतें अवधि तेरो खेल न हुइ है यौवन अकार्थ
काम न अइ है।
जो कछु रूप संवारो नैहर अन्त समय कोई सङ्ग
न जइ है॥
मिलनको आई सखी सहेली ऐसो पिया को कौन
मनइ है।
गावै गूदर हम सासुर जावै नैहरमें को पार लगइ है॥

१२

होरीके दिननमें गुमान करदा मोहना आवदा री।
गावदा बजावदा मुरली सुनावदा सांवला मेरे मन
भावदा री॥

१३

होरी खेलै व्रजराज दुलारो।
ग्वालबाल बहु सङ्ग लिए गिरधर नव रसिया उमंग
अपारो॥
रङ्ग रङ्गे अङ्ग वसन आभूषण अबीर गुलाल कान्ति
छवि न्यारो।
करनि कनक पिचकारी राजत चितवन मन
चित्त उरझारो॥
वृन्दावनकी कुञ्ज कुञ्जमें रङ्ग रङ्गके फूल खिलारो।
रसिक कृपाल विलोकत शोभा नित्यप्रति राधावर
सुखकारो॥

१४

तै तो मुख हू न बोले री चुनरिया रङ्ग डारी हमारी।
भर पिचकारी मोरे बिरहिने मारी भीज गई तन सारी
कृष्णानन्द मैं दासी तिहारी सुनिये अरज बिहारी॥

१५

तेरे वशमें गोरी भीज गई रङ्ग रसमें चोलो नहीं
सांवलिया।
रैन कहीं जागे आये बालम झूठी-झूठी खात
कसम दैया॥

१६

जावो लला तुमसे को खेले होरी भर बहियां
झकझोरी मोरी।
यह मोहन तूने मोहिनी डारी भर मारी छतियां
पिचकारी मोसो करत बरजोरा जोरी॥

१७

मोरी होरी के खेलैया रङ्गभरी पिचकारी मारी रे।
चोवा रे चन्दन और अरगजा अबीर लिए भर
झोरी रे॥

१८

भीजत चुनरी प्रेमरस बूंदन।
आरती साजके चली है सुहागन अपने सइयांके ढूंढन॥
चढ़ी गगन खुल गई किवाड़ी गुरुके चरण लागे
झूलन।
सरस बन्द किनारी लागी प्रेमके लागे फूंदन
कहे कबीर गोरी यही विध भीजी मिट गए
दुःख दूंदन॥

१९

ए दोउ खेलत फूले फाग री।
आयो वसन्त फूले वन टेसू बोलत चातक मोर
जाग री॥
उमङ्ग आनन्द अवधि अधकाई भूपद्वार होरी होन
लाग री।
बाजत मृदङ्ग उपङ्ग चङ्ग ध्वनि मन्द स्वरन भए
मधुर राग री॥
सुनत श्रवण शिव विधि उठ धाए नहीं भावत जप
योग याग री।
इतते राम सखा जुर आए उत सीता लिए सखी
साज री॥
लीन समाज सिया ललित लाड़ली करत हंसी रस
रूप राज री।
अबीर गुलाल राम दिशि छूटत उत सीता लिए
अमृत गागरी॥
मचो कीच मग बीच अवधपुर मुनि मण्डित मानो
मकर प्रयाग री।
भीज जात तन चोर नादरे पट आभूषण उरमाला
घांघरी॥
महाराज महारागीको भयो है अरुण तन
नए बाग री।
वे सखी ओट अटा चढ़ देखत रति मलीन
अति प्रगट उजाग री॥
उझकि उझकि विधुवदन देखावत रस लसत डसत
मानो मन ही नाग री।
ललिता री सिय ललित लाडली चली राणी
कुलकान त्याग री॥
लपट झपट गई लिपट लालको पिय प्यारीके
परम भाग री।
फगुवा ले हौं तब जाने दे हौं झीने पट औ झपट
झाग री
तुलसीदास सकुल जानके लीन्हों वरसे मूल मांग री॥

२०

रघुवर से कहियो मोरी।
सुनो हनूमन्त अञ्जनी नन्दन कहियो सन्देशा
निहोरी
सीस निवाय चरण गहे लीजो कीजी विनती मोरी
रामजू सों दोउ कर जोरी॥
भृगुपति कीर्ति सुनी है जिनकी तिनकी धनुष
जिन तोरी।

ते भुजबल अब कितहि दुरावत रावण दुष्ट हनो री
कहत यह जनककिशोरी ॥
दिन नहीं चैन रैन नहीं निद्रा खान पान विसरो री।
वन उपवनमें जाय परो हूं तेरो ही ध्यान धरो री
राम राम मुखसे कहो री ॥
केतिक दूर लङ्कगढ़ तुमसे जिनसे सृष्टि रचा री।
हा रघुनाथ कौशिल्यानन्दन शीघ्र ही कष्ट हरो री
भक्तन प्रतिपाल करो री ॥
कहे हनूमान् धीर धरो माता लङ्का करूं जिमि होरी।
रावण कुम्भकरण सब मरि हैं मेघनाद हनो री
देऊं तेंतीस बन्द छोरी ॥
तुलसीदास प्रभु तुम्हरे मिलनको अवधि
आशा रही थोरी।
प्राणदान दीजे रघुनन्दन गावत कीर्ति तोरी
प्रीति अब करहु बहोरी ॥

२१

दशरथनन्दन जनककिशोरी अति सनेह अनुराग
लाग री।
अवध कुंवर प्रिय चतुर शिरोमणि जनक लाडली
परम नागरी ॥
सिया गात रङ्ग श्याम चुनरिया लालनके शिर पीत
पाग री।
जगमगात भूषण अङ्ग दम्पति रतन यतन मणि
जरी तागरी ॥
प्रिय गुलाल भरि फेंट कुङ्कुमा सीय सखी लीन्हें
रङ्ग गागरी।
मलत गुलाल सीय मुख लालन लालन मुख सिय
मलत आगरी ॥
गाय बजाय खेलते होरी अवध पुरीके भाग्य जाग री।
सखी जानकी प्रपन्न सीय सङ्ग नाचत होरी
गाय राग री ॥

दोहा

अवधराजके लाड़ले छवि सालनी प्रिय तोर।
सखी प्रपन्न जानकी मोह लखी मति मोर ॥
अवध शोर होरी परो चली सकल नरनारि।
सखी प्रपन्न जानकी सब विधि सुखी निहारि ॥

२२

बरजत री रङ्ग डार दियो अब डारोगी तो जानोगी।
अंगिया भीजी सुग रङ्ग सारी गारी देऊंगी तो
मानोगी ॥

२३

कौन तरह से फेंकत हो जू अबीर गुलाल
होरीके दिनन में देखो लला मेरी आंखन खटके।
काहू सो न डरों मैं तो तुम सों लरोंगी पाग
भिजोऊंगी अबकी फागमें जैसे श्याम मोरी चूनर
झटके ॥
रङ्ग भरे कुङ्कुमा जो प्यारे मेरे पिचकारिन छोड़
टटके।
जिन तियनमें मान करत हौं उनहू को सुख ले
भली उमङ्ग सो अपनी बार देखे कैसेके मटके ॥

२४

मिथला दोऊ होरी मचाई।
इतसे कुंवरी जनकको उतसे अवध कुंवर रघुराई ॥
केसर रङ्ग गुलाल परस्पर डारत मोद बढ़ाई।
मनहुं मेघवा झर लाई ॥
बाजत वीण मृदङ्ग मञ्जीरा जरतरङ्ग सुरनाई।
सखिन घेर सिय वल्लभको तब पकरि लली
ढिग लाई लालको नाच नचाई ॥
कर सों धनु शर छीन वनमाला सारी नील ओढ़ाई।
नथ चूरी चख अञ्जन रञ्जित जावक पग दर्शाई
मनो नई नारी बनाई ॥
अब सब भूल गए मनमोहन कहां खोई चतुराई।
नेह नहीं हम आप लगावें कहां कौशल्या माई
तुम्हें जो लेत छुड़ाई ॥
बिन पाए फगुवा नहीं छोड़े कोटि करो रघुराई।

सेवक घर घर सब रस चाख्यो तुम चित्त चोर चवाई
सदा सौगन्ध खाई ॥
हसत लसत रचि फाग जनकपुर सखी सखा
अधिकाई।
सीताराम युगल जोरी पर सखी जन तो बल जाई
प्रेम हिय रह्यो समाई ॥

२५

जनक पुरकी सखियन के सङ्ग होरी खेलत
चारो कुमार।
अबीर गुलाल की फेंट भरी है मारे केसर पिचकार॥
बाजत मृदङ्ग वीणा मुहचङ्ग गावत दे दे तार।
राम लक्ष्मण भरत शत्रुघ्न उत जानकी सङ्ग लिए वार॥
सीता रामको राम सीताको बोले हो हो
होरी पुकार।
रामदास प्रभुको छवि निरखके वार वार बलिहार ॥

२६

मेरा लेता सन्देसा जाइयो पुन मैं तेंडो बल जादियां।
पुन ढूंढ़न नू हों जो चली री वैरीने बोया कांटा
के पुन मोहे आन मिले नाहीं तो मरना कबूल ॥

२७

श्यामसुन्दर सङ्ग खेलत होरी।
गोपीवृन्द रूपगुण आगर तिन मध्य श्रीवृषभानु
किशोरी ॥
ताल मृदङ्ग बजावत गावत अबीर गुलाल
उड़ावत गोरी।
जानकीदास निरखि दम्पति छवि हर्ष हर्ष
डारत तृण तोरी ॥

२८

श्यामसुन्दर सङ्ग खेलन आइयां।
रङ्ग रङ्गीली नारी भेस छबीली चपल चपल
चहुं दिस धाइयां ॥
अतर गुलाल अरगजा केसर पिचकारी भर भर
रङ्ग बरसाइयां।
जानकीदास विलास सकल सुख निरख निरख
व्रजमोहन को मुख हर्ष हर्ष हिय मोद बढ़ाइयां ॥

२९

बाग़बहार निरखत बन रानो।
सब सज आई सहेली ग्वाल कहत मनमोहन जानो॥
उठ धाए बनवारी बाग़में छिप रहे कोउ न जानो।
अब राधामोहन गुण गाए बंशी शरत् सुनानो॥
धाय आई जहां मोहन ठाढ़े कर धर मृदु मुसक्यानी।
फूल रही गुलाबों दी कलियां आनन्द मगन मनमानी
प्रेमरङ्ग वृन्दावन विहरत जहां नन्दनन्दन वृषभानु
राजधानी ॥

१०

निडर डगरके कगर ठाढ़ो रे।
हम जानत हैं सब बात विहारी ग्वालबाल क्यों
पुकारो रे॥
आज हमारे साथ सङ्गातिन चकित चौंक क्यों
निहारो रे।
फाल्गुनके दिन भाग्यन पाए अबीर गुलाल संभारो रे
प्रेमरङ्ग सों भिजाय पाग पट सोहत श्याम सो
हारो रे ॥

११

कारी कामरवारे कान्हा मैं ना खेलौं तो सो जो मैं
होंगी व्रजरानी।
दान देत मटकी दे पटकी अटकी विलास करो
कहुंते मोहे सो वार वार बोरानी ॥
आज गई सङ्गकी सखियां सब दुर्जन लोक निहारो रे।
प्रेमरङ्ग प्रभु मोहे न सुहावत सबसों न हमन
बिसारो रे ॥

१२

विरम रहे कासे खेलूंगी फाग।
हित चित्तकी न कही सुनी आली मोहे दियो वैराग॥

१३

यमुना कैसे के जाऊं री होरी खेले मोहन पनघटवा।
ग्वालबाल सब सङ्ग सखा ले बंशी बटकी तटवा ॥

वीणा मृदङ्ग बजावत डफ मुरली नाचत सङ्गीत
ज्यों नटवा।
रसिक कृष्ण प्रभु छैल प्यारे धम मचाई नन्द महरके
नागरनटवा॥

२४

कहीं उरझे श्याम गोकुलमें मैं तो ढूंढ़ फिरी
मधुवनमें।
ऐसा यतन बतावो सखी री जो पिया आवै
फाल्गुनमें॥
विना फगुवा लिए जान न देहों याही बात मेरे
मनमें।
धूम मचे हूं अबीर उड़े हूं रसिक कृष्ण रङ्गों रङ्गनमें॥

२५

आए री श्याम नहीं आए यह फाल्गुन विरह बढ़ाए।
इस कुवरीने कछु मन्त्र पढ़ो टोना कियो राखे
हरि विरमाए॥
मैं लीके लाल गुलाल लाल विन क्या करूं मोहे
विन वीरन न सुहाए।
मोहे रङ्ग भयो बेरङ्ग रङ्गीले श्याम विन मेरी
उनसे व्यथा सुनाए
मेरी बुद्धिविहारी लाल सो इतनी जा कहो मोहे
अबके आन जिवाए॥

२६

बुझावो फाल्गुन चलो जात पिया को ले आवो री
मेरे विरह की आग।
मैं तो सोती थी मण्डपमें सुखनींदरी मैं तो परी हूं
अचानक जाग॥

२७

कोई पिया मनाए ले चार दिन फगुवाके बहार री।
कृष्णानन्द कहत पुकारके यह झूठो संसार री॥

२८

होरीके दिननमें कन्हैया भला अब तोरी बन
आई हो।
अब रहे राज्य हुकुम कंसासुर तब कहां नन्द
दुहाई हो॥
तब रहे वन वन गऊ चरावत अब पाई
ठकुराई हो।
अब तुम ओढ़े पीत वसन तन कामरिया
विसराई हो॥
नैन अनन्त नेहके नाते कहो सखी तुम्हरो बड़ाई हो
राज्य दई प्रतिपालके ठाकुर युग चारो चल आई हो
गावै गूदर प्रभुभक्त जान के लीन्हें अङ्ग लगाई हो॥

२९

हो:-होरीके खेलैया सइयां मोरे मोके गरवा न
लगावत।
बालापनको नेह विसारो सेजरिया नहीं आवत॥
ऐसा नहीं मित्र कोउ जग माहीं चूक मोरी
बख्शावत।
गावै गूदर सइयां चतुर खेलारी वाको कोउ
समुझावत॥

३०

होरीके खेलैया मेरो अवधि वीत गई सारी हो।
सब रङ्ग नैहरमें हम खेलि गंवाये मोहे निडर है
सासुरारी हो॥
निशदिन चितवा नजर न आवै बालम सुरत
विसारी हो।
विना प्रिय पीतम कर्म विहीनी सर्व खेल गई
हारी हो॥
अब प्रतिपाल करो मोरे स्वामी अपनो ओर
निहारो हो।
गावै गूदर घिर दियो है सइयां परदेश डारो हो॥

३१

कासन फाग खेलों जगमाहीं वीते अवधि सइयां
नाहीं अइ है।
फाल्गुन जइ है बहुर फिर अइ है गयो यौवन फेर
नहीं रइ है॥

यौवन जोर छांड़ तव वरको पल पल ढरत ढरत
ढर जइ है।
बालापन खेलत में खोयो तरुण विषय वृद्ध चिन्ता
जरइ है
गावे गूदर सब फाग खेलें जग हमरा सइयां कबहूं
सखी भइ है॥

१२

खेलनके मैं आर्जं देया मोहि यों हो सतावे।
सास खेले और ननद खेले और खेले देवरानी जेठानी
सङ्गको सखियां सब हो खेलें मोहे सास तो
लाज बतावे॥
बाखलमें मोहे छोड़ जात है रङ्गसे भरो सब आवत
है मोहि तो दाव बतावे।
अचपलके देखनको ए सखी देखनको मेरा जिया
ललचावे॥

१३

तेरी हमसे कहा छिपावे छिनरिया भीज गई
सब सारी।
कर मुकरावत काहे दुरावत नैन मिनावत दारी॥
वसन भूषण तेरे कह्लंके क ' कुछ रङ्ग परो तो
पै भारी।
तू जो गई खेलनको अचपल अबके फाल्गुन तेरी
बारी॥

१४

कौन महजादानी तेरी बोलियांनी ठोलियां।
मोहे पड़ो डर गुरुजन दी तू गारी गादा रङ्ग होरियां
ऐसी न कोजिए निडर नन्द दे केसररङ्ग भिजई
मोरी चोलियां॥

१५

बन आई है चतुर नारी होरी रङ्ग भरी।
सूहो सारी घेर घांघरो अंगिया बूटेदार रोरी
आड़ धरो॥
मोतिन मांग भरी वनिता के मानो गङ्गा धसी
हरिद्वार अञ्जन रेख धरो।
छूटी लट वनिताके मुखपर मानो नागिनी सो
डस जाय वेणी पीठ परो॥

सिन्धु—धमार

बांह छुवो जिन कान्ह हमारी हों जानत हों
तिहारी रीति।
और न सो होरी खेलत हो मोसों करत मुख
देखी प्रीति॥
जावो लला उन ग्वारनके ढिग वांही सुनावो विरह
को गीत।
कैसे जिय पतियाय दर्श बिन सुनो न राजा
काके मीत॥

सिन्धु—यत्

मदमाती नारी घर ह्न कैसे आवे।
तोरी बांह बनी पहुंची अब वाहूको दोष लगावे॥

सिन्धु—बांसवाड़ा-यत्

चल देखन जइये आज दुलहन बन आई।
घर घरते सब बन बन आई ले ले रङ्ग सब रसभरे
छूटी लट मुख ऊपर आई घूंघटके बल जाई॥

२

लला यह यौवन मतवारे अंगिया रङ्गराती।
होरीके रङ्गमें गोरी बनो मुसकाय चली चित्त चोरी
सांवरे से लंगवार खड़े अरे ठगवारेने गारी दोनी॥

३

श्यामा श्यामके सोंधे भीने बाल।
इतते आए श्याम मनोहर उतते गोपी ग्वाल॥

४

होरी खेलन आए कछु खेल न जानो।
उर बनमाला गले पग लो करमें मुरली मुख पानो॥
चन्दन भाल विशाल पिताम्बर पाय लगी याही बानो।
जो लगि नारी खेलारि न जाने मोहन कीन्ह पयानो॥
तो लगि जाउ चले चुपके व्रज वेग सिखावन मानो।
जो हठ ठान रहोगी इहां तो परमरङ्ग यह जानो॥

५

बर बस गई कर है ललनागन।
गाल गुलाल मला अलि आयो अनोखा खेलैया
ऐसो खेल कबहुं नहीं दीख नयन॥
लाल गुलाल दूरतें डारत टारत अञ्चल लेत बलैया।
ले पिचकारी चलाव भायसों हाथ जोरि पग परत
कन्हैया॥
बांके नयन सन करत सैन औरन और चिते दृग
कोर निहोरत चोरत चित्त चलया।
गावत गारी जौय जोई भावत धावत म धमारि
मचैया॥
करत परस्पर सरस सैन अङ्ग भर हरि परम
रङ्गसो लगत नाहिं न नेक उपैया।
कहा करूं अब जाउं कहां भजि कान्ह भयो
कुलकाम हरैया॥

सिन्धु—काफी

आज खेलौंगो होरी श्याम मेरे द्वारे हो आय आय।
युक्ति सों अचरा पकर कर ठाढ़ो फगुवा लोंगो
मनाय मनाय॥
हमारी अंगिया सब रङ्ग बोरी अपनी पाग
बचाय बचाय।
कृष्णानन्द वलिहारी मन मोह्यो रागिणी गाय गाय॥

२

खेले सांवरो होरी यमुनाके तीर।
बाजत ताल मृदङ्ग झांझ डफ स्वरध्वनि मिल उठत
गम्भीर॥
सुन ध्वनि मन्द मधुर मुरलीको मुनिजन धरत न धीर।
दुरि मुरि झपट लपट नन्दनन्दन केसर
छिरकत नीर॥
बहियां पकर मुसक्याय राधिका हरि मुख लाय
अबीर।
औरसरङ्ग रीझ यह ब्रजको हम क्यों न होत अहीर॥

३

मैं गमने नहीं जइहूं रे राम॥
नवल बहुरिया चली गमनेको कर दुलहनके भेश।
नयन रोवे जो हंसे मैं तो चली हूं पियाके देश॥
गमने न जइहूं टोना करि हों नैहर धूम मचै हूं।
जो जो मेरे गवनेकी बात चलैये वा पर माहुर खैहूं॥
चलत चलत मेरे पाव पिराने जेहर भर गई धूर।
मैं तो हूं पूछूं बाट बटोहिया नैहर केतिक दूर॥

सिन्धु—भैरवी

ऐसो फागु मचाए खेलन पुरवासी आए।
केसर रङ्ग बनाय विविध विध हौज फुव्वारे भराए॥
गहे बहियां एक एक को ले ले तिन मध्य
तिन्हें न्हवाए।
बाजत ताल मृदङ्ग झांझ डफ ले ले ऊंचे स्वरन
मिलाए॥
वेणु बांसरी बाजै मधुर स्वर सुन गन्धर्व लजाए।
अटन चढ़ी निरखत सब नारी फेंकत कुङ्कुम
गुलाल उड़ाए
नील पीत पटकी चमकन में मानो घन दामनी
छिपाए॥

२

सखी यशोदाके ललानै मोहे गारी दई रे।
डगर चलन नहीं देत काहुको ऐसो करत नई रे॥

३

आज सोहाग की रैन बनासे नेह लगाया।
बनरी बनरा युग युग जीवे बनरो ने भर पाया
कृष्णानन्द यही सुख जग का जो ढूंढ़ा सो पाया॥

४

खेलन आई रङ्गराती होरी बाल।
सांवल गोरी ले ले दौरी भर भर मुठी गुलाल॥
इतते आई नवल राधिका उतते आए नन्दलाल।
इनके सङ्ग सब गोप वधू हैं उनके सङ्ग सब ग्वाल॥
बहुत दिनन पर भेंट भई है यह दिन दीनदयाल।
मन माने का फगुवा ले हों जे हो कहां गोपाल॥

५

आज ब्रज होरी खेले नन्द लाड़लो ग्वाल बाल लिए सङ्ग।

डफ धुंकार मुरली स्वर मिलकर बाजत वीणा मृदङ्ग॥

६

देखो देखो सखी री लालन आए मोरे।

डगमगात पग धरत धरणी पै आए खोल तन दृगन की कोरे॥

बदल गई बनमाला गरेकी छुट रही पीत पीछोरे।

छविनायक मुख द्युति कम्हलानो जैसे चन्द्र भए भोरे॥

७

छांड़े छांड़े छैलवा बहियां नाहीं मरोरे।

नाहक रार करत हो हम सों काह लीन मैं तोरे॥

घाट बाट मेरो कछू न जानो भूल परी याही मोरे।

छविनायक भई बार जान दे अब नहीं अइ हों बहोरे॥

८

सखी ए री तुम्हारे यौवन बटपार।

चलत मुसाफ़िर मार लेत हैं प्रेमकी फांसो डार॥

जौन फंसो नहीं छूटन पावत कर नहीं सकत पुकार।

छविनायक जगमें सोई बाचे जेहि राखे करतार॥

९

होरी खेलैं राधामाधव ब्रजकुञ्जनकी खोरी।

अबीर गुलाल उड़ावत गावत बसन केसर रङ्ग बोरी॥

मृदु मुसक्यात परस्पर ठाढ़े श्याम राधिका गोरी।

ख्याल खुशाल करत नन्दनन्दन चितवनमें चित्त चोरी॥

१०

जावे री पिय पास खबर मेरी कौन सुनावे।

सब सखियां मिल बन बन खेलैं मो जियरा पछतावे॥

ना हमको पतियां लिख भेजी ना फिर आप ही आवे।

सोच सोच तुम बिन दिन बीतत रैन नींद नहीं आवे

काज़म प्रियकी आशा लगी है ना जानों कब आवे॥

११

नन्दनन्दन ब्रजराज कन्हैया मोसे नाहक रार करो री।

बृन्दावनकी कुञ्ज गलिनमें बहियां पकर मरोरी

कृष्णानन्द न्योछावर तन मन कर दीन्हीं मैं तोरी॥

१२

सइयां बिदेश गमन कियो है का सङ्ग खेलूं फाग री।

जिनके सइयां नित घर ही रहत हैं उनके धन्य धन्य भाग री

कृष्णानन्द रहत निशिवासर श्यामचरण मन लाग री॥

१३

छैलवा बहियां पकर मुख मोजन लागी अब तो तोरी बन आई रे।

हमारे सङ्गको दूर निकस गई मोहे अकेली कर धाई रे॥

हा हा करत हौं पैयां परत हौं जिन कोउ देखे कन्हाई रे।

कृष्णानन्द मोहि ब्रज वीथिन लियो श्याम अपनाई रे॥

१४

बावरी मोहि कर गयो योगी।

रूप मोहनी डार कियो मोहि सिसकत हौं ज्यों रोगी॥

पहिले मीठो बात सुनाई पाछे किए उ वियोगी।

कृष्णानन्द ध्यान निशिवासर तेरे हि मिलन संयोगी॥

सरपरदा—तिताला

मनमोहन पिया होरी खेलन आए जागे सखी मेरे भाग री।

कञ्चन थार कुसुम केसर रङ्ग सुमन सुगन्ध पराग री॥

अबीर गुलाल अतर अरगजा देहों श्याम पै डार री खेलों मैं हरि सो फाग री।

धन्य धन्य कृष्णाचरण सखी पाए फगुवा ले हौं लाज त्याग री॥

२

मनमोहन मन ही में मेरे होरो खेलन कहां जाऊं री।

पूरणब्रह्म मेरे घट ही के अन्दर नाहक क्यों
भटकाऊं री ॥
ज्ञानको रङ्ग ध्यान पिचकारी अपने सइयां सो
रङ्गाऊं री।
भांति भांति को रङ्ग बना है एक ही रङ्ग रङ्गाऊं री॥
नटवा एक कला बहु तेरो पार न पायो काऊं री।
माया मोह भ्रम सब त्यागी तो कृष्ण रसिक
दर्शाऊं री ॥

३

याही सोचमें भई हूं बावरी रैन गंवाई सोय।
हमरी चुनरिया पियको पगरी दिन दिन मैली होय॥
पियको प्यारीको को समुझावे जो पिय चाहे सो होय।
टांड़ा लाद चलो बनजारा हालर हालर होय ॥
बाला रे पन सब खेल गंवायो तरुण तिया मुख जोय।
वृद्ध भए बहु चिन्ता बाढ़ो नैन गंवायो रोय ॥
क्या मुख ले घर जाऊं सइयांके बैठो हूं यौवन खोय।
सोवत सोवत बहु युग बीते ना जानौं मेरो क्या
गति होय
भाइ कबीर दया सत् गुरुकी गुण अवगुण सब
गए हैं धोय ॥

४

कारी कामर वा पै कैसो कुसुम मेरो मन तो सांवल
रङ्ग पाग्यो है।
सोवत जागत विहरत निशदिन हरि चरण चित्त
लाग्यो है॥
कामिनी कामिनो कामसे लागत मोह मदन मन
त्याग्यो है।
और रङ्ग मोहे नीको न लागत मोहन रङ्ग मन
पागयो है॥
भांति भांतिको रङ्ग बनो है कृष्ण रङ्ग अनुराग्यो है।
काम क्रोध मद लोभ मोह सब देख दूरते भाग्यो है॥
सूरदास प्रभु हरि चरणनमें अरण चित्त
अनुराग्यो है।

कहे कबीर सुनो भाई साधो आनन्द अनाहत
जागयो है॥

५

सइयां नहीं घर मोरे री सजनी का सङ्ग खेलूं मैं
होरी रे।
कृष्णानन्द आनि मिल प्यारे विनवत दोऊ कर
जोरी रे॥

६

फागकी घातें सो सो जाने ऐसे खेलारी सों डरिए री।
सब सखियां मिल बन बन आईं ले गागर रङ्ग
भरिए री॥
अबीर गुलाल कुङ्कुमा केसर पिचकारिन रङ्ग
डरिए री।
जहांपनाके चरणन नीचे चल गोया घर करिए री॥

७

आमदा बूदं रफ़ता बूदं ए बीबी होली कुजा
बूदी तुम।
दर दौलत पर चल आइ यमनके बजावत मृदङ्ग
खेलके खर रङ्ग गाय बजाय दिला बूदी तुम॥

८

ओ यशोमतीके ढीठ लंगरवा काहे को मो को
रङ्गमें बोरे।
क्यों तोरी होरीमें आग लगाऊं पेड़ पड़ा है
नाहक मोरे॥
तोरी प्रीति को कौन ठिकाना ऐसे के जोरे ऐसे के
तोरे।
प्रीति को रीति तुराब से सोख ले जियत मरत
कबहूं नहीं छोरे॥

आयो री आयो बसन्त सुहावन।
आवो री सखियां सब हिल मिल के नए नए रङ्गसों
बसन रंगावन॥
नई बहार नई ऋतु लागी नई नई छबिसों
पियाको रिझावन।

अबकी बसन्त पिया अङ्गनमें आए मो घर फागु मचावन
भई तुराव पियाको लपा काहे न होरीको धूम मचावन ॥

१०

काहे खेलूं मैं होर। हमरे तो सङ्गको सभो मतवारो रे।
भर पिचकारो मुखपर मारो बोर देत रङ्ग सारो रे
अबीर गुलालके बादर छाए रङ्गको परत फुहारो रे॥

गारा—धमार

मथुरामें ध्वनि धुकार मचो।
तब खेलन लागे हो होरी आनन्द सुख सो रचो॥

बहाग—धमार

ए रो हो यह मान लेहो जू बात भली बुरी ऐसो अन्तर जैसे दिन औ रात।
प्रथम विहस मधुकर हो लगत है पाछे मन पछतात
बालपनो औ तरुण वृद्ध गुरु सो समझे जात॥

२

पियसों कैसो होरो खेलों सखो रो मोहनसों जाय अपनो जिय जाने।
चोवा चन्दन अबीर कुङ्कुमा केसर रङ्ग झोरों तब मेरो मन माने॥

३

चमक चपला सो आई फाग खेलनको चोप।
ऐसो रूप बिराज रहो है जैसे कनक धरो ओप॥
वर्ष वर्षके बाजे बाजि सुनि जुर आए गोप।
छबिनायक भुजा गहे गर लाई लख सखी भई अलोप॥

४

आए कुंवर कान्हैया आज।
काहू सो लपटत झपटत दपटत रङ्ग भाए चाए करत लीन्हें नाना साज॥

५

लरो दोऊ सौतें आज लरो।
घर घर नाक अङ्गुरिया बोलत रोग्रम जात करो॥

६

आलो रो नरनारो बौरानो बहुर हो होरो में धूम मचानो।
कौन कौन पर भोर परी है काहू काहूको न जानो॥

७

एड़ो फिरत या गोकुलमें ए री वो तो श्याम कहावे।
जा बातनते लाज लगत है तेहो बात सुनावे॥
ज्यों ज्यों खोजे मन हो मन में त्यों त्यों अङ्गुरी नचावे।
कारो वदन अचपल बांको री दौर हो दौर मेरे आवे॥

८

या ब्रजमें को खेले दई होरो।
अबोर गुलाल आंखनमें डारत ऐसो कहा जोराजोरी॥
माथे तिलक गरे जयमाला गरवा लगाई बरजोरो।
रङ्ग पिचकारो छिप छिप मारत मुखसों बोले हो हो होरो॥

९

मोहन होरो खेले आज।
बोणा रबाब मृदङ्ग झांझ डफ सब हो बने हैं साज॥
केसर रङ्ग धरो भर गगरो तुम आवनके काज।
सखो समूह भाग्यन हम पायो दूर करो यहो लाज॥

१०

यौवन मदमातो गुजरिया कर आई पिय सों रार।
भर मारो पिचकारो चुनर पर मोहन चतुर खेलार॥
चोवा चन्दन अतर अगरजा मुख मोड़ो कर प्यार।
छबिनायक यह जोवन को फल मिलों गर बहियां डार॥

११

झपट पिचकारो मारो निपट निडर रङ्ग भरके।
अब कैसे जाऊं ब्रज मोरो सजनो सब वैरो भए हैं घरके॥
ता पर बरबश अङ्ग लगाई कर दोऊ कर सो पकरके।

छविनायक मोहे जब सुध आवे छरक रहो हिय
धरके ॥

१२

मोरी छतिअन मारे गेंदवा री होरी अब न खेलों
खेलनवा ।
अबीर गुलालको धूम मचावे मोरे मुखवे मले
अबिरवा
होरी खेल मोहे गरवा लावे ऐसो ढीठ निलजवा ॥

१३

ए री कुंवर कन्हैया चलत फिरत मेरे गोकुल में
पास ही पास ।
घरते निकसवो दुश्वार भयो मोहे आन परो एक
गांवको वास ॥
डरत फिरत मन ही मनमें नाहिं न सुन पावे
मेरी सास ।
पकर कोरे छिपत हैं ऐसे अचपल जो फूलनमें बास ॥

१४

मेरी अङ्गिया भीज गई सारी हां रे लाल पिचकारी
न मारो ।
भर झोरी अबीर गुलाल लिए है मेलो छतियन
पर पिचकारो जिन डारो ॥

विहाग—चाचर

मैं छिरको तोपे गुसैंया मोरी रङ्ग से भर दे गगरिया ।
वो ही रङ्ग मोहे रङ्ग क्यों न दे रे रङ्गूं तोरी पगरिया ॥

विहाग—धमार

मोहन मो पै रङ्ग न डारो मैं तो भई हूं रङ्ग
सरबोरी ।
भर मुठी अबीर गुलाल डारो बोलत हो हो होरी ॥

२

चलो री आज कान्ह सो होरी खेलें यामें कछु
लाज नाहीं ।
अपने जियमें विचार देखो ऐसो को वर है जगमाहीं ॥
सुर विरञ्चि महेश जे हि ढूंढ़त नहीं पावत
तेहि काहीं ।
धन्य भाग्य वाके दर्श जो हरि सङ्ग रहत डार
गरबाहीं ॥

३

एरी यह फाल्गुन बीतो जात सखी री कब
खेलोंगी होरी ।
है अभाग्य धिग् जीवन उनको ज्यो होरो में कोरी ॥
जोवन सुफल आज है उनको प्रेम पिया रङ्ग बोरी ।
छण छण पल पल अवधि घटत है रही जात
अब थोरी ॥
निकस जात पर हाथ न आवे ज्यों पतङ्गको डोरी ।
लोक लाज कुलको मर्यादा यह सब मन सो तोरी
हिलमिल एक रङ्ग हो बैठो मगन रूप हरि सो री ॥

४

हां रे होरी हो रही ।
सब ही सुहागन खेलन निकसो मैं ही दुहागन
सो रही ॥

५

यह निधरक भयो ब्रज में खेलत हो हो कर होरो ।
कैसे के निकसो मग में सजनी सबके मुख मोड़त
है गोरी ॥
रङ्ग डार गयो मोहे सरबोरा कहा कछु मो पै
पढ़ डारो री ।
सुन्दर श्याम मनोहर मूर्ति बहियां मरोर मोहे
झकझोरी ॥

६

रे ऊधो को खेले ब्रज होरी ।
मन हर लीन्हों नन्दनन्दन जू कुंवर राधिका गोरी ॥
अन्तर गति को व्यथा हमारी जानत नाहिं न कोरी ।
कहा कहो विश्वासी सूर प्रभु सो प्रीति अचानक
तोरी ॥

७

यौवन को गोरी अंङ्गिया में जो छिपावत री ।
अति मदमाती चाल चलत है देखत मन
ललचावत री ॥

८

ऐसे ढीट कन्हैया सेन मोहे बुलावत री ।
वृन्दावनकी कुञ्जगलिन में फिर फिर बीणा
बजावत री ॥

९

जा सों प्रीतिरीति करि मानो लालन वाही के रहिये।
तुम सांचे कि धों वे सांची हैं सोई करि कहिये ॥
गुण गरबीले गुण न गनत हो यह जोड़ कैसे सहिये।
आए हो बलिहारी प्रण करि तुम्हें न ऐसे चहिये ॥

१०

लाल कैसे झलकत आवत यह तन में वाको
यौवनको धूम ।
यह शीशे में रङ्ग केसरको उमंगे झांवत जाके
उमङ्ग की झूम ॥

११

होरीके दिननमें कान्ह करत बरजोरी ।
यमुना निकट पनघट वंशीवट घेरे फिरे चहुं ओरी ॥
ग्वालबाल सब सङ्ग सखा ले मेरे द्वारे आय अरो री ।
जानकीदास रसिक ब्रजमोहन गोहन रहत परो री ॥

१२

कहें सब होरी होरी मची है धूम चहुं ओर ।
चार दिना हंस खेल ले प्यारे आवत होरी भोर ॥
एक दिन धूर उड़ेगी आखर बचे नहीं कर कोर ।
जानकीदास शरण सत् गुरुकी उबरे गगनको खोर ॥

१३

आज मैं निहारे आली रैन में महल माहीं लाल
गुलाल सो रङ्ग रगमगे ।
पेंच छूटे पागके अटपटे बोले बैन नयन सो उनींदे
नयन सुगन्ध सगमगे ॥
सुन्दर सलोने गात अलसात जंभात देखत नयन
अघात मणि नग सो जगमगे ।
विवश अनेक प्रेमरङ्ग अङ्ग लाय धाय धाय सोह
दे सोवाए तऊ नेक न डगमगे ॥

१४

जाऊंगो गंवार खेलारी आंखिन डारो पिचकारी ।
नई सुरङ्ग सारी भिजवत हो कहा यह बात तिहारी ॥
अबीर गुलाल अकाश पे डारत आली खड़ी
सब न्यारी ।
मो पे झक झक झपट झपट अहो प्रेमरङ्ग
प्रभु तिहारी ॥

१५

होरीके दिननमें मेरा मन लोता ।
झटक लई मेड़ो सुरङ्ग चुनरीया चुम्बन गालों दीता ॥
अबीर गुलाल भर भर के डारदा भए उसदे
मन चीता ।
पुरुषोत्तम प्रभु सांवरे ग़बरू लाड़े नाल करो मीता ॥

१६

ब्रजमें धूम मची खेलत होरी डफ मृदङ्ग धुधुकार ।
ताल पखावज आवज वंशी और बाजत कठतार ॥

१७

लाल तुम खेले कहां हो होरी खेलन की यह रीत ।
नख शिख भेष बनाय गोपिन को छलन आए
मोहे मीत ॥
कर कपटी झूठी मुख बतियां याही तें लियो जग जीत।
कोटि उपाय करो इन्द्रमणि प्रभु इहां नहीं है प्रतीत॥

सोरठ—धमार

यौवनकी मदछकी डोरे नारी मतवारी करे
कन्त सङ्ग रङ्गरलियां घुनी ।
लरे झगरे मुख मोड़े सबनके कोज उर छुवे खीझे
दुनी ॥
रङ्ग बरसे जैसे ऋतु वर्षा में गुलालको बादर उनी।
वामें त्रिया मुख यों दीसे मानो जैसे निकस्यो शशि
शरत् पुनी ॥

१

निपट रङ्गभीनी देखियत है तू आज नार ।
उलटी अङ्गिया माथे टेढ़ो सारो की कोर सोहत
हैं झलके बिथुरे बार ॥

लपट झपट मोहन को पकरत गावत दे दे तार।
खेल रचो वृन्दावन वीथिन राधे नन्दकुमार॥

२

हो हो होरी खेलन आए अहो मेरे आए।
बलिहारी तेरे पायनको शोभा आन देखाए॥
धन्य भाग्य मेरे हैं सजनी मोहन दर्शन पाए।
पलकन सों मग झारो सखी री मनवाञ्छित फल पाए॥

३

तुम बिना हिय में भई पीर अति भारी।
आय मिले होरीमें महम्मद शा सदा रङ्गीले बारी॥
चहुं ओर डफ बाजन लागी अज हूं सुध न संभारी।
या होरी मेरे कैसे कटेगो विरह पीर अति भारी॥

बिहाग—धमार

आज हां ऐसो चहल सों होरी खेलत महाराज
श्रीनाथ बहादुर कोउ न खेले इस रङ्ग सों।
नर नारिनको ज़री वस्त्र पहरायके तापे भोडर
अबीर ज़रतार उड़ावत हैं इन ढङ्ग सों॥
चन्दन वन्दन बुक्का रोरी अतर अरगजा
गावत रागरागिणी बाजत ताल मृदङ्ग सों।
होरी धूम मचो अति भारी रङ्ग नाचत हैं सब दे दे
तारी लपटत हैं सब अङ्ग सों॥

सिंदूरा—धमार

तब जानोंगी चतुर खेलैया होरी खेलन मोसों आवोगी।
हमरी चुनरिया रङ्ग सो भिजोई अपनी पाग बचावोगी
कृष्णानन्द कहत गिरधारी रस सागर सुख पावोगी॥

२

यौवन मदमाती ग्वारनी ऐंड़ी डोरे कुञ्जनमें।
नयन रतनारे कज्जर भरे तन छाय रहो मैन यौवनमें॥

३

नन्दके छैल छाड़ दे गैल जिन छुवो मोरी गगरिया।
हा हा करत हूं पइयां परत हूं त्यज देहों मथुरा नगरिया॥
केशर रङ्ग की मेह बरसावत है इत अबीर छाय रही बदरिया।
जैसी भीजी मोरी सुरङ्ग चुनरी तैसी भिजोऊं पगरिया॥

४

मारूंगी गेंद गुलाल कुङ्कुमा डारूंगी रङ्ग घुलाय घुलाय।
चन्दन वन्दन बुक्का रोरी अतर अरगजा लगाय लगाय॥
गाऊं बजाऊं रिझाऊं मोहन को होरी राग जमाय जमाय।
सदारङ्ग पिय फागुवा ले हों होरी खेल मनाय मनाय॥

५

अति मदमाती डोरे सब ही तियनमें तू री चतुर खेलार।
तन सों रङ्ग भीनी सारी सोहत गर पुहुपनके हार॥
झपट पीत पट खैंचे मोहन की लाज सकुच सब दई है डार।
सदा रङ्गमें भीज गई है फगुवा लिए छाड़े मुरार॥

६

काहेको री सकाय रहे हो प्यारे होरीमें क्यों न डारत मोपै रङ्ग।
भलो बुरो नित्य कहत रहत चर्चा हमारी सौतनके यह ढङ्ग
अबके फाल्गुन पिया रूस रहोगे अबीर गुलाल उड़ाऊं
आज मैं तुम हो राव राजा प्रथम साहब मैं भी चेरी उमङ्ग॥

सोरठ—धमार

नयन लगी तेरे मोहनके सङ्ग ए री बौरी अब काहे लाज लजाय।

जित देखो तित आपो आप है दूजा कौन समाय
लाख बातको एक बात है सब तज हरि चित्त लाय ॥

२

निडर निठुर नटवर सो क्या चले हो गोरी ।
सुन यह अब कंस मारि राज्य कर लाग्यो री
प्रेमरङ्ग बाललीला हम सो करे ठगोरी ॥

३

बहुरिया बरजत हो तैंने काहेको रङ्ग डरवायो
एको भार ।
एक झिलमिलो रे ता में दीखत हियके हार
रङ्गमें सगबग तू भई री अङ्गिया फरवाइ डार ॥

४

मदमाती बहुरिया होरी बालम सङ्ग खेलिये ।
लाज सकुच सब तज गुरुजनकी प्रियके भुजन
भुज मेलिये ॥
केसर रङ्ग पिचकारी भर भर श्यामसुन्दर पर रेलिये ।
जानकीदास विलास सकल सुख सरस रङ्ग
रस केलिये ॥

सोरठ—तिताला

चल देखिये बरसाने वहीं है रङ्गीलो होरी ।
निकसी भवन भवन सो कर ले गुलाल रोरी
गावत हैं मीठी गारी सब प्रेम रङ्गमें बोरी ॥
अबीरकी घुमड़में पकरे है नन्दलाला ।
फगुवा हमारो दीज्यो हस कहत है ब्रजकी बाला ॥
कोई ताल मृदङ्ग बजावे । कोई रागरागिणी गावे ॥
होरी खेल खेल आई महल महलमें ।
महरचन्द्र मोहन प्यारे खेलत हैं चहल पहलमें ॥

२

होरी खेलो पिया सों सारी रैन कहे देत नयन
और मुखके ढेन कौन रसिदा लगाई दृगन सेन ।
पोक लीक अधरन बसन गुलाल भए जागी पागी
लागो अङ्ग अङ्ग राग रङ्ग रह्यो प्रगट देखियत
मदन मेन ॥

विहाग—तिताला

सांवरो सखिनमें कैसो वेणु बजावे ।
वृन्दावनकी कुञ्ज गलिनमें हंस हंस गह्वा लगावे ॥

सोरठ—धमार

आज मन्दिर डफ बाजन लागी प्रगट जहते नभ
बरसत घेरी ।
अबीर गुलालके बादर छाए गरजत है औ
वर्षत है री ॥

सोरठ—यत्

प्यारी ने वश कीन्हो कुञ्ज विहारो ।
कुञ्ज भवनमें दामिनी सो दमको मार गई पिचकारी ॥
चन्द्रवदनो नयन मृग खञ्जनसे बरसाने की नारी ।
लाल लाडलीको छवि निरखत हूं इयक रङ्ग
बलिहारी ॥

२

पिय मत मारो पिचकारी मोरो भिजैगी चूनर सारी ।
वृन्दावनकी कुञ्जगलिनमें गल बिच बहियां डारी ॥
हमरे ख्याल तुम ना परो सइयां हम हूं
चञ्चला नारी ।
नन्द बबाको दोहाई देत हैं मानो कुञ्जविहारी ॥
हा हा करत हूं पइयां परत हूं तुम जीते हम हारी ।
सेवा सखी चरणनकी दासी बार बार बलिहारी ॥

३

नयन लगे तेरे मोहनके सङ्ग ए री बौरी अब
काहे को लजात ।
घूंघट दूर कियो मुख तें जब ज्योति में ज्योति समात ॥

४

होरी खेलों सखी मैं तो रसिया कुञ्जविहारी से ।
कुञ्ज कुञ्ज वृन्दावन माहीं श्रीगोवर्द्धनधारी से ॥
रङ्ग में रङ्गू घनश्याम लालको वश कर प्रीति
अपारी से ।
अबीर गुलाल लगाऊं कपोलन ख्याल खुमाल
खेलारी से ॥

५
नन्ददुलारे ऋतु रङ्ग में रङ्ग रङ्गे हो हो होरी
मेरे आए री ।
होरी खेलन लिए ग्वाल बाल सङ्ग नेह उमंग
उमंगाए री ॥
गावत फाग बजावत मुरली छवि अपार
रङ्ग छाए री ।
ख्याल खुशाल करत गोकुल में राधे प्राणपियारे री ॥

६
कुञ्ज कुञ्ज में होरी खेले राधा गोरी ।
रङ्ग तरङ्ग नन्दनन्दन नेहके अबीर लगा बरजोरी ॥
गल बहियां दिए बन बन डोलत चितवत
चन्द्रचकोरी ।
ख्याल खुशाल करत मन भाए श्रीवृषभानु किशोरी ॥

७
ऐसी बंशी बजाई री माई मोहन लाला
सुनत भनक उठ धाई सखी री परसे है मदन
गोपाला ।
श्यामसुन्दर मनमोहनी मूर्ति सङ्ग लिये
ग्वाल औ बाला ॥
मोर मुकुट पीताम्बर सोहै उर वैजयन्ती माला ।
कृष्णानन्द रहत निशि वासर प्रेम अमी मतवाला ॥

८
क्या बान परी पिया तोरी रे मो सों खेलन
आयो होरी ।
अबीर गुलाल के बादर छाए मुख मोहन को रोरी ॥

९
जा दिन पिय सों होरी मचेगी सन्मुख होंगी
लजाय लजाय ।
और सखी सब बन बन जै हैं नए नए रङ्ग
रङ्गाय रङ्गाय ॥
अवगुण मेरे पिया सब जानत किह विध राखौं
छिपाय छिपाय ।
पञ्चतन पाक करम दे बजइन फगुवा लोंगो
रिझाय रिझाय ॥

१०
मेरो सुरङ्ग चुनर रङ्ग बोरी रे तो से अब न खेलों
कान्ह होरी रे ।
निपट ढीठ नन्दराय लाड़ले काहेको करत
बरजोरी रे ॥
बरज रही बरज्यो नहीं मानत लागो हो आवत
ओरो रे ।
ख्याल खुशाल करन चित्त चाहत कुञ्ज निकुञ्जन
ठोरो रे ॥

११
मन मोह लियो हो होरी श्रीब्रजराज दुलारे ने ।
होरीके दिन में नयन मिला के नन्दराय जीके
बारेने ॥
चितवन में चित्त चोर लियो है मोहन मुरलीवारे ने
ख्याल खुशाल देखाय परस्पर रसिया प्राण हमारे ने॥

१२
शाबाश रङ्ग में भीजत अङ्गिया दरकी ।
छतियन हाथ लगावत झिझकत चुरियन
मुरकी करकी ॥
बरजोरी रोरी मुख मोजत नई नई बात नगरकी ।
मोह जान बलिहार छिपाई तैं करी घर घरकी ॥

१३
मेरो अब कैसे निकसन होय देया होरी खेलें
कन्हैया ।
हों दधि बेचन जात वृन्दावन छीन लयो दहिया
महिया ॥
सासर जाऊं तो सास लड़त है पीहर जाऊं
लड़े मैया ।
इत डर उत डर मोहि सखी री मोहन नाचत
ता थैया ॥
चूनर मेरी सब रङ्ग बोरी और भिजोई पामरिया ।

सूरश्याम को कैसे भिजोऊं ओट लई कारी
कामरिया ॥

१४

होरी दोउ खेलें हो परस्पर आज ।
गुलाल अलक मुख लपट रह्यो है कुङ्कुम
बेंदो विराज ॥
बसन आभरण अतर रस भीने देख मदन आई लाज।
सुखसमूह निरख हित आनन्द युग युग करो
तुम राज ॥

१५

उठ री ग्वारन कर शृङ्गार होरीकी आई बहार ।
अबीर गुलाल ले फेंटन भर भरे केशरको पिचकार ॥
जब आवेंगे मेरे श्याम कन्हैया मिरको कुङ्कुम
भर थार मार ।
सूरदास प्रभु सोई सुहागन जा तेरे आगे
खेले धमार ॥

१६

अब सुख मोड़ोंगो गहे पाए हो मोहन ।
लिए गुलाल फिरत थो कबको सुखन बनो
मो गोहन ॥
कज्जर देऊं बनाय लालके जैसे दृग ढिग सोहन ।
उदयराज प्रभु मदनमोहन प्रिय निमिष न
करो बिछोहन ॥

१७

सुन्दर श्याम सलोने ने सखी मोरे नयनसे नयन
मिलाय ।
जैसे काग भुजङ्ग डसत है सखी मेरो बाल बाल
लहराय ॥

१८

सांवलिया रङ्ग मानो हो जी राज गाढ़ी अरज
करों हो फाल्गुन आयो ।
मिलि खेलन री चाव होरी में भाग्यन इह
दिन पायो ॥
ब्रज दुलहन या सां पर सों केशरो रङ्ग मिलायो ।
रूडा लागो छो वलिहार विहारी रूडो थारो
खेल सुहायो ॥

१९

रसिया जाने न देयां हो राज रसिया अब मैं
खेलोंगो होरी ।
अब मैं मोल लई मई सारी देया ता है सुख
मोड़ोंगो बरजोरी ॥

२०

मन पाग गयो श्यामसुन्दर कान्ह प्यारे सो सङ्ग
लागोई खेले होरी ।
दधि मेरो खाई मटुकिया फोरी माखन कर
गयो चोरी
अटक गयो मतवारे राजसङ्ग खेलों होरी ॥

२१

होरी खेलन तुम आए रसिया अबीर गुलाल लिए
भर झोरी ।
काहूके हाथ में अतर अरगजा काहू खड़ी है
रङ्ग में बोरी
अपने पीके होरी में खेलूं एक सांवरो एक गोरो ॥

२२

कैसे खेलूं फाग देया मैं कैसे खेलूं फाग ।
जिनके पिया परदेश सिधारे जियरा नित वैराग ॥
वे ठाकुर ठकुराई करत हैं मैं तो विनकी दासी ।
मोहे अङ्ग जराय मदन सखी री छाड़ चलो
अविनाशी ॥

२३

ए हो नन्दनन्दन व्रजराज श्याम मोरी सखी मेरी
बहियां मरोरे री ।
सोतनके घर जायके मेरो हरवा टटोरे री
और को सुनर छू न सके है मेरो घूंघट खोले री
ए री मेरो गागर ढोरे री ॥

२४

हो होरी खेले सब चायन गोपी गोरस रस मचे।
डफ मृदङ्ग ध्वनि बांसरी बजाए मनकी कलोलन
आप ही आप में सब रङ्ग रचे॥
खेल मच्यो ब्रज वीथिन कुञ्जन गावत रागन सचे।
आनन्द बढ्यो अपार गोकुल में नरनारी सब नचे॥

२५

जैये री केहि विधि यमुना तट विचवा ठाढ़ो
ब्रजराज।
काल को भय अब लौं नहीं भ्रम भयो बहोर करे
ढङ्ग वैसो ही आज॥

२६

सुनत डफ दौरी आई ग्वार दौरी आई हार।
अबीर गुलाल के बादर छाए रङ्गको परत फुहार॥
अब तो आन वश परे हो हमारे कहां जावोगे
नन्दवार।
मुरली लई है छिनायके श्याम जू को चलत दे
गई गार॥

२७

अब तुम तो नीकी तानके सुनैया रिझैया रङ्ग में
भिजोई हमारी चीर।
हम बरजत तुम मानत नाहीं ए राजा उमराव
अमीर॥

२८

ए री डफ बाजन लागी री नगर में होरी खेलन
आए कुंवर कन्हैया कुबरी।
पनिया भरन कैसे जाऊं सजनी री बीच ठाढो
श्याम डगरी॥

२९

एक ग्वालन आवे रङ्ग भरी डगरी गोवर्धन की
गैल री।
पेला बनी रहत वाके रीझ सो रिझवत मोहन
छैल री॥

१०

कान्हकी प्रीति में लोकलाज सब त्यजी एते पर
अपने कोई न भए।
मेरो मन आली यह नयनन उरझायो है कौन
को दोष अब केवे के दए॥
फूले वन टेसू नहीं भावत है मो को यह देखत हूं
लहलहात पात हरे नए।
कैसे समझाऊं जिय मानत नाहीं दर्श बिना
आयो री फाल्गुन दो चार दिन गए॥

११

प्रेम नगर को पैंडो न्यारो भूल कोऊ मत जाव री।
मनमोहन मुरली ध्वनि टेर सुनाय करत है बावरी॥
अबीर उड़ाय चोर ले भाजत ता पर कहत मेरे
गुण गाव री।
अम्बर गहि मुख मोड़त दरस कतहूं देखो
यह न्याव री॥

सोरठ—धमार

आज मधुवन में कान्हर बन बन खेलत फाग।
मेरी चुनरिया बोरेगो रङ्ग मे मैं भी भिजोऊं
वाको पाग॥
तत वित तघन ग्रिखर बाजत गावत सोरठ राग।
जिन जिन मुरलीकी भनक सुनी है धन्य धन्य
उनके भाग॥

२

गोकुल आज धूम मची है होरी खेलत ब्रजभान।
मृदङ्ग झांझ कठतार डमरू डफ बाजत
मुरली की तान॥
ब्रजकी सखी सब सुन कर धाईं उनके भए हैं
आदर मान।
उठ चल अब मिल नन्दलाल सो इतनो कहा
मेरो मान॥

मन्दिर आज हो रही होरी खेलत लक्ष्मिकिशोरी।

ब्रजको सखी सब बन बन आईं कोउ सांवरी
कोउ गोरी ॥
एक के बसन पर रङ्ग डारत है एक के मुख मलत
है रोरी ।
एकको कुच पर मारत है कुङ्कुम कहे कर
हो हो होरी ॥

सिंदूरा—धमार

दस्त पिचकारी भर भर फेंकत प्रिय मो पर
उपजत अनेक रङ्ग ।
मदमातो विया छतियां छैल सो सनमुख झूमत
प्यारो सङ्ग ॥

सोरठ—धमार

क्यों कर गाऊं मैं देश पिया परदेश जियाको
अन्देश ।
अपने यौवन को विभूति रमाऊं कानों बीच मुद्रा
पहराऊं मैं तो कियो योगिनि को भेश
आदेश हमारो सुन पथिकवा अचपल सो कहियो
यह सन्देश ॥

सोरठ-पहाड़ी

ब्रज कुञ्जन जाय पकर ल्याई नन्दके लाला ।
हा हा करावत पाय परावत ब्रजकी बालगोपाला ॥
एक सखो कर पकर नचावत बहुत बजावत गाला ।
नयनन अञ्जन खञ्जन करके लोग कहें ब्रजबाला ॥
आन यशोमति यह छवि देखो मोहन मुरलीवाला ।
पाय पैञ्जनो अधिक विराजे बेंदो भाल विशाला ॥
बेसरकी छवि कहां लगि बरनों झूम रहो
मोतिमाला ।
वृन्दावनकी कुञ्ज गलिन में खेलत नन्दके लाला
सूरश्याम छवि कहां लग वर्णों मोह लई ब्रजबाला ॥

२

सांवरे मोहन होरी भलो खेल आए ।
अनुरागी पागी रस पागी दृग अति हो छवि छाए ॥
कहूं अञ्जन कहूं भाल महावर कहूं केशर रङ्ग लाए ।
औरसरङ्ग साचो कहो मो से कौन सुघर फगुवाए ॥

३

चित्त मेरो लाग गयो श्याम रङ्गीले प्यारे सो ।
तब ते उन सो मेरो नेह लगो है मैं तो चाहों
वा को बारे सो ॥
कारो रङ्ग प्यारो दृग कारो का रे बचे कोउ कारे सो ।
सनमुख होत चाहत जिय निकसत रहत वाही के
संभारे सो ॥
ठौर ठौर नीको छवि जो है सोहै लाल हमारे सो ।
जो देखे सगुण में काजम सो देखे निर्गुण न्यारे सो ॥

४

मेरी सुरङ्ग चुनरिया बोरो रे तोसे अब न खेलें
कान्ह होरी रे ।
निपट ढीठ नन्दराय लाड़ले काहे को करत
बरजोरी रे ॥
बरज रहो बरज्यो नहीं मानत लागो हो
आवत थोरो रे ।
ख्याल खुशाल करन चित चाहत कुञ्ज निकुञ्जन
ठोरो रे ॥

देश-पहाड़ी

माई नन्दके लाला कैसो वेणु बजाई रो ।
वेणु बजाय के मन हर लीन्हों सुधबुध बिसराई रो ॥
सुनत बांसरो ग्वालिन धाई रोझ बूझ दधि खाई रो ।
मीठे स्वर अधरन धर टेरत जियरा लेत चोराई रो
कृष्णानन्द मदनमोहन ने मोहि लियो अपनाई रो ॥

पीलू—धमार

मो पर रङ्ग न डारो कन्हैया सास ननदो मोहे
देगी गारी ।
भर पिचकारो मुखपर मारी भोज गई तनसारी ॥

पीलू-पहाड़ी

तेरी बलि जाऊं सांवरे नेक जो वेणु बजाव ।
हा हा करूं औ पइयां परूं तोरे वेग मधुर ध्वनि
मोहे सुनाव
तेरी मुरलिया मन हर लीन्हों घर अङ्गन न सोहाव ॥

२

विनती मोरी मान ले तोहे मोहन ने बुलाई ।
सङ्ग सखी तोमें सभी छिटकाई कुब्जा मन बिसराई ॥
तेरी सौं मोहे प्यारी राधिका राधा ए राधा रट लाई ।
बाजत ताल मृदङ्ग झांझ डफ घुंघरुनको सरसाई ॥
चोवा चन्दन और अरगजा केसर माट भराई ।
सुन सखियन को वचन लाड़ली हर्ष हुलस उठ धाई
लालदास चरणनके प्यारे देखत कण्ठ लगाई ॥

देश—पञ्जाबी

बावरी बन आई तुझे किन होरी खेलाई ।
सास कहे मेरो बारो बहुरिया अङ्गिया ते यह
कहां दरकाई
सासुजीके पुत्र ननद जूके बीरन जिन मोरी
मति बौराई ॥

पञ्जाबी—यत्

कान्हर कर झकराई पकर जाय ग्वाल ग्वालनो ।
कोऊ कहत गोपी दही को दान दे एक कहे
कंसको पालनो ॥
एक कहे फगुवा मांगनको आई एक कहे
छाड़ द्यो मालनो ।
एक कहे रङ्ग भर हारो खेलन आई एक कहे
ग्वालको बालनो
प्रेमरङ्ग प्रभु फगुवा बनाई लूट में पाई लालनो ॥

२

फिर कपटी कारो कोकिल बोलो सुनत मदन
वश तन मन डोलो ।
मैं जान्यो भर गई शीत तें कि न कपोत वन
कातुक खोलो ॥
अलिकुल कुसुम मान तुपक लाए विरहके वाण
वियोगको गोलो ।
प्रेमरङ्ग पिचकार चलैगो प्रभु बिना प्रबल
परैगो होलो ॥

१

मेरो आयो मेरो कान्ह मैं खेलोंगो होरी ।
अक्रूर आय ले गयो अब कुब्जाजोको भोरी ॥

पीलू—यत्

मो पर रङ्ग न डारो कन्हैया सास ननदिया
लरैगी मोरी ।
हा हा करत हौं पैयां परत हौं चेरो मैं ए री तोरी ॥
अबीर गुलाल कुङ्कुमा मारत और करत बरजोरी ।
छणानन्द कहत कर जोरे पुनि पुनि करत निहोरी ॥

सोरठ—यत्

रसिया हो राज होरी रङ्ग राचे ।
म्हारी चुनर सब हो भिजोई केसर कीच रह्यो माचे ॥
बाज रहे छे वीणा मृदङ्ग ध्वनि गावत स्वर में साचे ।
रसिकविहारी पिय प्यारी मिल खेलें तत थेई
तत थेई नाचे ॥

२

चुनरी में रङ्ग जिन डारो सांचो कहो वचन दो
हमको जब खेलत तुम सङ्ग ।
हो मनमें ऐसे ललचाने देख विराने गोरे अङ्ग
उनके मन में ऐसी आवत है अब भर लीजे निसङ्ग ॥

३

रे ऊधो को खेले व्रज होरी ।
मन हर लियो नन्दनन्दन जू कुंवर राधिका गोरी ॥
अन्तर्गतकी व्यथा हमारी जानत नाहिं न कोरी ।
कहा कहौं विश्वासी सुरको प्रीति अचानक तोरी ॥

४

हो हो होरी खेलन मेरे आए ।
बलिहारी इन पायनको जो पिय तुम आन देखाए ॥
शीतल भई आज अंखियां सुफल कामना पाए ।
देख सदारङ्ग यों होरी कैसे सुघर बनाए ॥

५

कहां तोहे टेव परी बनवारी मोहे पैंड़े आत
छेरनकी ।

लाजन सन हों भीजी जात हों सङ्ग सखा नेरनकी ॥
हौं यमुना जल भरन पठाई को वैर घेरनकी।
करेगी चबाव मो घर अब सास ननद जेठानी
देरनको ॥

६

रसिया जान न देयो हो राज रसिया अब मैं
खेलौंगो होरी।
अब मैं मोल लई देया तोहि मुख मोडौंगी वरजोरी
हो रसिया ॥

सोरठ—धमार

ए री अति धूम डारी आज व्रज में होरी खेलत
नन्दलाल।
काहूको बहियां पकर झकझोरत काहूको अङ्ग
लगाय करत बेहाल ॥
हौं न जाऊं आली अब दधि बेचन राज करो उनको
अनोखो ख्याल।
जहां पावत तहां रङ्ग में भिजोवत पनिया भरनतें
बैठ रही व्रजबाल ॥

२

हो हो होरी हो हो होरी सब जग होरी हो
रही हो।
सब ही सुहागिन खेलन निकसी हौं दुहागन
सो रही हो ॥
अवसर सब ही बीत गयो है ना जानो कौन
गति बही हो।
गुण अवगुण ले चलहुं सइयां पै जायके चरण दोई
गही हो ॥

३

हो हो होरी हो रही है नन्दलालके द्वार।
व्रजवनिता सब मिलके धाई तनकी रही न संभार ॥
अबीर गुलाल के बादर छाए सरस रङ्ग निहार।
नाचे गावे ताल बजावे भड़वा कहे बार बार ॥

४

आयो फाल्गुन मास री सजनी उमंग चोप बैठी
आय अब होरी खेलिये छत्रपतिके सङ्ग।
दुःख भाजे सुख प्राप्त होये अब गहीजीजी
चरणकमल से रङ्ग ॥

५

आवो री सखी चल अकबरके सङ्ग रीझ भीज
खेलिये रङ्ग।
फाल्गुन मास में रार न कीजे
सौतनके हिय हुलास न दीजे
ए री बजत तार झांझ डफ मृदङ्ग ॥

६

आज रची श्यामसङ्ग होरी सङ्ग नवल राधिका गोरी।
करन कनक पिचकारिन भरत रङ्ग धावत आवत
जोई गावत भावत सोई अबीर गुलाल मुख मलत
चलत हंसि चपल चमकित चोरी ॥
हरि सङ्ग ग्वालबाल करि अनगन ख्याल कोऊ
डफ मृदङ्ग बजावत गावत फाल्गुन मुरलीकी ध्वनि
घनघोरी।
कृष्ण रङ्ग निरखि हर्षि सुर नर नाग मन में सिहात
लखि गोपिनको अनुराग सुरपति सारद सराहत
सुहाग भाग्य यह व्रजसुख सब मोरी ॥

७

कोऊ कुंवर कान्ह बरजे मेरो हियरो लरजे।
अति ही चपल छल बल न करत कल लगोई रहत
सङ्ग तजत न एक पल छल बल करत न डरत
काहूको डर कैसे कर जल भरजे ॥
निपट अबाई यह व्रजकी लुगाई माई नाहक कलङ्क
लगाई करत हंसाई आई कहो अब कैसी करजे।
कृष्णरङ्ग अब नन्दकी दुहाई नेक भुज गहे चलत
पराई व्रज दुरि जाई बांसरी बजाई गाई अधिक
रिझाई पाई करत अपनो गरजे ॥

८

तुम नए भए दधि दानी मानत न काहूकी कानी।

अति ही निडर न डरत गुरुजन डर वर वश लरत
अरत नित्य ही नित्य नन्दके छैल बोच गैल पैल
गह बतियां करत छल सानी ॥
काहू न चलाई अब ताई ठकुराई ऐसो यही पुर
बसत सदाई चल आई हम कंसरायको राजधानी ।
कृष्णरङ्ग अब कोउ कैसे के बसाई ब्रज तिनकी
चवाई सही जाई न कन्हाई सब ग्वालके बाल
कसहाई सङ्ग पाई नित्य करत ठगाई हम जानी ॥

९

बालम तुम विन कैसे खेलौं होरी ।
बीती जात ऋतु फाल्गुन अजहूं न लीन्हीं सुध मोरी ॥
जैसे मीन जल विन तरफत सो गति भई है मोरी ।
सुन रे पथिकवा जाय कहो उन से सन्देसवा
लोगनको कहा चोरी
कृपा करो आवो लालन अब बहुत गई रही थोरी ॥

१०

मोरे पिया रे बालम परदेश होरी मैं ना खेलौं ।
होरी अहोरी सब जग होरी मैं केहे सङ्ग रङ्ग
भर रेलौं ॥
सोना लेने पी गए सूना कर गए देश ।
सोना मिलो न पी मिले रूपा हो गए केश ।
अपने सइयां को ढूंढ़न निकसी कर योगनको भेश ॥

११

हेरो मस्त भयो डोले होरी को निपट निडर
घनश्याम ।
डगर चलन नहीं देत लेत गहि रोकत है सब गाम ॥
मन में धरत सो करत डरत नहीं उझक फिरत
घर घर आठो याम ।
जानकीदास हंस मन्दिर में धंस ले ले बुलावत नाम ॥

सोरठ—यत्

माइक ननदी वैर परी है यो होरीको दांव रसिया ।
देत गारी ब्रजनारी बोले न भूखहो कठिन स्वभाव
रसिया ॥
नेड़े आय हंसिके दुःख हरिये जो तुम प्रीतिन चाव
रसिया ।
बलिहारियां री आशा पुजावो हंसत खेलत घर
आव रसिया ॥

२

कान्ह मूंद घर में छिप बैठो ए री बोरी फेर होरी
आई री ।
डफ मुरली ध्वनि बहोर बजैगो जैन लो लाई री ॥
तनमन नयन में माहिनो मूर्ति निशदिन छाई री ।
लाल गुलाल भरे मुख देखन उठ उठ धाई री ॥
गुरुजन दुर्जन करत चवाई लाज लजाई री ।
प्रेमरङ्ग में भीज रही हौं मति बौराई री ॥

सोरठ—तिताला

कान्ह तोहे ऐसी मति कौन दई ।
देख पराई नारी सलोनो होरी करत नई ॥
डार गुलाल आंज आंखन में भुजा भर अङ्ग लई ।
केसरको पिचकार मारके बहियां पकर लई
कृष्णजीवन अबलाको यह गति देखो काहूं न भई ॥

२

मुख मल डालौंगो बहोत चले इतराय लाल ।
सब सखियन में ऐंड़ोई डोले मुख में मले गुलाल ॥

३

ऐंड़ो बैड़ो डोरे कुञ्जनमें भरे लाल मतवारो
ब्रजनार ।
कान्हके मुखसे अबीर मलो री कान्ह पे भर पिचकार ।
ऐसो होरी खेले किफायत रङ्ग दियो संसार ॥

जयजयवन्ती—तिताला

माई आज तो मोहन सङ्ग रङ्ग भर खेलौंगी ।
लोकलाज पायन सो पीछोड़ोय पे लौंगी ॥
निदरौंगी आर्य पथ न डरौंगी ।
ह्वे निधरक अङ्कवार पियको भरौंगी केसर रङ्ग
रङ्गीलो करौंगी ॥
बेसरके मोती काज फगुवा भरौंगी ।

ललित त्रिभङ्गी रसढरनि ढरौंगी
रतिपति रण व्रजपति सौं लरौंगी ॥

२

आए हो रगमगी रैन के लाल गुलाल से रङ्गरङ्गीले।
सोंधे भीने बालकी बालके अङ्ग लगी ताते
अङ्ग अङ्ग ढीले॥
कर सङ्केत कहो नित्य आवन भोरे बोरे नखशिख
खगोले।
प्रेमरङ्ग अवगुण गुण मानत लगत हो कण्ठ लगत
हो रसीले॥

३

आज सखी होय रही होरी नन्दनन्दके द्वार।
अबीर गुलाल कुङ्कुमा केसर भर भर रङ्ग पिचकार॥
छिरकत रङ्ग श्याम पै राधा श्रीवृषभानु कुमार।
मलत गुलाल श्याम मुख मोहन गावत मिल व्रजनार॥
ताल मृदङ्ग झांझ डफ बाजे नाचत गोपीग्वार।
रागरङ्ग आनन्द नन्दके बार बार वलिहार॥

४

अद्भुत फाग मच्यो गोकुल में गोपग्वालनी
देखन आई।
फाल्गुनके दिन चार सखी री चर्चा करेंगे सब
लोग लुगाई॥
एक गावत एक मृदङ्ग बजावत एक सनमुख
लड़वे को धाई।
छिपत फिरत भोजत कुञ्जन में पकर मोहन जू की
आंखें अञ्जाई॥

५

हों कहा करों री कैसे रहे कुलकान या व्रज में माई।
एक यौवन मद छको फिरत है निडर करनको
होरी आई॥
नयो यौवन सुन्दर नारिन ले पकर करत मन भाई।
गुलाबको प्रभु माधव मनमोहन रसको धूम मचाई॥

६

ऐसो खेलारो रसिया मोरा होरी में करत है
बरज़ोरी।
आप खेले और मदको खेलावे बहियां पकर मोड़े
रङ्ग में बोरी॥
व्रजकी सखी सब बन बन आई मनमोहन घर
रचो है होरी।
हाथ लिए पिचकारी प्यारी और आय कहे
हरि हो हर होरी॥

७

होरी खेलौं मैं तो मोहनके सङ्ग रङ्ग में लेहौं
भिजाय।
फगुवा लेहौं तब जाने देहौं पीत दुकूल लेहौं
छिनाय॥

८

व्रजकुञ्जन में खेलत होरी नन्दनन्दन वृषभानु
किशोरी।
अबीर गुलाल उड़ावत गावत रङ्गत केसर रङ्ग
अङ्ग बरजोरी॥
चितवत चित्त चोराय लेत है रसिया नागर
श्रीराधा गोरी।
कहीं यमुना तट कहीं वंशीवट धूम फाल्गुन
ऋतु चारो ओरी।
निरखत रसिक खुशाल श्याममुख जैसे
विलोकत चन्द्र चकोरी॥

९

कैसे भरों दिन रैन लङ्गर सङ्ग लागो ई डोले
फाग को अवसर पाय सखा मेरो अम्बर खोले॥

१०

खेल ले कुब्जा पिय सङ्ग होरी पूरी भई मन
इच्छा तोरी।
श्यामके नयन लगे हैं तो सों सनमुख आव न
कर चित्त चोरी॥
बहियां पकर झट छीन ले कामर बोर दे रङ्ग में
पीत पिछोरी।
कैसे मोहन को वश में किए ते हाथ मलत है
राधागोरी।

मान तुराव का कहना इतना मान न कर
वृषभानु किशोरी ॥

११

चकोर मलूँगी कपोल तिहारे यशोदा लाल
ब्रजराज दुलारे।
यह ऋतु फाल्गुन छाय रही है जो तुम आए हो
धाम हमारे ॥
रैन जगाय लेहीं रस रसिया छैल छबीले
प्राण पिया रे।
ख्याल खुशाल भरे मनमोहन यौवन उमंग उमंग
उमंगा रे ॥

१२

अबको फागुका रङ्ग न पूछो धूम मची है
श्रीवृन्दावनमें।
श्यामविहारी चतुर खेलारी खेलत है होरी
सखियनमें ॥
कर में लिए कञ्चन पिचकारी अबीर गुलाल
भरे दामनमें।
अङ्ग निहारत ताक के मारत दाग लगावत
उजरे वसनमें ॥
कैसे कोउ अब घर से निकसे ठाढ़ो है ढीठ
लङ्गर अङ्गनमें।
मो को कहा वो ढूंढ़े पावै मैं तो छिपी तुराव के
मनमें ॥

१३

डगर डगर डगमगे डगन सों होरीके मदमाते आए।
सगर वगर जिय झगर झगरके रससमुद्र
आनन्द बहाए।
अगर तगर ले जगर जगर मुख लछ्यानन्द रूप
अन्हवाए ॥

१४

मन छीन लियो कियो वशकी एक बात कभू
न कियो वशकी।
प्रेम प्रीति को यह फल पाया बात करो डर है
तू देशकी।
लछ्यानन्द मोहिनी मूर्ति रहे करेजे मेरे कशकी ॥

१५

ऋतु फाल्गुनकी आई माई श्याम हमारी
लाज गंवाई।
वरवश चूनर छोर लई वह देत रही मैं राम दुहाई।
लछ्यानन्द एक नहीं मानी ऐसा लङ्गर ढीठ कन्हाई ॥

१६

ए री लाल मिले भी लाज रहे ऐसी बतावो
कोउ युक्त।
जामें प्रकट न होय प्रीति यह ऐसो मन्त्र देहो
मोहे गुप्त ॥
सास ननद भी गुरुजनको डर एको नाहीं
बनत यह युक्त।
श्याम दरश होरी गावत है देखो लेत तान नई उक्त ॥

१७

आतुरको भए छिन में जो सूरत रूप सजेगो।
अब झकझोरूं बोरूं रङ्ग में तारो दे दे आलो
पुञ्ज नचेगो।
लछ्यानन्द कराऊं हा हा प्यारे निशदिन मोहि
भजेगो ॥

१८

होरी रङ्गराती अङ्ग यौवन उमङ्ग माती सांवरो सो
छैल गैल मांझ ढिग परिवो।
मैं तो केतो कीन्हीं अभी बीच में हो निकसवे को
आय अति निडर अरेल आन अरिवो ॥
केतिक ठगोरी एक ठौरीके निहारो ऐसी सुझको
निहारन में चित्त सब हरिवो।
चेटक हो हाथ में कि धौं गुलाल हों न जानों
ताहो साथ कहां मेरी आंखनमें भरिवो ॥

१९

अति रङ्ग रसिया ब्रजको बसिया होरी में मोहि
श्याम मिलो री।

अतर सुगन्ध गुलाब अति भीने प्यारे अङ्ग
लगो री लगो री ॥
कर कञ्चन सोहत पिचकारी केसर रङ्ग
भरो री भरो री।
घट घूंघट पट खोल लाल मुख अबीर मलो री
मलो री मलो री ॥

१०

बाग़के बगर अनुराग भर भर खरी खेलती है फाग
मनमोहिनी गोपालकी।
राज करे इन्दु अरविन्दुसेन काज आज देखत हो
मञ्जु शोभा वदन विशालको॥
भृकुटी तिलक पर बारुणी पलक पर ए बई
अलक पर झलके गुलालकी।
कालीदास ललक लली हो छवि ढलके छवि
मुखनमें कपोल और भालकी॥

११

होरी लागी कान्ह अब हो तें उमदात फिरो
जरे ऐसो ख्याल जो मैं लाज टर जायगी।
चलेगी पी पिचकारी तो तिहारी सों बिगर जै है
नई ज़रतारी मेरी सारो भर जायगी॥
झूठी मान मूठी लेजे मुख तुम तानत हो गइयां के
चरैया हो वलैया डर जायगी।
परेगी गुलाल मेरी आंखन में लाल तो गोपाल
आज ब्रजमें जुवाल पर आयगी॥

१२

भली भई होरी आई घर आए घनश्याम।
लोग कहै टोनवा पढ़ डारो ए राधाको काम॥
धन्य तेरो भाग्य सुहाग भावती और न दूजो वाम।
कृष्णजीवन लच्छीरामकी इच्छा पूजिए वेग हो श्याम॥

१३

बनवारो लाज बिसारी ऐसो रङ्ग डारत भीज गई
तनसारो।
धाय धाय नन्दधाम कहै तो है मुख मोड़ों
गिरिधारी॥

पाछे ठाढ़ी सब पार परोसन हंसत खेलत सब
नरनारी।
लाज सकुच सब तज डारी है एक मूंठ तै लाज
बिसारी।
एती निठुराई कौन बदो कान्ह जिन देहो गारी॥

१४

सखो आज बाग़ में फाग रच्यो होरी खेलत
संसारचन्द।
जित जावत तित रङ्ग मचावत बाजे मन्दिरला
घर घर आनन्द॥
उड़त गुलाल अबीर अरगजा विचित्र अतर सुगन्ध।
रङ्गमहलमें रङ्ग मच्यो मानो कुञ्ज भवन में खेलैं
गोविन्द॥

१५

ए री आज खेल ले पिया सङ्ग होरी बांह जोरी।
हों जो मनावत तू नहीं मानत सुन री राधा गोरी॥

१६

ए री आज पिया अपने सङ्ग खेलोंगी होरी।
अबीर गुलाल अतर अरगजा सुगन्ध लिए भर झोरी॥
फाल्गुन मास में लाज केह काम की वे हैं
कृष्णकिशोरी।
खेलैं फाग सब अपने पिया सों कोई सांवरी
कोई गोर॥

१७

सखी मांगि दे री अपनो नाह दिन चार।
अम्बा मौरे टेसू फूले और फूली कचनार।
कृष्णानन्द सोहाग भरी तू देखहि लाल बहार॥

१८

फाग खेलत मार मार भाजत हो हो हो री बड़ो
फागको खेलैया।
लगाए लगत न छुटाए छूटत अब कहा करों ए
मेरी दैया॥
हंसन अभिरतें देत न मोहे नन्दको है दईमारो
कन्हैया।

भाजत भाजत लागत लागत को वह नयो
लाग लगैया ॥

१९

आवो सइयां तुम सन होरी खेलैं केसर रङ्ग
बनाय बनाय ।
आनन्द केलि मचावैं दोउ अबीर गुलाल
उड़ाय उड़ाय।
कृष्णानन्द सुफल कर जीवन पइयां लागत धाय धाय॥

२०

कैसे भरौं दिन रैन सखी सङ्ग लाग्यो है छोरे।
मेरे तो सङ्गकी दूर निकस गई मेरो अम्बर छोरे।
कृष्णानन्द प्रेम रस माती प्रीति मथानी आनि टटोरै॥

२१

मनाई ऋतु लाल सों धन्य धन्य माई तेरो सों
देखाई देत चैन सुखपर मांह।
भौंडल मोड़ो और तियन मिल जानत मन मांह ॥
टरकी चोली प्रगट क्यों करे कुछ सरकाय
राखो दोउ बांह।
छिन मेरी आंख सुख सकुची है क्यों मैं सांचे
कहूं छांह ॥

२२

होरी के दिनन में सुनिए री बौरी मोहे लग्यो
बैराग हो।
जो आवे सो रङ्ग हो में बोरे जो जिये सो खेले
फाग हो।
कृष्णानन्द विचार कठिन है प्रीतमको अनुराग हो॥

२३

गौनेकी रात में भोर हो दुलहिन बैठ रही बिन हो
अनबोले।
गात सो छाती छिपायके सुन्दर नारि निवाय
दुराय कपोले॥
देखनको जुर आई सबै तिय ननद जेठानी करे
सो कलोले।
एक हंसे एक बांह गहे एक अम्बर ऐंचके
घूंघट खोले॥

२४

आयो फाल्गुन मास लाल अब खेलूंगी फाग
बनाय बनाय।
भली बनी अवसर आली सब खेलन बाग
बनाय बनाय।
होय एकट्ठी अब घेर लिए हैं दोजे सब हो
गिनाय गिनाय॥

२५

होरी में मोहि श्याम ठगो री।
वदन जोर मुख मोर चोर चित्त ले गयो कर
बरजोरी अहोरी॥
फिर फिर पूछत राधे सबनको मेरो मोहन कित
गयो है चोरी।
केलि खेल सब भूल गयो मोहे मन तो नेवाज
कहां अटको री॥

२६

नन्द महरको लाड़लो खेले होरी सङ्ग लिए
वृषभानु किशोरी।
अबीर गुलाल कुङ्कुम केसर चन्दन वन्दन
बुक्का ले रोरी॥
राधामाधव खेल रच्यो है सुख बाढ़ो चहुं ओरी।
रसिक छैल रस वश कर लीन्हीं श्रीवृषभानुकी पोरी॥

२७

आये फाल्गुन मास कछ पठवेको ना रह्यो।
सुख मल हों अब रस वश कर हों अब लों
बहुत सह्यो॥
मेरे मनकी भांवर प्यारे जब पिचकारन रङ्ग छह्यो।
रसिक छैल प्रभु ब्रजके रसिया मनमाने फगुवा लह्यो॥

२८

होरी खेलिये माई अपने लालन सङ्ग धाय।
रूप यौवनकी अति हो माती रहस रहस गर लाय॥

चोवा चन्दन बन्दन रोरी अबीर गुलाल उड़ाय।
रसिक छैल को रस वश करि हौं ले हौं
फगुवा मनाय॥

३९

होरी आई माई अपनो करके ख्याल मेरो कहा
मान ले।
एकन पे छिरके रङ्ग एकन पे अबीर गुलाल
एक नीको तान ले।
जानत नाहीं अपनो परायो रसिक छैल समझ
बूझ पहचान ले॥

४०

जो खेलो तो सूधे खेलो हो तुम चतुर खेलार।
आंखि गुलाल लाल मत डारो सुनिये जु नन्दकुमार॥
रस राख्यो जो चाहो मोहन समझ अबीर
भरो एही बार।
हमरे तुम्हरे खेल दूर तब कस बजाव बलिहार॥

४१

होरी में होरो कहो री किशोरी जाय के कोऊ
व्यथा यह मोरी।
फागमें लाग बढ़े अनुराग सुहाग सनेह को
चाहत गोरी॥
प्यारे तिहारे निहारे विना यह भारे कटे दिन
रैन निगोरी।
सागर आगर रूप उजागर नागर हो के मोहे
विछोरी॥

४२

अहो री चलो री खेलो री होरी नन्दको पोरी
मचोरो है होरी।
बाजोरी साजोरी ज्यों घनघोरा खेल रच्यो री
वृषभानु किशोरी॥
अबीर मलो री मुख मींजत रोरी हो हो री हो
हो री बडोरी कहो री।
रागसागर प्रभु गुण आगर नागर रूप उजागर
दृग देख ठगो री गोरी॥

सखी होरी ख्यालमें गोरी किशोरो आज
अनुपम रीति लहो।
पहले झपट पीत पट खेंच्यो ठाढ़े रहे दूरि
जा के तहो॥
गुलाल सो छायो गोपालको प्यारो फगुवा ले हो
इस बात कहो।
पिचकारिन बहुरङ्ग मारो लला अब आन पड़े
वश मेरे सहो॥

४३

होरी खेलिये री मेरो सजनो अपने प्रिय सङ्ग जाई।
रूप यौवनकी अति हो मातो देखिये तेरो सुभाई॥
ये फाल्गुन भाग्यन ते पायो मन में समझ बनाई।
पीको पाय के जान न दीजे फेर अवसर कहां पाई॥
रस हो हाथ रहैगो तेरे हों जो कहो तेरे
हितकी सुनाई।
मान किए लालन कहां पइ हो सौतन हो को चाई॥

सिन्धु—धमार

होरी होय रहो है नगर में खेलत कृष्णकिशोरी।
एक गावत एक मृदङ्ग बजावत एक नाचत है गोरी॥
अपने अपने घर तें निकलो एक सांवरो एक
रङ्ग में बोरी।
केसरकी पिचकारी चलावत बारी वयस
दिननकी थोरी॥

२

अचानक रङ्ग भरो कहा धरो जिया में तुम आए
बदो मैं ठांव।
अपनोसो जो करत न चूको मत कहियो राधे नाव॥
ए हो लाज के रङ्ग में बूड़ रहो हों देखत सगरो गांव।
तेरी चतुराई तोहे बनाई पूजों तेरो पांव॥

३

फाग रच्यो व्रज में अब खेलत है श्रीनन्द कुंवर
वृषभानु किशोरी।
जैसे ही राधा वैसे ही माधव दोउ करत बतियां भोरी।

चलो सखी मिल देखन जइये आन रूप सब
ब्रज ही बनो री ॥

खम्भावती—तिताला

आज ऐसो होरी सइयां मैं ना खेलूं मेरे मुखपर
अबीर मलो री।
कृष्णानन्द प्यार उर लावत नागर नवल किशोरी ॥

२

रङ्गभीने आए होरीके दिनन में धाय धाय।
महाराज तुम जशन मुबारक भई प्रीति अधिकाय ॥

३

तुम आए हो मेरे होरी खेलन को भूल गई
कालहकी बात ब्रजलाल।
जिन सो खेलिये उन सो जाय खेलो अपने उमंग
ल्याए बिनागुण उरमाल ॥
सूधी नज़र क्यों न हमसन बोले अञ्जन अधर
महावर भाल।
लक्ष्मणदास जागे भाग्य मेरे नयनन निरखत
अब तो भई है निहाल ॥

४

मेरी सौंह न मानत धाय धाय डारत झोरन गुलाल।
भर पिचकारी रङ्ग भर लावत धूम मचावत ओट
पाय के कर ख्याल।
प्रभु नन्दलाल हठ धरणो वरजे होत गरे की माल॥

५

होरी खेलत नन्दनन्दन ब्रज में सखी भर पिचकारिन
न बोरत।
कैसेके जाओं सखी पनघटवा धर बहियां
झकझोरत ॥
ले गुलाल वर वश मुख मोड़त अपनी बार
मुख मोरत।
मञ्जुल मधुर बजाय बांसरी दृग जोरत चित्त चोरत॥

६

होरी खेलिए प्यारे बिना अब कैसे।
अम्बा बौरे टेसू फूले सखी हमरे बालम कित
बिलम्ब रहे ॥

७

मेरे सुघर कन्हैया गोकुल खेलत होरी रे।
एक ओर सङ्ग सखा लिए मोहन एक ओर राधा
गोरी रे ॥
बाजत ताल मृदङ्ग झांझ डफ पिचकारिन रङ्ग
बोरी रे।
श्रीरसरङ्ग निरख दोउ छवि चिरञ्जीव रहे
यह जोरी रे ॥

खम्भावती—तिताला

रङ्गभीने कान्हा रङ्गभीनो कैसी होरी मचाई।
हौं यमुना जल भरण जात रही पैंड़ेमें गगरी छिनाई।
श्याम तोहे देती नन्द दुहाई ॥

सिन्धु—धमार

झगरा मैं क्यों ठानोगो पिया मोरा इन
सो तनियां वश कीनो।
तुम बिन मेरो और कौन है ऐसो सुघर प्रवीनो ॥
याहु वास को बसबो कठिन है सौतनके आधीनो।
आज़म पिया सों विनती करत है मैं तेरे हो रङ्गभीनो॥

२

होरी धूम मची अति ज़ोर शोर सुनि डफ मृदङ्ग
धुधुकार।
फूल रहे वन उपवन कुञ्जन पुञ्जन भ्रमर गुञ्जार ॥
प्रथम फाग अनुराग श्याम पर सब ही नारिन तन
मन वार।
जानकीदास भए पूरणकाम सुर वर्षत सुमन फुहार ॥

३

खेलत है लाल फाग बाजत मृदङ्ग चङ्ग वीणा
रबाब सङ्ग।
अबीर गुलाल चोवा चन्दन अरगजा वर्षत रङ्ग।
छूटे पिचकारी हंस मुख हो डारत केशर रङ्ग ॥

४

फाग रच्यो है ब्रज में अब खेलत है श्रीनन्दकुमार
वृषभानु किशोरी।

गुलाल अबीरकी मूठैं छूटत रङ्गकी परत फुहार
मुख बोलत हो होरी ॥
जैसे ही राधा वैसे हो माधव दोऊ करत हैं
बतियां भोरी ।
चलो सजनी री मिलके देखें आनन्द रूप स्वरूप
बनो री ॥

खम्भावती—तिताला

अब मेरे मुखपर डारो गुलाल कान्हर वाके
जियमें कछु और ।
लाज शर्म काहूको न मानत मूंठ चलावत दौर ॥
ए बातें कहूं देखीं न सुनीं जियमें करत नहीं गौर ।
सुमतिको साहब लोग तिनको मोह सृष्ट को मौर ॥

सिंदूरा—चाचर

तुम नीको तानके सुनैया रिझैया रङ्ग में भिजोई
हमरो चीर ।
हम बरजत तुम मानत नाहीं वे राजा उमराव अमीर ॥

२

ना देया मैं अब न जाऊंगी बीच ठाढ़ो दधिको
छिनैया कन्हैया ।
नाम ठाम वाको भूल गई कहत है ब्रजको
बसैया कन्हैया ॥
डर लागत है कांपत है यातें बांह गहे कोऊ
देखे लुगैया ।
आन पड़े जब मो पै मेहरबान कौन वहां हटकैया ॥

३

लाल पहंचाने हैं जु तुम वाही सङ्ग नीके नीके हो
निशा जागे ।
अरुण वरण नयन कहे देत और रैन कहे देत
ऐसे प्रेम प्रीति रस पागे ॥
और सङ्ग रङ्ग मदमाते तापे सुरङ्ग रङ्ग केसर बागे ।
भोर भए जब आए मेरे गृह तुम बात बनावन लागे ॥

४

आयो फाल्गुन मास महा सुख सजनी रजनी
लागत प्यारी ।
त्यज हठ मान लाज गुरुजनको भर मारो पिचकारी ।
कृष्णानन्द हियो हुलसायो अब क्यों रुकत विचारी ॥

५

अबीर गुलालकी धूम मची है पिचकारन भर लाय ।
चोवा रे चन्दन और अरगजा मुख रोधे लपटाय ॥
बाजत ताल मृदङ्ग झांझ डफ ध्वनि रही है
चहुं दिश छाय ।
बार बार बलिहारी अब खेले फगुवा ले है मनाय ॥

६

भलो री तेरो यौवन तू हो जात है आयो है
फाल्गुन मास ।
पिय नहिं आवत विरह सतावत उलट जात तब
आश्वास ॥
कहा कहों कछु कहे न सकत हूं जैसी सास
ननद कोन्हीं है त्रास ।
नित्य कसकत है आय जियमें मेरे मोहन
प्रेमकी फांस ॥

७

होरी हो रहो है या ब्रजमें खेलत नन्दकुमार ।
बाजत ताल पखावज मुरली नाचत दे करतार ॥

८

हा होरी वे खेले माई जिन लालनको सुध पाई ।
उड़ रे काग भ्रमर अति कारे उड़ क्यों न पिया
पास जाई ॥
जो पिया देखहुं स्वप्नमें मन राखों समुझाई ।
तेल फुलेल सभी हम छाड़ो अङ्ग विभूति रमाई ॥
योगन हो के वन वन ढूंढ़ा मैं जाय पण्डित पुछाई ।
तीर्थ व्रत किए बहुतेरे गङ्गा यमुना में न्हाई ।
सूरदास स्वामी तो हे मिलन को जो मिलिया सो
सुखदाई ॥

९

कृष्ण कंवर सो होरी खेलन सब ब्रज वनिता मिल
कर आई

झोरी भरो गुलाल कुङ्कुमा हाथन ले मोहन
पर धाई ॥

१०

जो सो होरी खेलों अपने प्रिय सो रिझाय
रिझाय रिझाय।
गुलाल अबीर मुख माड़ोंगी महाराज महीप को
रङ्ग में भिजाय भिजाय भिजाय ॥

सिन्धु—तिताला

होरी खेलिए री अति मदमाती नारी पीतम
ढिग बोरी।
अबीर गुलाल कस्तूरी कुङ्कुमा पकर पकर
बांह बरज़ोरी ॥

२

अति मदमाती डोरे सब तियन में तू री चतुर खेलार।
तन सोहे रङ्गभीनी सारी गर पुहुपन को हार ॥

३

फाग खेलौंगी लाल सो बन बन शुभ घरी पल पल
दिन दिन गन गन।
अबीर गुलाल ले मुख मोड़ौंगी केसर छिरकौं
गारी दोंगी छन छन ॥

४

सकल ब्रज धूम मची है आयो फाल्गुन मास।
बाजत मृदङ्ग पखावज आवज करत परस्पर हास ॥

५

धूम मचाई नगर में आवत है ढीठ कन्हैया
खेलत होरी।
केसर रङ्ग में सर्वस्व बोरी नेक न छोरी पोरी ॥

६

फाल्गुनके दिन च्यार रहे अजहूं न आए लाल मेरे।
सुहाग भरी खेलूंगी अपने पिया सो करूंगी
रङ्ग नए नए ॥

७

काहे को रिस खाय रहे प्यारे होरी में क्यों न
करत मो से रङ्ग।
भली बुरी नित कहत रहत चर्चा हमारी सौतन
को याही ढङ्ग ॥
अबीर गुलाल उड़ाऊं आज मैं सङ्ग।
तुम्हारो राव राजा प्रथम आइ मैं भी चेरो उमङ्ग ॥

सिन्धु—धमार

लाल जू लाल तन मेरे भीनो चनर अब तुम
केहि विधि जै हो।
कोऊ कहे रावरो बतियां छतियां कैसे छुवे हो ॥

सिंदूरा—धमार

लाल मेरो बहियां मरोरी डगर बिच ठाढ़ो
मुख मोंड़त है रोरो।
अतर गुलाब केसर रङ्ग पिचकारी रङ्ग को
परत है झोरो ॥

२

आज धन्य भाग्य सखी री फाल्गुन में पिय पायो।
धन्य वसन्त धन्य होली रङ्ग है धन्य प्रभु मेरे आयो ॥

३

बनवारो लाल बिसारी ऐसो रङ्ग डारत भीज
गई सारो।
पाछे ठाढ़ो सब पार परोसन हंसत खेलत सब ही
नरनारो ॥
लाज सकुच सब तज डारा है एक मूंठ तें
लाज बिसारी।
ऐसो निठुराई कौन बदी है को कहे तो है गिरिधारी ॥

खम्बावती—तिताला

आज असाड़े फाग है सइयो नाल मोहन दे
खेलोंगी होली।
अबीर गुलाल मलों मुंह उसदे रङ्ग चन्दन रोली ॥
सबे सइयां देहो बधाइयां गावो फाग अमोली।
बृजबिहारी साड़े अङ्गन आया चन्द्र पया
मेंड़ी झोली ॥

२

देखोनी यह नागर नन्ददा ब्रज बीचे खेल कहावे।

रत्ते हत्थ गुलाल नाल दावे ज़ोराज़ोरी मुंह लावे ॥
कुडियां नाल मज़ाक कर दा हंस हंस गालियां गावे।
बुद्धिविहारी फाग बहाने घर घर धूम मचावे ॥

३

सालू मेंड़ा रङ्ग लाइस मोहन रङ्ग नाल भरया।
डोल दहीं भरो मैंड़ी चाली कोन्हा में करया ॥
एह तां होय नन्द घर जुल्मी इसको लों जी डरया।
बुद्धिविहारी मनदा नाहीं ना मिलत लाल डरया ॥

४

लड़ छड़ सालुदा सांवले वड़ो दूर असाने जाना।
होया सगुन तेड़ा होली दा सालू भोत्रा आहाना ॥
ज़ालम सच पूछे जो मेंड़ी कहो की करसां बहाना।
होली दहो नाही यों गमकाई केहा हुण पछताना।
बुद्धिविहारी तेहारी जटेती कर दा ज़ोर धिगाना ॥

५

वे जधो नाल परायां की ज़ोर।
पुत्र पराए होत न अपने कोति यत्न करोर ॥
व्रजवासो असो दिल दे कचे घो सबहिं एक ठोर।
कंस बहाना कर के सार्था लोता कान बिछोर ॥
कोथे वंशो तां कोथे गउआं कोथे माखन चोर।
बुद्धिविहारी दे बिछरन सानु पएमा मले होर ॥

६

जिन करो रार मो सों जाओ जी जावो अपने द्वार।
जिनके रस वश भए मनमोहन जहां जावो तहां
नई बहार ॥
मेरो प्रोति को कौन भरोसो जहीं रहो तहां इतबार।
इच्छा पुरवो वाही तिया की जिन गर लिपटाए
भुजा डार ॥

७

अब सखी कैसे निकसे बाहर मग में रोकत
टोकत व्रजनार।
ग्वालबाल कान्ह अपने सङ्ग ले मारत केसर
पिचकार ॥

डगर बगर तिय चलन न पावे ऐसे ढोठ होरी के
खेलार।
आनन्द रसिक व्रज वोथिन डोलत छैला नन्दकुमार ॥

८

यौवन मदमाती नार अम्बर संभार रे।
मस्त महीना फाल्गुनका रङ्ग छिरको पिया
पर डार रे ॥
गहेली गहेली डोले अपने अङ्गन में पिया को
नयन निहार रे।
अनुरागी रस पागी जागी मद छको गावत होरी
दे तार रे ॥
हंसत मुसकात देत है गारी मचल रही कर के
रार रे।
न डरत करत न काहूको कान इच्छा ऐसो
अधिक छिनार रे ॥

९

कैसे कर कोउ निकसे पनियां भरन बिच ठाढ़ी
लङ्गर वटपार खेले होरी।
रङ्ग पिचकारी ले सबन पे डारो और मुख मींजत
है रोरी ॥
ऐसो निर्लज्ज भयो डोरे व्रज में तरुणी वारी नाहिं
न छोरी।
रस वश कर लेत मनमोहन होरी रङ्ग रचो री ॥

१०

ए री आज मथुरानगर में दधि बेचन को गई।
मोर मुकट कुण्डल को छवि देखत सुध बुद्धि भूल गई।
इत डर है मोहे सास ननद को उत नेह
लागो री नई ॥

११

मोहन होरी गावे सुन जियरा है लरजे।
छण भीतर छण बाहर अङ्गन वैरन ननदी बरजे ॥
रहन न पावत विरह सतावत ज्यों ज्यों
डफ ध्वनि गरजे।
यह फाग बलिहार मिलोंगी मनमोहन सो अरजे ॥

१

सखी री पिय बिन कछु न सोहाय सो आज मोरा
रह रह जिय घबराय।
घर से निकस वृक्ष तर ठाढ़ी सखी री वचन सहो
नहीं जाय॥

२

लाल मेरे आये री जावो रे सइयांको ले आवो
मेरे दिन दिन बढ़त सुहाग।
सखी सोती थी अपने मन्दिर में सुख नींदरिया
इन विरह ने खायो है मांस॥

४

सासु ननदिया लरेंगी मोरो मो पै रङ्ग जिन डारो
सांवलिया।
हा हा करत हूं पइयां परत हूं चेरी मैं हूंगी तोरी
सांवलिया।
कृष्णानन्द मान मनमोहन काहे करत बरजोरी
सांवलिया॥

५

ए री हां लाजकी गारी दे गया दे गया दे गया
ए अनारी।
जाय कहि हों मैं तो मुहम्मद शाह सों तुम जोते
हम हारी॥

६

होरी होय रही है नन्दमहरके द्वार।
अबीर गुलाल के बादर छाए रङ्गको परत फुहार॥

७

कैसी होरी आई ए जी सुनो व्यथा हमारी।
डफ धुकार परो श्रवणन में विरह अग्नि हिय बारी॥
नयन नीर भर भर डारन लगी मानो छोड़े पिचकारी।
निशदिन मइ को कल न पड़त है तलफत बीतत
रैन भारी॥
देख तो दोउ मिल होरी खेलत इत प्यारो
उत प्यारी।
परम कृपाल श्रीवल्लभ नन्दन मागहुं अञ्चर पसारी।
दास कृपापर कृपा कीजे बेग मिलावो गिरिधारी॥

११

जाग परुं तो नींद न आवै मोहन होरी गावै।
डफ धुकार सुन कान वाणसी मन में मैन जगावै॥
तो हि सुनाय कहत हौं ननदी विरह व्यथा
कोई नहीं पावै।
दे अकोरी बलिहार तन मन जो तू आन मिलावै॥

१३

होरी होय रही व्रज माही।
जिन नहीं खेलो श्यामसुन्दर सङ्ग वृथा जीवन
जगमाही॥
जब तें बेणु सुन्यो वृन्दावन कल न परे मनमाही।
बरसानेकी बनठन आई मैं न गई तहां नाही।
गावै गूदर सुन सखो सुन्दरि पहुंचा हौं हरि पाही॥

१४

होरी कैसे खेलूं सइयां नहीं आवै री।
निशदिन मइ को विरह सतावै पिया बिन भवन
न भावै री॥

१५

लाज भरी नहीं बोलूं सांवरे देख यह धूम मचावत है।
पहले तो हम सन सूधे खेलत पाछे ते गारी
सुनावत है॥

१६

दई दई कार रही भला या रङ्ग में बोर दई।
अनवादो खादो यह नन्द को इन मोरी बांह गही॥
घर वर तज हठ मान अकेली नाहक पनिया गई।
लाक कहत बलिहार दोष मोहे हो गई बात सही॥

१७

अरे लाल नई रे लगनियांकी मीठी बतियां पिय
जाने के मोरा जिय जाने।
निजामुद्दीन औलिया है पिय मोरा पिय के विछरन
में भई हूं बावरी॥

खम्बावती—यत्

यौवन मदमाती अञ्चर संभार रे।
फाल्गुनके दिन मस्त महीना सुरख रङ्ग पिय
पे डार रे॥

८

मिया नींद न आवे होरीके खेलन की चोप।
श्याम सलोना रूप रिझोना उलहो यौवन ओप॥
अब हो ख्याल रच्यो जु परस्पर मोहन गिरिधर भूप।
अब वरजे मोरी सास ननदिया परो विरहके कूप॥
मुरली की टेर सुनाय जगावे यहो वगर में अनूप।
यह जिय सोच रहो हो अपने जाय मिलि हौं
हरिके सो रूप।
आनन्द घन प्रभु गुलाब घुमड़न में एक हो रङ्ग
रङ्गे हौं रूप॥

९

ढोटे जान न दूंगी तुम खेलत हो होरी।
अबुम भर भर कसुकी मोरी दरक गई मुख
गुलाल मोजत वरजोरी॥

१०

यशोदाके लाल तुम इस गैल न आव रे।
वरज रहो वरज्यो नहीं माने तेरो ऐसा स्वभाव रे॥

११

यशोदाके लाल तुम मो पै न रङ्ग डार रे।
बहियां पकर मोरी चुरियां करकी मोह अकेली
कर पाए रे॥

१२

यौवन मदमातो नारी अञ्चर संभार री।
यह फाल्गुनका मस्त महोना रङ्ग सइयां पर डार री।
इस अङ्गिया पर लाल लगी हैं मोती लगी हैं
हज़ार री॥

१३

वामें कहा कछु झूठ कहा मेरे पियके मिलनको वारी।
गुलाल मलों तो मुकर जात है बहियां मरोरत
मारत पिचकारी॥
अबीर उड़ाऊं तो कागा बोलत है मैं हंस हंस
देत हूं तारी।
अचपल हो के मैं पिया सो मिलोंगी पहन
केसरिया सारी॥

१४

होरी खेलन तुम आए रसिया।
चोवा चन्दन अतर कुङ्कुमा अबीर गुलाल
उड़ाए रसिया॥

१५

झकझोरी कर होरी खेले म्हांरो रसियो राजकुमार
बहियां मरोरी।
औचक आन गहो या व्रज में अबीर लिए भर
झोरी कर होरी॥
अगवारो पिछवारो ननदल मुख माड़े छे रोरी।
वलिहारो कांई धूम मचावे नन्दमहर जूको पोरी
कर होरी॥

१६

आवो वलमजी हमारे डेरे अबीर गुलाल मलों मुख
तेरे होरीके दिनन मोसे मत उरझे रे।
जो पिया मोसे रूस रहे हो बल बल जाऊं सब हो
घने रे।
महम्मद शा पिया सदाहो रङ्गीले दूर न
बसो बसो मोरे नेरे॥

१७

मैं तो लाई केसर रङ्ग भरके छिरकत रङ्ग
हुलस पिय हरखे।
अपने री अपने रङ्ग बनाय लाई भरे लाला डोरी
बनो वा के कर से।
महम्मद शा पिया सदा हो रङ्गीले फगुवा लूंगी मैं
झगरके॥

१८

होरी की ऋतु आई सखी री चलो पियापे
खेलिए होरी।
अबीर गुलाल उड़ावत आवत शिरपर गागर
रसकी भरो री।
महम्मद शा सब मिल मिल खेले मुखपर अबीर
मलो री॥

१९

चलो देखिये मेरो सखी री मोहन धूम मचायो री।
व्रजगोपिन सङ्ग होरी खेलत रहस रहस
गर लायो री।
बरजोरी कुच गहे कर पकरत ऐसो नाच नचायो री॥

२०

नन्दलालके सङ्ग होरी खेलन को आई री।
अबीर गुलाल लेहीं भर झोरिन भर पिचकारी
लाई री॥

२१

एसे चतुर श्याम सो को खेले ऐसी होरी रे।
अबीर लगावत रङ्ग में भिजावत और करत
बरजोरी रे॥

२२

आवो सइयां मिल होरी खेलें धन्य धन्य मेरो भाग।
चोवा रे चन्दन और अरगजा सइयांको रङ्गाय
दों पाग।
सइयांकी सुहागन सइयां सङ्ग सुते दे बहियां
गरे लाग॥

२३

सब रसभोगी मातो भरे हो राधा गोरी खेले होरी।
एक ओर तें श्याम आये एक ओर तें कुञ्जा बोरो।
राम परस्पर रङ्ग रच्यो है कोई सांवरो कोई गोरी॥

२४

हम से अनोखो कौनसी नार ता सो नयन लाग
रहो री।
जल बिच कमल कमल पर कलिया भ्रमर
लिपट रहो री॥

२५

आज मोरे ऐसो होरो सइयां तोसे ना खेलूं
मोरे मुखपर अबीर मलो री।
सब सखियां मिल बन बन आई हम ही सो उरझ
परो री।

हो निर्गुणी कछु गुण नहीं जानों कुब्जाके
बिलम्ब रहो री॥

२६

आज पिया मिलनको बारी श्याम मोरो अङ्गिया
रङ्ग भर डारी।
अगर सुने मोरी बगर सुने रे सास सुने दे गारी॥

खम्बावती—धमार

नहीं आयो सांवरो कैसे के मन समझायो रे।
मधुवन ढूंढ़ वृन्दावन ढूंढ़ो गोकुल में उरझायो रे॥

२

छैल मनमोहन मोरी अङ्गिया रङ्ग भर डारो रे।
अबीर गुलालको मूठ ज्यों मारी चितवन वश
कर डारो रे॥

३

किन रङ्ग डार दियो मोरो अङ्गिया भीज गई सारो रे।
नन्दमहर जूको कुंवर कन्हैया अबके फाग मोरो
बारो रे।
कृष्णानन्द पकर पाऊं जो मुख मोड़ों दे तारो रे॥

४

सखो पिय सन खेलिये होरो को ऋतु आई चलो री।
अबीर गुलाल उड़ावत आवत शिरपर गागर
रङ्गको भरो री।
मनमोहन सुन्दर पिय सोहन अबीर गुलाल मलो री॥

५

भर मारो पिचकारो रे अङ्गिया भिजोई
केसर रङ्ग सों।
ऐसो कौन मनमोहन पिय सो गुप्त छाप
दोजे ढङ्ग सों॥

सिंदूरा—तिताला

व्रज में होरीको धूम मचो है ले चल तमाशे को
रे दैया।
अबीर गुलाल रङ्ग सो भीने मोहन नाचत ता थैया॥

२

लखि नयन कनोड़े प्यारो मुसक्यानो।

जावक भाल लगी दृग अञ्जन आए साजन पहंचानो।
वारो सारो रैन जगाय रहो प्रगटो लेहों विहानो॥

३

मानो चन्द्र छिपे री घूंघटरा में तिहारे।
जगमग ज्योति जराव को टोको जैसे शुक के तारे।
मोतिन मांग भरे वनिताके मानो गङ्गा धसी
हरिद्वारे॥

४

कज्जर कार दृग तेरे विराजे।
नाथाको मोती अति राजत मानौ शुकके तारे।
कान तरौना यों बिच चमके मानौ उदित भए
भिनसारे॥

५

अब न जाऊं व्रज में दधि बेचन गोरसके मिस
सब रस चाहे।
औरन सो पिय हंसके बोलत है हमसे झगरत है
अब काहे॥

६

गोरी गोकुल ग्राम न बसिये जौ लौं फाल्गुन मास।
बाहर दुर्जन लोग चबाई घर में वैरनि सास॥
जो रहिये तो पिय से होरी खेलिये हियमें
आनन्द हुलास।
रही आज बलिहार जावो कि न श्याम मिलनकी
आस॥

७

रङ्ग डारत कज्जर ढर गयो।
ताती ताती छतियां धात आपनो हाथ अचानक
पर गयो॥
हौं निकसो घर बाहर अपने रसिया पाने पर गयो।
कहा कहौं बलिहार चबाई घरको कार्य
बिसर गयो॥

८

दारो मतवारी डारे या ह्न डगर में पी मुख मले
गाल गुलाल मानत न नवतम काह्न ग्वारि।
उनमद मदन लर झगरत सबनको गावत गारि
दे तारि॥

सिंदूरा—परज

यौवनको मदमातो होरी में देत सबन सुख गारो
झिरको।
डारो अबीर खुलत नहीं निपट सदा ;ङ्ग घूंघट
खिरको॥

२

बरसाने तें आए अरसाने हम जाने जू लच्छण
तिहारे पहंचाने।
कहूं कज्जर कहूं पीक लीक अनगन स्वभाव न
मो पै जात बखाने॥
नयनन नींद ध्यान मन हृदय वसत तीय नाहीके
लगत गुण गाने।
धन्य तेरो नेह तानसेनके प्रभु ऐसे नट नागरको
छल कर नाच नचाने॥

३

ओढे सारी प्यारी केसर की रङ्ग छिरकी छिरको।
चितवन में वश कीन्हों मोहन को यातें फिरत
थिरको थिरको॥
अबीर गुलाल लिए भर झोरी रङ्गकी कमोरी
शिर ढिरकी ढिरकी।
तानसेन सो फगुवा लीन्हों यातें डोलत
हिरको हिरको॥

४

श्रीनन्दको नन्दन खेले जो हो हो होरा।
ग्वार बार सब सङ्ग सखा ले व्रजको वीथन हो डोरा॥
ताल पखावज आवज बाजत ढोलक और तंबोरा।
वीणा रबाब मुरझ डफ मुरली मधुर मधुर
ध्वनि थोरा॥
कुङ्कुम केसर चन्दन वन्दन अबीर गुलाल
भर झोरा।
तानसेन प्रभु फाग रच्यो है खेलत किशोरी किशोरा॥

४

छिनरिया धूम मचाई यह ब्रज में हंस हंस
खेल रचाई।
दशन चमकें और मुखकी हसन नयन सैन कर
भौंह मटकाई॥
पकर लिए ब्रजमोहन सोहन फगुवा लीन्ह मन भाई।
रसिकरङ्ग प्रभु रस वश कर लीन्हों होरी
अवसर पाई॥

६

चलो तुम हूं देखो कैसी मची होरी गावत
रङ्गमहल में नारी।
एक गावत एक मृदङ्ग बजावत एक नाचत
दे दें तारी॥
अबीर गुलाल केशर पिचकारी तक तक मारत
गावत है सब गारी।
तानसेन प्रभु खेल रच्यो है फ़गुवा लीन्हों भारी॥

मिश्र—परज

नन्दमहर जू को पौरी मची है हो हो होरी
हो हो होरी।
नाचत गावत करत कोलाहल इत नन्दनन्दन उत
वृषभानु किशोरी॥
दुहूं ओर रङ्ग छाय रह्यो है अबीर गुलाल
मुख मलत है रोरी।
भरत भरावत पिचकारी चलावत रसिकराय
प्रभु फाग मचो री॥

२

कजरारे कारे तेरे नयन विधि संवारे।
मृगमद खञ्जन चोप लगत आलो इन छुतें पाए
सरस अपारे।
रसिकरङ्ग रस वश कर लीन्हें बार बार बलिहारे॥

३

रङ्गकी पिचकारी प्यारी जिन मारी।
वदन रङ्गीलो भयो अङ्गिया तरक गई भीज गई
तनसारी॥

ए सजनी मैं तोसे बूझूं सांची कहो तो है सौंह
हमारी।
रंग की जागी भोर हो आई अंखियन बीच खुमारी॥
यह अपने जिय ठान रहो हों जो कुछ बन रहो
तरह तिहारी।
लाख कहो मैं एक न मानों मिल गए विष्णुविहारी॥

४

सब मिल डारो फाग निवार।
ऐसो ब्रज में उलझ परो कोउ न सुनत पुकार॥
करो ए कहा चैन नहीं मनको तन जर भयो अङ्गार।
वा बिना मिल है न बूझे क्योंहू को ते गावे मलार॥

५

हो हो हो हो होरी खेले चलो देखें कैसी
मच रहो है धूम।
इत सखा सङ्ग लिए सांवरो उत सखियन सङ्ग लिए
राधा भूम।
मृदङ्ग बजावत और डफ गाजत गुलाल लाल भई
सिगरी भूम॥

६

चलो तुम हूं देखो कैसो मचो होरी गावत रङ्ग
महल में नारी।
कोऊ गावत कोऊ मृदङ्ग बजावत कोऊ नृत्य
करत कोऊ बहक देत है तारी।
कोऊ काहूको अम्बर गह राखत कोऊ तुतराई
देत सबन मुख हू ते गारी॥

७

होरी को चतुर खेलारी चुनरिया रङ्ग डारी हमारी।
हा हा करत हूं पइयां परत हूं इतनो अरज मोरी
मानो विहारी।
अङ्गिया भिजोई मोरी बिगारी तुम जीते हम हारी
गिरिधारी॥

८

जिन मोरी अङ्गिया भिजोई देया मैं तो उनहो को
रङ्ग में भाजोऊं गी रे।

फगुवा लूंगी तब जाने दूंगी राधाको बहियां
गहीय लूंगो रे ॥

८

मैं तो उनही को गारी देऊंगी जिन मोरी
चूनर रङ्ग में बोरी ।
वृन्दावनकी कुञ्ज गलिन में धर बहियां भकभोरी ॥
हा हा करत मोरी एक न मानी मोतियनकी
लर तोरी ।
चोलिया पकर लपट उर मोरी वर वश गागर फोरी ॥
कृष्णानन्द मदनमोहन मन मोहत नेह भरो री ॥

सरपरदा—तिताला

वारी हां मीठी बतियां पी जाने के मेरो जी जाने
मेरी नई लगन ।
इत बहे गङ्गा उत बहे यमुना छांह कदमकी
मिलो मोहे कान्हा लग गई वाण मोहे श्याम तकन ॥

सरपरदा—परज

श्यामसुन्दर तो से खेलूं होरी ।
होरी खेलनको मोरे सइयां आई लो फगुवा लूंगी
बरजोरी ॥

२

होरीके खेलैया तोहे लाज न आवे मो सों काहेको
प्रीति लगावत रे ।
नदिया किनारे एक बङ्गला छवे हों नयन झरोखे
लाग रहे ॥

३

होरी खेलैया ब्राह्मण यार ।
जो तुम ब्राह्मण जात हो रसकी नींद गंवाई ॥

४

कौन जाय ब्रज में दधि बेचन रङ्ग डारो चूनर
सारी रे ।
एक हाथ मोरा अञ्चर रे पकरे दूजी हाथ मोरी
सारी रे ॥
माई बापकी बड़ी दुलारी कबहूं न दीन्हीं गारी रे ।
आन परे वश तेरे हे मोहन नित्य उठ देतो तारी रे ।
कृष्णानन्द श्याम मनमोहन नोखो छैल खेलारी रे ॥

५

तेरो अङ्गियामें कुङ्कुम रङ्गके काहे छिपाए
जात सखी ।
बरज रहे बरज्यो नहीं माने रङ्ग रूप भी गात सखी ।
कृष्णानन्द पकर कर निरखत श्यामसुन्दर
मुसक्यात सखी ॥

६

कजरारे कारे तेरे नयन राम संवारे ।
मृगमद खञ्जन चोप लगत अलि इनहुं ते पाए
सरस तिहारे ।
पशुपंछी और जीवजन्तु मन सबके रञ्जन रङ्ग डारे ॥

७

अंखियां रतनारो बालम कहां जागी ।
सगरी रैन मोहे तरफत बीती किन सोतनके
गरे लागी ॥
डगमगात पग परत शिथिल अति पीकलीक
हिय लागी ।
मोहन यह ढङ्ग कौन सिखाए अनहोनी आगी आगी ॥

सरपरदा—पहाड़ी

तू बेंदो भालों न दे री तेरा ऐसे हो सब जग वेरी ।
लटक मटक कर चलत री सजनी तेरी अंखियां
आमकी केरी ॥

२

गमनेका सन्देशा सुन के मुसक्यानी ।
बाट चलत मोरी बिछियां हेरानो देख छैल अठलानी ।
एक गोरी दूजे यौवन मातो बात समझ सकुचानी ॥

३

कोउ चलन पावे बाट फाल्गुन में ।
जो देखूं सोई मातो हो डोले रङ्ग गुलालन
ठाट फाल्गुन में ॥

सरपरदा—खम्बावती

नयन तेरे दूलहन मतवारे री ।
कज्जर रेख दई कोरनमें मीन खञ्जन दोउ वारे री ॥

४

होरी खेलन मेरे आए मनमोहन जानी।
ग्वाल बाल सब सङ्ग सखा ले पिचकारिन मिहमानी॥
बाजत ताल मृदङ्ग झांझ डफ गावत नीकी तानी।
कृष्णरसिक सो फगुवा ले हौं तब छाड़ोंगी गुमानी॥

२

श्याम आजे रङ्ग रङ्गाए कहां रैन जगाए।
सगरी निशा अनत हो जागी बोलत वचन अति
तोतराए आए है घबराए।
अधरन अञ्जन भाल महावर मुख अबीर
गुलाल लगाए॥

३

जो कोउ होरी में नारी बाहर निकसे वापे मोहन
रङ्ग डारत है।
लपट झपटके बहियां गह लेत है कुचकी
तनिया फारत है॥

५

जागे भाग्य हमारे आज सखी मोहन आए।
अबीर गुलाल कुङ्कुमा केसर मुख मीड़ू गर लाए॥

६

ललचावो जिन बालम दिननकी थोरी।
जावो जो जावा रहो उनही के जा सों
खेलत हो होरी॥

विहाग—तिताला

होरी दे ख्याल बिच यह क्या कीता।
मैं नू लगाय छरी फूलोंदी शिर ते घूंघट खोल लीता॥
परा गुलाल आंखिन बिच मेंड़े देखन दा सुख छीता।
सखी देखे दी लाज मरे दी चुम्बन मालां दीता॥
ऐसे न कीजे नागर नन्द दे कहावत है व्रज मीता।
रसिक प्रीतम सो हा हा खांदी हौं हारी तू जीता॥

२

बरसानेकी ग्वालनी खेलत फाग वसन्ता हो।
शङ्का न काहूकी मानही माता पिता सुत कन्ता हो॥
चन्द्रभागा चन्द्रावली मध्य नायक राजत राधा हो।
सहज स्वरूप सुहावनो शोभासिन्धु अगाधा हो॥
चली सब चतुर शिरोमणी खेलनको रस फाग हो।
रसिक कुंवर वृषभानुको तुम सो अति अनुराग हो॥
सकल साज सब ले चली आई वट सङ्केत हो।
पठई सखी एक आपनी नन्द कुंवरके हेत हो॥
बल मोहन हंस यों कह्यो सुनो सखा श्रीदामा हो।
हम पर आई सब जुरि उन्मद अतिशय वामा हो॥
वेग चलो मिल ग्वाल ले देखावो अपने हाथ हो।
जासे बहुरि न आव हो छाड़ि आपनो साथ हो॥
अनन्त गुलाल अबीर ले देहु निशान घुराई हो।
बहुत कलस सोंधे भरे कुङ्कुम भरि पिचकाई हो॥
दलबादल जो देखके सन्मुख आई धाई हो।
मेघघटा ज्यों वर्ष हो अद्भुत फाग मचाई हो॥
कमलन ले ले नवलासो कुसुम गेंदको रार हो।
मुड़ि भाजि बल मोहन हो हो कर है व्रजनार हो॥
चन्द्रावली बल जू गहे श्याम गहे श्रीश्यामा हो।
सखा गए सब भाजि के ले गयो छिड़ाय दमामा हो॥
आकर्षण सोंधे भरे श्याम भरे सुख भारी हो।
आनन शीर्ष संवारी के भेष बनायो नारी हो॥
वर वश भई व्रजसुन्दरी शोभा कही न जाई हो।
चतुर्भुज प्रभु इन वश किये गिरिगोवर्द्धन राई हो॥

परज—यत्

मचाई आज कुञ्जन में अनोखे सांवरे होरी।
गई जो नारी देखनको भई छवि देखते बोरी॥
सखा लिए श्याम सङ्ग डोरे सो एक ओर
राधिका गोरी।
बजत हैं झांझ डफ वीणा मधुर स्वर मुरली घनघोरी॥
सकल मिलके वधू आई भई एकठो एकठोरी।
चले बहु गेंद कुङ्कुमा न सुध रही तनका तनीको री॥
सखिन लिए पकर मनमोहन दिए दृग आंज
बरजोरी।
कहूं हंस के दियो गुलचा कहूं लई बांसुरी छोरी॥
छुड़ाई बांह यदुनन्दन गहो वृषभानु किशोरी।

झगाई अङ्ग सो प्यारो छिरक रङ्ग मोज सुख गोरो ॥
गगन चढ़ सुर सुमन वर्ष मचो जो ध्वनि चहुं ओरो।
निरख सुखसिन्धु कविनायक दियो तनमन
ज्यों तृण तोरो ॥

२

वृन्दावन माह सखी री फाल्गुनकी ऋतु आई।
विलम्ब रहे मधुवन में मोहन मोहे कछु न सुहाई ॥

३

कैसी होरी आई अजो सुनो व्यथा हमारी।
डफ धुंकार परी श्रवणन में विरहने हृदय
आग बारी ॥
नयन नीर भर झरन लागो मानो छाड़े पिचकारी।
निशदिन मो को कल न परत है एक दिन नींद
न आई भारी ॥
देखो दोउ मिल होरी खेलत हैं इत प्यारो
उत प्यारी।
परम कृपाल श्रीवल्लभनन्दन मांगहु अम्बर पसारी।
दास कृपापर कृपा कीजो वेग मिलावो गिरिधारी ॥

योगिया—यत्

जाको पिया सपने हुं न आवे वाको फाग है कैसा।
तू तो कहत है आई होरी खेले मोको तो यही
अन्देसा ॥
नयननको पिचकारी करी है अंसुवन रङ्ग बनेसा।
विरह ताप सो होरी मैं खेलौं मेरे तो हाल है ऐसा ॥

योगिया—परज

सखी आज गोकुल धूम मची है होरी खेलत
कृष्णमुरार।
नन्द गांवते ग्वार आए सब बरसाने की नार ॥
मान कह्यो मेरो उठ चल हिलमिल अब जिन
कर मो सो रार।
सब तियन में अधिक रूप तेरो तब ही कृष्णको
है प्यार ॥

२

ए री व्रज में बन होरी खेलिए आयो है
फाल्गुन मास।
अबीर गुलाल कुङ्कुम पिचकारी ले मिल
कान्हर पास ॥
वसन भूषण पहर शीशफूल धर अङ्ग सुगन्ध सुवास।
उठ चल हिलमिल श्याम सो अपने पूज ले
मनकी आस ॥

३

नन्दलाल महाराज नगर आज धूम मचाई।
गाय बजाय नाचे नृत्यकारी गुणीजन वीणा बजाई ॥
देखा सभा जैसो इन्द्र विराजत युतिनको
आंख लजाई।
तानमान को इनाम दान कर सबनको आशा पुजाई ॥

४

आज होरी खेलन आए मथुरा नगरके लोग।
चलो सखी मिल वन वन ढूंढौ जहां हो
श्याम से संयोग ॥
कूक मचाय नाच गति विरहन भरो है वियोग।
आज सभा में ना आई है कान्ह रति कैसे
सुने हो भोग ॥

५

ए री आज मथुरा नगर में दधि बेचनको गई।
मोर मुकुट कुण्डल को छवि देखत सुध बुध भूल गई ॥

६

रङ्ग सरसाने बरसाने आये नन्दग्राम बरसाने।
इत राधे उत कृष्ण कुंवर सङ्ग सखी सखा हर्षाने ॥

७

यमुना घाट कैसे जाओं जित तित खेलत कृष्ण
हो हो होरी।
जैसो ही लाज तैसो त्रास बरजे न कोउ उनको री ॥
ऐसो बावरो भयो है व्रज में काहे तो लाज बिसरो री।
भौंह मरोरत नयन सेन दे मैन ते छोउ न होरी ॥

८

हो हो अब तो हरि होरी खेलन लागी खेलन लागी ।
सब मिल पहरे आभूषण नीके गरे केसरिया बागी ॥
अति सुमन्त्र रङ्ग पुहुपवती लै लै चलो उन आगी ।
चोहल भरी सबै ब्रजनारी भाग्य हमारे जागी ॥

९

ऐसो ब्रज में उलट परो कोउ न सुनत पुकार ।
यह कान्ह होरी खेलै गोकुलमें सङ्ग लिए ब्रजनार ॥
एक नृत्य करत है ठाढ़ो एक गावत दे तार ।
एक अबीर गुलाल उड़ावत एक भरत रङ्ग पिचकार ।
एक सांवरो और गोरो सुन्दर और भोरो है सब नार ॥

१०

खेलन लगे फाग मोहन ब्रजपतिकी पुरी नन्दके
राजदुलारे ।
चोवा रे चन्दन अतर अरगजा केसर परत फुहारे ॥
कृष्ण खेलत सब गोपी खेलत हैं खेलत मुनिजन सारे ।
सनमुख चोट परी राधा पर सूरदास बलिहारे ॥

११

होरी का सङ्ग खेलौं फाल्गुनको दिन आयो री ।
प्रिय परदेश खबर नहीं लीन्हीं विरह आन
सतायो री ॥
जब के गए भए वाहो के कौन तिया बिलमायो री ।
रसिक सनेही कान्ह रस वश कर लीन्हों उन बिन
कछु न सुहायो री ॥

परज—कलिङ्ग

बार बार तुम रङ्ग जिन डारो ना खेलूं ऐसो
होरी सइयां ।
बिनती करौं तोरे लागूं पइयां धर बहियां
झकझोरो गुइयां ॥
बरजोरी कुच गह मुख मोड़त फिर फिर आवत
मोरी छइयां ।
कालम अपनी ओर निभावो वर वश झगरा ठइयां ॥

२

अब रङ्ग काहेको डारो लला मैं तो सगरी भीज गई ।
उड़त गुलाल लाल भए बादर रङ्ग केसर
पिचकार दई ।
हा हा करत हूं पइयां परत हूं दई दई कर निभई ।
रसिक छैल रसवश कर लीन्हीं भुज भर अङ्क लई ॥

३

मेरो कृष्णकुमार होरी खेलन आयो री ।
वर्ण वर्णके रङ्ग बनाय लायके सङ्ग ग्वारन को लायो री ॥
बाजत बीणा मृदङ्ग झांझ डफ मृदु मृदङ्ग बजायो री ।
कृष्णरसिक रसवश कर लीन्हों होरी राग जमायो री ॥

४

मैं तो उलटो उरहनो लाई री ।
सासजीका पुत्र ननदजीका वीरन जिन मोरो
मत बौराई री ॥
अङ्गिया रङ्गी भीज गई सुधबुध सब बिसराई री ।
कृष्ण रसिक के रसवश भई धर बहियां मुरकाई री ॥

५

पिचकारी रङ्गकी भर मारी भीज गई तन सारी
मेरो नट नागर पिया गिरिधारी ।
चञ्चल चपल उधमो रसिया निपट मिला है बनवारी ॥
बरजोरी मलत गुलाल कपोलन छैल बेसिया वारो ।
उर लगावत नहीं डरत अनोखो कर खुशाल
बिना निहारी ॥

६

होरी खेल ले श्याम सो गोरी अब हो दिननकी थोरी ।
अबीर गुलालकी भर ले झोरी
रसिक रङ्गको रसवश कर ले मान ले विनती मोरी ॥

परज—खम्भावती

आये नहीं ए री मेरे मनभावन ।
बरसे बूंद परत मेरी छतियां पिय परदेश नहीं आवन ।
को छावे हमरा मन्दिर गरजे गिर ऊपर आवन ॥

परज

दूर न दुराए न डरे नयो नेह दूरे न दोरे ।
डगमगात अरसात गात नाहीं रङ्ग निचुरत थोरे ।
नयन सारी रैन रङ्ग हो वीते आवत लजाय भोरे ॥

१

नयन कनावड़े हो पिया पीक रची है अधरन
लखि चरण धरत आंवड़े बांवड़े।
यही आवन पर तनमन वारो नयन करै निज पांवड़े॥

परज—चलेया

आज ब्रजवासी की छोहरा डफ बजावत आवत है
कछु बोलन लसो।
श्यामवर्ण अति अरुण नयन किए लेत अङ्ग
भर कसो॥
कहा भयो घर जान दे मोरे भई सो भई घर बसो।
जो सुन पावे दुर्जन लोगवा होहै नेकमें हंसो॥

२

हमारो कन्हैया राधा ने वश कीन्हों।
एक वन भूली सकल बन ढ़ूंढ़ी ढ़ूंढ़ी गोप ग्वारोका
अति रङ्गरस दीन्हों॥

३

चन्द्रकी झलकन तेरे माथे कौन लगाय दई अही
फाल्गुनमें ए हो प्यारे।
घट गई रैन छिप गए तारे जागे भाग्य हमारे।
हो ललना होरीके दिननमें निकसि आवत
उजियारे॥

४

राधा छवि छाई होरी खेलन आई।
ललिता सङ्ग लिए राधा इत उत बलवीर कन्हाई॥
देख गुलालकी घूंघर में अबला चपला सी लखाई।
दीनबन्धु ब्रजराज छको मन मूठ गुलाल चलाई।
भाल लगी हंस गारी दई पिचकारी दई मन भाई॥

५

बरसाने ते पुरोहित आयो होरी रङ्ग खेलायो।
कोउ सखी कीच ले डारो कोउ कारख ले मुख जो
लगायो॥
कोउ गूलरको माला गल डाली कोउ भंटा
उरहार बनायो।
कोउ धोती खेंच लई हो हो हो कर होरी में
नचायो॥
हा हा कर छूटे पांड़े जू समधाने तें दक्षिणा पायो।
हंसत ठाढ़े ब्रजके वासी सब कौतुक देख आनन्द
उर न समायो॥

कलिङ्ग—योगिया

री आली श्याम बजावत बीना।
अब बिना जैसे प्राण दुःखत है जल बिना जैसे मीना॥
बारह वर्ष की वयस जात है यौवन अधिक सलोना।
कर स्नान चीर पहनायो सूर्य अर्घ ले दोना॥
हाय दई तेरो का रे बिगारो छोटे बालम मोहि दीना।
करि हों शृङ्गार पलङ्ग चढ़ बैठी अङ्ग अङ्ग रसभीना॥
चोलो के बन्द करकन लागे के पीतम पोंछ पसीना।
मुरलीकी ध्वनि वश भई है कामिनी मोहन मन
हर लीना।
सूरदास प्रभु तुम्हारे दर्श को चरणकमल चित्त दीना॥

कलिङ्ग—परज

होरी खेलत मेरो मन हर लीन्हों या ब्रजबाला
कुंवर कन्हैया।
और नई चूनर रङ्ग में भिजोई कैसो करों मैं
अब मोरो देया॥

२

होरी हो रही हो रही हो रही री सखी री
आज अवध नगर।
धाम धाम पुर गलिन गलिनमें भई चहुं दिश
भली धूम गजर॥
बिना रङ्ग बोरे निकसन न पावत कोउ भूप
कुंवर ठाढ़ो छैके डगर।
बाजत मृदङ्ग डफ नाचत विविध नट उड़त अबीर
रङ्ग लेत बखर।
रामसहाय मोहे छवि रसवश कीन्हों सुघर सलोने
रङ्गभीने रवर सु॥

३

सखी तेरी बेंदलिया पर वारी।
क्या बेंदिया गढ़ी सोनारनको केहुं सांचे में ढारी॥
अवर्ण वर्ण अनूप मनोहर चित्र विचित्र संवारी।
ना या बेंदी गढ़ी सोनारन ना केहूं सांचे में ढारी॥
अगम देशते आई बेंदलिया प्राण पिया की चिन्हारी।
सोना सनेह सुकीर्ति कुंदन नाम नगीना भारी॥
सतगुरुको शिक्षा माणिक्य मोती घर बाहर उजियारी।
यह बेंदिया पर नारद रीझे शम्भु लगायन तारी॥
शुक सनकादि और ब्रह्मादिक मुनि मन मोहन हारी।
सब सुहाग भरी या बेंदिया तीनों गुणसे न्यारी।
रामसहाय सुहाय तबे जब होए पियाकी पियारी॥

४

रङ्ग भयो तेरा ढङ्ग भयो तू कान्ह भयो तेरो
आन नई है।
तेरी सभा सब रङ्ग रङ्गीली हरिकी छवि और
खान नई है॥
या के रूपको कौन पहचाने ध्यान सो हरिको
पहंचान नई है।
हाफ़िज़ खेल ने होरी में मोहा मुरली नई तेरो
तान नई है॥

५

यह रात कब जायगी सजनी भोर भए मिलौं
अपने पीसों।
खेलौं रङ्ग उन सङ्ग निसङ्क काढौं अरमान जीसों।
हो सुनि है या ब्रज में कोउ हाफ़िज़ आय निकसो
हो यह ठानो अभीसों॥

६

तेरे नयन कहे देत प्यारी प्यारे सो मिलो आय
कहा भयो जो न मान।
लीक पीक अधरन पर राजत अङ्गिया अङ्ग दरकान॥
प्रीति छिपाई छिपे नहीं ए री रतिके चिह्न मनमें
बसी हैं तेरे अधरन पर मुसक्यान।
खेलत फाग अबीर उड़ावत मुखपर देखत
मुक्ताहल मानो शोभित रङ्ग बरसान॥

७

रसवादी रे कान्ह तोसे को झगरे।
अबीर गुलाल ले गाल मलत हो गुवान भरे
रसके पगरे॥

८

मो पै तो रङ्ग डारे री देया और आप न भीजे।
अबीर मले और कुच मुख मोड़े कहो री सखी
क्या कीजे॥
बात कहे सो कहवे को नाहीं आप कहे और रीजे।
अचपल हो बटपार बनो वांको गारी भी दूं तो
ना खीजे॥

९

फगुवा मांगन आवे री मैं तो नाहन जानूं कौन
गांवको बसैया।
फगुवामें भला कहा होत है हम न जानें ए री
मो को बता मोरी देया॥
मोसे तो कछु और भी कहत है कासे कहूं मोरी
बाखल सगरी चवैया।
मैं अचपल मेरो रङ्ग यह अचपल ए री मेरो राम
नाम है खेवैया॥

१०

जिन मोरी चुनरिया भिजोई रे कोई वाको जाने।
घूंघट में मैं तो कान्ह न देखो लाख कहो तो न माने॥
ले पिचकार कुञ्जन में निकसके मेरो ओर को धाने।
अचपल होके भिजोई मोको सहने परे मोहि ताने॥

११

होरी खेलन आयो मेरे कृष्णमुरारी।
वर्ण वर्णके रङ्ग बनाय के सङ्ग ग्वारन को लायो
आन नगरमें धूम मचाई मुख मोड़े दे गारी॥
वारो कान्ह वो तो हो कार छूटे हो कहा कहों
लाजको मारी।
बबरू आधीन निर्लज्ज भयो याते नाचत दे दे तारी॥

१२

आज दुलहन बन आई चल देखन जैये।
घर घरते सभी बन आई ले ले सब विध रङ्ग
छूटी लटे मुख ऊपर आई घूंघट के बल जैये॥

१३

आज पिया मिलनेकी बारी श्याम मोरी अङ्गिया
रङ्ग भर डारी।
अगर सुने मेरा वगर सुने रे सासु सुने दे गारी।
कृष्णानन्द कहत तोहो सो समुझ छाड़ पिचकारी॥

१४

हां रे लाल मैं तो भीज गई रङ्ग में।
ब्रजकी मग में निकस गई सब सखियां सङ्ग में॥
पिचकारिन सो तक तक मारी रसवश कर डारी
अपने ढङ्ग में।
धर बहिय ां झकझोरी मोरी मुखसे बोलत हो हो
होरी लिपट गयो मेरे अङ्ग अङ्ग में।
हा हा करत हूं छाड़ दे रसिया फगुवा लीन्हों
याहो अनङ्गमें॥

१५

नयन तेरे सब रसरङ्ग भरे गोरी।
जमल आड़ा विमल कमलदल लोचन पाय
महावर रोरी।
रेशम जाल में लाल परो है औ मृग खञ्जन जोरी॥

१६

रे बरजोरी करत हो को खेले तोसो होरी।
अबीर गुलाल केसर पिचकारी और मलो मुख रोरी॥
सारी हमारी रङ्गसों भिजाई नाजुक बहियां मरोरी।
बाजत बीणा मृदङ्ग चङ्ग डफ भारी रङ्ग मचो री॥
काहूको लपट और झपट काहूको काहूको
गह पकरो री।
राजा गुजरमल फगुवा दीजे करूं बिनती कर जोरी॥

१७

होरी खेलत ब्रजराज दुलारा मधुबन धूम मचावे।
अमीर पिया सब सखियां सङ्ग लिए विधना
पै गुण गावै॥

१८

अरी वश तेरे आए री फाल्गुन मास लाल वो तो
नई प्रीतिकी चाह परी।
जाको रङ्ग ताही पर छिरकत अङ्गसों अङ्ग
लगाय रही॥

१९

यह होरीको ढीठ लङ्गर निकसन नहीं देत दैया।
नेह लगन और वश भई उनके मैं चेरी वो मेरे सैंया॥

२०

नारसों नार खेलन तब लागी अपने मनसों होरी।
लाजसों नार अबीर मलत है अब भई है
सांवरी सों गोरी॥

२१

सखी सब हो भिजोई मनमोहन मेरी सारी रे।
सारी तो सारी चोलिया भीज गई भर मारी
पिचकारी रे॥

२२

खेले री शिवशङ्कर होरी।
सुर नर मुनि कैलास चलो री॥
सप्त स्वरन और तीन ग्राम धर गावत किन्नर रूप
धरो री।
सिंही नाद सुहावन बाजे डमरू डिम डिम बाज
रहो री॥
ब्रह्मादिक सुनकादिक देव केसर रङ्ग भर
भीज रहो री।
अबीर गुलाल भस्म अङ्ग सोहै फेंकत चतुर
सुघर चहुं ओरी॥
पञ्चवक्त्र त्रिनेत्र गङ्गाधर चन्द्र ललाट सोहै एक ठोरी।
देखत ब्रह्म प्रसन्न भयो है यह प्रकार हर रूप
धरो री॥

२३

एरी सखी बन बन होरी खेलिए आयो फाल्गुन मास।
अतर गुलाब कुङ्कुमा केसर ले चल कान्हर पास॥

बसन भूषण पर शीर्ष फूल धर अङ्ग सुगन्ध सुवास ।
मेरो गिरधा मान उठ चल हिल मिल पूर ले
फगुवा मनकी आस ॥

२४

खेलन लागे फाग मोहन ब्रजके पति नन्दके राज
दुलारे ।
चोवा चन्दन अतर अगरजा केसर परत फुहारे ॥
कृष्ण खेलत सब गोपी खेलत खेलत ब्रजजन सारे ।
सन्मुख चोट परी राधा पै भर भर रङ्ग पिचकारे ॥

२५

सूधे खेलो होरी अनोखे लाल ।
उत हो रहो न गहो बहियां मोरो टूटो है
मोतिन माल ॥
छिरकनके मिस अङ्ग भरत हो और मूठ लिए
गुलाल ॥
औरसरङ्ग लाज नहीं आवत देखत सारो ब्रजबाल ॥

२६

चतुर श्यामसों को खेले ऐसो होरी ।
अबीर उड़ावत रङ्गमें भिजावत और करत बरजोरी ॥
मनमोहन तुम चिर चिरजीवो जिनते सबनको
आनन्द भयो री ।
कहत रसिक कृपाकर मोपर रख ले लाज अब मोरी ॥

२७

भीज मेरो चुनरी रही है रङ्ग होरी खेलत आप
बना मोरे सङ्ग ।
आवज डफ बाजत झनकारन और बजत है
ताल मृदङ्ग ॥
केसरकी पिचकारी रङ्ग भर भर मारत है अङ्ग ।
अबीर गुलाल घुमड़ रहे बादर उमंग वर्षत है रङ्ग ॥

२८

सोना नागर नन्द दा सांवलड़ा होरियां साड़े
खेलन आंवदा है ।
गावदा बजांवदा मैड़े मन भांवदा वंशीदी तान
सुनावदानी जांवदा है ॥
केसर दी पिचकारियां चलांवदा साड़ी सारी
सुरङ्ग भिजांवदा है ।
रसिक कृष्णदीको गल बांधां माड़े दिल नू
ललचांवदा है ॥

परज—कवित्त

अरे छैला कहा लेगा मोसे लरके ।
कुछ दूंगी न लूंगी न कहूंगी न सुनूंगी तुमसे
अबीर गुलाल मलूंगी पकरके ॥
जानत हूं नन्दको नटखट् शिर मोर मुकुट तेरे
कर में लकुट ओढ रह्यो पीत पट मत खोल घूंघट
तेरे मनमें कपटको लटक परे इट सट सब जागा
काहे अब लरके ।
जिन सिखलायो भुलायो बहकायो मोह लगायो
बिहायो ना सरके ॥
छाड़त नाहीं लङ्गर लङ्गराई करत ढिठाई औ
लराई धूम मचाई ते कुंवर कन्हाई विष्णुदास
अपनी पराई
तो राम दुहाई सोगन्ध खाई सांची सुनाई छाड़ोंगो
नाकर लरके ।
तरके भरके गुलचा जरके मैं अपनो कर के ॥

२

पनिया भरन हूं न पाई होरी कान्ह मचाई ।
जे जे गई ते रङ्ग में भिजई त्यों दई दई कर आई ॥

३

फाल्गुनको दिन आयो री ।
कौन सङ्ग खेलों पिय परदेश खबर नहीं लीन्हीं
विरह आन सतायो री ॥

४

गारियां मैंनू दे दे जांदा है ।
नागर नन्दमहर दानी सदयो होरी दा तू खेल
कडांदा है ॥
अबीर गुलाल भवन में डाले पिचकारियां
चलांवदा है ।

बोलियां ठोलियां करदा निहोरियां बलिहारियां
मुसकांवदा है ॥

५

होरी खेलन आए कछु खेल न जानो।
उर बनमाल लगी पलको कर अतर सुगन्ध
अङ्ग लपटानो ॥
चन्दन भाल विशाल पीताम्बर जो लग नारी
खेलारि न जानो।
मोहन कीन्ह पयानो तो लगि जाओ चले चुपके
गृह वेगि सिखावन मानो।
जो हठ ठानि रहोगे यहां तो परम रङ्ग यह जानो ॥

६

हां रे लाल मैं तो घेर गई रङ्ग सो देखो मेरो
हाल रे चतुराई लाल मैं।
मोहे अकेली जान लाल मेरो मुख मल लीनो
सोतिया छाड़ गई घर घरको लाल मैं ॥
फगुवा मांगन आई उमंग मो मोहे लगा लीन्हीं अङ्ग।

कलिङ्ग—तिताला

डार दीयो मो पे रङ्ग बरजोरी लङ्गर भर पिचकारी
मुखपर मारी अब न खेलों तोरे सङ्ग।
फाल्गुन में रतराय चले हो कृष्णानन्द उमंग॥

२

साहबां हो राज म्हां सो अबीर लगावो निर्लज्ज
गावो गारो।
ईके ननद खड़ी अगवाड़े पिछवाड़े दे तारी
बलिहारी बोलत संभारी ॥

३

ना खेलों मैं बार बार तुम रङ्ग जिन डारो
ऐसी होरी सइयां।
विनय करौं तोरि लागूं पइयां ऐसो होरी खेलो
नाहीं रे सइयां ॥
बरजोरी कुच गहे मेरी मींजत फिर फिर आवत
मोरे ठइयां।
काजुम अपनी ओर निभावो देखो सखी तेरी
घेरी गुइयां ॥

४

होरी आई पिया परदेश।
अपने पियाको मैं ढूंढन निकसो कर योगिनको वेश ॥

५

रङ्गभीनो होरी खेलत है रङ्गभीनो।
हों जो अचानक गृह तें निकसी औचक कर
गह लीनो ॥
छीनो लाल माल मोतिनकी अबीर माड़ मुख दीनो।
चितवन माह ठगोरी डारो ऐसो श्याम प्रवीनो।
छविनायक वंशी अधरन धर सगरो ब्रज वश कीनो ॥

६

एरो गोरे मुख गुलाल कैसे झलके।
मानो शशिमें भौम आनके कीन्हीं वास अचलके ॥
रूप सिन्धु सो उमंग रहो है कल कपोल लसो
अलके।
छविनायक मानो सुधापान हित व्यालबाल
युग ललके ॥

७

होरीके दिननमें गुमान कैसे मान रे गुमान कैसे।
वृन्दावनकी कुञ्जगलिनमें मांगत दधिको
दान मान रे गुमान कैसे ॥

८

सांवलियाने मो पे रङ्ग डालो रे केसरको
पिचकारी रे।
नवल लाल उड़ावे गुलाल मेरी सारी भिजोई
सारी रे ॥

कलिङ्ग—परज

माई री ऋतु फागकी आई।
जबसे गए मोरी सुध हु न लीन्हीं किन सौतन
बिलमाई ॥
जागत जागत नींद न आवत दागत है विरह
दुःखदाई।

छविनायक कैसे मन समझाऊं बीती अवधि पती
न पठाई ॥

२

नयन रोपरजोरी न माने।
उरंगे रहत रैन दिन सजनी देखत ही घनश्याम
लुभाने ॥
छूटो लाज सकुच गुरुजनकी घर सुजन दुर्जन
सब जाने।
छविनायक वे अपने ग़रज़के सुन सुन लोग देत
मोहे ताने ॥

३

भयो री नयो होरीको खेलैया।
हमरो रङ्ग हम ही पर डारत आंखिन अबीर
भरे मोरी ब्वैया ॥
तनकी पीर तनक नहीं जानत नहीं मानत काहूकी
दुहैया।
छविनायक कोउ कह न सके कुछ वे यशोदा जीके
कंवर कन्हैया ॥

४

व्रजकी गैलनमें हो हो होरी गावत।
मिल दश-बीश जहां तहां ठाड़े यमुना जान न पावत।
व्रज पनघट घाट कन्हैया रोकत ग्वाल बालको गावत॥

परज—धमार

पर वश आन परी वो इन गलियनमें तिहारे
कौन खेल बनवारी।
भीज गई अङ्गिया रङ्गमें क्यों निधरक दें दे गारी॥
जो तुम्हारो गुलाल सांवरो उघर परेगी प्रीति हमारी।
अबके घरे बलिहारी जान दे हा हा कर हों हारी॥

परज—कलिङ्ग

पिया न गहो पग पायलया घुंघरू बजनू।
जागत है देवरनिया जेठनिया सास ननद अपनू॥
भोर भए सुनके हंसि है पिय लाज नहीं तुजनू।
कञ्चन थार कनक पुरियनकी बिछुवन झनक घनू।
जो रस चाहो रहो पिय हा हा आवन दे रजनू॥

२

सुन्दर श्याम सलोना सखी वाको बात बातमें टोना।
सुन्दर श्याम कहो नहीं माने बातनको परचो ना ॥

३

तुम्हरो पगरिया हमरी चुनरिया एक हो
रङ्ग पिया मोर रे।
तब जानोगी चतुर खेलैया ऐसो रङ्ग मोय रे।
उघरन चोप खेलों फाग वजहन द्विविधा भ्रम
सब खोय रे॥

४

अपने ही रङ्गमें चटक चुनरिया मो छके
पिया रङ्ग दे रे।
ऋतु फाल्गुन की उमंग यौवनको विरह सतावै
मोहे रे॥
व्याकुल होके मन्दिर सो निकसो लोकलाज
सब खोये रे।
लाग लगी तो लगी रहे वजहन होनी होय
सो होये रे॥

५

केह विधि होरी खेलों पिया सात।
अबीर गुलाल रङ्ग पिचकारी याहो तें मेरा जिय
सकुचात।
हों मूर्ख सइयां चतुर सुघर है वज़हन लाज
हरिजीके हात ॥

६

हां जो म्हारो मनड़ो थां लियो छे जो कांई ले घर
जावां जी।
नन्दजीरा प्यारा थे कान्ह छबीला अरज करां
छां जो फेर पावां जी ॥
थानो बात रहे सोई कोजे थाने कांई कहि
समझावां जी।
वेर परी छे बलिहारी ननदल क्यों कर प्रीत
दुरावां जी॥

७

ए छैल खेलार लङ्गर मोहि गारो न गावै।
केसरि रङ्ग भरी पिचकारिन दोठ बजावत तक तक
मोहि चलावै॥
भुज भर लेत दौर आगे ते काहूको लाज
सकुच न आवै।
हां बलिहारी चलौं कैसे मग या गोकुलमें रसिया
कान्ह कहावै॥

खम्बावती—परज

रङ्गभीने कुञ्जनमें खेलत हैं दोऊ होरी।
नन्दनन्दन मनमोहन नागर श्रीवृषभानु किशोरी॥
अबीर गुलाल उड़ावत सखियां कोई सांवली
कोई गोरी।
रसिक खुशाल विलोकत शोभा पिय प्यारीकी जोरी॥

२

होरी खेलें कुञ्जनमें रङ्ग रङ्गीले लाल।
अबीर गुलाल उड़ावत गावत सङ्ग लिए व्रजबाल।
ख्याल खुशाल करत कुञ्जनमें गावें होरी दे ताल॥

३

कैसे हो निपट खेलार रो बोर देत रङ्ग सारी
हमारी।
नन्दरायके लाल लाड़ले रसिया कुञ्जविहारी॥
वारी वयस चञ्चल बहुत तन श्रीगोवर्द्धनधारी।
नेक न मानत वरजोरी ठानत ख्याल खुशाल खेलारी॥

४

खेलूंगी फाग कुञ्जनमें पिया सङ्ग यही बात
मन भावे री।
रङ्गूंगी केसर रङ्ग यशोदा लालको उर हो उमंग
उमंगावे री॥
अबीर गुलाल कपोल लगाऊं याही विचार
मन आवे री।
करिए ख्याल खुशाल श्यामसङ्ग रुचि हिय
मैन बढ़ावे री॥

५

शोभा कुञ्ज पुञ्ज अति छाई।
ऋतु वसन्त फूली फुलवारी मधुकर गुञ्ज मचाई॥
यमुना तीर सुहावन भावन विहरत तहां यदुराई।
सङ्ग व्रजबाल रूपकी सीमा मोहनी रहो प्रगटाई॥
बोलत पक्षी द्रुम द्रुम ऊपर सुगन्ध पवन महकाई।
निरखत रसिक खुशाल कृष्णमुख नखशिख
सुन्दरताई॥

६

नयन काहे न संभारो ज़रकशी अङ्गिया कुचन
पर सोहे बन्द गले अधिकावे री।
मैं बौरी मेरो पिय बहुरङ्गी काहे को रार बढ़ावे री॥

७

मेरो कृष्ण कन्हैया ढूंढ फिरी नहीं पायो री।
अबीर गुलालको बादर छाया रङ्गको मेह वर्षायो री।
कृष्णानन्द विसूरत निशदिन मदनमोहन
विसरायो री॥

८

सांवरे सो मैं खेलूंगी होरी।
निकसी थी मैं अपने मन्दिर सो सास ननदको चोरी॥
ना जानो के बीच नगरमें ढीठ खेलार खरो री।
करेगो एती भकझोरी॥
छीन लियो मोसे रङ्ग पिचकारी अबीर
गुलालको झोरी।
बहियां पकरके ऐसो झटको कमर लचक गई
मोरी कहा अब नेह रहो री॥
सुनो री सखी पति सब को है प्यारो कहा भयो
व्रजमें बसो री।
कान न सुन्यो कहीं आंख न देख्यो होरी मित
वरजोरी भला तुम सांची कहो री॥
जिधर जात उधर याही गति यह ढङ्ग सिखो री।
कौने यतन समुझावे वजहन ऐसो मथमें छको री
कहो नहीं मानत गोरो॥

९

सांवरे मोहे रङ्गमें बोरी।
जात हती मैं तो पनघटको सखी बाटमें मिल गयो
किशोरी॥
हा हा करत रही पइयां परत रही
एक न मानो मोरी।
देखो तो एती बरजोरी॥
तन रङ्गो मन रङ्ग गयो है सगरो विरह
अधिक भयो री।
छूट गयो डर सास ननदको अब काहेकी चोरी
चलो ब्रजहन अब खेलिए होरी॥

१०

रङ्ग डारो सांवरे मोहे आज सांवरे चितवत ही
रङ्ग डारो रे।
ना मोसे कबहूंकी प्रीति रीति सखी नाम सुनो
बनवारी रे॥
ब्रजको गलो कोउ कैसेके निकसे जहां बसे
ऐसो खेलारो रे।
भूल गयी सब सुधबुध ब्रजहन छवि देखत
वाकी न्यारी रे॥

सोरठ—परज

निपट भयो मतवारो रे।
जबतें पियाने फाग रच्यो है प्रेमको मद्य नित्य
आपो पीवत ललचत जियरो हमारो रे॥
आनो रे नोचढ़िके मोहन मोहन दई को
संवारो रे।
जाको आप चाहत है ब्रजहन तन मन सब रङ्ग
डारो रे॥

परज · तिताला

आज कान्ह सखी खेलत होरी।
प्रेमको हाथ लिए पिचकारी फेंटमें अबीर
गुलालकी झोरी॥
छवि देखत सकुचत है जियरा जानि परत जैसे
मधमें छको री।
ऐसो एड़ा आवत है ब्रजहन पति राखे भगवान
अब मोरो॥

२

मैं तो उलटा उरहना ल्याई री।
हौं जो जात रही बछरा दुहावन बछराने उझट
चलाई री॥
सास कहे मेरो नवल बहुरिया अङ्गिया कहां
मसकाई री।
सासुजीके बेटवा ननदजीके भैया जिन मोरो मति
बौराई री॥

३

वृन्दावनको कुञ्जगलिनमें मोहन खेलत होरी हो।
इत आए मोहन उत आई राधा ख्याल रच्यो
अति भोरी हो॥
सब सखियां मिल रङ्ग बनायो केसर कुङ्कुम
घोरी हो।
लाल गुलाल लाड़ली डाले मोहन मलेमुख रोरी हो॥
भर से वदन भए मनमोहन सब हो हंसे दे तारी हो।
बाजत ताल मृदङ्ग मुरलिया गावत दे दे गारी हो॥
भर पिचकारी मुखपर मारो भीज गई तन सारी हो।
उड़त अबीर अरुण भए अम्बर शोभा बढ़ी है
अपारी हो॥
महल चढ़े यशोमतीजी जोवें खेलत ब्रजके
मंझारी हो।
मोहन पकरके फगुवा लेहौं छोड़ावेगी महतारी हो
सूरदास मनभावतो फगुवा दीन्हों कुञ्जविहारी हो॥

४

लागो लगनिया को छुड़ावे कोउ लाख कहो
जिय एको न भावे।
घूंघट खोल मिली क्यों न पिय सो लाग गई जब
जिय तरसावे॥
और वन फूले फूल फुलवारी हमरे फूल मन जिय
सकुचावे।

प्यारे गोपालको आंखन सो उरझो अंखियां को
सुरझावे ॥

५

वेसेके देखन पाऊं देरन हो नन्दलाल जागे।
जान देत नहीं निपट अवायन नित उठ बोलन लागे ॥
मेरे द्वारे मधुर डफ बाजे सुन सुन मन अनुरागे।
हरिदयाल पुरुषोत्तम प्यारो निरख निमिष न लागे ॥

६

सब रसभीनो गात राधा गोरी खेले होरी।
एक ओर राधेजू ठाढ़ी एक ओर नन्दकिशोरी ॥

७

आज लाल रङ्गभीने सखी तेरे बांके नैना।
खञ्जन ढलक कपोलन लागो अञ्जिया मसक गई
सुख सेना ॥
सुध न रही कछु अङ्ग बचावत जागो कहां तुम
सारी रैना।
डगमग चाल चलत मारगमें स्थिर न रहत जीव
तेरो चैना ॥
अब यह बात काहू मत कहियो कर जोर तेरे
मैं लागूं पैना।
गावे गूदर हंस बोलो मखी वह घर जाय देख
रेख सुख ऐना ॥

८

अपने यौवन मदमाती सखी तेरो यौवन फीको।
जिन नहीं खेल्यो अपने सइयां सङ्ग सो जीवन
जगमें नहीं नीको ॥
ता को कौन सुहाग बखानो कर गुमान रही जीको।
आपन रुचि और नहीं भावत मज्जन संयम कियो
अधीको ॥
चाल सोई जो चले सब कोई जो भावे जिय पीको।
मान किये कहो किन सुख पाया सुरनर मुनि सब
देख महीको।
गावे गूदर जगमगत पियारी अरधङ्गी छोड़ो सीको ॥

९

ब्रज में खेलन मत जा रे तो को कोऊ रङ्ग डार
दे है।
ग्वाल सखा सब मदके माते देखत ही चहुं
दिश ह्वै धै है ॥
एक एक अङ्ग सो पिचकारी तुम्हरे शीर्ष विसे है।
ब्रजवासी विश्वासी है सब मार्ग में झूमि विलसे है ॥
बोचे तुम हो जावोगी बौरी गोकुल जाने न पै है।
कहा मान तुम नवल बहुरिया नाहीं तो पाछे
पछते है।
गाव गूदर मेरो नेह सांवरो काहेको लाज लजे है ॥

१०

ना खेलूं ऐसी होरी सइयां ना खेलूं ऐसी होरी।
अबीर गुलाल लगाय कुचनमें छतियां छुवन
चाहे मोरी।
बरज रही बरज्यो नहीं माने मुखमोड़न को रोरी ॥

११

गोरी तेरो आज हाल और हो और वा ने रङ्ग
तो पर और हो छिरको।
तू जो गई कुञ्जन में छिनरिया तो आवत हो
देखत फिर फिर को ॥
वसन भूषण तेरे कहूं के कहूं जैसे कोऊ
निकसत है घिरको।
कहा कहूं तोसे सुन मेरी अचपल मोहे ता सोहे
तेरे सिरको ॥

परज—कलिङ्ग

होरी अब न खेलो मोरा सइयां बालम परदेश।
अपने सइयां को मैं ढूंढ़न निकसी कर
योगन को वेश ॥

२

ऊधो रे अरे मोरा बाला सङ्गाती यार ओ रे मेरा
जनम सङ्गाती यार।
हा हा करत हूं पइयां परत हूं कर ले अब सुख प्यार।
कृष्ण रसिक मनमोहन प्यारो काहे डारो विसार ॥

काफ़ी—यत

राघवजी खेलत होरी।
इत रघुनाथ साथ अनुजन लिए उत मिथिलेश
किशोरी॥
केशर कीच मची चिति ऊपर रङ्ग वर्षत चहुं ओरी।
चलो सखी देखन गोरी॥
मुख माड़ो पिय जनकनन्दिनी चन्दन वन्दन रोरी।
वन्दन करत सकल जनवन्दन केशर भाल लगो री
करी सब सुधबुध भोरी॥
फगुवा दियो सबै मन भायो ठाढ़े युगल कर जोरी।
रीझ खीझ दृग लालके आंज्यो लियो पीताम्बर
छोरी हंसी सब सखी मुख मोरी॥
सीतारामको ध्यान बसत हृदि गौरश्याम रङ्ग जोरी।
रामदास बलि बलि दम्पति छवि निरखि वदन
रूप तोरी दृगन तें पल न टरो री॥

२

राधा नागरी नन्दकुमार कदम तले खेलत होरी।
विपरीति रीति सुधारि श्याम को बनाए गोरी॥
लहंगा लाल बनाय ज़री को सुआ रङ्गको सारी।
कञ्चुकी कलित कनक कटि किङ्किणी अलता
पग हो सुधारी अङ्गुरी बिच बिछिया डारी॥
चन्द्रहार उर मणिगण राजत मोतियन मांग संवारी।
कानन बाली नासिका बेसर रम्या रूप बना री
पीठ पर वेणी सुधारी॥
कर चूरी भुजा नीके बाजूबन्द रूप अनूठो नारी।
बेंदी लसित चलत गजगमनी मोहिनी सब पै डारी
निरख मन सारद हारी॥
ताल तम्बूर लिए कर गोपी नाचत कुञ्जविहारी।
ता ता थेई थेई होत परस्पर टेरत मुरली
प्यारी लखण छवि आनन्दकारी॥

३

गारी जिन दे रे कान्हा लाजको मारी।
तुम तो ढोटा नन्दमहरके हम ब्रजकी हैं नारी॥
सुन्दर श्याम जान दे मोहन मत मारो पिचकारी।
लपट झपटके चीर खेंचत हो गावत दे दे तारी।
कृष्णानन्द बढ़ो गोकुल में मैं तेरे बलिहारी॥

४

सखी ए री मैं कौन तरहसे डोलूं मेरे मोहनने
धूम मचाई।
मग मग रोकत टोकत मोहन कैसे के पनिया जाई॥
गैल चलन नहीं पावत नारी पिचकारिन रङ्ग चलाई॥
काहूं सो लपट और झपट काहूं सो काहूको
धर मसकाई।
कृष्णानन्द आनन्द में डोलत फगुवा लेत मनभाई॥

५

मङ्गल दाइनी होरी खेलत राम नरेश।
उड़त गुलाल लाल भए बादर वर्षत सुमन सुरेश॥
रामके हाथ कनक पिचकारी लक्ष्मण भर भर देत।
राम काना वैकुण्ठ लाड़िले हो हरि हरत कलेश॥

६

अलबेल डा वे मोहना मेंड़ा होली खेलन आयानी।
अबीर उड़ावदा गारी गांवदा ताल मृदङ्ग बजायानी॥
वेड़े अखाड़े आंवदानी नन्द दे होरी राग जमायानी।
कृष्णानन्द गबरू महर दे पिचकारियां रङ्ग चलायानी॥

७

उनसे कोई कहियो जा री।
मनमोहन ब्रजराज कुंवर सो अरज़ हमारी॥
यह चर्चा हूं रही है ब्रजमें कह गए सुघर खेलारी।
सब सखियां मिल फागु खेलें मोरे नयन भर
पिचकारी पिया छाड़त हौं ठारी॥
अपने अपने कन्त सङ्ग खेलत हमरो सुरति बिसारी।
गोपी ग्वाल सबै होरी खेलत मैं सांवरे को पुकारी
भोर भई है मो पे भारी॥
बन बन ढूंढ फिरी मैं सजनी पिय पिय कर मैं हारी।
अबकी बार मोहि दर्श देखावो मैं तेरे बलिहारी
कहां है वह बनवारी॥

आप तो जाय कुब्जा रङ्ग राते हम भई अति
दुखियारो।
विरहने मो को फूंकि दियो है झरन लगो
चिनगारो आनकें बुझावो बिहारी ॥
अबीर गुलाल की गेंद कुङ्कुमा रङ्गको परत फुहारो।
बाजत ताल मृदङ्ग झांझ डफ आमक् हों तेरे बारो
तकत नित्य आशा तिहारी ॥

८

मोहे मिल गयो कुंवर कन्हैया जात हतो
यमुनाके निकट।
वे आवत हों जात हते उत बीच हो भेंट भई
नेक चितै तिरछी चतवन सो गति मति माइ लई
जबतें परी चित्त में चटपट ॥
विधि वश नीर भरनकों सजनी आज हो आप गई
सोहत सुहाग फाग अनुरागी ग्वारन घेर लई
आय गए कित तें झटपट।
मोर मुकुट मकराकृत कुण्डल अलक कपोलन छई
नाक बुलाक अधर धर मुरली गावत तान नई
बोरी भई सुनके लटपट ॥
चैन न परत रैन दिन जबतें नयनन नींद गई
पञ्चवाण शर तान हिये को छेदत हाय दई
या तें वन निकरत सटपट।
मैं पूछत तुम सो उर उपजो अब हो पोर नई
कौन उपाय मिले सोई कीजे श्यामा श्याम मई
जातें मिटे मनको खटपट ॥

९

मतवारे नयन कामिनी वश करो री।
खञ्जन नयन महामृग लोचन कञ्चन रूप धरो री ॥
केहरि कटि कदली सो जङ्घा नासिका शुक हरो री।
चन्द्रवदनी गजगमनी प्यारी ॥
सब को मन जो हरि ग्रीवा कपोत श्रीफल
सो छाती देखत वश जो भयो री।
कृष्णानन्द चपला सी चमकत वारो मदन करोरी ॥

१०

तोरे अङ्ग में रङ्ग भरो री सांवरे कैसे खेलोंगो
मैं होरी।
अधरन अञ्जन भाल महावर नयन तंबोल लगो री ॥
धरणी धरत पग डगमग आवत रैनके दैन कहो री।
हम सो अवधि बदी होरी खेलन को अनृत हो
रङ्ग रङ्गो री।
कृष्णानन्द प्रभु सांची कहो तुम कौन तिया
सो पगो री ॥

११

कुब्जाको छवि सुन्दर कीन्हीं हम सो करत बरजोरी।
लाजको चूनर ना भिजोऊंगी सास ननदको चोरी ॥

१२

तुम काहेको देत हो गारी तुम नीके बोलो।
कौन तियासे रङ्गे मनमोहन मनकी घुंडी खोलो ॥
और सखिन सो रसको बतियां हम सो घतियां बोलो।
कृष्णानन्द रङ्गे रङ्ग अनृत हो घट घट बतियां छोलो ॥

परज—धमार

मेरो घूंघट छाड़ छैल अब मैं बहुत सही।
बाट घाट मो है रोकत टोकत मानो मेरो कही ॥
अब जिन छुवो चूनर मोरी जो कछु भई सो भई।
कहा मानो ब्रजराज लाड़ले मैं जो आई नई ॥

२

यौवन मदमातो डोले फाल्गुनके दिन जान।
रङ्गभीनो निशा जागो पीतम सङ्ग कपोल लगाए
लालो पान ॥

३

चलो जा री नारि गंवार भला तोसे को बोले।
सखिन सङ्ग मिल होरी खेले ब्रजकुञ्जनमें डोले ॥
ऐसी अनोखी कहांसे आई तनक न घुंघट खोले।
कृष्णरसिक सो ऐंड़ी फिरत है गढ़ गढ़ बतियां छोले ॥

मुलतानी—धमार

अब रङ्ग दे मोरी चुनरिया।
अपने री अपने वगर से निकसो कोई सांवरो
कोई गोरिया ॥

दुलहन बन आई मेरे गृह शुभ दिन बाजत
गोबत सुघरिया।
सकल सभा में धूम मचो है कृष्णरसिक रिझवरिया॥

काफ़ी—धमार

चलो होरी खेलिए रङ्ग रचाय श्याम सो ब्रजमें
धूम मचाय।
कान्ह ए री कछु कहे न सको मैं आज लेहुं यह दाय॥
श्याम भिजोऊं बहियां पकरके लेऊं कुञ्जमें नचाय।
कृष्णरसिक सो फगुवा लूंगो मन इच्छा फल पाय॥

काफ़ी—यत्

श्यामसुन्दर उरपार री तेरे नयन सलोने।
मुर मुर बैठत काहे सखी री कर कर टेढ़ो भौंह री॥
चितवत चपल चतुर गति सो चल ग्रमै मर्याद
न को है।
मौज सरोज भरे हर हा बलि कौन हिये तरसो है॥

२

तेरे नयन सलोने मनमोहन रिझवार री।
बांकी भौंह कटाक्षन हेरत कोरनमें सुख प्यार री।
कृष्णरसिक उर मैन बढ़ावत सो तू नेह संभार री॥

३

तुम भए हो अनोखे खेलारी।
तुम समझ चलावो पिचकारी॥
भर पिचकारी मोरे मुखपर मारी भीज गई तनसारी।
झीनो पट झीनो है अङ्गिया गिरो जात हो
लाज की मारी।
रसिक कृष्ण मानो मेरी बतियां हा हा कर मैं हारी॥

झंझोटी—यत्

इन श्याम कन्हैया ने रङ्ग मो पे डार दियो री।
लपट झपट के मटको पटको उघारो घूंघट हियो री॥

पीलू—यत्

रङ्ग होरी रे मचाई रङ्ग होरी रे।
बन प्रमोद में आय अचानक बांह गहत बरजोरी रे॥
रामसीता रङ्ग होरी खेले सखासखी चहुं ओरी रे।
राम सखा फाल्गुनके मिस में करत फिरत
रस चोरी रे॥

गारा—यत्

माई री मोसे आ लिपटो री।
हौं दधि बेचन जात अचानक ता में आन धरो री॥
इत उत देखत लोग लुगाई मटको पटक भरो री।
गुरुजन पुरजन सब हो देखे सबे मुसक्यात खरो री॥
हा हा करत रही मैं वाको वो मोसे उरझ परो री।
अबीर गुलाल मलो कुच मुखपर और कछु बात
चलो री॥
कौन लई बनमाल मुरलिया सुधबुध सब बिसरो री।
देत दुहाई नन्द बबाको मोहन करत ठठोरो।
कृष्णरसिक गह लीन्हों मोहे एरो सखी दौर परो री॥

सिन्धु—यत्

ए री मैं कैसे खेलूंगो फाग लाल सो अबीर
गुलाल उड़ाय उड़ाय।
वे आवत सब हो हिलमिल कर तारी दे दे गाय गाय॥
एसो नटखट ढीठ छोहरा किन दोन्हों ग्रिल
लाय लाय।
मारत डारत ले पिचकारी केसर रङ्ग भराय भराय॥

२

छैल छबीला कर धाय गहो मोरी बहियां यह
रसवादी गाँव।
गावत गारी मारो नर पिय सङ्ग ले ले मेरे नांव॥
जाके डर घरसे मोरी सजनी बाहर परत न पांव।
नर नरेन्द्र मुख सुघर सो डरिये करि है वाको दांव॥

काफ़ी—यत्

सखी री उठ चल हिलमिल मोहन सो
तुम काहे रिसानो जात।
सौत घात में बात न मानो तू इतरात उत रात जात॥

२

काहे गोरिया दहलको चुनरिया काहे गोरिया
महलको चुनरिया।

यमुनाके तीरे कदमकी छइयां सांवरे ने झटकी
मोरी चुनरिया ॥

१

बहुरवा मुकर जात मोरे सइयां ने पठई बुलाय।
सुनियो री मोरी रैन परोसिन मोरे बूते रहलो
न जाय ॥

४

मेरो गोहन लागो हो डोरे कालो कामरवालो हो
सांवरो।
अब हौं के ते दिन फाल्गुन के हैं यह अब हौं ते
भयो बावरो ॥
कबहूं लपट और झपत बहियां नन्द महर को
डावरो।
गातं मातं फिरत मोहू सो जैसे फूलको भांवरो ॥
लाजको बातें कहा कहूं तो मे यशोदा पायं छुधं,
रावरो।
हों बरजत मानत न नेक हूं करत अटपटो दावरो।
जबसे लगी वसन्त पञ्चमी कृष्ण रसिक भयो चावरो ॥

५

लोग कहें कहीं और हैं सइयां सइयां हमारे
हमारे ठइयां।
बाट चलूं तो साथ मोरे सइयां बैठ रहूं ढिग
बैठत सइयां ॥
बात करूं हंस बोलत सइयां ऐसे सइयांके मैं
बल बल गइयां।
सइयांको डर है सब गुइयां देखमसो डला
बावर छुइयां।
ग्रोषे निवायके देखूं तो सइयां सइयां डाल रहे
गल बहियां॥

६

क्या मुख ले घर जाऊं पिया मोसे रूस रहा री।
श्याम पियारे मैं चेरो तिहारी हौं विरहन
बलिहार बिहारी।

कर्म करो तो पिया मिला दे विनतो सइयांको
कर मैं हारी॥

७

लिये रङ्ग रहियां भोज मेरी चुनरी गोरी खेलूं
मैं आप बना सङ्ग।
बाजत ताल मृदङ्ग झांझ डफ अबीर गुलाल
छाए बदरा उमङ्ग ॥

८

मोरी अङ्गिया पर रङ्ग डारी रे होरीके खेलैया।
केसरकी पिचकारी भर लावत अबीर लिए
भर झोरी रे होरीके खेलैया ॥

९

याको कौन भांत समझाऊं सखी मनमोहन
मानत नाहीं।
लाज न करत डरत न काहू सो गह पकरत
मोरी बांही ॥
गड़ी जात हूं लाज कोई घरको मोरी यह सुन पाई।
याको कहा बिगरे जा अरी यह लाख गारी
हम पाई ॥

१०

तेरो बारो कान्ह मो सो फगुवा मांगन आया री।
वृन्दावनकी कुञ्जगलिनमें अबीर गुलाल उड़ायो री ॥

झंझौटी—यत्

ए री कैसे मनमोहन पिय होरी खेलन आए
बैठो है राधा प्यारी।
अबीर गुलाल लाल सब रङ्ग लिए केसरकी
पिचकारी ॥
रङ्गसो भिजोई श्यामसुन्दर को भीगेगो पाग
औ तनसारी।
उत तें आये ग्वार परस्पर इत तें व्रजकी नारी।
कृष्णानन्द आनन्द में खेलत फगुवा लेहों गिरिधारी॥

काफी—यत्

बहियां मरोरी रङ्ग डारो सांवरे औचक भेंट भई।
रङ्ग पिया मोपे डार दियो री रङ्ग भर भेंट भई ॥

२

ए री मोहे मोरे बालम रङ्ग डारी।
सरस रङ्ग पिया अबीर उड़ावत बहियां पकर
मुख मल डारी॥

श्रीगुसाईं गोकुलनाथजीकी होरी।

चैती-गौड़ी—धमार

होरी खेलन हों गई जहां यमुना पुलिन सघन
द्रुम छाय।
लङ्गर ढोठ छैल नन्दजूको खेल करे यह विधिके भाय॥
कुञ्जनतें दुरकि मुरकि आवत औचक छतियां
लेत लगाय।
जो जानत ऐसो बरजोरो बैठ रहत अपने घर माय॥
अब तो आन परो या मगमें परवश भई करो
मनभाय।
सरस रङ्गरस रसिक भिजोई ले गुलाल कपोल
लगाय॥

कलिङ्ग—यत्

रङ्ग गुलाल भरो पिचकारी फाल्गुन मास
करोंगी होरी।
इत सखियनके झुण्ड लिए उत सखासङ्ग बल
मोहन जोरी॥
गहिरो खेल मच्यो अति ब्रजमें गह्वर कुञ्ज
सांकरी खोरी।
मोहन पकर नचावत सजनी सरस रङ्ग रस
लूटत गोरी॥

सरपरदा—यत्

और सो रङ्ग करों न करों मैं तो सांवरे रङ्ग सो
रङ्ग करोंगी।
लोकलाज कुल छाड़के सजनी मनमोहन सो
जाय भरोंगी॥
फाल्गुनके दिन मदको मातो होरी खेल मैं आय
हरोंगी।
सरस रङ्गको मनभायो मन मतङ्ग मन पीर हरोंगी॥

दीपचन्द्र—यत्

ब्रजराज नगरमें खेलें रस होरी।
नन्द कुंवर बलवीर धीर सङ्ग सखा लिए सब जोरी॥
खेल मच्यो अति गहरो सखी री आप करे बरजोरी।
उत गोपिनके झुण्ड मनोहर ता में श्रीराधा गोरी॥
इत उत धूम मचो अति भारी देख हगन चितचोरी
रङ्ग गुलाल अबीर कुङ्कुमा बाज रह्यो घनघोरी।
नृत्य भेद गति सब नाचत हैं सरस रङ्ग रसबोरी॥

बिलावल—चौताला

आली तू जो जात मधुवनको गलियन उत ब्रजराज
कुंवर खेलें होरी।
गुलाल अबीर रङ्ग कुङ्कुमा भाजन भरे
भरी है झोरी॥
सङ्ग ब्रजबाल ग्वाल अरु बालक करत कोलाहल
अतिशय भोरी।
यह खेले ज्यों सह्यो सके जिय गोकुलेश प्रिय
रसिक किशोरी॥

काफी—यत्

आली मोहन खेलत फाग सखिन सङ्ग रङ्गभीनो।
जियरा आकुल होय देखे बिना चित्त लाग रह्यो
है नवीनो॥
ऐसो टेर दई कहा कीन्हों बंशी बजाय मेरो
मन हर लीनो।
मानत नाहीं जियरा मेरो री तन मन प्राण
मोहन हर लीनो॥
मिल बालन सङ्ग खेलत प्यारो पहरे पञ्चरङ्ग
चीर जो झीनो।
गोकुलेश होरी खेलें गोकुलमें कालिन्दीके
तीर प्रवीनो॥

लूहर—यत्

अहो यह मार्ग नित्य आवै कोऊ बाट चलन
नहीं पावै।
मार्ग रोकत बात बनावत बातन सुख उपजावै॥

बातन अचर खेंच लेत कर कुच सो कर लपटावे।
गोकुलेश होरी रङ्ग विलसत सखिजन पाछे धावे॥

काफ़ी—यत्

बरजोरी खेल को यो नागरी प्यारी रसिक रसीलो।
मोसो करै है आली कठि नहि लगको लागरो
वह निपट अरीलो॥
शीश मुकुट कटि काछनी पहिरे सङ्ग ओढ़त वाके
भाग री उपरना रङ्गीलो।
गोकुलेश होरी रङ्ग विलसत सङ्ग लिए सब नागरी
पट पहरे नीलो॥

२

होरी खेलत मोहे सुध न रही तनमन हर लीन्हीं
मेरी कुंवर कन्हाई।
रङ्ग रह्यो सब ब्रजकी डगरमें ध्वनिकी घोर सुन
ग्रहते आई॥
आलिङ्गन चुम्बन मोहे कीन्हीं भुजा भर भेंट लई
उरमाई।
सरस रङ्ग कियो बहु विधि सो सो वरणो नहीं
जाई माई॥

अथ श्रीगुसाईं श्रीवल्लभजीकृत होरी।

परज—यत्

मो सङ्ग खेलोगी होरी तब जानों खेलारो।
मोहे अकेली न जानो सांवरे छीन लहों पिचकारो॥
नन्दमहरके कुंवर कान्ह तुम हों वृषभानु दुलारो।
परस परस दोऊ खेलन लागे श्रीवल्लभ बलिहारो॥

सोरठ—यत्

तू तरुणी सुन्दर मनमोहन काहे मुखहू न बोले री।
काहे मान कियो तैं प्यारी क्यों अब छतियां छोले री॥
विरह व्यथा काहे न बतावे सांचे क्यों नहीं खोले री।
पाय परो मिलि प्रिय वल्लभ सो प्रेम रङ्ग क्यों न
घोले री॥

बहार—तिताला

आई बहार हों सब गुणीजन मिल गाय सुनाई।
अम्बवा टेसू फूल रहे हैं गुल गुलाब चटकाई॥
बसन्त हाथ लिए ब्रजसुन्दरी नवसत सजि
जुरि आई।
प्यारी वदनकमल छवि निरखत श्रीवल्लभ मन भाई॥

काफ़ी—सारङ्ग

सखी मैं तो प्यारे को जान न दौंगी इन मोरी
बहियां मरोरी।
बरजोरी मैं फगुवा लोंगी मुख मोड़ोंगी तोरी॥
चोवा चन्दन अगर कुङ्कुमा केसर भरी कमोरी।
वल्लभ पियको रङ्ग में भरोंगी सङ्ग खेलोंगी होरी॥

२

डफ बाजत है अलबेलिनके अलबेलिनके नवेलिनके।
सुघर सुन्दर सहेलिनके गुणरूप भरी गरबेलिनके।
वल्लभ प्यारो आयो महलमें होरी खेलन
रस केलिनके॥

३

सखा सङ्ग लिए निकस सांवरो जाय घेरी ब्रजनारी रे।
परस परस सब खेलन लागे बाढ़ो रङ्ग अपारी रे॥
सुर विमान चढ़ि शोभा निरखे डारत तनमन
वारी रे।
अबीर गुलाल रङ्ग में छायो बहुत पिचकारिन
मारी रे।
रङ्ग मच्यो गलियन गोकुलकी वल्लभ नित्य विहारी रे॥

काफ़ी—गारा

सुन्दर सुघर प्यारी नारी प्यारे सङ्ग खेलत होरी।
केसर छिरकत अङ्ग प्यारी मुख माड़न देहो रो॥
लई पिचकारी छीन कर प्यारी प्यारे सो बरजोरी।
प्यारी है चतुर सुजान अङ्ग भर लीन्हीं गोरी॥
होत परस्पर रङ्ग सखिन मिल गांठ है जोरी।
गारी गावत ब्रजनारी करत है चित्तकी चोरी।
वल्लभ भए निहाल निरखि यह अद्भुत जोरी॥

भंझौटी—तिताला

घोर दई प्यारे मोहे रङ्गमें सुध न रही आली
मेरे अङ्गमें।

मैं अपने बगरसों निकसो आन गही मोहे
सखियन सङ्गमें ॥
अबीर गुलालसों मुख मलौंगी केसरि छिरकौं
प्यारे तनमें ।
वल्लभ प्रियसों उघरि मिलौंगी यही आशा
प्यारी मेरे मनमें ॥

२

नन्दमहरको सांवरो ए री मोसो होरी खेले आज ।
चोवा चन्दन उड़त कुङ्कुमा बाजे है
बहुविधि साज ॥
मन चाहे सोई करत है कछू न राखे लाज ।
ऐसो धूम मचाई बगरमें और न सूझे काज ॥
राग रङ्ग ताननको बानन निकसि सके नहीं भाज ।
श्रीवल्लभ प्रभु रसिक शिरोमणि या व्रजके सिरताज ॥

काफ़ी—यत्

मैं अपनी उमंग सों खेलों फाग प्यारे सङ्ग
जान न दे री ।
हा हा खाति तोरे पइयां परत हूं फाल्गुनमें
यश ले री ॥
वर्ष दिनको एक विनती सांची तू सुनि मेरी ।
वल्लभ पिया बिना अब न रहौंगी मन माने
सोई कहे री ॥

भाजी—खेमटा

आवो प्यारे खेलें हूते होरी रे ।
चोवा चन्दन उड़ावो मन मान्या अबीर गुलाल
लो भर झोरी रे ॥
बरस परस छूटत पिचकारी प्यारे मुख माड़त
प्यारी गोरी रे ।
फेंट पकरिके फगुवा मांगत वल्लभ प्रिय सङ्ग
नाचत गोरी रे ॥

झिंझूटी—धमार

प्यारी होरी खेलन चलिये व्रजमें आयो
फाल्गुन मास ।
अपनी उमंगसों मुख माड़ौंगी याही मनमें हुलास ॥
सब सखियन मिलि फगुवा लेहों राधामोहन पास ।
वल्लभ प्रियको अब नाहीं छाड़ौं चरण कमलको
आस ॥

२

री मैं तो वा सङ्ग खेलौंगी होरी प्यारी मेरे प्यारे
ने वेग मिलाय ।
मस्त महीना फाल्गुन का रे प्यारेसों कहियो सुनाय ।
अब जिन देर करो तुम वल्लभ प्यारीको कण्ठ लगाय ॥

काफ़ी—धमार

प्यारो आयो खेलन होरी मोसों करत बरजोरी ।
मैं अपने मन्दिरमें सोती आनि अचानक गही री ॥
फाल्गुन मांझ डरो जिन सजनी ऐसो यतन करो री ।
सखी सब मिल एकठोरी ॥
नयन आंजि याको मुख माड़ो री भूषण वसन हरो री ।
नारीको भेष बनाय नचावो चित्त चाहे सो करो री
फिरि नहीं करि है चोरी ॥
नन्द यशोदा वेग बुलावो हंसो बोलावो गारी ।
सखा सङ्ग बलदाऊ भैया कहा करि हो अब भोरी
प्यारेको देखि किशोरी ॥
नगर नगर और बगर बगरके नर नारी सब दौरी ।
अद्भुत फाग रच्यो वृन्दावन वल्लभ प्रियको जोरी
सखी सब गावत होरी ॥

काफ़ी—यत्

सांवरे नहीं जानो मोरी ।
पहले प्रीति करो तुम हमसों करि दोन्हीं
अब थोरी ॥
हम तो दासी तिहारी सांवरे कौन गुण अब तोरी ।
प्यारे तुम का सङ्ग जोरी ॥
नन्द यशोदा बलदाऊ मोरे तुम सोखे चित्त चोरी ।
अब कित भाग जावोगी सांवरे बंधे प्रेमकी डोरी
प्यारे कहो करि हौं चोरी ॥
चोवा चन्दन अगर कुङ्कुमा केसरि भरो है कमोरी ।

सारी पहिरायके संग नचाऊं मुख माड़ौंगो
रोरी प्यारेको बनाऊं किशारी ॥
वृन्दावनमें फागु मचो है सब मिल गावत होरी।
श्रीवल्लभ छवि निरखि मगन भए चिरजीवो
यह जोरी सखी सब डारत तोरी ॥

२

प्यारी आवो री आज इत होरी खेलन।
तुम सुघर सुनो एक मोरी बात तुम हो मिलाऊं
सुन्दर मोहन ॥
नगर नगर और वगर वगर में मच रही होरी की
धम डगरमें नगर नारी सब नाचन लागी कित जावो
अब आज लाज।
अबीर गुलालकी उमड़ घुमड़ में नाचत है प्यारी
सखी झुण्डन में ॥

धनाश्री—तिताला

आयो हो आवे मेरे या गोहन।
हों तरुणी कोऊ और न ब्रजमें कोई सखी
समुझावो या मोहन ॥
वे इत निकसे ओस हार ह्वै हों जरतक लागी
उठ यौवन।
मोहि न दोष दोष इन नयनन में कज्जर त्याग्यो
इन छोहन ॥
होत अवाव या वगर डगर में सास ननद मानत
नहीं सोहन।
सोधन प्रभुको अटपटी बतियां अबको फागु कछु
मोहि कोहन ॥

झंझौटी—तिताला

हो मोहन रङ्गन बोर दई।
बरज ननदिया पहरन काढ़ी साड़ी सुरङ्ग नई ॥
ना बलि बावत मार अनोखी ए सोस कौन ठई।
चोवा चन्दन बुक्का चन्दन कुङ्कुम मार दई।
छज्जाराम या गोकुल बसके ऐसी कबहुं न भई ॥

२

अब काहू मिस चढ़ों अटारी मोहन लखि सचपाऊं।
मेरो नाम श्याम सो मिलवत गारी सुनत लजाऊं ॥
लाल अली मुरली में टेरत सुनि सुनि अति
सकुचाऊं।
होनी होय सो होय धैर्य प्रभु हिलमिल रङ्ग
बढ़ाऊं ॥

देवगिरि—धमार

कछु ऐसो मन्त्र पढ़ रङ्ग छिरकत होरीके दिनन
में या मोहन बनवारी।
सकल तियनमें कौन सिखायो हों न जानूं ऐसो
कौन है नारी ॥
दौरी मोय जान वृषभानु दुलारी मन हर लीन्हों
नन्दके दुलारी।
जो मैं जानूं मन रङ्ग वाको सेस गारो दे दे हो
मतवारो बजाय तारी ॥

बिलावल—धमार

हमारो कन्हैया कृष्णमुरारी राधाने वश कीनो।
हो हो होरी होय रही है ऐसो रङ्ग रसभीनो ॥
ऐसी धूमधाम से खेल रहे होरी वृन्दावनकी
कुञ्जनमें।
होंगी गैर देखत वाह्न कान खेल रह्यो सगरे झुण्डनमें ॥
राधा जू ढिग गये से सोवत मानु नीलम बीच
कुन्दनमें।
रङ्ग लाल भोजी तरुणीके मिसे समूह सांवरेको
नोको लागत फूल गुञ्जनमें ॥

कनड़ी—तिताला

होरी खेलैया अनोखे लालन जू।
कौन बाम ब्रजवधुवनको ये मार्ग देत नाहिं
चालन जू ॥

भैरवी—तिताला

होरी खेलनको प्यारी आवो न हमारी गली रे।
केसर रङ्ग उड़ाय्यो मनमान्यो फूली गुलाबकी
कली रे ॥

अबीर गुलालकी उमड़ घुमड़ में घूंघट ओट चली रे।
प्यारे पियकी प्यारी वल्लभ अङ्ग सो अङ्ग मली रे॥

भैरवी—एकताला

होरीके बावरे हैं जू बिहारी।
मुख मीड़्या सब देखत मेरो लोकलाज तोर डारी॥
नन्दग्राम बरसानेके बीच धूम मचाई भारी।
काहूको डर नेक न मानत ब्रजनिधि निडर खेलारी॥

सोरठ-मलार—धमार

पिचकारिन झर लायो सजनी पिया रङ्ग बादर
छाये हो।
चोवा कीच मचाये डफ घोरत घन गरजन लाग्यो
ब्रजवासिन मिल गाये हो।
औसहचरी चमक चपला ज्यों श्याम अङ्ग
लिपटाये हो॥

सोरठ—दीपचन्द्र

छैला तू मेरो कह्यो मानत नाहीं परो रे
अनोखे ख्याल।
औरहि दशा भई तेरी सों मेरी हो नन्दलाल॥
तुम होरीके हरवा भरवा मैं भोरी ब्रजबाल।
मार्ग माहि लई नागरिया करिया करि
डारी बेहाल॥

२

पैंड़े पड़ो छे सास।
रसियोंने माने निकसन न देत निगोड़ी घर ते
आयो फाल्गुन मास॥
कैसे रहूं होरी खेले बिना एक बगरको वास।
इच्छाराम गिरिधर सङ्ग मिल हों कोई करो
उपहास॥

३

नन्दनन्दन गारी दई।
कहो कैसे जात सही नयन लाज नई॥
सुन्दर रूप सलोनी सो अंखियां निरखति नारी नई।
यों बटपार कह्यो मग डोले छाई है मान मई।
होरी में श्रृङ्गार गई करि बात भई सो भई॥

अड़ाना—धमार

काल तुम हा हा कर छूटे हो मोहन आज अब हो
अबीर वही ढङ्ग लीने।
हा हा इतने ही से भूल गये हो लिपट चतुर प्रवीने॥
हा हा ये होरी तो हौं न बन्दगी गारी गरा हो
सगरे महीने।
ऐसे लङ्गर तुम कबके भये हो अति ही सदा रङ्गभीने॥

जलद—तिताला

हुसन तमाशे का ईजाद ये होरी को खिलवार।
पिचकारी भर दस्त अजब सो घिर फेंटा कजदार॥
वो है प्यारा हसन उजारा काला है दिल दे अन्दार।
नागरिया श्यामा साहबा का है फरमां बरदार॥

अड़ाना-जलद—तिताला

नन्दरायको कंवर कन्हाई रोकटोक के नोक करे।
सनमुख आव तो नारी न माने बिना सनमुख यों
आन अरे॥
बिनती तिय तो हा हा खाती तिय असुवन नयन भरे।
खिरको न खोलूं झंझरो न झांकूं तो यों फेल
करे न टरे॥
निकट गये ते लिपट जात है दूरते तानन प्राण हरे।
कैसे बचूं छली ब्रजनिधि बली अली ये परो गरे॥

काफी-जलद—तिताला

गोरी लटके दो चलो यौवन दे बहार।
कहर कदर कमर नाज़ुकपर सिर लटकारे बार॥
मतवारो अंखियां जो निमानी करे नज़र
बरछी दे वार।
नागर नवल अजब महिरेठी मोहन दो चङ्गीयार॥

सिंदूरा—धमार

आयो फाल्गुन मास री सजनी खेलोंगी उघर
बनाय बनाय।
केसरको पिचकारी भरोंगी अबीर गुलाल
उड़ाय उड़ाय॥

२

गोरी हो गोकुल ग्राम न बसिये जो लौं होरी
फाल्गुन मास।
बाहर जाऊं दुर्जन लोक चवैया घरमें बैरन सास॥
खेलौं तो पिया सङ्ग खेलौं हिय में अधिक
हुलास।
रहो लाज बलिहार जाओ क्यों न श्याम
मिलनकी आस॥

बरारी काफ़ी—धमार

तू जो न बोले री देन दे वाहे गारी।
है लबारजी भार जगत्को तुम हो सुलक्षण
नागरी नारी॥
वाके मनभावे सो ही गावे तुम कहा करि हो
लाजको मारो।
या होरी में कौन बिगोई कृष्णजीव
लक्ष्मीराम जुआरी॥

काफ़ी-अनन्द—तिताला

मनमोहन रिझवार री तेरे नयन सलोने।
तू अलबेली आन ग्रामको अब ही आई गोने॥
अबकी होरी तेरे बगरमें केतिक केतिक होने।
सन्त सखी या गोकुल बसके नयन निभायो कोने॥

२

झटक्यो मेरो चीर मुरारी।
गागर रङ्ग शीषते झटको बेसर मुर गई सारी॥
छुटी अलक कुण्डलते उरझी झड़ गई कोर किनारी।
मनमोहन रसिक नागर भए हो अनोखे खिलारी।
मीरा के प्रभु गिरिधर नागर चरणकमल शिरधारी॥

३

मोरी चूनर भीजे मैं रे भिजोऊंगी पाग।
नन्दमहरजी को कुंवर कन्हैया जान न देऊंगी
मैं आज॥
फेंट पकरके फगुआ लैंगो मुख मोड़ोंगी ब्रजराज।
मीरा के प्रभु गिरिधर नागर सदा रहो सिरताज॥

काफ़ी—एकताला

होरी किन बदियां लालन मारो रे।
अङ्गिया दरक गई अनवादी भर पिचकारी डारो रे॥
देखत निकट परोसन घरको तैसो दोर्यों गारो रे।
नन्दनन्दन बलिहार बगर में हा हा पांय परों हों
हारी रे॥

होरी—धमार

भीजो मैं तो रङ्ग में सखी री आज बनवारी रङ्गीले
कान्हरके सङ्ग में।
हों यमुना जल भरन जात थी सब सखियनके
सङ्ग में॥
बहियां पकर मोहे रङ्ग में भिजोई अबीर
मलो अङ्ग में।
कोउ गावत कोउ रीझ रिझावत कोउ तान
लेत है ढङ्ग में।
कृष्णानन्द आनन्द में खेलत कोउ चलन न
पावत मङ्ग में॥

२

समझ गारी दे रे कन्हैया रे मानो मेरो बलभैया।
गारी देवे जिह्वा बिगारे ऐसो चतुर ब्रजनारी दैया॥
हों तो तिहारो लाज करत हों और करो तेरी
चाह गुसैया।
हों यमुना जल भरन जात थी बहियां पकर
झकझोरो ग्वैया॥
राधामाधव होरी खेलें चिरञ्जीवो यह जोरो कन्हैया।
हा हा करत हों पइयां परत हों मानो विनती
दधिके चखैया।
कृष्णानन्द आनन्द करो तुम श्रीगोकुलके बसैया॥

३

आली मेरे भाग्य जागे री सो लालन होरी खेलन
मेरे आए।
चोवा चन्दन अबीर अरगजा केसर रङ्ग बरसाए॥
अतर गुलाल और भोंडल अभके केसर रङ्ग झरलाए।

इतो आशा सो सब विधि पूजो मनइच्छा फल पाए।
होरो में खेलों अपने पियासङ्ग अमृत सुहाग सगाए॥

४

आए मोसों होरो खेलनको सखो कुंवर ब्रजराज।
लै गुलाल मुख मोड़ सबनको नेक न करत है लाज॥
पिचकारी भर मारत सब पर ऐसे ढीठ महाराज।
पिचकारी भर मारत सबन पै कठिन करत है लाज॥
डफ मृदङ्ग औ बांसरी घर घरते ले दौरो आज।
ऐसो लङ्गर समझत नाहीं ढीठन को सिरताज॥

५

भला मैं कैसे दुहूं यह गोरस मेरे करते छूटो
जात दोहनो।
निरखत ना नाथद्वारे मेरे आगे ठाढ़ो बजावत
नीको तानसों सोहनो॥
रूप रङ्गको कहो न परत मोसों बतियां
करत ठगोहनो।
श्यामसुन्दर वश कियो मेरो मन बांको चितवनमें
है मोहनो॥

६

मो झुक आवन लागे हो प्यारे तुम होरोके
दिननमें प्यार।
जो तुम जिय धरो सो हम समझो इन भांतनको
हम नहीं नार।
ललितरसिक मन समुझ बूझके राखो मनमें विचार॥

७

लङ्गर लंगराई न कर रे हमो सन आय आय
अठिलात।
डगर चलत नहीं देत लेत गह गागर नागर
बोले बचन इतरात॥
जब तुम पकर पावत हो तरुणो तिय दशन उघारो
दै दै हा हा खात।
जानकीदास छूट जात श्याम तब कछु लाज तजो
मटक मटक मुसकात॥

८

ए री आज ब्रजमें कान्हर श्यामने देखो फागुको
धूम मचाई।
झांझ मृदङ्ग कठतार डमरु डफ तापर बेणु बजाई॥
नर नारिनको मोह लियो मन एसो है सुघर कन्हाई।
गोपी ग्वार सङ्ग लिए नृत्य करत है चल तो है
राम दुहाई॥

९

अंङ्गिया रङ्ग भर डारो होरोके खेलैया छैल मोरा।
बातनके मिस हंस हंस भुजा भर भला वो मोरो ले
चूनर रङ्ग बोरो।
चन्दन वन्दन बुक्का रोरो लै गुलाल मुख
अबोर मलो री॥

१०

ए री जोरो होरोके मिस कोन्हीं दैया मारो नरम
कलैया सइयां तोर डारो।
रङ्गको कमोरो ढोरो सरस कछुको तारो अब तोहे
लाज हू न आवै मुख देत है गारो॥
केसर पिचकारो मारो गुलाल भर मुख पै डारो
हा हा करत हारो लङ्गर वनवारो।
मोह लोन्हीं ब्रजको नारो दैया सखो पांय परो
लोन्हीं बलिहारो॥

११

थोरे रे दिननको नवल दुलहैया नव यौवन नव रङ्ग।
नव शृङ्गार नव आभूषण नवल पातमके सङ्ग।
रसिक रङ्गरस वश कर लिए अब जिय उठत उमङ्ग॥

१२

हो मत डारो रङ्ग गिरिधारो।
निर्दय तोहे दया हू न आवै भोजे पश्मरङ्ग सारो॥
हा हा करत हूं पइयां परत हूं मानो बरज हमारो।
जानकीदास प्रभु ऐसो न कोजे सास सुने ननदल
दै गारो॥

१३

आज मैं नवल मोहन प्रिय पायो।
नव बसन नव गुलाल केसर रङ्ग नवल ही
होरी राग जमायो॥

१४

ब्रजमध्य होरी देखे सखी चल सुघर श्यामकी चोरी।
केसर रङ्ग पिचकारी ले भर अबीर गुलालकी झोरी॥
डफ मृदङ्ग लिए नाचत आवत नन्दकुंवर यो किशोरी।
फगुवा देखत कैसे बनेगो बोरत है बरजोरी॥

१५

वो होरीके खेलैया मेरी अङ्गिया रङ्ग भर डारी।
चोवा रे चन्दन और अरगजा केशरको पिचकारी
मो पर डारी।
कृष्णानन्द अनोखो छैला मोहन कुञ्जविहारी॥

१६

मैं र कियो कहा होत है वाके किये सब होत है रङ्ग।
जो होनी सो होली अब साहबसों मिलनको
कर ढङ्ग॥
गुलाल कीना फरमानी कीन्हीं यह अबीर तन सङ्ग।
अपने साई सो विनती कर तू छूट लाय देख
सब अङ्ग॥

१७

कैसे तनियां कसम पाऊं सखी री रङ्ग भर लिए
पिचकारी।
बहियां मरोरत धर झक झोरत और करे बरजोरी॥

१८

बङ्गी में रङ्ग सखी री आज रङ्गीले कृष्णसङ्ग धन धन
मेरे भाग।
लाल गुलाल ले मलो मुख मेरे खेलें मोहन
मोसे फाग॥
धन्य दिवस धन्य घरी पल सजनी धन्य धन्य है जो
सुहाग।
कृष्णरसिक प्रभु मेरे गृह आए होरी खेल अनुराग॥

१९

नन्दके नन्दन पे कोउ चलत न पावत गैल।
ग्वालबाल सब सखासङ्ग लिए बने फिरत हैं छैल॥
एक तो यौवन दूजे मस्त महीना करहैं फिरत हैं फैल।
कृष्णरसिक ने धूम मचाई यह गोकुल की मे ढैल॥

सुलतानी—यत्

टाना टामन कछु नाहीं जानं मैं तो राजदुलारी है।
गए यदुलाल में कुल उजियारो मैं अपने सो को
प्यारी है॥
पिया मेरा मैं पियकी सजनी पियके रङ्ग रङ्ग डारी है।
दूरक् रङ्ग में रङ्ग रही हूं तनमन धन बलिहारी है॥

काफी—यत्

जिन निकसो कोउ आज डगर होरी खेलत
श्याम कन्हैया।
वीणा रबाब झांझ डफ बाजे जलतरङ्ग मुरली
सहनैया॥
ग्वालबाल मदमाते आवत पिचकारिन मारत
भर भर गावत नाचत दे धुमरैया।
वा दिक्ते ज्यों अचानक आई मो पर
दृष्टि परी री बलभैया।
झपट करी ठाढ़ी सखियन में छीन लयो मेरो
दुग्ध दहैया॥

२

मुख मलो अबीर गुलाल अतर।
बरजोरी तोरी तनी अङ्गिया बिहस गरे लायो गहे
बहियां कोटि यत्न कर॥
सोह देवाई दोउ करजोर परी हूं पइयां बहु
विनती हारी कर कर।
ब्रजवासी सब लोक पूरे है देत दोष मोहे लोग
लोगैया छवि नायक जैसे हम देखे तैसे न देखे
काहू ठगैया सुध आवे कांपो थर थर॥

ककुभ—यत्

कोई प्रेमको कोई प्रेमको पेंग झुलावो री।

भुजाके खम्भ और प्रेमके रस से मन मजबूत
भुलावो री ॥
उमगी यौवनकी पेंग सोहावनी मन में अलस
न लावो री।
सूहा चोला पहन अमोला पी घट पीको रिझावो री।
आवत आवत सुरतकी राह में फ़िकर पियाको
सुनावो री।
नयनन बादरकी झर लावो श्याम घटा उर छावो री।
कहे कबीर सुनो भाई साधो हरि को ध्यान
चित्त लावो री॥

सरपरदा—तिताला

फाल्गुन में मान क्यों करत है बौरी खेल तू
अपने पियाके सङ्ग।
ज्ञानको रङ्ग ध्यान पिचकारी मनमोहनके अङ्ग रङ्ग॥
बीती जात बहार चारि दिनकी बहोर न पैहे
मनको उमङ्ग।
कृष्णानन्द आनन्द मगन होय नाचत गावत रागरङ्ग॥

घट—तिताला

रङ्गभरी रसभरी रूपभरी प्यारी होरी खेलन
आई गोरी री।
नवल किशोरी भोरी नन्दको पोरी अबीर लिए
भर झोरी री।
यौवन भरो गुण भरो लाज भरो पिचकारिन
झकझोरी री।
सरस रङ्गरस वश कर लीन्हें भौंह मरोर दृगजोरी री॥

२

रङ्ग रङ्गी ब्रजवासिन सों मिलि होरी रङ्ग मचावे हो।
चलो वगर वृषभानु रायके अपनी जीत वनावे हो॥
बनठन साज रङ्ग पिचकाई फाल्गुन गीत सुहावे हो।
डफ मोहचङ्ग झांझ अरु झालर अद्भुत रङ्ग
जमावे हो॥
जो भावे सो करे सवन सों समाधान को जावे हो।
सरसरङ्ग सुखमें हैं दोउ दिश सबहिनके
सुख पावे हो॥

भैरवी—यत्

या ब्रजमें रस होरी सुहाई नरनारिन सुख हो
रह्यो भारी।
लङ्गर कान्हा वगर में चलत तेरो रङ्गन मार
भिजोई सारी॥
इत खेलत कोउ कान न मानत देखो अनोखे
छैल खेलारी।
वंशीवट कुञ्जन सुख विलसत सरस रङ्ग पिय
गिरिवरधारी॥

भैरवी—अद्धा

मनमोहन ब्रजवीथन ठाढ़ो होरीको धूम मचावो री।
रङ्गभरे गुलाल कुमकुमा भर मुठी अबीर उड़ावो री॥
भेटो भुजन सुख रोरी मींजत अङ्ग अनङ्ग बढ़ावो री।
सरसरङ्ग रस करे निशदिन पिया प्रीति उर लावो री॥

ईमनकल्याण—धमार

होरी खेलत कुञ्जगलिन में रसभरे छैला कुंवर
कन्हैया।
पनघट घाट रोक मागे ठाढ़ो घूंघट देत उघारे सैया॥
फाल्गुन मास करे वरजोरी जित तित धूम मचावे
खैया।
सरसरङ्ग रस लेत निशदिन वृन्दा-विपिन
कुञ्जद्रुम छैया॥

२

सरस रस भावन वसन्त ऋतु आवन मनोज
प्रगटावन ए जू सोहाई।
ऋतुराज कुसुमद्रुम सुहावन कोकिल सुर गावन
तरसावन विरहन को धाई॥
विन मनमोहन कछु न सुहावे न भावे विरह सताई।
सरसरङ्ग होरी में मिलावे ताके वलि वलि जाई॥

भैरवी-काफ़ी—यत्

रसिक छैल नन्दजीको छोहरा मार गयो लिं रह्यो
मेरी खैया।
यह होरी वरजोरी की अवसर माने न काहूको
कह्यो मोरी दैया॥

कहा करूं कछु वश नहीं मेरो करत है अपन
चल्यो री गुसैया।
सरस रङ्गरस भीज रहो हों सब सुख तन लह्यो
कुञ्ज ठैया॥

जङ्गला—यत

सखी यह फागुन में पिया अज हूं नहीं आयो री।
बीतो जात बहार होरीको विरहने मदन जगायो री॥
जबतें गए पिया भए वांही के किन सोतन
बिलमायो री।
रसिक मोहन कोउ आन मिलावो यही ध्यान
उर लायो री॥

२

मनमोहन मेरे घर आयो री सखी रङ्ग रङ्ग में री।
कुच गड़वा और यौवन मोर ले वसन्त बनाय
अङ्ग ए री॥
तनमन धन सब अर्पण कर के चरण-कमल रङ्ग दे री।
धन्य मेरे भाग्य सुहाग आज दिन कृष्णानन्द
उमङ्ग है री॥

पीलू—यत्

ऐसो रङ्ग डारो मोरी गुइयां सइयांके रङ्ग में
रङ्ग रह री।
पिया हमारा मैं पियाकी सजना एक हो रङ्ग बह री॥
उनमें हममें कछु भेद नाहीं अर्ध अङ्ग लहरी।
ब्रह्मानन्द आनन्द में रङ्गके एक हो रूप ठहरी॥

भैरवी—यत्

कैसे खेलो कन्हैया कुच मुख मोड़त भिजावत तनैया।
लपटत झपटत दपटत छतियां बहियां पकर
रङ्ग रैलो कन्हैया॥
अपनो बारो भज जात है छल बल कर बलभैया।
बरज रही बरजो नाहीं मानत कृष्णरसिक रिझैया॥

रवी—सिन्धु

फागुन बीतो जात सखी री क्यों नहीं खेलो फाग।
भाग्यनसे फागुन पिय पावो जागी तेरे भाग॥
बहुत दिनन तें दाव लग्यो है धन्य धन्य तेरो सुहाग।
कृष्णानन्द चार दिन होरी सइयांके गर लाग॥

पूर्वी—धमार

रङ्ग न रङ्ग रङ्गे है बिहारी लाल गोवर्द्धनधारी।
ग्वालबाल सब सङ्ग सखा लिए और सकल ब्रजनारी॥
बाजत बीणा मृदङ्ग चङ्ग डफ झांझनकी झनकारी।
गोकुलेश प्रभु होरी खेले गावत दे दे तारी॥

विहाग—धमार

होरी खेलत ब्रजकुञ्जन मइयां।
नन्दकुंवर सङ्ग अतिरस बाढ़ो विहरत लाडली
कदमकी छइयां॥
पौढ़नके समये के अवसर और कोउ न रह्यो
तिहि ठइयां।
परस्पर रङ्ग रच्यो अति भारी सरसरङ्ग बलि बलि
तहां गइयां॥

२

ब्रजमें होरी रङ्ग सुहाव।
कुञ्ज महल यमुनातट सजनो प्यारी पियके मन भाव॥
पौढ़नके समये के अवसर ललिता रङ्ग जमाव।
चिरञ्जीव युगल यह जोरी सरस रङ्ग छवि छाव॥

सरपरदा—धमार

होरी खेले ब्रज छैल बिहारी राधा नागरी
सङ्ग लिए प्यारी।
बीथिन धूम मचाई चहुं दिश रसिया अनोखे
खेल खेलारी॥
रङ्ग गुलाल अबीर कुङ्कुमा डफ मुहचङ्ग
बजे ध्वनि भारी।
सरसरङ्ग बाढ़ो सब छिन मन देख हगन
छवि पर मनोहारी॥

पीलू-भैरवी

या बातको सुख मान सखी री तोहि मान मनावन
मोहि पठाई।
तू बड़ भाग्य रही री प्यारी तोहि बिहारी जू
नाहीं बिसारी॥

तो विना हरिको रङ्ग नहीं है विधिना जो करी
तोहें मानमद्दा री।
प्राणपियाको तू जो प्यारो सरस रङ्ग रङ्गो वलिहारो॥

घट—यन्

गिरिधर पिय सङ्ग रङ्ग भर खेलत नवल कुंवर
वृषभानु-किशोरी।
अरगजा कुङ्कुमा रङ्ग रञ्जित कर मुख मण्डित
कियो हो गोरी॥
पगड़ी छुड़ाय लेत गुलचान गाल देत अङ्ग भुज
भेंट हेत मुख मलवो री।
रङ्गके खेलार रसरङ्ग रसिया फगुवा लियो
प्यारी नवल किशोरी॥

केदारा—धमार

खेलत फाग सुहावनो माई रङ्गरस सरसावनो।
श्रीवृन्दावन कालिन्दीतट पिय प्यारो मन-भावनो॥
ताल तरङ्ग रङ्ग बहु उपजत सप्तस्वरन गीत गावनो।
गोपिनके मण्डल मध्य राजत राग केदारो जमावनो॥
गारिन गावत सब छिन भावत अपनी जोत बनावनो।
फाग खेल व्रज रङ्गरस रेलन सरसरङ्ग छवि छावनो॥

काफी—धमार

मति डारो श्याम मुख बोरो मेरे आखन रङ्ग भरो री।
ऐसे रङ्ग दियो पिचकारिन भीजि गई चुनरी कोरी॥
अतर गुलाब भरे कचुकी पट कुङ्कुम चुभि गड़ी
तन मोरी।
चलो री सखी अब अपने घर को खेले ऐसो होरी॥
ऐसे निठुर कछु दर्द न जानत श्याम चतुर हम बोरी।
रूठि चली सब नागरी राधे श्याम फिरत कर जोरी॥
नयनन सैन दियो सब सुन्दरी घेर लियो बरजोरी।
कोउ पीताम्बर छोरत मुरली कोउ अबीर भरे
भर झोरी॥
भई है लटापटी चीरा चुनरी छैल छबीले गोरी।
लेत उचङ्ग उचङ्ग सबे मिलि अपनो अपनो जोरी।
श्रीपति रूप कहां लगि वरनों लक्ष्मीपति मति थोरी॥

काफी—यन्

होरी खेलत नन्दकुमार यमुनाके तीरमें।
सङ्ग गोपाल सखा व्रजनागरी नाचत नटवर
विविध भीरमें॥
बनि बनि बनि वनचर पशु खग मृग करत कलोल
घोल तट तीरमें।
गाय बजाय ताल दे दे कर घरि घरि धावत
धसत नीरमें।
प्रथम वसन्त दिवस लक्ष्मीपति ऋतुपति घर घर
पूजत हीरमें॥

२

चलो देखन नन्ददुवार में होरी होय रही है।
मोहन गोपसखा विच राजित मानो पूर्णशशि
उमंगि रही है॥
गगन गहागहि होतु दुन्दुभी सुर नागरी स्वर
गाय रही है।
अतर गुलाब अबीर अरगजा गागर गागर घोर
रही है।
लक्ष्मीपति ऋतुराज गुणोजन कनक कलस भरि
पूजि रही है॥

३

हां हां हां मोहे नित्य अपना सङ्ग दे रे जगमें
नहीं कोई सङ्गी हमारा।
अपने चोखे रङ्ग प्यारे सो तन मन मोरा रङ्ग दे रे
एसो रङ्ग है कौन पियारा॥
जासों प्रेम भक्ति बनि आवै सोई सकत मोरे
अङ्ग दे रे भक्ति विना कर है निस्तारा।
मायामोह छुड़ाय दे जो सो नीके साधनके ढङ्ग दे रे
अवगुणसे करूं तोकों न्यारा।
जो मांगी ते पाये साहब सो काजम हमङ्ग को
मंग दे रे जासो न छुटे वाको दुआरा॥

४

ए हो हम हो सो राखे बिगार चलो सब हो
सो बोलेरो।

हमरी ओर कब हूं ना निकसो सोई सबके घर डोले री ॥
जो ले प्रीति हमारी अचतु है तो ले जीको तोले री।
अन्त हमारे होके कन्हा जो ले न बोले तो ले री।
हमसे घूंघट राखे मुखपर काजिमसे नित्य खोले री॥

धनाश्री—यत

छबीले री रङ्गीले नयन रसभरे नाचत मुदित घनेरे।
खञ्जरीट मानो महामति दोउ बैसे हूं धीर न धेरे॥
श्याम श्वेत राते रङ्ग रञ्जित मानो चित्र चितेरे।
कुम्भन दास प्रभु गोवर्द्धनधर श्याम सुभग तन हेरे॥

२

ऐरी मन मोह्यो सांवरो अब घर हो मो पे रह्यो न जाय।
चपल तिरीछी भौंहसों सर्वस्व हो मेरो लियो चुराय॥
माई हों गोरस ले निकसी वृन्दावन होरी मंझार।
आय अचानक औचक मटुकी वहीं मेरी दीन्हीं ढार॥
गहि अञ्चर मो सो यों कह्यो कौन हो तुम का की नार।
कै बेरो या मार्ग गई दान हो हमारो डार॥
कछुको ओढ़नी बेग हो लीन्हीं बहुत कितियक मोल।
तिलक खुभो के व्याज में परसे वह मेरे पाम कपोल॥
हंसि बीरो बर मुख दई ग्रीवा हो मेरे मेली बांह।
यह मिस मोहि वह ले चले गह्वर री अंधियारी मांह॥
जिय ओरै मिस दानके बतियन में मेरे परसे पाई।
करत वसीठी मिलनको सनमुख री मेरे नयन चलाई॥
और कहां लगि वरणिये कह तब री जोई आवे लाज।
जन त्रिलोक प्रभु सो रङ्गो देखो मेरे तनको साज॥

२

होरीके खेलार आवत तोहि जान न देहों।
रङ्गभीने बागे बनि आए जागे भाग्य हमारे नयनमें भरि राखूं फगुवा लेहों॥
चोवा चन्दन और अरगजा केसर कलस भरे हों।
अग्रस्वामी सो कहति स्वामीनो मिलि तन ताप नसे हों॥

काफी—यत

तुम चलहुं सबै मिल जाई खेलन होरिया।
अपनी अपनी सुरङ्ग चूनरी मोतिन मांग भरोरिया॥
थरहरात अधरन पर मोती अङ्गिया केसर बोरिया।
चोवा चन्दन अगर कुङ्कुमा भरि भरि देत कमोरिया॥
अङ्ग सो अङ्ग गुलाल विराजे भलो बनी यह जोरिया।
केहरि लङ्क नितम्ब विराजत गज गह चाल चलोरिया॥
पिचकारी मोहन पर डारत विहंसी घूंघट मोरिया।
बाजत ताल मृदङ्ग और डफ पढ़ि पढ़ि बोलत बोलिया॥
नयन आंजि मुख माड़ि श्यामको सब मिल करत कलोरिया।
सूरदास प्रभु सब सुख क्रीड़त व्रजकी खोरिया॥

धनाश्री

हो होरीके खेलैया अहे नेक मोहड़ो माड़न दे हो।
को तुम चतुर खेलार कहावत अधरनको रस ले हो॥
गोरी गोरी बहियां हरी हरी चुरियां हियरा को रस ले हो।
चतुर-शिरोमणि सूरदास प्रभु फगुवा हमारो दे हो॥

२

होरीके रङ्गीले लाल गिरिवरधर रङ्ग मचायो।
केसर बहुत गुलाल अरगजा मदन बसन्त भिजायो॥
ताल मृदङ्ग झांझ डफ वीणा होरी राग जमायो।
सुनि निकसी गृह गृह ते सुन्दरी भावभागी फल पायो॥
आवति भावति ग्यारी न गावति रस भरि लाल खिलायो।
श्रीविट्ठल गिरिधर युवतिन होरी त्योहार मनायो॥

ठुमरी

रङ्ग न डारो गोरी भीजत चुनरिया।
पैयां परत हौं सौंह करत हौं रामलाल तुम
नवल खेलरिया॥
लपटि झपटि कर गहि रघुनन्दन मसल गुलाल
लाल कर धरिया।
रामसखा गाय कहा के न गए हंसि हंसि कहत
सकल सहचरिया॥

२

होरीके खेलैया मोरा नयन जनि भरो जू।
अरज मान अवधेश लाड़ले बार बार बरजोरी
जन करो जू॥
अपनो बार ऐसे भौरन भरत कैसे ठाड़े रहो वाही
ओर बहियां जनि धरो जू।
जनकराजलली कहत मधुर अली वन्दौंगी खेलया
जो पै आगे से न टरो जू॥

३

सांवरे अब न खेलौं तो सों होरी मेरी आंखिन
मेलो अबीर।
एत पै दै तारिन गारिन गावत वेणु बजाई कुलको
वानि न तजत कान्ह अलि आखिर जाति अहीर॥
नाहिन खेलन जानत मानत आप हो कान्हा खेलारी
भौने चले आवत हो कान्हा काहूको होर न पोर।
जाय कहौं विश्वनाथ नन्द सों तेरो सुत इतरानो
अब हमरो व्रज वासवो नाहीं न काज करै बलवीर॥

४

लङ्गर मोहि काल हि गल में दीन्हीं गनि गनि गारी।
दाव परो अब जान न दै हो लागो चहुं दिशि ग्वारी॥
रङ्ग भरि वनिता भेष बनै है कुड़ि है दै दै तारी।
विश्वनाथ प्रभु अब न चलैगो तेरो तो यह छलवारी॥

५

होरी खेलत राधानवल किशोर अब तो लाल तुम
शुभग रङ्ग रङ्गे लेहु कामरी बोर।
चहत अहीर फागु सङ्ग खेलन भांतिन विविध निहोर॥
विश्वनाथ सुख लखहु आरसी राधाको नहिं जोर।
गोरी आवत लाला नन्दकिशोर मोर मुकुट दिए
मन छवि छावत मुरकि लखत यहि वोर॥
अति सुन्दर मन हरे हि लेत है त्यजत लाज मन मोर।
विश्वनाथ लखि छको हो रहत है तन यही है
चित्तचोर॥

इति श्रीकृष्णानन्द व्यासदेव रागसागरोद्भव सङ्गीतरागकल्पद्रुमे वसन्त-
समय नाना रागरागिणी रङ्गीली होली रङ्गीन
गान सम्पूर्ण:।

---*---

श्रीकृष्णाय नम:

तथा होलीगान।

भैरवी—चौताला

लालन भोर हो आए होरी खेलनको ग्वाल
बाल लिए सङ्ग।
अबीर गुलाल केसर पिचकारी बाजत ताल मृदङ्ग॥
इत सखा उत सखी परस्पर छिरकत नाना रङ्ग।
राग विलास गावत फगुवा आनन्द बढ़त उमङ्ग॥

२

लालन मदन सो मदन से मतवारे नयन सो
लागत परम रसाल।
कुच रङ्ग पाग पिछौरी को रङ्ग बोरी भौंहे
अलक में गुलाल॥
भोरे भंवर से भांवरी देत भवन में कठिन कलिन
त्यागे पाए निकाल।
शशिहू से चकई के घर आए चकवा से प्रेमरङ्ग
कीन्हीं निहाल॥

३

रैन बिताय आए हो मोहन कहां जागे रङ्ग रागे।
कौन त्रिया सङ्ग विलम्ब रहे हो होरी खेल
कहां पागे॥

तोतरात बतरात बैन हू न आवत आलस्य वश
अनुरागी।
नादसेन मनके मतवारे से आए भाग्य हमारे जागी॥

४

रैन बिहाय गई भोर भयो होरी कहां खेले प्यारे।
कौन नवल तिय पिय विलमाए गिनत बीते
मोहि सब निश तारे॥
कहूं कज्जर कहूं पीकलीक अधरन अञ्जन
भाल महावर धारे।
तानसेनके प्रभु तुम बहु नायक मांझके गए हो
सिधारे॥

५

नयन रङ्गाय आए हो लालन या होरी को रात।
सकुच सांवरे हित अपनेकी कहन न पाए बात॥
कहूं कहूं लाग्यो गुलाल कपोलन ढीले बोलत
अलसी जंभात।
वलिहारी वा मोहनी पर कैसे आवन पाए कहो
ज कहो तुम प्रात॥
मन अपने को सो कहि न सकत एक बात।
यत्न यत्न वलिहार करे कैसे आवन पाए प्रात॥

भैरवी—धमार

लाल अरसाने भोर ही आए।
कौन वाम हित सो परचाए सगरो रैन जगाए॥
ढिग ढिग कज्जर फैल रह्यो है जावक तिलक
लगाए।
झपक रह्यो वरनी अति सोहै मोहन अधिक सुहाए॥

२

होरी खेलें प्यारी अबके या भांत सो लालनके सङ्ग।
आप भीजे औ उनके भिजावें लपटत पट दीजे
लीजे अङ्ग॥
मनमोहन को पकर वश कीजे फगुवा लीजे उमङ्ग।
कृष्णानन्द सो फाग रचौंगी एक हो रङ्ग हूं रङ्ग॥

३

जो तिय ते सब ठाढ़ी भई आप आप गड़वा बनाय
आगे धर दीने।
महम्मद शाह दक्षिणके लक्षण क्षणकमें टोनासों
मन वश कर लीने॥
डफ बीणा मृदङ्ग रबाब गावत तान नवीने।
सदारङ्ग रङ्गन में भीजे बाल लाल सब लीने॥

४

देखियत लालन जागे भाग्य हमारे आज रसभीने।
कर वसन्त जिन सबकी ओर देखत ही कृपा ते
कर लिए सुगन्ध नवीने॥
जो गर्व भरी तेज आय ठाढ़ी भई सब अपने गड़वा
बनाय आगे धर दीने।
सदारङ्ग महम्मद शाह दक्षिणके लक्षण समझि क्षण
एकमें टोना से मन वशकर लीने॥

५

लङ्गर बटपार खेले होरी।
बाट घाट कोउ निकस न पावै पिचकारिन रङ्ग बोरी॥
मैं जु गई यमुना जल भरने गह मुख मीजो रोरी।
तानसेन प्रभु नन्दको ढोटा वरज्यो न मानत गोरी॥

६

आज रसमातो होरी खेलें लाल।
तारी दै दै नाचत गावत सङ्ग ग्वाल ब्रजबाल॥
केसर रङ्गको छींट परी मुख मानो छविको जाल।
नट नागर प्रभुको छवि अद्भुत निरखत भई निहाल॥

७

अनटन नहीं कीजे आनो अपने बालम सो यह
फागुनके बीच।
भाग्यकी रीति कहां जाने ग्वालन कैतो कहो है
आखर जातकी नीच॥

८

आज सखी फाग आयो ऋतु वर्षा लिए सङ्ग।
अबीर गुलालके बादर छाए वर्षन लागी रङ्ग॥
भोड़ल चपला मृदङ्ग घन पिचकारी झर सङ्ग।
कृष्ण रसिक फाग खेले बाढ़ो है मन रङ्ग॥

९

लगवार लगाए आवत होरो में ऐसो देखो
अनोखो नार।
एक गावत एक मृदङ्ग बजावत एक नाचत
दे ताल धमार॥
बांह पकड़ जब ठाढ़ो कोन्हीं का सो करों
यह पुकार।
रङ्गरस रसको धूम मचो है द्वारे खड़े नन्दद्वार॥

१०

ता पर तू करन लागो री यह बात एक तो बांको
कंथ लियो परचाय।
मिलत न काहूको अपने आगे ऐसो तेरे हो
घर न्याय॥
निशदिन हंसत बोलत डोलत रहत तेरे हो गुण गाय।
ऐसो तू क्या कोन्हों सजनो री डर पूजे तिहारे पाय॥

११

बाजन लागे डफ होरो कानर नारो डारत है रङ्ग।
बसन रतन सब पहर कर आई चतुर देखि नोको रङ्ग॥
वीणा रबाब मृदङ्ग बजावत कर गहे कन्हैया
सबके अङ्ग।
चतुर नहीं देखे बरजोरो लगावत उनके अङ्ग॥

१२

हो नादान गारो दई अकेलो पाय धरि बरजोरो
होरो कर।
बश जाय परो हो हो होरो बलिहारो बिहारो
तेरो सो मैं अबोर भर होरो पर॥

१३

योगी रङ्ग है आज रङ्ग है योगी रङ्ग है तुम रङ्ग
भोजे शाद।
बहु रूप बहु भेष तिहारे अलख जगावे अनाहत-नाद॥
अङ्ग अङ्ग वस्त्र तान तार को अधर मिलो अभुताद।
अबोर गुलाल को बुरको डारे होरो होरो सेज
सुवास चले चलो लाद॥

१४

अद्भुत मचो फाग मोहन घर देखन चलो ब्रजनार।
अबोर गुलालके बादर छाए रङ्गको परत फुहार॥

१५

मो पै वा बिना रहो हो न जाय री आलो कौन
करो मिलवे को उपाय।
सुध न रहो कछु तन मनको सखो जब तें दोन्हीं
मोहन मुरलोको ध्वनि सुनाय॥
उन को देखके लुभाय रहो मन अटक्या हरि सो जाय।
जन्म जोवन फल तब हो जानोंगो जब वो
मिल है आय।
आदि वसन्त अन्त फाल्गुन को याहो सोचन मोहे
दिन कटत जाय॥

१६

प्रभु कैसो होरो मचा सब जग देखत गुलाल
रङ्ग के बादर।
एके प्रगट भई छवि देखत उन का बला जानेको
कोऊ करत आदर॥
उनहो केसर रङ्ग डारियत जे सबहो मनादर।
अबके जो फाग जगत्में मच्यो सदा रङ्गोले कादर॥

१७

लङ्गरवा ढोठ है मो सो करत है अनोखो बात।
छाड़ ओर मग मेरे हो आवत ग्वार सखा ले सात॥

१८

जागे सगरो रैन होरो खेलत पिय सङ्ग भार भए
उठि बिथुरे बाल।
मानो तरु बड़ डारन बोच चन्द्रको जात किरण
मानो दिनमणि लख्यो है गुलाल॥
मानो श्याम डोरिन तें ठाढ़ो कञ्चनको पाल।
यह छवि निशि निशि काम दृष्टि रोझ रहे नन्दलाल॥

१९

अब धूम मचो फाग मोहन घर देखन चलिये ब्रजनारो।
एक हाथ अबोर एक पिचकारो लिए एक नाचत
एक गावत दे दे तारो॥

एक वीणा रबाब साज लिए एक करन कठतारो।
कृष्णानन्द आनन्द सो खेलत फगुवा देत गिरिधारी ॥

२०

खेलन आए होरी आज रस सो लालन मेरे घर एरी।
नव नव वस्त्र पहरे और आभूषण नगन जड़ितके धरे
तैसी कुसुममाला गरे ता ऊपर नीको लागो वेरी ॥

२१

आवो री मिल देखो होरी खेले प्यारो प्यारी
रासमन्दिरमें वर्षा समानो।
उड़त अबीर घटा घिर आई पिचकारी झर झोडर
वक पंक्ति तामें झलकत नारी चपला ऐसी चमकत
मोहत सुरनर ज्ञानो ॥
ततथो वितत गरजन सम बाजत सुघर गायन औ
पिक नित्यकारी चातक मयूरनके भेदन सी घुरत
निशानी।
फागुनमें वर्षाऋतु उनई उमड़ घुमड़ वर्षत रङ्ग
कृष्णरसिक रङ्ग रस झर लाय मानो बुन्दन
वर्षत पानी ॥

२२

आज व्रज भोर ही भैरव रागमें गावत होरी खेलत
व्रजनाथ।
सप्त स्वरन इकईश मूर्च्छना लाग ठाढ़ लिए साथ ॥

२३

लालन लीन्ये ताल ललित स्वरनमें लाड़ली रीझि
प्राण प्यारी महारानी।
मुरली अधर धर मधुर सप्तस्वर राग ठाठ मूर्छानी ॥

२४

ऐसी होरी मचाई भोर ही मोहन मानो ऋतु
वर्षा झर लाई।
डफ मृदङ्ग जानो घन गरजे है भोरल चपला
चमकाई ॥

२५

मोहन भोर ही रङ्ग रङ्गाए होरी खेल रचाए।
ग्वालबाल सब सखा सङ्ग लिए अबीर गुलाल उड़ाए॥
नयन रङ्गाए नवल त्रिया सङ्ग अनृत ही होरी मचाए।
भोर ही आए हम पहचानत नाहीं लाल ही
लाली लगाए ॥

२६

ता पर तुम सांच बोलत हो मोहन रात कहां
सारी रैन जग आए।
सांझके वचन सांचे करनको भोर ही मुख देखलाए॥

रामकली—धमार

बरसाने में खेलत होरी श्रीवृषभानु किशोरी।
कोऊ चन्दन वन्दन अतर अगरजा ले अबीर गुलाल
लिए भर झोरी ॥
कोऊ गावत कोऊ मृदङ्ग बजावत धूम मचाई
नन्दरायको पौरी।
उत तें सखा सङ्ग लिए कृष्णप्रभु पिचकारिन
रङ्ग छोरत भारी रङ्ग रच्यो री ॥

२

आई मिल कर अब ही सहेली खेल रच्यो नन्द द्वार।
धाय पकर लिए नन्दलालको फगुवा लेन व्रजनार ॥
काहू ने पीताम्बर पकरो है काहू मुरलिया लई
दे तार।
अब कहां भाग जावो फगुवा ले हो तब जो चीर
हरे है मुरार ॥

३

लङ्गर लागो हो आवे यह फागुनमें नित नई
धूम मचावे।
कहो सुनो कछु मानत नाहिं न मेरो नाम ले ले
गारी गावे ॥
अगर वगर के लोगवा सुनत हैं सास ननदिया रिसावे।
कहा कहों मैं रसिक कृष्णको मोहे वर वश
गरवा लगावे ॥

४

फागुन मासमें धम मचाई व्रजमें नरनारी बौराने।

कोउ काहू को सुध नाहीं न सजनी अबीर गुलाल
उड़ावे ॥
कोउ लपटत कोउ झपटत ले अङ्ग भरत कोउ
पिचकारी रङ्ग छोरावें।
कृष्ण ही रूप रङ्गे ब्रजके जन मानो मेघ चढ़ो
घोरावे ॥

५

रामकली देखो फूलो वन घनमें चले हैं खेलन
वसन्त होरी।
लक्ष्मण भरत शत्रुहन सङ्ग लीन्हें केशरकी
पिचकारी छोरी ॥
सीता जु सङ्ग लई सब सखियां श्रुतकीर्त्ति
उर्मिला माण्डवी दुहू ओर भारी रङ्ग रच्यो री।
तुलसी यह रघुनन्द फाग मच्यो है श्रीदशरथराज
जुके वार उत जीती है जनककिशोरी ॥

६

आए हो रङ्गभरे लालन होरी खेलन मो सो
औरनके चिह्न लिए।
अधरन अञ्जन मुख तंबोल की को लागत ऋतु किये॥

७

पट दे दे ले ले सुख नयनन फगुवा मांगत
सुख गाय गाय।
मिलन बनो नन्दलाल लाल सो होरी अवसर
पाय पाय ॥
त्यजी लाज गुरुजन दुर्जन की तिया नेक न
सकुचाय चाय।
जे मन धरो रलो रङ्ग बतियां ते सब करत मन
भाय धाय ॥

८

झूम सब आईं गोपी लिपट रहे नन्दलाल।
मानो श्याम घन में चपलागत यों राजत ब्रजबाल ॥
अञ्जन आंज मांड़ मुख रोरी दे गुलचा और
ऐंचत गाल।
चतुर खेलार नवल धैर्य प्रभु कर पाए हैं ख्याल ॥

९

तू तो ए री प्रीतिकी रीति न जाने गंवार।
जा सो मन लगाइये ता सो और निभाइये नार ॥
वे मनमोहन सोहन सजनी बहुत हैं रिझवार।
एतो मान काहे करत है आली उठ चल
हरि हि निहार।
कृष्णानन्द आनन्द में विहरत सुन्दर रूप बहार ॥

१०

धूम मचाई मोहन ब्रज में अब कैसे मान रहेगो।
अबीर गुलाल केशर पिचकारी डारत अनेक रङ्ग
बहेगो ॥

११

दम्पती खेलत होरी महल में शोभा वरनी न जाय।
सकुच छाड़ अङ्ग अङ्ग लपटाने सरस माते दोउ
राजबहादुर फगुवा सुघर मचाय ॥

१२

या ब्रजमें धूम मचाई खेलत होरी।
हों सकुचत हों जान न पाऊं पनिया भरन को री।
कृष्णरसिक रसरङ्गन बोरत अद्भुत ख्याल रचो री ॥

१३

चतुर अधिक खेलार नार नयनन मध्य पिय सो
खेलत होरी।
श्वेत अबीर गुलाल से डोरे चितवन में सब
रङ्ग भरो री ॥
डफ पुतरी पै चाटी पलक की झपक लगावत
ले समसोरी।
नाचत कटाक्षन भाव बतावत रिझावत ललना
लालन को री ॥

रामकली—धमार

भोर ही श्याम तें कहा खेलो होरी मोथि सो होरी।
चटपट नयन सो नयन मिलतही झटपट पीत
पगो री ॥
वे तो चतुर खेलार कन्हैया तुम बहु गुणी हम
निर्गुणी भोरी।

वतरस उपजात हसन रुचिरस सुनात श्रवण
नासा री रङ्गरस में भोजो री ॥

टोड़ी—धमार

ए होरी खेलो सख' री रङ्गराग साजबाज सों।
ऐसी होरी में फाग मचावो फगुवा लो रघुराज सों ॥
चन्दन वन्दन बुक्का रोलो अबीर गुलाल समाज सों।
कृष्णानन्द सो रङ्ग भर लाऊं खोल घूंघट जो
लाज सों ॥

मुलतानी—धमार

आली री कैसी यह होरी पिया मोहे चैन न देत।
अञ्चर मोरा मुख मोड़त है मिसहो मिस रस लेत ॥

धनाश्री—धमार

माई री कैसे बसिये याहु नगरमें होरी खेलत वगरमें।
चोर मुसे कोतवाल हंसे डर नाहीं नगरमें ॥
एक हो रङ्ग में रङ्गे हैं पुरजन नेक न शङ्का सगरमें।
रसिक सनेही मानत नाहीं बड़ी ढिठाई लङ्गरमें ॥

पूर्वी—धमार

काहे री तोहे लाज न आवे री बार बार तू आवे।
ऐड़ो डाले मदको मातो नयन सैन नचावे ॥
बिना हो कहे तुम नाचत गावत नाना रङ्ग उपजावे।
रसिक कृष्णको रस वश कर लीन्हों तो हो को
नित्य चावे ॥

अलैया—धमार

कैसे भरन जाऊं पनिया मा ए निपट अचपल
खेले सांवरो।
काहू सो लरत और झगरत काहू सो ऐसे होरीमें
भयो बावरो ॥
कहो सुनो काहूको न मानें ऐसे ढोठ छैल उमावरो।
डगर वगर चलन न देत है ढोठ भयो ढोटा
गोकुल गांवरो।
कृष्णानन्द आनन्द में डोलत नन्दमहर को है
छुड़ावरो ॥

अलैया—यत्

लाल जू पाई अकेली नवेली नारी सुघर रङ्ग गोरो।
हमरे सङ्गको दूर निकस गई मोसे कीन्हों वरजोरो ॥
बाट घाट मग रोकत टोकत दधि विथार मोरो
मटकी फोरी।
कृष्णानन्द कैसे निकसन पइ है जो व्रज आवत
सोई रङ्ग बोरो ॥

विभास—धमार

चौंक परी गोरी होरी में श्याम अचानक
बांह गही री।
समर छुड़ाय रिसाय चढ़ो भुवि अनख अधर कछु
बात कही री ॥
चितै चितै रसके वसके कसके भुजमें रसरास लही री।
जय श्री कृष्णलाल छवि लाल जाल छवि ख्याल
रिसाले देख रही री ॥

भैरव—धमार

लाल रसमातो खेलै हो हो हो कर होरी।
इत गोकुल उत मथुरा नगरी इत चन्द्र उत अजोरी ॥
ग्वालबाल सखा सब लिए उत ललितादि किशोरी।
कृष्णरसिक अवलोकत है छवि पिया
प्रीतमको जोरी ॥

विभास—धमार

वे भासत तेरे तनमें मोहन नवल तिया जिन
रैन जगाए।
विवश भए भोर हो आए सारी रैन जगाए ॥

२

छाड़ देहु मुरारी तेरी अटपटी बात पियारी।
हम आगे तुम झूठ कहत हो नवल तिया बलिहारी ॥

३

चकई चुहचुहात भोर हो मेरे आत तमचर
बोलत दियो है दरस।
रैनके उनींदे तोतरात नयन मूंदे मानो
बीत गए वरस ॥

४

तुम कौन हो जु होरी खेल कहांते आए बसन
रङ्गीले रङ्गाए।

पहंचानत हम नाहीं न तुमको अबीर गुलाल
लपटाए ॥

५

नव कुञ्जन प्यारी सो भोर भए हरि होरी
खेलत आए।
धन्य धन्य प्यारो धन्य प्यारे हो तुम धन्य धन्य
धमारमें विभास गाए ॥

विभास—चौताल

आज तो छबीलो लाल प्रात हो खेलन चल्यो
सखा सङ्ग लाय लिये गारो गावे गायके।
खेलत खेलत वृषभानु जूको पौरो आए हो हो
होरी बोले प्यारे मन भायके ॥
छबोलो रच्यो उपाय श्यामको लीन्हा बुलाय मैयाको
दृष्टि बचाय लोन्हें उर लायके।
अरस परस दोउ मत्ता रसभोने सहचरो सुख पावे
रसिक सुख लायके॥

विभास—धमार

खेलावन आवेंगो व्रजनारो।
जागो लाल चिरैया बोलो कहै यशोमति महतारो ॥
ओच्यो दुग्ध पान करि मोहन वेग करो स्नान
गोपाल।
करि शृङ्गार नवल वानिक बन फेंटनि भरो गुलाल ॥
बलदाऊ ले सङ्ग सखा सब खेलो अपने द्वार।
कुमकुम चन्दन चोवा छिरको घसि मृगमद घनसार ॥
लेकन हैर सुनो मेरे मोहन गावत आवे गारो।
व्रजपति तब हिं चौंक उठि बैठे कित मेरो पिचकारो॥

२

चिरिया चुहचुहात भोर हो तात होरो खेलन
आए मेरे प्रात।
डग मगात पग धरणो धरत हो श्याम सलोने गात॥
कहा इतरात उत रात बोतो जात नवल तियाके
सङ्ग खेले रात।
कृष्णानन्द तुम सांचो कहो तुम कहां जागे
मोहे कहो बात॥

२

जान दे हो बनवारो मेरो अङ्गिया रङ्ग भर डारो।
देखत हैं गुरुजन पुरजन मानो बात हमारो ॥
काहे को पकरत हो मनमोहन काहे मारत
पिचकारो।
एक डर है मोहि सास ननदको मानो
कृष्णरसिक विहारो ॥

ललित—धमार

हों तोको कौन सोख दे हों रो नागर।
तू तो होरो में अत छिन छिन में रिझावे
उनके मनहो में सब रसगुणके आगर ॥
अब तुम मान गहे राखो सखो ए रिझए प्रेमसागर।
अबके मुहम्मद शाह कोउ मनाय ले आवे तो
भरूंगो रो कचो गागर॥

२

मदमाते हो लालन खेलन आए रो मेरे धाम।
नोको बान अबहूं नाहीं पहनाऊं ता पर
मुक्तनको दाम ॥

३

हों तो हाथ बिकानो लालके जा भावे सो कहो।
तन मन धन सब तुम हो को दान्हों जो हानो सो
होय चहो ॥

४

मदमाते आए होरोके कहै नहों सकुच दृग
खञ्जनमें।
स्खल विचल हो रहे मैन नयन पान ते अधर भर
रहे रेख खञ्जनमें ॥
दृग लोचन लाल लाल हो रहे तिहारे अति
प्रेम रञ्जनमें।
ऐसे हो आए कहांते लालन तुम जमर में भ्रमर
खञ्जनमें॥

५

हों गोरस बेचन आय मा सकों बोच ठाढ़ो
कृष्ण श्याम खेले हो होरो।

मदमाते छके बक बक सब देत गार ता पर रोकत
टोकत झकझोरत बांह बरजोरी ॥

६

नयन पिचकारी प्रेम रङ्ग भर भरके सैननहूं
तक मारी।
कुच कुङ्कुमा गुलालन छायनके हरवा डारत
गरे प्यारी ॥
गोद अबीर नयननसें कज्जर मांग टीको छितकारी।
लाल कपाल सो होरी खेल ले पाए चतुर खेलारी ॥

७

सहज नहीं कुंवर श्याम जु अब क्यों पूछत घर मेरो।
यह तिहारे जियमें रहत है मिलवेको मन तेरो ॥
धूम धाम फागुन की या तें सब जग लोग अजान।
समझ जावो जया अपने याते वसिये मो ढिग आन॥

८

आज आली होरी खेलनको मान न कीजे
परम पियारी।
सुख तानन नीके होरी गावत गुलाल उड़ावत
ब्रजयुवतिनके सङ्ग बनवारी ॥

९

साजन विरह वियोग खेलत है नयनन मध्य
विरहन होरी।
श्वेत अबीर गुलाल मिलो चितवन में सब
रङ्ग भरो री ॥
सियरी सास मनो पिचकारी आह कड़ाड़ होय
मांझ धरो री।
तनकी चिता लगाय चित्त गह मदन अग्नि निज
जराय दयो री॥

१०

धूमधाम फाग में यातें सब लग लो आन।
समुझावत सब सखियां ऐसे वसियो मोढिग
वसियो प्रान ॥

११

आज रङ्गभीने दम्पती मिल खेलत नीके रहस
रहस हो होरी।
ज्यों ज्यों खेलत त्यों त्यों रीझत सङ्ग अब सांवरे ले
और गोरी ॥

१२

यह कौतुक देखिये रुचि सो मोहन ब्रज में रचो फाग।
एक उड़ावत अबीर गुलाल एक तारी दे दे
गावत राग ॥

१३

होरी खेले सब चायन गोपी गोप गोरस रस माते।
डफ मृदङ्ग और वंशी बजावत मनके कलोलन
सब आप आपमें रङ्गराते ॥

१४

कान्हा चञ्चल छैल चतुर चपला सो खेलत
हो हो होरी रे।
अबीर गुलाल के बादर छाए रङ्गकी परतहु
फंहोरी रे ॥

१५

आयो होरी खेलनको सखी सखा मिल सङ्ग लिए
डफ वीणाको धुंकार।
अबीर गुलाल धुंध अति बाढ़ी गावत बजावत
मृदङ्ग कठतार ॥
चहुंओर तें नरनारी मिल गावें सब सखी दे दे तार।
राजबहादुर युग युग जीवो कायम राखे करतार ॥

१६

सारी गोरी मग मध्य माधव पाग रङ्गमें रंगारे।
सङ्गम धनो धन्य गोरी गोरी मधुर मधुर ध्वनि
राग मध्य रङ्ग सो धमारे।
सो रङ्ग सो रङ्ग गगरी में धे धे गोरी सुरङ्ग सो
श्याम मध्य सिर सो पग सो पग सो रङ्गे सोधारे ॥

१७

अच्छे होरी हो नन्दनन्दन राधा खेले होरी।
इत श्यामा उत श्याम मनोहर अबीर गुलाल
रङ्ग घोरी ॥

ललित—पञ्चम

देखो देखो ब्रजकी वीथिन वीथिन खेलत हैं
हरि होरी।
गीत विचित्र कोलाहल कौतुक सङ्ग सखा लख कोरी॥
आई झूम झूम झुण्डन जुरि अगणित गोकुल गोरी।
तिन में युवती कदम्ब-शिरोमणि राधा जु
नवल किशोरी॥
छिरकत ग्वालबाल बवलन पर बुक्का वन्दन रोरी।
अवण आकाश देख सन्ध्या भ्रम मुनि मनसा
भई बोरी॥
रपटत चरण कीच अरगजा केसर कुङ्कुम घोरी।
कही न जात गदाधर प्रभु कछु बुद्धि बल मति
भई थोरी॥

अर्लैया—धमार

ऐड़त कहाँ नन्दके ढोटा खोल गांठ कछु दे रे दे।
बाट घाट में बोलो ठोलो रार न कीजे प्रात कन्हैया
गरज परे तो दे रे दे॥
बिना बोहनी तोहे जान न देहौं मोल तोल
कछु है रे है।
विनै जमाल गोपाल जीके प्रभुको तिहारे दर्श
मोहे जी रे जे॥

२

होरी खेल आई तैं फाग पिया सो मोसों दुरावत
है अपने जियकी बात।
सुरतके चिह्न दुरे न दुराए नयनन रहे कज्जर
और लसत नख शिख गात॥

३

ए जू कालकी ग्वारन मेरो मन ले गई।
सांझ भई अज हूं नहीं आई झूठो वचन दे गई॥
कबहूं कबहूं परोसनके घर आवत आय देखो
है के गई।
वा बिना तो सों कैसे खेलूं वे तो विरह को
बीज बे गई॥

४

छैल मदमातो हो हो होरी बोले।
हो निशङ्क वो अङ्ग लगावे और घूंघटपट खोले॥
बातन घातन हंस हंसके आवत अपनो हो सब गोले।
मोहन मुख निरखत री आली चेरी भई बिना मोले॥

५

ए री चल खेलन जइये सांवरे सो होरी।
ऐसे समय बहोर नहीं पै है मेरो मान कहो रो॥
अबीर गुलाल कुङ्कुमा केसर भर पिचकारी
रङ्ग पीत पिछोरी।
मोहनके गर लाय कर जोवनको फल लो री॥

६

होरी खेल न जाने भयो री अनोखा छैल।
कहा कहूं कछु कहत न आवे रोकत है मोहे गैल॥
रङ्ग भर भर और बातन घातन करत अटपटे फैल।
मोहन मुख देखत सुध बिसरी मिटी जगत्को मैल॥

७

तारी डफ बाजत मोहन छबि छाजत नाचत
गति सों आनन्द दे तार।
बाजत ताल मृदङ्ग वीणा ध्वनि नेवरको झंकार॥
ग्वालबाल सब सखा सङ्ग ले भर मारो पिचकार।
अदा रङ्ग ब्रज धूम मचो है नन्दमहर दरबार॥

८

आज तुम कैसे बन आए हो मेरे लाल ललोहे
नयन रैनके जागे।
याही लक्षण कहे देत तुम्हारे होरीके रस पागे॥
शीतल गात पेच लटकत पगिया के रङ्गभीने
तन सोहत बागे।
जो तुम कीन्हीं सो सब जानत सकुच सोच बच
होत हो मेरे आगे॥
कहूं कज्जर कहूं पीकलीक है सबे चिह्न अनुरागे।
महाराज स्वरूपचन्द्र पिय मुकर ले देखो अबीर
गुलाल अलक मुख लागे॥

९

ए जू रङ्गके भीने मदमाते खेलत हो हो होरी।
कर मध्य लिये सुरासुरया मुखतें तान स्वरको बोरी॥
अबीर गुलाल उड़ावत सब पै भर भर ली ले झोरी।
ये कौतुक चल देखिये राजा उदित-नारायण
ढिग ऐसे समोरी॥

१०

डफको धंकार सङ्ग लिए व्रजकी विथिन डोरे।
एकन को मुख कुचकच सो मोड़त एकन को गह
बहियां रङ्गमें बोरे॥

११

श्याम बजाई मुरलीकी ध्वनि सुनि मेरो मन बौरानो
सुध न रही मोरि तनमें।
मटक पटक गज विसराई भटक रही बनमें॥
लाज सकुच सब जियातें त्यागी कहा करों
फागुनमें।
मेरे तो जियाको चैन न आवत घरना बाहरना
सोरी अङ्गनमें॥

१२

ए हो नन्द को ढोटा तेरो लङ्गराई मोसे कही
न जाय।
राज करो यह व्रजको बसवो तापर सुख अति पाय॥

१३

हमारो फगुवा दीजे नन्दके ढोटा नहीं तो हों
करोंगो झगर झगर।
के मुख मोड़ोंगी फेंट गहे श्याम निडर निडर॥

१४

ए री कन्हैया होरी खेलन लागे व्रजमें धूम मचाई।
बाट घाट मग रोकत टोकत मुरली फेर बजाई॥

१५

कज्जर देहों नयनको अब कैसे भजे नन्दलाल जु मोर।
मोरी अति चटकीली कोनी है सोराबोर॥

१६

अरी हां रे कन्हाई कहा मेरे पाछे परो है सेन दे
सुध न लेन दे ऐसो वेणु बजाई।
लाज तजूंगी गांव कोरे राम राम दुहाई।
विरह वियोगकी ध्वनि मोपै सुनि न जात अनसुनी
सुनाई।
सकल सभा सब सुनोरी कान दे कान्हकी मारो
निकसो जात हों सताई॥

१७

अब कित जैहो भज नन्दलाल कज्जर देहों
नैनन कोर।
चूनर मेरो अति चटकीली कीन्हीं है सोराबोर॥

१८

होरी कैसेके खेलिए आयो फागुन सङ्ग श्याम।
सगरो सखी मिल बन बन ढूंढ़े ले ले कृष्णको नाम॥
डफ मृदङ्ग लिए सङ्ग चलत है और करो यह काम।
अबीर गुलाल अरगजा रङ्ग लेके घेरो नन्दको धाम॥

१९

श्याम बलिहारो मुरली बजावत हो वारी।
गोपी ग्वार मिल होरी हैं गावत कृष्ण देत हैं तारी॥
एक गुलाल ले लाल मुख करत हों और लिए
पिचकारी।
सगरी सखिनकों बोरे हों रङ्गमें गोकुलके गिरिधारी॥

२०

मोहन गोपीजन सङ्ग मिल कर खेलत होरी हार।
अधर धरे मुरली पीताम्बर कटिपट सोहै देखत
छबि सब नारी सुर नर मुनि मोहे वार॥

२१

अब नहीं जैहों फागुनमें उत श्याम लियो मोहि
अङ्क भरी।
मैं न कहो काहूसे जियकी बालापनकी बात यह री॥
जब सुध आवत वा मुरलीकी युग सम जात
मोहे एक घरी।
यो यह दर्श प्रीति है सांची तो घर बैठे
मिलि है हरी॥

२१

धूम मचाई हो मोहन कैसेके मान रहे गो।
अबीर गुलाल केसर पिचकारी डारत अनेक रङ्ग
ढरे गो ॥
कुङ्कुमकी चोटें जब परि हैं गारी गाय डफ
मुघर घुरे गो।
डर लागत फागुनमें रसिकवर सन्मुख आय
झपट धरे गो ॥

२२

अलीया किधर रङ्ग में रङ्गे हो भोर ही आए मेरे।
सांची को रङ्ग रसिक विहारी कहां सीखे ढंग
अनेरे ॥
तुतरात बतियां मुख उचरत नयन बैन
मुख कहत है टेरे।
रसिक भ्रमर घर घर हो डोलत कहां रङ्ग
रङ्गे रङ्गे रे ॥

विलावल—धमार

वेला वर बीत गई भोर भई अजहूं न सुध लई।
सगरो निशा मार्ग जोवत भई फाग खेलनको
चर्चा गई ॥
किन दुतियन विरमाए प्यारे होरो रङ्ग ठई॥
कृष्ण रसिक अलबेलो सांवरो कौन तिया मन लई ॥

सरपरदा—यत्

रङ्गमें भिजोई चुनरिया हमारी रसिया कुञ्ज-
विहारी ने।
देख फाल्गुनऋतु उमग उमग चित्त पूरण
ब्रह्म मुरारी ने ॥
कोजे कहा ढीठ मनमोहन त्रिभुवननाथ
उदारी ने।
करत ख्याल खुशियाल कुञ्जनमें वरजोरी
खेल खेलारी ने ॥

अलैया—धमार

रङ्ग केसर मोपे डार दियो है रसिया कुञ्जविहारी ने।
कहे रही बहुत नेक नहीं मानी मनमोहन
गिरधारी ने।
छल बल करि गुलाल मुख मसलत अबीर
लगावत वारी ने।
ख्याल खुशाल करत नन्दनन्दन व्रजमध्य
खेल खेलारी ने ॥

२

रङ्ग में रङ्गगो श्रीकुञ्जविहारी फागुनको ऋतु
आई है।
तुम तो उमंग भरे यौवनको वारी वयस मनभाई है॥
कुञ्ज कुञ्जमें होरी खेलोंगी याही उमंग उमगाई है।
ख्याल खुशाल करो जोइ रुच चित्त वृन्दावन
छवि छाई है ॥

३

रङ्गमें रङ्गगो अङ्ग श्यामके।
आई बहार फागुनकी सखो री उमंग भरी चित्त
रुकत न रोके वसो या गोकुल ग्रामके ॥
अबीर गुलाल मलोंगी कपोलन नन्दनन्दन
सुख धामके।
ख्याल खुशाल करोंगी कुञ्जनमें उर लिपटा
अभिरामके ॥

अथ ज्ञानतत्त्व अध्यात्म-सागर।

श्रीपरब्रह्मणे नमः

स्नातं तेन समस्त तीर्थं सलिलेदत्ता च सर्व्वावनी।
यज्ञानाञ्च कृतं सहस्रमखिल देवाश्च सम्पूज्यता॥
संसारा च समुद्धिता स्व पितृस्त्रैलोक्यपूज्योप्यसौ।
यस्य ब्रह्म विचारणं क्षणमपि मनस्थैर्य्यं प्राप्नुयाद्यदि॥

सवैया

स्थावर जङ्गम जीव जिते जगभांतिन भांतिन
भेष धरै है।
ता मह सत्य चिदानन्द भास सुआतम एक
प्रकाश करै है॥
ता बिन जाने ते सिन्धु सो लागत जाने ते गोपद
तुल्य तरै है।

वन्दत ताहि कहै सुखदेव जो ब्रह्म सदा सब ही
ते परे है ॥

दोहा

व्यास मथन करि वेद सब सूत्र निकारे सार।
श्रीगुरु शङ्करदेव जू कीन्हीं बहु विस्तार ॥

२

तिन ग्रन्थनिको समुझि मत हिय धरि पर उपकार।
भाषा करि सुखदेव यह रच्यो ग्रन्थ अति चारु ॥

३

जैसे रविके तेज ते अन्धकार मिटि जाइ।
अध्यातम परकाशते त्यों अज्ञान नशाइ ॥

४

गुरु शिष्यको वाद अरु वेद वचन उपदेश।
अध्यातम परकाश यह भाषा सरल सुवेश ॥

५

अधिकारी जिज्ञासु अरु शिष्य कहावे सोइ।
तप साधनु करि देहकं पापनि डारे धोइ ॥

धनाश्री—तिताला

वेद स्मृति ज्यो कहे धर्म शुभ क्रियाकर्मके।
तिन कर धोवे पाप जन्म बहु जन्म धर्मके ॥
फल अभिलाषा छाड़ि कर्म हरि प्रीति करै सब।
हृदय विमल जब होइ होइ वैराग याग तब ॥
श्रुति युकति सहित उपदेश गुरु करै शिष्य हि
पर्मे धरे।
विज्ञान सहित सुखदेव कहि प्रकट ज्ञान मारग ररै ॥

१

जैसे वर्षा पाइके जोतै खेत किसान।
त्यों प्रारब्ध हि पाइ के देह सुकर्मनि जान ॥
देह सुकर्मनि जान खेंचि इन्द्रिय मन सोधे।
बवे बीज उपदेश वेदवचननि गुरु बोधे ॥
तब उपजे दृढ़ज्ञान रीझि खेती किए ऐसे।
अनुभव फूल हि फल हि कहै सुखमारग जैसे ॥

कवित्त—चौताला

इन्द्रिन को जीतो नहीं खैंचि कीन्हीं हाथ मन
परउपकार ही लो तन भाइयत है।
वेद के बखानिबे को सारासार जानिबे को वेदग्रन्थ
भानिबे को रूप गाइयत है ॥
एकरूप पहचान्यो सब ही में सोई जान्यो आपु
ते न जुदो मान्यो सो बताइयत है।
ईश्वरलो ध्यावे जो पै भक्ति दृढ़ावे जब ऐसो गवैरपा
तब ज्ञान पाइयत है ॥

दोहा—तिताला

गुरु सों पूछे शिष्य यह नमस्कार करि ध्यान।
नीके करि समुझाइये का सो कहियत ज्ञान ॥

गुरु उवाच

दोहा

भूलि गयो अब कहै सुख मार जे ज्ञान ते अपनो
आत्म भेव।
ताही को फिरि जानिबो ज्ञान कहत सुखदेव ॥

दोहा—तिताला

साधन चारि कहै गुरुन प्रथम एक वैराग।
पुनि विवेक समाधि अरु सुनि मुमुक्षु बड़ भाग ॥

अथ वैराग्य लक्षण

तिताला

ब्रह्मा इन्द्र हि आदि दै होत देह धरि भोग।
काकवीट सम यौवने वीतरागते लाग ॥

अथ विवेक लक्षण

दोहा—तिताला

देहप्रपञ्च अनित्य है आतम नित्य बखानि।
सारासार हि जानिबो यह विवेक सब मानि ॥

अथ समाधि-लक्षण

सवैया—तिताला

वासना त्याग सदा सम है दम बाह्य सुवृत्ति को
निग्रह ठाने।
दोष निर्दोष विषै उपरा मतिक्षा सहै दुख ज्यों
सुख ही माने ॥
सासना वेद सुप्रमाण हि दे श्रद्धा सो बखाने।
एक ह्वै चित्त समाधि बसै यहि भांति समाधि
अचारजको कुछ बाध न जाने ॥

अथ मुमुक्षु-लक्षण

दोहा—तिताला

जन्ममृत्यु संसारते कैसे छुटिये मित्त।
सो मुमुक्षु कहिये सदा यहै विचारत चित्त॥
चारो साधन जे कहे तिन्हें युक्ति जब होइ।
तब जो पूछै आत्म गुरु कहै तब सोइ॥
नमस्कार दण्डवत् करि भेंट हस्त में लाइ।
कहो गुरु जू आत्मा कैसे जानो जाइ॥

गुरु उवाच

दोहा—तिताला

शिष्य मुमुक्षु विचारि कै बोले गुरु दयाल।
वहै कहतु हों जो कह्यो अर्जुन सो गोपाल॥
सामवेदके वचन हैं तत्त्वमसी पद तीनि।
जानो इनको अर्थ जिन कह्यो सार तिन बीनि॥

चौबोला—तिताला

तत्त्वमसि जीवत्व पद है असि पद ब्रह्म कहावै।
माया ते ए तीनि भेद हैं एक वेद बतावै॥

शिष्योवाच

चौबोला—तिताला

कहो गुरू जू एक ब्रह्म ते तीनि भेद क्यों भाषे।
कैसे भए कौनके कीन्हें कौनो मति अभिलाषे॥

गुरु उवाच

चौबोला—तिताला

एक ब्रह्म चैतन्य अखण्डित इच्छासी झलकति है
तामें।
ताही सो माया कहियत है नीके करि सुनि गुनि
शिष्यामें॥

चौबोला—तिताला

माया जड़ चैतन्य ब्रह्म है ता सो भए आभासा।
सत रज तम त्रयगुण उपजाए तिन ते द्वैत विलासा॥
माया है प्रतिविम्ब ब्रह्मको गुणनि सहित है कीन्हें।
एक मांझ तम गुण अधिकारी दूजो रज-तम लीने॥
सत गुण अधिक ब्रह्म अरु माया सोई एइ कहायो।
रजगुण अधिक विश्वतम माया प्रकट जीव पद पायो॥

दोहा—तिताला

विश्वौ भूल्यो आपुमें तमगुणके अधिकार।
माया करि वैचित्रता कीन्हें जीव अपार॥
सो पाछे करि कहै गो जीवनिको सब मर्म।
अबै कहतु है ईशको रूप शील गुण धर्म॥

सवैया—यत्

शुद्ध सतो गुणके गुणते प्रतिविम्बन आपन
भूलन पायो।
माय हि खैंचि कियो अपने वश ईश वहै सर्वज्ञ
कहायो॥
चौदह लोक रचै छणमें अरु मेटतु है जब चाहै
मिटायो।
शक्ति अनन्त कहै सुखदेव वहै पुरुषोत्तम वेदन गायो॥

२

आपुन ही चतुरानन है सुख स्थावर जङ्गम
जीव उपावै।
रच्छा करै सबको हरि है अरु जीवका ताको तहीं
पहुंचावै॥
रुद्र है अन्त संहार करै सब कालनि काल है
सर्व नशावै।
यो जग खेल विश्वम्भर को जैसे बालक खेलिखेलौना
मिटावै॥

दोहा—तिताला

तीनि देह है ईशकी कारण सूछम स्थूल।
अब ताको वर्णन करों पुरुष विराट् समूल॥

चौबोला—तिताला

प्रथम देह कारण है माया।
जाके बल सब जगत् उपाया॥
जाको आदि न कोऊ लहै।
सत्य असत्य न वेदो कहै॥

दोहा—तिताला

पञ्च तत्त्व ताते भए पहले सूछमरूप।
शब्द स्पर्श अरु रूप रस गन्ध कहत कवि भूप॥

चौबोला—तिताला

सूक्षम तिनको देह भई जो हिरण्यगर्भ कहायो।
सब जीवनको आपुन ही व्यष्टिलिंग शरीर बनायो॥

दोहा—तिताला

इन्द्री मन बुधि प्राण ए सबके रचे विचार।
सूत्र आत्मा कहत है ताही सो निर्धार॥
स्थूल तत्व पांचौ प्रकट तिनते सब ब्रह्माण्ड।
नभ अरु पवन सुतेज जल अरु पृथिवी नवखण्ड॥

२

स्थूल देह वह ईशको सकल तत्वको जानि।
याही सो सब जीवको देहो लीजो मानि॥

बिलावल—तिताला

शिर अवकाश श्वास नासिका पवन वास सूर शशि
नयन मुख अनल को करे है।
हरि-हर भुजा दोऊ हियो चतुरानन है उदर सकल
लोक वाणी वेद ररे है॥
पर्वत है अस्थि रोम सकल वनस्पति मेघमाला
नीरज पताल पांइ तरे है।
अलख अरूप जाको महिमा अनूप देखो वही
विश्वभूप वही विश्वरूप धरे है॥

शिष्योवाच

बिलावल—तिताला

समुझो पुरुष विराट् जो कीन्हों आपु बखान।
कबते सो कब लौ रहत कहिये सब परिमाण॥

गुरु उवाच

बिलावल—तिताला

ब्रह्मा ही की आयुते यासौ बध्यो प्रमान।
सुनि अब तो सो कहतु हौं ताको सबै विधान॥

बिलावल—सवैया

सत्रह लाख हजार अठाइस है युग सत्ति चह्र
पद जानो।
बारह लाख नब्बे छ हजार को त्रेता तहां पद तीनि
बखानो॥
आठहु लाख हजार सु चौसठि द्वापर उभपद
धर्मके बानो।
चारियै लाख बतीस हजार कोहै कलि एक पदो
ठहरानो॥

तितारा दोहा

लाख तेतालिस वरष अरु बाते बीश हजार।
एक चौकरी जुगनको ताको कह्यो विचार॥

२

ऐसी ऐसी चौकरी जुग जब जाइ हजार।
ब्रह्मा जूको एकदिन तब कहिये निरधार॥

३

जेते जुगको दिन कह्यो तेतीयै पुनि राति।
सृष्टि रचे दिनके उदै राति प्रलै ह्वै जाति॥

४

ब्रह्माहीके दिवस को कल्प कहत सब तात।
जामैं चौदह इन्द्र ह्वै राज्य करि करि मरि जात॥

५

वर्ष जो एक सहस्त्रको इन दिवसनको होइ।
आयु दिव्य सौ वर्षको ब्रह्माजीको सोई॥

६

ब्रह्माहीके जन्मते प्रकट होत संसार।
महाप्रलय है मरणते यहै जानि निरधार॥

७

कहौ कहां लगि ईसकी माया को विस्तार।
याही ते संक्षेप सौ कछु कछु कियो विचार॥

८

तमद ईश्वर की कहो जोहै सबु व्यवहार।
अब सुनु त्वं पद जीवको ज्यौ न साध संसार॥

९

प्रथमहि उत्पत्ति इसको वहै जीवको जानो।
वाके शुद्ध सतो गुण याके तम गुण अधिक बखानो॥

शिष्योवाच

तिताला

सत्व रज तमगुण तीनि ए माया ते कहि आए।
तिनके लक्षण कृपा करि मोहि नहीं समुझाए॥

गुरु उवाच

खट्‌राग—तिताला दोहा

सकल वस्तुको ज्ञानकरी बुद्धि विमल जब होई।
वहै सतो गुण जानि ये कहत सयाने लोई॥

२

लोभ लिए व्यवहार जो सो रजगुण पहिचानि।
आलस निद्रा विकलता मोह तमो गुण मानि॥

३

सच्चिदानन्द स्वरूप अनन्त सु आपु तमो गुण ते
विसरायो।
एक ते जीव अनेक बनाइ के माया कियो अपनो
मन भायो॥
कारण न देह अविद्या वहै अरु वाहो को नाम
अज्ञान कहायो।
सूक्ष्म स्थूल उपाधि को मूल वहै प्रतिकूल
सुखानं गायो॥

तितारा—दोहा

मायाको द्वै शक्ति है विक्षेप रूप आवरण।
चेतनि रूप भुलाइ के ढांक्यो अन्तःकरण॥

शिष्योवाच

तिताला

मूल अविद्या तुम कह्यो सब उपाधि को देव।
देह लिङ्ग अरु स्थूल को आनो चाहत भेव॥

गुरु उवाच

तिताला

नासिका नयन त्वचा रसना मिलि कानए
इन्द्रिय ज्ञान बखानो।
वाक नियानि निपाउ उपास्थ पदो मिलि पांच है
कर्म्म विधानो॥
प्राण अपान समान औैर व्यान उदान हि औैर
मनो बुद्धि मानो।
सूक्षम पांचहु तत्त्वनिते ए हम अह तत्त्वको
सूक्षम जानो॥

शिष्योवाच

तिताला—दोहा

पांच तत्त्व सूक्ष्म नित ते स अह क्या को करि कोन।
कहिये मोसो प्रकट करि को मै को प्रवोण॥

गुरु उवाच

तिताला

वाक् श्रवण आकाश ते प्रकट होत इनि जान।
वह बोलै वहई सुनै दोउ शब्द निधान॥

२

तुचा पानिए पवन ते प्रकट होत रे नित।
दोउ परसन धर्म्म को निके जानत चित॥

३

नयन चरण ए तेज ते इन्द्रो दोई कह्यो जु।
वे चाहत है रूप को ये ले जात तह्यो जु॥

४

रसना नाभि द्रवी भई जल ते सुनि रे तात।
जानत रसके स्वाद को समुझि देखु यह बात॥

५

मूल द्वार औ नासिका ए पृथिवी तें दोई।
वहै ठिकानो गन्ध को वाहि ज्ञान सबु होई॥

६

प्राण अपान समान अरु व्यान उदान हि जानु।
पांच ठिकाते सब नर्कनि धा वे॥
पुण्य औ पाप समान दोउ महिमा न सहै
कुल मै छवि छावे।
जो सुखदेव ललाट लिखो सुघटै न बढ़ै अरु
जाइ न आवे॥
आज एक विचार बिना हि भांति सुजोवनि।
कर्म्म नशावै नेते भए एकै पवन वपांतु॥

७

पांच भूतके अंश मिलि उपजो मन अरु बुद्धि।
सब इन्द्रिनके स्वादको है ताह्यो ते शुद्धि॥

८

पांच प्राण है बुद्धि मन इन्द्री दसौ गनाइ।
पांच तत्त्व ते ज्यौं भए त्यौं सवर पै अनाइ॥

९

कारण जो पहिले कहि आए अरु या लिङ्ग समेत।
कर्म्म भोग कीबेके काजै स्थूल देह धरि लेत॥

शिष्योवाच

तिताला

कारण सूक्ष्म देह है कहो सु समुझ देव।
अब कहि यें करि केशल देह को भव॥

गुरु उवाच

चौबोला—तिताला

महाभूत पञ्चो क्रत ह्वै करि सञ्चित कर्म्म उपावै।
सुख अरु दुखके भोग करन को स्थूल देह छबि छावै॥

शिष्योवाच

दोह—तिताला

पञ्चीक्रत समझो न मैं जो तुम कह्यो समान।
ताते फिरि विस्तार सौ कीजै प्रकट विधान॥

गुरु उवाच

तिताला

महि कठोर अरु द्रवत जल तेज उष्णता जानु।
चलति वाउ खाली जहां तहां अकाश बखानु॥

२

एक तत्त्व के पांच करि पांच न ते पच्चीस।
पांच अंश न्यारे रहे निश्चित कीने बीस॥

३

अस्थि मासत्व नरी ममाटिका प्रगट पञ्चभूय।
रेत पित्त अरु स्वेद लार पुनि रुधिर नीर ह्वय॥
भूख प्यास सुखप्रभा नींद आलस हिते जगनि।
धावनि कूदनि चलसिकुर पसरनि जु पवन भनि॥
शिर कण्ठहुं दय अरु उदर कटि यह अकाश
विधि पञ्च लहि।
इमि पञ्चभूत पञ्चीकरण करि पचीश सुखदेव कहि॥

४

एक एक ते पांच करि कहेसु सब पच्चीस।
कौन तत्त्व मे को मिल्या सुनी सो चिन्त देवीस॥

५

एक एकके नौ करे पांच सो पैतालीस।
पांच राखि चालीसके है है कीने बीस॥

६

हाड़ मध्य पृथिवी रही मास नीर रसतेजु।
त्वचा पवन मिलि कै भई रोम अकाश कहे जु॥

७

बीज मुख्य जल जानियै पित्त तेज मिलि होइ।
स्वेद पवन मभू रुधिर मवला रङ्गगण जुत जोइ॥

८

क्षुधा मुख्य तेज रसो प्यास पवन मन आनि।
सुखमा जल आलस अवनि नींद अकाश बखानि॥

९

धावनि मुख्य समीर है गगन पसारनि माहि।
कूदनि तशु सकोसु भुय चलनि नीर बिन नाहि॥

१०

शिर अवकाश जु शब्दमय कण्ठवा पुहिय ते जु।
उदर नीर जुत जानि यै कटि भुयगन्ध कहे जु॥

११

भूमि अस्थि जल रेत अरु तेज भूख पहिचानि।
धावनि पवन अकाश शिर पांच नि गालिस जानि॥

१२

पञ्च अंश ए राखि कै भए बीस यौ लीन।
ज्यो नर पगिया परसपर बदलत परम प्रवीण॥

१३

यहु सबु पञ्चीकरण की तो सौकह्यो विचारु।
देह स्थूल धरि जीव यह करत भोग संसारु।

१४

धै कुमोह जल अग्नि पुनि क्रोध मूल यह जानि।
वाई काम सकै वेर तु है लोभ अकाश बखानि॥

१५

तीनि देह तो सी कह्यो कारण सूक्ष्म स्थूल ।
पञ्च कोसको भेद पुनि ताही माह समूल ॥

कवित

अन्नमय स्थूल जानि प्राण प्राण मेव जानि पांच
कर्म्म इन्द्री अरु मनु मनोमय है ।
पांच ज्ञान इन्द्री अरु बुद्धि विज्ञानमय कारण
अविद्या सो तो आनन्दमै लय है ॥
तीनि देह माह पञ्च कोष सुखदेव काहि नीके
के विचारि देखु भ्रम ही को भय है ।
कोसु है न कोज कहि देहज न सोज एक आत्मा
को जोज जा मे आनन्द को चय है ॥

शिष्यावाच

चौबोला

सञ्चित कर्म्मनिके पहिले ही स्थूलदेह तुम भाषो ।
कर्म्मनिके लक्षण सुनिवे को मेरो मति अभिलाषो ॥

गुरु उवाच

दोहा

सञ्चित अरु प्रारब्ध ए क्रीयमान त्रय कर्म्म ।
सुनि हो नीके कहतुहौं तिनके अद्भुत मर्म्म ॥
एक जन्मके कर्म्मफल भुगुते जन्म अनेक ।
सञ्चित ता सो कहत हैं सुखदुख सहित विवेक ॥
एक जन्मके कर्म्मफल भुगुते दूजो देह ।
सो प्रारब्ध कहावई सुनि अब सहित सनेह ॥

सवैया

गर्भ वसे नरके पशुदेह जरायुज योनि तहां
पद पावे ।
पच्छिन आदि जो अण्डज योनि निरंतर जाइ
तहां छबि छावे ॥
स्वेदते स्वेदज की उतपत्ति जु चीलर और
सुयासु कहावे ।
उद्भिज्ज वृक्ष तिन कनि भो इहि भांति सुजोवनि
कर्म्म भ्रमावे ॥

२

पुण्य करै सुरलोक है अति पापनिते सब
नरकनि धावे ।
पुण्य औ पाप समान दोज महिमान सह कुलवन्त
विछावे ॥
जो सुख देवलिलार लिख्यो सो सुघटै न बढ़ै अरु
जाइ न पावे ।
आत्म एक विचार बिना इहि भांति सुजोवनि
कर्म्म बनावे ॥

३

कीट पतङ्ग करै पशुपच्छि अधोगतिमें जल जीव निभावै ।
कै सुरलोक बसै सुर ह्वै कबहूं सुरराजको
सम्पत्ति पावे ॥
मानुष ह्वै सुखदुख सहै घर नीचके उचके लै प्रकटावे ।
आत्म एक विचार बिना इहि भांति सुजोवनि
कर्म्म भ्रमावे ॥

४

जाग्रत मे सब विश्व बनाइ विलास करै वसि
नयननि हेरै ।
ताही की वासना वासित ह्वै सपने मह आनि
मनोरथ घेरै ॥
सूक्ष्म स्थूल शरीर दुयो भ्रमते अति होत
सुपोपति नेरै ।
तीनि अवस्थान मे सुखदुःख लहै सो तो एक
अदृष्टके प्रेरै ॥

दोहा

इच्छा अनिच्छा परइच्छा त्रिविध कर्म्मके भोग ।
जन्म आदि आमरण लौ कहत विवेको लोग ॥
कर्म्म होत प्रारब्ध ते मूरख जानत नाहि ।
मानि लेत अब मे कीए क्रीयमान सो आहि ॥
अब बरावत कारमसा मिलेते फिरि अन्न ।
वो इह प्रारब्ध ते यो सम उत हैं तन्न ॥
ज्ञान उदय विहोत हो सञ्चित कर्म्म विलात ।
क्रियमान हो ते नहीं प्रारब्धे रहि जात ॥
देह तीनिम जीवको कह्यो सहित विस्तार ।

जाते तेरे चित्त मैं उपजै आत्मविचार ॥
पांच भूतते देह यह ता काउ बोजानि ।
सांचौं एकै आत्मा सो विचारि मन मानि ॥

सवैया

भौतिक देह सदा जड़ है कहुं आत्म चेत निजो
तिहि मानौ ।
देह अनित्य मरै जन्मै वह आत्मा नित्य
अखण्डित जानौ ॥
देखिये देह अमङ्गल रूप सुआत्मा शुद्ध अदृष्ट बखानौ ।
ता कह एक कहै नर मूढ़ कहा उनते पशु
और हि मानौ ॥

दोहा

षट् विकार हैं देह मे ते आत्मा के नाहि ।
सुनि अब तिनके नाम पुनि समुझि देखु मनमाहि ॥
उपजति है अरु बढ़ति है बाल जुवा पुनि होइ ।
वृद्धा होति अरु मरति है षट् विकार ए जोइ ॥
दोष दसौ है देह मे ता करि आत्मा हीन ।
सुन पुनि तिनके नाम अब यथा कहत प्रवीण ॥

दशदोष लक्षण

सवैया

शुद्ध अशुद्ध भरी दुर्गन्धि लसै बहु पंड़ सुस्थूल
निहारी ।
रोग ग्रसे बहुं भांति जरै शिथिलै पुनि आमिष
अभ्र पसारी ॥
हो तिनि होति घने दिन मै छिन मै मिटि
जाति न लागत बारी ।
देह सदा दश दोष भरो यह आत्म ब्रह्म अदोष
विचारी ॥

दोहा

वेद कहत सो मे कहत तू पुनि चित्त विचारु ।
आत्म चेतनि नित्य है देह अनित्य निहारु ॥

शिष्योवाच

दोहा

तुम जो कहो सो सबलखो स्थूल देह मे नाहि ।
याहि छाड़ि उरझो धरत लिङ्ग देहमें आहि ॥

गुरु उवाच

पञ्चभूत जड़ ते कहे सूक्ष्मकी उत्पत्ति ।
अलख अनादि अखण्ड है तु तो आत्मवृत्ति ॥

शिष्योवाच

देह होत चेत त्यजि हि इन्द्री तेहि समतूल ।
प्राण होज को और नहि यही कहति हो मूल ॥

गुरु उवाच

सोवत मे भूखन हरत जानत नाहो कोइ ।
प्राण सोई चेतन्य तौ पकर चोरहो सोइ ॥

सवैया

कानको कासुन नाक करे अरुणके कोका सुन
कान पै होई ।
आंखि कोका सुन आंखि न जोई ॥
हाथ को कासुन पाई करै अरु पांइ को कासुन
हाथ हि सोई ।
जानत आपने स्वादहि कौ दश इन्द्रियन माहन
चेतनि कोई ॥

शिष्योवाच

दोहा

स्वाद परस्पर औरके इन्द्री जानत नाहि ।
तते एक बुहे सबै हो चेतनि मनमाहि ॥

गुरु उवाच

पञ्चभूतके अंशके मनु उपज्यो पहजानि ।
सब इन्द्रिनके स्वाद को ताते है पहिचानि ॥
बात सुनत हूं सुनत नहि कहत नहीं मनु ठौर ।
ताते यहै विचारि पै चेतनि है कोउ और ॥
सुखपति इन्द्री सहित मनु मिलत अविद्या माहि ।
जाग तु है तब कहतु है आशु कछु सुधित गहि ॥
सपनोऊ देखोम कछु सोइस पोइहो रीति ।
यह जानि जेहि जानते हि यहै ज्ञानकी नीति ॥
पञ्च तत्त्व ते होत मनु ज्ञान भए मिटिजात ।
ता को नश्वर कहत है जाके उत्पत्ति पात ॥

सदा अनादि अनंश ऐसो आत्मत भाई ।
ताहि यहै विचारि के छाड़ि भ्रमके भाई ॥

शिष्योवाच

सबह मे तीरह कहे रहो जु वाको बुद्धि ।
जानत हो चैतन्य यह जाको सबको शुद्धि ॥

गुरु उवाच

अहङ्कार मन बुद्धि चित्त एक कहत है चारि ।
एक कहत है बुद्धि मन अन्तःकरण निहारि ॥
जैसे एक पवनके प्राण कहे है पांच ।
तैसे अन्तःकरणके चारि भेद पुनि सांच ॥
जब चाहतु है वस्तु कछु चित्त कहत है ताहि ।
जतन कल्पना जब करे मन कहियत है वाहि ॥
मय हलो नोले तुही अहङ्कार यह जोइ ।
सबको जब निश्चय करे बुद्धि कहावै सोइ ॥
जैसे बांभन एकके नाम क्रिया ते दोइ ।
रोटी करे रसोइ पाप टेते पाठ कहोइ ॥
आत्म है बुद्धि ते परे यह जो कहो भगवान ।
अरु पुनि आत्मबोध मे शङ्कर बोध निधान ॥

गीतायां

इन्द्री पर है विषयते मन इन्द्रिन पर जोइ ।
बुद्धि कहो ताते परे बुद्धि आत्मा सोइ ॥
सुखदुःख इच्छा राग ए सबै बुद्धिके धरम ।
सुखपति भेए सब मिटै रहत आत्मा परम ॥

शिष्योवाच

कहो आपुत मुझो सो मै देह दोह्र मै नाहि ।
अब आत्म काशो कहत या शरीरके माहि ॥

गुरु उवाच

अज्ञाना वेधनोया न्यारे न्यारे तेलखे सबहोके गुण रूप ।
जानत नाहो आपको यह अज्ञान अनूप ॥
कारण मुख्य उपाधिको है तीसरो देह ।
आदिन ताको जानिये अन्त ज्ञानको गेह ॥
अहङ्कार बुद्धि को कहै तू जानि देहि जगाइ ।
जगि है परमानन्द जब मे तु जगत नसाइ ॥

यहै अविद्या नींद है स्वप्नतुल्य संसार ।
ब्रह्म लखै जब आपु को जागत यहै विचार ॥

शिष्योवाच

रूप कौन है ब्रह्मको का विधि वसै शरीर ।
कहिये मो पर करि कृपा जो नसाइ भय भीर ॥

गुरु उवाच

तानसेनोक्त कवित

मन बुद्धि इन्द्रिनको कारण चलाइवे को सकल
उपाधिन ते न्यारो रहै गात मे
जैसे घट मोह व्यापक आकाश अरु न्यारो सुखदुःख
मिते देसो अवदात मे ॥
जैसे रवि ज्योति आगे सोवत ते जोव जागे
उठि उठि काम लागे सबै प्रभात मे ।
अज अविनाशी परिपूर्ण प्रकाशो सुखदेव सुखराशि
औसो नित्य लसै आत मे ॥

२

दाहक प्रकाश कहै काट को अग्नि जैसे चेतनि
प्रकाश कहै मन बुद्धि गात मे ।
मन चक्षुरादि छुते न्यारो सबकाल जानि मन
चक्षुरादिहु को मन चक्षु तात मे ॥
मन चक्षुरादि मिते पाइ येन रूप जाको अतिहि
अरूप एक अद्भुत गात मे ।
अज अविनाशो परिपूर्ण प्रकाशो सुखदेव सुखराशि
एसो नित लखै आन म ॥

१

मुखको आभास जैसे दर्पण मे देखियत मुखते
न न्यारो ताहि सुनियत बात मे ।
ऐसे ब्रह्म चेतनि को बुद्धि मै आभास परो ताहो
सो कहु जोव बहुविध गात मे ॥
दर्पणके टारे प्रतिबिम्ब मिटि जात जैसे ब्रह्मके
विचारि देखे जोव मिटि जात मे ।
अज अविनाशो परिपूर्ण प्रकाशो सुखदेव सुखराशि
रोसो नित लखै आत मे ॥

४

रविके प्रकाश पाए लोचन विलोके रूप तैसे
रवि ब्रह्म प्रकाश अवदात मे।
जैसे एक सुतमा उग्र निगम पोषियत तैसे एक
चेत बुद्धि मननके गात मै॥
सबही मे एक वहै सबही ते न्यारो रहै गगन
समा नयन मिलत काहू वात मै।
अज अविनाशी परिपूरण प्रकाशी सुखदेव सुखराशि
ऐसो नित लखै आत मै॥

५

सच्चिद् आनन्दस्वरूप एक आत्माको विश्वपरे
बुद्धिन अनेक लेखियतु है।
जैसे एक रविके अनेक सर्वमा उजलके प्रताप
न्यारे न्यारे पेखियतु है॥
कर्मनिके वस जीव सुखदुःख भोग करे नीच उच्च
मध्य जोनि मध्य भेविषतु है।
पवनके वस सरवरनिके जल जैसे चञ्चल है कोउ
थिर देखियतु है॥

६

दीठि को छपावे घनु अज्ञ जाने भानु छप्यो ऐसे
शुद्ध आत्मा को बुद्धि उन मान्या है।
कहै सुखदेव जैसे श्वेतमणि मे न रङ्गपाश धरे
जाके नाके रङ्गनि मे सान्यो है॥
जैसे जलमा उपजो चन्द्र प्रतिविम्ब आई जलके
हलावतहु हालत सो आन्यो है।
ऐसे जड़बुद्धि माउ देखि प्रतिबिम्ब थिर मूढ़ मिले
ब्रह्म को जगत माह मान्यो है॥

शिष्योवाच

दोहा

मम शरीर है आत्मा जड़ शरीर सो नाहि।
विषय भोगको करतु है यह संशय मन माहि॥

गुरु उवाच

विषय भोग विजन रचे यारो स्थूल शरीर।
इन्द्री कर सो करत है भोजन बुद्धि मन धीर॥

गीतायां

इच्छा सुखदुःख है अरु धृति चेत निसन्धात।
यह सब छेद विकार है न्यारे आत्मतात॥
देह कहतु है आपु सोल वलगि करिये अज्ञ।
ब्रह्म लखै ज्ञानी वहै आत्म अज्ञानतज्ञ॥
तु छुरो संसारमे निश देह रहि नित।
लखु आपनको आत्मा यहै मुक्ति है मित॥

कवित

सदचिद् आनन्द स्वरूप स्वप्रकाश जाको सम
सबहीके उर अन्तर रहतु है।
अचलअखण्ड अक्रिय अनन्त अति अद्वय अरूप
इन्द्रि मनन गहतु है॥
निर्विकार निराधार निर्विकल्प निराकार कूटस्थ
निर्गुण निरन्तर लहतु है।
आत्माको ब्रह्म जाने देहको असत माने पण्डित सयाने
ज्ञान याही सो कहतु है॥

दोहा

वर्णाश्रम अभिमान है जालो हियमें जान।
वेद श्रुतिको सासना तोलो सबै प्रमाण॥

कवित

पाप अरु पुण्ये दोउ मटिया प्रवल जाके लोक
अरु वेदरीति वासनको वारीके।
काम क्रोध लोभ मोह कोल निसो राख्यो जरिक ते
सुखदेव चक कर्मनिके चारिके॥
आश्रम वरण अभिमानको जञ्जीर जर्यो सुखको
दुःखके किवार तोरि डारिके।
भूतको मिथ्यावारिरूप आप नो सत्यारि सिंह
निकसो प्रबोध जग पिञ्जरा को कारिके॥

२

देही नाही इन्द्री नाही मन बुद्धि प्राण नाही कारण
अविद्या नाही और सूक्ष्म जी कहै।
वर्ण आश्रम करी माउ नाही जाति कुलधर्म नाही
करता अकर्म नाहि भोग तान ते कहै॥

मायाको विलास नाही इसको प्रकाश नाही जीव
चिताभास नाही भांति भांति से कहे।
जागरत स्वपन सुषुप्तिको लखैया सदा तुरिया
प्रकट बोधरूप ब्रह्मए कहे॥

शिष्योवाच

दोहा

यह तो जानो आत्मा तुव प्रसादते देव।
अब कहियेत तुमस्यको कहिवेहे भेव॥

गुरु उवाच

यहु सबुत्वं पद जीवको तुम हि सुनायो रूप।
अब सुनि असिपद अर्थको जोहे सबको भूप॥

अथ असिपदका अर्थ

गुरु उवाच

दस्व दुई स्वर सो कहे त्वं पद जीवन खानि।
असिपदब्रह्म अलिप्त है यामे दोनो जानि॥
वह ईश्वर सर्वज्ञ है जीव सदा अल्पज्ञ।
सम कहिये जो दुहुन को तो न मानि हे अज्ञ॥
तत्त्वपद मानो विभु है त्वं पदद्वन्द समान।
असिपद यानी दुहुनमें ताहि एक करि जान॥
तत्त्वपद मानो भूप है त्वंपद जान किसान।
असिपद मानसको कहे ऐसे मानत जान॥

शिष्योवाच

देवदत्त वहमानई मिल्यो विभो सुत मित।
फिरि वह देशोधिपति सुतक्यो करि आवे चित॥

गुरु उवाच

वास गएको विभो त्यजि अवको त्यजो विपत्ति।
दृष्टि करे जो देह पर तो वह इहे स्मृत्ति॥
ईश्वरको सर्वज्ञता सो विद्याते जानु।
जीवनको अल्पज्ञता ताहि अविद्या मानु॥
जे उपाधिको मूल हे तिनको उठी जानु।
शुद्ध गई जो ब्रह्म हे एक आत्मा मानु॥
जैसी देहे जीवकी ते सहे जगदीश।
त्यार मारो कह तु हो दुवो एकरि रीस॥

कवित

जैसी रेह याके ब्रह्म अखण्ड है प्रकट रूप सोयाके
स्थूल जामे व्याप पाइने पिये।
याके हे हिरण्यगर्भ दूसरो शरीर याके सक्ष्म कहा
बेतत्त सघह शुभे पिये॥
याके आदि विद्याजाते होत सब काज सिद्धि
याके है अविद्या जाते भूलो अवरे थिये।
वा सौ जगदीश याहा जीव बहि परे एक ब्रह्मके विचा-
रे ते न जीव ईस देखिये॥

दोहा

त्यजो ईस को ईसता और जीव अविवेकु।
तीनों पदको अर्थ यह तत्त्वमसि है एकु॥
तत्त्व तुही है यह कह्यो तत्वमसिको अर्थ।
यह श्रुति जाके भई सो सब भांति समर्थ।
जो कोई जग जानई अर्थ तीनिको भेउ॥
मेटे हैं एके गहै अमर होउ सुख देउ।
सामवेदके वचनको कह्यो सबै विस्तार॥
तैसे चारों वेदके महावचन है सार।
अहं ब्रह्मास्मितिजयर्वेदस्य॥
प्रज्ञामानन्द ब्रह्मो स्मिन् वेदस्य।
अयमात्मा ब्रह्मति अथर्वन वेदस्य इति महावाक्य॥

२

ईश जीव अरु ब्रह्म है जैसे एकु बखान।
यहै अर्थ सब वचनको बुधिबल जानो जान॥
सद चिद आनन्द अद्वय अचल अखण्ड अनन्त।
स्वप्रकाश कूटस्थ अज अलिप्त ब्रह्म अमन्त॥

शिष्योवाच

द्वादश एके ब्रह्मके कहे विशेषण ताम।
न्यारे न्यारे है कहो अब तिनके गुणगाम॥

गुरु उवाच

दोहा

असत जगत सत सो लगत जाकी सत्ता पाइ।
सो सद ब्रह्मस्वरूप है ज्ञान बिना नहि पाइ॥

कवित

जाग रत स्वप्रकाश जो होति जाको चेतनाते सुषुप्ति
तथा मे वहै साखी सो विशेषिये।
तीनि हु अवस्था निते भावा भाव भाव रूप तुरिया
स्वरूप एक रस अवरेखिये॥
जैसे लोह चुम्बक समीप करे चेतना को तैसे
देह इन्द्री मन आत्मा सो लेखिये।
एक रूप जगमें जगमगाति जाको जोति जहां तहां
जासु चिद चेतनिसो देखिये॥

आनन्दरूप कवित

देख सुने संघे खावे चन्दन तुचाको लावे वचन
बनाहि नीके जाको जे लगतु है।
हाथन ग्रहन करे पाइन चलन करे जोई छिप धरे
ताहे सुख मैं पगतु है॥
कहै सुखदेव विखै मिले मन भावती तौ सुख सो
लगत पाछ मानहु टगतु है।
आनन्दस्वरूप ब्रह्म आनन्द अखण्ड जानि स्वपनेको
आनन्द मो आनन्द जगतु है॥

अद्वतीय लक्षण

दोहा

एक आत्मा में बसत स्थावर जङ्गम देह।
जैसे मणिका मालके सूत्र माझ गणि लेह॥

अचल लक्षण

देह होति अरु मिटति है ताते चञ्चल मानि।
जन्म मृत्यु जाके नहीं आत्म अचल वखानि॥

अखण्डलक्षण

कवित

नाहिन जाके सुजाति कहै अरु दूसरो जाति
सुकौनु गणावे।
आपुहु नाटन भेदु कछू श्रुति नासिका नयन
सुपाईनि धावे॥
रङ्गमन सूक्ष्म वेद कहै मन इन्द्रिन के सुनि
कैसेहु पावे।
चेतनि एक अखण्डलरूप कहै सुख आपु को
आपु लखावे॥

अनन्तचेतन कवित

प्रथमहि माया सो प्रवेश है अकाश वायु तेज नीर
पृथिवी मे व्यापक अनन्त है।
थिर चर जीव्द जे ते जगमे जगमगत सबमे प्रकट
एक चेतनि अनन्त है॥
जैसे घटमट मध्या पहिले अकाश घिरे तैसे
घट घटन हि आपुही समन्त है।
रूप है अनन्त जाको महिमा अनन्त अरु आदि
नाहीं अन्त ताते आत्मा अनन्त है॥

स्वरूपप्रकाश लक्षण

कवित

और वस्तु चाहिये तौं दीपक प्रकाशियत दीपक
जो चाहिवेको दीपक न चाहिये।
और सब देखिवेको आंखि सुखदेव जैसे आंखिनको
देखिबे को कौनु अवा गाहिये॥
रविको प्रकाश पाए सब मे प्रकाश होत रवि मे
प्रकाश जैसे खत हस गाहिये।
अग्नि मे दाहक प्रकति जैसे आपुहोति तैसे
स्वप्रकाश एक आत्मा सो आहिये॥

कूटस्थलक्षण

दोहा

जाके नहीं विकार कुछ रहत कूटकुत।
नित सो कूटस्थ रहावइ समझि देखु चितमित॥

अजलक्षण

घटका कारण मृत्तिका ब्रह्म जगतको जानि।
आदिरहित कारण रहित अज करि ताहि वखानि॥

अक्रियलक्षण

आत्म है अक्रिय सदा देह क्रिया बहुरूप।
जैसे दीप प्रकाशते खेले न्यारो जूप॥
विषै बुद्धि पातु रतन चे अहङ्कार ढिग भूप।
इन्द्रि ताल मृदङ्ग जुत आत्म दीपक रूप॥

ब्रह्मलक्षण

विहाग

शेषके सहस मुख जीभ द्वै सहसता तेन मनए नाक
नित लेत रहियतु है ।
एकु ब्रह्म अकह जाको पावत न पार कोऊ ऐसे
ऐसे कोटि कोटि वोम लहियतु है ॥
कहे सुखदेव एकु अद्वय पुरुष जा सौ नेतिनेति
कहे न प्रमाण कहियतु है ।
सदचिद आनन्दस्वरूप अविनाशी अङ्ग पूरण प्रकट
प्रारब्रह्म कहियतु है ॥

दोहा

ए द्वादश विस्तार सी कहे विशेषण चारु ।
ऐसे जाने आप को यहै वेदको सारु ॥

शिष्योवाच

न्यारे न्यारे सब कहे वलविक्रम अरु नाम ।
रूपका नहै ब्रह्मको लक्षा ज्ञानके धाम ॥

गुरु उवाच

अप्रमा अद्वैत है औ चैतन्य सुभाइ ।
मन इन्द्री गहि सकत नहिं क्यौं करि वरनो जाइ ॥

कविता

काननको नाद नाहि जीभको सवाद नाहि
वचनको वाद नाहि जुगति सौ जो कहै ।
आंखिको देखाऊ नाहि नाकको सुंघाउ नाहि
कर को गहाउ नाहीं पाइनको रो कहै ॥
मन करि जाना नाहि बुद्धि अनुमाना नाहि दूसरो
प्रमाणा नाहि प्रकटम सो कहै ।
असति प्रपञ्च शक्ति कैसे पहिचाने नयन आपु
सुखु जाने दूजो जाने बिन को कहै ॥

दोहा

एक ब्रह्म अद्वैत है ताको उपमा कौन ।
बिन उपमा समुझै नहीं अम्र कहावै तौन ॥
जो लक्षण आकाशको वहै ब्रह्मको देखि ।
यह जडु वह चैतन्य है यहै भेव पुनि लेखि ॥

कवित

व्योम ज्यो मैं सात उरसात लगो सात लोक व्योम
होतके माझ लोकालोक लेखियतु है ।
व्योम मैं जगत अरु जगत मै व्योमसे घटथे भीउ
अरु न्यारो देखियतु है ॥
कहे सुखदेव जैसे जीव जग भेदवा मै तैसे घटमट
भेद यामै भेखियतु है ।
और सब लक्षण समान जानि व्योमके पै ब्रह्म
माझ चेतन ता सो विसेखियतु है ॥

शिष्योवाच

दोहा

कह्यो प्रपञ्च सत्य अरु सत्य ब्रह्म सो एक ।
द्वू जो तपा असत्य क्यो रहै एकको टेक ॥

गुरु उवाच

एक केवल ब्रह्म है भेद प्रपञ्चन जानु ।
नित्य अनित्य विवेकके दूरि करत अज्ञानु ।
जो कहु तो यह पहिले हो देह आत्मा एक ।
तो आत्मा न जान तो गहि लेतो यह टेक ॥
देह आत्मा भिन्न करि मम तु छुड़ाई ।
भयो आत्मा आपु जब तब सबु एकै आई ॥

अरिल्ल

एकमेव अद्वैत अद्वाह ब्रह्म यह भेदु है ।
और वस्तु कुछु नाहि भेद अनभेदु है ॥
पहै वार अद्वैत सिद्ध करियो गहै ।
जानि आपु को आपु मुक्तिपद को लहै ॥

दोहा

जग को कारण ब्रह्म है यह निश्चय करि जोइ ।
भूलिन मन मे आनिये कारण करि जोइ ॥

शिष्योवाच

दोहा

कारण तौ द्वै भांति है उपदानसे निर्मित ।
कहिये ता मै कौन है वह अविनाशी नित ॥

गुरु उवाच

कार्य्य कारण ब्रह्म है दुइ भांति तेहि जानि।
उपादान अब कहति हौ फेरि निमित्त बखानि॥

परज

माट सो कहत घट काट सो कहत मट सुत सो
कहत पट पोटि पाटि मानिते।
लोहे सो कहै कटारी पीतरि सो कहै झारी
कासेसो कहत थारी भोजनके सानिते॥
कह सुखदेव जैसे जल सो तरङ्ग कहे तुग कहै
तावे माझरा गुल पिटानिते।
कनक सो कङ्कन औ किङ्किनो कहत जैसे ब्रह्म सो
जगत कहै व्यापुविन जानिते॥

२

नगर गन्धर्व जैसे बादर मैं देखियत नीलता अकाश
मांझ खाली को धरमु है।
जैसे सखा उड़ आगपर उसा निशि लागे जो वरो
अंधेरे माउ सांप को भरमु है॥
कहै सुखदेव जैसे फटिक कौहा मानि लाल को
अङ्गार जानि जानत मरमु है।
कपोतो सम तनि ठैनौर लिखि रैरनि मैं ऐसे ब्रह्म
चेतनो जाक गमरमु है॥

३

इसमा के दोनि जैसे छोटो जु बड़ो सो लागै दूरिते
निहारि बड़ो छोटेउ लगतु है।
सो लग तुहि कांचको धरनो मालनोर ओसो
देखियत मोर माइ कह कछु कांच सो वलतु है॥
नाउके चलत रूख तीरके चलत लागै बादरके
दौरे मानो चन्द्रमा भगतु है।
जैसे इन्द्रजाल भमया घको परै वा भासै तैसे
ब्रह्म चेतनि मैं भासत जगतु है॥

शिष्योवाच

दोहा

ब्रह्म नित्य चैतन्य है जगु अनित्य जड़ जानि।
उपादान क्यों करि भयो जड़ को चेतनि मानि॥

गुरु उवाच

पापाकुल

जो तुम देहै इ करि मानत।
देहो क्यों नहि ब्रह्म हि जानत॥

गुरु उवाच

दोहा

चेतनित जड़ होति है जड़ते चेतनि होइ।
यह प्रत्यक्ष ही देखि कै संशै डारी खोइ॥
यह शरीर चैतन्य है ताते नख जड़ होइ।
गोवर जड़ते प्रकट है गोवरीड़ा चिद सोई॥

शिष्योवाच

यह तौ जानो जो कहो उपादान की रीति।
अब निमित्त किहि भांति है सो कहिये करि प्रीति॥

गुरु उवाच

सावेवेद अरु सुमृतिको धरे ग्रन्थ बढ़ि जाइ।
तातै उपमा युगुति सौ प्रकट देत समुझाइ॥

परज

जैसे घट कारज को कारण कहत दोइ
उपादान माटी औ निमित्त सो कुम्हारु है।
ओसे पञ्चतत्त्व गुण तीनि है
जगत भयो आपहो तें जीय ईश आपु कर तारु है॥
माटी औ कुम्हारु न्यारो एक कहे सो सुभाटो
तातै और उपमा दै कोनो निरधारु है।
जगका निमित्त उपादान जैसे मकरी है
तैसे भांति जगको विचारु ब्रह्म चारु है॥

दोहा

कारण करि कह्यो यहु तौ सो व्योहार।
कार्य्य कारण ते परे सोई तत्त्व विचार॥
चिद विलास पर पञ्चयहु दुष्कर वे कृपाल।
मिसिरि इन्द्रापनि मिले कहहिं होइ दयाल॥

कुण्डलिया

जैसे घटको घट कहै माटी कारण होइ।
घट त्यजि माटी के कहै काको कारण होइ॥

ताको कारण होइ ब्रह्म जग ऐसे जानो।
जगुतजि ब्रह्म कहे प्रकट निरुपाधि बखानो॥
पिता पुत्रते होइ पुत्र बिन पिता न जैसे।
कारनपै मिटि जाइ तजै कारजके जैसे॥

कवित

चेतनि कहो जो कहूं और जड़ होई कोउ सत्य
कहोतो जो असत्य और लहिये।
आनन्दस्वरूप कहो जो तोसो कजानी कहूं एक तो
कहो जो दूजो रूप और गहिये॥
तो कहीं अखण्ड खण्ड और होई कछु चल और
होई तो अचल यहि कहिये।
जानि यह वेद सुखदेव नेति नेति कहे आप को
विचारि चुपचाप आपु रहिये॥

२

अज तो कहो जो देखा और को जन्म कहूं अक्रिया
कहो जो करतार और लहिये।
कूटवत कहीं जो लोहारवत होई कोउ अन्त और
होई तो अनन्त याहि कहिये॥
स्वप्रकाश कहो जो देखे या और होई कोउ
ब्रह्म तो कहो जो जीव ईस और गहिये।
गूंगो गुर पाइ ताको स्वद न बखानो जाइ आपु
ही को पाइ चुपचाप आप रहिये॥

दोहा

ऐसो ब्रह्मस्वरूप है ताहि आत्मा जानि।
अब तेरे प्रारब्ध नहिं कछू लेहु जनि मानि॥

कवित

सोवतमें जैसे देह धरिके मनोरथके पूत भयो
काहूको खिलायो तिन वारेते।
शिशुता निवारो पुनि वेद पढ़ि चारों
सबु कुटम सम्हारो काका बाबा अरु सारेते॥
कहे सुखदेव नाति पूत उपजाए भांति भांतिन
सिखाए पाप पुण्य पूरे पारेते।
जागत ही जैसे सब सपनेके जठे जाने जगतको
जाने तैसे आत्मा विचारेते॥

२

सोवत सपन मांहदोन जैसे राजा होत जागत मे
लेसु ताको रंचक न लेखिये।
जैसे का बांझ पूतको लराइके यो राइनेको जाके
ताके जाइ करिछट अवरेखिये॥
कहे सुखदेव जैसे गंगनको गुफा माझ फूले
अरविन्द ताको सौरभ विसेखिये।
तैसे झूठ जगतमें झूठा ई सरीर जानि ताके किए
काम कैसे साचे करि देखिये॥

दोहा

ब्रह्म रूप तबही हतो जब हो अब सुभाइ।
ज्ञान भए कछु और नहिं वहै ब्रह्म अब आइ॥
भूले को समुझावही वेद और गुरु लोग।
करत औरते और नहिं क्रियाकर्मके योग॥

कवित

कौरीदसचले गाऊं वीच नदी उतराउ पेरि
पेरिके सुनाई पारभूत आयो रहै।
जोई गने सोई आपु को न गने लेखे एकु बड़ो
अवरेखे महा सोक उपजायो है॥
और जब पंथी आए न्यारे न्यारे समुझाए गनि के
दसोनत ए तब सुख पायो है।
ऐसे सुखदेव गुरुदेव उपदेश करि तेरोई स्वरूप
फेरि तोहि समुझायो है॥

शिष्योवाच

दोहा

जानो तुम परसादते अपनो आत्मस्वरूप।
अनुभव कासों कहत है औ विज्ञान अनूप॥

गुरु उवाच

चिद सद जागत ब्रह्मको तोसो कहिये ज्ञान।
ब्रह्म आपुही को लखे सो विज्ञान निदान॥
जैसे नर अज्ञानते कहत देह सो आपु।
त्योंही जब ब्रह्म लखे ज्ञान हृदय आलापु॥

शिष्योवाच

युक्त भयो संबे गयो लख्यो आपनो रूप ।
रही देत व्योहार सो का विधि कटे अनप ॥

गुरु उवाच

भांति भांति भोगनि करे करे दइवर होइ ।
पापपुण्य लागे नहीं योजन आदिक जोइ ॥

अष्टावक्रावच

दोहा

जीव ईस अरु जगतको आतम जाने जोइ ।
मनमें आवे त्यो रहै ताहि न रोके कोइ ॥

गीता

लोक वेदको रीति सब आगो कोने जाइ ।
जाके धर्म हि देखिके जगत धर्म ठहराइ ॥
जैसे तब अज्ञान में चलत हतो जेहि रीति ।
ते सो विधि अवश्य चलो तजो कर्म सो प्रीति ॥

कवित

नर सो जनमु न धरमु वेद शासन सो विप्र सो
न वर्ण ओसर आश्रम न गेहो सो ।
कर्मसो न प्रबल न अबल विषे लम्पट सो जग सो
भरमु न भूलेया और नेहो सो ॥
गुरसो न वेद उपचार न विचार ऐसो अन्न सो न
रोगो औ असज्जमो न एहो सो ।
मन सो उपासक सुबुद्धि सो न सङ्गी और देह सो
न व्योहरा न देव और देहो सो ॥

दोहा

यह वेदान्तक को कह्यो सब सिद्धान्त विचारु ।
सबे समुझिये आपु में सब में आपु निहारु ॥
लाख लाख ह्या करके ग्रन्थनि माह विचारु ।
सो मतु बहुसक्षेप सो भाषा मांह निहारु ॥
जैसे साम्हरि लोनके ठेरसेल स्यम जोइ ।
लोमे पैसा एक भरि काजु आपनो होइ ॥
हतो जो कछु पक्ष जानिवे जानि चुको तु सोइ ।
और जु शास्त्रनिके मते भूलि न तिन तन जोइ ॥

श्रीगीतार्थं

यज्ञादिक कर्मनि करे देवलोक फलभोग ।
मीमांसा मुक्ति हि कहे दुःखको भयो वियोग ॥

पातञ्जल

जीव ईस न्यारो कहे पा ताजस सब काल ।
दहे कालसनि जोग करि कहे मुक्ति सुख लाल ॥

सांख्य

प्रकृति पुरुष अरु तत्त्वको जाके होई विवेकु ।
यहै मुक्ति सांख्यकहे ज्ञान भए सबु एकु ॥
वैशेषिक अरु न्याय पुनि दोऊ तार्किक जान ।
भेदवाद इनके सदा मुक्ति पदार्थ ज्ञान ॥
आगम तन्त्र पुराण पुनि पञ्चरात्र मत जानि ।
खेचि आपने पंथको डारत जगमें आनि ॥
औरजु शास्त्रनिके मते परे जगतमें जाइ ।
कल्पनि लो छुटे नहीं जन्ममृत्युते भाइ ॥
अपने मत यह वेद शिर सबते उत्तम जान ।
ताही को विश्वास करि भूल और मतिमान ॥
सठ धूरत अरु नास्तिकनि वेद विरोधो और ।
तिनहि न भूलि सुनाईये यहु यतु मति सिरमोर ॥
जिनके उर हरि भक्ति है औ गुरु भक्तिनिदान ।
तिनके आगे पोलिवो यहु उपदेश निधान ॥
वेद सुमतिके वचन को कह्यो सुखदेव विलास ॥

इति श्रीअध्यायप्रकाश समाप्त ।

———*———

श्रीहरि गुरु सच्चिदानन्द सत्यनाम
परब्रह्मणे नमः ।

अथ आलापचारी

दोहा रागिणी सोरठ तीनसौ साठ ताल

एकताला—आदि

धिन् तक् धिकता धिं धिं धाग तुना किटि
कबीर संवत पदरहसे ओर चांमो मगहको योगवन ।
अगहन सुदो एकादशो मिले पवन सो पवन ॥

सब्बत वारे सौ भोर पाचमे थ्यनी कीयो विचार।
काशी माहि प्रकट भयो शब्द कह्यो टक सार ॥
कबीर सबको हिलीये सबसे मिलिये सब
का लीजिए नाम।
हांजी हांजी सबसे किजिये बसिये अपने गांव ॥
शीव वन्दगी कहत है सत्य नाम गुरु कृपाल।
शिषकु आशीष करत हैं गुरु की दया ततकाल ॥
अन्य उपासन राम बिनु अगर सुएसी रीति।
भूसे पर को लीपने अरु वालकोभीति ॥
कबीर हरिका नाम ले तज माया विष बीज।
वारम्बार न पाइये मनुष जन्मकी मौज ॥
कबीर ओठ कण्ठ हाले नहीं नहिं जिभ्या
नाम उचार।
गुप्त वस्तु को जो लखे सोई हंस हमार ॥
कबीर शून्य मण्डलमें घर किया वाजा शब्द रसाल।
रोम रोम दीपक भया प्रकट्या दीनदयाल ॥
कबीर उतते कोउ न आई जाको पूछ धाय।
इत ते सब कोई जातहैं भार लदाय लदाय ॥
कबीर नाना वाणी बोलतो सो कित गयो विलाय।
यह संशय भाजि नही कौन कहे समुझाय ॥
कबीर चलो चलो सब कहत हे मोहि अंसो भोर।
साहबसे परचे नहो बैठोगे केह ठौर ॥
कबीर विरछ जो ठूठे वीजको वीज विरछके माहि।
जीव ज्यों टूट ब्रह्मको ब्रह्मजीके आहि ॥
कबीर रामनामकी लूट है लूट सके तो लूट।
फिर पाछे पछतायोगे जब प्राण जाएंगी छूट ॥

सोरठ

कबीर जैसे माया मनरमे तैसे रामरमाय।
तारा मण्डल छेदिके तब अमरापुर जाय ॥

२

काल करे सो आज कर आजु करे सो अब।
पलमें परलय होयगो बहुर करेगो कब ॥

३

कबीर हरिसंग शीतल तू भया मिटो मोह
तन ताप।
निशि वासर सुखनिधि लई तब अन्तर प्रकट न
आप ॥

४

कबीर पाला हरि नामका अन्तर लेहु लगाय।
रोम रोममे रहा और अमल कहा खाय ॥

५

कबीर आगेके दिन पाछे गए हरि सों कियो न हेत।
अब पछताए होतका चिड़िया चुगगई खेत ॥

६

कबीर आगे आगे दवजरे पीछे हरोया होय।
बलिहारी वा वृक्षको जड़ काटे फल होय ॥

साहाना

सुनतहो गुंगा भया चाखतहो मर जाय।
एक अचंभा देखिये मरा कालको खाय ॥

२

करि स्नान लागो तिसको तिसबिन रह्यो न जाय।
आन मिलावोत सकुति देखे ति सजाय ॥

३

कबीर कबीर क्या करे सोधो आप शरीर।
पांचो इन्द्री वस करो सोई जाप कबीर ॥

सोरठ—चौताला

निरञ्जन निराकार पार ब्रह्म परमेश्वर।
परमात्मा एकहो अनेक होय व्याप रहो सब संसार ॥
अलख ज्योति अविनाशी आदिनाथ अगोचर
अनादि तुही एक करतार ॥
तुही पवन तुही पारती तुही धरनी तुही आकाश
तोही ते सकल व्यवहार ॥
तुही ब्रह्मा तुही विष्णु तुही शिव तुही शक्ति सुरनर
मुनि ज्ञानी ध्यानी तुही सर्वसार ॥

२

अलख लखो नहीं जापरी मनमें कहां कानो वहांवास।
घट घट पूरण व्याप रहोहै जल स्थल भो आकाश ॥
एक अनेक अनेक एक हो न न्यानी नाभीन प्रकाशत ज्यो चन्द्रसूजो प्रतिविम्ब आकाश ॥
कहूं गावत ककतु तहवाई प्रखात काल कालके हातहै मोहि भरसानाहि।
यह तन काचाकंभ है विनसि जाय छिन माहि ॥
घरी पहरको सुध नहीं करे कालका साज।
काल अचानक मारि है ज्यों तीतरको वाज ॥
खोजत खोजत जुग गए भया जो गुण सगुण।
हेरत हेरत ना मिलो न बहारो कवावे चुन ॥
अवर्क विछुरे कब मिलोंगे कहा धरोंगो पराव।
शिरसों पो सनुमुख लरो अवजिन करो कुदाव ॥
जलको शोभा कमल है दलको शोभा कोल।
धनको शोभा धर्म है कुलको शोभा शोल ॥
हद हद करते सब गये वे हद गोय।
वे हदके मे दान मे रहे कबोरा सोय ॥
उठो कबीरा कहा सोवे जागनको कर चोंप।
एकदम हिरे लाल हे गिन गिन हरि को सोप ॥
राम रहस कबीरका पाया दास ज्यो सूर।
बाकोरहा सो तुलसी गायो अब गावे सो कूर ॥
सुआ कबीरा काहेको भजले कृष्ण मुरार।
एकदिन सोना होयगा सोलेवे गोड़ पसार ॥
चलतो चक्की देखके दिया कबीरा रोय।
दोपर भोतर आयके साबित रहान कोय ॥
आशपाश में ओपड़े निपट पोसान होइ।
तसो के लोसे लग रहे वांको पोसे न कोइ ॥
खटो पकड़े जो रहे ताहि न छूवे कोय।
रामनाम के नाम सो भव सो पार जो होय ॥
राम नामको खेतो किया काट लिया सब सूर।
तुलसोदास ले विनोया ज्या प्रकाशे चन्द भोसर ॥
मिश्रोका एक पर्वत छूटो पहुंचो जाय।
चांच भरके बहलोया पर्वत लोया न जाय ॥
कहनी बड़ो वोरको गोरख बड़ो जुग्यान।
रहनी बड़ि जु दतको शङ्कर बड़ा जु ध्यान ॥
चन्द्रग्रहणका शोल गो सब सखो दोनो सोन।
एक सखो लि गदो एसो को सखो कारण कोन ॥
विषावन्तको मोन भई गई ताल ततकाल।
सर सूखे आनन्द भयो कारण कोन जमाल ॥
वायस राह भुजंग हरि लिखत त्रिया ततकाल।
लिखत मिटावत फिरि लिखत कारणकोन जमाल ॥
आजु अमावस सदनिघर शशि भोतर नन्दलाल।
वोचे पड़िवा पर गई कारण कोन जमाल ॥
तनको तनक सराय मो कन हन पायो चेन।
खासन गारा कूचका वाजत हे दिन रेन ॥
बाबुल तब क्योन बरजोया अन लागो मेरे नेह।
रोम रोममें भोजया अब कैसे छुटे सनेह ॥
बाबुल वेद बोलाइया पकर देखाई वाह।
भूला वेद न जानता कलक कलेजे माह ॥
वे गये बाबुल वे गए नदी किनार किनार।
आपतो पार उतरि गए हमहि छाड़ि मझधार ॥
बाबुल गांउ नदी जोए समझ समझके सुधार।
भोर गाठ सब खुलत जहां लग गई लगन अपार ॥
प्रेम गांठ सरके नहीं सरके शिरके साथ।
शिर तो विकारे नाम को धरे शिरे ले हाथ ॥
शिरके हरिके मिल गया चरणकमलसे आन।
शिरके साटे हर मिले तोर वस्ता जान ॥
गया तो घरहे प्रेम का भोर खाला धरनाह।
सोक उतारे भूधये जब वेठो घर माह ॥
जाओ वेदध आपने हमरो आह न लेह।
मेदाढो दुःख बरहको तु क्यां दारु देह ॥
मन सुरासूलो चढ़ो यह विधनो सोस।
प्रेम सुखा लो जानके कोई मत करयेरो रोस ॥
करम लिखो सोई लिखि घड़ो मोन करतार।

हस हस जितना देत हे साजन ऊपर वार ॥
जात जातको पाहुनो जात जात पै जाय ।
साहब जात अजात तरे सब घरत प्रा समाय ॥
काम विद्या पारस पवर अषे दुख किएवार ।
तुलसी हरिकी भक्ति बिन गृह तब भले उजार ॥

दोहा

आयको देखकि लालोता दे दरठो लवजाय ।
हसन कुड़ोया करण सु जागाकि दरा कलन
ले आए ॥

२

चिकड़ अग लगी भरड़ाठे सानु विरहे न फुकज
लाए ।
कका लेया रदो खारसाले पुष ताया रगवाए ॥
नाम सुनीया रन चूड़ीया नालि बाहुयार ।
किन सो लावो दोस्तो सब जग चल नेहार ॥

तिताल।

घायल घूमि दर खेड़लो छुट पङ्क दे नेन ।
बरछी लागी प्रेमकी जब निकसे तब चेन ॥
प्रेम नगरमें आयके उलटी देखो जाल ।
घायल चुन चुन मारिके खूनो फिरे खुशाल ॥
क्याशा याहो क्या लेखन नहीं क्या नहीं
लिख ले हार ।
क्या हमसे अवगुन भया क्या मन दिए विसार ॥
कर कांपि लेखनी डिगे अङ्ग अङ्ग अकुलाय ।
सुधिआवे छाती फटे पाती लिखी न जाय ॥
पन घटका गजबो खड़ो पियाकोन ।
जब पीय न छुटत छुटत दोनो छुटे उत पटका
इत प्राण ॥
लाल सुपारी प्रेमरस तन चूना मन प्राण ।
तुम बिन धीन जावने अब लागी मही जान ॥
पृथिवी एक डग करे दरोया करे छाड़े हाथ ।
पर्वत काड़े एचके सोई गए कालके साथ ॥
मेघ उड़ावनहार जी धरा करे कर बीच ।
सो भट खाए मशक सिस काम कट लता नीच ॥
मेरी मेरी कर सबही गए मिटो नही कबु भाश ।
काम क्रोध मद लोभ वश फिर फिर कानटि पाश ॥

कबीर शब्दसार लभ—एकताला

तुम तो भले विराजो जी ।
ओड़ोसा जगन्नाथपुरीमें भले विराजो जी ॥
आप अछे विराजो जी ।
बलभद्र जुटे भैया ठाकुर भले विराजो जी ॥
कबकी छोड़ो मथुरानगरी कबकी छोड़ो काशी ।
झाड़खण्ड में जाय विराजे वृन्दावनके वासी ॥
(ठाकुर बलभद्र)
द्वापरमें छोड़ो मथुरा नगोचे ता छोड़ो काशी ।
द्वारकापुरीमें ओपाश धारे श्रीगोकुलके वासी ॥
(ठाकुर बलभद्र)
अठा दे नाले चोको लाग जो ब्री जानन पावे ।
गुदड़ीयाका झाट लागि मागानट वजावे ॥
वङ्गालिन बेटी परम सुन्दरी उसका नेन सलोना ।
गोविन्दकी गति गोविन्द जाने करे वङ्गालिन टोना ॥
सोलह गजकी सारी पहरे जिसकी लाल किनारी ।
ससुर जेठकी लाज न करे आधोटाङ्ग उघारो ॥
ओड़िया मांगे खीचड़ी बंगाली मांगे भात ।
साध मांगे दरशन महाप्रसाद ॥
तुम तो भले विराजो जी ।
गली गली में नारीयर फेलो घर घर ठाकुरबारो ।
मारकण्डे वट कृष्ण रोहनो गांसि ध्रुववारो ॥
नीलचक्र पर ध्वजा विराजे मस्तक सोहे होरा ।
ठाकुर आगे दासो नाचे गावे दास कबोरा ॥

राग—भैरव

आपही धरमधारी ठाकुर आपही खेल खेलारो है ।
तबु तो असमानाए जमो दुलो चाड़ारो है ॥
चांद सूरय दोउ मसलत बनाए तेरो कुदरत
न्यारो है ॥

आसावरी

राम नामकी चोपड़ माड़ो पाला जुग संसारो है।
जाको गोटीपको घर आए कोई सुघर खेलारो है॥

२

हम जीते तो पीको पावे पी जीते हम ला राहै।
सात पांचको कचो पचि सोनेहु लोले डारो है॥
द्वादश वाट आटारे राहे पड़ा मोरचा लेहे भारो है।
छके पञ्जे छूट जाय तबजब नही रहे संभारो है॥
जाके उपर साहब राजी जिसका जगत भिखारो है॥

आसावरी सोरठ—पक्की

हम नहे इस्क मस्ताना हमन कोंहे गदारो क्या।
रहे अजादया जग सोह ननद दुनोया से यारो क्या॥
अहो हो हो अहा हा हा अहो हो हो अहा हा हा।
खलक सब नाम अपने सो बहुतके शिर पटक तोहे॥
हम् न गुरु ज्ञान आमल हे हम् नको नामदारो क्या॥
(अहो…)
जा जन विछुरे पीयासे सो भटकते दर विदर फिरते।
हामारा या रह हममें हमन कों इन्तजारो क्या॥
(अहो…)
न पल विछुरे पिया हमसे न विछुरे हम पिया रे।
सजन से प्रोत लागी है उनो कों बेकरारो क्या॥
(अहो…)
कबीरा साह है वांका रहे सत शब्दका वाका सो
चालना राहना जु कहे हम न शिर बोझभारो क्या॥

रेखता—गान्धार

समझ मन सोच अब कीना गुरूसें पूछ नहिं लीना।
कहां से रङ्ग यह आया न कोई मोहि बतलाया॥
है कोई गांवका वासी देखावो ख्याल परकाशी॥
बतावे गएबका घेरा मिटावे पलकका फेरा॥
सफत रग किन कहो आवे बड़े कोई भागसे पावे॥
सुरति यह रङ्गको प्यारी पपीहो पी पिउ पुकारी।
न आवे हाथ यह करनी शिघारो जायके शरनी॥
पिया जिन प्रेमका पानी सन्तजन लेहि पहचानी।
कबहि यह मोहि न भूले विरह बेझोक ज्यों झूले॥
चरण कबीर संतके धोवे सदा सुख अमृत जा पोवे।
यह धर्मदास बर मांगा सदा हरिचरणों में पागा॥

सोरठ—यत्

सखी मोहि वाही देशको जाना जाको नाम न जान्
ठिकाना।
जहां टूट जाय सब फंदा जादुनयां नहीं कछु धन्धा।
जहां उगे नहि शशिभाना॥
जहां पीर पैगम्बर न देवा जहां रिषि मुनि
असुर न भेवा।
जहां कुफर इसलामसमाना॥
जहां जाना न कोई आवे जहां किरतन कोई गावे।
जहां जाय कर फिर न आना॥
जहां बपुराअन बमना जहां कुराम किताब न मुलना।
जहां पूजा निमाज न ध्याना॥
जहां अन्ध नहिं उजियारा जहां भूख न प्यास
जहारा हां पूजन आदि जमाना॥

२

जहां आग न पवन नहिं पानी जहां मरत
जीव नहिं जानी।
जहां जाय चढ़ परवाना॥
जहां न कसर गणाहो माना।
जहां सोउ पीया गलबाही तहां दूसरा नहीं
तहो वाही जहां प्रेम सोहाग काना॥

३

जहां नाद वेदउ भावा जहां सफरी सगरो माया
जहां पीया रच्यो मोरा गोना॥
जहां लागी प्रेमको बाड़ी जहां फूल गुलाबन बाड़ी॥
जहां फूलो है मरुवा दौना॥
जहां रङ्ग रूप नहि रेखा बिन नैन न साहब देखा।
जहां पायो जीव अखाना॥
जहां जात न पांत विवेका।
सब घटमें एकहो लेखा।

जहां सब जग एकहि ठामा ॥
ब्रह्म सागर रङ्ग उजागर सच्चिदानन्द अमृत आगर
आत्मानन्द रङ्ग रङ्गाना।
गो हंसा वीरो ने निवासा हो अमरपुर खासा ॥
आवे नही दिन तहा आवे नही राति।
जागत पुरुष वसत बहु भाति हो ॥
लगी नही भूख तहां लगी नहि प्यासा।
अमृत भोजन करो सुखवासा ॥
जात नहि पांत तहां वरण विवेका एकहि रूप
सकल घट देखा।
आंख नही कान जहां रूप नरखा विन नेन तहां
साहब देखा ॥
नरनार नहि पशुपक्षी न सुरमुनी नाग न पेखा।
नही श्वेत पित रङ्गराति नही काहुके वे साथे ॥
वह आपही अलख अलवेला कहि गुरु ताके
नहीं चेला।
सागर रूप उजागर एका नाही दूसर आप अलेखा ॥

कनाड़ी—तिताला

साचे मनके मीता प्रभु तुम साचें।
कब शिवरी काशी कर आई कब पढ़ आई गीता।
जूठाबेर विश्वम्भर चाखीघरीन पलछिन वीता ॥
यज्ञ दान कब कियो मो धीया तीरथ जल कद पीता।
बांह पकड़ घर लीयो राम के मन ही के परतीता ॥
कव करमा वाई भीर सुमरके चोका संयम गीता।
हो नन्दलाल गोपालके नित उठ खिचड़ी दीता ॥
साच समान और जग नाही जुग जुग संत कहीता।
कहे कबीर वसो घट जाके साच सकल जगजीता ॥

२

बोलो राम पिंजरके सुआ।
सोच विचार घटही में देखो धंधा करत
सकल जगमुआ।
बोलो काल मञ्जारी ले आयगी हार चले जैसे
ज्वारी का जुआ।
अन्तसमय कोउ काम न आवे मरे कहत कुआ कुआ ॥
स्वारथके सब लोग बटाऊ धनसम्पत मे डुवा।
कहे कबीर सुनो भाई साधोसन्तनके मुख अमृत
रस चूवा ॥

खम्भायच

झूठा जगत पसारो जो राम देख लोभाना।
जो आया सो सबही जायगो क्या राजा क्या राणा ॥
(जी राम)
दीपक देखके पतङ्ग लुभाना जल बलखाक समाना
(जी राम दे)
काम क्रोध मद लोभ मोह वस निश दिन यहि
मनमाना (जी राम)
यह संसार मृगतिसना है नाहक भरम भुलाना।
कहे कबीर सुनो भाई साधो हरिके चरण चित
लाना (जी राम)

कानड़ा—तिताला

कहा मागु कछु थिर न रहाई।
यह जग देखत चलोहे भाई ॥
एक लख पूत सवा लख नाती रावण घर दीया
न वाती।
लङ्का सा कोट समुद्रसी खाई ता रावनकी खबर
न पाई ॥
कहा मागु जो आया सो सबही जायगी राजा
रङ्क अमीर वादसाई ॥
कहे कबीर रहे नाम हरिका विन और न कोी है
सहाई ॥

कलिङ्ग—तिताला

कोइ सुनताहै गुरुज्ञानी गगनमें।
अवाज होती झानो पहले आए नाद विन्दसे पाछे
जमाए पानी घट घट पूरन पूर रहाहै अलख
पुरुष निरवानी ॥
वहांसे आए पटालिखाय तृष्णा नाहि बुझानी।
अमृत छोड़ विषे रस पीवे उलटे फास फसानी ॥
ज्यो कछु देखा नजरही पेखा अजर अमर निशानी।

कहै कबीर सुनो भाइ साधो यह अगम निगमकी
बानी ॥

भाटियाल—तिताला

चरखा देखो बनाय वढैया मोरो मितवारी।
पानीसे पैदा कीयो रे नगर बसाए जाय।
एक अचंभा अचजो म देखो सखी री बेटा
बाप ले जाय ॥
बाबारे एक व्याह कराय दे अच्छा वर खोज ल्याय।
ज्यो खोजे तब वर नाही मिले हमरा तुमरा व्याय॥
सासुरे समुर रुसे व्याह खसम ले जाय।
एक तो वढैया ना रुसे जिन चरखा दए बनाय ॥
ज्यो यह चरखा लखे पड़ेगा आवा गमन मिट जाय।
कहै कबीर सुनो भाइ साधो चरखा लख्यो न जाय ॥

आशावरी—तिताला

ग्यानकी आंधी आई साधो।
सबही उड़ानें भरम कीटटी रहत न माया बाधो ॥
टो चिंतके टोउ खें भ गिराए मोह बलि ड़ाटाए गई।
तस्रा छान परी घर दुरमत हाड़ा फढ़ा अमृत
वरषा मुक्ति जल बरषत पीए हरिरस अधाई ॥
कहत कबीर सुनो भाइ साधो ध्यानमान दोउ आई॥

२

एरी वाको भेद न जानें कोई।
हाथीके भीतर बहल चलत है हलमें खेती बोई ॥
हाथीनें अकुश वस कर लीनो शिर मारत है भोई।
जिन पायो तिन नींदन आई भूखो परके सोई ॥
बहरो सुनें दूरकी बातें अंधरे माला पोई।
दुखिया उमग उमग गुण गावे सुखियागए सबरोई।
कहत कबीर सुनो भाइ साधो सबही सयामप खोई ॥

भाटियाल—ति.ताला

हमारे गुरु भूले कुराह बतावो सतगुरु तीन
छन्द ले गावे।
छपरेकी मरिबो अङ्गलमेकी बकरो गड़रीयारो
बकरी वो वो बकरि लकरि मकरि ॥

वो जुलाहाकेरा ताना तंबोलो केरा पान नानवाई
कारा नानबो नान पानातामा।
बमीयाके राहि गाभेसो केरा सिङ्गा महादेवका
सिगावो सिगां सिङ्गाहि गा ॥
कहत कबीर सुनो भाइ साधो या सन्तनका मेला।
यह बातका मरम जो जाने वहे गुरु हम चेला ॥

कलिङ्ग

कोन वध प्रीतम पाइये।
गुरु राहि लगावो चंचलताइ छोड़ देइ थिरताई
ले आवो ॥
कलह कलपना मेटके चरणन चित लावो।
अरध उरध बिच वागहे जहां सुरत रमावो ॥
अष्टसिद्ध नवनिधमें तनहु न विलसावो।
इड़ा पिङ्गला सुषुमना जहां ग्यान दृष्टावो।
कहे कबीर गगनमण्डलपे मोहे भुला झुलावो ॥

कलिङ्ग—तिताला

बङ्गला खूब बना हरवेश जामे नारायण बोले बोलेरे
साधो परमेश्वर बोले बङ्गला अजब बनाहरवेश
जामे ना।
इस बङ्गलाके दश दरवाजा बीच पवनके खंभा।
आवत जात कोई न देखा यह भा बड़ा अचम्भा ॥
पांच तत्त्वकी भीत बनाई तीन गुणोके गारा।
भरम भमरकी छान छवाई चिङ्क न चेतनहारा ॥
पांच पचीस पातुरो नाचे मनुवा ताल बजावे।
कहे कबीर सुनो भाइ साधो बूझे सो फल पावे ॥

२

हम न मरी मरीहै संसारा।
हर मर होतो हमहु मरते हरण मरे तो हम काहे
मरे विचार ॥
हर हममे हम हरमे निशदिन अलख निरख
महे निराकार।
हरहि हम हम हरही दोयत सब जगव्याप रहो
करतार ॥

मरेंगे नहीं रहेंगे सदाही गुरु अमृतवचन
पीवे आधार।
कहे कबीर मरेंगे सोई जा घटमें नाहीं हरि उचार॥

३

नर जाने अमर मोरी काया एक कुआ
पाचों पनिहारी।
पांचो सोचे अपनो वारो औघट घाटकुअना
टेठ कुमलाय गई वो पांचो क्यारी॥
सहस पाखरी एक शरीर तनमन भजले दास कबीर
अपने गुरुकी हो बलिहारी॥

४

जमसे नाही डर आवे साहब याद रखु गावे।
सुरत निरत काखो दुला मेरे दिल अईर दोड़ाउ।
पुरुष प्रताप हाथ लेकर सनमुख लड़के आउ॥
ओर सवक सवाके आकरमे हजूरी पाजो।
काम क्रोधको गरदन मार साहब राखु राजो॥
कहे कबीर सुनो भाइ साधो विरला जाने कोई
जोरा परका हीरा साध सज्जनको मोस निवाउ॥

सिन्धु—तिताला

क्यारे सोवे तू मोहनिद्रामें जागत नाहि कूच
नियराना।
पहले नकारो अनहदवाजे दूजे बैन सुने नहि काना॥
तीजेनैन दृष्ट नहो आवे आइ पहुंचा परवाना।
हाथी छूटे घोड़ा छूटे छुट गए यह महल खजाना॥
भाई बन्धु पिता सब छूटे छूट गए यह लोक जहाना।
परी है पुकार नगरकसबेमे रे यत लोग सबे अकुलाना॥
पूरण चन्द्रको भई है तयारी छिनमें दीपक
भवन बुझाना॥
रक्षा कौन करे नगरीके मालक मुखिया पेली पुराना।
कहे कबीर यही गत सबको भज मन पूरण
ब्रह्म अमाना॥

कलिङ्ग—तिताला

राम रस ऐसा हैरे भाई ज्यो पीवेसो अमर होय जाई।
आगे आगे दव जरे रे पोछे हरीया होय।
बलिहारी व वृक्षको जो जड़ काटे फल होय॥
कुम्भ घटा विच जल बरषत है सूल विच
कमलत होय।
ज्ञान कथा विच मन्द रहत है विनगुरु ज्ञान न
बूझे कोय॥
मैं घर जारुं आपनोरे लीए मुरेड़ा हाथ।
दूजे जारुं तिस केरे जो पगे हमारे साथ॥

२

घर जारे घर उवरेरे घर राखे घर जाय।
एक अचम्भो ए सुनो रे मड़ा कालकू खाय॥
नाम रसायन जो पीवे जाके घर खरसो सन होय।
जखलमें जिन शिर दियोरे बहुर जनम नहिं होय॥
ज्यो रस पीयो नाम देवरे और पीयारे दास।
पीवत कविरा ना छक्योरे और पीवनको आस॥
ध्रुव पीयो प्रह्लाद पीयो और विभीषण दास।
हनूमान नारद पियो औ शुकमुनि वेदव्यास॥
महादेव ब्रह्मा पियो सनकादिक आस।
रुक्माङ्गद अम्बरीष पीयो सागर भयो वैकुण्ठे वास॥

भटीयाल—तिताला

तेरी बनत बनत बन जाई हरि सों लागा
रहु रे भाई।
जा तन लगी सोई तन जाने दूजा क्या जानेरे भाई॥
ऐसो ध्यान धरो घर भीतर आवा गमन मिटाई।
वंकालागी वंकालागी लागी सदन कसाई॥
धना भगत को ऐसो लागी तुंवामें गउनि पाई।
सेनानो केवट लागी लागी मीराबाई॥
बलख बुखारे ऐसो लागी छाड़ि चले बादसाई।
ध्रुव लागी प्रह्लादे लागी नारद वीणा बजाई॥
शिव सनकादिक लागि रहत है कबहूं न पीवत
अघाई।
इस नगरी में घायल घुमड़े घावन विसरे भाई॥
सुरत निरतको कमठा कीनो अन्दर पड़ो लड़ाई।
जलदी जलदी बजे नगारा फौज चले हरसाई॥

सतगुरु बैठा खेत बतावे सूरकरे लराई।
यमराज सों युद्ध मचावे वीर होय सो जाई।
कहे कबीर सुनो भाइ साधो हारो तो राम दुहाई॥

बहोरी—तिताला

होय पीय पीय धुन होय अवरे नहोय रमण लागारे।
अवरेण हर मन लागी ला पी पीया कहे भई वावरीरे।
नैहर डाइघाग अव नयन हर मन लागे पीया
सबहोके होय जो चुक चाहु सासुरे॥
पीय सुरत सनेह सुख ठाटड़ो हो रहीरे जल भल
भई खाक जरत आगन असमन्तररे।
दास कबीरके मङ्गलारे जाने विरला कोय जाने सो
पहचाने रे।
तेरा कबीर उहा तनहो जाव कोई एसा होय
कोउ एसा होय अवरेने॥

कलिङ्ग—तिताला

क्या नयना झमकावे ठगनी क्या नयना झमकावे रे।
रूपा पहरके उपा देखावे सोना पहरके रिझावे॥
गले बांधके तुलसीकी माला तीन लोक भरमावे।
कद्दु काठ मृदङ्ग याख्तीबु काट मजीरा यद चुवाना
यत भेग पद्मनी मैड़क ताल बजावे॥
कमर बांधके गदहा नाचे ऊट विष्णुपद गावे।
गदहाके शिर मोर बांधके नाचे बालम खीराट॥
विरछ चढ़ी मछली फल तोड़े मैड़क चुन चुन खावे
भेश पदमनी मंगल गावे उठहो रोझ रीझावे।
धरती बरषे अवर धावे अलख हि लख के जगावे॥
रूप रेष रङ्ग नहि जाके सो नैनन दरसावे।
कहे कबीर सुनो भाइ साधो यहो अचम्भा पावे॥

२

राम नाम कहोरे मन होए गरभवास भक्तिके
कबुली अब क्यासो घत विकल शरीरा।
आधो धरतीने पुआखेपाइ आधोमे रह गई पीरा॥
कहे कबीर सुनो भाइ साधो हरिके चरण मति धीरा।

२

लभजो न सगर वाइमां पनीयाको गईलो त्योरे।
सगर दुलभ भई लोरे को हाथ छुट धोईए छुटकोई
नहो वाते पुछे सुन सखीयारे॥
कजरा दई जरा बोलेरे विरहो।
सात पांच सखी मिल चलली महातम सुन
सखीयारे॥
उहो रे नैहरवा पीतम डोलेरेको।
दासरे कबीर एक निरगुण गावे लगाए सुनावन
कवहूं न यह जाग आय वरेको॥

विहाग—तिताला

अस कोई नगर करे कोट बलीया मास विछायगी
धार पवरीया।
मूस भए नाव विलारो खेवे नइया॥
दादूर सोवे सरपर खवरिया।
सुतल कुकरा कुनवट भूखे॥
साहव टनघर चोरवाहो मूसे उलटि सिंह मायाल
स भजे।
कबीराके पद कोई विरला बूझे॥

विहारी—यत्

देखहु रे गुरुग मस्ताना।
इङ्गला पिङ्गला चमर डुलावे निशदिन सुख मन
करता निशाना।
पश्चिम दिशाके खोल किवड़ोया गगन मन्दिर सहज
चलि जाना॥
गुरु गोविन्दमें ध्यान लगीहे मगन होय पलटे बोराना।
सुरत लगाय रहो घट भीतर छिनमे कबीर बेड़ा
पार लगाना॥

कलिङ्ग—तिताला

ध्यान धर हरिजना रे जासोहंसा निर्मल होय।
दिल दरियाव सुरत सेना ले मैल जो डारो धोय।
कोई हरि जन उवरे रे सब जग लिया है मोय॥
असंख्य जनमें जोत विराजे रहो नाथ घनघोर।

चांद सुरजका मारग पाया सुख मन दोना जोर ॥
आत्मसे परमात्म चिन्हा रही वासना मोरी ।
डाल रात चील पेठ मूलमे जहां देखा तुही चोरो
स आदि अन्त जग तुही
रमरह्यो घट घटमे वास तुम विन और काहु
नहीं देखो कहै कबीर दास ।
कहे कबीर सुनो भाइ साधो विरला जाने सोइ ।
गुरु प्रताप साधको सङ्गत सतको खेती बोइ ॥

धनाश्री—तिताला

वाबुल मोली हो हमारे मन कुड़ कु व्याह दई ।
कुड़ बराती कुड़ परसो कुड़ कुड़के भाई ॥
कुड़े कुड़ बिछावन आए कुड़ना मिले सगाई ।
भड़हा जर गए मांड़ो जर दुलहन भइ ॥
अहवातो गांवके लोग देखन सब आए ।
नाचत चलत वराती कहे कबीर सुनो भाइ साधो
यह पद है निरवानी ।
जो यह पदको निन्दा करे ताको नरक निशानी ॥

कलिङ्ग

रस गया लागो जंगल कोना वासा हो ।
काया नगरके दश दरवाजा पांच प्रधान छठो
मन राजा ॥
हाड़ जरे जैसे जङ्गल जड़ाके सजले जैसे धामको
फला जलवई ।
भूपड़ी उड़न लागी खाक कहा गए हंस
कहां रूप राख ॥
कहे कबीर सुनो मेरे भाई हमको दो ताकों
राम दुहाई ।

२

साधो रामनाम जपलें चित मो धरे मन हरी हरी
गुण भरे भई ॥
ढूंढ़न निकसो कवि राइका माई मोरे पुतवा पर
किन जादु करे ।
छोड़ घर मेरा वे कबीराकि जाइ परे
टइ मारे बैठा घर सब खाई हरे ॥
कौन सुदोया तोहि भरम भरमायो ठग ज्यों ठगो
तोहे भरम भरमाई ।
कबीरा का मरम न जाने कोई विना हरि भजन
मुक्ति होई ॥

श्रीकृष्णानन्द व्यासदेव रागसागरोद्भव सङ्गीत-
रागकल्पद्रुमे ज्ञानतत्त्वसागर ग्रन्थ आरम्भ ।

प्रणम्य परमात्मानं सच्चिदानन्दमीश्वरम् ।
ज्ञानतत्त्वसागरोऽयं क्रियते रागसागरः ॥

अथ सुन्दरदासकृत कवितादि छन्द ।

भैरव—चौताला इन्दवछन्द

मौज करी गुरुदेव दया करि शब्द सुनाय कह्यो
हरि मेरो ।
ज्यों रविके प्रकटे निशि जात सुदूरि कियो
भ्रम भानि अंधेरो ॥
कायक वाचक मानसहु करि कै गुरुदेव हि
वन्दन मेरो ।
सुन्दरदास कहै कर जोरि जु दादूदयाल को हूं
नित चेरो ॥

२

पूर्णब्रह्म विचार निरंतर कामन क्रोधन
लोभन मो है ।
श्रोत्र तुचा रसना अरु घ्राण सुदेखि कछू काहु
नयनन जो है ॥
ज्ञानस्वरूप अनूप निरूपण जासु गिरा सुनि
मो मन मो है ।
सुन्दरदास कहै कर जोरि जु दादूदयाल हि
मो मन मो है ॥

३

धीरजवन्त अड़िमा जितेन्द्रिय निर्मल ज्ञान
गह्यो दृढ़ आदू।
शील सन्तोष क्षमा जिनके घट लागि रह्योसु
अनाहद नादू॥
भेषन पक्ष निरन्तर लक्ष जु और नहीं कछु
वादविवादू।
ये सब लक्षण हैं जिन माहि सु सुन्दरके उर है
गुरु दादू॥

४

भौ जल मैं बहि जात उते जिन काटि लिये अपने
करि आदू।
और सन्देह मिटाइ दियो सब काननि टेरि
सुनाइ कै नादू॥
पूर्ण ब्रह्म प्रकाश कियौ पुनि छुटि गयो यह
वाद विवादू।
ऐसी कृपा जु करी हम उपर सुन्दरके उर है
गुरु दादू॥

५

कोउक गोरस को गुरु थापत कोउक दत्त
दिगम्बर आदू।
कोउक कंथ कोउक भर थर कोउक धिर को
राखत नादू॥
कोउ कहै हरिदास हमारे जु यों करि ठानत
वाद विवादू।
और तौ सन्त सबै सिर उपर सुन्दरके उर हैं
गुरु दादू॥

विभास—चौताला

कोउ विभूति जटानखधारी कहै यह भेष
हमारो ही आदू।
कोउक कान फराई फिरे पुनि कोउक सिङ्गी
बजावत नादू॥
कोउक केश लुचाइ करै ब्रत कोउक जङ्गम
कै शिव वादू।
ये सब भुलि परे जितहीतित सुन्दरके उर हैं
गुरु दादू॥

२

जोगी कहै गुरु जैनि कहै गुरु बोधि कहै गुरु
जङ्गम मानै।
भक्त कहै गुरु सन्यासी कहै बनवासी कहै गुरु
और बखानै॥
शेष कहै गुरु सोफि कहै गुरु याहिते सुन्दर
होत हरानै।
वाउ कहै गुरु वाहु कहै गुरु वहै गुरु सोई
सबै भ्रम मानै॥

३

सो गुरुदेवनिपै न छिपै कछु सत्वर जो तम ताप
निवारो।
इन्द्रिय देह मृषा करि जानत शीतलता समता
उर धारो॥
व्यापक ब्रह्म विचार अखण्डित द्वैत उपाधि सबै
तिन टारो।
शब्द सुनाई सन्देह मिटावत सुन्दर वा गुरुको
बलिहारो॥

४

है गुरु को उरध्यान हमारे।
पूरण ब्रह्म बताइ दियो जिन एक अखण्डित
व्यापक सारे।
रागरु दोष करै अब कौन सौं जोई है मूल सो
वंश कुठारे॥
संशय शोक मिट्यो मनको सब तत्व विचार
कह्यो निरधारे।
सुन्दर शुद्ध किये मल धोइ जु है गुरु को उर
ध्यान हमारे॥

५

ज्यों कपड़ा दरजी गहि ब्योंतत काठहो को
बढ़ई कसि आनै।

कञ्चन कौं जु सुनार कसै पुनि लोह कौ घाटल-
हारहि जानै ॥
पाहन कौं कसि लेत सिलावट चाक कुम्हार कै
हाथ निपानै ।
तैसे हो शिष्य कसै गुरुदेव जु सुन्दर दास
तबै मन मानै ॥

ललित—तिताला

ऐसे गुरुदेवको हमारे जु प्रणाम है।
शत्रु है न मित्र कोउ जाके सब है समान देह को
ममता छाड़े आत्माहो राम है ॥
औरहु उपाधि जाके कबहू न देखियत सुखके
समुद्र मै रहत आठो जाम है ॥
रिद्धि और सिद्धि जा के हाथ जोरि आगे
खड़ो सुन्दर कहत ताके सबही गुलाम है ॥
अधिक प्रशंसा हम कैसे करि कहि सकैं ऐसे
गुरुदेव को हमारे जु प्रणाम है ॥

चौताला

ज्ञानको प्रकाश जाके अन्धकार भयो नाश देह
अभिमान जिन त्यजो जानि सारधो ।
सोई सुखसागर वैराग जो जाके दैन सुनत
बिलात है मनको विकार धो ॥
अगम अगाध अति कोउनहिं जानै गति आत्माको
अनुभव अधिक अपारधो ।
ऐसो गुरुदेव वन्दनीक तिहुं लोक माहि सुन्दर
विराजमान शोभित उदारधो ॥

को

सोई गुरुदेव जाके दूसरी न बात है।
काहू सौं न रोष तोष काहू सौं न राग दोष काहू
सौं न वैरभाव काहूको न घात है।
काहू सो न बकवाद काहू सौं है न विषाद काहू
सौं न सङ्ग न कोउ पक्षपात है ॥
काहूसो न दुष्ट बैन काहूसो न लेन देन ब्रह्मको
विचार कछु और न सुहात है।

सुन्दर कहत सोई ईसनको महाईस सोई गुरुदेव
जाके दूसरो न बात है ॥

चौताला

शिष पलटै सो सत गुरु जानिये।
लोहे कौं जु पारस पखान हू पलट लेत कञ्चन
छुवत होत जगत मै प्रमाणिये।
द्रुमको जो चंदनहु पलटै लगाइ वास आपके
समान ताके शीतलता आनिये ॥
कीट कौ जो भृंगहुं पलटि के करत भृङ्ग सोई
उड़ि जाइ ताको अचरज मानिये।
सुन्दर कहत यह सगरो प्रसिद्ध बात सद्य शिष
पलटै सो सत गुरु जानिये ॥

२

गुरु विन ज्ञान नाहीं गुरु विन ध्यान नाहीं गुरु
विन आत्म विचार न लहत है।
गुरु विन प्रेम नाहिं गुरु विन प्रीति नाहिं गुरु विन
शीलहु सन्तोष न गहत है॥
गुरु विन प्यास नाहिं बुद्धिको प्रकाश नाहिं
भ्रमहु को नाश नाहिं संशयहि रहत है।
गुरु विन बाढ़ नाहिं कोड़ा विन हाट नाहिं सुन्दर
प्रकट लोक वेद यों कहत है।

अलैया वेलावल—चौताला

पढ़े के न वैठे पास अक्षर न वाचि सके विनहो
पढ़े से कैसे आवत है फारसी ।
जौहरीके मिले विनु पारख न जानै कोउ हाथ
नग लिये फिरै संशय नहि टारसी ॥
वैदहु मिल्यो न कोउ बूटी की बताई देत भेद
विनु पाये वाके औषध है छारसो।
सुन्दर कहत मूरख रंचक न देखो जाइ गुरु विन
ज्ञान जौ अंधेरे माहि आरसी ॥

चौताला

गुरु के प्रसाद बुद्धि उत्तम दशा को ग्रहे गुरुको
प्रसाद भवदुःख विसराइये।

गुरुके प्रसाद प्रेमप्रीतिहु अधिक बाढ़े गुरुके प्रसाद
रामनाम गुण गाइये ॥
गुरुके प्रसाद सब योगकी जुगति जाने गुरुके प्रसाद
शून्य मैं समाधि लाइये ।
सुन्दर कहत गुरुदेव जो कृपाल होंहि तिनके प्रसाद
तत्त्वज्ञान पुनि पाइये ॥

देवगिरि—चौताला

जग मैं न कोउ हितकारी गुरुदेव सो ।
बूड़त भव सागर मैं आइ के बंधावै धीर पारउ
लंघाय देत नामकी जी खेव सो ॥
परउपकारी सब जीवनके सारे काम कबहु न आवै
जाके गुननिकी छेव सो ।
बैनउ सुनाइ भय भ्रम सब दूरि करे सुन्दर दिखाइ
देत अलख अभेव सो
औरउ सनेही हमनीके करि देखे सोधि जगमैं
न कोउ हितकारी गुरुदेव सो ॥

चौताल

गुरु तात गुरु मात गुरु बन्धु निज गात गुरुदेव
नखसिख सकल सम्हार्यो है ।
गुरु दिये दिव्य नयन गुरु दिये मुखबन गुरुदेव
श्रवण देशवद उचार्यो है ॥
गुरु दिये हाथ पाव गुरु दिये सीसभाव गुरुदेव
पिण्डमाहि प्राण आइ डार्यो है ।
सुन्दर कहत गुरुदेव जु कृपाल हो हि फेरि घा
घटि करि मोहि निस्तार्यो है ॥

२

कोउ देत पुत्रधन कोउ देत बलधन कोउ देत
राजसाज देवरिषि सुन्यो है ।
कोउ देत यशमान कोउ देत रिसमान कोउ देत
विद्यादान जगत मैं गुण्यो है ॥
कोउ देत रिद्धि सिद्धि कोउ देत नवनिधि कोउ
देत और कछू ता तें सीस धुन्यो है ।
सुन्दर कहत एक दियो जिन रामनाम गुरुसो
उदार कोउ देख्यो है न सुन्यो है ॥

ककुभ—चौताला

गुरुके अनन्त गुण का पै कहे जात हैं ।
भूमिहुको रेणु कौतो संख्या कोउ कहत है
भारहु अठारह द्रुम तिनके जो पात हैं ॥
मेघनको संख्या सोउ ऋषिन कह्यो विचारि
बुन्दनकी संख्या तेउ आइके बिलात हैं ।
तारनको संख्या सोउ कह्यो है पुराण माहि
रोमनिको संख्या पुनि तितनेक गात हैं ।
सुन्दर जहां लौ जत सबहो को आवै अन्त गुरुके
अनन्त गुण का पै कहे जात हैं ॥

२

गुरुको तौ महिमा अधिक है गोविन्द तें ।
गोविन्दके किये जीव जात है रसातलको गुरु
उपदेशे सो तो छूटे यमफन्द तें ।
गोविन्दके किये जीव बस परे कर्मनिके गुरुके
निवाजे सोतो फिरत सुछन्द तें ॥
गोविन्दके किये जीव बूड़त भवसागर मे सुन्दर
कहत गुरु काढ़े दुःखदन्द तें ।
औरउ कहालौं कछु मुख तें कहूं बनाइ गुरुको
तौ महिमा अधिक है गोविन्द तें ॥

३

ऐसो कौन भेट गुरुदेव आगें राखिये ।
चिन्तामणि पारस कल्पतरु कामधेनु औरहु
अनेक निधि वारि वारि नाखिये ।
जोई कछू देखिये सो सकल विनाशवन्त बुद्धि मैं
विचार करि बहु अभिलाखिये ॥
तातें अब मन वच कर्म्म करि करजोरि सुन्दर कहत
सोस मेलि दोन भाखिये ।
बहुत प्रकार तीनो लोक सब सोधे हम ऐसो
कौन भेट गुरुदेव आगे राखिये ॥

मनहरनछन्द

खट—तिताला

कान गरातें कहा कान ऐसे होत मूढ़ मनके गराते
कहां नैन एसे पाइ है ।

नासिका गरातें कहां नासिका सुगन्ध लेत मुखके
गरातें कहां मुख ऐसे गाइ है ॥
हाथ कोमुते कहां हाथ ऐसो काम होत पांवके
गएतें कहा पांव ऐसे धाइ है ।
याही तें विचार देखि सुन्दर कहत तोहि देहके
गरातेंरे सो देह नहीं आइ है ॥

२

बार बार कह्यो तोहि साद्य धान कौन होहि
ममतांको पोट सिर काहे कों धरत है ।
मेरो धन मेरो धाम मेरो सुत मेरो वाम मेरे पशु
मेरो ग्राम भूल्यो फिरत है ॥
तूतो भयो बावरो विकाइ गई बुद्धि तेरो ऐसो
अन्धकूप गृह तामे क्यों परत है ।
सुन्दर कहत तोहि नेकहु न आवे लाज काज कों
विगारके अकाज क्यों करत है ॥

३

तेरे तो कुपेच पर्यो गाढ़ मति बुरि गई ब्रह्मा आइ
छोरे कोहु छुटत न जबहूं ।
तेल सो भिजोइ करि चौंथरा लपेट राखे कूकरको
पूछ सूधो होइ नहीं तबहूं ॥
सास देत सीख बहुकोरो कौ गनत जात कहत
कहत दिन बीत जात सबहूं ।
सुन्दर अज्ञान ऐसो छाड़्यो नहि अभिमान निकसत
प्राण लगि चेत्यो नहो कबहूं ॥

४

वारु मांहि तेल नहि निकसत काहु विधि पाथर
न भीजे बहु बरषत घन है ।
पानीके मथे तें कछु घीव नहि पाइयत कूकसके
कूटे नहि निकसत कन है ॥
सून्य कों मुठी भरे तें हाथन परत कछू जसरके
बोये कहा उपजत अन है ।
उपदेश ओषध कौन विधि लागी ताहि सुन्दर असाध
रोग भयो जाके मन है ॥

५

वेरो घर माहि तेरे आनत सनेहो मेरे दारासुत
वित तेरो खोंसि खोसि खांहिगे ।
औरउ कुटुम्ब लोक अूटे चहु ओरहो ते माठो मोठो
वातें कहि तोसों लपटांहिगे ॥
सङ्कट परेगो जब कोऊ नहि तेरो तब अतिहो
कठिन वाको वेरि हट जांहिगे ।
सुन्दर कहत तातें भूठोई प्रपञ्च यह सुपनेको नांई
सब देखत बिलांहिगे ॥

सिन्धु—तिताला

बालूके मन्दिर माहि बैठि रह्यो थिर होइ राखत है
जीवनकी आशा कोऊ दिनकी ।
पल पल छोजत घटत जात घरी घरी विनशत बार
कहा खबरि न छिनको ॥
करत उपाय भूठे लेन देन खान पान मूसा इत उत
फिरे ताकि रही मिनकी ।
सुन्दर कहत मेरो मेरो करि भूल्यो सठ चञ्चल
चपल माया भई छिन छिनकी ॥

२

श्रवण ले जाइ करि नाद के ले डारे पास नैना
ले जाइ करि रूप बस कह्यो है ।
नासिका ले जाइ करि बहुत सुघावे फूल रसना
ले जाइ करि स्वाद मन दुख्यो है ॥
चरम ले जाइ करि नारो सों स्पर्श करे सुन्दर
कोउक साधु ठगन तें डर्यो है ।
कामठग क्रोधठग लोभठग मोहठग ठगनिको
नगरो मों जीव आइ पर्यो है ॥

३

पायो है मनुष्य देह औसर बन्या है आइ ऐसो देह
बार बार कहो कहां पाइ है ।
भूल्यो कै बार तू अबके सयानो हाउ रतन अमोल
यह काहेको ठगाइ है ॥

समुझि विचार देखि ठगनि को सङ्ग पाय
ठगबाजी देखि कहुं मन न डुलाइ है।
सुन्दर कहत तोहि अब सावधान होहि हरि को
भजन करि हरि मे समाइ है॥

४

महादेव वामदेव ऋषभ कपिल देव व्यासदेव
शुकहुं जयदेव नाम देव जू।
रामानन्द सुखानन्द कहिये अनन्तानन्द
सुरसुरानन्द हुं के आनन्द अछेव जू॥
रैदास कबीरदास सोभादास पोपादास धनादासहु
के दास भावही को टेव जू।
सुन्दर सकल सन्त प्रकट जगत माहि तैसे गुरु दादू
दास लागे हरिसेव जू॥

५

गुरुदेव सर्व्वोपर अधिक विराजमान गुरुदेव सब
होते अधिक गरिष्ट हैं।
गुरुदेव दत्तात्रय नारद शुकादि मुनि गुरुदेव
ज्ञानघन प्रकट वसिष्ठ हैं॥
गुरुदेव परम आनन्दमय देखियत गुरुदेव
बरबरियान हु वरिष्ट हैं।
सुन्दर कहत कछु महिमा कही न जाइ ऐसे
गुरुदेव दादू मेरे सिर इष्ट हैं॥

६

जोगी जैन जङ्गम सन्यासी बनवासी बोधौ और
कोऊ भेष पक्ष सब भ्रम भान्यु है।
तापस ऋषीश्वर मुनीश्वर कवीश्वर हु सबनि को मत
देखि तत्त्व पहिचान्यु है॥
वेदसार तन्त्रसार स्मृतिपुराणसार ग्रन्थनिको
सार सोई हृदय माहि आन्यु है।
सुन्दर कहत कछु महिमा कही न जाइ ऐसे
गुरुदेव दादू मेरे मन मान्यु है॥

७

जीते है जू काम क्रोध लोभ मोह दूरि किये
और सब गुणन को मद जिन भानु है।
उपजै न कोऊ ताप सीतल सुभावजाको सबही
सौ समता सन्तोष उर आनु है॥
काहू सौ न राग दोष देत सबही कौं पोष जीवत ही
पायो मोष एकब्रह्म जानु है।
सुन्दर कहत कछू महिमा कही न जाइ ऐसे
गुरुदेव दादू मेरे मन मानु है॥

रागिणी रामकली—झपताल
उपदेश चितावनी हंसालछन्द

राम हरि राम हरि बोल सुवा।
तो सही चतुर तू जान प्रवीण अति परे जिन
पिञ्जरे मोहकुवा॥
पाइ उत्तम जन्म लाइ ले चपल मन गाइ
गोविन्द गुण जीत जूवा।
आपही आप अज्ञान नलिनी बंध्यो बिना प्रभु
विमुख के बार मूवा॥
दास सुन्दर कहै परमपद तौ लहै राम हरि
राम हरि बोल सुवा।

२

हकतू हकतू बोल तोता।
न फस शैतान कौं आपनि कैद करि क्यौं दुनी मे
परा खाइ गोता।
है गुनागारभी गुनहही करत है खायगा
मार तब फिरै रोता॥
जिन तुझे खाक सौं अजब पैदा किया तू उसै
क्यों फरामोश होता।
दास सुन्दर कहै शरम तबही रहै हकतू हकतू
बोल तोता॥

झपताल

भी तुही भी तुही बोल तूती।
आवको बद ओजूद पैदा किया नयन मुख
नासिका कार संजूती।
ख्याल ऐसा करै हबी लीए फिरै जागि करि
देख क्या करै सूती।

भूलिउ सब समको काम ते क्या किया वेगि
दे याद करि मरि निपूती ।
दास सुन्दर कहै सब सुख तौ कहै भी तुही भी
तुही बोल तूती ॥

२

राक तू राकतू बोल मैना ।
अवल उस्तादके कदमको खाक हो रहि
रसबुगजार सब छोड़ फैंना ।
यार दिलदार है माहि तू याद करि है तुझो
पास तू देख नैना ॥
जान का जान है जिन्दका जिन्द है सुख न कछु
समुझ दैना ।
दास सुन्दर कहै सकल घटमें रहै राक तू राकतू
बोल मैना ॥

३

घरी घरी घटत छीजत जात छिन छिन भीजतही
गिरि जात माटीको सो ढेल है ।
मुकतिके द्वारे आइ सावधान क्यों न होइ बार बार
चढ़त न त्रिया को सो तेल है ॥
कर ले सुकृत हरि भजन अखण्ड नर याही मैं
अन्तर परैया मैं ब्रह्म मेल है ।
मनुष्य जनम यह जीत भावै हार अब सुन्दर कहत
यामें जुआ को सो खेल है ॥

४

देखतही देखत बुढ़ापो दौर आयो है ।
यौवन को गयो राज और सब भयो साज आपनो
दुहाई फेरि दमामो बजायो है ॥
भृकुटि हथियार लिये नयननि को ढाल दिये
श्वेत बार भये ता को तम्बुसो तनायो है ।
दशन गये सुमानो दरवान दूरि किये जोगरी परो
सु और बिछौना बिछायो है ॥
सीस कर कम्पत सु सुन्दर निकास्यो रिपु देख तहां
देखत बुढ़ापो दौरि आयो है ॥

५

ग्रीव तुचा कटि है लटको कबहूं पलटे
भजहुं रत वामो ।
दन्त सबै मुखके उखरे नखरे नगरा सुखरो
खर कामो ॥
कम्पत देह सनेह सुदम्पति अम्पति है धन कौं
निसि जामो ।
सुन्दर अजहू मौन तज्यो न भज्यौ भगवन्त
सुश्रोमइरामो ॥

६

देह घटी पग भूमि मंडै नहि औ लठिया
पुनि हाथ लई जू ।
आंखि हु नाक परे मुख तें जल ग्रीव हलै कटि
घींच नई जू ॥
ईश्वर कौं कबहू न सम्हारत दुःख परे तब आह
दई जू ।
सुन्दर तौ हु विषय सुख वाञ्छत घोरे गये पै बागे
न गई जू ॥

७

पाइ अमोलक देह इहै नर क्यों न विचार करै
दिल अन्दर ।
काम हु क्रोध हु लोभहु मोहहु लूटत है दसहूं
दिसि इन्दर ॥
तु अब वाञ्छत है सुरलोक हि कालहु पाइ परै
सुपुरन्दर ।
छाड़ि कुबुद्धि सुबुद्धि हृदय धरि आतम राम भजै
किन सुन्दर ॥

८

इन्द्रिनके सुख मानत है शठ याही ते बहुते
दुःख पावै ।
ज्यों जल मे झष मांस हि लीलत स्वाद बंध्यौ
जल बाहिर आवै ॥
ज्यों कपि मूठि न छाड़त है रसनावश बन्द पर्यौ
बिललावै ।

सुन्दर क्यों पहिले न सम्हारत जो गुड़ खाइ
सुकान विधावै ॥

९

कौन कुबुद्धि भई घट अन्तर तु अपनौ प्रभु सौं
मन चोरै।
भूलि गयो विषया सुख मे शठ लालच लागि रह्यो
अति थोरै॥
ज्यों कोउ कञ्चन छार मिलावत लेकर पाथर
सों नग फोरै।
सुन्दर या नरदेह अमोलिक तीर लगी नवका
कित बोरै॥

१०

देखत के नर शोभित है जैसे आहि अनूपम
केरि कौ खंभा।
भीतर तौ कछु सार नहीं पुनि ऊपर छालक
अम्बर दम्भा॥
बोलत है पर नाहिं कछू सुधि ज्यौ बयार ते
बाजत कुम्भा।
वसि रहै कपि ज्यौ छिन माहि सो याही तें
सुन्दर होत अचम्भा॥

११

देखतके नर दीसत हैं पर लक्षण तो पशु के सबही हैं।
बोलत चालत पीवत खात सोवै घर मे बन जात
सही है॥
प्रात गये रजनी फिर आवत सुन्दर यों नित
भार वही हैं।
और तौ लक्षण आई मिले सब एक कमी
सिर सींग नही हैं॥

१२

प्रेत भयो कि पिशाच भयो कि निशाचर सो
जित ही तित डोले।
तू अपनो सुधि भूलि गयो मुख ते कछु औरकी
और ई बोले॥
सोई उपाई करे जु मरे पचि बन्धन तौ कबहूं
नहि खोले।
सुन्दर जानत मे हरि पावत सो तन नाश कियो
मति भोले॥

१३

पेट तें बाहिर होत ही बालक आइ के
मात पयोधर पीनो।
मोह बढ्यो दिनही दिन और तरुणभयो त्रिय
को रसभीनो॥
पुत्र कलत्र बंध्यौ परिवार सु ऐसोही भांति गए
पन तीनो।
सुन्दर राम को नाम विसारि सु आपही आप को
बन्धन कीनो॥

१४

मात पिता सुत भाई बंध्यो युवतीके कहे कहा
काम करे है।
चोरी करे बटपारी करे किरषी बनिजो करि
पेट भरे है॥
सीत सहै शिर घाम सहै कहै सुन्दर सो भ्रम
माहि मरे है।
बांधि रह्यो ममता सबसों नर ताही ते पास
बंध्योई फिरे है॥

सिन्धुभैरवी—तिताला

तेरे ही चातुरी तोहि ले बोरै।
तू ठगके धन और कों लावत तेरे इतों घर
औरई फोरै।
आगि लगें सगरो जरि जाइ सु तू दमरो दमरो
करि जोरै॥
हाकिमको डर नाहिं न सूझत सुन्दर एकहि
बार निचोरै।
तू खरचै नहि आप हि खाइ सुतेरो ही चातुरी
तोहि ले बोरै॥

मनहरनछन्द—तिताला

करत प्रपञ्च इन पञ्चनके वस पञ्चो परदारारत
भय आनत बुराई की ।
परधन हरै परजीवनको करत घात मद्य मांस
खात लवलेस न भलाई की ॥
होईगो हिसाव तब मुखतें न आवै ज्वाब सुन्दर
कहत लेखा लेत राई राई को ।
इहां तौ करे विलास यमको न मानै त्रास यों मति
जानै उहां राज पोपावाई की ॥

२

दुनिया कौं दौरता है औरत को लोरता है
सो शुद को मोरता है वटोई सराईका ।
मुरगी को मोसता है वकरो को रोसता है
गरीबों को खोसता है वे महर गाईका ॥
जुलम को करता है धनी सौ न डरता है
जो जगकौ भरता है खजाना वलाईका ।
होइगा हिसाव जब आवैगा न ज्वाव कछु सुन्दर
कहत गुनहगार है खुदाईका ॥

३

कर कर आयो जब खर खर काव्यो नाल भर भर
बाजो ढोल घर घर जान्यो है ।
दर दर दौरी जाइ नर नर आगे दीन वरवक्त न
नेक अलसान्यो है ॥
सर सर सोधे धन तर तर तोरै पात जर जर काटत
अधिक मोह मान्यो है ।
फर फर फूल्यौ फिरै डर डर पै न मूढ़ हर हर
हंसत न सुन्दर सकान्यो है ॥

४

जनम सिरानो जाइ भजन विमुख शठ काहे को
भवन कूप विन मीच मरि है ।
गहत अविद्या जानि सुकनलनो ज्यों मूढ़ करम
विकार मत नहीं नेकु डरि है ॥
आपु हि तें जात अन्ध नरकन वार वार अजहूं न
सहु मन माहि अब करि है ।
दुःखको समूह अवलोकि कै न त्रास होइ सुन्दर
कहत नागराम नर परि है ॥

५

जग मग पग तजिसजि भजि राम नाम कामक्रोध
तनमन घेरि घेरि मारिये ।
झूठ मूठ हठ त्यागि जागि भागि सुनु पुनि गुनो
ज्ञान आन वार वार वारि डारिये ॥
गहि ताहि जाहि शेष ईस सीस सुरनर और वात.
हेत तात फेरि फेरि जारिये ।
सुन्दर दरद खोइ धोइ धोइ वार वार सार सङ्ग रङ्ग
अङ्ग हेरि हेरि धारिये ॥

दुमिलाछन्द

जोगीया—तिताला

हठयोग धरो तन जात भयो हरिनाम बिना
मुख धूरि परै ।
सठ सो गहरो छिन गात किया चरि आम
हिमा भुख पूरि जरै ॥
भट भोग परो गन खात धिया चरि काम क्रि ना
सुख भूरि मरै ।
मठरोग करो धन घात हिया परि राम बिना
दुःख दूरि करै ॥

जोगिया—यत्

गुरुज्ञान गहे अति होइ सुखो मन मोहत
जं तब काज सरै ।
धुरि ध्यान रहो पति खाइ सुखो रन लोइ वजे तब
लाज परै ॥
सुरतान वहे हति दोइ दखी तन छोइ सजे
अब आज मरै
पुर थान लहे मति होइ दुःखो जन बोहर
जं जब राज करै ॥

पंजाब विवनी छदवछन्द

मन्दिर माल विलाइत है गज जट दमामे दिमा
इक दो है ।

तात रु मात लिया सुत बान्धव देखधौं पामर
होत बिछोहै ॥
झूठ प्रपञ्च सों राचि रह्यो सठ काठको पूतरो
ज्यों कपि मोहै ।
मेरी ही मेरी करै नित सुन्दर आंखि लगे कहि
कौनको कोहै ॥

२

ये मेरे देश बिलायत है गज ये मेरे मन्दिर
ये मेरो थातो ।
ये मेरे मात पिता पुनि बान्धव ये मेरे पूत सु
ये मेरे नातो ॥
ये मेरी कामिनी केलि करें नित ये मेरे सेवक हैं
दिन रातो ।
सुन्दर वैसे हि छाड़ि गयो सब तेल जल्यो बुझि
जात ज्यों बातो ॥

आसावरी—तिताला

भूलि कहै नर मेरो ही मेरो ।
तैं दिन चार बिश्राम लियो सठ तेरे कहे
कछु ह्वै गई तेरो ॥
जैसेही बाप ददा गये छाड़ि सु तैसे ही तू त्यजि है
पल फेरो ।
मारि है काल चपेट अचानक होइ घरी महि
राखको ढेरो ॥
सुन्दर ले न चले कछु सङ्ग सु भलि कहै नर
मेरो ही मेरो ॥

२

कै यह देह जराइके छारि किया कि किया
कि किया कि किया है ।
कै यहु देह जिमी महि राखि दिया कि दिया
कि दिया कि दिया है ॥
कै यह देह रहै दिन चारि जिया कि जिया
कि जिया कि जिया है ।
सुन्दर काल अचानक आइ लिया कि लिया
कि लिया कि लिया है ॥

३

सन्त सदा उपदेश बतावत केश सबै सिर सेत भरा है ।
तु ममता अजहू नहिं छाड़त मौतहु आइ
सन्देश धरा है ॥
आज कि काल चले उठि मूरख तेरेही देखत
के ते गए मर है ।
सुन्दर क्यों नहि राम सम्हालत या जग मे कहो
कौन रहै ॥

४

देह सनेह न छाड़त है नर जानत है नर है
थिर येहा ।
छीजत जात घटे दिनही दिन दीसत है घटका
नित छेहा ॥
काल अचानक आइ गहै कर ढाहि गिराइ
करै तन खेहा ।
सुन्दर जानि यहै निश्चै धरि एक निरञ्जन
सों कर नेहा ॥

५

तू कछु और बिचारत है नर तेरो विचार
धरोई रहै गो ।
कोटि उपाइ करै धनके हित भाग लिखो
तितनोई लहै गो ॥
भोर के सांझ घरी पल मांझ सुकाल अचानक
आई गहै गो ।
राम भजो न कियो कछु सुकृत सुंदर यों पछिताइ
कहै गो ॥

आसावरी

भूलि गयो हरिनाम कों तू शठ देखि धों कौन
संयोग बन्यो है ।
काल अचानक आइ गहे कर पेखि धों झूठो
सो तानो तन्यो है ॥
हार करै सब चामकों टूटे सुआदि कों ऐसेही
जीव हन्यो है ।

कोउ न होत सहाइ कौ छूटे अनादि कौ सुन्दर
यातें सगरी है ॥

२

बीति गए पिछले सबही दिन आवत हैं अगलो
दिन नेरे ।
काल महा बलवन्त बड़ो रिपु साधि रह्या
सर ऊपर तेरे ॥
एक रोमहि मार गिरावत है लागत ताहि नहीं
कछु बेरे ॥
सुन्दर संत पुकारि कहै पुनिहू तोहि कहौं
अब टेरे ॥

३

सोइ रह्यो कहा गाफिल होइ कै तो शिर ऊपर
काल दहारे ॥
धामस धूमस लागि रह्यो शठ आइ अचानक
तोहि पछारे ।
ज्यों वन में मृग कूदत फांदत चित्रक ले नख सों
उर फारे ॥
सुन्दर काल डरे जिहि को डर ता प्रभुकों कहि
कौन संभारे ।

४

चेतत क्यों न अचेतन ऊंघत काल सदा शिर
ऊपर गाजे ।
रोकि रहे गढ़के सब द्वारन तू तब कौन
गली ह्वै भाजे ॥
आइ अचानक केस गहे जब पाकरि के पुनि
तोहि भ्रुला जे ।
सुन्दर कौन सहाय करे जब मुण्डही मुण्ड
भरा भर बाजे ॥

५

तू अति गाफिल होइ रह्यो शठ कुञ्जर ज्यों
कछु सङ्क न माने ।
नेकु नहीं तनमें अपने बल मत्त भयो विषया
सुख ठाने ॥
खेलत खात सबै दिन बीतत नीति अनीति
कछू नहीं जाने ।
सुन्दर केहरि काल महारिपु दन्त उपारि
कुम्भस्थल भाने ॥

६

मात पिता युवती सुत बान्धव आइ मिल्यो
इनसे सम्बन्धा ।
स्वारथके अपने अपने सब हैं सो इहि जानत
नाहि न अन्धा ॥
कर्म विकर्म करे तिनके हित भार धरे नित
आपने कन्धा ।
अन्त विछोह भयौ सब सों पुनि याही तें सुन्दर है
जग धन्धा ॥

मनहरनछंद

चौताला

करत करत धन्ध कछुवो न जाने अन्ध आवत
निकट दिन आगि लो चपाक दे ।
जैसे बाज तीतरकों दाबत अचानक जैसे बक
मछरी कों लीलत लपाक दे ॥
जैसे मछिकाको घात मरो करत आइ जैसे साप
मूषाकों ग्रसत गपाक दे ।
चेतरे अचेत नर सुन्दर सम्हारि राम ऐसे तोहि
काल आइ लेइगो टपाक दे ॥

२

मेरो देह मेरो गेह मेरो परिवार सब मेरो धन
माल मैं तो बहु विधि भारा हौं ।
मेरे सब सेवक हुकम के दपेटे माहि मेरो युवती
कों मैंतो अधिक पियारो हौं ॥
मेरो वंश ऊंचो मेरे बाप ददा ऐसे भयो करत
बड़ाई मैं ता जग उजियारो हौं ।
सुन्दर कहत मेरो मेरो करि जाने शठ ऐसे नहीं
जाने मैंतो कालही को चेरो हौं ॥

टोरी

जबते जनम धरो तबही ते भूलि पर्यो बालापन
माहि भूल्यो समुझो न दुखमें।
यौवन भयो है जब कामबस भया तब युवती सो
एकमेक भूलि रह्यो सुखमें ॥
पुत्रउ पौत्र भए भूल्यो तब मोह पाधि चिन्ता करि
करि भूल्यो जाने नहीं दुःख में।
सुन्दर कहत शठ तीनो पन माहि भूल्यो भूल्यो जाइ
परो काल व्यालहाके मुखमें ॥

चौताला

उठत बैठत काल जागत सोवत काल चलत फिरत
काल काल उर धस्यो है।
कहत सुनत काल खातहु पियत काल काल ही
के गाल मांहि हर हर हस्यो है ॥
तात मात बन्धु काल सुत दारागृह काल सकल
कुटुम्ब काल काल जाल फस्यो है।
सुन्दर कहत एक राम बिनु सबै काल कालहीको
क्षत कियो अन्त काल ग्रस्यो है ॥

२

जबतें जनम लेत तबही तें आयु घटे मायतो कहत
पूत मेरो बड़ो होत जात है।
आज और काल और दिन दिन होत आर दौरा
दौरो फिरत खेलत अरु खात है ॥
बालापन बीत्यो जब यौवन लग्यो है आइ यौवनहु
बीते बूढ़ा डोकरा दिखात है।
सुन्दर कहत ऐसे देखतही बुझि गयो तेल घट
गयो जैसे दीपक बुझात है ॥

गुजरी—चौताला

सब कोउ ऐसे कहैं काल हम काटत हैं काल तो
अखण्ड नाश सबको करत है।
जाके भय ब्रह्मा पुनि होत हैं कम्पमान जाके
भय असुर सुर इन्द्र उ डरत है ॥
जाके भय शिव अरु शेष नाग तीनो लोक कोउ
कलप बीते लोगस उ परत है।
सुन्दर कहत नर गर्व क्या गुमान करे तू तो शठ
एकही पलक मे मरत है ॥
काल सो न बलवन्त कोउ नहि देखियत सबको
करत अन्तकाल महा जोर है।
कालही को डर सुनि भाग्यो मूसा पैगम्बर जहां
जहां जाइ तहां तहां वाकी गोर है ॥
काल है भयानक भयभीत सब कोए लोक स्वर्ग
मर्त्य पाताल में कालही को सोर है।
सुन्दर काल को काल एक ब्रह्म है अखण्ड वासी
काल डरे जोई चल्यो उह वोर है ॥

२

बरषा भए ते जैसे बोलत भंभोरी सुर खण्डन
परत कहूं नेकहु न जानिए।
जैसे पूंगी बाजत अखण्ड सुर होत पुनि ताहु मे न
अन्तर अनेक राग जानिए ॥
जैसे कोई गुड़ी को चढ़ावत गगन माहि ताहु
कीतो ध्वनि सुनि तैसेही बखानिए।
सुन्दर कहत ऐसे काल को प्रचण्ड वेग राति दिन
चल्यो जाहि अचरज मानिए ॥

३

माया जोरि जोरि नर राखत जतन कर कहत है
एकदिन मेरे काम आइ है।
तोहि तो मरत कछु बार न लागे शठ देखत ही
देखत बबूला सो विलाइ है ॥
धन तो धरोई रहै चलत न कौड़ो गहै रीतोई
हाथन जैसे आया तैसे जाइ है।
करिले सुकृत यह बिरिया न आवै फेरि सुन्दर कहत
पुनि पीछे पछिताइ है ॥

४

बावरोसो भयो फिरे बावरोही बात करे बावरे
जो देत वाया लागत बौरानो है।
माया की उपाय जाने मायाको चातुर ठाने
माया मे मगन अति माया लपटानो है ॥

यौवनको मदमातो गिनत न कोउ गातो काम बस
कामिनीके हाथ न विकानो है।
अतिही भयो बिहाल सूझत न माथे काल सुन्दर
कहत ऐसो मौर का दिवानो है॥

५

झूठो धन झूठो धाम झूठो कुल झूठो काम झूठो
देह झूठो नाम धरि के बुलायो है।
झूठो तात झूठो मात झूठो सुत दारा भ्रात
झूठो हित मान झूठो झूठे मन लायो है॥
झूठो लेन झूठो देन झूठे मुख बोलैवेन झूठे झूठे
करै फैल झूठेहोको धायो है।
झूठेहो मे रातो भयो झूठेहो मे पचि गयो सुन्दर
कहत सांच कबहू न आयो है॥

चौतारा

झूठे हाथी झूठे घोड़ा झूठे आगे झूठा दौरा झूठा
बन्धा झूठा छारा झूठा राजारानी है।
झूठो काया झूठो माया झूठे झूठे धन्दा लाया
झूठा मुवा झूठा जाया झूठो याको बानो है॥
झूठा सोवे झूठा जागे झूठा झूठे झूठा भागे
झूठा पीछे झूठा आगे झूठे झूठो मानो है।
झूठो लीया झूठा दीया झूठा खाया झूठा पीया
झूठा सौदा झूठे कीया ऐसा झूठा प्रानो है॥

२

झूठ सो बद्यो है लाल ताहो ते ग्रसन काल काल
विकराल व्याल सबहो को खान है।
नदीको प्रवाह चल्यो जात है समुद्र माहि तैसे
जग कालहोके मुखमें समात है॥
देह सो ममत्व तातें कालको भय मानत है ज्ञान
उपजे ते वह कालज बिलात है।
सुन्दर कहत परब्रह्म है सदा अखण्ड आदि अन्त
मध्य एकसो ठहरात है॥

छप्पछंद

चौतारा

काल उपावत काल खवावत काल मिलावत है
गहि माटी।
काल हलावत काल चलावत काल सिखावत है
सब घाटी॥
काल बुलावत काल भुलावत काल सुलावत है
बन घाटी।
सुन्दर काल मिटे तबही पुनि ब्रह्म विचार पढ़े
जब पाटी॥

देह आत्मा विछोह

छप्पछंद

बोलत हो सु कहां गयो पञ्छी।
वे श्रवना रसना मुख वैसेहो वैसेहो नासिका
वैसेहो अंखी।
वे कर वे पग वे सब द्वार सु वे नख सोख हैं
रोम अलंखी॥
वैसेहो देह परो पुनि दोसत एक बिना सब
लागत खंखी।
सुन्दर कोउ न जान सको यह बोलत हो सु कहां
गयो पञ्छी॥

चौतारा

खेल गयो एक खेल सो ख्यालो।
बोलत चालत पोवत खात सोंचतहै द्रुमको
जैसे मालो।
लेतहु देतहु देखत रोझत तोरत तान बजावत तालो॥
जामहि कर्म्म विकर्म्म किये सब है यह देह परो
सब ठालो॥
सुन्दर सो कतहू नहि दोखत खेल गयो एक खेल
सो ख्यालो॥

२

मात पिता युवती सुत बान्धव लागत है सबको
अति प्यारो।
लोक कुटम्ब रोख हित राखत होइ नहीं हमते
कहुं न्यारो॥
देह सनेह तहां लगि जानहु बोलत है मुख
शब्द उचारो।

सुन्दर चेतन शक्ति गई जब वेग कहैं घर मांहि
निकारो ॥

२

रूप भलो तबही लगि दीसत जौ लगि बोलत
चालत आगे।
पीवत खात सुनै अरु देखत सोइ रहै उठिकै
पुनि जागे ॥
मात पिता भैया मिलि बैठत प्यार करै युवती
गल लागे।
सुन्दर चेतन शक्ति गई जब देखत ताहि सबै
डर भागे ॥

चौताला

मनहरन छंद

कौन भांति करतार कियो है शरीर यह पावकके
मध्य देखो पानी को जमावनो।
नासिका श्रवण नैन वदन रसन बैन हाथ पांव
अङ्ग नख सिख को बनावनो।
अजब अनूप रूप चमक दमकजू सुन्दर है शोभित
अति अधिक सुहावनो ॥
जाको छिन चेतन शकति जब लीन होइ ताही
छिन लगत सबनको भयावनो ॥

२

सूतक को पिण्ड होत ताहि मे युगति भई
नासिका नयन मुख श्रवण बनाये हैं।
शीश हाथ पांव अरु अङ्गुली विराजमान अङ्गुलीके
आगे पुनि नखउ लगाये हैं ॥
पेट पीठ छाती कण्ठ चिबुक अधर गाल दसन
रसन बहु वचन सुहाये हैं।
सुन्दर कहत जब चेतनाशकति गई वहै देह
जारि बारि छार करि आये हैं ॥

३

देह तो प्रकट है ज्यौ की त्यौंही देखियत नैनके
झरोखे माहि झांकत न देखिये।
नाकके झरोखे माहि नेक न सुवास लेत कानके
झरोखे माहि सुनत न लेखिये ॥
मुखके झरोखे नैन वचन उचार होत जीभहु को
षट्रस स्वाद न विशेषिये।
सुन्दर कहत कोऊ कौन विधि जानै ताहि कारो
पीरो काहू द्वार जातो हू न पेखिये ॥

४

माय तो पुकारि छाती कूट कूट रोवत है बापहु
कहत मेरो नन्दन कहां गयो।
भैयाहू कहत मेरी बांह आज टूटि गई बहन
कहत मेरो बीर दुःख है दयो ॥
कामिनी कहत मेरो शीस शिरताज कहां उन
ततकाल हाथ मे साधोरा है लयो।
सुन्दर कहत ताहि कोऊ नहि जानि सकै
बोलत हुतो सुयह छिन मे कहां गयो ॥

५

रज अरु बीरजको प्रथम संयोग भयो चेतनाशकति
तब कौन विधि आई है।
कोऊ एक कहै वीज मधही कियो प्रवेश किनहू
तो पञ्चमास पीछे के सुनाई है ॥
देह को वियोग जब देखतही होइ गयो तब
कोऊ कहो कहां जाइ कै समाई है।
पण्डित जपोश्वर तपोश्वर मुनीश्वरहु सुन्दर कहत
इह किनहू न पाई है ॥

६

तबही लौं सत सब होत हैं विविधि भांति जब
लगि घटमाहि चेतन प्रकाश है।
देहके असक्त भये क्रिया सब थकि जाति जब लगि
स्वास चलै तब लगि आस है ॥
स्वासहु थको है जब रोवन लगे है तब सब
कोऊ कहैं यह भयो घट नास है।
काहू नहीं देखो किहिं ओर कौन कहां गयो
सुन्दर कहत यह बड़ोई तमास है ॥

७

देह तो स्वरूप जौलो तौलो है अरूप माहि सब
कोउ आदर करत सनमान है।
टेढ़ी पाग बांधि बार बारही मरोरे मोंछ बांहज
सकोरे अति धरत गुमान है॥
देश देशही के लोग आइ के हजूर होंहि बैठ
के तखत पै कहावै सुलतान है।
सुन्दर कहत जब चेतनाशकति गई वहै देह
ताकि कोउ मानत न आन है॥

तृष्णाको अङ्ग—इन्द्रवचछन्द

देशी टोड़ी—चौताला

नयननि कि पलही पल में छिन आध घरी
घटका जु गई है।
याम गयो युग याम गयो पुनि सांझ गई
तब राति भई है॥
आज गई अब काल्हिं गई परसों तरसों कछु
और ठई है।
सुन्दर ऐसेही आजु गई तृष्णा दिनही दिन
होत नई है॥

२

कनही कनकों विललात फिरे शठ याचत है
जनही जनकों।
तनही तनको अति सोच करे नर खात रहे
अनही अनकों॥
मनही मनकी तृष्णा न मिटी पुनि धावत है
धनही धनकों।
छिनही छिन सुन्दर आयु घटी कबहु न गयो
बनही बनकों॥

३

जो दश बीस पचास भए शत हो हि हजारन
लाख मगेगी।
कोटि अरब्ब खरब्ब असंख्य पृथ्विपति होनकी
चाह जगेगी॥
स्वर्ग पाताल कों राज करों तृष्णा अधिको अति
आगि लगेगी।
सुन्दर एक सन्तोष विना शठ तेरी तो भूख न
क्योंहु भगेगी॥

४

लाख करोर अरब्बनि नील पद्मनि है
तहां लख खाटो।
जो रही जोर भण्डार भरे सब औरही सु जमी
तर डाटो॥
तौहु न तोहि सन्तोष भयो शठ सुन्दर ते तृष्णा
नहि काटो।
सूझत नाहि न काल सदा शिर मारि है धाप
मिलाइ है माटो॥

५

भूख लिए दशहुं दिश दौरत ताहि ते तूं कबहुं
न अघै है।
भूख भण्डार भरे नहो कैसेउ जो धन मेरु
कुबेर लौ पैहै॥
तू अब आगे हि हाथ पसारत ताहो तें हाथ
कछु नहि ऐहै।
सुन्दर क्यों न सन्तोष करैं नर खातही खात
कितोइक खैहै॥

सारङ्ग—चौताला

भूख नचावत रङ्क हि राजहि भूख नचाइ कैं
विश्व विगोई।
भूख नचावै इन्द्र सुरासुर और अनेक जहां
लगि जोई॥
भूख नचावै है अध उरध तीनहुं लोक गये
कहा कोई।
सुन्दर जाई तहां दुःखही दुःख आन विना न कहुं
सुख होई॥

२

पेट पसारि दियो जितही तित तें यह भूख
कितो एक धापो।

और न छार कछू नहीं आवत मैं बहु भांति भली
विधि मापो ॥
देखत देह भयो सब जीरन तू नित नूतन
आहि अघापो ।
सुन्दर तोहि सदा समुझावत है तृष्णा अजहूं
नहि धापो ॥

३

तीनहुं लोक अहार कियो फिर सात समुद्र
पियो सब पानो ॥
और जहां तहां ताकत डोलत काढ़त आंखि
डरावत प्रानो ।
दांत दिखावत जीभ हलावत याही ते मैं यह
डाइन जानो ।
सुन्दर खात भए कितने दिन है तृष्णा अजहूं न
अघानो ॥

४

पांउ पाताल परे गयो निकसो सीस गयो
असमान अघोरो ।
हाथ दसौं दिसकों पसरे पुनि पेट भरे न
समुद्र सुमेरो ॥
तिनहु लोक लिये मुख भीतर आंखहु कान बंधे
बहुं फेरो ।
सुन्दर देह धस्यो अति दीरघ है तृष्णा कछु
छेहन तेरो ॥

५

वाद वृथा भटके निशि वासर दूरि कियो
कबहू नहि धोखा ।
तू हतियारिनि पापनि कोढ़िनि सांच कहौं मति
मानहि रोषा ॥
तोहि मिले तब ते भयो बन्धन तू मरि है
तबही है मोषा ।
सुन्दर और कहा कहौं तोहि है तृष्णा
अब तो करि तोषा ॥

६

क्यों जगमाहि फिरे भख मारत स्वारथ कौन
परे जिहिं ओले ।
ज्यों हरिहाय गज नहिं मानत दूध दुहो कछु
सोपु ठठोले ॥
तू अति चञ्चल हाथ न आवत निकसो जाइ
नहो सुख बोले ।
सुन्दर तोहि कह्यो वेर केतीक हे तृष्णा अब तू
मति डोले ॥

७

तू कोउ कान धरो नहि नेकहू बोलत बोलत
पेटहि पाक्यो ।
हौं कोउ बात बनाइ कहौं जब ते तब पोसतही
सब फांक्यो ॥
केतिक द्योस भए परमोदत तैं अब आगेही
कौं रथ हांक्यो ।
सुन्दर सीख गई सबही चलि हे तृष्णा कहि
कैं तोहि थाक्यो ॥

८

तू भरमाइ प्रदेश पठावत वादि वृथा मरि
जाइ अकाजा ।
तै सब लोक नचाए भली विधि भाण्ड किए
सब रंकरु राजा ॥
फेरि न मोहिं देखावना तू मुख दूर हो दूर हो
भाग री जा जा ।
सुन्दर ताहि दुखाइ कहो अब हे तृष्णा तोहि
नेक न लाजा ॥

पेटको अङ्ग—इन्द्रवज्रछन्द

सारङ्ग—चौताला

पांव दिये चलने फिरने कहुं हाथ दिये हरि
कृत्त करायो ।
कान दिये सुनिये हरिको यश नयन दिये तिन
मार्ग दिखायो ॥

नाक दिया सुशोभित ता करि जीभ दई हरि का
गुण गायो।
सुन्दर साज दियो परमेश्वर पेट दियो परि
पाप लगायो॥

२

कूप भरे अरु वापि भरे पुनि ताल भरे बरषा
ऋतु तीनो।
कोठो भरे घट माठ भरे घर हाट भरे सबको
भरि लीनो॥
खन्दक खार बुखार भरे परि पेट भरे न बड़ो
दर हीनो।
सुन्दर रीतो.हो रीतो रहै यह कौन खड़ा
परमेश्वर कीनो॥

मनोहरछन्द—चौताला

काधों पेट चूल्हा कीधों भाठो किधों भार याहि
जोई कछु झोकिए सोई जर जात है।
कीधों पेट थल कीधों बांबी किधों सागर है जितो
जल परे तेतो सकल समात हैं॥
किधों पेट दैत्य किधों भूत प्रेत राक्षस है
खांउ खांउ करे कहुं नेक न अघात है।
सुन्दर कहत प्रभु कौन पाप लायो पेट जब तें
जनम लियो तब ही ते खात है॥

२

विप्र हु तो विप्रहि करत अति बार बार तनमन
पुनि तनक न कबहूं अघायो है।
घटत भरत क्योंहो घटोई सो रहत नित सिर
विराइ मैं तो ककुव न खायो है॥
देह दे कहत हि कहत जनम बीत्यो पिण्ड
पिण्ड काजे निशिदिन ललचायो है।
सुगदल गिलत गिलत तनहि ढस होइ
सुन्दर कहत वपु कौन पाप लायो है॥

३

काजी पेट काज कोतवालके अधीन होत कोतवाल
सो तो सरदार आगे लीन है।
सरदार दीवानके पीछे लगा डोले पुनि दीवानहु
जाइ पादशाह आगे दीन है॥
पादशाह कहै या खुदा मुझे और दीजै पटही
पसारे नहि पेट वश कौन है।
सुन्दर कहत प्रभु क्योंहूं नहि पेट भरे एक पेट
काज एक एक को अधीन है॥

मधमाध—चौताला

तैं तो प्रभु दियो पेट जगत नचायो जिन
पेट काज घर घर द्वार द्वार फिर्यो है।
पेट होके लिए हाथ जोरि आगे ठाढ़ो होइ
जोई जोई कह्यो सोई सोई उन कर्यो है॥
पेट होके लिए पुनि मेघ शीत घाम सहै पेट होके
लिये जाइ रण माहि गर्यो है।
सुन्दर कहत यह पेट सब किए भाण्ड
और गेल छूटि परी पेट गेल पर्यो है॥

२

पेट सो न बली जाके आगे सब हार चले
राव अरु रङ्क एक पेट जीत लिये है।
कोऊ बाघ मारत विदारत है कुञ्जर को
ऐसे शूरवीर पेटकाज प्राण दिये है॥
यन्त्रमन्त्र साधत आराधत श्मशान जाइ
पेट आगे डरत निडर ऐसे हिये है।
देवता असुर भूत प्रेत तीनो लोक पुनि
सुन्दर कहत प्रभु पेट जेर किये है॥

३

प्रात ही उठत जब पेट ही को चिन्ता तब
सब कोऊ जात हैं आपने अहार कों।
कोऊ अन्न खात पुनि आमिष भखत कोऊ
कोऊ घास चरत चरत कोउ दार कों॥
कोऊ मोती फल कोऊ वास रस पयपान कोऊ
पवन पीवत भरत पेट भार कों।

सुन्दर कहत प्रभु पेट ही भ्रमाए सब
पेट तुम दियो है जगत होनवार कों॥

बड़हंस—चौताला

पेटके कारण जीव हते बहु पेट ही मांस भखे
औ सुरापी।
पेट हि ले करि चोरी करावत पेट ही की
गठरी ले कांपी॥
पेट ही पाश गरे मह डारत पेट ही डारत
कूपहु वापी।
सुन्दर काहे को पेट दियो प्रभु पेट सो और
नहीं कोउ पापी॥

२

औरन कों प्रभु पेट दियो तुम तेरे तो पेट कहूं
नहि दीसे।
ये भटकाय दिये दशहूं दिश कोउक रांधत
कोउक पीसे॥
पेटहीके हित दौरे फिरें सब खाये विना
अंग ही अंग टीसे।
सुन्दर आप न खाहु न पीवहु कौन करे इन
ऊपर रीसे॥

मनोहरछन्द—चौताला

काहे को काहूके आगे जाइ कें अधीन होइ
दीन दीन वचन उचार मुख कहते।
जिनके तो मद अरु गर्व गुमान अति
तिनके कठोर बैन कबहूं न सहते॥
तुम्हारे ही भजन सों अधिक लय लीन अति
सकल को त्यागि के एकान्त जाय गहते।
सुन्दर कहत यह तुमही लगायो पाप
पेट न होतो तो प्रभु बैठ हम रहते॥

२

पेटहीके वश रङ्क पेटहीके वश राजा पेटहीके
वश और खान सुलतान है।
पेटहीके वश योगी जङ्गम सन्यासी शेष
पेटहीके वश वनवासी खात हन है॥
पेटहीके वश ऋषि मुनि तपधारी सब
पेटहीके वश सिद्ध साधक सुजान है।
सुन्दर कहत नहीं काहूको गुमान रहै
पेटहीके वश प्रभु सकल जहान है॥

चिन्ताको अङ्ग

सारङ्ग—चौताला

तोहु निचिन्त करे मति चिन्तहि चञ्चु दई
सोई चिन्त करेगो।
पांव पसारि पर्यो किन सो बहु पेट दियो सोई
पेट भरेगो॥
जीव जिते जलके थलके पुनि पाहन में
पहुंचाइ धरेगो।
भूखही भूख पुकारत है नर सुन्दर तू कहा
भूख मरेगो॥

२

धीरज धारि विचार निरन्तर तोहि रच्यो सो तो
आपुहि ऐहै।
जेतक भूख लगी घट प्राण हि तेतक तू अन
पासहि पैहै॥
जो मनमें तृष्णा करि धावत तो तिहुं लोक न
खात अघैहै।
सुन्दर तू मत शोच करे कछु चञ्चु दई सोई
चूनहु दैहै॥

३

नेक न धीरज धारत है नर आतुर होइ दशों
दिश धावे।
ज्यो पशु खेंच तुरावत बन्धन जो लगि नीर न
आवहि आवे॥
जानत नाहि महामति मूरख जा घर हार
धनी पहुचावे।
सुन्दर आपु कियो गढ़ भाजन सो भरि है
मति शोच उपावे॥

४

भाजन आपु गढ़ो जिन ते भरि हैं भरि हैं
भरि हैं भरि हैं ज।

गावत है जिनके गुणकों ढरि हैं ढरि हैं ढरि हैं
ढरि हैं जू ॥
सुन्दरदास सहाय सोई करि हैं करि हैं करि हैं
करि हैं जू ।
आदिहु अन्तहु मध्य सदा हरि हैं हरि हैं
हरि हैं हरि हैं जू ॥

५

काहे को दौरत है दशहूं दिश तू नर देख कियो
हरि जूको ।
बैठि रहे दुरिके मुख मूंदत घालिके दांत
खवाइ हैं टूको ॥
गर्भ थवे प्रतिपाल करी जिन होई रहो तब तू
जड़ मूको ।
सुन्दर क्यों बिललात फिरै अब राख हृदय
विश्वास प्रभूको ॥

६

जा दिनतें गर्भवास तज्यो नर आइ अहार लियो
तब ही को ।
खात ही खात भए इतने दिन जानत नाहिं
न भुख कहीको ॥
दौरत धावत पेट दिखावत तू शठ कीट सदा
अनहीं को ।
सुन्दर क्यों विश्वास न राखत सो प्रभु विश्वम्भर
सब हीको ॥

भीमपलाश—चौताला

खेचर भूचर जे जलके चर
देत अहार चराचर पोषे ।
वे हरि जू सबकों प्रतिपालत जो जिहि भांति
तिसो विधि तोषे ॥
तू अब क्यों विश्वास न राखत भूलत है कत
धोखे ही धोषे ।
तोहि तहां पहुचाइ रहे प्रभु सुन्दर बैठि
रहै किन वोसे ॥

मनोहरछन्द—चौताला

काहे को वपुरा भयो फिरत अज्ञानी नर तेरो
तो रिज़क तेरे घर बैठे आइ है ।
भावे तू सुमेर जाहि भावे जाहि मारु देश
जितनोक भाग लिखौ तितनोक पाइ है ॥
कूप मांझ भरि भावे सागरके तीर भरि जितनोक
भाड़ो नीर तितनोही समाइ है ।
ताहीते सन्तोष करि सुन्दर विश्वास धरि जितनो
रच्यो है घट सोइ अमराइ है ॥

२

काहेकी फिरत नर दीन भयो घर घर देखियत
तेरो तो अहार एक सेर है ।
जाको देह सागर में सुन्यो शत योजनको ताहु को
तो देत प्रभु यामों नहीं फेर है ॥
भूख्यो कोउ रहत न जानिये जगत माहि कीरी
अरु कुञ्जर सपनही को देर है ।
सुन्दर कहत तू विश्वास क्यों न राखे शठ बार बार
समुझाइ कह्यो केती बेर है ॥

३

तेरे तो अधीरज तू आगिली ही चिन्ता करे
आज तो भख्यो है पेट कालह कैसो होइ है ।
भूखोई पुकारे अरु दिन उठि खातो जाइ अति ही
अज्ञानी जाको मति गई खोइ है ॥
ताको नहिं जानि शठ जाको नाम विश्वम्भर
जहां तहां प्रकट सबन देत सोइ है ।
सुन्दर कहत तोहि वाको तो भरोसो नाहिं
एक विश्वास विना याही भांति रोइ है ॥

४

देखि धौं सकल विश्व भरत भरनहार चुंचक
समान चुनि सबही को देत है ।
कीट पशु पक्षी अजगर मत्स्य कच्छ पुनि उनके
न सोदा कोज न तो कछु खेत है ॥

६८ होके काज राति दिवस भ्रमत शठ मैं तो जान्यो
नीके करि तू तो कोउ प्रेत है।
मनुष्य शरीर पाइ करत है हाय हाय सुन्दर कहत
नर तेरे सिर रेत है॥

५

तू तो भयो बावरो उतावरो फिरत अति प्रभुको
विश्वास गहि काहे न रहत है।
तोरो तोरि जो कहे सु आइ है सहज माहि योंही
चिन्ता करि करि देह को दहत है॥
जिन यह नख सिख साजिके सवांरो तोहि अपने
किये को वह लाजको बहत है।
काहेको अयानो कछु सोच मन माहिं करे भूखो
तू कभी न रहे सुन्दर कहत है॥

६

जगत में आइ तै विसारो है जगतपति जगत कियो
है सोई जगत भरत है।
तेरे चिन्ता निशिदिन और ही परो है आइ
उद्यम अनेक भांति भांति के करतहै॥
इत उत जाइके कमाइ करि लाउ कछु नेक हू
अयानो न धीरज धरत है।
सुन्दर कहत एक प्रभुके विश्वास विनु वाद क्यों
वृथा ही शठ पचिके मरत है॥

७

देह तो मलिन अति बहुत विकार भरी ताहु
माहि जरा व्याधि सब दुःखरासी है।
निद्राहुं पेट पीर कबहूंक सीस वांह कबहूंक
आंखि कान मुख में व्यथासी है॥
औरहु अनेक रोग नख सिख पूरि रहे कबहूंक
श्वासा चले कबहूंक खांसी है।
ऐसो या शरीर ताहि आपनो के मानत है सुन्दर
कहत या में कौन सुखवासी है॥

८

जा शरीर माहि तू अनेक सुख मानि रह्यो ताहि
तू विचार या में कौन बात भलि है।
मेद मज्जा मांस रग रग माहिं रक्त पूरि पेटहु
पिटारोसो तामें ठौर ठौर मलि है॥
हाड़निसो मुख बनो हाड़ हि के नैना नाक हाथ
पांव सोउ सब हाड़ हीं को नलि है।
सुन्दर कहत याही देखि जिन भूले कोउ भीतर
भङ्गार भरो ऊपर ते कलि है॥

इन्द्रवज्रछन्द—चौताला

हाड़को पिञ्जर चाम मढ़्यो सब माहिं भर्‌यो
मल मूत्र विकारा।
थूक रु लार परे मुखते पुनि व्याधि बहे सब
औरउद्वारा॥
मांसको जीभ सो खाइ सबै कछु नाहिंने ताको है
कौन विचारा।
ऐसे शरीर में पैठिके सुन्दर कैसेके कीजिये
सोच अचारा॥

मनोहरछन्द

मालकोश—चौताला

थूक रु लार भर्‌यो मुख दीसत आंखि में गोड़रु
नाकमें सेढ़े।
और हु द्वार मलीन रहे नित हाड़के मांसके
भीतर वेढ़े॥
ऐसे शरीर में वास कियो तब राकसे दीशत
ब्राह्मण टेढ़े।
सुन्दर गर्व कहा इतने पर काहे को तू नर
चालत टेढ़े॥

२

जा दिन गर्भ संयोग भयो जब ता दिन बूंद
छिपाइती ताहीं।
द्वादश मास अधोमुख झूलत बूड़ि रह्यो पुनि
वो रस माहीं॥
ता रज वीरजका यह देह सु तू अब चालत
देखत छाहीं।
सुन्दर गर्व गुमान कहा सुनु आपनो आदि
विचारत नाहीं॥

नारीनिन्दाको अङ्ग

मनोहरछन्द—चौताला

कामिनी को देह मानो कहिये सघन वन वहां
कोउ जाइ सो तो भूलि कै परत है ।
कुञ्जर है गति कटि केहरि को भये जामें वेणी
कालोनागिनि फ़खन को धरत है ॥
कुच है पहार जहां कामचोर रहैं तहां साधिकै
कटाक्षवाण प्राणको हरत है ।
सुन्दर कहत एक और डर अति तामें राक्षस वदन
खांउ खांउ ही करत है ॥

२

विष होको भूमि माहिं विष होके अङ्कुर भये नारि
विषवेलि बढ़ी नखन में देखिये ।
विष होके जर मूल विष होके डार पात विष होके
फल फूल लागे जु विसेखिये ॥
विष होके तंतु पासा उरझि गए आटो मारी सब
नर वृक्ष पर लपटो हो लेखिये ।
सुन्दर कहत कोउ एक तरु बचि गए तिन कतो
कहूं लता लागो नहो पेखिये ॥

३

उदर में नरक नरक अधद्वारनिमें कुचनिमें
नरक नरक भरी छाती है ।
कण्ठमें नरक गाल चिबुक नरक ग्रीव मुखमें नरक
जीभ लार हु चुचाती है ॥
शीर्ष में नरक कान नयन में नरक वहै हाथ पांउ
नख सिख नरक दिखाती है ।
सुन्दर कहत नारी नरकको कुण्ड यह नरक में
जाइ परै सो इनको पक्षपाती है ॥

४

कामिनीको अङ्ग अति मलिन महा अशुद्ध
रोम रोम मलिन मलिन सब द्वार है ।
हाड़ मांस मज्जा मेद चाम सौं लपेट राखे
ठौर ठौर रकतको भरे हो भण्डार है ॥
मूत्र पुरोष आंत एक मेक मिलि रहो औरउ
उदर मांहि विविधि विकार है ।
सुन्दर कहत नारी नख शिख निन्दारूप ताहि जो
सराहै सो तो बड़ो ई गंवार है ॥

कुण्डलिया

रसिक प्रिया रसमञ्जरो अरु शृङ्गारहि जानि ।
चतुराई करि बहुत विधि विषय बनाई आनि ॥
विषय बनाई आनि लगत विषयनिको प्यारो ।
जागे मदन प्रचण्ड सर है नख सिख नारो ॥
ज्यौं रोगी मिष्टान्न खाय रोग हि विस्तारो ।
सुन्दर यह गति होइ सुनो रसिक प्रियारो ॥

२

रसिक प्रियाके सुनत हो उपजै विविधि विकार ।
जो यामें चित देत है वहै होत नर ख्वार ॥
वहै होत नर ख्वार बार तो कछुवो न लागै ।
सुनत विषयको बात लहरि विष होको जागै ॥
जो कोउ अंधत हुतो लहो पुनि सेज बिछाई ।
सुन्दर ऐसो ज्ञान सुनत है रसिक प्रिय भाई ॥

परनिन्दकको अङ्ग

आपने न दोष देखे परके अवगुण पेखे दुष्टको
स्वभाव उठि निन्दाई करत है ।
जैसे काहू महल सवांरि राख्यौ नोकै करि
कीरो तहां जाइ छिद्र ढूंढ़त फिरत है ॥
भोर होते सांझ लगि सांझ होते भोर लगि
सुन्दर कहत दिन ऐसे हो भरत है ।
पांउके तरेको तौ न सूझै लागि मूरखकौं और सौं
कहत गिर ऊपर बरत है ॥

इन्दवछन्द—चौताला

घात अनेक रहै उर अन्तर दुष्ट कहै मुखते
अति मोठो ।
लोटत पीटत व्याघ्र हो ज्यौं मित ताकत है
पुनि ताहोको पोठो ॥

ऊपर तें छिरकै जल आनि सुहेठ लगावत
जारि अंगोठो।
यामहि कूर कछू मति जानहुं सुन्दर आपनी
आंखिन दीठो॥

२

आपने काज संवारनके हित औरको काज
बिगारत जाई।
आपनो कारज होहु न होउ बुरो करि और को
डारत भाई॥
आप हु खोवत और हु खोवत खोइ दुहूं घर
देत बहाई।
सुन्दर देखत ही बनि आवत दुष्ट करै नहीं
कौन बुराई॥

३

ज्यों नर पोषत है निज देह हि अन्न विनास
करै तिहि बारा।
ज्यों अहि और मनुष्य न काटत वाको नहीं कछु
होइ अहारा॥
ज्यों पुनि पावक जारि सबै कछु आपहु नाश भयो
निरधारा।
ज्यों यह सुन्दर दुष्ट स्वभाव ही जानि तजो किन
तीन प्रकारा॥

४

सो पड़से सुनही कछु ताल कवीछु लगै सुभलो
करि मानो।
सिंह हु खाहि तो नाहिं कछू डर जो गज मारै तो
नाहिं न हानो॥
आगि जरो जल बूड़ि मरो गिरि जाइ गिरो
कछु भय मति आनो।
सुन्दर और भले सब ही दुःख दुर्जन सङ्ग भलो
जिन जानो॥

मन चञ्चलको अङ्ग

मनोहरछन्द—चौताला

छटकि छटकि मन राखत जू चण चण सटकि
सटकि चहुं ओर अब जात है।
लटकि लटकि ललचाइ लोल बार बार गटकि
गटकि करि विषय फल खात है॥
झटकि झटकि तार तोरत करमहीन भटकि
भटकि कहुं नेकु न अघात है।
पटकि पटकि सिर सुन्दर जु मानो हार फटकि
फटकि जाइ सो धौं कौन बात है॥

२

पलही में मरि जात पलही में जीवत है
पलही में परहाथ देखत बिकानो है।
पलही में फिरै नवखण्ड ब्रह्माण्ड सब देखो
अनदेखो सो तो याते नहि छानो है॥
जातो नहि जानियत आवत न दीखै कछु ऐसो
सो बलाय अब ता सों पार पानो है।
सुन्दर कहत याकी गति हु न लखि परै मनकी
प्रतीति कोउ करै सो दिवानो है॥

३

घेरिये तो घेरो नही आवत है मेरो पूत
जोइ परबोधिए सु कान न धरत है।
नीति न अनीति देखै शुभ न अशुभ पेखै पलही में
होती अनहोती हु करत है॥
गुरुको न साधुको न लोक वेद हूको शङ्क काहुकौ
न मानै न तो काहुतें डरत है।
सुन्दर कहत ताहि धोयिये सु कौन भांति मनको
स्वभाव कछु कह्यो न परत है॥

४

काम जब जागै तब गनत कोउ शांक जाने
सब जोय करि देखत माधो है॥
क्रोध जब जागै तब नेक न संभारि सके ऐसो
विधि मूलकी अविद्या जिन साधो है।
लोभ जब जागै तब तपत न क्यों हीं होइ
सुन्दर कहत इन ऐसो विधि खाधो है॥
महा मतवारो निशि दिनही फिरत रहै
मन सो न हम कौंज देख्यो अपराधो है॥

देखिवे कों दौरे तो भटकि जाइ वाही ओर
सुनिवे कों दौरे तो रसिक सिरताज है ॥
सूंघवे कों दौरे तो अघाय न सुगन्धकरि खाइवें कों
दौरे तो न अघाये महाराज है।
भोग हु कों दौरे तो छपत नहीं क्यौंहु छोड़ सुन्दर
कहत याही नेक हु न लाज है ॥
काहूको कह्यो न करे आपुनो ही टेक परे
मन सो न कोउ हम जानो दगाबाज है ॥

५

देखे न कुठौर ठौर कहत कहत और लीन आइ
होत हाड़ मांस उरगत में।
करत बुराई सर औसर न जाने कछु धक्का आइ
देत राम नाम सौ लगत में ॥
वाहे सुर असुर बहाए सब वेष जिनि सुन्दर कहत
दिन घालत भगत में।
औरउ अनेक अन्तराय ही करत रहे मन सो न
कोउ है अधम या जगत में ॥

६

जिन ठगी शङ्कर विधाता इन्द्रदेव मुनि आपनोउ
अधिपति ठग्यो जिन चन्द्र है ॥
और योगी जङ्गम सन्यासी शेष कौन गने सब ही को
ठगत ठगावे न सुछन्द है।
तापस ऋषि सुर सकल पचि पचि हारे काहुके
न आवे हाथ ऐसो यामें बन्द है।
सुन्दर कहत वश कौन विधि कीजे ताहि मन सो न
कोउ या जगत माँहि रिन्द है ॥

७

रङ्कको नचावे अभिलाष धन पाइवेकों निशिदिन
सोच करि ऐसे ही पचत है ॥
देवता असुर सिद्ध पन्नग सकल लोक कीट पशु
पची कहु कैसे के बचत है।
राजा ही नचावे सब भूमि हो को राज्य लेव
औरउ नचावे जोई देह सरचत है।
सुन्दर कहत काहु सन्तको कह्यो न जाइ मनके
नचाए सब जगत नचत है ॥

इन्द्रवव—चौताला

कौतिक कोस भए समुझावत मानत नाहीं बड़ो
मन भोंड़ू।
भूलि रह्यो विषया सुखमें कछु और ना जानत है
शठ दौंड़ू ॥
आंखि न कान न नाक बिना शिर हाथ न पांव
नहीं मुख पोंड़ू।
सुन्दर ताही गहे कोउ क्यों करि निकसि हो
जाइ बड़ो मन लौंड़ू ॥

२

दौरत है दशहूं दिशको शठ वाय लगी तबते
भयो येंड़ा।
लाज न कान कछू नहिं राखत शील सभावको
फोरत मेंड़ा ॥
लालच लागि गयो मन विखरीट डोलन है ज
अठारह पेंड़ा।
सुन्दर सीख कहा कहि देइ भिदे नहिं वाण छिदे
नहिं गेंड़ा ॥

३

श्वान कहूं कि शृगाल कहूं कि विड़ाल कहूं
मनको मति तैसो।
ठेठ कहूं किधों डोम कहूं किधों भांड़ कहूं कि
भण्डाइ दे जैसो ॥
चोर कहूं बटपार कहूं ठगतार कहूं उपमा
कहूं कैसो।
सुन्दर और कहा कहिये अब या मनकी गति
दीसत ऐसो ॥

४

के वेर तू मन रङ्क भयो शठ मांगत भीख दयो
दिश हूक्यो।
के वेर तू मन छत्र धरो सिर कामिनि सङ्ग
हिंडोलनि भूल्यो ॥

के वेर तू मन चीण भयो भति कै वेर तू सुख
पाइव फूल्यो ।
सुन्दर कै वेर तोहि कह्यो मन कौन गलो किहि
मारग भूल्यो ॥

५

इन्द्रिनिके सुख चाहत है मन लालच लागि
भरम शठ यौं हो ।
देखि मरीच भज्यो जल पूरण धावत है मृग
मूरख ज्यौं हो ॥
प्रेत पिशाच निशाचर डोलत भूख मरे नहि
धावत क्यौं हो ।
वायु वघूरनि कौन गहै कर सुन्दर दौरत है
मन त्यो हीं ॥

६

कौन स्वभाव परो हठि दौरत अमृत छाड़ि
चचोरत हाड़े ।
ज्यों भ्रमको हथनो दृग देखत आतुर होइ
परै गज खाड़े ॥
सुन्दर तोहि सदा समुझावत एकहु सीख लगै
नहिं राड़े ।
वाद वृथा भटकै निशि वासर रे मन तू भ्रमको
किन काड़े ॥

७

है सब को सिरमौर ततचण जो भभिअन्तर
ज्ञान विचारे ।
जो कछु और विषय सुख वाञ्छत तौ यह देह
अमौलिक हारे ॥
छाड़ि कुबुद्धि भजै भगवन्तहि आपु तरे पुनि
और हि तारे ।
सुन्दर तोहि कह्यो कितनो वेर तू मन क्यौं नहि
आपु संभारे ॥

८

जो मन नारीको ओर निहारत तौ मन होत है
ताही को रूपा ।
जो मन काहू सों क्रोध करै जब क्रोध भये हो
जाइ तद्रूपा ॥
जो मन माया ही माया रटै नित तो मन बूड़त
मायाके कूपा ।
सुन्दर जो मन ब्रह्म विचारत तो मन होत है
ब्रह्मस्वरूपा ॥

मनहरनछन्द—चौताला

कबहुंक हंसि उठे कबहुंक रोइ देत कबहुं वकत
कछु अन्तहु न लहिये ।
कबहुंक खाय तो अघाय नहीं काहू करि कबहुं
कहै मेरे कछु नहिं चहिये ॥
कबहुं आकाश जाइ कबहुं पाताल जाइ सुन्दर
कहत ताहि कैसे कर गहिये ।
कबहुंक आइ लागे कबहुं उतरि भागे भूत
कैसे चिह्न करै ऐसो मन कहिये ॥

२

कबहुं तो पांखको परेवा कै देखावै मन कबहुंक
धरिके चामर कर लेत है ।
कबहुं तो गोटिको उछारत आकाश ओर कबहुंक
राते पीरे रङ्ग श्याम सेत है ॥
कबहुं तो आंब को उगाइ करि ठाढ़ो करै कबहुं तो
सीस धड़ जुदे कर देत है ।
बाजीगरको सो खेल सुन्दर करत मन सदाई
भ्रमत रहै ऐसो कोई प्रेत है ॥

हमीर—चौताला

कबहुंक साह होत कबहुंक चोर होत कबहुंक
राजा होत कबहुंक रङ्क है ।
कबहुंक दीन होत कबहुं गुमानी होत कबहुंक
सूधो होत कबहुंक वङ्क है ॥
कबहुंक कामी होत कबहुंक यती होत कबहुंक
निर्मल होत कबहुंक पङ्क है ।
मनको स्वरूप ऐसो सुन्दर स्फटिक जैसो कबहुंक
सुर होत कबहुं मयङ्क है ॥

१

हाथी को सो कान कीधो पीपरको सो पात
कीधौं ध्वजा को उड़ान कहूं स्थिर न रहत है।
पानी को सौ घेर कीधौं पौन उरझेर कीधौं चक्रको
सो फेर कोउ कैसेंके गहत है॥
अरहट माल किधौं चरखा कौ ख्याल किधौं फेरी
खात बाल कछु सुध न लहत है।
धूम कौ सो धाव ता कौ राखिवे कौ चाव ऐसो
मन को स्वभाव सो तो सुन्दर कहत है॥

२

सुख माने दुःख माने सम्पत्ति विपत्ति माने
हर्ष माने शोक माने माने रङ्क धन है।
घटी माने बढ़ी माने शुभ रु अशुभ माने लाभ माने
हानि माने याही तें कृपन है॥
पाप माने पुण्य माने उत्तम मध्यम माने नीच माने
उच्च माने मेरो यह तन है।
स्वरग नरक माने वन्ध माने मोक्ष माने सुन्दर
सकल माने तातें नाम मन है॥

४

जोई जोई देखे कछू सोई सोई मन आहि
जोई जोई सुने सोई मन ही को भर्म है।
जोई जोई सूंघे जोई खाय जो स्पर्श होइ जोई जोई
करे सोज मन ही को कर्म है॥
जोई जोई गहे जोई त्यागे जोई अनुरागे जहां जहां
जाइ सोई मन ही को भ्रम है।
जोई जोई कहे सोई सुन्दर सकल मन जोई जोई
कल्प सु मन ही को धर्म है॥

५

एक ही विटप विश्व ज्यों को त्यों ही देखियत
अति ही सघन ताके पत्र फल फूल है।
आगिले झकोरत पात नए नए होत जात ऐसे
याही तरु को अनादि काल मूल है॥
दश चारि लोक लौं जहां तहां पसरि रह्यो अध
पुनि उरध सूक्ष्म अरु स्थूल है।
कोउ तो कहत सत्य कोउ तो कहे असत्य सुन्दर
सकल मन ही को भ्रम भूल है॥

६

तो सो न कपूत कोउ कतहुं न देखियत तो सो न
सपूत कोउ देखिये न और है।
तू ही आप भूलि महा नीच हूते नीच होत तू ही
आप जाने तें सकल सिरमौर है॥
तू ही आप भ्रमे तब भ्रमत जगत देखे तेरे स्थिर
भए सब ठौर ही को ठौर है।
तू ही जीव रूप तू ही ब्रह्म है प्रकाशवन्त
सुन्दर कहत मन तेरो सब दौर है॥

७

मन हीके भ्रमते जगत यह देखियत मनही को
भ्रम गये जगत बिलात है।
मन हीके भ्रम जेवरी में उपजत सांप मनके विचारे
सांप जेवरी समात है॥
मन हीके भ्रमते मरीचिका को जल कहै
मन हीके भ्रम सीप रूपो सो दिखात है।
सुन्दर सकल यह दीसे मन हीको भ्रम मन हीको
भ्रम गए ब्रह्म होइ जात है॥

८

मन ही जगत रूप होइ करि विस्तारे मन ही
अलख रूप जगत सों न्यारो है।
मन ही सकल घट व्यापक अखण्ड एक मन ही
सकल यह जगत पियारो है॥
मन ही प्रकाशवन्त हाथ न परत कछु मनके
न रूपरेख इह ही न वारो है।
सुन्दर कहत परमार्थ विचारे जब मन मिटि जाइ
एक ब्रह्म निज सारो है॥

चाणकको अङ्ग
रागिनी खयाल—चौताला

जोई जोई छूटवे को करत उपाय अब सोई सोई
दृढ़ करि वन्धन परत है।

योग यज्ञ जप तप तीर्थ व्रतादि और झंपा पातलेत
जाइ हिवारे गरत है ॥
कानउ फराइ पुनि केसउ लुचाइ अङ्ग विभूति
उ लगाइ शिर जटा उ धरत है।
विन ज्ञान पाए नहीं छूटे हृदयकी ग्रन्थि सुन्दर
कहत यों ही भ्रमके मरत है ॥

२

जप तप करत धरत व्रत जत सत मन वचक्रम
भ्रम कष्ट सहत तन।
वलकल वसन असन फलपत्र जल कसत रसन
रस तजत वसत वन ॥
जरत मरत नर गरत परत सर कहत लहत
हयगय दल वन घन।
पचत पचत भवभय न टरत शठ घट घट
प्रकट रहत न लखत जन ॥

३

योग करे यज्ञ करे वेदविधि त्याग करे जप करे
तप करे यों ही आयु खूटि है।
यम करे नेम करे तीर्थ और व्रत करे पुहमी अटन
करे वृथा श्वास टूटि है ॥
जीवेको यतन करे मनमें व्यसन धरे पचि पचि
यों ही मरे काल सिर कूटि है।
और उ अनेक विधि कोटिक उपाय करे सुन्दर
कहत विन ज्ञान नहिं छूटि है ॥

४

बुद्धि कर होन रज तम गुण छाइ रह्यो वन वन
फिरत उदास होइ घरते।
कठिन तपस्या धरि मेघ शीत घाम सहे कन्दमूल
खाइ कोउ काममाके डरते ॥
अति ही अज्ञानी और विविध उपाय करे निज रूप
भूलि करि बंधे जाइ परते।
सुन्दर कहत शठ ऊधों और देखे मुख हाथ माहिं
आरसो न फेरे मूढ़ करते ॥

५

मेघ सहे शीत सहे शीशपर घाम सहे कठिन
तपस्या करि कन्द मूल खात है।
योग करे यज्ञ करे तीर्थ और व्रत करे पुनि नानाविध
करे मनमें सिहात है ॥
और देवी देवता उपासना अनेक करे आंवनिको
हौंस कसें आक डोड़े जात है।
सुन्दर कहत एक रविके प्रकाश विना जुगनाको
ज्योति कहा रजनो विलात है ॥

नट—चौताला

कोउ फिरे नांगे पाय कोउ गुदरी बनाइ देहको
दशा दिखाइ आई लोक धुव्यो है।
कोउ दूधाधारी होइ कोउ फलाहारी तोय कोउ
अधोमुख झूलि झूलि धूम चूव्यो है ॥
कोउ नहीं खाइ नोन कोउ मुख गहे मौन
सुन्दर कहत यों ही वृथा भुस कूव्यो है।
प्रभु सों न प्रीति माहि ज्ञानहु सों परचय नाहिं
देखो भाई आंधरेने ज्यों बजार लूव्यो है ॥

अड़ाना—चौताला

आसन मारि संवारि जटा नख उज्वल अङ्ग
विभूति चढ़ाई।
यह हमको कछु देइ दया करि घेरि रहे
सब लोग लुगाई ॥
कोउक उत्तम भोजन लावत कोउक लावत
पान मिठाई।
सुन्दर लेकरि जात भयो सब मूरख लोगनि यह
सिधि पाई ॥

२

ऊर्ध्व पाय अधोमुख ह्वै करि घूंटत धूमहि
देह झुलावै।
मेघ हु शीत हु घाम सहे सिर तीन हु काल
महादुःख पावै ॥
हाथ कछू न परे कबहूं कन मूर्खको कस
कूटि उड़ावै।

सुन्दर देखि विषय सुखको घर डूबत है अब

झांझन गावै ॥

२

गेह तज्यो अरु नेह तज्यो पुनि खेह लगाइके

देह संवारी ।

मेघ सह्यो अरु शीत सह्यो पुनि धूप समे

पञ्चागिन धारी ॥

भूख सहे रहे रूख तरे परि सुन्दरदास सहै

दुःख भारी ।

डासन छाड़ि के कासन ऊपर आसन मारि पै

आश न मारी ॥

३

जो कोउ कष्ट करै बहु भांतिन जात अज्ञान

नहीं मन केरो ।

ज्यों तम पूरि रह्यो घर भीतर कैसे हु दूरि न

होइ अंधेरो ॥

लाठिनि मारिये ठेलि निकारिये और उपाय

करे बहुतेरो ।

सुन्दर सूरप्रकाश भयो तब तो कतहूं नहि

देखिये नेरो ॥

४

धार बह्यो खर्ग धार छयो जल धार सह्यो

गिरिधार गिरो है ।

भार रंच्यो धन भारथ ह्व करि भार सह्यो

शिरभार परो है ॥

मार तज्यो वहि मार गयो यम मार दई

मन तो न मरो है ।

सार तज्यो पट् सार पढ़ो कहि सुन्दर कारज

कौन सरो है ॥

छायानट—चौताला

ज्यों कोउ कोस कह्यो नहिं मारग तेलकले

घरमें पशु जोये ।

ज्यों बनिया गयो बीस के तीसको बीसहु में

दमड़ि नहिं होये ॥

ज्यों चौबे छबेको चल्यो पुनि होइ दुबे दो

गांठके खोये ।

तैसे हो सुन्दर और क्रिया सब राम बिना

निश्चय नर रोये ॥

२

जो कोउ राम बिना नर मूरख औरनके गुण

जोभ भनेगो ।

आन क्रिया गढ़ते गढ़वा पुनि होत है भेरि

कछू न बनेगो ॥

ज्यों हथ फेर दिखावत चावर अन्त ता धूरि को

धूरि बनेगो ।

सुन्दर भूल भई अतिशय करि सूतको भैंस

पड़ाइ जनेगो ॥

३

होइ उदास विचार बिना नर गेह तजो वन

जाइ रह्यो है ।

अम्बर छाड़ि दिगम्बर ले करि कै तप कानन

कष्ट सह्यो है ॥

आसन मारि सवासन ह्वै मुख मौन गह्यो

मन तो न गह्यो है ।

सुन्दर कौन कुबुद्धि लगी कहि या भवसागर

माहिं बह्यो है ॥

४

भेष धरो पर भेद न जानत भेद लहे बिनु

खेदहि चै है ।

भूख हि मारत नींद निवारत अन्न त्यजे फल

पत्रनि खै है ॥

और उपाय अनेक करे पुनि ताहि तें हाथ

कछु नहिं ऐ है ।

या नरदेह वृथा शठ खोवत सुन्दर राम बिना

पछिते है ॥

५

आपने आपने थान मुकाम सराहनको सब

बात भली है ।

यज्ञ व्रतादिक तीरथ दान पुराण कथा जु
अनेक चलो है ॥
कोटिक और उपाय जहां लगि ते सुनिके
नर बुद्धि छलो है।
सुन्दर ज्ञान विना न कहूं सुख भूलनिको बहु
भांति गलो है ॥

६

कोउक चाहत पुत्र धनादिक कोउक चाहत
बांझ जनायो।
कोउक चाहत धातु रसायन कोउक चाहत
पारद खायो ॥
कोउक चाहत यन्त्रनि मन्त्रनि कोउक चाहत
रोग गमायो।
सुन्दर राम विना सबको भ्रम देखहु या जगको
उहकायो ॥

७

कोउ भया पय पान करै नित कोउक खात है
अन्न अलौना।
कोउक कष्ट करै निशि वासर कोउक बैठि
के साधत पौना ॥
कोउक वाद विवाद करै नित कोउक धारि
रहै मुख मौना।
सुन्दर एक अज्ञान गए विनु सिद्ध भयो नहिं
दीसत कौना ॥

८

कोउक अङ्ग विभूति लगावत कोउक होत
निराट दिगम्बर।
कोउक खेत अपारक बोवत कोउक काथ रङ्गे
बहु अम्बर ॥
कोउक वलकल सीस जटा नख कोउक ओढ़त है
जु बघम्बर।
सुन्दर एक अज्ञान गए विनु ए सब दीसत
आहि अडम्बर ॥

९

आप होके घट में प्रकट परमेश्वर है ताहि छाड़ि
भूले नर दूर दूर जात है।
कोई दौरै द्वारकाको कोई काशी जगन्नाथ
कोई दौर मथुरा को हरिद्वार न्हात है ॥
कोई दौरै बदरी को विषम पहाड़ चढ़े कोई
तो केदार जाइ मन में सिहात है।
सुन्दर कहत गुरुदेव देंहि दिव्य नयन दूरो होके
दूरि में ज निकट दिखात है ॥

वागेश्वरी—चौताला

कोउक जात प्रयाग बनारस कोउ गया
जगन्नाथ हि धावे।
कोउ मथुरा वदरी हरिद्वार सु कोउ भया
कुरुक्षेत्र हि न्हावे ॥
कोउक पुष्कर ह्वै पंच तीर्थ दौर ई दौर के
द्वारका आवे।
सुन्दर वित्त गड्यो घर माहि सु बाहिर ढूंढ़त क्यों
करि पावे ॥

२

आगे कछू नहिं हाथ परो पुनि पोछे विगारि
गए निज भौना।
ज्यों कोउ कामिनि कान्त हि मारि चली सङ्ग
और हिं देखि सलोना ॥
कोउ गयो तजि के ततकाल कहूं न बने जु रह्यो
मुख मौना।
तैसे हो सुन्दर ज्ञान विना सब छाड़ि भए नर
भांड़के दोना ॥

३

काहे को तू नर भेष बनावत काहे को तू दश ह्व
दिशि डूले।
काहे को तू नर कष्ट करै अति काहे को तू
मुखतें कहि फूले ॥

काहे को और उपाय करै अब ज्ञान क्रिया कर
के मति भूले।
सुन्दर एक भजै भगवन्त हि तौ सुखसागर में
नित झूले॥

विपरीतज्ञानको अङ्ग—मनोहरछन्द

वागेश्वरी—चौताला

एक ब्रह्म मुख सों बनाइ करि कहत है अन्त
करन तौ विकारनसो भरो है।
जैसे ठग गोबर सों कूपा भरि राखत है सेर पांच
घृत लेके उपर ज्यों करो है॥
जैसे काउ भांड़े माहिं प्याज को छिपाइ राखे
चौंथरा कपूरको ले मुख बांधि धरो है।
सुन्दर कहत ऐसे ज्ञानी है जगत माहिं तिन को
तो देखि करि मेरो मन डरो है॥

२

देह सो ममत्व पुनि गेह सो ममत्व सुत दार सो
ममत्व मन माया में रहत है।
थिरता न लहै जैसे कन्दुक चौगान माहिं कर्मनिके
वश परो धक्का को वहत है॥
अन्तःकरण सु तो जगत सो रचित तेरो मुख सो
बनाय बात ब्रह्मको कहत है।
सुन्दर अधिक मोहि याही ते अचम्भा आहि भूमि
पर परो कोउ चन्द को गहत है॥

३

मुख सो कहत ज्ञान भ्रम मन इन्द्रिय प्राण मारगके
जल में न प्रतिबिम्ब लहिये।
गांठ में न पैसा कोउ भयो रहै साहूकार बातनि
हो सुहर रुपैया गनि गहिये॥
सुपने में पञ्चामृत जीमि के तू पूत भयो जागी ते
परम भूख खाइवे को चहिये।
सुन्दर सुभट जैसे कायर मारत गाल राजा भोज
सम कहा गांगू तेली कहिये॥

४

संसारके सुख निसों आसक्त अनेक विधि इन्द्रिय
उ लोलुप मनका बहुत गसे है।
कहत है ऐसे मैं तो एक ब्रह्म जानत हौं ताहो तें
छोड़ि शुभकर्मनि का ररो है॥
ब्रह्मको न प्राप्ति पुनि कर्म सब छूटि गए दुहुन
तें भ्रष्ट होइ अध शोच बरो है।
सुन्दर कहत ताहि त्यागिये स्वपच जैसे याही
भांति ग्रन्थन वसिष्ठ हु करो है॥

५

ज्ञान कोसो बात कहे मन तो मलिन रहे वासना
अनेक भरो नेक न निवार है।
जैसे कोउ आभूषण अधिक बनाय राखे जलई
ऊपर करि भीतर भङ्गार है॥
ज्योंही मन आवे त्योंही खेलत निशङ्क होइ ज्ञान
सुनि औंधे लयो ग्रन्थन विचार है।
सुन्दर कहत वाके अटक न कोउ आहि जाई
वाको मिलो आय ताहोको बिगार है॥

६

हंस श्वेत वक श्वेत देखिये समान दोउ हंस मोती
चुगे वक मछरो को खात है।
पिक अरु काक दोउ कैसे करि जाने जाय
पिक अम्ब डार काक करं कहि जात है॥
सिन्धो अरु स्फटिक पाषाण सम देखिये वह तो
कठोर वह तो जलमें समात है।
सुन्दर कहत ज्ञानी बाहर भीतर शुद्ध ताको पटतर
और बातनको बात है॥

वचनविवेकको अङ्ग—मनोहरछन्द

केदारा—चौताला

जाके घर ताजो तुरकोनि को तबेलो बंधो ताके
आगे फेरि टट्वा नचाइये।
जाके खासा मलमल सिरो साफ़ ढेर परे ताके
आगे आनि करि चोसई रखाइये॥

जाको पय्यामृत खात खात सब दिन बीते
सुन्दर कहत ताहि रावरी चखाइये।
चतुर प्रवीण आगे मूर्ख उच्चार करे सूरजके आगे
जैसे जैंगना दिखाइये॥

२

एक वाणी रूपवन्त भूषण वसन अङ्ग अधिक
विराजमान कहियत ऐसो है।
एक वाणी फाटे टूटे अच्छर उड़ाए आनि ताहु
माहि विपरीत सुनियत तैसो है॥
एक वाणी मृत कहि बहुत शृङ्गार कियो लोगन
को नीको लगे सन्तनको वैसो है।
सुन्दर कहत वाणी द्वू विधि जगत माहि जाने
कोउ चतुर प्रवीण जाको जैसो है॥

३

राजाको कुंवर जो सुरूप के कुरूप होइ ताको
तसलीम करि गोद ले खिलाइये।
और काहु रैयत के सुरूप होइ शोभनीक ताहु
को तो देखि करि निकट बुलाइये॥
काहुको कुरूप कारो कूबरो है अङ्गहीन वाको
ओर देखि देखि माथइ हलाइये।
सुन्दर कहत वाके बाप हो को प्यारो होइ योंही
जानि वाणी को विवेक ऐसे पाइये॥

४

बोलिए तो तब जब बोलिवेको सुधि होइ न तो
मुख मौन करि चुप होइ रहिये।
जोरिये उ तब जब जोरिवोऊ जानि परे तुकछन्द
अरनूपताका में लहिये॥
गाइये उ तब जब गाइवे को कण्ठ होइ श्रवणके
सुनतही मन जाइ गहिये।
तुक भङ्ग छन्द भङ्ग अर्थहु मिले न कोऊ सुन्दर
कहत ऐसो वाणी नहीं कहिये॥

५

एकनको वचन सुनत अति सुख होइ फूलसे
झरत हैं अधिक मन भावने।
एकनके वचन अश्म मानो बरषत श्रवणके सुनत
लगत अनखावने॥
एकनके वचन कण्टक कटुक विषरूप करत
मरम छेद दुःख उपजावने।
सुन्दर कहत घट घट में वचन भेद उत्तम मध्यम
अरु अधम सुनावने॥

६

काक अरु रासभ उलूक जब बोलत हैं
तिनके तो वचन सुहात कहि कौन को।
कोकिला उ सारो पुनि सुआ जब बोलत है
सब कोऊ कान दे सुनत रव रौन को॥
ताही तें सुवचन विवेक करि बोलियत योंही
आकवाक कहि तोरिये न पौन को।
सुन्दर समुझि कें वचन को उचार करे नाहि
तो चुप ह्वै पकरि बैठ मौन को॥

७

प्रथम सो हिये विचार ढोल सो न दीजे डार
ताही तें सुवचन सम्हारि करि बोलिये।
जाने न कुहेत हेत भावे तैसो कहि देत कहिये
ता तब जब मन मानि तोलिये॥
सबही को लागे दुःख कोऊ नहि पावे सुख बोलि
के वृथाही तातें छाती नहीं छोलिये।
सुन्दर समुझि करि कहिये सरस बात तबही तो
वदन कपाट गहि खोलिये॥

८

और ता वचन ऐसे बोलत हैं पशु जैसे
तिनके तो बोलिवे में ढङ्गहु न एक है।
कोऊ रात दिवस बकतही रहत ऐसे जैसो
विधि कूप में बकत मानो भेक है॥
विविधि प्रकार करि बोलत जगत सब घट घट
मुख मुख वचन अनेक है।
सुन्दर कहत तातें वचन विचारि लेहु वचन तो
वहै जामें पाइये विवेक है॥

विहाग—चौताला

जैसे हंस नीर को त्यजत है असार जानि
सार जानि छीरको निरालो करि पीजिये।
जैसे दधि मथत मथत घृत काढ़ि लेत और रही
मही सब छाड़ि छाड़ दीजिये ॥
जैसे मधु मखिका सुवास को भ्रमर लेत तैसे ही
विचार करि भिन्न भिन्न कीजिये।
सुन्दर कहत ताते वचन अनेक भांति वचन
में वचन विवेक करि लीजिये ॥

२

प्रथम ही गुरुदेव मुखते उचार कह्यो वेद तो
वचन आय लगी निज हिये हैं।
तिनको विवेक करि अन्त:करण माहि अति ही
अमोल नग भिन्न भिन्न किये हैं।
आप को दरिद्र गयो पर उपकार हेत नरनहि
नीगल करि उनहि नग दिये हैं।
सुन्दर कहत यह वाणी यों प्रकट भई और कोउ
सुनि कर रङ्क जीव जिये हैं ॥

३

वचन ते ढुरि मिले वचन विरुद्ध होय वचन तें
राग बढ़े वचन ते दोख जू।
वचन ते ज्वाला उठे वचन ते शीतल होइ वचन तें
मुदित मुख वचनही तें सोख जू ॥
वचन तें प्यारो लगे वचन ते दूर भगे वचन तें
मुरिझाइ वचन तें पोख जू।
सुन्दर कहत यह वचन ही को भेद ऐसो वचन तें
बन्ध होत वचन तें मोख जू ॥

४

वचन तें गुरुशिष्य बापपूत प्यारे होत वचन तें
बहुविध होत उत्पात हैं।
वचन ते नारी अरु पुरुष सनेह अति वचन तें
दोउ आप आप में रिसात हैं ॥
वचन ते सब आइ राजाके हजूर होहि वचन तें
चाकरउ छोड़ि के परात हैं।
सुन्दर सुवचन सुनत अति सुख होइ कुवचन
सुनत ही प्रीति घट जात हैं ॥

५

एक तो वचन सुनि कर्मही में बंधि आहि करत
बहुत विधि स्वर्गको उमेद है।
एक है वचन दृढ़ ईश्वर उपासना में तिन में तो
सकल ही वासनाको छेद है ॥
एक है वचन ता में एक ही अखण्ड ब्रह्म सुन्दर
कहत यों बतायो अन्त वेद है।
वचन अनेक ही प्रकार सब देखियत वचन विवेक
किये वचन में भेद है ॥

सोरठ—चौताला

वचन ते योग करे वचन ते यज्ञ करे वचन ते तप
करि देह को दहत है।
वचन तें वन्दन करत है अनेक विधि वचन तें
त्याग करि वनमें रहत है ॥
वचन ते उरझि अरु सुरझि वचन ही तें वचन ते
भांति भांति सङ्कट सहत है।
वचन ते जीव भयो वचन ते ब्रह्म होत सुन्दर वचन
भेद वेद यों कहत है ॥

निर्गुण उपासना अङ्ग—इन्द्रवज्रछन्द

सोरठ—चौताला

ब्रह्मा कुलाल रचे बहु भाजन कर्मनिके वश
मोहन भावे।
विष्णुहु सङ्कट आइ सहे गर्भ काहु को रक्षक
काहु सतावे ॥
शङ्कर भूत पिशाचनिके बहु पानि कपाल
लिए बिललावे।
याही तें सुन्दर तिरगुण त्यागि सुनिर्मल एक
निरञ्जन ध्यावे ॥

१

कोटिक बात बनाइ कहे कहा होत भया सबही
मन रञ्जन।

मायासमूह अरु वेद पुराण बखानत है अतिशय
शुक अञ्जन ॥
पानी में बूड़त पानो गहे कत पार पहुंचत है
मति भञ्जन ।
सुन्दर तौ लगि बांधे को जीवरो जौ लो न
धावत एक निरञ्जन ॥

३

मञ्जन सो जु मनोमल भञ्जन सज्जन सो जु
कहे गति गूझै ।
गञ्जन सो इन्द्रियगण गञ्जन रञ्जन सो
जु बुझावे अबूझै ॥
भञ्जन सो जु भयो रसमाहि जु विहजन सो
कतहू न अरूझै ।
व्यञ्जन सो जु बढ़े रुचि सुन्दर अञ्जन सो जु
निरञ्जन सूझै ॥

४

जो प्रभु सौं उत्पत्ति भई यह सो प्रभु है उर
इष्ट हमारे ।
जो प्रभु है सबके सिर ऊपर ता प्रभुकों हम हू
सिर धारे ॥
रूप न रेख अलेख अखण्डित भिन्न रहे सब
कारज सारे ।
नाम निरञ्जन है तिन को पुनि सुन्दर ता प्रभुकौ
बलिहारे ॥

५

जो उपजे विनसे गुण धारत सो सब जानहु
अञ्जन माया ।
आवे न जाइ मरे नहि जीवत अच्युत एक
निरञ्जन राया ॥
ज्यों तवतत्त्व रहे रस एक हो आवत जात फिरे
सब छाया ।
सो परब्रह्म सदा शिर ऊपर सुन्दर ता प्रभु सों
मन लाया ॥

खम्माच—चौताला

जो उपजो कछु आहि जहां लगि सो सब नाश
निरन्तर होई ।
रूप भयो सुर हेतु हि निश्चल तोनहु लोक गये
कहा कोई ॥
राजस तामस सात्त्विक जे गुण देखत कालग्रसे
पुनि वोई ।
आपु हिं एक रहे जु निरञ्जन सुन्दरके मन
मानत सोई ॥

२

देवनके शिर देव विराजत ईश्वरके शिर ईश्वर
कहिये ।
लालनके शिर लाल निरन्तर खूबनिके शिर खूब
सुलहिये ॥
पाकनिके शिर पाक शिरोमणि देखि विचारि
वहै दृढ़ गहिये ।
सुन्दर एक सदा शिर ऊपर और कछू हम
कौ नहि चहिये ॥

३

शेष महेश गणेश जहां लगि विष्णु विरिञ्चि हुके
शिर स्वामी ।
व्यापक ब्रह्म अखण्ड अनावृत बाहिर भीतर
अन्तःयामी ॥
वोर न छोर अनन्त कहे गुण याही तें सुन्दर है
घन नामी ।
ऐसो प्रभु जिनके शिर ऊपर क्यों परि है तिनकी
कहि खामी ॥

पतिव्रताको अङ्ग—इन्द्रवबछन्द

खम्माच—चौताला

आनकी ओर निहारत हो जैसे जात पतिव्रत
एक सतीको ।
होत अनादर ऐसो हो भांति सु पीछे फिरे पुनि
सूर सतीको ॥

नेक ही में हरयो ह्वै जात खिसे अर्धविन्दु सु
योगी यतीको ।
राम हृदे तें गए जन सुन्दर एक रती बिनु
एक रतीको ॥

२

जो हरिकों त्यजि आन उपासत सो मतिमन्द
फजीहत होई ।
जो अपने भरतारहिं छोड़ि भई व्यभिचारनि
कामिनी कोई ॥
सुन्दर ताहि न आदर मान फिरे विमुखो आपनि
पति खोई ।
बूडि मरे किन कूप मंझार कहा जग जीवत है
शठ सोई ॥

३

एक सही सबके उर अन्तर ता प्रभुकों कहि
काहिं न गावैं ।
सङ्कट माहि सहाय करे पुनि सो अपनो पति क्यों
बिसरावैं ॥
चारि पदारथ और जहां लगि आठहुं सिद्धि
नवों निधि पावैं ।
सुन्दर छार पखो तिनके सुख जो हरि कों त्यजि
आनहि धावैं ॥

४

पूरणकाम सदा सुखधाम निरञ्जन राम हैं
सर्जन हारो ।
सेवक होइ रह्यो सबको नित कुञ्जर कीटहिं
देत अहारो ॥
भञ्जन दुःख दरिद्र निवारण चिन्त करे नित
सांझ सवारो ।
ऐसे प्रभू त्यजि आन उपासत सुन्दर है
तिनको मुख कारो ॥

५

होइ अनन्य भजे भगवन्त हि और कछू उर में
नहि राखे ।
देवी अौ देव जहां लगि हैं डर कें तिन सों कहुं
दीन न भाखे ॥
योगहु यज्ञ व्रतादि क्रिया तिन कों नहि तो
सुपने अभिलाखे ।
सुन्दर अंमृत पान कियो तब कहिये कौन
हलाहल चाखे ॥

मनोहरछन्द—चौताला

काहेकों फिरत नर भटकत ठौर ठौर डागरको
दौर देवी देव सब जानिये ।
योग यज्ञ जप तप तीर्थ व्रतादि दान तिनहु को
फल सोउ मिथ्याई बखानिये ॥
सकल उपाय तजि एक राम नाम भजि याहि
उपदेश सुनि हृदे माहि आनिये ।
ताहिते समुझि करि सुन्दर विश्वास धरि
और कोउ कहे कछु ताको नहि मानिये ॥

२

पति ही सो प्रेम होइ पति ही सो नेम होइ
पति ही सो क्षेम होइ पति ही सो रति है ।
पति ही है यज्ञ योग पति ही है रसभोग
पति ही है जपतप पतिहो को यति है ॥
पति ही है ज्ञान ध्यान पति ही है पुण्यदान
पति ही है तीर्थ स्नान पति ही के मति है ।
पति बिन पति नाहि पति बिन गति नाहि
सुन्दर सकल निधि एक पतिव्रति है ॥

३

जलको सनेही मीन बिछुरत तजे प्राण मणि बिना
अहि जैसे जीव नहीं लहिये ।
स्वाति बुन्दके सनेही प्रकट जगत माहि
एक सीप दूसरो सु चातक उ कहिये ॥
रवि को सनेही पुनि कमल सरोवर में शशि को
सनेही उ चकोर जैसे रहिये ।
तैसे ही सुन्दर एक प्रभु सों सनेह करि और कछु
देखि काहु ओर नहि बहिये ॥

अथविरह उराहनेको अङ्ग

मनोहरछन्द—चौताला

पीवको अन्देसो भारो तो सों कहीं सुनि प्यारी
तोरि गए सो तो अजहुं न आये हैं।
मेरे तो जीवन प्राण निशि दिन वहै ध्यान मुख सों
न कहूं आन नयन झरलाये हैं॥
जबते गये बिछोह काल न परत मोहि ताते हूं
पूछत तोहि किन बिरमाये हैं।
सुन्दर बिरहनीके सोच सखी बार बार हमको
बिसारि अब कौनके कहाये हैं॥

२

हम कों तो रन दिन शङ्का मन माहि रहै उन
को तो बात निमें ठीक ह न पाइये।
कबहूं सन्देशो सुनि अधिक उछाह होइ कबहुंक
रोइ रोइ आंसुन बहाइये॥
औरनके रस बश होइ रहे प्यारे लाल आवनकी
कहि कहि हम को सुनाइये।
सुन्दर कहत ताहि काटिये शु कौन भांति जौन
रुख आपनेइ हाथ सो लगाइये॥

३

मो सों कहै और सो ही वासों कहै और सो ही
जासो कहै ताही के प्रतीति कैसे होत है।
काहूकी समास करै काहूको उदास फिरै काहूके
तों रस बश एकमें कपोत है॥
दगाबाजी द्विविधा तो मनको न दूरि होइ
काहूके अंधेरो घर काहूके उदोत है।
सुन्दर कहत जाके पीर सो करै पुकार जाको
दुःख दूरि गयो ताके भई बोत है॥

४

हिये और जिये और लिये और दिये और किये
और कौनउ अनूप पाटी पढ़े है।
मुख और बैन और नयन और सैन और तन और
मन और यन्त्र माहि कढ़े है॥
हाथ और पांव और सोसहु श्रवण और नख
शिख रोम रोम कलह सों मढ़े है।
ऐसो तो कठोरता सुनो न देखो जगत में सुन्दर
कहत काहू वज्रहीके घढ़े है॥

५

भई हों अति बावरी बिरह घेरो घावरी चलत हूं
हां बावरी परोंगी जाइ बावरी।
फिरति हों उतावरी लगत नहीं ताव री सुवाहीको
बतावरी चलो है जात तावरी॥
थके हैं दोउ पावरी चढ़त नहीं पावरी
पियारो नहीं पावरी जहर बांटि प्यावरी।
दौरत नहीं नावरी पुकारिके सुनावरी सुन्दर
कोउ नावरी बूड़त राखे नावरी॥

मन्दसारको अङ्ग

जयजयवन्ती—चौताला

भूल्यो फिरै भ्रम ते करत कछु और और करत
न ताप दूरि करत सन्ताप कों।
दक्ष भयो रहै पुनि दक्ष प्रजापति जैसे देत
परदक्षिणा न दक्षणा दे आप कों॥
सुन्दर कहत ऐसे जाने न युकति कछु और आप
जपे न जपत निज जाप कों।
बालक यों युवा भयो वय बीते वृद्ध भयो वपुरूप
होइ के बिसरि गयो बाप कों॥

इन्द्रवज्रछन्द—चौताला

पान उहै शु पियूष पिवे नित दान उहै शु
दरिद्र हि भाने।
कर्ण उहै सुनिये यश केशव मान उहै करिये
मन माने॥
तान उहै सुरताल रिझावत ज्ञान उहै
जगदीश हि जाने।
बाण उहै मन बेधत सुन्दर ध्यान उहै उपजे न
अझाने॥

२

शूर उहै मनको वश राखत क्रूर उहै रन माझ लजै है ।
त्याग उहै अनुराग नहीं कछु मार्ग उहै मन मोह तजै है ॥
प्रश्न उहै निज तत्व हि जानत यज्ञ उहै जगदीश यजै है ।
रक्त उहै हरि सौं रति सुन्दर भक्त उहै भगवन्त भजै है ॥

३

चाप उहै कसिये रिपु ऊपर दाप उहै ललकार हि मारै ।
छाप उहै हरि छाप दई शिर थाप उहै थप और न धारै ॥
जाप उहै जपिये अजपा नित आप उहै निज आप विचारै ।
बाप उहै सब को प्रभु सुन्दर पाप हरै अरु ताप निवारै ॥

४

भौन उहै भय नाहि न जा महि गौन उहै फिर होइ न गौना ।
बौन उहै वमिये विषया रस रौन उहै प्रभु सो नहि रौना ॥
मौन उहै जु लिए हरि बोलत लौन उहै सब और अलौना ।
सौन उहै गुरु सन्त मिलै जब सुन्दर शङ्क रहै नहिं कौना ॥

५

कार उहै अविकार रहै नित सार उहै जो असार हि नाखै ।
नाद उहै सुनिके मनरञ्जन ज्ञान उहै जो सत्य हि राखै ॥
प्रीति उहै जु प्रतीति धरै उर नीति उहै जु अनीति न भाखै ।
तन्तु उहै लगि अन्त न टूटत स्वाद उहै रस सुन्दर चाखै ॥

६

श्वास उहै जु उसास न छोड़त नाश उहै फिर होइ न नासा ।
पाश उहै शत पाश लगै यम पाश कटै प्रभुके नित वासा ॥
वास उहै गृहवास तजै वनवास नहीं जिहि ठाहर वासा ।
दास उहै जु उदास रहै हरिदास सदा कहि सुन्दर दासा ॥

७

श्रोत्र उहै श्रुतिसार सुनै नित नैन उहै निज रूप निहारै ।
नाक उहै हरि नाक हि राखत जीभ उहै जगदीश उचारै ॥
हाथ उहै करिये हरिको कृत पांव उहै हरिको पथ धारै ।
शीर्ष उहै करि श्याम समरपण सुन्दर यौं सब कारज सारै ॥

८

सोवत सोवत सोइ गयो सब रोवत रोवत कै बेर रोयो ।
गोवत गोवत गोइ धख्या धन खोवत खोवत तैं सब खोयो ॥
जोवत जोवत बीत गये दिन बोवत बोवत लै विष बोयो ।
सुन्दर सुन्दर राम भजो नहि ढोवत ढोवत बोझ हिं ढोयो ॥

९

देखत देखत देखत मारग बूझत बूझत बूझत आयो ।
सूझत सूझत सूझ परो सब गावत गावत गोविन्द गायो ॥

सोधत सोधत शुद्ध भयो पुनि तावत तावत
कञ्चन तायो।
जागत जागत जाग पद्यो जब सुन्दर सुन्दर
सुन्दर पायो॥

शूरतनको अङ्ग

कहरी—चौताला

सुनत नकारे चोट विकसे कमल मुख अधिक
फूल्यो माइ इन तन में।
फेरे जब सांगी तब कोउ नहिं धीर धरे कायर
कम्पायमान होत देखि मन में॥
टूटि के पतंग जैसे परत पावक माहि ऐसे
टूटि परे बहु सांवतके गन में।
मारि घमसान करि सुन्दर जुहारे स्वामी सोई
शूर वीर रोपि रहे जोइ रन में॥

२

हाथ में गह्यो है खड्ग मारिवे कौं एक पग तनमन
आप नो समरपण कीनो है।
आगे करि मीचकौं परो है जाके रण बीच
टूकि टूकि होइ के भगाय रन दीनो है॥
खाइ लीन स्वामी को हरामखोर कैसे होइ
नामज़ाद जगत में जीत्यो पन तीनो है।
सुन्दर कहत ऐसो कोउ एक शूरवीर शशिको
उतारि कैं सुयश जाइ लीनो है॥

३

पांव रोपि रहे रण माहि रजपूत कोउ हय गज
गाजत जुरत जहां दल है।
बाजत जुझाऊ सहनाई सौध राग पुनि सुनत हो
कायरको छूटि जात कल है॥
झलकत बरछो तरछा तरवार वहे मार मार
करत परत खलभल है।
ऐसे युद्ध में अड़िग सुन्दर सुभट सोई घर माहि
सूरमा कहावत सकल है॥

४

धन वसन बहु भूषण सकल अङ्ग सम्पत्ति
विविध भांति भद्यो सब घर है।
श्रवण नकारो सुनि छिनक में छोड़ि जात ऐसे
नहिं जाने कछु आगे मोहि मर है॥
मन में उछाह रण मांहि टुक टुक होइ निरभय
निशङ्क वाके नेकहु न डर है।
सुन्दर कहत काहू देह को ममत्व नाहि सूरवाके
देखियत शोषं विनु धर है॥

५

जुझवे को चाव जाकों ताकि ताकि करे घाव
आगे धरि पांव फिरि पीछे न संभारि है।
हाथ लिये हथियार तीक्ष्ण लागायो धार वार
नहिं लागे सब पिशुन प्रहारि है॥
वोट नहिं राखे कछु लोट पोट होइ जात चोट
नहिं चूके सीस रिपु को उतारि है।
सुन्दर कहत ताहि नेकहु न सोच पोच ऐसो
शूरवीर धीर मीर जाइ मारि है॥

६

अधिक आजानुवाहु मन में उछाह किये दियो
गजराज मुख वर्षत नूर है।
काढ़े जब करवाल बाल ठाढ़े होइ तब अति
विकराल पुनि देखत करूर है॥
नेक न उसास लेत फौज को फटाय देत खेत नहिं
छाड़े मारि करे चकचूर है।
सुन्दर कहत ताको कीरति प्रसिद्ध होइ सोई
शूरवीर धीर स्वामिके हजूर है॥

सिन्धु—चौताला

ज्ञानको कवच अङ्ग जाहु सो न होइ भङ्ग टोप
शोषं झलकत परम विवेक है।
होके ताजी असवार लियो शमशेर सार
आगे हो को पांव धरे भागने को टेक है॥

छूटत वन्धक बाण वोते जहां घमसान देखि के
पिशुन दल मारत अनेक है।
सुन्दर सकल लोक माहि ता का जेजेकार ऐसो
शूरवीर कोउ कोटिन में एक है॥

२

शूरवीर रिपु को सनमुखी देखि चोट करे मारि
तब ताकि ताकि तरवार तीर सों।
साधु आठो याम बैठो मनहो सो युद्ध करे जाके
मुंह माथो नाहीं देखिये शरीर सो॥
शूरवीर भूमि पर दौरि करे दूरि लगे साधुनिको
पकरि राखे धरि धीर सो।
सुन्दर कहत तहां काहू को न पांव टिके साधु का
संग्राम है अधिक शूरवीर सों॥

३

खंच कर डोकमान ज्ञान के लगायो बाण मारि
महाबली मन जगत जिन रानो है।
ताके अगवानी पञ्च योद्धा उ कतल किये
और रह्यो सह्यो सब अरिदल भानो है॥
ऐसो कोउ सुभट जगत में न देखियत जाके आगे
काल हू कंपाय के परानो है।
नीति ब्रह्मवादको चलावत है आठो याम
सुन्दर कहत भक्त शूर जग जानो है॥

४

काम सो प्रबल महा जोते जिन तीनो लोक
सो तो एक साधुके विचार आगे हारो है।
क्रोध सो कराल जाके देखत न धरि धीर सो
उ साधु क्षमा के हथियारसों विदारो है॥
लोभ सो सुभट साधु तोष सो गिराय दियो मोह
सेनापति साधु ज्ञान सों प्रहारो है।
सुन्दर कहत ऐसो साधु कोउ शूरवीर ताकि
ताकि सबही रिपुन दल मारो है॥

५

मारे काम क्रोध जिन लोभ मोह पीस डारि
इन्द्रिय कतल करि कियो रजपूतो है।
मारो मदमत्त मन मारो अहङ्कार मीर मारि
मद मत्सरउ ऐसो रण रूतो है॥
मारो आशा तृष्णा जिन यापनी सापनी दोउ
सबको प्रहार निजपद्हि पहूतो है।
सुन्दर कहत ऐसो साधु कोउ शूरवीर वैरी सब
मारिके निचिन्त होइ सूतो है॥

बसन्त—चौताला

किये जिन मन हाथ इन्द्रिन को सब साथ घेरि घेरि
आपने हू नाथ सों लगाये हैं।
औरउ अनेक वैरी मारे सब युद्ध करि काम क्रोध
लोभ मोह खोदके बहाये हैं॥
किये हैं संग्राम जिन दिये हैं भगाय दल ऐसे
महा सुभट जे ग्रन्थनि में गाये हैं।
सुन्दर कहत और शूर योंही खपि गये साधु
शूरवीर वेद जगत में आये हैं॥

२

महामत्त हाथो मन राखा है पकरि जिन
अति हो प्रचण्ड जामें बहुत गुमान है।
काम क्रोध लोभ मोह बांधे चारो पांव पुनि
छूटने न पावे नेक प्राण फीलवान है॥
कबहुं तो करे ज़ोर सावधान सांझ भोर
सदा एक हाथ में अङ्कुस गुरुज्ञान है।
सुन्दर कहत और काहूके न वश होइ ऐसो कौन
शूरवीर साधुके समान है॥

साधुको अङ्ग

बहार—तिताला

प्रीति प्रचण्ड लगे परब्रह्महि और सबै कछु
लागत फीको।
शुद्ध हृदय मति होइ सुनिर्मल द्वैतप्रभाव
मिटे सब जीको॥
गोष्ठीज्ञान अनन्त चले जहां सुन्दर जैसे
प्रवाह नदी को।

ताहि तो आनि करो निशिवासर साधुको सङ्ग
सदा अति नीको ॥

२

जो कोउ जाइ मिले उनसो नर होत
पवित्र लगे हरिरङ्गा ।
दूत कलङ्क सबे मिट जात जु नीचहूं जाय
के होत उतङ्गा ॥
ज्यों जल और मलीन महा अति गङ्ग मिले होइ
जात है गङ्गा ।
सुन्दर शुद्ध करे ततकाल सो है जग माहि
बड़ो सतसङ्गा ॥

मल्हार—यत्

ज्यो लट भङ्ग करे अपने सम ता सन भिन्न कहै
नहि कोई ।
ज्यो द्रुम और अनेक हि भांतिन चन्दनके
ढिग चन्दन होई ॥
ज्यो जल क्षुद्र मिले जब गङ्गहि होत पवित्र
वहै जल सोई ।
सुन्दर जाति स्वभाव मिटे सब साधुके सङ्ग ते
साधु हि होई ॥

मल्हार—चौताला

जो कोउ आवत है उनके ढिग ताहि सुनावत
शब्द सन्देसा ।
ताहि के तैसो ही औषधि खावत जाहि के
रोग हिं जानत जैसो ॥
कर्म कलङ्क हो काटत है सब शुद्ध करे पुनि
काञ्चन तैसो ।
सुन्दर वस्तु विचारत हैं नित सन्तन को जु
प्रभाव है एसो ॥

२

जो परब्रह्म मिल्यो कोउ चाहत तो नित सन्त
समागम कीजे ।
अन्तर मेटि निरन्तर ह्वै करि ले उनको
अपनो मन दीजे ॥
वे मुख द्वार उचार करें कछु सो अनयास
सुधारस पीजे ।
सुन्दर सूर्य प्रकाशत है उर और अज्ञान
सबे तम छीजे ॥

मल्हार—यत्

जा दिन तें सतसङ्ग मिल्यो तब ता दिन तें
भ्रम भाग गयो है ।
और उपाय थके सबही जब सन्तन सोहम ज्ञान
दयो है ॥
पोत पखारहि क्यों करि छूवत एक अमोलिक
लाल लयो है ।
कौन प्रकार रहै रजनी तम सुन्दर सूर्य
प्रकाश भयो है ॥

मल्हार—चौताला

सन्त सदा सबको हित वाञ्छत जानत हैं
नर बूड़त काढ़े ।
दे उपदेश मिटाइ सबे भ्रम ले करि ज्ञान
जहाजहि चाढ़े ॥
ये विषया सुख नाहि न छाड़ित ज्यों कपि
मूढ़ गहै शठ गाढ़े ।
सुन्दर यों दुःखको सुख मानत हाट हि हाट
विकावत आढ़े ॥

२

सो अनयास तरे भवसागर जो सतसङ्गति में
चलि आवे ।
ज्यो कणिहारण भेद करे कछु आइ चढ़े
तिहिं नाव चढ़ावे ॥
ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र म्लेच्छ चांडाल हि
पार लंघावे ।
सुन्दर बार कछू नहीं लागत या नरदेह
अभयपद पावे ॥

१

ज्यों हम खांहि पिवें अरु ओढहिं तैसेहि
ए सब लोक बखाने ।

ज्यों जल में शशिके प्रतिबिम्ब हि आप
समा जलजन्तु प्रमाने ॥
ज्यों खगु छांह धरापर दीसत सुन्दर पच्छी
उड़े असमाने ।
त्यों शठ देहनके छत देखत सन्तनकी गति
क्या कोउ जाने ॥

जंगला—चौताला

जो खपरा कर ले घर डोलत मांगत भीखहिं
तो नहिं लाजै ।
जो सुख सेज पटम्बर अम्बर लावत चन्दन
तो अति साजै ॥
जो कोउ आइ कहे सुख ते कछु जानत ताहि
वयारसी बाजै ।
सुन्दर संशय दूरि भयो सब जो कछु साधु
करै सोइ छाजै ॥

२

कोउक निन्दत कोउक वन्दत कोउक आइके
देत है भच्छण ।
कोउक आइ लगावत चन्दन कोउक डारत
धूरि ततच्छण ॥
कोउ कहे यह मूरख दीसत कोउ कहे यह
आहि विचच्छण ।
सुन्दर काहु सों राग न द्वेष न ए सब जानहु
साधुके लच्छण ॥

३

तात मिले पुनि मात मिले सुत भ्रात मिले
युवती सुखदायी ।
राज मिले गज वाजि मिले सब साज मिले
मनवाञ्छित खायी ॥
लोक मिले सुरलोक मिले विधिलोक मिले
वैकुण्ठहि जायी ।
सुन्दर और मिले सब ही सुख दुर्लभ साधु
समागम भायी ॥

मनोहरछन्द—चौताला

देवहु भएते कहा इन्द्रहु भएते कहा विधिहु
के लोक तें कहा जो आइयतु है ।
मानुष भए तें कहा भूपति भए तें कहा द्विजहु
भए तें कहा पार जाइयतु है ॥
पशुहु भए तें कहा पच्छिहु भए तें कहा पन्नग
भएते कहो क्यों अघाइयतु है ।
छूटिवेकों सुन्दर उपाय एक साधुसङ्ग जिनकी
क्रपाते अति सुख पाइयतु है ॥

२

इन्द्राणी शृङ्गार करि चन्दन लगायो अङ्ग वाहि
देखि इन्द्र अति कामवश भयो है ।
शूकरी हु कर्दमके चहल में लोट करि आगे आइ
शूकरको मन हर लयो है ॥
जैसो सुख शूकर को तैसो सुख मघवाको तैसो
सुख नर पशु पच्छिन कों दयो है ।
सुन्दर कहत जाकों भयो ब्रह्मानन्द सुख सोइ साधु
जगत जनम जीत गयो है ॥

३

धूलि जैसो धन जाके शूलसे संसार सुख भूल जैसो
भाज देखे अन्त कसी यारी है ।
पाप जैसी प्रभुताई सांप जैसो सन्मान बड़ाइ हु
बीछुनी सी नागनि सी नारी है ॥
अग्नि जैसो इन्द्रलोक विघ्न जैसो विधि लोक
कीरति कलङ्क जैसी सिद्धि सोट डारी है ।
वासना न कोउ वाकी ऐसी मति सदा जाकी
सुन्दर कहत ताहि वन्दना हमारी है ॥

४

काम ही न क्रोध जाके लोभ ही न मोह ताके
मद ही न मत्सर कोउ न विकारो है ।
दुःख ही न सुख माने पाप ही न पुण्य जाने हरष न
शोक आने देहही तें न्यारो है ॥

निन्दा न प्रशंसा कर राग हो न दोष धरे लेन हो न
देन ताके कछु न पसारो है।
सुन्दर कहत ताको अगम अगाध गति ऐसो
कोउ साधु सो तो रामजीको प्यारो है॥

पीलू—चौताला

आठों याम यम नेम आठों जाम रहे प्रेम आठों
याम योग यज्ञ कियो बहु दान जू।
आठों याम जपतप आठों याम लियो व्रत आठों
याम तोरथ करत है न्हान जू॥
आठों याम पूजाविधि आठों याम आरति हु
आठों याम दण्डवत् सुमिरण ध्यान जू।
सुन्दर कहत तिन किया आठों याम सब सोइ
साधु जाके उर एक भगवान जू॥

पीलू—यत्

जैसे आरसोको मैल काटत सेकलगर मुख में
न फेर कोउ रहे वाको पोत है।
जैसे वैद्य नैन में सलाक मेलि शुद्ध करे पटल गिरात
तहां ज्यों को त्योंही जोत है॥
जैसे वायु बादर बखेरके उड़ाइ देत रवि तो
अकाश माहि सदा उदोत है।
सुन्दर कहत भ्रम सङ्ग में बिलाइ जात साधुहीके
सङ्गते स्वरूप ज्ञान होत है॥

२

मनका दादुर जीव सब जिवाए जिन बरषत
वाणी मुख मेघ कोसी धार कों।
देत उपदेश कोउ स्वारथ न लवलेश निशिदिन
करत हैं ब्रह्मही विचार कों॥
औरउ सन्देहन मिटावत निमिष माहि सूरज
मिटावत है जैसे अन्धकार कों।
सुन्दर कहत हंस वासो सुखसागरके सन्तजन
आए हैं सु पर उपकार कों॥

२

होरा हो न लाल हो न पारस न चिन्तामणि औरउ
अनेकन कहो कहा कोजिये।
कामधेनु सुरतरु चन्दन नदो समुद्र नौका जहाज
बैठि कबहूं क छोजिये॥
पृथ्वी अप तेज वायु व्योम लों सकल जड़ चन्द्र सूर्य
शीतल तप्त गुण लोजिये।
सुन्दर विचार हम सोधि सब देखे लोक सन्तनके
सम कहो और कहा दोजिये॥

पीलू—तिताला

जिन तन मन प्राण दोन्हो सब मेरे हेतु और
उ ममत्व बुद्धि आपनि उठाई है।
जागत हुं सोवत हुं गावत है मेरे गुण मेरोइ
भजन ध्यान दूसरो न काई है॥
तिनके तो मैं पोछें फिरत हों निशिदिन
सुन्दर कहत मेरो उनते बड़ाई है।
वे हैं मेरे प्रिय मैं हूं उनके अधीन सदा सन्तनको
महिमा तो श्रीमुख गाई है॥

२

प्रथम सुयश लेत शीलहु सन्तोष लेत क्षमा
दयाधर्म लेत पाप ते डरत है।
इन्द्रिनकों घेरि लेत मनहुं कों फेरि लेत योगको
युकति लेत ध्यान ले धरत है॥
गुरु को वचन लेत हरि जूको नाम लेत आत्माकों
सोधि लेत भौजल तरत है।
सुन्दर कहत जग सन्त कछु लेत नहिं सन्तजन
निशिदिन लेवोइ करत है॥

झंझौटी—तिताला

सांचो उपदेश देत भलो भलो शोख देत समता
सुबुद्धि देत कुमति हरतु है।
मारग दिखाय देत भावहु भकति देत प्रेमको
प्रतीति देत अभय भरतु है॥
ज्ञान देत ध्यान देत आत्मा विचार देत ब्रह्मको
बताइ देत ब्रह्म में चतुर है।
सुन्दर कहत जग सन्त कछु देत नाहिं सन्तजन
निशिदिन देवोइ करतु है॥

२

जगत व्यवहार सब देखत है ऊपर को
अन्तःकरण कौन नेक पहिंचानि है।
खादनके भोजनके हलन चलन कछू और कोउ
क्रिया के तो सोइ वो बखानि है॥
आपनेइ गुणनि आरोप अज्ञानो नर सुन्दर कहत
तातें निन्दाइ को ठानि है।
भाव में तो अन्तर है राति और दिन जैसो
साधुको परीक्षा कोउ कैसे करि आनि है॥

३

कूप में को मेड़का तो कूपको सराहत है
राजहंस सौं कहे कितोक तेरो सर है।
मसका कहत मेरो सरभर कौन उड़े मेरे आगे
गरुड़को केतिएक जर है॥
गुबरैंड़ा गोलो कौं ढुराइ करि माने मोद
मधुप कौं निन्दत सुगन्ध जाको घर है।
आपनि न जानै गति सन्तन कौं नाम धरे सुन्दर
कहत देखो ऐसो मूढ़ नर है॥

४

कोउ साधु भजनो कोज लवलीन अति कबहूं
प्रारब्ध कर्म धक्का आइ दयो है।
जैसे कोउ मारग में चलते अखट परे फेरि करि
उठे तब उभै पथ लयो है॥
जैसे कोउ चन्द्रमाको पूर्णकला क्षोण होइ सुन्दर
सकल लोक द्वितीया को नयो है।
देवको देवात न गयो तो कहा भयो वोर पातरि
को मोल सु तो नाहीं कछू गयो है॥

५

वही दागाबाज़ वही कुष्ठो कलङ्क भयो वही
महापापो वाकै नख शिख कोच है।
वहो गुरुद्रोहो गज ब्राह्मणको हननहार वही
आत्माको घाती हिंसा वाके बोच है॥
अघको समुद्र वही अघको पहार वहो सुन्दर
कहत वाको बुरो भांति मोच है।
वही है मलेछ वही चण्डाल बुरे ते बुरो सन्तनको
निन्दा करै सो तो महा नोच है॥

६

परि है वज्राङ्ग ताके ऊपरि अचान चक्र धूरि
उड़ि जात कहूं ठाहर न पाइ है।
पीछे के उकुग महा नरक में परे जाइ जपर तें
यमहु को मार बहु खाइ है॥
ताके पीछे भूत प्रेत स्थावर जङ्गम योनि सहेगो
सङ्कट तब पीछे पछिताइ है।
सुन्दर कहत और भुगते अनन्त दुःख सन्तन कौं
निन्दे ताको सत्यानाश जाइ है॥

७

ताही कौं भकति भाव उपजि है अनायास जाकी
मति सन्तन सौं सदा अनुरागो है।
अति सुख पावे ताके दुःख सब दूरि करे और उ
काहू को जिनि निन्दा मुख त्यागो है॥
संसारको पाश काटि पाइ है परम पद सन्त
सङ्ग ही तें जाको ऐसो मति जागो है।
सुन्दर कहत ताको तुरत कल्याण होइ सन्तन को
गुण गहे सोई बड़ि भागो है॥

८

योग यज्ञ जप तप तीरथ व्रतादि दान साधन सकल
नहिं याको सर भरि है।
और कोउ देवो देव उपासना अनेक भांति प्रज्ञा
सब दूरि करि मन ते निडरि है॥
सबहो के शीर्षपर पाउ दे मुकति होइ सुन्दर कहत
सा तौ जनमे न मरि है।
मनवचक्रम करि अन्तर न राख कछू सन्तनको
सेवा करे सोइ निस्तरि है॥

भक्तिज्ञानमिश्रित पद

सिन्धु—तिताला

बैठत राम हो उठत राम हो बोलत राम हो
राम रह्यो है।

जीमत राम ही पीवत राम ही सोमति राम ही
राम गह्यो है ॥
जागत राम ही सोवत राम ही जोवत राम ही
राम कह्यो है।
देत हु राम ही लेत हु राम ही सुन्दर राम ही
राम लह्यो है ॥

२

स्रोत हु राम ही नैन हु राम ही वक्त्र हु राम ही
राम ही गाजी।
शीर्ष हु राम ही हाथ हु राम ही पांव हु राम ही
राम ही साजी ॥
पेट हु राम ही पीठ हु राम ही रोम हु राम ही
राम ही बाजी।
अन्तर राम निरन्तर राम ही सुन्दर राम ही
राम विराजी ॥

३

भूमिहु राम ही आप हु राम ही तेज हु राम ही
वायु हु रामि।
व्योम हु राम ही चन्द्र हु राम ही सूरज राम ही
सीतल घामि ॥
आदि हु राम ही अन्त हु राम ही रोम रोम
राम ही राम ही थामि।
सुन्दर रामसों पूरि रह्यो जग राम बनावत है
सब कामि ॥

४

देख हु राम अदेख हु राम ही लेख हु राम
अलेख हु रामि।
एक हु राम अनेक हु राम ही शेष हु राम
अशेष हु रामि ॥
मौन हु राम अमौन हु राम ही गौण हु राम ही
भौन हु रामि।
बाहिर राम ही भीतर राम ही सुन्दर राम ही है
जगजामि ॥

५

दूर हु राम नजीक हु राम ही देश हु राम
प्रदेश हु रामि।
पूरब राम ही पश्चिम राम ही दक्षिण राम ही
उत्तर धामि ॥
आगें हु राम ही पीछे हु राम ही व्यापक
राम ही है वनधामि।
सुन्दर राम दशोदिश पूरण स्वर्गहु राम
पताल हुं रामि ॥

६

आपहु राम भी पावक राम ही भञ्जन राम
संवारण रामि।
इष्ट हु राम अदृष्ट हु राम ही दृष्ट हु राम
करै सब कामि ॥
वर्णहु राम अवर्ण हु राम ही रक्त न पीत न
श्वेत न श्यामि।
शून्य हु राम अशून्य हु राम ही सुन्दर राम ही
नाम अनामि ॥

अथ विपर्य अङ्ग

सिन्धु—तिताला

श्रवण हु देख सुने पुनि नयन हु जिह्वा
सूंघ नासिका बोल।
गुदा खाय इन्द्रिय जल पीवे बिन ही हाथ सुमेर
हि तोल ॥
ऊंचे पाइ मूंड़ नीचे कहुं विचरत तीन
लोक में डोल।
सुन्दर दास कहे सुनि ज्ञानी भली भांति या
अर्थ हि खोल ॥

२

अन्धा तीन लोक को देखे बहरा सुने बहुत
विधि नाद।
नकटा बास सकल को लेवे गूंगा करे बहुत
सम्वाद ॥

टूंटा पकरि उठावै पर्वत पङ्गुल करै नृत्य आह्लाद।
जो कोउ याको अर्थ विचारै सुन्दर सोई पावै स्वाद॥

३

कुञ्जर को कीरी गिलि बैठी सिंह हिं खाइ अघानो स्याल।
मछरी अग्नि माहि सुख पायो जल में रहती बहुत बेहाल॥
पङ्गु चढ़्यो पर्वत के ऊपर मृतकहिं देखि डरानो काल।
जाको अनुभव होइ सु जानै सुन्दर ऐसा उलटा ख्याल॥

४

बुन्द हो माझ समुद्र समानो राई माहि समानो मेरु।
पानी माहि तुम्बिका बूड़ी पाहन तिरत में लागी बेरु॥
तीन लोक में भया तमाशा सूरज कियो सकल अंधेरु।
मूरख होइ सु अर्थ हिं पावै सुन्दर कहै शब्द में फेरु॥

५

मछरी बगुला को गहि खायो मूसे खायो कारो सांप।
मृग्गी पकरि बिलैया खाई ताके मुये गयो सन्ताप॥
बेटी अपनी मां गहि खाई बेटे अपनो खायो बाप।
सुन्दर जो या अर्थ हिं बूझै सो पण्डित सो जाने आप॥

६

देव माहिते देवल प्रगव्यो देवल माहिते प्रगव्यो देव।
शिष्य गुरु हिं उपदेशन लाग्यो राजा करै रङ्कको सेव॥
वन्ध्या पुत्र पङ्ग एक जायो ताको घर खोवनको टेव।
सुन्दर कहै सो पण्डित ज्ञाता जो कोउ याको जानै भेव॥

काफी—तिताला

कमल माहिं तै पानी उपज्यो पानी माहि तें उपज्यो सूर।
सूरमाहि शीतलता उपजी शीतलता मैं सुख भरपूर॥
ता सुख को क्षय होइ न कबहूं सदा एक रस निकट न दूर।
सुन्दर कहै सत्य वह यों हीं या महिं रतो न जानहु कूर॥

२

हंस चढ़्यो ब्रह्माके ऊपर गरुड़ चढ़्यो पुनि हरिको पीठ।
बैल चढ़्यो है शिवके ऊपर सो हम देख्यो अपनी दीठ॥
देव चढ़्यो पातीके ऊपर जरख चढ़्यो डायन पै नीठ।
सुन्दर एक अचम्भा हुवा पानी माहि जलै अङ्गीठ॥

३

कपड़ा धोबी को गहि धोवै माटी बपुरी गढ़ै कुम्हार।
सुई विचारी दरजी हि सीवै सोना तावै पकरि सुनार॥
लकरी बढ़ई को गहि छीलै खाल सु बैठी धवै लोहार।
सुन्दर दास कहै सो ज्ञानी जो कोउ या को करै विचार॥

४

जा घर माहि बहुत सुख पायो ता घर माहि वसे अब कौन।
लागी सबै मिठाई खारी मीठो लागो एक बहु लौन॥

पर्वत उड़े रुई थिर बैठो ऐसो कोउ एक
बाजो पौन ।
सुन्दर कहे न माने कोउ ता ते पकरि
बैठ मुख मौन ॥

५

रजनी माहि दिवस हम देख्यो दिवस माहि
हम देखो रात ।
तेल भरो सम्पूरण ता में दीपक जरे जरे
नहि बात ॥
पुरुष एक पानी में प्रगटी ता निगुराको कैसो ज्ञात ।
सुन्दर सोई लहै अर्थ को जो नित करे पराई तात ॥

६

उनयो मेघ घटा चहुं दिसि तें वर्षण लग्यो
अखण्डित धार ।
बूड़ो मेह नदी सब सूखी झर लाग्यो
निशिदिन एक सार ॥
कांसा परी बीजुली ऊपर कियो सर्व कुटुम्ब संहार ।
सुन्दर अर्थ अनूपम या को पण्डित होइ सो
करे विचार ॥

७

बाड़ी माहीं झालो निपज्यो झालो माही
निपजो खेत ।
हंस हि उलटि श्याम रङ्ग लाग्यो भ्रमर उलटि
कर हुवा सेत ॥
शशि ह उलटि राहु को ग्रासो सूर्य उलटि करि
ग्रास्यो केत ।
सुन्दर सो गुरु को त्यजि भाग्यो निगुरा सेती
बांध्यो हेत ॥

८

अग्नि मंथन करि लकड़ी काटो सो वह लकड़ी
प्राण अधार ।
पानि मंथ करि घीव निकास्यो सो घृत खेवे
बारंबार ॥
दूध दही की इच्छा भागी जाको मथत
सकल संसार ।
सुन्दर अब तो भये सुखारे चिन्ता रही न
एक लगार ॥

९

पत्र माहि झोली गहि राखो योगी भिक्षा
मांगन जाय ।
जागी जगत सोवई गोरख ऐसा शब्द सुनावे आय ॥
भिक्षा परे बहुत विधि ताकी सो वह भिक्षा
चेल हिं खाय ।
सुन्दर योगो युग युग जीवे ता अवधूतकी
दूरि बलाय ॥

१०

निर्दय होइ तरे पशुघातक दयावन्त बूड़े भवमाहि ।
लोभी लगे सबन को प्यारो निर्लोभी को
ठौर हि नाहि ॥
मिथ्यावादी मिले ब्रह्म को सत्य कहे ते
यमपुर जाहि ।
सुन्दर धूप माहि शीतलता जलत रहे ते बैठे छाहि ॥

११

माय बाप तजि धी उमदानी हर्षत चली
खसमके पास ।
वह बेचारी बड़ी बखतावर जाके कहे
चलत है सास ॥
भाई भलो खरो हितकारी सर्व कुटुम्बको
कियो नास ।
ऐसी विधि घर बस्यो हमारो सुख सों सोवे
सुन्दर दास ॥

१२

परधन हरे करे परनिन्दा पर धीको राखे
घर माहि ।
मांस खाइ मदिरा पुनि पीवै ताहि मुक्ति को
संशय नाहि ॥

अकरम गहै कर्म सब त्यागी ताको सङ्गति
पाप नसाहि।
ऐसो करै सो सन्त कहावै सुन्दर अवर उपजि
मरि जाहि॥

१३

बढ़ही चरखा भलो संवारो फिरने लाग्यो
नीको भांत।
बहू सास को कहि समुझावै तू मेरे ढिग
बैठो कात॥
नेको तार न टूटे कबहूं पूनी घटे दिवस नहिं रात।
सुन्दर विधि सो बुने जुलाहा खासा निपजै
ऊंचो ज्ञात॥

१४

घर घर फिरै कुमारी कन्या जने जने सों
करतो सङ्ग।
वेश्या सो तो भई पतिवरता एक पुरुषके लागो अङ्ग॥
कलियुग माहो सतयुग थापो पापो उदय
धर्म को भङ्ग।
सुन्दर कहै सु अर्थ हिं पावै जो नीकें करि
त्यजो अनङ्ग॥

१५

विप्र रसोई करने लाग्यो चौका भीतर बैठो आइ।
लकरो माहो चूल्हो दोयो रोटी ऊपर तवा चढ़ाइ॥
खिचरो माहो हंड़िया रांधी सालन आक
धतूरा खाइ।
सुन्दर जीमत अति सुख पायो अब कै भोजन
कियो अघाइ॥

१६

टंल उलटि नायक कों लाद्यो वस्तु माहि
भरि गोन अपार।
भलो भांति को सौदा कोया आप हि
उन्तरया संसार॥
नायकनी पुनि हर्षत डोलै मोहि मिल्यो
नीको भर्तार।
पूंजी जाइ ग्राह कों सौंपी सुन्दर सिर ते
उतरी भार॥

१७

बणिक् एक बनिजो कों आयो परे ता बरा
भारी भेठ।
भलो वस्तु कछु लीन्हीं दीन्हीं खैंच गठरिया
बांधो एठ॥
सौदा कियो चल्यो पुनि घर कों लेखा कियो
घर तले बैठ।
सुन्दर ग्राह सुखो अति हूवो बैल गयो पूंजो में पैठ॥

१८

पहरायत घर मुस्यो ग्राह को रखा कर ने
त्यागो चोर।
कोतवाल काठो करि बांध्यो छूटे नहीं सांझ
अरु भोर॥
राजा गांव छोड़ि कर भाग्यो हुवो सकल
जगत में शोर।
प्रजा सुखो भई नगर में सुन्दर कोई जुलम न जोर॥

१९

राजा फिरै विपत्ति को मारो घर घर टूकरा
मांगै भीख।
पाय पयादो निशिदिन डोलै घोरा चालि
सकै नहीं वीख॥
आक धरंदुको लकरो चौंखे छाड़े बहुत
रसभरो ईख।
सुन्दर कोउ जगत् में विरलो या मूर्ख कोल विसोख॥

२०

पानी जरै पुकारै निशिदिन ताको अग्नि
बुझावै आइ।
हूं शीतल तू तप्त भयो क्यों वारंवार कहै समुझाइ॥
मेरो लपट तोहि जो लागै तौ तू भो शीतल
ह्वै जाइ।
कबहूं जरनि फेरि नहि उपजै सुन्दर सुख में
रहै समाइ॥

२१

खसम परो जोरूके पीछे कहो न माने भौंड़ी रांड़।
जित तित फिरे भटकती योंही तेतो किये
जगत में भांड़॥
तो ऊ भूख न भागी तेरी तू गिल बैठी सारी मांड़।
सुन्दर कहे सीख सुनि मेरी अब तू घर घर
फिरबो छांड़॥

२२

पंथी मांहि पंथ चलि आयो सो वह पंथ लख्यो
नहि जाइ।
वाही पंथ चल्यो उठि पंथी निर्भय देशमें
पहुंच्यो आइ॥
तहां दुकाल परे नहीं कबहूं सदा सुभिक्ष
रहे ठहराइ।
सुन्दर दुखी न कोऊ दीसे अक्षय सुख में रहे समाइ॥

२३

एक आखेटी बन में आयो खेलन लाग्यो
भली शिकार।
करमें धनुष कमर में तरकश सावज घेरे वारंवार॥
मारा सिंह व्याघ्र पुनि मारो मारो बहुत
मृगनिकी डार।
ऐसे सकल मारि घर लायो सुन्दर राज हि
कियो सुद्दार॥

२४

शुकके वचन अमृत मय ऐसे कोकिल धार रहे
मन माहि।
सारो सुनै भागवत कबहूं सारस तोऊ पावे नाहि॥
हंस चुगे मुकता फल अर्थ हि सुन्दर
मानसरोवर न्हाहि।
काग कवीश्वर विषयी जेते ते सब दौरि
करं कहि जाहि॥

२५

नष्ट छोंहि हिज भ्रष्ट क्रिया करि कष्ट किये
नहि पावे ठौर।
महिमा सकल गई तिन केरी रहत परग
नित रस सरमौर॥
जित तित फिरत नहीं कछु आदर तिन्ह को
कोउ न घाले कौर।
सुन्दर दास कहे समुझावे ऐसो कोउ करो
मति और॥

२६

शास्त्र वेद पुराण पढ़े किन पुनि व्याकरण
पढ़े ते कोइ।
सन्ध्या करे गहे षट्कर्म हि गुण अरु काल
विचारे सोइ॥
ऐसो काम तबही बनि आवे मनमें सब तजि
राखे दोइ।
सुन्दर दास कहे सुनि पण्डित राम नाम विन
मुक्ति न होइ॥

अपने भावको अङ्ग

धनाश्री—तिताला

एक ही आपुनो भाव जहां तहां बुद्धिके जोरतें
विभ्रम भासे।
जो यह क्रूर तो क्रूर उहां पुनि याके खिजेते
उहां पुनि खासे॥
जो यह साधु तो साधु उहां पुनि याके हसंते
उहां पुनि हासे॥
जैसोइ आपु करे मुख सुन्दर तैसोइ दर्पण
माहि प्रकासे॥

मनोहरछन्द—चौताला

जैसे श्वान कांचके सदन मध्य देखि और भूकि
भूकि मरत करत अभिमान जू।
जैसे गज स्फटिक शिला सो अरि तोरे दन्त
जैसे सिंह कूप माहि उझकि भुलान ज॥
जैसे कोउ फेरी खात फिरत सुखेवे जग तैसे
ही सुन्दर सब तेरोई अज्ञान जू।
आपही को भ्रम सो तो दूसरो दिखाई देत आपु
को विचारे कोउ दूसरो न आन ज॥

कायानट—चौताला

नीच उच्च बुरो भलो सुजन दुजन पुनि पण्डित
मूरख शत्रु मित्र रङ्क राव है।
मान अपमान पुनि पाप सुख दुःख दोउ स्वरग
नरक बन्ध मोच्छ दुको चाव है॥
देवता असुर भूत प्रेत कीट कुञ्जर श्रो पशु अरु
पच्छी स्वान शूकर विलाव है।
सुन्दर कहत यह एकइ अनेक रूप जोइ कछु
देखिये सु आपनोइ भाव है॥

२

याही के जागत काम याही के जागत क्रोध
याही के जागत लोभ याही मोह माता है।
याकौ याही बैरी होत या कौ याही मित्र होत
या कौ याही सुख देत याकौ याही दुःखदाता है॥
याही ब्रह्मा याही रुद्र याही विष्णु देखियत
याही देव दैत्य तच्छ सकल सन्दाता है।
याही कौ प्रभाव सो तो याही को दिखाइ देत
सुन्दर कहत यह आत्मा विख्याता है॥

३

याही कोतो भाव याहि ब्रह्म उपजावत है
याही को तो भाव याही निग्रह करत है।
याही को तो भाव याकों भूत प्रेत होइ लागी
याही को तो भाव याही कुमति हरत है॥
याही कोतो भाव याकों वायु को वघूरा करे
याही को तो भाव याही थिरके धरत है।
याही को तो भाव याको धारमें बहाय देत
सुन्दर याही को भाव याही लेत रत है॥

मलार-सहाना—यत्

आप ही को भाव सु तो आपकों प्रगट होत
आप ही आरोप करि आप मन लायो है।
देवो अन्य देव कोउ भावकों उपावे ताहि
कहे में स्त्रीपुत्रधन इनहीते पायो है॥
जैसे स्वान हाड़कों चखोर करि माने मोद
आपही को मुख फेरि लोहू चाट खायो है।

तैसे ही सुन्दर यह आपु ही चैतन्य आहि
आपुने अज्ञान करि भोर सो बंधायो है॥

इन्द्रवज्रछन्द—यत्

नीचते नीचह उच्चते ऊपर आगेते आगे है
पीछेते पीछो।
दूरिते दूरि नगीचते नीरे हि आड़ेते आड़ो है
तीछेते तीछो॥
बाहिर भीतर भीतर बाहिर ज्यों कोइ जाने
त्यों ही करि ईछो।
जैसोइ आपुनो भाव है सुन्दर तैसोइ है दृग
खोलिके वीछो॥

२

आपुने भावते सूर्यसो दीसत आपुने भावते
चन्द्र सो भावे।
आपुने भावते तार अनन्त जु आपने भावते
विद्युलतावे॥
आपुने भावते नूर है तेज है आपुने भावते
ज्योति प्रकासे।
तैसोही ताहि दिखावत सुन्दर जैसो ही होत है
ताहीको आवे॥

३

आपुने भावते सेवक साहिब आपुने भाव
सबै कोउ धावे।
आपुने भावते अन्य उपासत आपने भावते
भक्ति हु पावे॥
आपुने भावते दुष्ट संहारत आपुने भावते
बाहिर आवे।
जैसोइ आपुनो भाव है सुन्दर ताही कों
तैसोइ होइ दिखावे॥

४

आपुने भावते दूर बतावत आपुने भाव
नजीक बखानो।
आपुने भावते दूध पिवायो सु आपुने भावते
वीठल जानो॥

आपुने भावते चारि भुजा पुनि आपुने भावते
सींग सो मानो।
सुन्दर आपुन भावको कारण आपु हो
पूरणब्रह्म पिछानो॥

५

आपुने भावते होइ उदास जू आपने भावसों
प्रेम सो रोवे।
आपुने भाव मिल्यो पुनि जानत आपुने भावते
अन्तर जोवे॥
आपुने भाव रहे नित जागत आपुने भाव
समाधिमें सोवे।
सुन्दर जैसोइ भाव है आपुनो तैसोइ आपु
तहां तहां होवे॥

६

आपुने भावतें भूलि परो भ्रम देह स्वरूप भयो
अभिमानो।
आपुने भावतें चञ्चलता अति आपुने भावतें
बुद्धि थिरानो॥
आपुने भावतें आपु विसारत आपुने भावते
आतम ज्ञानो।
सुन्दर जैसोइ भाव है आपुनो तैसोइ होइ
गयो यह प्रानो॥

स्वरूप विस्मरण पद

मलार—चौताला

जा घटको उनहार है जैसि हि ता घट चेतन
तैसोइ दीसे।
हाथी की देह में हाथी सो मानत चीटो को
देहमें चीटो कीरीसे॥
सिंहको देह में सिंह सो मानत कीसको देह
में मानत कीसे।
जैसी उपाधि भई जहां सुन्दर तैसोइ होइ
रह्यो नख सीसे॥

२

जैसेही पावक काठके योगते काठ सो होइ
रह्यो इकठोरा।
दीरघ काठमें दीरघ लागत चोरे से काठमें
लागत चोरा॥
आपुनो रूप प्रकाश करे जब जारि करे
तब चोरको चोरा।
तैसोइ सुन्दर चेतन आपु सु आपु कों नाहि न
जानत चोरा॥

मनोहरछन्द—चौताला

अजर अमर अविनाशी अज स्वप्रकाश कहत
सकल जनश्रुति अवगाहे ते।
निर्गुण निर्मल अति शुद्ध निरबन्ध नित्य ऐसोउ
कहत और ग्रन्थनिके थाहेते॥
व्यापक अखण्ड एकरस परिपूरण है सुन्दर
सकल रमि रह्यो ब्रह्म ताहेते।
सहज सदा उदोत या होतें अचम्भो होत
आपुहीको आपु भूलि गयो सोतो काहेते॥

२

जैसे मीन मांसकों निगलि जात लोभ लगि
लोहको कण्टक नहि जानत उमाहेते।
जैसे कपि गागरि में मूंठ बांधि राखे सठ
छांड़ नहो देत सु तौ स्वादहिके वाहेते॥
जैसे वक नारियल चञ्चमारि लटकत सुन्दर
सहत दुःख देखि याहि लाहेते।
देहको संयोगइ इन्द्रिनिके वश परो आपहीकों
आपु भूलि गयो सुख चाहेते॥

इन्द्रवज्रछन्द—तिताला

ज्यो कोउ मद्य पिये अति छाकत नाहि
कछू सुध है भ्रम ऐसो।
ज्यो कोउ खाय रहे ठग मूरिहि जाने नहीं
कछु कारण तैसो॥

ज्यों कोउ बालक ग्रह उ पावत कम्प उठै
यह जानत भैसो ।
तैसो ही सुन्दर आपुकौं भूलि सुदेखहु चेत न
मानत कैसो ॥

२

ज्यो कोउ कूप में झांकि बलापत वैसो ही
भांति सो कूप बलापै ।
जौ जल हालत है लगि पौन कहे भ्रमतै
प्रतिबिम्ब हो कांपै ॥
देहके प्राणके जे मनके क्रत मानत है सब
मोहोको व्यापै ।
सुन्दर पेंच परौ अतिशय करि भूलि गयौ
भ्रमते भ्रम आपै ॥

३

ज्यों द्विज कोउक छाड़ि महामति शूद्र भयो करि
आपुकौ मान्यो ।
ज्यौं कोउ भूपति सोवत सेज सुरङ्क भयो
सुपने महि जान्यो ॥
ज्यौं कोउ रूपको राशि अत्यन्त कुरूप कहे
भ्रम मेचक आन्यौ ।
तैसे ही सुन्दर देह सो ह्वै करि या भ्रम आप ही
आपु भुलान्यो ॥

४

एकहि व्यापक वस्तु निरन्तर विश्व नहीं
यह ब्रह्म विलासे ।
ज्यों नर मन्त्रनि सौं दृग बांधत है कछु और ही
और ही भासे ॥
ज्यों रजनी महि बूझि परे नहीं जौ लगि
सूरज नाहि प्रकासे ।
त्यौं यह आपुन आपु न जानत सुन्दर हो रह्यो
सुन्दर दासे ॥

मनोहर छन्द—तितावा

इन्द्रिनिको प्रेरि पुनि इन्द्रिनके पीछे परो आपुनो
अविद्या करि आपतन गह्यो है ।
जोइ जोइ देहकौं सङ्कट कछु परे आइ सोइ सोइ
माने आपु याते दुख सह्यो है ॥
भ्रमत भ्रमत कहुं भ्रम को न पावे उर चिरकाल
बीत्यो पै स्वरूप को न लह्यो है ।
सुन्दर कहत देखो भ्रमकी प्रबलताई भूत
निमैं भूत मिलि भूत ह्वै रह्यो है ॥

२

जैसे शुक नलिनीन छाड़ि देत चञ्चलते जाने
काहु और मोहो बांधि लटकायो है ।
जैसे कपि गुञ्जनिकौ ढेरि करि माने आगि
आगे धरि तापे कछु शीत न गंमायो है ॥
जैसे कोउ दिशा भूलि जात हुतो पूरबको उलटि
अपूटो फेरि पश्चिमको धायो है ।
तैसे ही सुन्दर सब आपु ही को भ्रम भयो
आपु ही को भूलि करि आप ही बंधायो है ॥

३

जैसे कोउ कामिनोके हिये परि चूसे बाल
सुपनेमें कहे तेरे पुत्र काहु च्यो है ।
जैसे कोउ पुरुषके कण्ठ विसे हुतो मणि ढूंढ़त
फिरत कछु ऐसो भ्रम भयो है ॥
जैसे कोउ याब करि बावरो बकत डोले और ही
को और कहे सुधि भूलि गयो है ।
तैसे ही सुन्दर निज रूपकों विसारि देत
ऐसो भ्रम आपु ही को आपु करि लयो है ॥

४

दीन हीन छीण ह्वै जात छण छण माहि
देहके सुयोग पराधीन सो रहत है ।
शीत लगे घाम लगे भूख लगे प्यास लगे
शोकमोह मानि अति खेद को लहत है ॥
अन्ध भयो पङ्गु भयो मूक हु वधिर भयो ऐसो
मानि मानि भ्रम नदीमें बहतु है ।
सुन्दर अधिक मोहि याही तें अचम्भो आहि
भूलि के स्वरूप कों अनाथ सो कहतु है ॥

५

जैसे कोउ सुपनेमें कहे मैं तो ऊंट भयो जागि
करि देखे उहे मानव स्वरूप है।
जैसे कोउ राजा पुनि सोइ के भिखारी होइ
आंखि उघरे ते महा भुपनिको भूप है॥
जैसे कोउ मेचक सों कहे मेरो सिर कहां
मेचक गए ते जाने सिर तो तद्रूप है।
तैसे ही सुन्दर यह भ्रम करि भूल गए आपु
भ्रमके गएतें आप अति अनूप है॥

६

जैसे कोउ पोसतीको पाग परो भूमि पर
हाथ लेके कहे एक पाग मैं तो पाई है।
जैसे शेख चिल्लोइ मनोरथके कियो घर कहे
मेरो घर गयो गागरो गिराई है॥
जैसें काहु भूत लग्यो बकत है बावबांव
सुध सब दूरि भई औरे मति आई है।
तैसे ही सुन्दर यह भ्रम करि भूल्यो आपु भ्रमके
गएतें यह आत्मा सदाई है॥

७

आप ही चेतन्य यह इन्द्रियनि चेतन्य करि
आपु ही मगन होइ आनन्द बढ़ायो है।
जैसे नर शीतकाल सोवत निहालो वोढ़ आपु ही
तपत करि आपु सुख पायो है॥
जैसे बाल लकड़ी को घोरा करि डाक चढ़
आपु असवार होइ आपु ही कुदायो है।
तैसे ही सुन्दर यह जड़को संयोग पाइ आपु
सुख मानि मानि आपु ही भुलायो है॥

जयजयवन्ती—यत्

कहूं भूल्यो कामरत कहूं भूल्यो साधुयत कहूं
भूलो गेह मध्य कहूं वनवासी है।
कहूं भूलो नीच जानि कहूं भूलो ऊंच मानि कहूं
भूलो मोह व्याधि कहूं तो उदासी है॥
कहूं भूलो मौन धरि कहूं बकवाद करि कहूं
भूलो मक्के जाइ कहूं भूलो कासी है।
सुन्दर कहत अहङ्कार होते भूलो आप एक आवे
रोज़ अरु दूजी बड़ो हांसी है॥

२

मैं बहुत सुख पायो मैं बहुत दुःख पायो मैं अनन्त
पुण्य किये मेरे पोते पाप है।
मैं कुलीन विद्यावन्त पण्डित प्रवीण महा मैं तो
मूढ़ अकुलीन हीन मेरो बाप है॥
मैं हीं राजा मेरो आन फिरे चहुं चक्र मांहि मैं
तो रङ्क द्रव्यहीन मोहि तोसे ताप है॥
सुन्दर कहत अहङ्कार होते जीव भयो अहङ्कार
गये यह एक ब्रह्म आप है॥

१

देहहु पुष्ट लगे देहहु दूबरा लगे देहही को
शीत लगे देहही कों तावरो।
देह ही सुरूप लगे देह ही कुरूप लगे देह ही
यौवन लगे देह वृद्ध ज्यावरो॥
देह ही को तीर लगे देह ही को तुपक लगे
देह को कृपाण लगे देह ही को घावरो।
देह ही सो बांध्यो हेत आपु विषे मान लेत
सुन्दर कहत ऐसो बुद्धिहीन बावरो॥

इन्द्रवज्रछन्द

सुधमलार—चौताला

आपुही चेतन्य ब्रह्म अखण्डित सो भ्रमतें
काहु आन परेखे।
ढूंढ़त ताहि फिरे जितही तित साधन
योग बनावत भेखे॥
औरउ कष्ट करे अतिशय करि परितत्त्व
आतमतत्त्व न पेखे।
सुन्दर भूलि गयो निज रूप ही है करकङ्कण
दरपण देखे॥

२

सूत्र गरे महि मेलि भयो द्विज ब्राह्मण ह्वो
करि ब्रह्म न जान्यौ।
क्षत्रिय ह्वो करि छत्र धर्यौ शिर हय गज पैदल
सो मन मान्यौ ॥
वैश्य भयो वपुको वय देखत झूंठ प्रपञ्च
वाणिज्य ह्वो ठान्यौ।
शूद्र भयो मिलि शूद्र शरीरही सुन्दर आप नहीं
पहिचान्यौ ॥

३

ज्यौं रविकों रवि ढूढ़त है कहुं ताप मिले
तन शीत गवाऊं।
ज्यौ अग्निकौं अग्नि चाहत है पुनि शीतलता करि
ताप बुझाऊं ॥
ज्यौ कोउ सांझ भये नर टेरत है घर में
अपने घर जाऊं।
त्यौं यह सुन्दर भूलि स्वरूप हि ब्रह्म कहे
कब ब्रह्महि पाऊं ॥

४

आपन देखत है अपनो मुख दरपण काठ लग्यो
अति थूला।
जो दृग देखत हो रहि जात भयो तबही
पुतरी पर फूला ॥
काय अज्ञान रह्यो अभि अन्तर जानि सकै
नहीं आतम मूला।
सुन्दर यौं उपज्यो मन के मल ज्ञान बिना
निज रूप हि भूला ॥

५

दीन भयो बिललात फिरे नित इन्द्रिनिके
वश डोलत डोले।
सिंह नहीं अपनो बल जानत जम्बुक ज्यौं
जितही तित डोले ॥
चेतनता बिसराइ निरन्तर ले जड़ता भ्रम
गांठन खोले।
सुन्दर भूलि गयो निज रूपहि देह स्वरूप
भयो मुख बोले ॥

६

मैं सुखिया सुख सेज सुखासन हय गज भूमि
महारजधानी।
हूं दुखिया दिन रैन भरौं दुःख मोहि विपत्ति
परी नहीं छानी ॥
हूं अति उत्तम जात बड़ो कुल हूं अति नीच
क्रिया कुलहानी।
सुन्दर चेतनता न सम्भारत देह स्वरूप
भयो अभिमानी ॥

७

गर्भ विषे उत्पत्ति भई पुनि जन्म लियो
शिशु शुद्ध न जानी।
बाल कुमार किशोर युवादिक वृद्ध भये
अति बुद्धि नसानी ॥
जैसे ही भांति भई वपुकी गति तैसो ही होइ
रह्यो यह प्राणी।
सुन्दर चेतनता न सम्भारत देह स्वरूप भयो
अभिमानी ॥

८

ज्यों कोउ त्याग करे अपनो घर बाहर
जाइके वेश बनावे।
मुण्ड मुण्डाइके कान फराइ विभूति लगाइ
जटाउ रखावे ॥
जैसोइ स्वांग करे वपुको पुनि तैसोही मानत
सो ह्वै आवे।
त्यौं यह सुन्दर आपुन जानत भूलि स्वरूप हि
और कहावे ॥

साखी ज्ञानको अङ्ग

मनोहर छन्द—चौताला

चिति जल पावक पवन नभ मिलि करि शब्द
और रस स्पर्श रूप रस गन्ध जू।

श्रोत्र त्वक् चक्षु घ्राण रसना रसको ज्ञान
वाक् पाणि पाद पायु उपस्थावन्ध जू॥
मन बुद्धि चित्त अहङ्कार ए चौवीश तत्त्व
पञ्चवीश जीवतत्त्व करत है धन्ध जू।
षड्वीश वोहै ब्रह्म सुन्दर सुनिह करम व्यापक
अखण्ड एक रस निरसन्ध जू।

२

श्रोत्र दिक त्वक् वायु लोचन प्रकाशै रव नासिका
अश्वनी जिह्वा वरुण वखानिये।
वाक् अग्नि हस्त इन्द्र चरण उपेन्द्र वलमेन्द्र
प्रजापति गुदा मित्र हूं को ठानिये॥
मन चन्द्र बुद्धि विधि चित्त वासुदेव आहि
अहङ्कार रुद्रको प्रभाव करि मानिये।
याको सत्त पाइ सब देवता प्रकाशत हैं सुन्दर सु
आत्मा ही न्यारो करि जानिये॥

३

श्रोत्र सुने दृग देखत है रसना रस घ्राण
सुगन्ध पियारो।
कोमलता त्वक् जानत है पुनि बोलत है
मुख शब्द उचारो॥
पाणि गहे पद गौन करे मल मूत्र तजे
उभज अध द्वारो॥
जाके प्रकाश प्रकाशत हैं सब सुन्दर सोइ
रहे घट न्यारो॥

४

बुद्धि भ्रमे मन चित्त भ्रमे अहङ्कार भ्रमे कहा
जानत नाही।
श्रोत्र भ्रमे त्वक् घ्राण भ्रमे रसना दृग देखि
दसौं दिश जांही॥
वाक भ्रमे कर पाद भ्रमे गुद द्वार उपस्थ
भ्रमे कछु कांही।
तेरे भ्रमाये भ्रमे सबही गुण सुन्दर तू क्यों
भ्रमे इन माही॥

५

बुद्धि को बुद्धि अरु चित्त को चित्त अहं को अहं
मनको मन सोई।
नैन को नैन है वैन को वैन है कान त्वचा
त्वचा त्वक् कह जोई॥
प्राणको प्राण है जीभको जीभ है हाथका हाथ
पगो पग दोई॥
सीसको सीस है प्राणको प्राण है जीवको
जीव है सुन्दर सोई॥

सुघराई प्रश्न—चौताला

कैसेकें जगत यह रच्यो है जगतगुरु मोसौं कहो
प्रथम हो कौन तत्त्व कीन्हो है।
प्रकृति कि पुरुष कि महततत्त्व अहङ्कार कीधौं
उपजाये सत्व रज तम तीनो है॥
कीधौं व्योम वायु तेज अप कि अवनि कौन कीधौं
पञ्च विषय पसारि करि लीन्हो है।
कीधौं दश इन्द्रीको अन्तस्करण कौन सुन्दर
कहत कीधौं सकल विहीनो है॥

उत्तर—चौताला

ब्रह्मते पुरुष अरु प्रकृति प्रगट भई प्रकृति तें
महतत्व पुनि अहङ्कार है।
अहङ्कार हूते तीनगुण सत्व रज तम तमहू तें
महाभूत विषय पसार है॥
रजहूते इन्द्री दश पृथक पृथक भई सत्त्वहुते
मनआदि देवता विचार है।
ऐसे अनुक्रम करि शिष्यसौं कहत गुरु सुन्दर
सकल यह मिथ्या भ्रम जार है॥

प्रश्न—चौताला

मेरो रूप भूमि है कि मेरो रूप आप है कि
मेरो रूप तेज है कि मेरो रूप पौन है।
मेरो रूप व्योम है कि मेरो रूप इन्द्री है कि
अन्तरकरण है बैठो है कि गौन है॥

मेरो रूप त्रिगुण कि अहङ्कार महत्तत्व प्रभृति
पुरुष किधौं बोले है कि मौन है ।
मेरो रूप स्थूल है कि सूक्ष्म आहि मेरो रूप
सुन्दर पूछत गुरु मेरो रूप कौन है ॥

उत्तर—चौताला

तू तो कछु भूमि नाहि अप तेज वायु नाहि
व्योम पञ्च विषय नाहि सो तो भ्रम कूप है ।
तू तो कछु इन्द्री अरु अन्तःकरण नाहि
तीन गुणउ तू नाहि कोउ छांह धूप है ॥
तू तो अहङ्कार नाहि पुनि महतत्व नाहि
प्रकृति पुरुष नाहि तू तो सो अनूप है ।
सुन्दर विचार ऐसे शिष्यसों कहत गुरु नाहि
नाहि करते रहे सोई तेरो रूप है ॥

२

तेरो तो स्वरूप है अनूप चिदानन्द घन देह तो
मलिन जड़ यों विवेक कीजिये ।
तू तो निःसङ्ग निराकार अविनाशी अज देह तो
विनाशवन्त ताहि नहि धीजिये ॥
तू तो षड़उत्तर हित सदा एक रस देहके
विकार सब देह सिर दीजिये ।
सुन्दर कहत यों विचार आपु भिन्न जानि
परकी उपाधि कहा आप वैर कीजिये ॥

३

देहह नरक रूप दुःख को न वार पार देहह
स्वरगरूप झूंठो सुख मान्यो है ।
देहह को बन्ध मोच देहह अमोच मोच
देहह क्रियाकर्म शुभाशुभ ठान्यो है ॥
देहह में और देह स्वसो ह्वै विलास करे
ताहीको समुझि चित्त आतमा वखान्यो है ।
दोउ देहतें अतीत दोउको प्रकाश करै
सुन्दर चैतन्य रूप न्यारो करि जान्यो है ॥

४

देह हले देह चले देह हो सों देह मिले
देह खाइ देह पीवै देहही भरतु है ।
देहही हिवार गरे देहही पावक जारे
देह रणमाझ जूझि देहई परतु है ॥
देहह अनेकभांति विविधि करम करै चुम्बक को
सत्ता पाइ लोह ज्यों फिरतु है ।
आत्मा चैतन्य रूप व्यापक साखी अनूप
सुन्दर कहत सो तो जन्मे न मरतु है ॥

५

देहको न देह कछू देहका ममत्व छाड़ देह तो
दमामा दिये देह देहजात है ।
घट तो घटत घरो घट नाश होत घट घटके गयेतें
घटको न फेरि बात है ॥
पिण्ड पिण्ड माहि पिण्ड पिण्ड कोउ पावत है
पिण्ड पिण्ड खात पुनि पिण्डहीको पात है ।
सुन्दर न होइ जा सों सुन्दर कहत जग सुन्दर
चैतन्य रूप सुन्दर विख्यात है ॥

प्रश्नोत्तर—चौताला

देह यह किनको है देह पञ्चभूत निको
पञ्चभूत कौन तें है तामस अहङ्कार ते ।
अहङ्कार कौन तें है जासों कहे महत्तत्त्
कौन महत्तत्व तें है प्रकृति मझारते ॥
प्रकृति ह कौन तें है पुरुष है जाको नाम पुरुष सो
कौन तें है ब्रह्म निराधारते ॥
ब्रह्म अब जान्यौ हम जान्यौ है तो निश्चय करि
निश्चय हम कियो है तो चुप सुख हारते ॥

२

एक घट माहि सुगन्ध जल भरि राख्यौ एक घट
माहि तो दुर्गन्ध जल भरो है ।
एक घट माही पुनि गङ्गोदक राख्यौ आनि
एक घट माही आनि मदिराउ करो है ॥
एक घृत एक तेल एक माहि लघु नीत सब ही
में सविता को प्रतिबिम्ब परो है ।
तैसेही सुन्दर ऊंच नीच मध्य एक ब्रह्म देह
भेद देखि भिन्न भिन्न नाम धरो है ॥

३

भूमि परे आप आपहूके परे पावक है
पावकके परे पुनि वायु हु बहत है।
वायु परे व्योम व्योमहूके परे इन्द्रीदश
इन्द्रिनके परे अन्त:करण रहतु है ॥
अन्त:करण परे तीन गुण अहङ्कार
अहङ्कार परे महत्तत्त्व को लहतु है।
महत्तत्त्व परे मूल माया माया परे ब्रह्म
ताहो ते परात्पर सुन्दर कहतु है ॥

४

भूमि तो विलीन गन्ध गन्धहु विलीन आप आपहु
विलीन रस रस तेज खात है।
तेज रूप रूप वायु वायुहु स्पर्शलीन सो स्पर्श
व्योम सह तमहो विलात है ॥
इन्द्रिय दश जमन देवता विलीन सत्व तीन गुण
अहं महत्तत्त्व गिल जात है।
महत्तत्त्व प्रकृति प्रकृति ह्व पुरुष लीन
सुन्दर पुरुष जाइ ब्रह्ममें समात है ॥

५

आत्मा अचल शुद्ध एक रस रहे सदा देह
व्यवहार नमें देहहो सो जानिये।
जैसे शशिमण्डल अभङ्ग न हो भङ्ग होहि
कला आवे जाइ घट वढ़ि सो वखानिये ॥
जैसे द्रुम निश्चल नदीके तट देखियत
नदीके प्रवाह माहि चलतो सो मानिये।
तैसे आत्मा अतीत देहकों प्रकाशत है
सुन्दर कहत यों विचार भ्रम भानिये ॥

६

आत्मा शरीर दोउ एक मेक देखियत जब लगि
अन्त:करण में अज्ञान है।
जैसे अंधियारी रैन घर में अंधेरो होइ भाजनको
तेज ज्यों को त्यों हो विद्यमान है ॥
यद्यपि अंधेरे माहि नैन को न सूझे कछू तदपि
अंधेरे सों अलितही वखान है।
सुन्दर कहत तो लो एकमेक जानत है जो लों
नहि प्रगट प्रकाश ज्ञान भान है ॥

७

देह जड़ देवल में आत्मा चैतन्य देव याही को
समुझि कर या सो मन लाइये।
देवल को विनसत वार नहि लागे कछु देव तो
सदा अभङ्ग देवल में पाइये ॥
देवको सकतिकर देवलको पूजा होइ भोजन
विविधि भांति भोगहु लगाइये।
देवल ते न्यारा देव देवल में देखियत सुन्दर
विराजमान और कहां जाइये ॥

८

प्रीति सी न पाती कोउ प्रेम सो न फूल और
चित्त सो न चन्दन सनेह सो न सेहरा।
हृदय सो न आसन सहज सो न सिंहासन
भावसो न सेज और शून्य सो न गेहरा ॥
शील सोर प्राण नाहि ध्यान सो न धूप आन
ज्ञान सो न दीपक अज्ञानतम केहरा।
मनसो न माला कोउ सोहं सो न जाप और
आत्मा सो देव नाही देह सो न देहरा ॥

९

श्वासो श्वासो राति दिन सोहं सोहं होइ
जाप याही माला वार वार हृढ़के धरतु है।
देह परे इन्द्री परे अन्त:करण परे एकही
अखण्ड जाग तापुकों हरतु है ॥
काठको रुद्राक्षको और तुलसीको माला पुनि
इनके फिराये कौन कारज सरतु है।
सुन्दर कहत तातें आत्मा चैतन्य रूप आपुको
भजन सो तो आपुही करतु है ॥

१०

खीर नीर मिलि दोउ एकठेर होइ रहे नीर
छाड़ि हंस जैसे खीरको गहतु है।

कञ्चन में और धातु मिलि करि वान परो घट
　　करि कञ्चन सुनार ज्यों लहतु है ॥
पावकहु दारु मध्य दारुही सो होइ रह्यो
　　मथि करि काढ़े वाही दारु कौ दहतु है ।
तैसेही सुन्दर मिल्यौ आत्मा अनात्मा सो भिन्न
　　भिन्न करिए सुतो सांख्य यों कहतु है ॥

११

अन्नमय कोष सुतो पिण्ड है प्रगट यह प्राणमय
　　कोष पञ्चवायु हु वखानिये ।
मनोमय कोष पञ्च इन्द्रिय प्रसिद्ध मान पञ्च ज्ञान
　　इन्द्री विज्ञान कोष जानिये ॥
जाग्रत स्वपन विषे कहिये चत्वार कोष
　　सुषुपतिहु माहि कोष आनन्दमय मानिये ।
पञ्चकोष आत्माको जीवनाम कहिये है
　　सुन्दर शङ्कर मास सांख्य यह आनिये ॥

१२

जाग्रत अवस्था जैसे सदन में बैठियत तहां कछु
　　होइ ताहि भली भांति देखिये ।
स्वप्न अवस्था ज्यों वोवरे में बैठे जाइ रहे रहे
　　उहां उको वस्तु सब लेखिये ॥
सुषुप्ति भौंहरे में बैठे तें न सूझ परे महा अन्ध
　　घोरतम कछु वन पेखिये ।
व्योम अनुसूत घर वोवरे भोंहरे माहि सुन्दर
　　साक्षी स्वरूप तुरिया विशेखिये ॥

१३

जाग्रतके विषे जीव नैननिमें देखियत विविधि
　　व्योहार सब इन्द्रिय गहतु है ।
स्वपनहु माहि पुनि देसो ही व्योहार होत नैन
　　नितें आइ करि कण्ठमें रहतु है ॥
सुषुप्ति हृदयमें विलीन होइ जात जब जाग्रत
　　स्वपनको तो सुध न लहतु है ।
तीनहु अवस्था को साक्षी अब जाने आप
　　तुरिया स्वरूप वह सुन्दर कहतु है ॥

बिहारी—यत्

जाग्रत रूप लिये सब तत्त्वनि इन्द्रिय द्वार
　　करे व्यवहारो ।
स्वप्न शरीर भ्रमे नव तत्त्व को मानत है
　　सुख दुःख अपारो ॥
लीन सबे गुण होइ सुषोपति जाने नही कछु
　　घोर अंधारो ।
तीन को साक्षी रहे तुरीया तत्त्व सुन्दर सोइ
　　स्वरूप हमारो ॥

२

भूमिते सूक्ष्म आपको जानहु आपते
　　सूक्ष्म तेजको अङ्गा ।
तेजते सूक्ष्म वायु वहे नित वायुते सूक्ष्म
　　व्योम उतङ्गा ॥
व्योमते सूक्ष्म हैं गुण तीनहु ताते अहं
　　महतत्त्व प्रसङ्गा ।
ताहुतें सूक्ष्म मूल प्रकृति जो मूलते सूक्ष्म
　　ब्रह्म अभङ्गा ॥

३

ब्रह्म निरन्तर व्यापक अग्नि स्वरूप
　　अखण्डित है सब माही ।
ईश्वर पावक राशि प्रचण्ड जु सङ्ग उपाधि
　　लये वर ताही ॥
जीव अनन्त मसाल चिराग सो दीप पतङ्ग
　　अनेक दिखाही ।
सुन्दर द्वैत उपाधि मिटे जब ईश्वर जीव
　　जुदे कछु नाही ॥

४

ज्यों नर पावक लोह तपावत पावक लोह
　　मिले सु दिखाही ।
चोट अनेक परे घनकी सिर लोह बढ़े
　　कछु पावक नांही ॥
पावक लीन भयो अपने घर शीतल लोह
　　भयो तब तांही ।

त्यों यह आतम देह निरन्तर सुन्दर भिन्न रहै
मिलि मांहो ॥

बहार—यत्

आतम चेतन शुद्ध निरन्तर भिन्न रहै
कहुं लिप्त न होई।
है जड़ चेतन अन्तःकरण जु शुद्ध अशुद्ध
लिये गुण दोई ॥
देह अशुद्ध मलीन महा अति चाल न
चाल सकै पुनि वोई।
सुन्दर तीन विभाग किये बिनु भूलि परे
भ्रमते सब कोई ॥

बिहारी-बिहाग—यत्

ब्रह्म अरूप अरूपो पावक व्यापक युगल
न दोसत रङ्ग।
देह दारुतैं प्रगट देखियत अन्तःकरण
अग्नि है अङ्ग ॥
तेज प्रकाश कल्पना तौ लगि जौ लगि रहै
उपाधि प्रसङ्ग।
जहांके तहां लोन पुनि होई सुन्दर दोऊ
सदा अभङ्ग ॥

२

देह शराव तेल पुनि मारुत वातो अन्तःकरण
विचार।
प्रगट ज्योति यह चेतन दोसे जातें भयौ
सकल उजियार ॥
व्यापक अग्नि मथन करि जोये दीपक
बहुत भांति विस्तार।
सुन्दर अद्भुत रचना तेरी तूही एक अनेक प्रकार ॥

३

तिल में तैल दुग्ध में घृत है दारुमाहि पावक
पहिचान।
पुहप मांहि ज्यौ प्रगट वासना ईखमाहि
रस कहत वखान ॥

पोस्ता माहि अफोम निरन्तर वनस्पति
में शहद प्रमान।
सुन्दर भिन्न मिल्यौ पुनि दोसत देह
माहि यौ आतम जान ॥

४

जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति ताना अन्तःकरण अवस्था पावै।
प्राण चले जाग्रत अरु सुपनै सुषुप्ति में पुनि
अहनिंश धावै ॥
प्राण गए ते रहे न कोऊ सकल देखते घाट विलावै।
सुन्दर आत्म तत्त्व निरन्तर सो कतहूं कहुं
जाइ न आवै ॥

५

पंद्रह तत्त्व स्थूल कुम्भ में सूक्ष्म लिङ्ग भरा ज्यों तोय।
इहां जोव उहां आभा दोसे ब्रह्म इन्दु
प्रतिविम्बे दोइ ॥
घट फूटे जल गयो विलय ह्वै अन्तःकरण
कहे नहि कोइ।
तब प्रतिविम्ब मिले शशि बिम्बहि सुन्दर जीव
ब्रह्ममय होइ ॥

मनोहरछन्द—यत्

जैसे व्योम कुम्भके बाहिर अरु भीतर ज कोउ नर
कुम्भको हजार कोस ले गयो।
ज्योंहो व्योम इहां सोहो उहां पुनि अखण्ड
इहां न विछोह न तो उहां मेल है भयो ॥
कुम्भ तो नयो पुरानो होइ कै विनस जाइ व्योम तो
न ह्वै पुरानो नतो कछु है नयो।
तैसेहो सुन्दर देह आवै रहै नाश होइ आत्मा
अचल अविनाशो है अनामयो ॥

२

देहके संयोग होते शोत लगे घाम लगे देहके
संयोग होते छुधा तृष्णा पौनकौं।
देहके संयोग कहे सुखते अनेक बात देहके
संयोग ही पकरि रहे मौनकौं ॥

देहके संयोग होते कटुक मधुर स्वाद देहके
संयोग कहे खाव्यो खारो लोनकों ।
देहके संयोग होते सुखमाने दुखमाने देहके
संयोग गए सुखदु:ख कोन कों ॥

२

आपुको प्रशंसा सुनि आपुहो खुशाल होइ
आपुहो कों निन्दा सुनि आपु मुरझाय है ।
आपुहो कों सुख मानि आपु सुख पावत है
आपुहो कों दुःखमानि आपु दुःख पाय है ॥
आपुहो को रक्षा करि आपुहो को घात करे आपुहो
हत्यारो होइ गङ्गा जाइ न्हाय है ।
सुन्दर कहत ऐसे देह हीको आप मानि निज रूप
भूलि के करत हाय हाय है ॥

विचारको अङ्ग

मनोहरछन्द—चौताला

प्रथम श्रवण करि चित्त एकाग्र धरि गुरु मन्त्र
आगम कहे सोई धारिये ।
दुतीय मनन वाखाहो बिचार देखे जाई कछु सुने
ताहि केरिके सम्भारिये ॥
तृतीय ताहो प्रकार निदिध्यास गोकों करि निहसङ्ग
विचरिके अपनपो तारिये ।
साक्षात्कार याहो साधन करत होइ सुन्दर कहत
द्वैत बुद्धि यों निवारिये ॥

२

देखे तो विचार करि सुने तो विचार करि बोले तो
विचार करि करे तो विचार है ॥
खाइ तो विचार करि पीवे तो विचार करि सोवे तो
विचार करि तोहि तो विचार है ।
बैठे तो विचार करि उठे तो विचार करि चले तो
विचार करि साहि मतिसार है ।
देइ तो विचार करि लेइ ते विचार करि सुन्दर
विचार करि याहो निरधार है ॥

३

एकहो विचार करि सुखदुःख सम जाने एकहो
विचार करि मन सब धोई है ।
एकहो विचार करि संसार समुद्र तरे एकहो
विचार करि पार गति होई है ॥
एकहो विचार करि बुद्धि नाना भाव तजे एकहो
विचार करि दूसरो न कोई है ॥
एकहो विचार करि सुन्दर सन्देह मिटे एकहो
विचार करि एक ब्रह्म जोई है ।

इन्द्रवज्रछन्द—चौताला

रूपको नाश भयो कछु देखिये रूप तो रूपहि माहि
समावे ।
रूपको मध्य अरूप अखण्डित सो तो कछू कहुं
जाइ न आवे ॥
बीच अज्ञान भयो नव तत्त्वको वेद पुराण सबै
कोउ गावे ।
सोउ विचार करे जब सुन्दर सोधत ताहि कहूं
नहि पावे ॥

२

भूमि सु तो नहि गन्धको छांड़त नीर सु तो रसते
नहि न्यारो ।
तेज सुतो मिलि रूप रह्यो पुनि वायु स्पर्श सदा
सु पियारो ॥
व्योम रु शब्द जुदे नहो होत सु ऐसे हो अन्तःकरण
विचारो ।
ये नव तत्त्व मिले पुनि तत्त्वनि सुन्दर भिन्न
स्वरूप हमारो ॥

३

क्षीण सुपुष्ट शरीर कौ धर्म जु शीतरु उष्ण जरा
मृत्यु ठाने ।
भूख तृषा गुण प्राणकौं व्यापत शोकरु मोह उभय
मन माने ॥
बुद्धि विचार करे निशिवासर चित्त चितेसु अहं
अभिमाने ।
सर्व को प्रेरक सर्व को साक्षो सुन्दर आपको
न्यारो हो जाने ॥

४

रूप परको न जानि परै कहु उठत है जिहि
मूलतें छानो।
नाभि विषय मिलि समखर निसौं पुरुष संयोग
पश्यंति बखानो॥
नाद संयोग हृदय पुनि कण्ठजु मध्य माया हो
विचारतें जानो।
अक्षरभेद लिये मुखद्वार सु बोलत सुन्दर वै
खरी वानी॥

५

ज्यों कोउ रोग भयो नरके घट वैद्य कहै यह
वायु विकारा।
कोउ कहै यह आइ लगी सब पुण्य किये कछु
होइ उबारा॥
कोई कहै यह टूक पड़ी कछु देवनि दोष कियो
निरधारा।
तैसेंही सुन्दर तत्त्वनिके मत भिन्न हि भिन्न कहै
जु विचारा।

६

ये विषयी तम पूरि रहे तिनकों रजनी महिं
बादर छायौ।
कोउ मुमुक्षु किये गुरुदेव तिन्हैं भय युक्त जुशब्द
सुनायौ॥
बादर दूरि भये उनके पुनि तारनि सो रजु
सर्प दिखायौ।
सुन्दर सूर्य्य प्रकाशत ही भ्रम दूरि भयो रजु
को रजु पायौ॥

७

कर्म शुभाशुभकी रजनी पुनि अर्ध तमोमय अर्ध
उजारो।
भक्ति सुता यह है अरुणोदय अन्त निशादिन
सन्ध्य विचारो॥
ज्ञान सुभान सदोदित वासर वेद पुराण कहै
जु पुकारो।
सुन्दर तीन प्रभाव बखानत यों निश्चय समुझो
० विधि सारो॥

मनोहर छन्द

काफी—तिताला

देहहू कों आपु मान देहहू सो होइ रह्यौ जड़ता
अज्ञानतम शूद्र सोई जानिये।
इन्द्रिनिके व्यापारनि अत्यन्त निपुण बुद्धि तमोरज
दुहुंकरि वैश्यहु प्रमानिये॥
अन्तःकरण माहि अहङ्कार बुद्धि जाके रजगुणहहि
जानि क्षत्रिय पहिंचानिये।
सत्वगुण बुद्धि एक आत्मा विचार जाके सुन्दर कहत
वह ब्राह्मण बखानिये॥

२

आत्माके विषे देह आइ करि नाश होइ आत्मा
अखण्ड सदा एकइ रहतु है।
जैसे सांप कञ्चुकी को लिये रहै कोउ दिन जीरण
उतारि करि नूतन गहतु है॥
जैसे द्रुमहुंके पत्र फूल फल आइ होत ताहीके गए
तें पुनि औरहु लहतु है।
जैसे व्योममाहि अभ्र होइ कैं विलाइ जात ऐसो
सो विचार कछु सुन्दर कहतु है॥

३

खरी को डरी सौं अंक लिखके विचारियत
लिखत लिखत वह डरी घिसि जात है।
लेखो समुझो है यश समुझि परो है तब जोई कछु
सही भयो सोइ ठहरात है॥
दारु ही सो दारु मथ पावक प्रगट भयो वहे
दारु जारि करि पावक समात है।
तैसे ही सुन्दर बुद्धि ब्रह्मको विचार करि करत
करत वह बुद्धि हु विलात है॥

वसन्त—चौताला

आपुकों समुझि देखि आपुही सकल माहि
आपुहीमें सकल जगत देखियतु है।
जैसे व्योम व्यापक अखण्ड परिपूरण है बादर
अनेक नानारूप लेखियतु है॥
जैसे भूमि घट जल तरङ्ग पावक दीप वायुमें
बघूरो योंही विश्व देखियतु है।
ऐसेही विचारतें विचारहु विलीन होइ सुन्दरइ
सुन्दर रहतु पेखियतु है॥

२

देहको संयोग पाइ जीव ऐसो नाम धरो
घटके संयोग घटाकाश ज्यों कहायो है।
ईश्वर हु सकल विश्व में विराजमान मठके
संयोग मठाकाश नाम पायो है॥
महदाकाश माहि घट मठ देखियत बाहिर
भीतर एक गगन समायो है।
तैसेही सुन्दर ब्रह्म ईश्वर अनेक जीव त्रिविध
उपाधि भेद ग्रन्थनि में गायो है॥

प्रश्न—चौताला

देह दुःख पावे किधौं इन्द्री दुःख पावे किधौं
प्राण दुःख पावे जब लहै न अहार को।
मन दुःख पावे किधौं बुद्धि दुःख पावे किधौं
चित्त दुःख पावे किधौं दुःख अहङ्कार को॥
गुण दुःख पावे किधौं सूत्र दुःख पावे किधौं
प्रकृति दुःख पावे किधौं पुरुष अधार को।
सुन्दर पूछत कछू जानि न परत तातें कौन
दुःख पावे गुरु कहौ या विचार को॥

उत्तर—चौताला

देहको तो दुःख नाहि देह पञ्चभूत निको
इन्द्रियको दुःख नाहि दुःख नाहि प्राणको।
मनहुको दुःख नाहि बुद्धिहुको दुःख नाहि
चित्तहुको दुःख नाहि दुःख अभिमानको॥
गुणनिको दुःख नाहि सूत्रहुको दुःख नाहि
प्रकृतिको दुःख नाहि दुःख न पुमानको।
सुन्दर विचारि ऐसे शिष्य सों कहत गुरु दुःख
एक देखियत बीचके अज्ञानको॥

२

पृथवी भाजन अङ्ग कनक कटक पुनि जलहु
तरङ्ग दोउ देखि के बखानिए।
कारण कारज ये तो प्रगट हि स्थलरूप ताहि तें
नजर माहि देखि करि आनिए॥
पावक पवन व्योम ये तो नहि देखियत दीपक
बघूरा अभ्र प्रत्यक्ष प्रमानिये।
आत्मा अरूप अति सूक्ष्मते सूक्ष्म है सुन्दर
कारण तातें देह में न जानिये॥

३

जैनमत उह जिन राजकौं न भूलि जाइ दान
तपशील सांचो भावना तें तरिये।
मनवचकाय शुद्ध सब सो दयाल रहो दोष बुद्धि
दूरि करि दया उर धरिये॥
बोधि नाम तब जब मनको निरोध होइ बोधिको
विचार सोधि आत्माको करिये।
सुन्दर कहत ऐसे जीवत हो मुक्ति होइ मुयेतें
मुकति कहे तिन्हें परहरिये॥

४

देह वोर देखिये तो देह पञ्चभूत निको
ब्रह्मा वोर कीट लगि देहइ प्रमान है।
प्राण वोर देखिये तो प्राण सबही को एक क्षुधा
अरु तृषा दोउ व्यापत समान है॥
मन वोर देखिये तो मनको स्वभाव एक
सङ्कल्प विकल्प करि सदाइ अज्ञान है।
आत्मा विचार किये आत्माहि दीसे एक सुन्दर
कहत कोउ दूसरो न आन है॥

ब्रह्म निष्कलङ्क अङ्ग
मनोहरछन्द—यत्

एक कोउ दाता गाय ब्राह्मणको देत दान
एक कोउ दयाहीन मारत निःशङ्क है।

एक कोउ तपसी तापस्या माहि सावधान एक
कोउ कामी क्रीड़े कामिनीके अङ्ग है ।
एक कोउ रूपवन्त अधिक विराजमान एक कोउ
कोढ़ो कोढ़ चुवत करङ्ग है ।
आरसी मे प्रतिविम्ब सबही को देखियत
सुन्दर कहत एक ब्रह्म निषकलङ्ग है ॥

२

रविके प्रकाश तें प्रकाश होत नेन निको
सब कोउ शुभाशुभ कर्मको करतु है ।
कोउ यज्ञ दान जप तप यम नेम व्रत कोऊ इन्द्री
वस करि ध्यानको धरतु है ॥
कोउ परदारा परधनको तकत जाइ कोउ हिंसा
करिके उदरको भरतु है ।
सुन्दर कहत ब्रह्म साचोरूप एक रस वाही
में उपजि करि वाही में मरतु है ॥

३

ऐसे जन्तु जलमें नहीं उतपन्न होहि सब जलही में
विचरत जलके अधार है ।
जलही में क्रीड़त विविध व्यवहार होत काम
क्रोध लोभ मोह जलमें संसार है ॥
जलको न लागे कछू जीवनके राग द्वेष उनही
को क्रिया कर्म उनहीको लार है ।
तैसेही सुन्दर यह ब्रह्म में जगत् सब ब्रह्म
को न लागे कछु जगत विकार है ॥

४

स्वेदज जरायुज अण्डज उद्भिज पुनि चारि खानि
तिनको चौराशी लाख जन्तु है ।
जलचर थलचर व्योमचर भिन्न देह पञ्चभूत
भूत निको उपजि खवंत है ॥
शीत घाम पवन गगन में चलत आइ गगन
अलिप्त जामें मेघउ अनन्त है ।
तैसेही सुन्दर यह सृष्टि एक ब्रह्म माहि
ब्रह्म निषकलङ्क सदा जानत महंत है ॥

आत्मा अनुभव अङ्ग—लावनी

है दिल में दिलदार सही अँखिया उलटी करि
ताहि चितैये ।
आब में खाक में बाद में आत्मा जान में
सुन्दर जाय जनैये ॥
नूर में नूर है तेज में तेज है ज्योति में
ज्योति है मिल मिल जैये ।
क्या कहिये कहते न बने कछू जो कहिये
कहते ही लजैये ॥

२

जासौं कहं सब में वह एक है ता सो कैसो है
आंखि दिखैये ।
जो कहं रूप न रेख तिसे कछु तौ सब झूंठके
माने कहैये ॥
जो कहु सुन्दर नैन नि मांझि तौ नैन हु
बैन गये पुनि हैये ।
क्या कहिये कहते न बने कछु जो कहिये
कहते ही लजैये ॥

३

होत विनोद जितो अभि अन्तर सो सुख
आपनो आप ही पैये ।
बाहिर को उमग्यो पुनि आवत कण्ठते
सुन्दर फेर पठैये ॥
स्वादन रैवन बेरो न जाहि मनो गुड़ गूंगहि
ज्यो नित खैये ।
क्या कहिये कहते न बने कछु जो कहिये
कहते ही लजैये ॥

४

व्योम सो सौम्य अनन्त अखण्डित आदि न अन्त
सुमध्य कहां है ।
को परिमाण करे परिपूरण द्वैत अद्वैत
कछू न जहां है ॥
कारण कारज भेद नहीं कछू आपु में आपुही
आपु तहां है ।

सुन्दर दीसत सुन्दर माहि सु सुन्दरता कहि
कौन उहां है ॥

प्रश्नोत्तर—लावनी

एक कि दोय न एक न दोय उहीं कि इहीं
न उहीं न इहीं है।
शून्य कि स्थूल न शून्य न स्थूल जहीं कि तहीं
न जहीं न तहीं है ॥
मूल कि डाल न मूल न डाल वहीं कि महीं
न वहीं न महीं है।
जीव कि ब्रह्म न जीव न ब्रह्म तो है कि नहीं
कछु है कि नहीं है ॥

२

एक कहूं तो अनेक सो दीसत एक अनेक नहीं
कछु ऐसो।
आदि कहूं तोहि अन्तहु आवत आदि न अन्त
न मध्य सु कैसो ॥
गोप कहूं तो अगोप कहा यह गोप अगोप न
ऊभो न वैसो।
जोई कहूं सोइ है नहो सुन्दर है तो सही
परि जैसे को तैसो ॥

मनोहरछन्द—लावनी

एक जु कहै कोउ एक ही प्रकाशत है दोइ
जो कहै कोउ दूसरो न देखिये।
अनेक जो कहै कोउ अनेक भासै ताहि कौ
जाकी जैसो भाव ता की तैसेहि विशेखिये ॥
वचन विलास कोउ कैसे ही बखान कहौ व्योम
माहि चित्र कहूं कैसे करि लेखिये।
अनुभव किये तें एक दोइ न अनेक कछु सुन्दर
कहत ज्यौं को त्यौं ही ताहि पेखिये ॥

२

वचनहि वेद विधि वचनहि शास्त्र पुनि वचनहि
श्रुति अरु वचन पुरान जू।
वचनहि और ग्रन्थ वचनहि व्याकरण वचनहि
काव्य छन्द नाटक बखान जू ॥
वचनहि संस्कृत वचनहि प्राकृत वचनहि भाषा
सब जगत में जान जू।
वचनके परे है सुवचन में आवै नाहि
सुन्दर कहत वह अनुभव प्रमान जू ॥

३

इन्द्री नही जानि सकै अल्प ज्ञान इन्द्रिनिको
प्राणहु न जान सकै श्वास आवै जाइ है।
मनहु न जान सकै सङ्कल्प विकल्प कर बुद्धिहु
न जानि सकै सुन्यौ सो बताइ है ॥
चित्त अहङ्कार पुनि एउ नहि जानि सकै शब्दहु
न जानि सकै अनुमान पाइ है।
सुन्दर कहत ताहि कोउ नहि जानि सकै दीवा
करि देखिये सु ऐसो नहो लाइ है ॥

इन्द्रवज्रछन्द—लावनी

श्रोत्र न जानत चक्षु न जानत जानत नाहो
सु सूंघत घ्राने।
ताहि स्पर्श त्वचा न सकै पुनि जानत नाहि
जू जीभ बखाने ॥
मन नाहि जानत बुद्धि न जानत चित्त अहं
कहि क्यौं पहिचाने।
शब्दहु सुन्दर जानि सकै नहीं आत्मा
आपुकौं आपुहि जाने ॥

२

सूर्यके तेजते सूरज दीसत चन्द्रके तेजते
चन्द्र उजावै।
तारेके तेजते तारे उ दीसत बीजुल तेजतें
बीजु प्रकावै ॥
दीपक तेजते दीपक दीसत हीरेके तेजतें
हीरो उ भावै।
तसैंही सुन्दर आत्मा जानहु आपके तेजतें
आप प्रकावै ॥

२

कोउ कहै यह सृष्टि सुभावतं कोउ कहै
यह कर्मतें सही।

कोउ कहै यह कालत पावत कोउ कहै
यह ईश्वर तिष्टी ॥
कोउ कहै यह ऐसेहो होत है क्यों करि
मानिये बात अनिष्टी ।
सुन्दर एक किये अनुभव विनु जानि
सके नही वाहिर दृष्टी ॥

४

कोउ तो मोच आकाश बतावत कोउ तो मोच
पतालके माहीं ।
कोउ तो मोच कहे पृथवीपर कोउ कहे कहीं
और कहांही ॥
कोउ बतावत मोच शिलापर कोउ कहे
मोच मिटे परछांही ।
सुन्दर आत्माके अनुभव विनु और कहूं
कोउ मोच ही नाही ॥

५

मुये तें मोच कहे सब पण्डित मुयेतें मोच
कहें पुनि जैना ।
मूयेतें मोच कहें ऋषि तापस मूयेतें मोच
कहें शिव सेना ॥
मूयेते मोच मलेच्छ कहे तेउ धोखेही धोखे
वखानत वेना ।
सुन्दर आत्माको अनुभव सोई जीवत मोच
सदा सु ववेना ॥

६

जाग्रत तो नहि मेरे विषे कछु स्वप्न सुतो
नहि मेरे विषे हे ।
नाहि सुषोपति मेरे विषे पुनि विश्वहु
तेजस प्राज्ञ पषे हे ॥
मेरे विषे तुरिया नाहि दीसत याहो ते
मेरो स्वरूप अषे हे ।
दूरिते दूरि परेते परे अति सुन्दर कोउ न
मोहि लषे हे ॥

७

कोउ तो कहत ब्रह्म नाभिके कमल मध्य
कोउ तो कहत ब्रह्म हृदय में प्रकाश है ।
कोउ तो कहत कण्ठ नासिकाके अग्रभाग
कोउ तो कहत ब्रह्म भ्रुकुटी में वास है ॥
कोउ तो कहे ब्रह्म दसए द्वारेके बीच कोउ तो
कहे भौंर गुफा में निवास है ।
पिण्डते ब्रह्मण्डते निरन्तर विराजे ब्रह्म सुन्दर
अखण्ड जैसे व्यापक आकास है ॥

८

पानि जिन गह्यौ सो तो कहत जखर सो पूंछ
जिन गह्यो तिन लानसो सुनायो है ।
सूंड़ जिन गह्यो तिन दगलीको बांह कह्यौ
दांत जिन गह्यौ तिन सूंसर दिखायो है ॥
कान जिन गह्यौ तिन सूपसो बनाय कह्यौ
पीठि जिन गह्यो तिन पिटेरा बतायो है ।
जैसो है सु तै सो ताहि सुन्दर सयांखो देखे
आंधरे ने हाथो देख झगरो मचायो है ।

९

न्याय शास्त्र कहे प्रगट ईश्वर वाद मीमांसक
शास्त्र महि कर्मवाद कह्यौ है ।
वैशेषिक शास्त्र पुनि कालवाद है प्रसिद्ध पातञ्जल
शास्त्र माहि योगवाद लह्यौ है ॥
सांख्यशास्त्र माहि पुनि प्रकृति पुरुषवाद
वेदान्त शास्त्रमाहि ब्रह्मवाद गह्यौ है ।
सुन्दर कहत षट्शास्त्र माहि भयो वाद जाके
अनुभव ज्ञान सु तो वाद में न वह्यौ है ॥

१०

प्रज्ञानमानन्द ब्रह्म ऐसे ऋग्वेद कहे अहं
ब्रह्मास्मीति यजुर्वेद यौं कहै ।
तत्त्वमसीति सामवेद यौं वखानत है अयं
आत्म ब्रह्मवेद अथर्वन कहै ॥

एक एक वचन में तीन पद हैं प्रसिद्ध तिनको
विचार करि अर्थ तसु को गहै।
चारि वेद भिन्न भिन्न सबको सिद्धान्त एक सुन्दर
समुझि कर चुपचाप ह्वै रहै॥

सिन्धु—लावनी

इन्द्रियको भोग जब चाहे तब पाइ रहे
मायावन्त तो तैं तुच्छानन्द यों सुनायो है।
देवलोक इन्द्रलोक विधिलोक शिवलोक वैकुण्ठके
सुखनी गननृतानन्द गायो है॥
अक्षय अखण्ड एक रस परिपूरण है ताही ते
पूर्णानन्द अनुभव तैं पायो है।
याहीके अन्तरभूत आनन्द जहांलौं और सुन्दर
समुद्र माहि सर्वजल आयो है॥

सिन्धु—ठुमरी

एक तो मायाविलास जगत प्रपञ्च यह चारि खानि
भेद पाइ द्वैत भास रह्यो है।
दूसरो विषय विलास इन्द्रियके विषय पञ्च
शब्दहु स्पर्श रूप रस गन्ध गह्यो है॥
तीजो वाचक विलास सो तो सब वेद माहि वरनि
कै जहां लगि वचन तैं कह्यो है।
चौथो ब्रह्म को विलास तिहंको अभाव जहां
सुन्दर कहत वह अनुभव ते लह्यो है॥

२

जीवतही देवलोक जीवतही इन्द्रलोक
जीवतही जन तप सत्यलोक आयो है।
जीवतही विधिलोक जीवतही शिवलोक
जीवतही वैकुण्ठलोक जो अकुण्ठ गायो है॥
जीवतही मोक्षशिला जीवतही भिस्त माहि
जीवतही निकट परम पद पायो है।
आत्माको अनुभव जिनकौं जीवतही है भयो
सुन्दर कहत तिन संशय मिटायो है॥

३

इच्छाही न प्रकृति न महत तत्त्व अहङ्कार त्रिगुण
न व्योम आदि शब्दादि न कोय है।
श्रवनादि वचनादि देवता न मन आदि सूक्ष्म
न स्थूल पुनि एकहो न दोय है॥
स्वेदज न अण्डज जरायुज न उद्भिज पशुहीन
पक्षीहीन पुरुष न जोय है।
सुन्दर कहत ब्रह्म ज्योंको त्योंहि देखियत न तो
कछु भयो अब ह्वै न कछु होय है॥

४

छिति भ्रम जल भ्रम पावक पवन भ्रम व्योम
भ्रम तिन के शरीर भ्रम मानिये।
इन्द्री दश तेउ भ्रम अन्तरकरण भ्रम तिनहुके
देवता सुभ्रमते वखानिये॥
सत्व रज तम भ्रम पुनि अहङ्कार भ्रम महतत्त्व
प्रकृति पुरुष भ्रम भानिये।
जोइ कछु कहियेसु सुन्दर सकल भ्रम अनुभव
किये तें एक आत्मा ही जानिये॥

५

भूमि हु विलीन होइ आपहु विलीन होइ तेजहू
विलीन होइ वायु जो वहतु है।
व्योमहु विलीन होइ त्रिगुण विलीन होइ
शब्दहु विलीन होइ अहं जो लहतु है॥
महतत्त्व विलीन होइ प्रकृति विलीन होइ पुरुष
विलीन होइ देह जो गहतु है।
सुन्दर सकल जो जो कहिये सो सो लीन होइ
आत्माको अनुभव आत्मा रहतु है॥

६

मायाको अपेक्षा ब्रह्म रात्रिको अपेक्षा दिन जड़को
अपेक्षा करि चेतन वखानिये।
अज्ञानको अपेक्षा ज्ञान बन्धको अपेक्षा मोक्ष
द्वैतको अपेक्षा सुतो अद्वैत प्रमानिये॥
दुःखको अपेक्षा सुख पापको अपेक्षा पुण्य
झूठको अपेक्षा ताहि सत्य करि मानिये।
सुन्दर सकल यह वचन विलास भ्रम वचन
अवचन रहित सोई ब्रह्म जानिये॥

७

आत्मा कहत गुरु शुद्ध निरबन्ध नित्य सत्य करि
मानि सुनो शब्द प्रमाण है।
जैसे व्योम व्यापक अखण्ड परिपूरण है व्योम
उपमान उपमान सों प्रमाण है॥
जाको सत्ता पाइ सब इन्द्रिय चैतन्य होंहि
यहां अनुमान अनुमानहु प्रमाण है।
अनुभव जानें तब सकल सन्देह मिटे
सुन्दर कहत यह प्रत्यक्ष प्रमाण है॥

८

एक घर दोइ घर तीन घर चार घर पञ्च घर
तजी जब छठो घर पाइ है।
एक एक घरके आधार एक एक घर एक घर
निराधार आपुहो दिखाइ है॥
सुतो घर साक्षीरूप घर घरमें अनूप ताहु घर
मध्य कोउ दिन ठहराइ है।
ताके परे साक्षी न असाक्षी न सुन्दर कछू
वचनातीत कहूं आइ है न जाइ है॥

९

एकतो श्रवण ज्ञान पावक ज्यों देखियत माया
जाल परसत वेगि बुझजात है।
एक है मनन ज्ञान विज्जल ज्यों घनमध्य माया
जल वरषत तामें न भ्रमात है॥
एक निदध्यास ज्ञान वड़वा अनल सम प्रगट
समुद्र माहि मायाजल खात है।
आत्मानुभव ज्ञान प्रलय अगिनि जैसे सुन्दर
कहत द्वैत प्रपञ्च विलात है॥

कान्हरा—चौताला

चकमक ठोकेते चमत्कार कछु ऐसो है
जबलों श्रवण ज्ञान तब हो लों जानिये।
कब मन लागी जब प्रगटे पावक ज्ञान सुलगत
जात वह मनन बखानिये॥
वर्द्धमान भये काठ कर्म नि जरावत है वहै
निदध्यास ज्ञान मन्थन में गानिये।
सकल प्रपञ्च यह जारिके समाइ जात सुन्दर
कहत वह अनुभवैं प्रमानिये॥

२

भोजनको बात सुनि मनमें मुदित होत मुखमें
न परे जोलों मेलिये न ग्रास है।
सकल सामग्री आनि पाक कों करन लाग्यो
मनन करत कब जेउं यह आस है॥
पाक जब भयो तब भोजन करन लाग्यो मुख में
मेलत जात उहै निदध्यास है।
भोजन पूरण करि तृपत भयो है तब सुन्दर
साकार अनभो प्रकाश है॥

३

श्रवण करत जब सबसो उदास होइ चित्त एकाग्र
आनि गुरुमुख सुनिये।
बैठके एकन्त ठौर अन्त:करण माहि मनन करत
फेरि वह ज्ञान गुनिये॥
ब्रह्मकों परोक्ष जानि कहत है ब्रह्म सोहं सोहं
होइ सो निदध्यास धुनिये।
इह अनुभव इह कहिये साक्षात्कार सुन्दर
ए लालेते गलि पानो होइ सुनिये॥

४

जब हो जिज्ञास होइ चित्त एकठोरे आनि मृग
ज्यों सुनत नाद श्रवण सो कहिये।
जैसे स्वाति बूंदनु कों चातक रटत पुनि
ऐसेही मनन करे कब बुन्द लहिये॥
जैसे रात्रिदु चकोर चन्द्रमाकों ध्यान करे ऐसे
जानि निदध्यास दृढ़ करि गहिये।
सुन्दर साक्षात्कार कीट जैसे होत भृङ्ग उहे
अनुभव उहे स्वस्वरूप रहिये॥

५

काहुकों पूछत रङ्क धन कैसे पाइयत कान
देके सुनत श्रवण सोइ जानिये।

उन काढो धन हम देखो है फलानो ठोर
मगन करत भयो कब घर आनिये ॥
फेरि जब काढ्यो धन गाड़ो तेरे घर माहि खोदन
लग्यो हे तब निदध्यास ठानिये।
धन निकरो हे जब दरिद्र गयो हे तब सुन्दर
साक्षात्कार नृपति बखानिये ॥

ज्ञानीको अङ्ग

मेघ—चौताला

जाके हृदयमें ज्ञान प्रकाशत ताको स्वभाव रहे
नहि छानो।
नेनमें बैनमें सेनमें जानिये उठत
बैठत हे अलसानो ॥
सो कछु भक्ष किये उदगारत कैसेहुं राखि
सके न अघानो।
सुन्दर दास प्रसिद्ध दिखावत धानको खेत
पयारते जानो ॥

२

बोलत चालत उठत बैठत पीवत खातहु
सूंघत श्वासे।
ऊपर तो व्यवहार करे सब भीतर स्वप्न
समान सो भासे ॥
लेकरि तीर पताल को साधत मारत हे
पुनि फेरि अनासे।
सुन्दर देह क्रिया सब देखत कोउ न पावत
ज्ञानी को आसे ॥

३

बेठे तो बैठे चले तो चले पुनि पोढे तो पोढे हो
आगे तो आगे।
बोले तो बोले न बोले तो मौन हो सोवे तो सोवे
अरु जागे तो जागे ॥
खाइ तो खाइ नहो तो नहो जू रहे तो रहे
अरु त्यागे तो त्यागे।
सुन्दर ज्ञानी को ऐसी दशा यह जाने नहो
कछु राग विरागे ॥

कानड़ा—चौताला

देखत हे पे कछू नहि देखत बोलत हे नहो
बोल बखाने।
सूंघत हे नहि सूंघत प्राण सुने सब हे न सुने
यह माने ॥
भक्ष करे अरु नाहि भखे कछु भेटत है नहो
भेटत प्राने।
लेत है देत है देत न लेत है सुन्दर ज्ञानीको
ज्ञानी हो जाने ॥

२

काज अकाज भलो न बुरो कछु उत्तम मध्यम
दृष्टि न आवे।
कायिक वाचिक मानस कर्मं सु आप विषे न
तिन्हें ठहरावे ॥
हौं करि हौं न कियो न करौं अब वौ मन
इन्द्रियको बरतावे।
दोसत है व्यवहार विषे नित सुन्दर ज्ञानीको
कोउ न पावे ॥

३

देखत ब्रह्म सुने पुनि ब्रह्महि बोलत हे
सोउ ब्रह्महि बानो।
भूमिहु नीरहु तेजहु वायुहु व्योमहु ब्रह्म
जहां लगि प्रानो ॥
आदिहु अन्तहु मध्यहु ब्रह्महि है सब ब्रह्म
यहो मति ठानो।
सुन्दर ज्ञेय अरु ज्ञानहु ब्रह्मसु आपहु
ब्रह्महो जानत ज्ञानो ॥

४

उठत केवल बैठत केवल बोलत केवल
बात कहो है।
जागत केवल सोवत केवल जीवत केवल
दृष्टि नहो है ॥
भूतहु केवल भाव्यहु केवल वर्त्तत केवल
ब्रह्म सहो है।

है सब ही अध उरध केवल सुन्दर केवल
ज्ञान वही है ॥

भंझौटी—चौताला

केवल ज्ञान भयो जिनके उर ते अध: उरध
लोक न जाहीं।
व्यापक ब्रह्म अखण्ड निरन्तर वा विन और
कहूं कछु नाहीं ॥
ज्यौं घट नाश भये घट व्योम सुलीन भयो पुनि
है नभ माहीं।
त्यौं मुनि मुक्त जहां वपु छाड़त सुन्दर मोक्ष
शिला कहूं नाहीं ॥

२

आदि हुतो नहीं अन्त रहै नहीं मध्य शरीर
भयो भ्रमकूपं।
भासत है कछु औरको औरइ ज्यौंरइ रज्जुमें
अहि सीपसरूपं ॥
देखि मरीच उठ्यो जिय विभ्रम जानत नाहि
वहै रविभूपं।
सुन्दर ज्ञान प्रकाश भयो जब एक अखण्डित
ब्रह्म अनूपं ॥

मनोहर छन्द

नट मलार—चौताला

अन्त:करण जाके तमगुण छाइ रह्यो जड़ता
अज्ञान वाकें आलस भय नास है।
रज:गुण को प्रभाव अन्त:करण जाकें विविधि
करम ताके काम को वास है ॥
सत्वगुण अन्त:करण जाके देखियत क्रिया करि
शुद्ध वाके भक्ति को निवास है।
त्रिगुणातीत साची तुरया स्वरूप जानि सुन्दर
कहत वाके ज्ञान को प्रकाश है ॥

२

तमगुणि बुद्धि सो तो तवाके समान जसे ताके
मध्य सूरज को रंचक न ज्योत है।
रजोगुणी बुद्धि जैसे आरसीको आभो ओर ताके
मध्य सूर को कछुक उदोत है ॥
सतोगुणि बुद्धि जैसे आरसीको शुद्ध ओर ताके मध्य
प्रतिबिम्ब सूरज को ओत है।
त्रिगुणातीत जैसे प्रतिबिम्ब मिटि जाइ सुन्दर
कहत एक सूरजइ होत है ॥

३

सब सौ उदास होइ काढ़ि मन भिन्न करि
ताका नाम कहियत परम विराग है।
अन्त:करण हुकी वासना निवृत्त होहि ताको
मुनि कहत है उहै बड़ो त्याग है ॥
चित्त एक ईश्वर सो नेकहु न न्यारो होइ उहै
भक्ति कहियत उहै प्रेम मार्ग है।
आप ब्रह्म जगतके एक करि माने जब सुन्दर
कहत वह ज्ञान भ्रम भाग है ॥

४

कोउ नृप फूलनिकी सेज पर सूतो आइ जब
लगि जाग्यो तोलो अति सुख मान्यो है।
नींद जब आई तब वाही को सुपन भयो जाइ
परो नरककुण्डमें यों जान्यो है ॥
अति दु:ख पायो परि निकरो न जाइ क्यों ही
जागि जब परो तब सुपन बखान्यो है।
इह झूठ वह झूठ जाग्रत सुपन दोउ सुन्दर कहत
ज्ञानी सब भ्रम भान्यो है ॥

५

स्वप्नेमें राजा होइ स्वप्नेमें रङ्क होइ स्वप्नेमें
सुख दु:ख सत्य करि जान्यो है।
स्वप्ने में बुद्धिहीन मूढ़ समुझै न कछु सुपनेमें
पण्डित वहु ग्रन्थनि वखान्यो है ॥
स्वप्नेमें बुद्धि में कामी होइ इन्द्रियके वश परो
सुपनेमें अहङ्कार आन्यो है।
सुपन ते जाग्यो जब समुझ परोरै तब सुन्दर कहत
सब मिथ्या करि मान्यो है ॥

६

विधि न निषेद कछु भेद न अभेद कछु क्रिया
　　सो करत दीसे योंही नित प्रति है।
काहु सौं न निकट राखे काहु सौं न दूरि भागी
　　काहु सौं न नेरे दूरि ऐसी जाकी मति है॥
रागहीन द्वेष कोउ सोद्र न उछाह दोउ ऐसो
　　विधि रहै कहूं रति न विरति है।
बाहिर व्योहार ठानें मनमें सुपन मानें सुन्दर
　　ज्ञानी को कछु अद्भुत गति है॥

७

कामी है न यती है न सूम है न सती है न
　　राजा है न रङ्क है न तन है न मन है।
सोवे है न जागि है न पीछे है न आगे है न ग्रहे है
　　न त्यागि है न घर है न वन है॥
स्थिर है न डोले है न मौन है न बोले है न बांधे है
　　न खोले है न स्वामी है न जन है।
बैसो कोउ होइ तब वाकी गति जानें जब सुन्दर
　　कहत ज्ञानी शुद्ध ज्ञानघन है॥

८

सुनत श्रवण मुख बोलत वचन घ्राण फूलनि
　　सूंघत रूप देखत दृगन है।
त्वक सपरस रस रसना ग्रहत जीभ असन करत
　　अरु चलत पगन है॥
करत गमन पुनि बैठत भवन सेज सोवत रवन
　　अरु वोढ़त नगन है।
जो जो कछु व्यवहार जानत सकल भ्रम सुन्दर
　　कहत ज्ञान गगन मगन है॥

९

कर्म न विकर्म करें भाव न अभाव धरे शुभ हु
　　अशुभ परे याते निधरक है।
वसती न शून्य जाके पापहो न पुण्य ताके
　　अधिक न न्यून वाके स्वरग नरक है॥
सुख दुःख सम दोउ नीचहो न उच्च कोउ ऐसो
　　विधि रहै कोउ मिलो न फरक है।
एकहो न दोय जाने बन्ध मोच भ्रम माने सुन्दर
　　कहत ज्ञानी ज्ञान में गरक है॥

१०

अज्ञानी को दुःख को समूह जग जानियत
　　ज्ञानी को जगत सब आनन्द स्वरूप है।
नैनहीन कों तो घर बाहिर न सूझ परे जहां
　　जाइ तहां देखे एक अन्धकूप है॥
जाके चक्षु है प्रकाश अन्धकार भयो नाश
　　वाको जहां रहे तहां सूरजको धूप है।
सुन्दर अज्ञानी ज्ञानी अन्तर बहुत आहि वाको
　　सदा राति वाको दिवस अनूप है॥

११

ज्ञान अरु अज्ञानकी क्रिया सब एक सीही अज्ञ
　　आशा और ज्ञानी आश न निरास है।
अज्ञ जोइ जोइ करे अहङ्कार बुद्धि धरे ज्ञानी
　　अहङ्कार विनु करत उदास है॥
अज्ञ सुख दुःख दोउ आप विषे मान लेत ज्ञानी
　　सुख दुःख कों न जाने मेरे पास है।
अज्ञको जगत यह सकल सन्ताप कर सुन्दर
　　ज्ञानी कों सार ब्रह्म कों विलास है॥

१२

ज्ञानी लोक संग्रह कों करत व्योहार विधि
　　अन्तःकरण में सुपन कोसो दौर है।
देत उपदेश नाना भांतिके वचन कहि सब कोउ
　　जानत सकल सिरमौर है॥
हस्त न चलन पुनि देह सों करावत है ज्ञानमें
　　गरक नित लिए निज ठौर है।
सुन्दर कहत जैसे दन्त गजराज उके खाइवेके
　　और हो दिखाइवेके और है॥

१३

इन्द्रियकी ज्ञान जाके सो तो पशुकै समान देह
　　अभिमान खान पानहि सो लीन है।
अन्तःकरण ज्ञान कछुक विचार जाके मानुष
　　व्योहार शुभ कर्मनि अधीन है॥

आत्मा विचार ज्ञान जाके निसि वासर है
सोइ साधु सकल बातनि में प्रवीन है।
एक पर आत्माके ज्ञान अनुभव जाके सुन्दर
कहत वह ज्ञानी भ्रम चीन है॥

१४

जाही ठौर रवि को उदय भयो ताही ठौर
अन्धकार भागि गयो गृह वनवास ते।
न तो कछु वनते उलटि आवे घर माहि न तो
वन चली जाइ कनक अवास ते॥
जैसे पक्षी पांख टूटि जाही ठौर परो आइ
ताही ठौर गिर रह्यो उड़बेको आसते।
सुन्दर कहत सब मिटि जाइ दौर धूप धोखो
न रहत कोउ ज्ञानके प्रकाशते॥

१५

जैसे काहु देश जाइ भाषा कहै और सोहो समुझि
न कोउ वासों कहै का कहतु है।
कोउ दिन रह करि बोली सीखे उनहीको फेरि
समुझावे तब सब को लहतु है॥
तैसे ज्ञान कहे ते सुनत विपरीत लगे आपो
आपनोइ मत सब कोउ गहतु है।
उनहीके मत करि सुन्दर कहत ज्ञान तब ह्वै तो
ज्ञान ठहराइकैं रहतु है॥

१६

एक ज्ञानी कर्मनि में ततपर देखियत भक्तिको
प्रभाव नाहि ज्ञान में गरक है।
एक ज्ञानी भक्तिको अत्यन्तहो प्रभाव लिये
ज्ञान माहि निश्चय करि कर्म सो तरक है॥
एक ज्ञानी ज्ञानहो अज्ञान को उद्धार करे
भक्ति अरु कर्म इन दुहूंते फरक है।
कर्म भक्ति ज्ञान तीनो वेदमें बखानि कहे
सुन्दर बतायो गुरु ताहि में मरक है॥

१७

जैसे पक्षी पगन सो चलत अवनि आइ तैसे
ज्ञानी देह करि कर्म नि करतु है।
जैसे पक्षी चोंच करि चुगत अहार पुनि तैसे ज्ञानी
उरमें उपासना धरतु है॥
जैसे पक्षी पङ्ख निसों उड़त गगन माहि तैसे
ज्ञानी ज्ञान करि ब्रह्ममें चरतु है।
सुन्दर कहत ज्ञानी तीनो भांति देखियत ऐसो
विधि जाने सब संशय हरतु है॥

सवैया—चौताला

एक क्रिया करि कर्मनि पावत आदि और
अन्त ममत्व बंध्यो है।
एक क्रिया करि पाक करे जब भोजन लो कछु
अब रंध्यो है॥
एक क्रिया मल त्यागत है लघु नीत करे कहुं
नाहि फंध्यो है।
त्यों यह जानि क्रिया अरु संग्रह सुन्दर
तीन प्रकार संध्यो है॥
जीव नरेश अविद्या निद्रा सुख सज्जा सोयो
करि हेत।
कर्म खवास पुटपुरी लाई ताते बहुविधि
भयो अचेत॥
भक्ति प्रधान जगायो कर गहि आलस भरो
जभाई लेत।
सुन्दर अब निद्रा वश नाहो ज्ञान जागरण
सदा सचेत॥

२

ज्ञान प्रकाश भयो जिनके उर वे घट क्योंऊं पे
न रहेंगे।
भीड़ल माहि दुरे नहि दीपक यद्यपि वे मुख
मौन गहेंगे॥
ज्यों घनसारहि गोपि छिपावत तोहु सुगन्ध हि
तत्र लहेंगे।
सुन्दर और कहा कोउ जानत बैठेकी बात
बताउ कहेंगे॥

२

ज्ञानी कर्म करै नानाविध अहङ्कार या तन को खोवे।
कर्मनिके फल कछु न वाञ्छे अन्तःकरण
वासना धोवे॥
ज्यों कोउ खेती को जोत तले करि वोज भून
करि बोवे।
सुन्दर कहे सुनो दृष्टान्तहि नागो न्हाय सो
कहा निचोवे॥

अथ विदेहको
प्रदीप—यत्

भावे देह छूटि जाहु काशी माहि गङ्गा तट
भावे देह छूटि जाहु खेत मगहरमें।
भावे देह छूटि जाहु विप्रके सदन मध्य भावे
देह छूटि जाहु स्वपचके घरमें॥
भावे देह छुटो देश आरज अनारजमें
भावे देह छूटि जाहु वनमें नगरमें।
सुन्दर ज्ञानीके कछु संसो नाहि रह्यो कोइ
स्वर्ग नरक सब भाजि गयो भरमें॥

२

भावे देह छूटि जाहु आजही पलक माहि भावे
देह रहो चिरकाल जग अन्त जू।
भावे देह छूटि जाहु ग्रीषम पावस ऋतु शरद
शिशिर शीत छूटत वसन्त जू॥
भावे दक्षिणायनहु भावे उतरायणहु भावे देह सर्प
सिंह बोजुलो हनन्त जू।
सुन्दर कहत एक आत्मा अखण्ड जानि याहो
भांति निरशंसय भये सब सन्त जू॥

सवैया—यत्

कै यह देह धरों वन परवत कै यह देह
नदीमें बहो जू।
कै यह देह धरो धरती महि कै यह देह
कृशानु दहो जू॥
कै यह देह निरादर निन्दहु कै यह देह सराह
कहो जू।
सुन्दर संशय दूरि भयो सब कै यह देह चलो
कि रहो जू॥

२

कै यह देह सदासुख सम्पति कै यह देह
विपत्ति परो जू।
कै यह देह निरोग रहो नित कै यह देहहो
रोग चरो जू॥
कै यह देह हुताशन पैठहु कै यह देह
हिवारे गरो जू।
सुन्दर संशय दूरि भयो सब कै यह देह जिवो
कि मरो जू॥

जीवनमुक्तको अथ
प्रदीप—यत्

प्रीति कि रोति कछू नहि राखत जाति न
पांति नहो कुल गारो।
प्रेमके नेम कहूं नहि दीसत लाज न कान
लग्यो सब खारो॥
लीन भया हरिसो अभि अन्तर आठहु याम रहे
मतवारो।
सुन्दर कोउ न जान सके यह गोकुल गांव को
पैंड़ोइ न्यारो॥

२

ज्ञान दियो गुरुदेव कृपा करि दूरि कियो भ्रम
खोलि किवारो।
और क्रिया कहि कोन करै अब चित्त लगो
परब्रह्म पियारो॥
पांव विना चलिके तिहि ठाहर पंगु भयो मन
मित्र हमारो।
सुन्दर कोउ न जानि सकै यह गोकुल गांव को
पैंड़ोइ न्यारो॥

२

एक अखण्डित ज्यों नभ व्यापक बाहिर भोतर है
एक सारो।

इष्ट न मुष्ट न रूप न रेख न श्वेत न पीत न
रक्त है कारो ॥
चकित होइ रहे अनुभव बिन जौ लगि नाहि
न ग्यान उजारो ।
सुन्दर कोउ न जान सकै यह गोकुल गांव कौ
पैंडोइ न्यारो ॥

४

द्वन्द बिना विचरै वसुधा पर जा घट आवत ज्ञान
अपारो ।
काम न क्रोध न लोभ न मोह न राग न द्वेष
न म्हारो न थारो ॥
योग न भोग न त्याग न संग्रह देह दशा न
ढको न उघारो ।
सुन्दर कोउ न जान सकै यह गोकुल गांवको
पैंडोइ न्यारो ॥

५

लक्ष अलक्ष अदक्ष न दक्ष न पक्ष अपक्ष न
तूल न भारो ।
झूठ न सांच अवाच न वाच न कश्चन कांच न
दीन उदारो ॥
जान अजान न मान अमान न मान गुमान
न जीत न हारो ।
सुन्दर कोउ न जान सकै यह गोकुल गांव कौ
पैंडोइ न्यारो ॥

अद्वैत ज्ञानकौ अङ्ग

मनोहर कान्हरा—चौताला

हो तुम कौन हौं ब्रह्म अखण्डित देह मैं क्यों
नहो देहके मेरे ।
बोलत केसे कहो नहीं बोलत जानिये कैसे
अज्ञान ए तेरे ॥
दूरि करो भ्रम निश्चय धार कह्यो गुरुदेव
कहों नित टेरे ।
हो तुम ऐसे ई हूं पुनि ए सोइ दोइ भये
नाहि द्वैत है मेरे ॥

२

हौं कछु और कि तू कछु और कि है कछु
और कि सो कछु औरे ।
हूं अब तू यह है कछु सो पुनि बुद्धि विलास
भये झक झोरे ॥
हूं नही तू नही है कछु सो नहो बूझि
बिना जित हो तित दौरे ।
हूं पुनि तू पुनि है कछु सो पुनि सुन्दर व्यापि
रह्यो सब ठौरे ॥

३

उत्तम मध्यम और शुभाशुभ भेद अभेद
जहां लगि जो है ।
दीसत भिन्न तवो अरु दर्पण वस्तु विचारत
एकहो लोहै ॥
जो सुनिये अरु दृष्टि परे पुनि वा बिनु
और कह्यो अब को है ।
सुन्दर सुन्दर व्यापि रह्या सब सुन्दर हो मधि
सुन्दर सोहै ॥

४

यौवन एक अनेक भए द्रुम नाम अनन्त जु
जानिहु न्यारो ।
वापी तड़ाग रु कूप नदो सब है जल एक सो
देखो निहारो ॥
पावक एक प्रकाशत बहुविधि दीपक एक
मसाल हु वारो ।
सुन्दर ब्रह्म विलास अखण्डित खण्डित
भेद कि बुद्धि सुटारो ॥

५

एक शरीर में अङ्ग भए बहु एक धरा पर
धाम अनेका ।
एक शिला महि कार किये सब चित्र बनाय
धरे टिक टेका ॥
एक समुद्र तरङ्ग अनेकनि कैसेके कोजिये
भिन्न विवेका ।

द्वैत कछू नही देखिये सुन्दर ब्रह्म अखण्डित
एक को एका ॥

६

ज्यों मृत्तिका घट नीर तरङ्ग ही तेज
मसाल किये जु बहूता ।
वायु बघूरनि गांठ परी बहु बादल व्योम
सु व्योम जिमूता ॥
ब्रह्म सुबीज है बीज सुब्रह्म है पूत सु बाप है
बाप सुपूता ।
वस्तु विचारत एक ही सुन्दर ताने ह बाने
तो देखिये सूता ॥

७

भूमिहु चेतन आपहु चेतन तेजहु चेतन
हैं सु प्रचण्डा ।
वायुहु चेतन व्योमहु चेतन शब्दहु चेतन
पिण्ड ब्रह्मण्डा ॥
है मन चेतन बुद्धिहु चेतन चित्तहु चेतन
आहि उदण्डा ।
जो कछु नाम धरे सोइ चेतन सुन्दर चेतन
ब्रह्म अखण्डा ॥

८

एक अखण्डित ब्रह्म विराजत नाम जुदो करि
विश्व कहावे ।
एक ही ग्रन्थ पुराण बखानत एकइ दत्त
वसिष्ठ सुनावे ॥
एकइ अर्जुन उद्धव सों कहि कृष्ण कृपा करि
के समझावे ।
सुन्दर द्वैत कछू मति जानहु एकइ व्यापक
वेद बतावे ॥

मनोहरछन्द—चौताला

शिष्य पुछे गुरुदेव गुरु कहे पूछ शिष्य मेरे
एक संशय है तो क्यों न पूछे अबही ।
तुम कहो एक ब्रह्म अबहु मैं कहं एक एक तो
अनेक ताको इह तो भ्रम सबही ॥
भ्रम यह कौन को है भ्रमही कों भ्रम भयो
भ्रमही कों भ्रम कैसे तू न जाने कबहो ।
कैसे करि जानों प्रभु गुरु कहे निश्चय धारि
निश्चय मैं धाखो अब एक ब्रह्म तबही ॥

ब्रह्मराग—चौताला

ब्रह्म है ठौरक ठौर दूसरो न कोउ और वस्तुकौ
विचार किए वस्तु पहिचानिये ।
पञ्चतत्त्व तीन गुण विस्तारे विविध भांति नाम
रूप जहां लगि मिथ्या माय मानिये ॥
शेष नाग आदि देके वैकुण्ठ को लोक पुनि
वचन विलास सब भेद भ्रम भानिये ।
न तो कोउ उरझो न सुरझो कहो सु कौन
सुन्दर सकल यह अवावाद जानिये ॥

२

प्रथमही देह मेंते बाहिर कों चौंक परो
इन्द्रिय व्योहार सुखसत्य करि मान्यो है ।
कोनउ संयोग पाइ सतुगुरु भेट भई उन उपदेश
देके भीतर को आन्यो है ॥
भीतर कों आवतही बुद्धि को प्रकाश भयो हीं
कौन देह कौन जगत किन मान्यो है ।
सुन्दर विचारतही उपज्यो अद्वैत ज्ञान आपको
अखण्ड एक ब्रह्म पहिचान्यो है ॥

३

सकल संसार विस्तार करि बरनियो स्वर्ग
पाताल मर्त पूरि भ्रम रह्यो है ।
एक तें गिनत गिनि जाइए सो लगि फेरि
करि एक को एक हो गह्यो है ॥
यह नही यह नही यह नही यह नही रहे
अवशेष सो वेद यों कह्यो है ।
सुन्दर सही सो विचारि कौ अपुनपो आपु
में आपकूं आपु ही लह्यो है ॥

४

एक तू दोय तु तोन तू चारि तू पञ्च तू तत्त्व
तें जगत कोयो ।

नाम अरु रूप ह्वै बहुत विधि विस्तारो तुम
बिना और कोउ नाहि बोयो ॥
राव तू रङ्क तू दानी तू दीन तू दोइ कर मेल तें
दियो लोयो।
सकल यह सृष्टि तुम माहि उपजै खिपै कहत
सुन्दर बड़ो विपुल होयो।

केदारा—चौताला

तोही में जगत यह तूही है जगत माहि मैं अरु
जग माहि भिन्न कहा जो रहो।
भूमिहो ते भाजन अनेक भांति नानारूप
भाजन विचारि देखे एकही है मही ॥
जलते तरङ्ग भई फेन बुद्बुदा अनेक सो
उ तो विचारे वहै एक जल है सही।
महापुरुष जेते हैं सब को सिद्धान्त एक सुन्दर
खल्विदं ब्रह्म अन्त वेद है कही ॥

२

जैसे इक्षु रसको मिठाई नाना भांति भई फेरि
करि गारे इक्षु रस कौं लहतु है।
जैसे घृत खोजिकें डरा सो बन्धन जात पुनि
पिघरेते वहु घृतइ रहतु है ॥
जैसे पान जमके पाखानहु सो देखिअत सो
पाखान फेरि करि पानी ह्वै बहतु है।
तैसेही सुन्दर यह जगत है ब्रह्ममय ब्रह्म सो
जगत मय वेद यों कहतु है ॥

३

जैसे काठ कोर तामें पुतरो बनाइ राखो
जो विचार देखिये तो वहै एक दार है।
जैसे माला सूतहो कि मनिकाहु सूतहोके
भीतर हुयो पुनि सूतहीको तार है ॥
जैसे एक समुद्रके जलही को लोन भयो सो
उ तो विचारे सु वहै जल खार है।
तैसेही सुन्दर यह जगत सु ब्रह्ममय ब्रह्म सो
जगतमय यही निरधार है ॥

४

जैसे एक लोह के हथियार नानाविध किये
आदि अन्त मध्य एक लोहही प्रमानिये।
जैसे एक काञ्चन से भूषण अनेक भये
आदि अन्त मध्य एक काञ्चनह जानिये ॥
जैसे मैननकी संवारि नर हाथो हय आदि अन्त
मध्य एक मैनह बखानिये।
तैसेही सुन्दर यह जगतमय ब्रह्म सो ब्रह्ममय
जगत यह निश्चय करि मानिये ॥

५

ब्रह्ममें जगत यह ऐसो विधि देखियत जैसो
विधि देखियत फूलरो मही में।
जैसो विधि गिलम दुलीचामें अनेक भांति
जैसो विधि देखियत चूनरो उ चीर में ॥
जैसो विधि कांगरेउ कोट पर देखियत
जैसो विधि देखियत बुद्बदो नीरमें।
सुन्दर कहत लीक हाथ पर देखियत
जैसो विधि देखियत शीतला शरीर में ॥

६

ब्रह्म अरु माया जैसे शिव अरु शक्ति पुनि
पुरुष अरु प्रकृति दोउ कहि कै सुनाये हैं।
पति अरु पतनी ईश्वर अरु ईश्वरी उ नारायण
लक्ष्मी हे वचन कहाये हैं ॥
जैसे कोउ अर्द्ध नारी नटेश्वर रूप धरे एक
वोजही तें दोइ दाल नाम पाये हैं।
तैसेही सुन्दर वस्तु ज्यौं हो त्यौंही एक रस उभय
प्रकार होइ आपुही दिखाये हैं ॥

इन्द्रववकन्द—चौताला

ब्रह्म निरीह निरामय निर्गुण नित्य निरञ्जन
और न भावै।
ब्रह्म अखण्डित है अध ऊरध बाहिर भीतर
ब्रह्म प्रकासै ॥

ब्रह्म ही सूक्ष्म स्थूल जहां लगि ब्रह्म ही
साहब ब्रह्म ही दासे ।
सुन्दर और कछू मति जानहु ब्रह्महो देखत
ब्रह्म तमासे ॥

२

ब्रह्म ही माहि विराजत ब्रह्म ही ब्रह्म विना जिन
औरही जानौ ।
ब्रह्म ही कुञ्जर कीटहु ब्रह्म हो रङ्क हु ब्रह्महो
ब्रह्म हो रानौ ॥
कालहु ब्रह्म स्वभावहु ब्रह्म ही कर्म हु जीवहु
ब्रह्म बखानौ ।
सुन्दर ब्रह्म विना कछु नाहि न ब्रह्म ही जानि
सबै भ्रम भानौ ॥

३

आदि हुतो सोइ अन्त रहै पुनि मध्य कहा
कछु और कहावै ।
कारण कारज नाम धरै जग कारज कारण
माहि समावै ॥
कारज देखि भयौ बिच विभ्रम कारण देखि
विभर्म विलावै ।
सुन्दर या निश्चय अभि अन्तर द्वैत गये फिर
द्वैत न आवै ।

मनोहरछन्द—चौताला

द्वैत करि देखे जब द्वैत ही दिखाई देत एक
करि देखे जब उहै एक अङ्ग है ।
सूरज कर देखे जब सूरज प्रकाश रह्यो किरण
निको देखे तौ किरण नाना रङ्ग है ॥
भ्रम जब भयो तब माया ऐसो नाम धरो
भ्रमके गए तें एक ब्रह्म सर्वङ्ग है ।
सुन्दर कहत याकी दृष्टिहो को फेर भयो ब्रह्म
और मायाके तौ माथे में न शृङ्ग है ॥

२

श्रोत्र कछु और नाहि नेत्र कछु और नाहि
नासा कछु और नाहि रसना न और है ।
त्वक कछु और नाहि वाक् कछु और नाहि हाथ
कछु और नाहि पावनको ठौर है ॥
मन कछु और नाहि बुद्धि कछु और नाहि चित्त
कछु और नाहि अहङ्कार तौर है ।
सुन्दर कहत एक ब्रह्म विना और नाहि
आपुही में आपु व्यापि रह्यो सब ठौर है ॥

भ्रान्तिका अङ्ग

मनोहरछन्द—चौताला

कियौ न विचार कछु भनक परो है कान धाय
आइ सुनि कैं डरपि विष खाया है ।
जैसे कोउ अनछते ऐसेहा बुलाइयत वार वाति
गई परि कोउ नहीं आयो है ॥
वेदहु वरणि कै जगत् तरु ठाढ़ो कियो अन्त
पुनि दियो जर मूलतें उठायो है ।
तैसेही सुन्दर याको कोउ एक जानै भेद जगतको
नाम सुनि जगत भुलायो है ॥

२

ऐसोइ अज्ञान कोउ आइके प्रगट भयो दिव्य
दृष्टि दूरि गई देखे चर्मदृष्टि कौं ।
जैसे एक आरसो सदाइ हाथ माहि रहै साम्हू
नहो देखे फेरि फेरि देखे पृष्टि कौं ॥
जैसे एक व्योम पुनि बादर सो छाय रह्यो व्याम
नहो देखत देखत वहु दृष्टि कौं ।
तैसे एक ब्रह्म ही विराजमान सुन्दर है ब्रह्म कौं
न देखे कोउ देखे सब सृष्टि कौं ॥

३

अनछतो जगत अज्ञान ते प्रगट भयो जैसे कोउ
बालक वेताल देखि डरो है ।
जैसे कोउ स्वप्नमें देखो है व्याघ्र आइ मुख तें
न आवै बोल ऐसो दुःख पर्यो है ॥
जैसे अन्धयारो रैन जेवरो न जानै ताहि आपु
हित सांप मान भय अति कर्यो है ।
सबे ही सुन्दर एक ज्ञानके प्रकाश विनु आपु
दुःख पाइ पाइ आपु पचि मर्यो है ॥

४

मृत्तिका समाय रहो भाजनके रूप माहि मृत्तिका
को भ्रम मिटि भाजन ही गयो है।
कनक समाई त्यों ही होइ रहो आभूषण कनक
न कहे कोउ आभूषण कयो है॥
बीजहु समाय करि वृक्ष होइ रहो पुनि वृक्षहि
को देखियत बीज नहीं लयो है।
सुन्दर कहत यह योंही करि जानो सब ब्रह्महो
जगत होइ ब्रह्म दूरि रहो है॥

५

कहत हे देह माहि जीव आइ मोहि रहो कहां
देह कहां जीव वृथा चोंक पयो है।
बूड़िवेके डर ते तिरन को उपाय करे ऐसे
नाहि जाने यह मृग जल भयो है॥
जेवरी को सांप जेसे सीप विषे रूपो जाने और
ईको और देखि योंही भ्रम कयो है।
सुन्दर कहत यह एकही अखण्ड ब्रह्म ताही
कों पलटिके जगत नाम धयो है॥

विजय को अङ्ग

मनोहर छन्द—चौताला

वेद को विचार सोई सुनि के सन्तन मुख आपुहु
विचार करि जाइ धारियतु है।
योगको युकति जानि जगत उदास होइ शून्य
में समाधि लाइ मन मारियतु है॥
ऐसे ऐसे करत करत केते दिन वीते सुन्दर
कहत अजहूं विचारियतु है।
कारो है न पीरो न तो तातो है न सीरो कछु
हाथ न परत ताते हाथ भारियतु है॥

२

मन कों अगम अति वचन थकित होत बुद्धिहु
विचार करि वहु खोड़ियतु है।
श्रवण सुने न जाहि नयनहु न देखे ताहि रसना
को रस सरवसु छोड़ियतु है॥
त्वक को परस नाहि घ्राण को न विषय होइ
पगनहु करि जित तित दौड़ियतु है।
सुन्दर कहत अति सूक्ष्म स्वरूप कछू हाथ न
परत तो हाथ मोड़ियतु है॥

३

गुफा कों संवारि तहां आसन उ मारि प्राणहु
को घेरि घेरि नाक सोटियतु है।
इन्द्रिय को घेरि करि मनहु को फेरि करि
त्रिकुट में हेरि हेरि हिये छोटियतु है॥
सब छिटकाय पुनि शून्य में समाय तहां समाधि
लगाय पुनि आंखि मोड़ियतु है।
सुन्दर कहत हम औरउ किये उपाय हाथ न
परत ताते हाथ पोटियतु है॥

४

बोले है न मौन धरे बैठे है न गौन करे जागे है
न सोवे सुतो दूरि है न तीरो है।
आवे है न जाइ न तो स्थिर अकुलाइ पुनि
भूखो है न खात कछु तातो है न सीरो है॥
लेत है न देत कछु हेत न कुहेत कछु श्याम है
न श्वेत सु तो रातोइ न पीरो है।
दूबर न मोटो कछु लांबो नहि छोटो ता तें
सुन्दर कहत कहा कांच है न हीरो है॥

५

भूमि है न आप न तो तेज है न ताप न तो
वायुहु न व्योम न तो पञ्च को पसारो हे।
हाथ है न पांव न तो नेन हैन भाव ना तो रङ्क
है न राव न तो वृद्ध हो न वारो हे॥
पिण्ड है न प्राण न तो ज्ञान न अज्ञान तो बन्ध
निर्वाण न तो हरवो न भारो हे।
द्वैत न अद्वैत न तो भीत न अभीत न तो सुन्दर
कह्या न जाइ मिल्यो है न न्यारो हे॥

धनाश्री-मुलतानी—धत्

पाप न पुण्य न स्थूल न शून्य न बोले न मौन
न सोवे न जागे।

एक न दोय न पुरुष न जोय कहे कहा कोई
न पीछे न आगे ॥
वृद्ध न बाल न कर्म न काल न विश्व विशाल
न जूझे न भागे ।
बन्ध न मोक्ष अप्रोक्ष न प्रोक्ष न सुन्दर है
न असुन्दर लागे ॥

२

तत्त्व अतत्त्व कह्यो नहि जात जू शून्य अशून्य
धरे न परे है ।
ज्योति अज्योति न जान सके कोउ आदि न
अन्त जिये न मरे है ॥
रूप अरूप कछू नही दीसत भेद अभेद करे
न हरे है ।
शुद्ध अशुद्ध कहे पुनि कौन जू सुन्दर बोले न
मौन धरे है ॥

३

खोजत खोजत खोज रहे अब खोजत है
पुनि खोजहि आनें ।
गावत गावत गाइ गये बहु गावत हे
अब गाइ है गानें ॥
देखत देखत देखि थके सब दीखे नही कछु
ठौर ठिकाने ।
बूझत बूझत बूझिके सुन्दर
हेरत हेरत हेर हिराने ॥

४

पिण्डमें है परि पिण्डलि पै नही पिण्ड परे पुनि
त्योंही रहावै ।
श्रोत्र में है परि श्रोत्र सुनै नही दृष्टि में है
परि दृष्टि न आवै ॥
बुद्धि में है परि बुद्धि न जानत चित्त में है
परि चित्त न पावै ।
शब्द में है परि शब्द थक्यो कहि शब्दहु सुन्दर
दूरि बतावै ॥

५

भूमिहु तैसें ही आपुहु तैसें ही तेजहु तैसें ही
तैसेही पौना ।
व्योमहु तैसेही आहि अखण्डित तैसेही ब्रह्म
रह्यो भरि भौना ॥
देह संयोग वियोग भयो जब आयो सु कौन
गयो कहि कौना ।
जा कहिये कहने न बने कछु सुन्दर जानि गह्यो
मुख मौना ॥

६

एकही ब्रह्म रह्यो भरपूरि तो दूसरो कौन
बतावन हारो ।
जो कोउ जीव करे परमाण तो जीव कहा कछु
ब्रह्म ते न्यारो ॥
जो कहो जीव भयो जग दीसत तौ रवि माहि
कहां को अंधारो ।
सुन्दर मौन गही यह जानि कै कौनहु भांति
नही निरधारो ॥

७

जो हम खोज करें अभि अन्तर तौ वह खोज
करेहो बिलावै ।
जो हम बाहिर कौ उठि दौरत तौ कछु
बाहिर हाथ न आवै ॥
जो हम काहु कौं पूछत हैं पुनि सोउ अगाध
गागमा धावै ।
ताही ते कोउ न जान सकै तिहि सुन्दर कौन
सो ठौर बतावै ॥

८

नैन न बैन न सैन न आस न वास न श्वास
न प्यास न याते ।
शीत न घाम न ठौर न ठाम न पुर्ष न बाम
न बाप न माते ॥
रूप न रेख न शेष अशेष न श्वेत न पीत न
श्याम न राते ।

सुन्दर मौन गह्यो सिद्ध साधक कौन कहे
उसकी मुख बाते ॥

९

वेद थके कहि तन्त्र थके कहि ग्रन्थ थके लिखि
वासर गाते।
शेष थके शिव इन्द्र थके पुनि खोज कियो बहु
भांति विधाते ॥
पीर थके अरु मीर थके पुनि धीर थके बहु
बोलि गिराते।
सुन्दर मौन गह्यो सिध साधक कौन कहे उसकी
मुख बाते ॥

१०

योगी थके कहि जैन थके ऋषि तापस थाकि
रहे फल खाते।
सन्यासी थके वनवासी थके जु उदासी थके
फिर फेरि फिराते ॥
शेख मसायख और उ लायक थाकि रहे मन
में मुसकाते।
सुन्दर मौन गह्यो सिध साधक कौन कहे उसकी
मुख बाते ॥

इति श्रीसुन्दरदास कृत सुन्दरविलास सवैया सम्पूर्णः।

श्रीकृष्णानन्द व्यासदेव रागसागरोद्भव सङ्गीत रागकल्पद्रुमे
ज्ञानतत्त्वसारसंग्रह समाप्तः।

अथ श्रीकबीर-बीजक प्रारम्भः

आसावरी—तिताला

अन्तर ज्योति शब्द एक नारी।
हरि ब्रह्मा जाके त्रिपुरारी ॥
ते त्रिय भग अरु लिङ्ग अनन्ता।
तेउ न जानत आदि औ अन्ता ॥
बैखरी एक विधाता कीन्हा।
चाद बैठ वर पाट सों लीन्हा ॥
हरि हर ब्रह्मा महतो नाऊं।
तिन पुनि तीनो वस्र विलगाऊं ॥
तीन मोर चल खण्ड ब्रह्मण्डा।
षट दर्शन छानवे पखण्डा ॥
पेट हि काहु न वेद पढ़ाया।
सुन तिकराय तुर्क नहीं आया ॥
नारी मोचित गर्भ प्रसूती।
स्वांग धरै बहुते करतूती ॥
तहिया हम तुम एकहो लोहु।
एक प्राण पियापे मोहु ॥
एकहो जनो जना संसारा।
कवन ज्ञान तें भएहु न्यारा ॥
भौ बालक भग द्वारहि आया।
भग भौ गौते पुरुष कहाया ॥
अवगतिको गति काहु न जानो।
एक जीभ कत कहो बखानो ॥
जो मुख होहि जीभि दश लाखा।
तो कोइ आइ महातम भाखा ॥

साखी

कहहि कबीर पुकार कइ मोहल व्यवहार।
एक राम नाम जाने विना भव बूड़ि मुयो संसार ॥

धनाश्री—तिताला

जीव रूप एक अन्तर वासा।
अन्तर ज्योति कीन्ह परकासा ॥
इच्छा रूप नारी अवतरी।
तासु नाम गाई है तरी ॥
धरि तेहि नारीके पुत्रके उभेउ।
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर सेउ ॥
फेरि ब्रह्मे पुछल करतारी।
को तोर पुरुष करी तुम्ह नारी ॥

हम तुम तुम हम अवर न कोइ ।
तुमहो पुरुष हमहि तोरि जोइ ॥

साखी

बाप पूत मिलि कवारो एकै माओ आए ।
ऐसा पूत सुपूत न देखो जो बापहि चिन्हवाए ॥

२

वरणहु कवन रूपमय रेखा ।
दूसरा कौन अो काहि जेहि देखा ॥
है ओंकार आदि जो वेदा ।
वेकर कहहु कौन खलु भेदा ॥
नहि कछु होत पिताके बन्द ।
नहि तारागण नहि रवि चन्द ॥
नहि जल नहि थल नहि थिर पौन ।
को धर नाम हुकुम को दौन ॥
नहि कछु हुतो दिवस नहि राति ।
ते वारा कहहु कवन कुल जाति ॥

साखी

शुन्य सहज मन सुमति प्रगट भई एक जोति ।
तेहि पुरुषको मैं वलिहारो निरालम्ब जो होति ॥

३

प्रथम अरम्भ कवन कर भयाउ ।
दूसरा प्रकट कीन्ह ते ठाउ ॥
प्रकटे ब्रह्मा विष्णु शिव शक्ति ।
प्रथमहो भक्ति कीन्ह जीव उक्ति ॥
प्रगट पवन पानी अरु छाया ।
बहु विस्तार कै प्रगटो माया ॥
प्रगटे अण्ड पिण्ड ब्रह्मण्डा ।
पृथ्वीमें प्रगट कीन्ह नव खण्डा ॥
प्रगट सिद्ध साधक सन्यासी ।
ए सब लागि रहे अविनाशी ॥
प्रगटे सुर नर मुनि सब झारि ।
तेहो खोजि परे सब हारि ॥

साखी

जीव शीव सब प्रगटेव ठाकुर सब दास ।
कबीर और न जाने एक राम नामको आस ॥

अलख्ला—तिताला

प्रथम चरण गुरु कीन्ह विचारा ।
कर तागा यहि सिरजन हारा ॥
करम करइ कै जग बौरावा ।
शक्ति भक्ति ले बांधि न्हवावा ॥
अदभुद रूप ज्योतिकै वानो ।
उपजो प्रीति रमेनी ठानो ॥
गुणियन गुण अर्थ नहिं आया ।
बहुतक जन चीन्हि नहि पाया ॥
जो चीन्हे ताको निर्मल अङ्गा ।
अनचीन्हे नर भये पतङ्गा ॥

साखी

चीन्हि चीन्हि कर गावा बौरे वानो परो न चीन्ह ।
आदि अन्त उतपति प्रलय आपुहो कै दीन्ह ॥

२

हरि हर ब्रह्माके मन भाई ।
तीनि अच्छर ले युक्ति बनाई ॥
वौधि अच्छर का कीन्ह वखाना ।
अनहद शब्द ज्योति परवाना ॥
अच्छर पढ़ि गुणि राह चलाई ।
सनक सनन्दन कै मन भाई ॥
वेद कितेब कीन्हे विस्तारा ।
फैलि गइलि मन अगम अपारा ॥
चहु युग भक्तन बाखल बाटो ।
समुझि न परो मोटरो फाटो ॥
भै भै पृथ्वीमें दश दिशि धावै ।
अस्थिर होइ औषधी पावै ॥
होय भिस्त जा चित न डोलावै ।
खसमहि छोड़ दोजख को धावै ॥

पूरब दिशि हंसगति होई।
है समीप साई बूझै कोई॥
भक्त भक्तिका कीन्ह शृङ्गारा।
बूड़ि गई सब मांझो धारा॥

साखी

बिनु गुरु ज्ञान दुई भई प्रथम कहो मिलि बात।
युग युग सोई कहि गया काहु न मानी बात॥

१

तहिया होते पवन नहि पानी।
तहिया सृष्टि कौन उतपानी॥
तहिया होते कली बहु फूला।
तहिया होते गमन हो शूला॥
नहि विद्या नहि वेद अवादा।
तहिया हुते सबद नहि सादा॥
तहिया हुते पण्ड नहि वासू।
नहि सुर धरणि गगन आकासू॥
तहिया हुते गुरू नहि चेला।
गम आगम नहि पन्थहु हेला॥

साखी

अवगतिकी गति का कहो जाके गांव न ठांव।
गुण बोहुना पेखना क्या कहि लीजै नांव॥

पूर्वी—तिताला

तत्त्वमसी इन्हके उपदेशा।
ए उपनिषत् कहै संदेसा॥
ई निश्चय उन के बैठी भारी।
वोहिके वरणन करै अधिकारी॥
परम तत्त्वके निज परवाना।
सनकादिक नारद सुख माना॥
जग बलि किया जनक संवादा।
दत्तात्रय वाही रसस्वादा॥
वहै बात बशिष्टराम मिलि गाई।
कृष्णराम ऊधव समुदाई॥
वहै बात ले जनक दृढ़ाई।
देह धरी विदेह कहाई॥

साखी

कुल अभिमानी खोइ कै जीवत मुया न होइ।
देखत जो नहि देखिए अदृष्ट कहावे सोइ॥

२

बाधे अष्ट कष्ट नौ सूता।
जग बाधी अञ्जनीके सूता॥
भखके वाहन बाधो जानो।
बाधे सृष्टि कहा ले गानो॥
बाधे देव तेतिसो कोरी।
सो बैर तलो छवदो गो तोरी॥
राजा सौरे तुरिया चढ़ी।
पथिके सुमर नाव ले बढ़ी॥
अर्थ बोहुनो सबरे नारी।
परजा सबरे पहुमी भारी॥

साखी

बन्द मनावे ते फल पावे बन्दिया सो देए।
कहै कबीर ते ऊबरे निशवासर नाम जो लेए॥

पीलू—यत्

ए हो ले विपराहो वहो।
जग रह आवत काहु न कहो॥
आइ कर गो भया अजगूता।
जन्म जन्म जन पहरे बूता॥
बूता पहरि माकरे माना।
तीनि लोक में करे पीवाना॥
बाधिन्ह ब्रह्मा विष्णु महेशू।
सुर नर मुनि सब देव गणेशू॥
बधो न पवन वावक नभ वीरू।
चन्द सु बाध न दोऊ वीरू॥
साध मन्त्र बाधिन सब झारी।
अमृत वस्तु न जाने नारी॥

साखी

अमृत वस्तु न जाने मगन भया सब लोय।
कहहि कबीर का मौनहि मारण जीव न होय॥

२

आधरि गुष्टि सृष्टि भई बोरी ।
तिनि को कामि लागि ठगोरी ॥
ब्रह्महि ठगा नाग पा जारी ।
देवता सहित ठग्यो त्रिपुरारी ॥
राज ठगोरी विस्नहि परी ।
चौदह भुवनको रचो चौधरी ॥
आदि अन्त जाके जरि को न जानी ।
ताके डर तुम काहे को मानी ॥
के उतंग तुम जात पतङ्गा ।
यम घर कियो जीवके रङ्गा ॥
नीम कीट जैसे नीम पियारा ।
विषको अमृत कहे गंवारा ॥
विषके सङ्ग कौन गुण होई ।
किञ्चित् लाभ मूल गो खोई ॥
विष अमृत को एकै सानी ।
जो न जाना तिन विष करि मानी ॥
कहा भयो नल सुख भो सूझा ।
बिनु परचे जग बूझ न बूझा ॥
मति कर हीन कवन गुण कहई ।
लाल चला जो आया रहई ॥

साखी

मूवा है मरि जाहुगे मुएको बाजी ढोल ।
सपन सनेही जग भया सयो दानी रहि गो बोल ॥

गौरी—तिताला

माठी कों कोर पयानक ताला ।
सोई ब्रह्म सोइ रखवाला ॥
सबके देखत जीव डराना ।
ब्रह्मा विष्णु एकहो जाना ॥
जो किसान किसानी करई ।
उपजे खेत बीज नहि परई ॥
छाड़ि देहु नस झेलिक झेला ।
बूड़े दोउ गुरु और चेला ॥

तीसर बूड़े पारथ भाई ।
जिन्ह बन गड़ा होदवा लगाई ॥
भूकि भूकि कूकुर मरि गयऊ ।
काज न एक सियारसे भयऊ ॥

साखी

मूसी बिलाई एक सङ्ग कहु कैसे रहि जाए ।
अचरज एक देखहु हो सन्तो हस्ती सिंहहि खाए ॥

२

नहि प्रतीति जेइ है संसारा ।
दुर्बल चोट कठिन कर मारा ॥
सो तो ग्रेखे जास लुटाई ।
काहूके परतीत न आई ॥
चले लगी सब मूल गंवाई ।
यम केवारि काटि नहि जाई ॥
आज काज है कालि अकाजा ।
चले लादि डिङ्ग नर राजा ॥
सहज बेचारे मूल गवाई ।
लाभ ते हानि होइ रे भाई ॥
ओछी मति चन्द्रमा गो अथई ।
त्रिकुटी सङ्ग न वासो वसई ॥
ऊँ हम अष्ट तुम जीतहु जाई ।
तब हो विष्णु कहा समुझाई ॥
तब सनकादिक तत्त्व विचारा ।
जैसे रङ्क परा धन पारा ॥
भव मर्याद बहुत सुख लागा ।
ए लेखे सब संशय भागा ॥
देखेहि उतपति लागु न वारा ।
एक मरे एक करे विचारा ॥
मुए गएको कोइ न कहई ।
झूठो आशा लगी जग रहई ॥

साखी

जरत जरत ते बाचहु काहे न करहु गुहारि बह ।
विष खेदयके खायहु राति दिवस मिलि झारि बह ॥

भूपाली—तिताला

बड़ सो पापी आहि गुमानो ।
पाखण्ड रूप छला नल जानो ॥
वामनरूप लीन्ह वलि राजा ।
ब्राह्मण कीन्ह कौनको काजा ॥
ब्राह्मण हो सब कीन्हो चोरी ।
ब्राह्मण ही को लागो घोरी ॥
ब्राह्मण कीन्हो ग्रन्थ पुराना ।
कैसेहु के मोहि मानस जाना ॥
एक से ब्रह्मा पन्थ चलाया ।
पशुहि गोप गोपालहि गाया ॥
पशुगो शम्भू जगत् चलाया ।
एक से भूत प्रेत मन लाया ॥
एक से पूजा जैन विचारा ।
एक से निहुरि नमाज गुजारा ॥
कोइ काहु का कहा न माना ।
झूठा खसल कबीर न जाना ॥
तनमनमें रहो मेरे मुल्ला ।
सत्य कबीर सत्य है वल्ला ॥
आपुहो हेच आपुहो पाता ।
आपुहो कुल आपुहो जाती ॥
सर्वभूत संसार निवासी ।
आपुहि खाम आपु सुख वासी ॥
कहत मोहि भएल युग चारो ।
काके आगे कहो पुकारो ॥

साखी

साँचहि कोई न माने झूठहिके सङ्ग जाए ।
झूठहि झूठा मिल रहा अहमक् खेहा खाए ॥

२

उमड़ वहिरिया परि गौ संझा ।
अगवा भूले वन खण्डा मंझा ॥
पिया न तैं धनि अनतै रहइ ।
चौपरि कामरि माथे महइ ॥

साखी

फुलवा भार न ले सके कहै सखो सन रोइ ।
ज्यों ज्यों भोजे कामरो त्यों त्यों भारो होइ ॥

कलिङ्ग-गौरी—तिताला

चलत चलत अति चरण पिराने ।
हारि परे तहां अति रिसियाने ॥
गुणी गन्धर्व मुनि अन्त न पाया ।
हरि अलोप जग धन्धे लाया ॥
गहन बन्ध बानो ना सूझा ।
थाकि परे तब कछू न बूझा ॥
भूलि परे जो अधिक डेराई ।
रजनी अन्धकूप होइ आई ॥
माया मोह उहा भरिपरो ।
दादुर दामिनो पायन आ परो ॥
बरसे तपै अखण्डित धारा ।
रजनी जाव न कछू अहारा ॥

साखी

सभे लोग जहंड़ाइया व्याभे सके भुलाय ।
कहा कोइ माने नहीं सब एकै माह समाय ॥

भूपाली—तिताला

जस जोव आप मिले अस कोइ ।
बहुर धरम सुख हृदया होइ ॥
जासो बात राम को कहो ।
प्रीति न काहुसो निवहो ॥
एकै मान सकल जग देखो ।
बाहर परे सो होइ विशेखो ॥
वोखे मोहके फन्द छोड़ाइ ।
जहां जाए तहां काट कसाइ ॥
आहि कसाई छूरो हाथा ।
कैसेहु आवे काट न माथा ॥
मानुष बड़ा बड़ाके आया ।
एकहि पण्डित सबे पढ़ाया ॥

पढ़ना पढ़ो धरो जनि गोइ ।
नहि तो निश्चय जाहु बिगोइ ॥

साखी

सुमिरण करहु रामको छाड़हु दुखांको आस ।
नाहित तरऊपर धरि चापि है
यमको रहु कोट पचास ॥

१

अद्भुद पन्थ बरनि नहि जाई ।
भूमै राम भुलो चुवि पाई ॥
जौ चेतहु तो चेतहु भाई ।
नाहित जीव जनम ले जाई ॥
शब्द न मानै कथै ज्ञाना ।
ताते यम दीन्हो है थाना ॥
संशय सावज वसै शरीरा ।
तिन खाइल अव नवेयल हीरा ॥

साखी

संशय सावज शरीर में सङ्गहि खेले जुआरि ।
ऐसा धाइ बापुरा जीवहो मारै झारि ॥

एमन—तिताला

अनहद अनुभवको करि आसा ।
ए विपरीत देखहु होत तमासा ॥
ए तमाशा देखहु रे भाई ।
जहां सुनो तहां चलि जाई ॥
सुनहो वच्छे सुनहो गयउ ।
हाथा छाड़ि बेहाथा भयउ ॥
संशय सावज सकल संसारा ।
काल अहेरो सांझ सकारा ॥

साखी

सुमिरण किये हु का रामको काल गहै केश ।
नहि जानहु कब मारि हो का घरका परदेश ॥

२

अब कहो राम नाम अविनाशी ।
हरि छोड़ि जियरा कतहु न आशी ॥
जहां जाहु तहां होहु पतङ्गा ।
अब जनि जरहु समुझि विष सङ्गा ॥
राम नाम लय लावै लीन्हा ।
भृङ्गी कीट समुझि मन दीन्हा ॥
भी अस गरुअ अति दुःखके भारी ।
करु जीव यत्न जो देखु विचारी ॥
मन के बात छल छरो बेकारा ।
ते नहि सूझै वार न पारा ॥

साखी

इच्छा कर भवसागर तामें वोहित राम अधार ।
कहै कबीर हरि शरम गो सुख विस्तार ॥

१

बहुत दुःख दुःखको खानी ।
तब तचि हो जब राम हो जानो ॥
रामहि जानि युकति ज्यों चलइ ।
युकती सो फन्दा नहो परइ ॥
युकतिहि युकति चला संसारा ।
निसे कहा तो मानु हमारा ॥
कनक कामिनी घोर पटोरा ।
सेवति बहुत रहलि दिन थोरा ॥
थोरे संपति गो बौराइ ।
धर्मराज के खबरि न पाइ ॥
देखि त्रास मुख गो कुम्हिलाई ।
अमृतके धोके गो विष खाई ॥

साखी

मैं सिरजो मैं जारो मैं मारो मैं खाउ ।
जल थल महि आद मिरो मोर निरञ्जन नाउ ॥

३

अलख निरञ्जन लखै न कोइ ।
जे बन्धे बन्धार न कोइ ॥
जे भूठा बाधा ए आना ।
झूठे बात सांच कर माना ॥

ब्रह्मा वर्म्मा किन व्यवहारा।
कर्म्म विवर्जित बसे निनारा॥
षट आश्रय और रस न दीन्हा।
षट् रस वास घटे वस्तु कीन्हा॥
चारि वृक्ष छः शाख बखाने।
बौत्या अमित जन ना जाने॥
आरे आगम करे विचारा।
ते नहि सूझे वार न पारा॥
जप तीर्थ धर्म करे बहु पूजा।
काल पुरुष जग कीजे बहूजा॥

साखी

साखी मन्दिल नेह का मति कोइ पैठे धाए।
जो कोइ पैठे धाइ के विन शिर सेती जाए॥

५

अलख सुख दुःख आदि औ अन्ता।
मन भुलान मग रमे सन्ता॥
सुख विसराए मुक्ति कहा पावे।
परिहरि सांच झूठ कह धावे॥
अखल ज्योति डाहे एक सङ्गा।
नयन नेह जस तरे पतङ्गा॥
करहु विचार जो सब दुःख जाइ।
एह प्रहर झूठा केर समाइ॥
लालच लागो जन्म सराइ।
जरा मरण नियरायल आइ॥

साखी

भ्रमकी बाधल जग इहि विधि आवे जाइ।
मानुष जन्म पाइ के बल का है की जइहाइ॥

केदारा—तिताला

चन्द्र चकोरकी ऐसी बात जनाई।
मानुष बुद्धि दीन पलटाइ॥
चारि अवस्था सपने कहइ।
झूठी फूरा मानत अहइ॥
मिथ्या बात न जाने कोइ।
एहि विधि सब गयल बिगोइ॥
आगी दे दे सबनि गंवाइ।
मानुष बुद्धिकी सपने पाइ॥
चौतिस अक्षर सो निकले जोइ।
पाप पुण्य जाने गो सोइ।

साखी

सोइ कह ते सोइ हो ठगी तेनो कहि न बाहर आय।
हो हजूर ठाठ कहत हो क्यों धे धे जनम गंवाय॥

२

चौतिस अक्षर का एहि विशेखा।
सब श्रीनाम एहि में देखा॥
भूलि भटकि नर फिरि घर आवा।
होत जन्म सो सर्बाम गंवावा॥
खोजहि ब्रह्मा विष्णु शिव शक्ति।
अनन्त लोक खोजहि बहु भक्ति॥
खोजहि गुणि गन्धर्व मुनि देवा।
अनन्त लोक खोजे बहु सेवा॥

साखी

यती सती सब खोजे माने मन में हारि।
बड़ बड़ जीवन वाचही कहहि कबीर पुकारि॥

केदरा—तिताला

आपुहि करता भये कुलाला।
बहु विधि वासन गने कुम्हारा॥
विधि ने सबे कीन्ह एकठाउ।
अनेक यतन के यानक पाउ॥
जी तुर अग्नि ने दीन्ह प्रजारी।
तंहि में आप भये प्रतिपाली॥
बहुत यतन ते बाहर आया।
तब शिव शक्ति नाम धराया॥
घर के सुत जो होइ अयाना।
ताके सङ्ग न जाइ सयाना॥
सांची बात कही ने अपनी।
भया दिवाना और के पुनी॥

गुप्त प्रकट है एकै दुधा।
का को कहिए ब्राह्मण सुद्रा॥
समुझ गई भूले मति कोइ।
हिन्दू तुरुक झूठ कुल दोइ॥

साखी

जिन्ह एह चित्र बनाइयां सांचा सो ए वार।
कहहि कबीर ते जन भले जो चितवत ही
सेत विचार॥

केदारा—तिताला

ब्रह्मा को दीन्हा ब्रह्मण्डा।
सात द्वीप पुहुमी नवखण्डा॥
सत्य सत्य कै विष्णु दृढ़ाइ।
तीनो लोक में राखि न जाइ॥
लिङ्ग रूप शङ्कर तब कीन्हा।
धरती खाल रसातल दीन्हा॥
तब अष्ट की रची कुमारी।
तीन लोक माइंन सब भारी॥
दुतिया नाम पार्वती भई।
तब कर ते शङ्कर को दई॥
एकै पुरुष एक कहे नारी।
तेहि ते रची खानि जग चारी॥
शर्मन वर्मन देव औ दासा।
रजगुण तम मानुष रति प्रकासा॥

साखी

एकै अण्ड उकार ते सब जग भयो पसार।
कहहि कबीर सब नारि रामको अविचल
पुरुष भतार॥

२

अस जोलहा कामर मन जाना।
जिन जग आइ पसारिहु ताना॥
धरति अकाश दोइ गांव ठगाया।
चन्द्र सूर्य दोइ नारि बनाया॥
सहस्र तारा ले पूरण पूरी।
अजहूं औ न कठिन है दूरी॥
कहहि कबीर कर्मो माजुरी।
सुत कुसुत बोन भल कुरी॥
वध्य हु ने तृण खिरन मै होइ।
तृण से वध्य करे पुनि सोइ॥
निझरू नरु जानि परिहरै।
कर्म कवायल लालच करै॥
कर्म धर्म मति बुद्धि प्रहरिया।
झूठा नाम सांच ले खरिया॥
राजगति विविध कोन परगासा॥
कर्म धर्म बुद्धिकेर विनासा॥
रविके उगे ते भो खोना।
घर बाहर दोनोमें लोना॥
विष खाइ विष नहिं भावे।
गरुड़ा सो जो मृतक जिआवे॥

साखी

अलख ज्योति लगी पलक में पलकहि में डसि जाय।
विषहर मृत न मानै तो गरुड़ा काह कराय॥

सोरठ—तिताला

औ भूले षट दर्शन भाइ।
पाषण्ड भेख रहा लपटाइ॥
जीव शीवका अहै मसैना।
चार बन्ध त्रिगुण रैना॥
जैनो धर्म कर्म ना जाना।
पाती तोरि देवघरा आना॥
देव नाम अरु वाक् फूला।
मानो जीव कोटि सम तूला॥
जो पृथिवी के राम उचारे।
देखत जन्म आपनो हारे॥
मन मतिमन्द करे असरारा॥
काल पैखो दश सैनहि हारा॥
ताकर हाल होइ अदभुदा।
छो दर्शन में जैन विगुरदा॥

साखी

ज्ञान अमर पद बाहर नियरे ते है दूरि।
जो जाने ताके निकट है नहि तो रह्यो सकल घट पूरि॥

२

सुम्रत आहि गुणनके चीन्हा।
पाप पुण्यके मारग लीन्हा॥
सुम्रत वेद पढ़े असरारा।
पाषण्ड रूप करै हंकारा॥
पढ़े वेद अरु करै बड़ाई।
संशय गांठि अजहु नहि जाई॥
पढ़े सत्य सो जीव बध करई।
मूड़ि काटि अगु मन के धरई॥

साखी

कहहि कबीर ए पाषण्ड बहुतक जीव सताव।
अनुभव भाव न दरसे जीवत आपन लखाव॥

बिहाग—तिताला

अन्ध ले दर्पण वेद पुराना।
देखो कहा महा रस जाना॥
जस खर चन्दन लादे भारा।
परम लगासन जानु गंवारा॥
कहहि कबीर खाजे असमाना।
सो न मिले यात्री अभिमाना॥

२

वेदकी पुती सुम्रत भाई।
सो जो बैरो करलते आई॥
आपही वरो आपु गरवन्धा।
झूठा मोह काल के फन्दा॥
बांधत बांध छोरि नहि जाई।
विशेष रूप भुलो दुनो आई।
हमरे देखत सकल जग लूटा।
दास कबीर राम कहि छूटा॥

साखी

रामहि राम पुकारत जिह्वा पड़िगौ रौस।
सूधो जल पीवे नहि खाद पवनको हौस॥

बिहाग—तिताला

पढ़ि पढ़ि पण्डित करै चतुराई।
निज मुक्ति मोहि कहे समुदाई॥
कहां बसे पूर्व कौन गांउ।
सो मोहि पण्डित सुनावहु नांउ॥
चारि वेद ब्रह्मै निज ठाना।
मुक्ति को मर्म न उनहु जाना॥
दान पुण्य उन्ह बहुत बखाना।
अपना मरणको खबरि न जाना॥
एक नाम है अगम गंभीरा।
तहवा अस्थल दास कबीरा॥

साखी

चिंउटी जहां न चढ़ि सकै राई नहि ठहराइ।
आवागमन को गम नही तहां सकल जग जाइ॥

२

पण्डित भूले पढ़ि गुणि वेदा।
आपु अपनपौ जानु न भेदा॥
सन्ध्या तर्पण औ षट् कर्मा।
ई बहु रूप करै अस धर्मा॥
गायत्री युग चारि पढ़ाई।
पूछहु जाइ मुक्ति किन पाई॥
और के छुए लेत हो सोचा।
तुमते कहहु कौन है नोचा॥
अगुणी गर्व करो अधिकाई।
अधिको गर्व न होत भलाई॥
जासु नाम है गर्व प्रहारो।
सो कस गर्वहि सकै संहारो॥

साखी

कुल मर्यादा खोइ के खोजे जिन पद निर्वाण।
अंकुर बीज नसाइके नास भए विदेही थान॥

२

आपनो चतुर विलक्षण सोइ ।
एक सयान सयान न होइ ॥
दूसर सयान काम मन जाना ।
उतपति परलै सांझ विहाना ॥
वणिज एक सब नालो टाना ।
नियम धर्म सजि मन भगवाना ॥
हरि अस ठाकुर तेज न जाइ ।
वास न भिस्ति गाव दुख हाइ ॥

साखी

ते नर कहां गए जिन्ह गुरु दीन्हो मूढ़ ।
राम नाम निज जानि कै छांड़ि देहो भ्रम खूढ़ ॥

सोरठ—तिताला

एक सयान सयान न होइ ।
दूसर सयान न जाने कोइ ॥
तीसर सयान सयान हि खाइ ।
चउथ सयान तहां लजाइ ॥
पचें सयान जौ जाने कोइ ।
छवें माह सब गहल विगोइ ॥
सतवें सयान जे जाने भाइ ।
लोक वेद में दीन्ह देखाइ ॥

साखी

बीजक बतावे बीत जा जौ वित गुप्ता होइ ।
ऐसे शब्द बतावे जीव को बूझै विरला कोइ ॥

ठुमरी—तिताला

एहि विधि कहौं कहा नहि माना ।
मारग माझ पसारो ताना ॥
राति दिवस मिलि जोरि न तागा ।
वीढ़त कातत भर्म न भागा ॥
भर्मा सब घट रहल समाई ।
भर्म छोड़ि कतहु नहि जाई ॥
परै न पूरि दिनहु दिन छीना ।
तहइ जाइ जहं अगा विहीना ॥

जो मत आदि अन्त चलि आया ।
सो मत सभनुन प्रगट सुनाया ॥

साखी

उहै संदेस फूरि कमाने लीन्हों सिरहि चढ़ाइ ।
सन्तो सन्तोष सुख में रहो तौ हृदय जुड़ाइ ॥

२

जिन कलिमा कलि माहि पठाया ।
कुदरति खोजि तिनहु नहि पाया ॥
क्रमते करम करे करतूता ।
वेद कतेव भए सबो कूता ॥
क्रमते सो जो गर्भ अवतरिया ।
क्रमते सो नमाज़ गुजरिया ॥
क्रमते सुनत और जो नेउ ।
हीन्दू तुरुक न जाने भेउ ॥

साखी

पानी पवन से जोड़ के रचि आई उतपात ।
सूनी सुरति समाइके कासा कहियै जात ॥

३

आदम आदि सुधी नहि पाई ।
मामा हौ तया काइ आई ॥
तब नहि होते तुरुक औ हिन्दू ।
माइ कर रुधिर पिता कर विन्दू ॥
तब नहि होते गाइ कसाई ।
तब कहु विसमी किन फ़ुरमाई ॥
तब नहो होते कुल अरु जानो ।
दोज़ख़ कवना नहि उतपानो ॥
मनमस सेका सुधी नहि जाने ।
मति भुलान वे दोन भुखाने ॥

साखी

संयोग कारण नख भी जागी का गुन जाई ।
जिह्वा स्वाद कर्मोमेंनउ कीन्हो बहुत उपाई ॥

२

अचुक रास समुद्रको खाई ।
रवि शशि कोटि तेतिसो भाई ॥

अमर जाल में आसन माड़ा।
चाहत सख दख संग न छाड़ा॥
दुःख के मर्म काहु नहि पावा।
बहुत भांतिके जग बौरावा॥
आपुहि बावर आपु रिसियाना।
हृदया बसत राम नहि जाना॥

साखी

लेइ हरि तेई ठाकुर तेई हरिके दास।
नहि यम भवा न यामिनी भामिनि चली निरास॥

देश—ठुमरी

अब हम रहलि रहलि नहि कोइ।
हमरे माह रहल सब कोइ॥
कहु हो राम कवन तोर सेवा।
सो समुझाइ कहहु मोहि देवा॥
फुर फुर कहो मरै सब कोइ।
झूठे झूठा सांधत होइ॥
आंधर कहै सबै हम देखा।
तहां दिठार बैठि मुख पेखा॥
एहि विधि कहो माने जो कोइ।
जस मुख तस जो हृदए होइ॥
कहै कबीर हंस भुस खाइ।
हमरे कहे छुटि हो भाइ॥

खम्बावती—तिताला

जिन जिन कीन आप विश्वासा।
नरक गए तै नरकै वासा॥
आवत जात न लागे वारा।
काल अहेरो सांझ सकारा॥
चौदह विद्या पढ़ि समुझावे।
अपने मरण कि खबर न पावे॥
जाने जीव के परा अन्देसा।
झूठे आनि के कहा सन्देसा॥
सङ्गति छोड़ करी असरारा।
उभे मोट नरक के भारा॥

साखी

गुरु द्रोही मन मुखो नारो पुरुष विचार।
तें नर चौरासी भर्मि है जो लगि चन्द्र दिवाकर॥

२

कबहु न भए सङ्ग औ साथा।
ऐसे जन्म गवायो आथा॥
बहुरि न पैहो ऐसी ठाना।
साधु सङ्गति तुम नहि पहिचाना॥
अब तोर होइ नरक में वासा।
निशिदिन रहे लवारिके साथा॥

साखा

जाति सबनकर देखिए कहहि कबीर पुकार।
चेतना होइ तो चेतहु नाहि त धोस परतु है खार॥

३

हिरनाकुस रावण गौ कंसा।
कृष्ण गए सुर नर मुनि वंशा॥
ब्रह्मा गये मर्म नहि जानी।
बड़ सब गए जे रहल सयानी॥
समुझि न परल राम के कहानी।
निरुवक दुःख को सबंक पानी॥
रहि गौ पन्थ थकित भये मोना।
दशहु दिसा पजारि भौ योना॥
मीन जाल भयो ई संसारा।
लोहे की नाव पखानका भारा॥
खेवे सबै भरम हम जानो।
तबो कहे रहे उतरानी॥

साखी

मछरी मुख जस केचुया मुसवन गिरदानि।
सरपनमें गहरवा ऐसे जाति देखि सब न के जानि॥

२

विनसे नाग गरुड़ गलि जाई।
विनसे कपटी औ सत भाई॥
विनसे पाप पुण्य जिन कीन्हा।
विनसे गुण निरगुणिन चीन्हा॥

विनसे अग्नि पवन औ पानी।
विनसे सृष्टि कहा ले गानी॥
विष्णुलोक विनसे छण माही।
हौं देखा परव ले को छाही॥

साखी

मत्स्यरूप माया भई सबरे खेले अहेरि।
हरि हर ब्रह्मा न ऊबरे सुर नर मुनि कहु केरि॥

जरासिन्धु शिशुपाल संहारा।
सहस्र अर्जुन छल सो मारा॥
बड़ छल रावण से हो गल विती।
लङ्का रहल कञ्चन की भिती॥
दुर्योधन अभिमानी गयऊ।
पाण्डव केर भेद नहि पयऊ॥
भया केछि भगील सब राजा।
उत्तम मध्यम बाजन बाजा॥
छः चकवे बीति धरनि समाना।
एको जीव प्रीति तन जाना॥
कह ले कहो अचेते गये।
चेत अचेत झगरा एक भये॥

साखी

यह माया जग मोहनी मोहेनि सब जग झार।
हरिश्चन्द्र सत् के कारणे धरि धरि शोक विकार॥

खम्बावती—तिताला

माणिकपूर कबीर बसेरी।
मदित सुनो शेखत की केरी॥
दूजो सुनो जवनपुर थाना।
झसी सुनो पीरन की खाना॥
एक दश पीर लिखे तेहो नामा।
खसमा पढ़े पैगम्बर नामा॥
सुनि बोल मो पे रहा न जाई।
देखि मूकका रहा भुलाई।
हबी नबो नबीके कामा।
जहां ले अमल सो सबे हरामा॥

साखी

शेख अकर दी शेख मकर दो मानो वचन हमार।
आदि अन्त औ युग युग देखो दृष्टि पसार॥

२

दर की बात कहो दरवेस।
पातशाह के वन भेस॥
कहा कूच कहा करो मुकामा।
कवनि सुरतिके करो सलामा॥
मैं तोहि पूछो मुसलमाना।
लाल जरद को ताना बाना॥
काज़ी काज करो तुम कैसा।
घर घर ज़बह करावहु भैसा॥
कवरो मुरगी किन फ़ुरमाया।
का के कहे तुम छुरो चलाया॥
दरद न जाने पोर कहावै।
वेदा पढ़ि पढ़ि जग भरमावे।
कहै कबीर हकसदह बतावे॥
आप शरीखे जग कबुलावे॥

साखी

दिन रहतु हो रोज़ा राति को हतो हो गाई।
एह सुन वे बन्दगी कबीर खुशी खोदाई॥

३

कहत मो भइल युग युग चारी।
समुझत नहीं मोर सुत नारी॥
वेसहि आगि लागि वेसहो जरिया।
भर्म भुलान नर धन्धे परिया॥
हस्तीके फन्दे हस्ती रहई।
मृगके फन्दे मृगा गहई॥
लोहै लोह काट अस आना।
त्रिया के ताव त्रिया पे जाना॥

साखी

नारी रचतें पुरुष पुरुष रचते नार।
पुरुष पुरुष जो रचते विरले संसार॥

परज—तिताला

जाका नाम अकहु यारे भाई।
ताकर कहा रमणी माई॥
कहिये तात प्रजे है ऐसा।
जैसा पथिक बोहित चढ़ि वैसा॥
है कछु रहनेकी बाता॥
बैठ रहै चले पुनि जाता॥
रहै वदन नहि अङ्ग स्वभाउ।
मन अस्थिर न बोले काउ॥

साखी

तन रहि तो मन जात है मन रहि तो तन जाई।
तन मन एकै ह्वै रहै सो हंस कबीर कहाई॥

२

जेहि कारण शिव अहु वियोगी।
अङ्ग विभूति लाइ ले योगी॥
शेष सहस्र मुख पार न पावै।
सो अब खसम सहित समुझावै॥
वैसो विधि जो मो को ध्यावै।
छठए मास जो दर्शन पावै॥
कौनै भाव देखाई देउ।
गुप्त रहहु स्वभाव सब लेउ॥

साखी

कहहि कबीर पुकारि कै सब काउ है विचार।
कहा हमार न माने तो कस छूटे भ्रमजार॥

परज—तिताला

महादेव मुनि अन्त न पाया।
मास सहित उन जन्म गंवाया॥
उनते सिद्ध न साधक कोई।
मन अस्थिर कहु कैसे के होई॥
जौ लगि तनमें आहै सोई।
तौ लगि चेत न देखै कोई॥
तब तौ चिति हो जब तजि हो प्राना।
भये ज्ञान तब मन पछताना॥

इतना सुनत निकट चलि जाई।
मन के विकार न छूटे भाई॥

साखी

तीनो लोक मुए कुवायके छूटो न काहु को आस।
एकहि अन्धरे जग खायो सबका भवा निपास॥

परज—तिताला

मरिगे ब्रह्मा काशी के वासी।
शिव समेत तरे अविनाशी॥
मथुरा तारि गे कृष्ण गुवारा।
तारि तारि गये दशौ अवतारा॥
तारि तारि गये भक्ति जिन ठानी।
सरगुण महँ जिन निर्गुण आनी॥

साखी

नाथ मछन्द्रा बचे नाही गौरख दत औ व्यास।
कहै कबीर पुकारि कै ए सब ध्यान के पास॥

२

तारे राम तार लछिमना।
सङ्ग न गइ सीता अस धना॥
तारत नाहि धन लागो वारा।
गए भोज जिन साज सवारा॥
गय पाण्डव कुन्ती अस रानी।
गए सहदेव जिन बुधि मति ठानी॥
सर्व सोनेको लङ्क उठाई।
चलत बार कछु सङ्ग न लाई॥
जा करि पुरिया अन्तरिच्छ छाई।
सो हरिचन्द्र देखल नहि जाई॥
मूरख मनुष्य अधिक सजोई।
अपने मरे और लग रोई॥
इन जाने अपने मरि जैवे।
टका दसवो देय रखो ह्वैवे॥

साखी

अपनो अपनी करिए काहु के न लागी साथ।
अपनी कारि गे रावण अपनी दशरथ नाथ॥

परज—तिताला।

दिन दिन जरै जननी के पाउ।
गाड़े जाहि न उमगे काउ॥
कान्ध न देइ मसकरी करइ।
कहु दुहु भांति कैसे निस्तरइ॥
अकाम करै कर्म के धावे।
पढ़ि गुण वेद जगत समुझावे॥
छूछा परै अकारथ जाई।
कहै कबीर चित चेतहु भाई॥

२

कृति पा सुरत रसिक एक अहइ।
नाध पचास के आये कहइ॥
विद्या वेद पढ़े पुनि सोइ।
वचन कहै प्रतयइ होइ॥
पहुंचो बात विद्या के पेता।
वनहा के भर्म भया सहेता॥

साखी

खड़ खोज न तु परै पीछे अगम अपार।
विनु खरचे कस वाचि हो कबीर भूठा है हंकार॥

२

तै सुत मानु हमारी सेवा।
तोको राज देव हुं देवा॥
अगम दुर्गम गढ़ देव छुड़ाइ।
औरो बात सुनो कछु आइ॥
उतपति परलै देहु देखाइ।
करहु राज सुखि बै सदु आइ॥
एको बार न होइ है बांको।
बहुरि जनम होइ है ताको॥
जाइ पाप सुख देउ घना।
निश्चय वचन कबीर के मना॥

साखी

साधु सन्त तेइ जन मानो वचन हमार।
आदि अन्त उतपत्ति प्रलय देखो दृष्टि पसार॥

२

चढ़त चढ़ावत भण्डहरि फोरो।
मन वहि जाने के करि चोरो॥
चोर एक मूसे संसारा।
विरला जन कोइ बूझन हारा॥
स्वर्ग पाताल भूमि लै भारो।
एकै राम सकल रखवारो॥

साखी

पाहुन ह्वै ह्वै सब गए विनु भितियनको चीत।
जा सो किया मिताइया साजन भया न होत॥

३

छाड़ो पति छाड़ो लंगराई।
मन अभिमान टूटि सब जाई॥
जिन सो चोरो मिथ्या खाई।
फिर बौरवा पलुहा बन जाई॥
पुनि सम्पति औ पति के रावै।
सो बो वास सार लो पावै॥

साखी

भूठ भूठ के डारो मिथ्या इह संसार।
तेहि कारण मैं कहत हों जेहिते होइ उधार॥

२

धर्म कथा जो कहते रहइ।
लावरो उठो प्रातै कहइ॥
लावरि विहने लावरि संभा।
एक लावरि वसे हृदया मंभा॥
राम हु केर मर्म नहि जाना।
लै मत ठाने वेद पुराना॥
वेदहु केर कहल नहि करइ।
जरते रहै स्वस्ति नहि परइ॥

साखी

गुणातीत के गाथ तै आपहि गये गमाय।
माटी का तन माटी मिलि गो पवनहि पवन समाय॥

परज—यत्

जौ तू करता वरण विचारा।
जन्मत तीन दण्ड अनुसारा॥
जन्मे शूद्र मुए पुनि शूद्रा।
कृतम जनेउ घालि जग दूद्रा॥
जौ तुम ब्राह्मण ब्राह्मणीके जाया।
अवराह दे काहे न आया॥
जो तू तुरुक तुरुकनी के जाया।
पेटहि काहे न सुनति कराया॥
कारी धवरी दूहो गाई।
ता को दूध देह बिलगाई॥
छाड़ि कपट नर अधिक सयानी।
कहै कबीर भुज सारङ्ग पानी॥

२

नाना रूप वरण इक कीन्हे।
चारि वरण वह काहु न चीन्हे॥
नष्ट गए कर्त्ता नहि चीन्हा।
नष्ट गए औरहि मन दीन्हा॥
नष्ट गये जिन वेद बखाना।
नष्ट गये जिन वेद बखाना॥
वेद पढ़े पै भेद न जाना॥
बिमुखल करै नयन नहि सूझा।
भया अयान तब काछू न बूझा॥

साखी

नाना नाच नचाइ कै नाचे नष्ट कै भेख।
घट घट है अविनाशी सुनहु तको तुम देख॥

२

काया कञ्चन यत्न कराया।
बहुत भांति कै मन पलटाया॥
जो सौ वार कहौ समुझाई।
तौ यहु धरा छुवाय न जाई॥
जन कै कहै आन रहि जाई।
नवो निधि सिधि तिन पाई॥

सदा धर्म जाके हृदे वसई।
राम कसोटी कसते रहई॥
जोरे कसा वे अन ते जाई। ६
सो बावर अपन हु बौराई॥

साखी

ता ते परो काल की फांसो करहु आपनो सौच।
जहां सन्त तहां सन्त सिधारो मिलि रहो धुनते पौच॥

४

अपने गुण को अवगुण कहहु।
एह अभिमान तुम न विचारहु॥
तुम जियरे बहुत दुःख पाया।
जल विनु मीन कवन सच पाया॥
चातक जल हल भरे जो पासा।
मेघ न वरसे चले उदासा॥
स्वांग धरे भवसागरको आसा।
चातक जल हल आसै पासा॥
राम नाम एही निज सारू।
ऐसा बहुत सकल संसारू॥
हरि उतङ्ग तुम भांति पतङ्गा।
यम घरि कियहु जीव के सङ्गा॥
कै चित है सपने निधि पाई।
हिय न समाइ कहां धरहु छपाई॥
हिय न समाइ छोड़ नहि पारा।
झूठ लोभ तें कछु न विचारा॥
सुमृत कीन्ह आपु नहि माना।
तब जरतइ छल छागर ह्वै आना॥
जिन दुर्मति डोले संसारा।
ते नहि सूझै वार न पारा॥

साखी

अधम एसो बड़ो ले कोइ न करै विचार।
कहा हमार माने नहि तब काल छूटे अभमजार॥

माड—तिताला

सोई हितू बुद्धि मोहि भावै ।
जातु कुमार्ग मारग लावै ॥
सो सयान मारग रह जाई ।
करै खोज कबहूं न भुलाई ॥
सो झूठा जो सुत को तजहो ।
गुरुकी दया राम तें भजही ॥
किञ्चित् है एक तें भुलाना ।
धन सुत देखि भए अभिमाना ॥

साखी

दिये न खज़ाना किये न पियाना न दिन भया उजार ।
मरि गये तें मरि गये बाचे बाचनहार ॥

२

देह हिलाए भक्ति न होई ।
स्वांग धरेन बल बहुत बिगाई ॥
धींगा धागी भलो न माना ।
जा काहू मोहि छूटे न जाना ॥
मुख कछु आन हृदय कछु आना ।
सुपने कहो मोहि ना जाना ॥
सो दुःख पड़ है एह संसारा ।
जो चेतो तो होइ उबारा ॥
जो गुरुजनको निन्दा करई ।
शूकर श्वानका जन्म सो धरई ॥

साखी

लक्ष चौरासी जीव जो तुम भटको दुःख पाव ।
कहै कबीर जो रामहिं जानै सो मोहि नीके भाव ॥

३

ताहि वियोग ते भये अनाथा ।
परे निकुञ्ज न पावे पाथा ॥
वेद नकल कहे सो जाने ।
जे समुझे ते भलो न माने ॥
नट वट वह खेले जो जाने ।
ता कर गुण भल ठाकुर माने ॥
वोई खेल सब घट माहि ।
दूसर के ले कछुवो नाहि ॥
भलो पोच जो अवसर आवै ।
कैसे के जन पूरो पावै ॥

साखी

जाकर सर लागे सो जाने है पीर ।
लागे तो भागे नहो सुख सिन्ध निहार कबीर ॥

४

ऐसा योग न देखा भाई ।
भूला फिरता लिये गफलाई ॥
महादेव को पन्थ चलावे ।
ऐसो बड़ो महतो कहावै ॥
हाट बज़ार लगावे तारो ।
कच्चा सोधा माया प्यारो ॥
कब कहु दत्त मवासा तोरो ।
कब सुखदेव तोपची जोरो ॥
कब नारद बन्धके चलाया ।
व्यासदेव कब बन्धन जाया ॥
करे लराई मति के मन्दा ।
एह अतीत तक तरकश बन्दा ॥
भए विरक्त लोभ मति ठाना ।
सोना पहिरि लजावै बाना ॥
घोरा घोराकी नहो बटोरा ।
गाव पाइ जस चले करोरा ॥

साखी

सुन्दरि नहीं है सोहती सनकादिक के साथ ।
कबहु क दगा लगावै कारो हाड़ो लोन्हें हाथ ॥

परज—तिताला

बोल ना का सो बोलिए भाई ।
बोलनहो सब तत्तु नसाई ॥
बोलत बोलत बाट विकारा ।
सो बोलिए जो पोच विचारा ॥

मिलै सन्त वचन दुइ कहिए।
मिले असन्त मौन ह्वै रहिए॥
पण्डित सो वो ना हितकारी।
गुरु खसार हिए भक्रमारी।
कहै कबीर अन्ध घट डोलै।
पूरो होइ विचार हि बोलै॥

२

सो गदधा जो मनके माना।
ताको बात इन्द्रहु नहि जाना॥
जटा तोरि पहिरावे सेलो।
योग युक्तिका गर्वहु हेलो॥
आसन उड़ाए कौन बड़ाई।
जैसे कौवा चीलृह मेंडराई॥
जैसो भीति तैसी है नारी।
राजपाट सब गनै उजारी॥
जस नरक तस चन्दन जाना।
जस बाउर तस रहै सयाना॥
लपसी लौंग गनै इकसारा।
खांड प्रहरि सुख फांकं छारा॥

साखी

एहो विचार विचार ते गए बुद्धि बल चेति।
दोउ मिलि एक होइ रहा मैं काहि लगाऊं हेत॥

कलिङ्ग—तिताला

नारि एक संसार हि आई।
माइ न वाके बापहि जाई॥
गोड़न गुड़न प्राण अन्धारा।
तामें भवरि रहल संसारा॥
दिना सात ले उनको सहो।
बुद्धि अद्भुत् अचरज क्या कहो॥
वाके वदन परं सब कोई।
बुद्धि अरबद अचरज बड़होई॥

साखी

मूस बिलाई एक सङ्ग कहु कैसे रहि जाए।
अचरज एक देखहु हो सन्तो हस्तो सिंहहि खाए॥

परज—तिताला

चलो जात देखो एक नारी।
तर गागरि ऊपर पनिहारी॥
चली जात वै वासओ बाटा।
सोवनिहार के ऊपर खाटा॥
जो इन परे सुपेदी सोरी।
खसम न चीन्हे धरनि भै वोरी॥
सांझ सकार दिया लै बारे।
खसमहि छोड़ि सोवै लगवारे॥
वाही के रस निस दिन राचो।
पीव से बात कहै नहि साचो॥
सोवत छाड़ि चली पिय अपना।
ए दुःख बाधो कहवे कसना॥

साखी

अपनो जांघ उघार कै अपनो कहो न जाए।
कै चित जाने आपना को मेरा जानै गाए॥

कलिङ्ग—तिताला

तहि या होत अस्थूल न काया।
न तोके सोग ताको पै माया॥
कमल पत्र तरङ्ग जल माही।
सङ्गही रहलि पत्र पै नाही॥
आस पास अपढे में रहई।
अगणित अन्त न कोई कहई॥
निराधार अन्धा नै जानो।
राम नाम ले उचरो बानो॥
धर्म कहै सब पानी अहई।
ता के मनहो पानी रहई॥
टोर पतङ्ग सरै धरियारा।
तेहि पानी सब कर आचारा॥
फन्द छोड़ि जो बाहर होई।
बहुरि फन्द न जाहि सोई॥

साखी

भ्रम के बांधल एह जग कोइ न करे विचार।
हरि को भक्ति जाने बिना भव बूड़ि मुया संसार॥

८

तेहि साहेब के लागो साथा।
दो दुःख मेटि के होहु सनाथा ॥
दशरथ कुल अवतरि नहिं आया।
नहिं लङ्का के राव सताया।
नहिं देवकी के गर्भ हि आया।
नहीं यशोदा गोद खेलाया ॥
पृथिवी रमण दमन नहीं करिया।
पैठि पाताल नहीं बलि छरिया ॥
न बालि राजा सो माडो रारो।
नहिं हिरनाकुस वधो पछारो ॥
वाराहरूप धरनो नहिं धरिया।
क्षत्री मारि निक्षत्र न करिया ॥
नहिं गोवर्द्धन कर में धरिया।
नहिं गुवाल सङ्ग वन वन फिरिया ॥
गण्डकी शालग्राम नहिं फूला।
मत्स्य कच्छ हो नहीं जल डूला ॥
द्वारावती शरीर नहिं छाड़ा।
लेइ जगन्नाथ पिण्ड नहिं गाड़ा ॥

साखी

कहै कबीर पुकारि के वहु पंथे मति भूल।
जेहि राखो अनुमान के सो स्थूल नाहि अस्थूल ॥

२

माया मोह कठिन संसारा।
यह विचार ना कछु विचारा ॥
माया मोह कठिन है फंदा।
होइ विवेकी सोइ जन बन्दा ॥
राम नाम लै बेरा धारा।
सो बेरा संसार पारा ॥

साखी

राम नाम अति दुर्लभ औरनते नहिं काम।
आदि अन्त औ युग युग मोहिं रामहि ते संग्राम ॥

३

एक काल सकल संसारा।
एक नाम है जगत पियारा ॥
त्रिया पुरुष कछु कह्यो न जाई।
सर्वरूप जग रहा समाई ॥
रूप निरूप जाइ नहिं बोलो।
हरू काग आजा हरू तोलो ॥
भूख न तृषा धूप नहीं छाहों।
दुख सुख रहित रहा तेहि माहों ॥
मानुष जन्म चुके अपराधो।
या तन केर बहुत है साधो ॥
तात जननि कहै पुत्र हमारा।
स्वारथ लागि कीन्ह प्रतिपारा ॥
कामिनी कहै मोर पिय आही।
वाघिनी रूप गरासे ताही ॥
सुत कलत्र रहै लव लाई।
जम्बुक नाई रहै मुंह बाई ॥
काग गृध्र दोउ मरण विचारे।
शूकर श्वान दोउ पन्थ निहारे ॥
अग्नि कहै मैं या तन जारूं।
सो न करौं जो जरत उबारूं ॥
धरणि कहै माहि में मिलि जाई।
पवन कहै सङ्ग लेउं उड़ाई ॥
जे घरके घर कहै गंवारा।
सो वैरी है लगे तुम्हारा ॥
सो मन तुम अपनेके जानो।
विषय स्वरूप भूले विज्ञानो ॥

साखी

एतना तनके साझिया जगमा भरि दुःख पाव।
चेतत नाहो नु गुग्धन लवारे मोर मोर गोहराव ॥

कवित्त—तिताला

वाटत वटा घटायत छाटो।
परखत पर परखावत खोटो ॥

केतिक कहो कहा ले कहो।
औरक कहो परे जो सहो॥
कहे विना मोहि रहल न जाई।
ब्रह्म दूलैं ले कूकुर खाई॥

साखो

खाते खाते युग गया बहुरि न चेतहु आइ।
कहे कबीर पुकारि के ए जीव जीवत जाइ॥

२

बहुतक सहस करो जिन अपना।
तेहि साहेब सो भेंट न सपना॥
खर खोटा जे नहि परखाया।
चाहत लाभ सो मूल गंवाया॥
समुझि न परति पातरो मोटो।
वोको गांठि सबे यह खोटो॥
कहे कबीर काहि देउ खोरो।
जब चलि हो झिझि आशा तोरो॥

३

देव चित सुन हरे जाई।
सो ब्रह्मा सङ्ग धोर नसाई॥
कजे मन मन्दोदरि तारा।
तिन घर जेठ सदा रखवारा॥
सुरपति जाइ अहल्या छरी।
सुरगुरु रमणि चन्द्रमा हरी॥
कहे कबीर हरिके गुण गाया।
कुन्ती करण कुमारे जाया॥

४

सुख के वृक्षक जगत उपाया।
समुझि न परा लो वेधं किछु माया॥
छौ क्षत्रिन्ह पक्षी युग चारी।
फल हो पाप पुण्य अधिकारी॥
स्वाद अनन्त कछु वरणि न जाई।
के चरित्र सो तेहो माहो॥

मटवट साज साजिया।
जो देवे सो बाजिया॥
मोहहि बपुरा युकति न देखा।
शिव शक्ति विरञ्चि नहि पेखा॥

साखो

परदे परदे चलि गये समुझि परो नहि वानि।
जो जान सो बाचि हो नहि तो होत सकल की हानि॥

५

क्षत्रिय क्षत्रिय कर किय धर्मा।
सबहो वाके बाटे कुकर्मा॥
जिन अबन्धु गुरु ज्ञान लखाया।
ताको मन तहां ले खाया॥
क्षत्रिय सो जो कुटुम्ब सो जूझे।
पाचो मेटि एक करि बूझे॥
जीव मारि जीव प्रतिपाले।
देखत जन्म आपने हारे॥
हाले करे निसाने घाउ।
जूझि परे तहां मन्मथ राउ॥

साखो

जनमत मरण जीवे जीवहि मरण न होइ।
सुन सनेही राम विना चले अपनपो खोइ॥

६

ये जियरा तू दुःखहि सम्भार।
जो दुख व्यापि रहल संसार॥
माया मोह बंधा सब लोइ।
अल्प लाभ मूल गा खोइ॥
जननी उदर गर्भ में सूता।
जन्म भये अस गए बहुता॥
उपजे विनसे योनि फिरि आवे।
सुखके लेस सपने नहि पावे॥
दुःख सन्ताप कष्ट बहु पावे।
जो न मिले सो जरत बुझावे॥
मोर तोर में जरे जग सारा।
धिक् स्वारथी झुवा संसारा॥

झूठे मोह रहो जग लागो।
छूटते माथि बहुरि पुनि आगो॥
जेहि हित के राखे सब सोई।
सो सयान वचे नहि कोई॥

साखी

आपु आपु चेत नहि को हु तोव सुना सोइ।
कहहि कबीर सुपने जग निरायो थिया
थिया नहि सोइ॥

सोरठ—तिताला

सन्तो भक्ति सत् गुरु आनो।
नारो एक पुरुष दे जाया बूझा पण्डित ज्ञानो॥
पाहन फोरि गङ्ग एक निकरो चहुं दिसो पानी पानी।
ते पानी दे पर्वत बूड़े दरिया लहरि समानो॥
उड़ि मक्खी तरिवर को लागी बोले एकै बानो।
वैमाखो के माथा नाही गर्भ रहा बिनु पानी॥
नारी सकल पुरुष ना खाया ता ते रहे अकेला।
कहहि कबीर जो अब को समुझै सोई गुरु हम चेला॥

२

सन्तो जागत नींद न कीजै।
काल न खाय काल नहि व्यापे देह जरा नहि छीजै॥
उलटो गङ्गा समुद्रहि सोखै शशि था राहु गरासे।
नवग्रह मारि रोगिया बैठे जलमें बिनु परकासे॥
बिनु चरण न को दुहु दिशि धावे
बिन लोचन जग सूझै।
सरिता उलटि सिन्धु को ग्रासे यह अचरज को बूझै॥
औंधे घड़ा नाहि जल बूड़े सूधे सो घट भरिया।
जाहि कारण नर भिनि भिनि करे गुरु
परसादे तिरिया॥
पैठि गुफामें राज जग देखा बाहर कछू न सूझे।
उलटा बाण सारथी लागे सूरा होइ सो बूझै॥
गायन कहे कबहु नहि गावे अनबोले नित गावे।
नट बट बाजी पेखनी देखे अनहद हेत बढ़ावे॥

कथनी वदनी निज करि जोवे ए सब अकथ कहानी।
धरती उलटि अकाश हि बेधे ए पुरुषनको बानी॥
बिना पियाले अमृत न अंचवे नदी नीर भरि राखे।
कहे कबीर सो युग युग जीवे जो राम सुधारस चाखे॥

कलिङ्ग—तिताला

सन्तो घर में झगरा भारी।
रात दिवस मिलि उठि उठि लागे पाच टोटा
एक नारी॥
न्यारो न्यारो भोजन चाहे पाचो अधिक सवादी।
कोउ काहु को हटक न माने आपुहि आपु मुरादी॥
दुरमति के दुहा गनि में टेटे चाप चपेरी।
कहहि कबीर सोइ जन मेरा जा घरको रारि निवेरी॥

विहाग—तिताला

सन्तो देखत जग बौराना।
साच कहो तो मारण धावे झूठे जग पतियाना॥
नियमी देखा धर्मी देखा प्रात करे असनाना।
आतमे मारि पखानहि पूजै इन के कछू न ज्ञाना॥
बहुतक देखा पीर औलिया पढ़े कतेब कुराना।
करो मूरि तदबीर बतावे उन में वह जो ज्ञाना॥
आसन मारि डिम्भ धरि बैठे मन में बहुत गुमाना।
पीतर पाथरनि पूजन लागे तीरथ गर्व भुलाना॥
माला पहने टोपी पहने छाप तिलक अनुमाना।
साखी सबदा गावत भूले आतम खबरि ना जाना॥
हिन्दू कहे मोहि राम पियारा तुरुक कहे
रहिमाना।
आपुसमें दोउ लरि लरि मुए मर्म कोई
नहि जाना॥
घर घर मन्त्र देते फिरही महिमाको अभिमाना।
गुरु समेत शिष्य सो बूड़े अन्तकाल पछताना॥
कहहि कबीर सुनो हो सन्तो ए सब भर्म भुलाना।
केतिक कहु कहा नहि माने सहजहि
सहज समाना॥

बिहाग—यत

सन्तो अचरज एक भौ भारो।
कहु तो कहो ताको पति चारो॥
एक पुरुष एक है नारी ताकर करहु बिचारा।
एकै अण्ड सकल चौरासी भ्रम भूला संसारा॥
एकै नारी जाल पसारा जग में भया अन्देसा।
खोजत काहु न पाया ब्रह्मा विष्णु महेसा॥
नाग फास लिये घट भीतर मूसेनि सब जग जाई।
ज्ञान खण्ड गवी ना सब जूझे पकरि काहु
नहि पाई॥
आपहि मूल फूल फल बारी आपुहि चुनि
चुनि खाई।
कहे कबीर सोई जन उबरे जेहि गुरु लियो
जगाई॥

२

सन्तो अचरज एक भौ भारो।
पुत्र खइल महतारो॥
पिता के सङ्ग भई है बावरी कन्या रहलि कुमारी।
खसमहि छोड़ि ससुर सङ्ग गवनो सो किन
लेहु बिचारी॥
भाई के सङ्ग सासुर गोनो सासु सावतो दीन्हा।
ननद भवज परपञ्च रचो है मोर नाम नहि लीन्हा॥
समधो के सङ्ग नाहा आई सहज भई घरवारी।
कहहि कबीर सुनहु हो सन्तो पुरुष
जन्म भयो नारी॥

३

सन्तो कहो को पति आई।
झूठो कहत सांच बनि आई॥
लव करत रतन अबध अमोलिक नहि
गाहक नहि साई।
चिमकि चिमकि चिमक दृग दहु दिश
आय रहा छिरकाई॥
आपुहि गुरु कृपा कछु कोन्हे निर्गुण अलख लखाई।
सहज समाधि उनु सुनो जागो सहज मिले रघुराई॥
जहा जहा देखो तहा तहा सोई सब
माणिक बेधो होरा।
परम तत्त्व गुरु ते पाया कह उपदेश कबीरा॥

४

सन्तो आवे जाए सो माया।
है प्रतिपाल काल नहि पा के नहिं कहुं
गया न आया॥
काम समुद्र मच्छ कच्छ हो ना संखासुर न संहारा।
हृदयानल द्रोह नहि वाके कहो कवन के मारा॥
खम्भ फोरि जो बाहर होई ताहि पतीजे सब कोई।
हरिनाकुस नख उदर विदारा सो नहि करता होई॥
वावन रूप न वलि काज वा जो जांचे सो माया।
बिना विवेक सकल जग भर्मा माया जग भर्माया॥
परशुराम क्षत्रिय नहि मारा ए छलया कोन्हा।
सत गुरु भक्ति भेद नहि पाया जाव अमिथ्या दोन्हा॥
सिर जनहार ना व्याहो सोता जल पयान नहि बांधा
ले रघुनाथ एक के सुमिरे जो सुमिरे सो आंधा॥
गोपी ग्वाल न गोकुल आया कर ते कंस न मारा।
है महर्बान सबन को साहेब नहि जीता नहि हारा॥
वे करता नहि बोध कहाया नहो असुरके माया।
ज्ञानहोन करता सब भूमे माया जग भरमाया॥
वे करता नहि भये कलङ्को नाहि कंस गह मारा।
ए छल बल सब माया कोन्हा यतो सतो सब टारा॥
दश अवतार ईश्वरो माया करताके गिन पूजा।
कहहि कबीर सुनो हो सन्तो उपजे खपै सो दूजा॥

५

सन्तो बोले ते जग मारे।
अनबोलेते कसे के बनि है शब्द कोइ न विचारे॥
पहिले जन्म पुत्र के भयऊ बाप जनमिया पाछे।
बाप पूत को एकै माया ए अचरज को काछे॥
दोहुर राजा टीका बैठे विवहर करे खवासो।
ज्ञान बापुरा घर नहि ठाना बिज्ञो घर में दासो॥

काग दो कार कार कुष्ठ आगे बैल करे मठवारो ।
कहै कबीर सुनो हो सन्तो भलो सेव्य बनो वारो ॥

६

सन्तो रामहि दूनो हम दीठा ।
हिन्दू तुरुक कहा नहि माने स्वाद दूनो को मीठा ॥
हिन्दू वरत एकादशी साधे दुग्धसा धारा सेती ।
अनके त्यागे मनके न हटके पार न करे संगवेती ॥
तुरुक रोज़ा नमाज़ गुज़ारे बिस्मिल्ला बाङ्ग पुकारे ।
उनको बिहिश्त कहाते होइ है साझे मुरगी मारे ॥
हिन्दूको दया मेहर तुरुकनको दूनो घटमें त्यागी ।
वे हलाल वे झटका मारे आगि दूनो घर लागी ॥
हिन्दू तुरुक को एक राह है सत गुरु राह बताई ।
कहहि कबीर सुनो हो सन्तो राम न कहो खुदाई ॥

७

सन्तो पाड़े निपुण कसाई ।
बकरा मारि भैंसाको धावे दिलमें दरद न आई ॥
करि असनान तिलक दै बैठे विधि सो देवी पुजाई ।
आतम राम छनक मा विनसे रुधिर की
नदी बहाई ॥
अति पुनीत उच्च कुल कहिए सभा माहि
अधिकाई ।
इनते दीक्षा सब कोइ मांगे हसि आवे मोहि भाई ॥
पाप कटन को कथा सुनावे कर्म करावे नीखा ।
हम तो दोउ परस्पर देखो यम लाए धोखा ॥
गाई बधेते तुरुक कहिए उनते वे का छोटे ।
कहै कबीर सुनो हो सन्तो कलिमें ब्राह्मण खोटे ॥

८

सन्तो मते मात जन रङ्गी ।
पीवत पियाला प्रेम सुधारस मतवाले सत सङ्गी ॥
अरधे उरधे माटी रोपि ले कैसी वरसे गारी ।
मूदे मदन काटि क्रम कस भर सन्तत चुवत अगारी ॥
गोरखदत्त वसिष्ठ व्यास कवि ते नारद
शुकमथि जोरी ।
सभा बइठि प्रभु सनकादिक तह फिरे अधर
कटोरी ॥
अम्बरीक भी आग जनक भट शेष सहस्र
मुख फाना ।
कहां लो गनों आदि अन्त ले महले महल दिवाना ॥
ध्रुव प्रह्लाद विभीषण माती शिवको नारी ।
निर्गुण ब्रह्म माती वृन्दावन अजहूं न छूटी
खुमारी ॥
सुर नर मुनि यती पीर औलिया जिन रे पिया
तिन जाना ।
कहै कबीर गूंगे का शक्कर क्यों करि करे बखाना ॥

९

राम तेरी माया द्वन्द्व मचावै ।
गति मति वाकी समुझि परै नहि सुर नर
मुनिन नचावै ॥
क्या सेमरको शाख बढ़ाए फूल अनुपमे बानो ।
केतिक चातक लागि रहा है देखत रुवा उगानो ॥
क्या खजुरी बड़ाई तेरो फल कोई नहि पावे ।
ग्रीषम शीत आइ तुलानी तेरो छाया काम न आवे ॥
अपने चतुर अवरके सिखवे कनक कामिनी सयानी ।
कहहि कबीर सुनो हो सन्तो रामचरण रति मानी ॥

१०

राम राय संशय घटे न छूटे ।
तावे पकरि पकरि जमजम लूटे ॥
होइ मुसको न कुलीन कहावे तुम योगी सन्यासी ।
ज्ञानी गुणी शूर कवि दाता या मति काहु विनासी ॥
सुमत वेद पुराण खोटे सब अनुभव भाय में दरसो ।
लोह हिरण्या होत दुहु कैसे औ नहि पारस परसो ॥
जीवत न तरहु मुए का तरि हो जीवतै जो न तरे ।
गहै प्रीति तो कियो जिन जासो सोइ तहां अमरे ॥
जो कछु कियो ज्ञान अज्ञाना सोई समुझि सयाना ।
कहै कबीर तासो का कहिए जो देखत
दृष्टि भुलाना ॥

काफ़ी—तिताला

राम राय चली हृन्दावन मा हो घर छाड़े जात जुलाई।
गजनो गज दश गज गुन इसको पुरिया एक तनाई॥
सात सूत नौ गेड़ बहुत्तरि पाटु लागु अधिकाई।
ता पट तुल न तुले गज न अमाई पैसनो सेर आढ़ाई॥
ता में घटवट रति ज नाही करकच कर धर हाई।
निति उठिये पट्सम सो वर बश ता पर लागि तिहाई॥
भीगो पुरिया काम न आवे जुलहा चला रिसाई।
कहै कबीर सुनो हो सन्तो जिन यह सृष्टि उपाई॥
छाड़ि पसार राम भजु बौरे भव सागर तरि लाई॥

२

राम राय झिझि यन्त्र बाजे चरण विहोना नाचे।
कर बिनु बाजे सुने श्रवण बिनु सरवन श्रोता सोई॥
पट न सुवेश सभा बिनु अवसर बूझो मुनि जन लोई।
इन्द्री बिनु भोग स्वाद जिह्वा बिनु आ छयाड़ विहूना।
जागे चौ मन्दिर तहां मूसे खसम अछत घर सूना॥
बीज बिन अङ्कुर पेड़ बिन तरवर बिन फूले
फल लागा।
बांझको कोखि पुत्र अवतरिया बिन पग सिरो
पर चढ़िया॥
मसि बिन द्दात कलम बिन कागज बिनु
अच्छर सुध होई।
सुध बिनु सहज ज्ञान बिनु ज्ञाता कहै कबीर
जन सोई॥

कबिर—तिताला

रामहि गावे औरहि समुझावे हरि जाने बिना
बिकल फिरै।
जा मुख वेद गायत्री उचरै ता सु वचन
संसारहि तरे॥
ताके पाव जगत उठि लागे सो ब्राह्मण जीव
घात करै।
अपने उच्च नीच कर भोजन बिन तम हठि
उदर भरै॥
ग्रहन अमावा सेठ साटक मारि कर दीपक
लिये कूप परै।
व्रत एकादशी के मर्म न जाने भूत व्रत
हठि हृदय धरै॥
तजि कपूर गांठी विष बांधे ज्ञान गमाइ
मुगध फिरै।
छोजे साव चोर प्रतिपाले सन्तजनाको कूटि करै॥
कहै कबीर जिह्वा के लम्पट इह विधि
प्राणी नरक परै॥

२

राम गुण न्यारो न्यारो।
अबुझा लोग कहां लग बूझे कोई बूझन
हार विचारो॥
केते रामचन्द्र तपसी से जिन हो जग भरमाया॥
केते कान्ह भए मुरलीधर तिन भी अन्त न पाया॥
मत्स्य कच्छ वराहसरूपी बावन नाम धराया।
केतक बुद्ध भए अकलङ्की तिन भी अन्त न पाया॥
केते सिद्ध साधक सन्यासी जिन बनवास बसाया।
केतकि मुनि जन गोरख कहिए तिन भी
अन्त न पाया॥
जाको गति ब्रह्मा नहि जानी शिव सनकादिक
हारे।
ताके गुण वश कैसे के पै हो कहहि कबीर पुकारे॥

२

ए तत्त्व राज प्यो होइ प्रानी तुम बूझो अकथ
कहानी।
जाको भाव होत हरि ऊपर जाग्रत रैन बिहानी॥
गाइनको है सुनहु वेरे सिंह रहा वन घेरे।
पांच कुटुंब मिलि जूझन लागे बाजन बाजि घनेरे॥
रोइ मृगा सबे वन हाके पारथ बाणहि मेले।
सादर जरै सकल वन डाहै मच्छ अहेरा खेले।
कहै कबीर सुनो हो सन्तो जो एह पद अरथावे।
जो इह पद को गाइ विचारे आपु तरे मोहि तारे॥

८

कोई राम रसिक रस पीयोगे।
पीयोगे सुख जीवोगे॥
फल अलहित बीज नहि बकला शुक पञ्छी
तहां रस खावेल।
चुवे न बुन्द अङ्ग नहीं भीजे दशरथ वर सब
सङ्ग ला पैल॥
निगम रिसाल चारिक फल लागा तिनमें
तीनो समावे।
एक दुरि चाहे सगा न कोई यत्न यत्न
काहु विरले पावे॥
गए बसन्त ग्रीष्म ऋतु आई बहुरि न तरुवर
तर आवे।
कहै कबीर स्वामी सुख सागर राम मगन होइ
सो पावे॥

६

राम मरमसि कौन दगध लागा।
मरिबे का करबे अभागा॥
कोई तीर्थ कोइ मुण्डित केशा।
पाखण्ड कर्म मन्त्र उपदेशा॥
विद्या वेद पढ़ि करे अहंकारा।
अन्तकाल मुख फांके छारा॥
दुःखी सुखी होइ कुटम्ब जिवावे।
मरण दाव इसकर दुःख पावे॥
कहहि कबीर यह कलि है खोटी।
मोर है करवासी निकली खोटी॥

आशावरी—यत्

अवन्धु छाड़ो मन विस्तारा।
सो पद गहो जाहि सो सद्गति परब्रह्म सो न्यारा॥
नाहि महादेव नाहि महम्मद हरि हजरत तब नाही।
आदम ब्रह्म नाहि तब होते नहो धूप नहि छाही॥
असिया से पैगम्बर नाहो सहस्र अहासी मुनी।
चन्द्र सूर्य तारागण नाहो मत्स्य कच्छ नाहि दुनी॥
वेद कतेब सुमत नहि संयम नहि यम ना परिसाई।
बांग नमाज़ कलमा नहि होते रामो नाहि खोदाई॥
आदि अन्त मन मध्य न होते आतश पवन न पानी।
लख चौरासी जीव न होते साखी शब्द न बानी॥
कहहि कबीर सुनो हो अवनृध आगे करहु विचारा।
पूरण ब्रह्म कहांते प्रगटे कृत्तिम किन उपचारा॥

आशावरी—तिताला

अवन्धु कुदरत की गति न्यारी।
रङ्क निवाज़ि करे वे राजा भूपति करे भिखारी॥
याते लवङ्ग सर्प नहि लागे चन्दन फूल न फूला।
तयक शिकारी रमे जंगल में सिंह समुद्रहि झूला॥
रेड़ रूख भये मलया गिरि चहुं दिश फूटी वासा।
तीनो लोक ब्रह्माण्ड खण्डमें देखे अन्ध तमासा॥
पङ्गा मेरु सुमेरु उलङ्घे त्रिभुवन मुक्ता डोले।
गूंगा ज्ञान विज्ञान प्रकासे अनहद वाणी बोले॥
आकाश हि दाधि पाताल पठायो सो स्वर्ग पर राजे।
कहै कबीर राम है राजा जो कछु करे सो छाजे॥

२

अवन्धु सा योगी गुरु मेरा।
जो इह पद का करे निवेरा॥
तरुवर एक मूल विनु ठाढो विन फूले फल लागा।
शाखा पत्र कछू नहि वाके अष्ट गगन मुख जागा॥
पै विनु पत्र करह विनु तुम्बा विनु जिह्वा गुण गावे।
गायन हार के रूप रेख नहि सत् गुरु होइ लखावे॥
पञ्छी को खोज मन को मारग कहहि
कबीर दोउ भारी।
अपरम्पार पार पुरुषोत्तम मूरतिको वलिहारी॥

१

अवन्धु वे तुतरा बतराता।
नाचे बाजन ब.ज बराता॥
मार के माथे दूलह दीन्हो अकथ जोरि के जाता।
मड़ये एक बाड़न समधी दीन्हो पुत्र पिया इक माता॥

दुलहिनी लोपि चउक बइठायो निर्भय पद
परकाता ॥
भाते उलटि बरातहि खायो भली बनो कुशलाता ।
पाणिग्रहण भयो भव मण्डन सुखमनि सुरति समानो ।
कहहि कबीर सुनहु हो सन्ता बूझहु पण्डित ज्ञानो ॥

४

कोई विरला दोस्त हमारो भाई रे बहुत बहुत
का कहिए ।
साधन भजन संवारे आपे ज्यों राम राखे त्यों रहिए ॥
आसन पवन योग श्रुचि स्मृति जो पिश पढ़ि बेलाना ।
छः दर्शन पाषण्ड छानवे इकले कहूं न जाना ॥
आलम दुनो सकल फिरि आयो एकल वे निपाना ।
ताजो करि गहि जगत उठायो मनमें मन न समाना ॥
कहै कबीर योगो अरु जङ्गम फोको उनको आसा ।
राम नाम रटै ज्यों चातक निश्चय भक्ति निवासा ॥

५

भाई रे अद्भुत रूप कथा है कहो ताको पतियाई ।
जहा जहा देखो तहा तहा सोई सब घट
रहल समाई ॥
लक्ष्मी विन सुख दरिद्र दुःख विनहु नींद विना
सुख सोवै ।
यश विनु योगी रूप विनु आशिष ऐसो रत्न
विह्वना रोवै ॥
भ्रम विनु गञ्जन मान विनु निरखे रूप विना
बहुरूपा ।
गिथि विन सुरति रहस विनु आनन्द ऐसो
चरित अनूपा ॥
कहै कबीर जगत हरि मानिक देखो चित अनुमानो ।
परिहरि लाख लोक कुटुम्ब सब भजहु न
सारङ्गपानी ॥

६

भाई रे गइया एकरी रांचि दियो है ।
गइया भार अभरमो भयो है ॥
नौ नारो को पानो पिवत हो तृषा तज न बुझाई ।
कोठा बहत्तर अवल बलावे बज्र केवार लगाई ॥
खूटा गाड़ि डोरी दृढ़ बांधो तइयो जौरि पराई ।
चारि वृक्ष छव शाखा वाके पत्र अठारह भाई ॥
एतिक ले गइया गम को है गइया अति लहिराई ।
ई सातौ औरई सातो नव छव चौदह भाई ॥
वेतीक ले गइया खाय बढ़ायो गैया तउ न अघाई ।
सुरता में रातो है गैया सेत सोधो है भाई ॥
अवरन वरन कछू नहि वाके सांझ असांझइ खाई ॥
ब्रह्मा विष्णु खोजि के आये शिव सनकादिक भाई ।
सिद्ध अनन्त वाके खोजि परे हैं गइया किनहु न पाई ।
कहहि कबीर सुनहु हो सन्तो जो यहु पद अरथावे ॥
जो यह पद को गाइ विचारे आगे होइ निबहावे ॥

योगिया—तिताला

भाई रे नेन रसिक जो जागे ।
परब्रह्म अवगति अविनाशी कैसेहुके मन लागे ॥
अमलो लोग खुमारी तृष्णा सो कतहू सन्तोष न पावे ।
काम क्रोध दोउ मतवाला माया भरि भरि आवे ॥
ब्रह्म कलाल बैठावन भाटो ले इन्द्रिय रस चावे ।
सङ्गहि पोच है ज्ञान पुकारे चतुरा होइ सो पावे ॥
सङ्कट सोच पोच या कलिमें बहुतक व्याधि शरोरा ।
जहां धीर गम्भीर अति निश्चल तहां उठि मिलहु
कबीरा ॥

२

भाइ रे हे जगदोश कहां ते आये कहु कौने भरमाए ।
अल्लह राम करीमा केसो हरि हजरत नाम धराए ॥
गहना एक कनकते गहना इन में भाव न दूजा ।
कहन सुननके है करि थापे एक नमाज एक पूजा ॥
वहो महादेव वहो महम्मद वहो ब्रह्मा वहो
आदम कहिये ।
को हिन्दू को तुरुक कहावे एक जमीं पर रहिए ॥
वेद कतेब पढ़हि वे कुतबा वे मुल्ला वे पांड़े ॥
बेगर बेगर नाम धराया एक माटोके भांड़े ।

कहै कबीर वे दूनो बूड़े रामहि किनहु न पाया ॥
कं खसमो वे गाय कटावे वाद हि जनम गंवाया ।

२

हंसा संशय छूरी कुहिया ।
गइया पीयाव बछरुया दुहिया ॥
घर घर सावज खेलै अहेरा पाथर वोटा लेई ।
पानी मछा तलफि गया भू भरि धूरिहि लोरा देई ॥
धरती वरीसै बादर भीजै भीर भयो पै राज ।
हंस उड़ाने ताल सुखाने चहल वेधा पाज ॥
जौ लग कर डोलै पग चलै तो लग आश न कीजै ।
कहहि कबीर जो चलत न दोसै तासु
वचन का लीजै ॥

विभ्‌—तिताला

हंसा हो नित चेत सवेरा ।
इह परपञ्च कान बहुतेरा ॥
पाषण्डरूप रचो त्रिगुण तेहि पाषण्ड भूले संसारा ।
घर के खसम वधिक वे राजा प्रजा क्या धौ करे विचारा ॥
भक्ति न जाने भक्त कहावे तजि अमृत विष
कइल न सारा ।
आगे वड़े ऐसही भूले तिनहु न मानल कहल
हमारा ॥
कहल हमारा गांठी बांधो वो निसुवासर
रहि हो हुशियारा ।
एकलि गुरु बड़े खपच डारि ठगौरो सब जग मारा ॥
वेद कतेब दोइ फन्द पसराते फन्द पड़ आपु बेचारा ।
कहहि कबीर ते हंस न विसरे जो मैं मिलो
छोड़ावन हारा ॥

२

हंसा प्यारे सरवर ते जे जाई ।
जे सरवर बिच मोतिया चुगत हुते बहुविधि
केलि कराई ॥
सूखे ताल पुरइ बीजल छाड़े कमल गए कुम्हिलाई ।
कहहि कबीर जे अब के बिछुरे बहुरि मिलो
कब आई ॥

आसावरी—तिताला

हरि जन हंस दशा लिये डोले ।
निर्मल नाम चुनी चुनी बोले ॥
मुक्ताइल लिए चोंच सुभावे ।
मौन रहै की हरि यश गावे ॥
मान सरोवर तट को वासो ।
रामचरण चित अन्त उदासो ॥
काक कुबुद्धि निकट ना आवे ।
प्रतिदिन हंसा दूषण पावे ॥
नीर क्षीरका करे निवेरा ।
कहहि कबीर सोइ जन मेरा ॥

२

हरि मोर पिउ मैं राम की बहुरिया ।
राम बड़ा मैं तनक लहुरिया ॥
हरि मेरे रहटा मोर तनरे पिउरिया ।
हरि के नाम ले कतलि बहुरिया ॥
छव मास ताग वर्ष दिन कुकुरिया ।
लोग बोले भल काते ले बपुरिया ॥
कहहि कबीर सूत भल काता ।
रहटा नाहि मुक्तिको दाता ॥

३

हरि ठग जगत् ठगौरो लाई ।
हरि के वियोग कैसे जीवहु रे भाई ॥
को काको पुरुष कवन काको नारो ।
अकथा कथा यम दृष्टि पसारो ॥
को का को पुत्र कवन काको बापा ।
को मारे को सहै सन्तापा ॥
ठगि ठगि मूल सब लिनो लोन्हा ।
राम ठगौरो काहु न चीन्हा ॥
कहहि कबीर ठग सो मन माना ।
गई ठगौरी तब ठग पहिचाना ॥

४

हरि ठिग ठगन सकल जग डोला ।
गमन करत मैं समुझ न बोला ॥

बालापनके मित्र हम तुम्हारे।
हमहि छोड़ि काहे चलेहु सकारे॥
तुमहि पुरुष मैं नारि तुम्हारी।
तुम्हरी चाल पाहन ते भारी॥
माटी को देह पवन को शरीरा।
हरि ठग ठग सौ डरे कबीरा॥

५

हरि बिनु भुवि बिगुरचे संगवा जहां जाय गये
अपन पौ खोई।
तेहि फन्दे बहु फन्दा योगी कहै योग है
मोको दुतिया और न कोई॥
ज्ञानी गुणी सुर कवि ताए जो कहै बड़ हमही।
जहांते उपजें वहां समाने छुटी गइल सब तमही॥
बायें दाहिने ते जे विका रानी सु कहै हरिपद
गहिया।
कहहि कबीर गूंगे गुड़ खाया पूछे सो का कहिया॥

६

ऐसे हरि सो जगतल मरत है।
पण्डु कतहु गवह धरत है॥
मूस बिलाई एक सन हेत।
जम्बुक करे केहरि सो खेत॥
अचरज एक देखि संसारा।
सुनहि खेद कुञ्जल असवारा॥
कहै कबीर सुन सन्तो भाई।
यह सन्धि काहु विरले पाई॥

७

पण्डित वाद वदे सो झूठा।
राम के कहे जगत गति पावै तौपाहु कहे सुख मीठा॥
पावक कहे पाव जो दाहे जल कहे त्रषा बुझाई।
भोजन कहे भूख जो भाजै तो दुनिया तरि जाई॥
नर की साथ सुवा हरि बोलै हरि परताप न जानै।
जो कबहो उड़ि जाय जङ्गल में फिरि हरि
सुरति न आनै॥

बिनु देखे बिनु अरस परस बिनु नाम लिए का होई।
धनके कहे धनिक जो होवे निरधन रहे न कोई॥
साचि प्रीति विषम माया सो हरि भगतन को हांसी।
कहहि कबीर एक राम भजे विन बांधे
यमपुर जासी॥

८

पण्डित देखो मन में जानो।
कहु दहु छाति कहा ते उपजी तबही छुति
तुमै जानो॥
छूतिहि जे जे छूति विवरजत जाके सङ्ग न माया।
छूतिहि जेवन छूतिहि अचवन छूतिहि जक्क उपाया॥

९

पण्डित सोधि कहो समुझाई जाते आवागवन नसाई।
अर्थ धर्म काम मोक्ष कह कौन दिसा बसे भाई॥
उत्तर कि दक्षिण पूर्व की पश्चिम सरग
पातालके माही।
बिना गोपाल ठौर नहि कतहु नरक जात दहु काही॥
अनजानेका नरक सरग है हेरि जानेके नाही।
जेहि डरके सब लोग डरत है सो डर हमरे नाही॥
पाप पुण्यकी शङ्का नाही सरग नरक न जाही।
कहहि कबीर सुनो हो सन्तो जहां पद तहां समाही॥

१०

पण्डित मिथ्या करहु विचारा।
ना वहां सृष्टि न सिरजनहारा॥
स्थल आकाश पवन नहि पावक रवि शशि
धरणी न नीरा।
ज्योति:स्वरूप काल नहो वहां वचन न आहि शरीरा॥
कर्म धर्म कछु नाहो वहवां न वहां मन्त्र न पूजा।
साधन सहित भाव नहि वहवां सो दहु
एक न दूजा॥
गोरख राम एक नहि वहवां न वहां वेद विचारा।
हरि हर ब्रह्मा नहि शिव शक्ति न वहां तीर्थ अचारा॥
माय बाप गुरु जाके नाही सो दहु दुइको अकेला।

कहहि कबीर जो अबकी समुझै सोई गुरु
हम चेला ॥

कवित्त—तिताला।

बूझो पण्डित करहु विचारी।
पुरुष है कि नारी ॥
ब्राह्मण के घर ब्राह्मणी होती योगी के घर चेली।
कलमा पढ़ि पढ़ि भई तुरकुनी कलि में
रहति अकेली ॥
वर नहि वरी ब्याह नहि करी पुत्र जन्म होनहारी।
कारो मूड काह नहि छाड़ो अजहूं आदि कुमारी ॥
माईके हो जाउ नहि ससुरा साईं सङ्ग न सोऊं।
कहै कबीर मैं युग युग जीऊं जाति पांति कुल खोऊं ॥

१

कौन मुया कहु पण्डित जाना।
सो समुझाइ कहो सयाना ॥
मूए ब्रह्मा विष्णु महेशू।
पारवती सुत मुए गणेशू ॥
मुए चन्द्र मुए रवि सेसा।
मुए हनुमत जिन्ह बांधिन सेता ॥
मुए कृष्ण मुए करतारा।
एक न मुए जो सिरजनहारा ॥
कहहि कबीर मुया नहि सोई।
जाको आवागमन न होई ॥

२

पण्डित आचार्य एक बड़ होई।
एक मल मूत्र अन्न नहि खाही एक मह
सिझै रसोई ॥
करि असनान देवनके पूजा नव गुण कांधे जनेऊ।
हाड़ी हाड़ हाड़ थारी मुख अस षट् कर्म बनेऊ ॥
धर्म कथे जह जीव वधे जह अकरम करम करै
मेरे भाई।
जो तुम को ब्राह्मण कहिये तो का को
कहिये कसाई ॥

कहहि कबीर सुनो हो सन्तो भर्म भूलि दुनो भाई।
अपरम्पार पार पुरुषोत्तम या गति विरले पाई ॥

मिश्र—तिताला

पांड़े बूझि पीवो गे तुम पानी।
मटियाके घरमें बैठे ता में सृष्टि समानी ॥
छप्पन कोटि यादव तहां भीगे मुनिजन
सहस अठासी।
पयग पयग पैगम्बर गाड़े सो सब सरि भौ माटी ॥
मत्स्य कच्छ घरियार बियाने रुधिर नीर जल भरिया।
नदिया नीर नरक भरि आये पशु मानुष सब सरिया ॥
हाड़ झरि झरि गूद गलि गलि दूध कहां ते आया।
सोले खाड़े यवन बोड़गे मड़ए छूति लगाया ॥
वेद कवेद छांड़ि दे पांड़े यह सब मनका भर्मा।
कहै कबीर सुनो हो पांडे ए सब तोरे कर्मा ॥

१

पण्डित देखो हृदय विचारी।
को पुरुष को नारी ॥
सहज समाना घट घट बोलै वाके चरित अनूपा।
वाको नाम क्या कहि लीजे नावे वरनन रूपा ॥
तैं मैं क्या करता नर बौरा क्या तेरा क्या मेरा।
राम खुदा शक्ति शिव एकै कहो धौ काहि निहोरा ॥
वेद कुरान पुरान केतावा नाना भांति बखाना।
हिन्दू तुरक जइनि अरु योगी एकलो काहु न जाना ॥
छौ दर्शन में जो परमाना तासे ना मन माना।
कहै कबीर हमै हो बौरे ये सब खलक सयाना ॥

१

बूझहु बूझहु पण्डित पद निरवाना।
सांझ परे कहां वावसे भाना ॥
ऊंचे नीचे पर्वत टेला नीत।
बिनु गाइन तहां उठे गीत ॥
वे सम प्यास मन्दिल नहि जहवा।
सहस्र बेनु दुहावे तहवा ॥

नित्य अमावस नित संक्रान्ति ।
नित्य नवग्रह बैठे पांति ॥
मैं तोहि पूछों पण्डित जना ।
हृदये ग्रहण लागु केहि घना ॥
कहै कबोर इतनो नहि जाना ।
कौन शब्द गुरु लागै काना ॥

४

बूझ बूझ पण्डित निर्वाण होई ।
आधा बसे पुरुष आधा बसे जोई ॥
बिरवा एक सकल संसारा ।
स्वर्ग सीस जर गैल पताला ॥
बारह पखुरी चौबीस पाता ।
घन बरोह लागा चहुं पासा ॥
फूले फले न वाको वानो ।
निसि दिवस विकार चुवै पानो ॥
कहै कबोर कछु अछुलो न तहिया ।
हरि बिरवा तौपाल न जहिया ॥

५

बूझ बूझ पण्डित मन चित लाई ।
कबहि भई लो कबहि सुखाई ॥
खन मन डूबे खन अवगाह ।
रतन न मिले पावे नहि थाह ॥
नदिया नहि सिलसिल बहै नीर ।
मत्स्य न मरे के बटेर है तीर ॥
पोखरा नाहि बंधल तहं घाट ।
पुरइनि नाहि कमल में वाट ॥
कहै कबोर एक मन का धोखा ।
बइठा रहै चलन चाहै चोखा ॥

६

बूझि लीजै बुरि बुरि ब्रह्मज्ञानी ।
वर्षायो परिया बुन्द न पानी ॥
चिंउटीके पग हस्ती बांधो छेरी बाघहिं खाए ।
उदधि माह सो निकलो माछरो चौड़े ग्रह कराए ॥
मेढ़क सर्प रहै एक सङ्ग बिलरिया श्वान विहाई ।
निति उठि सिंह श्वानते डर पै अद्भुत कथा न गाई ॥
कौरव संगर गावन घेरे पार्थ बाण मेले ।
उदधि भूपती तरे बड़ा हो मत्स्य अहेरा खेले ॥
कहै कबीर ए अद्भुत ज्ञाना को इह ज्ञानै मानै ।
विना परों उड़ि जाइ आकाशहि जीव मरण
नहि जानै ॥

७

वा बिरवै चीन्हे जो कोई ।
जरा मरण रहित तन होई ॥
बिरवा एक सकल संसारा ।
पेड़ एक फूटल तिन डारा ॥
मध्यकी डार चारि फल लागा ।
शाखा पत्र गनै को वागा ॥
वेलि एक त्रिभुवन लपटानो ।
बांधे ते नहि छूटे ज्ञानी ॥
कहै कबीर हम जात पुकारा ।
पण्डित होइ सो करे विचारा ॥

सोरठ—तिताला

साईं के सङ्ग सासुर आई ।
सङ्ग नाहि सुती स्वाद नहि पाई ॥
गो जोबन सपनेको नाई ।
जना चारि मिलि लगन सुखाई ॥
जना पांच मिलि मांडो छायो ।
सखी सहेली मिलि मङ्गल गायो ॥
दुःख सुख माथे हरदी चढ़ाई ।
गांठी जोरि भाइपति पाई ॥
अर्घ दई ले चली सुवासिनी चोके
राड भई संग गाई ।
भया विवाह चली बिनु दुलहे बाट
जात समधी समुझाई ॥
कहे कबोर हम गोने जैबै ।
तब कन्त ले तूर बजइबे ॥

२

नर को ढाढस देखो भाई।
कछु अकथ कथा है भाई॥
सिंह सहदुल एक हरढो तिन सोकस वो हन धाने।
वनको भलुइया चाखुर फेरे छागर भये है किसाने॥
छेरो बाघ व्याह होइ है मङ्गल गावहि गाई।
वनके रोज धरि दाइज दोन्हा गोलुक है जाई॥
कागा कापड़ धोवन लागी बकुला किरपे दाते।
माछो मूड़ मुड़ावन लागो हमहु जाइब बरियाते॥
कहै कबीर सुनो हो सन्तो जो यह पद अरथावे।
सोई पण्डित सोई ज्ञाता सोई भक्त कहावे॥

३

नर को नहि परतीत हमारो।
झूठे वणिज कियो झूठा सो पूजो सबन मिलि हारो॥
षट् दर्शन मिलि साथ बुलायो त्रिदेवा अधिकारो।
राजादे सबड़ो परपञ्चो रैयत रहत उजारो॥
उत ते इत इत ते उत रहङ्ग जलको साटि सवारो।
ज्यों कपि डोरि बांधि बाजोगर अपनो खुशी पसारो॥
यह पेड़ उत्पत्ति प्रलयको विषिया सबै बेकारो।
जैसे श्वान अपावन रचि त्यों लागो संसारो॥
कहहि कबीर ए अद्भुत ज्ञाना को मानि
बात हमारी।
अजहूं लेउ छोड़ाय जगत् सो जो कछु सुरति संभारो॥

कलिङ्ग—तिताला

ना हरि भजे न आदत छूटो।
सब दे समुझि सुधारत नाही अंधरे भए हु
हिएको फूटो॥
पानी मा गढ़ पाषाणको देखो ठोकत ठोकत
उठे भभूका।
सहस्र घड़ा नितहो जल ढारे फिरि सूके का सूका॥
सेतहि सेत सेत भो अङ्गा सेने बाढ़ि अधिकाई।
जो सनिपात रोगि यह मारो सो साधन सिधि पाई॥
अनहद कहत कहत जग बिनसे अनहद
सृष्टि समानो।
निकटि पयाना यमपुर धावे बोले एकै बानो॥
सत् गुरु मिले बहुत सुख लहिए सत् गुरु
शब्द सुधार।
कहै कबीर सो सदा सुखारी जो यह पदहि विचारै॥

सिन्धु—तिताला

नर हरि लागी धो बिकारा बिनु ईंधन मिले
न बुझावनिहारा।
मैं जानो तोहि सो व्यापै जरत सकल संसारा॥
पानी माह अगनिको अङ्कुर लै मन बुझावन पानी।
एक न जरे जरे नर नारो युक्ति न काहू जानो॥
शहर जरे पहरू सुख सोये कहै कुशल घर मेरा।
कुम्हिया जरो वस्तु निज उबरी विकल राम रङ्ग तेरा॥
कुबुजा पुरुष गले इक लागा पूजो न मनको साधा।
करत विचार जन्म गयो खोसो या तन रहल असाधा॥
जानि बूझि जो कपट करत है ऐसा मन्द न कोई।
कहै कबीर सब नारो रामको मो ते और न होई॥

परज—तिताल

माया महा ठगिन हम जानो।
त्रिगुण फांस लिए कर डोले बोले मधुरो बानो॥
केशव के कमला होइ बैठो शिव के भवन भवानो।
पण्डाके मूरति होइ बैठो तीरथहू के पानो॥
योगी के योगिन होइ बैठी ब्रह्माके ब्रह्मानो।
काहू के होरा होइ बैठो काहू कौड़ो कानो॥
भक्ताके भक्तिन होइ बैठो राजाके घरह रानो।
कहै कबीर सुनो हो सन्तो यह सब अकथ कहानो॥

२

माया मोह मोहित कीन्हा।
ताते ज्ञान रतन हरि लीन्हा॥
यौवन ऐसो सुपने जैसो जीवन स्वप्न समान।
शब्द उपदेश दिये ते छाड़ो परम निधान॥
ज्योतिः तरङ्ग देखि उर हुलसे पथ न पेखे आगो।
काम फांस नर मुग्ध न चेते कनक कामिनी लागो॥
शेष सोई पद कतेव निरखे सुर मुनि शास्त्र विचारे।

सत् गुरुके उपदेश विना ते जानि के जीव मारे ॥
कहु विचार विकार परिहरि तरण तारण सोई ।
कहहि कबीर भगवन्त भजि नर दुतिया और न कोई ॥

१

मरि हो रे तन काहले करि हो ।
ना छूटे बाहर ले धरि हो ॥
काया विगुर्चन अनवनि भातो ।
कोई जारे कोई गाड़े मातो ॥
हिन्दू ले जरे तुरुक ले गाड़े ।
यह परपञ्च दुहू घर छाड़े ॥
कर्मफास यम जाल पसारा ।
जो धीर मर्म हरो गहि मारा ॥
राम विना नर होइहु कैसा ।
बाट माझ गोबर परा जैसा ॥
कहै कबीर पाछे पछेतइ हो ।
या घरतें जब वा घर अइहो ॥

कलिङ्ग—तिताला

माई मेरे कुल उजियारी ।
सासु ननद पटिया ले बांधलि ससुरहि
परलि उगारी ॥
जारो माग मता सुनारिको ।
जेन सरवर रचि न धमारिको ॥
जना पांच कुखुया मिलि रख लो
अवर दुइ औ चारी ।
पोरो प्रोसनी करी कलेवा सङ्ग है बुधि महतारी ॥
सहज बापुरे सेज बिछावल सुत लेऊं मैं पांव पसारी ।
आव न जाव मरै नहि जीवो साहेब मेटलि गारी ॥
एक नाम मैं निजुकै गहलो तो छुटल संसारी ।
एक नाम मैं वधि के लेखूं कहै कबीर पुकारी ॥

बिहाग—तिताला

मैं का सो कहो को सुने को पतियाई ।
फुलवाके छुवले भंवर मरि जाई ॥
जोतियन बोइयन सिंचियन सोई ।
बिनु डार बिनु पाते फूल एक होई ।
गगन मण्डल विच फूल एक फूला ।
तर भई डार ऊपर भयी मूला ॥
फूल भल फूलल मलिनि भल गूथे ।
फुलवा बिनसि गइल भवरा निकूथे ॥
कहहि कबीर सुनो सन्त भाई ।
पण्डित जन फूल रहल लुभाई ॥

परज—तिताला

जोलाहा बीनो हु हरिनामा ।
जाको सुरवर मुनि धर ध्याना ॥
ताना तनैक औठा लीन्हो चरखो चारो वेद कलामा ।
सरकुण्डी एक रामनारायण पूरण प्रकटे कामा ॥
भवसागर एक कठवत कीन्हा ते हमे माड़ो सामा ।
माड़ो के तन माड़ो रहो है माड़ो विरले जाना ॥
चांद सूरज दोउ गोड़ा कीन्हो माझ दोप
कियो चीन्हा ।
त्रिभुवन नाथ जब मांजन लागे श्याम
मुरलिया दीन्हा ॥
पाईके जब भरना लीन्हा वै बाधे के रामा ।
वै बाधी मैं तीनो लोके बाधो कोउ न रहा उबाना ।
तीनो लोक एक करगह कीन्हा दृग मग कीन्हो ताना ।
आदि पुरुष बैठावन वैठे कबीरा ज्योति समाना ॥

कलिङ्ग—तिताला

योगिया फिरि गयो नगर मझारो ।
जाइ समान पाच तहां जारो ॥
गये दिगम्बर कोइ न बतावे ।
योगिया गुफा बहुरि नहि आवे ॥
जरि गयो कथा ध्वजा गई छूटी ।
भाजि गये डण्ड खपर गये फूटी ॥
कहै कबीर कली है खोटी ।
जो रहै करवासो निकले टोटी ॥

२

योगिया के नगर वसे मति कोई ।
जो रे वसे सो योगिया होई ॥

वह योगिया के उलटा ज्ञाना।
कारी चोली नाही ताना॥
परगट सुकंथा गुपुता धारी।
तीमें मूल साजीवनि भारी॥
वह योगियाकी युक्ति जो बूझे।
राम रमे ताहि त्रिभुवन सूझे॥
अमृत बेलि क्षण क्षण पीवे।
कहै कबीर योगी युग युग जीवे॥

सोरठ—तिताला

जो पै बीज रूप भगवाना।
तो पण्डित कहा पूछो आना॥
कहा मन कहा बधो हंकार।
सत्व रज तमः गुण तीन प्रकार॥
विष अमृत फल करे अनेका।
बहु धावें वृक्ष है तरवेका॥
कहै कबीर तै में का जानो।
कोदहु छूटल कौन अरुझानो॥

असौरी—तिताला

जो चरखा जरि जाय बढ़इया न मरे।
में कातौं सूत हजार चरखुला जिन जरे॥
बाबा मेरो व्याह करो अच्छा वर हित काह।
जो लग अच्छा वर मिले तो लग तुमहि विवाह॥
प्रथम नगर पहुंच तै पगि गये शोक सन्ताप।
एक अचरज मोइ देखा जो बिटिया व्याहो बाप॥
समधीके घर लमधो आए आए बहू के भाई।
गोड़ चूहा दे दे चरखा दियो हढ़ाई॥
कहहि कबीर सुनो हो सन्तो चरखा लखे जो कोई।
वह चरखा लखि परे तो आवागमन न होई॥

२

यन्त्री यन्त्र अनुपम बाजे।
वाके अष्ट गगन मुख गाजे॥
तूही बाजे तूही गाजे तूही लिए कर डोले।
एक शब्द में राग छतीसो अनहद बाणी बोले॥
मुखको नाल श्रवण को तूवा सत् गुरु साजि बनाया।
जिह्वा को तार नासिका चिरई माया को मोम लगाया॥
गगनमण्डल में भो उजियारा उलटा फेर लगाया।
कहै कबीर जन भए हैं विवेको जिन यन्त्री सो मन लाया॥

३

जैसा मासु नर को तैसा मासु पशुको रुधिर एक सगाराजी।
पशु को मासु भखे सब कोई नरहि न भखे सियाराजी॥
ब्रह्मकुलाल मेदिनी भैया उपजि विनसि कित गइयाजी।
मासु मछरिया तरे पेखइ हो जो खेतन में बोइयाजो॥
कहहि कबीर सुनो हो सन्तो राम नाम नित लेइयाजी।
जो कछु कियो जिह्वा केस्वारथ बदल पराए देइयाजी॥

चातक कहा पुकारे दूरि।
जल सो जगत् रह्या भरपूरि॥
जेहि जल नाद विन्दुका भेद।
षट्कर्म सहित उपासना वेद॥
जेहि जल जीव शोवका वास।
सो जल धरणी अम्बर प्रकाश॥
जेहि जल उपजै सकल शरीरा।
सो जल भेद न जानु कबीरा॥

सिन्धु—तिताला

चलहु कहा टेढ़ो टेढ़ो टेढ़ो।
दसो द्वार नरक भरि बूड़े तू गन्धीको बेवेढ़ो॥
फटे नयन हृदय नहि सूझे मति एको नहि जानो।
काम क्रोध तृष्णा के मारे बूड़ि मुए विनु पानो॥
ज्यो जारे लो होइ भरम धुरि गाड़े कृमि कोट खाई

शूकर स्वान काग के भोजन तिन के एहै बड़ाई॥
चेति न देखि न बुद्धि बल बोरे तुहु ते काल न दूरि।
कोटि यत्न करहो बहुतेरा तन की अवस्था धूरि॥
बालू के घरवामें बैठे चेतत नाहि अयाना।
कहहि कबीर एक राम भजे बिनु बूड़े बहुत सयाना॥

परज—तिताला

फिरो कहा फूले फूले फूले।
जब दस मास ऊर्ध्व मुख होते सो दिन काहे को भूले॥
जो माखो साठो नहि विहुरे सोचि सोचि धन कीन्हा।
मुए पीछे लेहु लेहु करे भूत रहनि कछु दीन्हा॥
देहरि लेवर नारि सङ्ग है आगे सङ्ग न सहेला।
मृत्यु कथा न लिया सङ्ग खटोला फिरि पुनि हंस अकेला॥
जारि देह भस्म हो जाई गाड़े माटी खाई।
काचे कुम्भ उदक ज्यो भरिया तनकी यहे बड़ाई॥
राम न रमसि मोहके माते परे काल वसि कूवा।
कहे कबीर नर आपु बंधाये ज्यो नलिनी भ्रम सूवा॥

२

ऐसे योगिया बद करनी।
जाके गगन आकाश न धरनी॥
हाथ न वाके पाव न वाके रूप न वाके रेखा।
विना हाट हटवाई लावे करे बयाई लेखा॥
कर्म न वाके धर्म न वाके योग न वाके युक्ति।
सिङ्गी पत्र कछू नाहो वाके काहे को मागे मुक्ति॥
मैं तोहि जाना तैं मोहि जाना मैं तोहि माहि समाना।
उतपति प्रलय एको नहि होता तब कहो कौन ब्रह्म को ध्याना॥
योगी एक आनि ठाट कियो है राम रहा भरि पूरि।
औषध मूल कछू नहि वाके राम सजीवन मूरि॥
नटवट बाजो पेखनि पेखे बाजीगरको बाजी।
कहे कबीर सुनो हो सन्तो भाई सूर्य विराजी॥

३

ऐसो भरम विगुरचन भारो।
वेद कतेब दीन औ दोज़ख को पुरुषा को नारी॥
माटी का घट साज बनायो वाहो बोच समाना।
घट विनसे का नाम धरोगे अहमक खोजि भुलाना॥
रज गुण ब्रह्मा तम गुण शङ्कर सत् गुण हरि हैं सोई।
कहहि कबीर राम रमि रहिए हिन्दू तुरक न कोई॥

४

अपनपो आपुहो बिसरौ।
जैसे कनक काच मन्दिर में भ्रमि के मूस मरौ॥
ज्यों केहरि वपु निरखि कूप जल प्रतिमा देखि परौ।
वैसे हो गज स्फटिक शिला में दशनन आनि अरौ॥
मरकट मुठो स्वाद नहि भहर घर घर रटत फिरौ।
कहहि कबीर ललना का सुगना तोहि कौन पकरौ॥

पीलू—तिताला

आपु अपन अस कीजे बहु तेरा।
काहु न मर्म पावा हरि केरा॥
इन्दु कहा करे विश्रामा।
सो कह गए जो कहत हुते रामा॥
वे कहा गये जे हते सयाना।
होय मृतक वह पदहि समाना॥
रामानन्द राम रस माते।
कहै कबीर हम कहि कहि थाके॥

धनाश्री—तिताला

अब हम जानिया हो हरि बाज़ी का खेल।
डङ्का बजाइ दिखाइ तमाशा बहुरि लेत सकेल॥
हरि बाज़ी सुर नर मुनि जहड़े माया चाटि कलाया।
घर में डारि सबे भरमाये हृदय ज्ञान नहि आया॥
बाज़ी झोड़ बाज़ीगर साचा साधनको मति ऐसी।
कहहि कबीर जिन जैसो समुझौ ताकी गति भे तैसी॥

२

कहु हो अम्बर का सो लागा।
चेतनहार नहि चेत सुभागा॥

अम्बर मध्ये दीसै तारा।
एक चेतै दूजे चेतावनिहारा॥
जो खोजो सो उहां नाही।
सो तौ आहि अमर पद माहीं॥
कहहि कबीर पद बूझै सोई।
मुख हिदया जाके एकै होई॥

बिहाग—तिताला

बन्दे करि ले आपन बेरा।
आपु जियत लख आपु ठौर करि मुए कहां घर तेरा॥
इह अवसर नहि चेतौ प्राणी अन्त कोई नहि तेरा।
कहहि कबीर सुनो हो सन्तो कठिन जाल का घेरा॥

धनाश्री—तिताला

राम की भांति हुररो।
सब सन्त उचारत सुनरो॥
वाल्मीक वन बोइया चुनो लियो सुखदेव।
क्रम वपुरा हो रहा सूत काते जयदेव॥
तोन लोक ताना तन्यो ब्रह्मा विष्णु महेश।
नाम लेत मुनि हारिया सुरपति सकल नरेश॥
विष्णु जिह्वा गुण गाइयां बिन बस्तीका देह।
सूने घरका पाहुना तासौ लायो नेह॥
चारि वेद कै डाकियौ निरङ्कार कियौ रारि।
बिनै कबीरा चून्दरो मौना बाधौ वारि॥

२

तुमइ हरिहि समुझौ लोई गौरो सुख मन्दर बाजै।
एक अगुणी षट् चक्रहि वेधी बिन विषम कुल माजै॥
ब्रह्मं पकरि अग्नि में होमै मत्स्य गगन चढ़ि गाजा।
नौति अमावसि निति ग्रह में तू राहु ग्राह सम दाजा॥
सुरभी भक्षण करत वेद मुख घन वरसे तन छीजै।
त्रिकुटी कुण्डल मध्य मन्दर बाजै औघट
अम्बर भीजै॥
कहहि कबीर सुनो हो सन्तो योगिन सिद्धि पियारो।
सदा रहै सुख संयम अपने वसुधा आदि कुमारो॥

२

भूला है अहमक् नादाना।
तुम हरदम राम नहि जाना॥
बरबस आय के गाय पछारि गला काटि जिन
आप लिया।
जीवता जीव मुरदा करि डारे तिस को कहत
हलाल हुवा॥
जासु मासु को पाक कहत हौ ताको उत्पति
सुनु भाई।
रजो बीज से मासु उपानो मासु न पाको तू खाई॥
अपनी देखि करत नहि अहमक् कहत हमारे
बड़न किया।
उसका खून तुम्हारी गरदन जिन तुम को
उपदेश दिया॥
गई सियाही आई सफ़ेदी दिल सफ़ेद अजहूँ न हुवा।
रोजा नमाज़ बांग का कोजै हुजरे भीतर
पइठि मुवा॥
पण्डित वेद पुराण पढ़त है मौलना पढ़े कुराना।
कहहि कबीर दोउ गए नरकहि जिन
रामहि नहि जाना॥

४

काज़ी तुम कौन कतेब बखानी।
झंकत बकत रहो निशु वासर मति एको नहि जानी॥
शक्ति उनमाने सुनति करत हो मैनव दाग भाई।
जो खोदाइ तेरि सुनति करते आपुहि काटी
क्यों न आई॥
सुनति कराय तुरुक जो होते औरतको क्या कहिए।
अर्द्ध शरीरी नारी बखाने ताते दूरहि रहिए॥
घालि जनेऊ ब्राह्मण हो नाम हरि के क्या पहिराया।
वेजनमी को शूद्रो परोसे तुम पांड़े क्यों खाया॥
हिन्दू तुरक कहांते आया किन यह राह चलाया।
दिल में खोजि देखि खोजादे भिश्ति
कहो किन पाया॥

कहहिं कबीर सुनो हो सन्तो ज़ोर करत है भाई।
कबीर न बाट रामकी पकरी अन्तकाल पछिताई॥

५

भूला लोग कहै घर मेरा।
जा घरवामें भूला डोले सो घरवा नहिं तेरा॥
हाथी घोड़ा बैल बाहनो संग्रह कियो घनेरा।
बसती में सो दियो बन्देरा जङ्गल कियो बसेरा॥
गांठी बांधि खरच नहिं पठए बहुरि ना कियो फेरा।
बीबी बाहर हरफ़ महल में बीच मियां को डेरा॥
नो मन सूत उरझि न सुरझे जन्म जन्म उरझेरा।
कहहिं कबीर सुनो हो सन्तो यह पदका
करो निबेरा॥

६

कबीरा तेरो घर कन्दरामें या जग रहत भुलाना।
गुरु की कही करत नहिं कोई महलो महल दिवाना॥
सकल ब्रह्म में हंस कबीरा कागा न चोंच पसारा।
मन मत कर्म धरे सब देही नाद बिन्दु बिस्तारा॥
सकल कबीरा बोले बाणी नैनो में घर छाया।
अनहत लूटि होत घट भीतर घट का मर्म न पाया॥
कामिनी रूपी सकल कबीरा मृगा चौरदे होई।
बड़ बड़ ज्ञानी मुनिवर थाके पकरि सके नहिं कोई॥
ब्रह्मा वरुण कुबेर पुरन्दर पीपा अरु प्रह्लादा।
हरिनाकुस को उदर बिदारो तिनहु के
काल न राखा॥
गोरख ऐसो दत्त दिगम्बर नामदेव जयदेव दासा।
तिनकी खबर कहै नहिं कोई उन कह कियो है बासा॥
चौपरि खेल होत घट भीतर जन्मके पासा डारा।
दम दमकी खबर न जानि कोइ करि न सके निरुवारा॥
चारि दिरग महि मण्ड रचो है रूम साम
बिच डीलो।
ता ऊपर कछु अजब तमाशा मारा है धमकीलो॥
सकल अवतार जा के महिमण्डल अनन्त
खटारक जेरो।
अद्भुत अगम अवगाह रचो है ए सब शोभा तेरी॥
सकल कबीरा बोले बोरा अजहूं हो होशियारा।
कहै कबीर गुरु सकलो दर्पण हरिदम
करो पुकारा

७

कबीरा तेरो बकदल में माने अहेरा खेले।
बपुवारो आनन्दम् गा रुचि रुचि सर मेले॥
चेतन रावल पवन खेड़ा सहेज मूल बाधे।
ध्यान धनुष ज्ञानबान योग सर साधे॥
षट् चक्र बेधि कमल बेधि जाइ उजियारा कीन्हा।
काम क्रोध लोभ बर्हांको सावज दीन्हा॥
गगन मध्ये रो कीन्ह द्वारा जहां दिवस नहिं राती।
कबीर दासा जाइ पहुंचे बिछुरे सङ्गी साती॥

८

सावज न होई।
भाई सावज न होई॥
वाको मासु भये सब सावज एक सकल संसारा
अवगति वाकी बाता।
टैट फारि जो देखिये रे भाई करे जे खाता॥
जैसो वाको मासु रे भाई पुन पुन मासु बिकाई।
हाड़ गोड़ धुरा पर वारे आगो धुवां नहिं खाई॥
सीर सींगि कछू नहिं वाके पूछ कहां वे पावे।
सब पण्डित मिलि धन्धे परिया कबीरा गौरी गावे॥

बिहाग—तिताला

सुभागी काहे कारण लोभ लागी रत्न जन्म खोयो।
पूर्व जन्म भूमि के कारण बीज काहे को बोयो॥
बुन्द सञ्जन मण्ड साजो अग्निकुण्ड रहाया।
दश मास माताके गर्भ बहुरि लागी माया॥
बाल हुते वृद्ध हुवा होनी हुवा सो होवा।
जब उक्त जेहै बांध चलै है नयन भरी भरि रोवा॥
यौवन की जिन आशा राखो काल गरासे वासा।
बाज़ी है संसार कबीरा चित्त चेति डारो पासा॥

२

सन्त महन्त हो सुमिरा सोई।
जो कोउ फांसी से बचा होई॥

दत्तात्रय मर्म नहि जाना मिथ्या स्वाद भुलाना।
सरिता मथि घृत को काढिन ताहि समाधि समाना॥
गोरख पवन राखि नहि जाना योग युक्ति उन माना।
रिधिसिधि संयम बहुतेरे परब्रह्म नहि जाना॥
वशिष्ट सृष्टि विद्या सम्पूरण राम ऐसो शिष साखा।
जो राम को करता कहिये तिनहु को काल न राखा॥
हिन्दू कहै हम राम हि जाने तुरक कहै हमारा पीर।
दोनो आइ दीनमें झगरे ठाढे देखे हंस कबीर॥

२

तन धरि सुखिया कोइ न देखा जो देखा सो दुखिया।
उदय अस्तकी बात कहत हो ताकर करउ विवेकिया॥
बाटे बाटे सब कोई दुखिया क्या योगी क्या वैरागी।
शुक्राचारज दुखके कारण सब हो माया त्यागी॥
योगी जङ्गम ते अति दुखिया तपसी को दुख दूना।
आसा तृष्णा सब को व्यापो कोइ महल नहि सूना॥
साच कहूं तो सब जग खीझै झूठ कहा नहि जाई।
कहहि कबीर तेइ भव दुखिया जिन यह राह चलाई॥

३

ता मैं न के टटो मेरे भाई।
तन छूटे मन कहां समाई॥
सनक सनन्दन जयदेव नामा।
भक्ति सही मन उनहु न जाना॥
अम्बरीष प्रह्लाद सुदामा।
भक्ति सही मन उनहु न जाना॥
भरथरि गोरख गोपीचन्दा।
ता मन मिलि मिलि कियो आनन्दा॥
जा मन के कोइ जाने न भेव।
ता मन मग्न भयो शुकदेव॥
शिव सनकादिक नारद शेषा।
तनके भीतर मन उनहु न पेखा॥
अखिल निरञ्जन सकल शरीरा।
ता मन भ्रमि भ्रमि रहल कबीरा॥

४

बाबू ऐसो है संसार तुम्हारो एह कलि है विष
हरे बहारा।
को अब अनख सहै प्रतिदिन कौन है रहनि हमारा॥
शास्त्र सहस्र सब कोइ जाने हृदय तत्त्व नहि बूझै।
निरजीव आगे सरजीव थापे लोचन कछू न सूझै॥
तजि अमृत विष काहे अचवो गांठो बांध्यो खोटा।
चोरन दीन्हो पाट सिंहासन साहन सो कियो ओटा॥
कहहि कबीर झूठे मिलि झूठा गहि ठग व्यवहारा।
तीनि लोक भरि पूरि रह्यो है नाहीं है पतियारा॥

५

कहु हो निरञ्जन कौने बानो।
हाथ पांव मुख श्रवण जिह्वा का कहि जपि हो प्रानो॥
ज्योति हो ज्योति ज्योति जो कहिए ज्योति कवन
सहि दानो।
ज्योति हि ज्योति ज्योति दै मारे तब ज्योति
कहां समानो॥
चारि वेद ब्रह्मा जो कहिया तिनहु न या गति जानो।
कहहि कबीर सुनो हो सन्तो बूझो पण्डित ज्ञानो॥

६

को अस करे नगर कोतवलिया।
मांसु फैलाइ गृध्र रखवरिया॥
मूसा भयोनाव मञ्जार कन्हरिया।
सोवत दादुर सर्प पहरिया॥
बैल वियाइ गाइ भै बन्झा।
बछवै दुहै तीनि तिनि सञ्झा॥
अंगने चोर साहु घर मूसै।
सोना लेइ बङ्खले धूसै॥
निति उठि सिंह स्यारते जूझै।
कबिराके पद विरला जन बूझै॥

कविरा—तिताला

का कहि उमर गये बहु तेरा।
बहुतक मुए फिरे नहि फेरा॥

जब हम रोवत तब न संभारा।
गर्भ वासकी बात विचारा॥
अब ते रोवा क्या ते पाया।
केहि कारण ते मोहि रुवाया॥
कहहि कबीर सुनो नर लोई।
काल बदेर परो मति कोई॥

सोरठ—तिताला

अलह राम जीवो तेरी नाई।
जन के मेहर होहु तू साईं॥
क्या मुण्डो भुमि शिर नाये।
क्या जल देह नहाये॥
खून करे मसकीन कहावे।
गुन्हे रहे छिपावे॥
क्या उजू जप मज्जन कराये।
क्या मसजिद सिर नाए॥
हृदये कपट नमाज़ गुज़ारो।
का हज मक्का जारो॥
हिन्दू बर्त्त एकादशी साधे करे चौबीसो रोज़ा मुसलमाना।
एगारह मास कहो किन टारा एकहि माह नियाना॥
जो खोदा हज जीत बसत है और मुलक केहि केरा।
तीरथ मूर्त्ति राम निवासी दुनो में किनहु न हेरा॥
पूरब दिशा हरि को वास पश्चिम अलह मुक़ामा।
दिल में खोज खोज दिल ही में यह करीमा रामा॥
वेद कतेब कहा किन झूठा झूठा जो न विचारे।
सब घट एक एक के लेखे भो दूजा कहि मारे॥
जेते औरत मर्द उपाने सो सब रूप तुम्हारा।
कबीर निगुरा अलह राम पुकारे सो गुरु पीर हमारा॥

सिन्धु—तिताला

आव वे आव मुझै हरि को नाम।
अवर सकल तजि कौने काम॥
कहां तब आदम कहां तब हौवा।
कहां तब पीर पैगम्बर हुवा॥
कहां तब ज़मीं कहां आसमान।
कहां तब वेद कतेब कुरान॥
जिन दुनिया मैरची मसीदि।
झूठा रोज़ा झूठा ईदि॥
साचा एक अलहको नाम।
जाके नैने करो सलाम॥
कहु धौ ख़सम कहांते आई।
किसके कहे तुम छुरी चलाई॥
कत छल मैं बाज़ो लाया।
हिन्दू तुरक की राह चलाया॥
कहां तब दिवस कहां तब राती।
कहां तब खिलमको उतपाती॥
नहि वाके जाति नहि वाके पाति।
कहहि कबीर वाके दिवस न राति॥

सोरठ—तिताला

अब कहां चलेहु अकेला मिन्ता।
उठि मन करो घरे की चिन्ता॥
खीर खाड़ घृत पिण्ड सवारा।
सो तन ले बाहर करि डारा॥
जा सिर रचि रचि बांधे पागा।
सो सिर रतन बिडारे कागा॥
हाड़ जरे जस लकरी झूरी।
केश जरे जस तनकी कूरी॥
आवत सङ्ग न जात संघाती।
कहा भयो दल वाके हाती॥
माया के रस लेन हु न पावे।
बीचे जम बोलारन्हे खावे॥
कहहि कबीर नर अजहु न जागा।
यम के मुग्दर मांझ सिर लागा॥

२

देवलोक हरिके सगाई।
माइ घरे पुत्र धिया सङ्ग जाई॥
सासु ननद मिलि अदल चलाई।

महयाके बढ़ बैठी आई ॥
हम बहनोई राम मेरो सारा ।
हम बाप हरि पुत्र हमारा ॥
कहहि कबीर हरीके बूता ।
राम रमैं सो कुकरी के पूता ॥

३

बिना पवन पर्वत उड़े ।
जीव जन्तु सब वतृसहि कुड़े ॥
सूखे सरवर उठहि हिलोर ।
बिनु जल चकवा करै कलोल ॥
बैठा पण्डित पढ़े पुराना ।
बिन देखे का करै बखाना ॥
कहहि कबीर जो पद को जाना ।
सोई सन्त सदा परमाना ॥

४

दारो केहि ले तोहि दो गारी ।
तू समुझिके पन्थ विचारी ॥
घरहूंके नाहम अपना ।
तिन साहेब मेरे सपना ॥
ब्राह्मण क्षत्रिय बानी ।
तिनहु कहल नहि मानी ॥
योगी जङ्गम जेते ।
आपु गये हैं ते ते ॥
कहै कबीर एक योगी ।
तू भ्रमि भ्रमि भौ भोगी ॥
जोगी ताही मतिके मौरा ।
ज्यों पानी पानीमें मिलि गो त्यो
जरि मिले कबीरा ॥

५

जो मरे को सांचा ध्यास ।
तुम्हरा मर्म है मगहर पास ॥
मगहर मरो मरै नहि पावे ।
अन्त तें मरो तो राम लजावे ॥
मगहर मरै ते गदा होई ।
भली प्रतीति राम ते खोई ॥
क्या काशी क्या मगह जो पै हृदय राम रमें मोरा ।
जो काशी तन तजै कबीरा रामहि कौन निहोरा ॥

६

कैसे के तरौं अब नाथ कैसे के तरो ।
अब बहु कुटिल भरो ॥
कैसो तैरी सेवा पूजा कैसा तेरो ध्यान ।
ऊपर तो उजर दीखा भीतर बग उनमान ॥
भाव तो भुजङ्ग दीखा अति रे व्यभिचारी ।
सुरति तो सयान देखा तोर मति तो मजारी ॥
अति रे विरोध देखा अति रे दिवाना ।
षट दर्शन सब देखो भेष लपटाना ॥
कहहि कबीर सुनो नरबन्दा ।
डाइनि डिम्भ सकल जग धन्धा ॥

७

ए भ्रम भूत सकल जग खाया ।
जिन जिन पूजा तिन तिन जहड़ाया ॥
अण्ड न पिण्ड प्राण नहि देहा ।
काटि काटि जीव कौतिक एहा ॥
बकरी मुरगी दूनो छेदा ।
अनिल अन्न उन अवसर लेदा ॥
कहहि कबीर सुनो नर लोई ।
भूतवाके पूजल भूतवा होई ॥

धनाश्री—तिताला

भ्रमर उड़े बग बइठे आई ।
रैन गई दीसो चलि आई ॥
हलहल कांपै बाला जीय ।
नहि जाने का करि है पीय ॥
काचे बासन टिकै न पानी ।
उड़ि गये हंस काया कुम्हिलानी ॥
काग उड़ावत भुजा पिरानी ।
कहहि कबीर ए कथा सिरानी ॥

२

जबमें बिलु तेलीके बेला भयो।
बैठत नाही साधु की सङ्गति नाधे जन्म गया॥
बहि बहि मरो पच्यो निज स्वारथ यम के डाड़ सह्यो।
धन दारा सुत राज काजमें माथे भार गह्यो॥
जबमहि छोड़ि विषय रङ्ग राती तें
पापके बीज बोयो।
झूठी मुक्ति नर आशा जीवन की प्रेतका जूठ खायो॥
लख चौरासी जीवजन्तु में सायर जात बह्यो।
कहहि कबीर सुनी हे सन्तो उन श्वान की
पूछ गह्यो॥

३

अब हम भइलि बहर जल मीना।
परवले जन्म तप कामद कीना॥
तहिया मैं अछलु मन बैरागी।
तेज लोभे शोक कुटुम्ब राम लागी॥
तजले में काशी मति भइलि भोरी।
प्राणनाथ कहु का गति मोरी॥
हमहि क्रूर सेवक तुमही अपाना।
देउ मैं दोष काहि भगवाना॥
हम चल अइलो तुम्हरे शरणा।
कतहु न देखो हरि जीको चरणा॥
हम चलि अइलि तुम्हारे पासा।
दास कबीर भल कइल निरासा॥

४

लोग बोले दूरि गये कबीर।
या मत जाने कोइ कोइ धीर॥
दशरथ सुत तिन लोकै जानी।
राम नाम के मर्म न मानी॥
जस जीव जानि परा जस लेखा।
राज की करे उरग ज्यों पेखा॥
यद्यपि फल उत्तम गुण जानी।
हरि छोड़ि मन मुक्तियो नहीं मानी॥
हरि आधार जस मीन हो नीरा।
और यत्न कछु कहै कबीरा॥

५

अपनो कर्म न मेटो जाई।
कर्मका लिखा मिटै कहु कैसे जो युग कोटि सिराई॥
गुरु वशिष्ठ मुनि लग्न सुधारे सूर्य मन्त्र एक दीन्हा।
जो सीता रघुनाथ विवाह पल एक सचन कीन्हा॥
तीन लोकके कर्ता कहिए बालि वधो बरिआई।
एक समय ऐसी बनि आई उनहु अवसर पाई॥
नारद मुनि के वदन छिपायी कीन्हा कपि
को स्वरूपा।
शिशुपालकी भुजा उपारि आपु भये हरि भूपा॥
पार्वती को बांझ न कहिए ईश्वर न कहिये भिखारी।
कहे कबीर कर्ताकी बातें कामकी बातें न्यारी॥

६

है कोइ गुरु ज्ञानी जगत् में उलटि वेद बूझे।
पानी में पावक बरे आंधे आंखो सूझे॥
गाई तो नाहर खायो हरिणी खायो चीता।
काग लङ्गर काटि के बटेरो बाज जीता॥
मूसे तो मजार खायो श्वानहि खायो सियारा।
आदि के उपदेश जाने ता सुधी सुवारा॥
एक ही दार खायो पाचही भुजङ्गा।
कहहि कबीर पुकारि के है दोउ एक सङ्गा॥

७

झगरा एक बड़ो राजाराम।
जो निरवारे सो निरवाम॥
ब्रह्म बड़ा के जहां ते आया।
वेद बड़ा के जिन्ह उपजाया॥
यह मन बड़ा कि जेहि मन मान।
राम बड़ा की रामहि जान॥
भ्रमि भ्रमि कबिरा फिरै उदास।
तीर्थ बड़ा कि तीर्थको दास॥

८

झूठे जिनि पतिम्राहु सुन सन्त सयाना।
तेरे घटही में ठग पुर है मति खोवहु अपाना॥
झूठेको सन्तान है धरती असमाना।
दशो दिशा वाके फन्द है जिव घेरि है अयाना॥
योग जप तप संयम तीर्थ व्रत दाना।
नवधा वेद कतेब है झूठेको बाना॥
काहू को सब दे फुरे काहू करामाती।
मान बड़ाई ले रहे हिन्दू तुरुक जाती॥
बात व्योंते आसमानको मुदती नित रातो।
बहुत खुदी दिल राख भरे तनु पानो॥
कहहि कबीर कासो कहो सकलो जग अन्धा।
सांचा सो भागा फिरे झूठे का बन्दा॥

कबीर—चौतीसा

ओंकार आदि जो जाने।
लिखि के मेटे ताहि सो माने॥
ओङ्कार कहै सब कोई।
जो नहि लखा सो विरले होई॥
काका कवल कोनि कह पावे।
शशि ग्रसित सम्पूर्ण हि आवे॥
तहां कुसुम रङ्ग जो पावे।
अवगह गहि के गगन रहावे॥
खखा चाहै खोरि मनावे।
खसमहि छोड़ि चहु दिस धावे॥
खसमहि छोड़ि क्षमा होइ रहई।
होइ अधीन अक्षय पद लहई॥
गगा गुरु के वचनै मान।
दूसरि शब्द करै नहि कान॥
तहां विहङ्ग कबहु नहि जाई।
अवगह गहिके गगन रहाई॥
घघा घट विनसे घट होई।
घटहीमें घट राखु समोई॥
जो घट घटे घटहि फिरि आवे।
घटही में फिरि घटहि समावे॥
नना निरखत निशु दिन जाई।
निरखत नयन रहै अरगाई॥
निमिष एक जो निरखे पावे।
ताहि निमिष मह नयन छिपावे॥
चचा चित्र रचो बहु भारी।
चित्र छोड़ि ते चेतु चित्तकारी॥
जो नहि चित्र विचित्र उ लेखा।
चित्र छोड़ि ते चेतु चितेखा॥
छछा आहि छत्रपति पासा।
छकि कौन रहसि मेट सब आसा॥
मैं तो कह क्षण क्षण समुझाया।
खसम छोड़ि कस आपु वधाया॥
जजा इ तन जीवत हि जारे।
यौवन जारि युक्ति तो पारे॥
जो किछु जानि जानि पर जरे।
घटही ज्योति उजियारी करे॥
झझा अरुझि संग झोकत जान।
छौटत छुटत जाहि परान॥
कोटि सुमेरु ढूटि फिरि आवे।
जो गड़ गढ़ हि सो पावे॥
या निञ्ञह कर आदस देहु।
नाहो देखि न भजिये अजेहु॥
नाहो देखि न आपु भजाउ।
जहां न होत तहां तन मन लाउ॥
जहां नहो तहां जब कछु जानो।
जहां नहो तहां ले पहिचानो॥
टटा वाट विकट मन माहो।
खोलि कपाट महल ते जाहो॥
रहो लटपटो जुटि तेहि माहो।
होहि अटल ते कबहु न जाहो॥
ठठा ठौर दूरि ठग नारे।
नीति के निठुर कीन्ह मन धोरे॥

जो ठग ठगो सब लोग अयाना ।
सो ठग अचिह्न ठौर पहिचाना ॥
डडा डर उपजे डर होई ।
डर ही मह डर राखु समोई ॥
जो डर डरै डरहि फिरि आवै ।
डर ही मह फिरि डर हि समावै ॥
ढढा ढोढ गहो कत आना ।
ढूंढत ढूंढ़त जाइहि प्राना ॥
कोट सुमेरु टूटि करि आवै ।
जो गढ़ गढ़ा गढ़हि सो पावै ॥
नाना ढूढ़ वसै है गाउ ।
नाना ढूढे नाना तोरि नाउ ॥
मुवा एक ताहि तजि घना ।
मरहि अत्या ककेता गना ॥
तता अति तिरिया नहि जाई ।
तन त्रिभुवन मह राखु छपाई ॥
जो तन त्रिभुवन माह छपावै ।
तन्तुहि मिले तन्तु सो बांधै ॥
थथा अति अथाह थाह नहि जोई ।
इथिर उथिर नर हरदम होई ॥
थोरे थोरे थिर होहु रे भाई ।
विनुथ भे जस मन्दिर थम्हाई ॥
ददा देखहु विना मन हारु ।
जस देखहु तस करहु विचारु ॥
दशहु द्वारे तारो लावै ।
तब दयाल को दर्शन पावै ॥
धधा अर्ध छोड़ जहुं मन लावै ।
आपा मेटि कै प्रेम बढ़ावै ॥
चौथे बोए नामा मह जाई ।
राम गदह होय खर खाई ॥
पपा पाप करै सब कोई ।
पापीके घर धर्म न होई ॥
पाप कहै सुन हु रे भाई ।
हमरे लिए को कुवां न पाई ॥
फफा फल लागा बड़ दूरि ।
चाखै शिष्य गुरु देइ न तोरि ॥
बबा बर बर करै सब कोई ।
बर बर किए काम नहि होई ॥
बाबा बात कहै अरथाई ।
फलका मर्म न जानेहु भाई ॥
भभा भर्मि रहा भरि पूरि ।
भभरे ते है नियरे दूरि ॥
भभा कहै सुनहु रे भाई ।
भभरे आय भभरे जाई ॥
ममा सेवे मन पाई ।
हमरे सेवे मूल गंवाई ॥
जजा जगत् रहा भरि पूरि ।
जगत् हुते है जाजा दूरि ॥
जा जा कहै सुनहु रे भाई ।
हमरे सेवे जय जय पाई ॥
ररा रारि रहै अरुझाई ।
राम के कहे दुख दारिद जाई ॥
ररा कहै सुनहु रे भाई ।
सत् गुरु पूछि कैसे वहु आई ॥
लला तुतरे बात जनाई ।
तुतरा तुतरे परिचय पाई ॥
अपने तुतरा और के कहई ।
एकहि खेत दूना निरवहई ॥
वावा वरवर करै सब कोई ।
वरवर किए काज नहि होई ॥
वावा कहै सुनहु रे भाई ।
राम नाम ले जाहु पराई ॥
ससा सरा रचो वरिआई ।
सर वेधे सब लोग तवाई ॥
ससाके घर सुनु गुणो होई ।
एतनी बात न जाने कोई ॥

हाय हाय करत जीव सब जाई ।
छेव परे तब कहि समुझाई ॥
छेव परे तब कहि समुझाया ।
कहै कबीर अगु मन गा हराया ॥

अथ विप्रमतीसी लिख्यते

सुनहु सभन मिलि विप्र मतीसो ।
हरि बिनु बूड़ो नाव भरीसो ॥
ब्राह्मण होइ के ब्रह्म न जाने ।
घर महं यज्ञ प्रतिग्रह आने ॥
जेइ सिरजा तेहि नहि पहिचानो ।
कर्म धर्म ले बैठि बखानो ॥
ग्रहण अमावस सायर दूजा ।
स्वाति कपाति परो जनि पूजा ॥
प्रेत कनक मुख अन्तर बासा ।
आहूति सत्य होम के आसा ॥
कुल उत्तम कलि माह कहावे ।
फेरि फेरि धर्म कर्म करावे ॥
सुत दारा मिलि जूटो खाहो ।
हरि भक्ति के छूति कराहो ॥
कर्म अशौच उच्छिष्ट खाहो ।
मतिभ्रष्ट यम लोके जाहो ॥
न्हाइ खोरि उत्तम होइ आवे ।
विष्णुभक्त देखे दुख पावे ॥
स्वारथ लागि रहै बे काजा ।
नाम लेत पावक ज्यों डाजा ॥
रामकृष्ण के छाड़ेन्हि आसा ।
पढ़ि गुनि भे कृतम के दासा ॥
कर्म पढ़हि कर्महि को धावे ।
जे पूछे तेहि कर्म दृढ़ावे ॥
नहि कर्मीको निन्दा कीजे ।
कर्म करे ताहि चित दीजे ॥
ऐसी भक्ति हृदय महं लावे ।
हिरणाकुसको पन्थ चलावे ॥
देखहु असमति केर प्रकासा ।
अभ्यन्तर कृत्तिमके दासा ॥
जाके पूजे पवन जड़े ।
नाम सुमिरि नीभो मह बूड़े ॥
पाप पुण्य के हाथहि पासा ।
मारि जगत् को कान्ह विनासा ॥
बहिनो वो कुल बहिनि कहावे ।
अग्निहि जारे अग्निहि मावे ॥
बैठाते घर साहु कहावे ।
भीतर भेद मुस बहिनो लखावे ॥
ऐसो विधि सुर विप्र भनीजे ।
नाम लेत पचासन दोजे ॥
बूड़ि गये नाहि आप संभारा ।
ऊंच नीच कहु काहि जोहारा ॥
उच्च नीच है मध्यम वानी ।
एकै पवन एक है पानी ॥
एकै मटिया एक कुम्हारा ।
एक सभन का सिरजनहारा ॥
एक चाक सब चित्र बनाया ।
नादविन्दुके मध्य समाया ॥
व्यापी एक सकल को गूतो ।
नाम धरे का कहिये भूतो ॥
राचस करणी देव कहावे ।
वाद करे गोपाल न भावे ॥
हंस देह तजि न्यारा होई ।
तब को जाति कहै वहु कोई ॥
श्वेत सुफेद कि राता पियरा ।
अवरण वरण कि ताता सियरा ॥
हिन्दू तुरक कि बूढ़ा बारा ।
नारि पुरुष मिलि करहु विचारा ॥
कहिये काहि कहा नहि माना ।
दास कबीर सोइ पे जाना ॥

सखी वहां है वहि जात है करत है चहु ओर।
जो कहा नहि माने तो देहु धक्का दुहि ओर॥

चाचरी

ओरङ्गी चुनरी कोइ सुन्दरि कोइ पहिरो आए।
शोभा अद्भुत रूप वाको महिमा बरणि न जाए॥
चन्द्रवदनि मृगलोचनी मायाबुन्दका दियो उघाल।
यती सती सब मोहिया हो गज गति वाकी चाल॥
नारद को मुख मांडि के लीन्हों वसन छड़ाय।
गर्व गहेलो गर्व सो उलटि चलो मुसुकाय॥
शिव सन ब्रह्मा दौरिके दूनो पकरो जाय।
फगुवा लियो छिनायके बहुरि दियो छिटकाय॥
अनहद ध्वनि बाजा बजे सत मन सुनत भा चाव।
खेलन हारा खेलि है बहुरि न ऐसो दाव॥
सुर नर मुनि औ देवता गोरख दत्त औ व्यास।
सनक सनन्दन हैन कह्यो है औसे केतिक आस॥
छिरकत थीं रैमसे खरि पिचकारी गात।
कर लिये वसिया पुनि फेरि फेरि चितवत जात॥
ज्ञान गाढ़ ली रो पिया त्रिगुण दियो है सात।
शिव सन ब्रह्म हैन कह्यो है अवरक केतिक बात॥
एक ओर सुर नर मुनि ठाढ़े एक ओर अकेली आप।
दृष्टि परे वे काहु न छाड़ो करि लियो एकै बाप॥
जेते थे ते ते लियो घूंघुट माह समोय।
कज्जल वाकी रेख है अदगा गया न कोय॥
इन्द्र कृष्णा द्वारे खड़े लोचन ललचि नचाए।
कहहि कबीर ते उबरे जाहि न मोह समाए॥

२

आयो जग कानि हराम मन बोरा हो।
जाल शोक सन्ताप समझु मन बोरा हो॥
बिना नेमका बोघरा मनु बोरा हो।
विनु कह तिलका ईश समुझ मन बोरा हो॥
काल भूतको हसहि मन बोरा हो।
शिव रचो जगदीश समुझ मन बोरा हो॥
तन तन सो क्या गर्व सो मन बोरा हो।
भक्ति कीनि जाके सांझ समुझ मन बोरा हो॥
काम अन्ध जग वश परहु अङ्कुश सही हो
मन बोरा हो।
सीस मर्कट मुठी स्वादकी लीन्हो हो
मन बोरा हो॥
भूणा पासरि समुझु मन बोरा हो।
छूटनको संशय परी मन बोरा हो॥
घर घर मांगेहु हार समझु मन बोरा हो।
ऊंच नीच जाने नहीं मन बोरा हो॥
घर घर खायहु डाग समुझ मन बोरा हो।
जो सुगना ललनी गह्यो समुझु मन बोरा हो॥
ऐसी भर्म विचारि समुझु मन बोरा हो।
पढ़ि गुनिके क्या किएहु समुझु मन बोरा हो॥
अन्न बिलइया खाय समुझु मन बोरा हो।
न्हाने को तीरथ घना मन बोरा हो॥
पूजन को बहुदेव समुझु मन बोरा हो।
बिनु पानी नहू बहो मन बोरा हो॥
तुम टेकहु राम जहाज समुझु मन बोरा हो।
कहहि कबीर जग भर्मिया मन बोरा हो॥

धनाश्री—तिताला

हंसा सरवर शरीरमें रमैया राम।
जागत चोर घर मूसे रमैया राम॥
जो जागल सो जागल रमैया राम।
सोवत गयल बिगोए रमैया राम॥
आजु बसेरा नियरेया राम।
कालि बसेरा दुरियैया राम॥
वोरनै देसवा रमैया राम।
मैं न मरहु गैया राम॥
त्रास सघन दधि मथन को एह रमैया राम।
भवन मथे छटल भरि पूरि रमैया राम॥
फेरि के हंसा पाहुना भय सुर मैया राम।
बेधे त्रिपद निर्वाण रमैया राम॥
तो है हंसा मणि मानिक रमैया राम।

जस रे कियहु तस पायहु रमैया राम ॥
हमार दोष जनि देहु रमैया राम।
आगम काटि गमको लेहु रमैया राम ॥
सहज कियेहु व्यापार रमैया राम।
रामनाम धन वाणिज्य किएहु रमैया राम ॥
लादेहु वस्तु अमोल रमैया राम।
आगल दुनिया लादि चल रमैया राम ॥
नौ बहिया दश गोनि रमैया राम।
पाछल दुनिया आगि परे रमैया राम ॥
खाखरु डारेनि फेरि रमैया राम।
सिर धुनि हंसा उड़ि चले रमैया राम ॥
सरवर मीत जोहारि रमैया राम।
आगि जो लागी सरवर में रमैया राम ॥
सरवर जरि भये धूरि रमैया राम।
आगि जो लागी सरवर में रमैया राम ॥
कहहि कबीर सुनु सन्तो हो रमैया राम।
परखि न लेहु खरा खोटा रमैया राम ॥

२

वेलि भल सुमृत जहड़ायेहु रमैया राम।
वोके कियेहु विश्वास रमैया राम ॥
सो तोहे वन शूकर रमैया राम।
ओर कियेहु विश्वास रमैया राम ॥
इतो है वेद भागवत रमैया राम।
गुरु दिहल मोहि थापि रमैया राम ॥
गोबरकोट उपायेहु रमैया राम।
परिहरि जइहहु खेत रमैया राम ॥
बुद्धि बल तहां न पहुंचेहु रमैया राम।
खोज कहांके होइ रमैया राम ॥
से सुनि मन में धीरज भयल रमैया राम।
मन बढ़ि रहल लजाइ रमैया राम ॥
फेरि पाछे जो हेरहु रमैया राम।
काल भूत सब अहै रमैया राम ॥
कहहि कबीर सुन सन्तो हो रमैया राम।
आनि ठिगहु फैलाव रमैया राम ॥

अथ बिरहुली लिख्यते

आदि अन्त नहि होते बिरहुली।
नहि जरो पालव पेड़ बिरहुली ॥
निशि वासर नहि होते बिरहुली।
पौन पानि नहि मूल बिरहुली ॥
ब्रह्मादिक सनकादि बिरहुली।
कथि गे योग अपार बिरहुली ॥
मास असारे शीतल बिरहुली।
बोवनि सातो बोज बिरहुली ॥
नित गोड़े नित सीचे बिरहुली।
नित नव पल्लव पेड़ बिरहुली ॥
छिछिन बिरहुली छिछोन बिरहुली।
छिछिन रहल तीन लोक बिरहुली ॥
न रहल तीन लोक बिरहुली।
फूल एक भल फूलल बिरहुली ॥
फूलि रहल संसार बिरहुली।
से फूल बन्दहि सन्तजना बिरहुली ॥
बन्दि करा वर जाहि बिरहुली।
से फूल लूटहि सन्तजना बिरहुली ॥
डासिगे वैतर सांप बिरहुली।
विषहर मन्त्र न माने बिरहुली ॥
गारुड़ बोल अपार बिरहुली।
विषकी कियरिया बोयहु बिरहुली ॥
लोढ़त क्या पछताहु बिरहुली।
जन्म जन्म जमु अन्तरे बिरहुली ॥
फल एक कनहर डार बिरहुली।
कहहि कबीर सचपाइ हो बिरहुली ॥

अथ हिण्डोला

धनाश्री—तिताला

भर्म हिंडोलन भूले सब जग आए।
पाप पुण्य के खम्भ दो जामें राम रमाए ॥

लोभ मरुवा विषय भरा काम कीन्यो ठानि ।
शुभ अशुभ बनाय डाड़ो गह्यो दूनो पानि ॥
भूलते गुणी गन्धर्व मुनि भूलते सुरपति इन्द्र ।
भूलते नारद सारदा भूले व्यास फणीन्द्र ॥
भूलते विरिञ्चि महेश मुनि भूलते सूर्य चन्द ।
आपु निर्गुण सगुण होइ भूलिया गोविन्द ॥
छ चारि चउदह सात एकईस तीनि लोक बनाए ।
खानि वखानि खोजि देखहु अस्थिर कोइ न रहाए ॥
खण्ड ब्रह्माण्ड खोजि षट दर्शन छुटत कतहु नाहि ।
साधु सन्त विचारि देखहु जीव निस्तारे कहा जाहि ॥
शशि सूर्य रैनि शरद तहां तत्तु पल्लव नाहि ।
काल अकाल परले नहीं तहां सन्त विरले जाहि ॥
तहां के छुटे बहु काल बीते भूमि परी भुलाए ।
साधु सङ्गति खोजि देखहु बहुरि उठि समाए ॥
एरी भूलवे को भय नहीं जो सन्त होहि सुजान ।
कहे कबीर सन्त सुकृत मिले तौ बहुरि न भूले आन ॥

२

बहुविधि चित्र बनाय कै हरि रच्यो कोड़ी रास ।
जाहि न इच्छा भूलवेको ऐसी बहु केहि पास ॥
भूलत भूलत बहु कल्प बीते मन नहि छाड़े आस ।
रचो हिंडोला अहो निसु चारिहु युग चतुर मास ॥
कबहु के नीच ऊंच कबहु स्वर्ग भूमि ले जाए ।
अति भ्रमत भर्म हिंडोलना नेक नाहि ठहराए ॥
डरपत हौ याहि भूलवे को राखु यादव राए ।
कहहि कबीर गोपाल विनती शरण हरिजु अपाए ॥

३

लोभ मोहके खम्भ दोउ मन से रच्यो हिंडोरा ।
भूलत जीव जहान जहां लगि कतहु न
देखे थिति ठोरा ॥
चतुर भूले चतुराइया हो भूल हो राजा सेव ।
चांद सूर्य दोउ भूल हो उनहु न आआभेव ॥
लख चौरासी जीव भूलहो रवि सुत धरिया ध्यान ।
कोटि कल्प युग वितल अजहु न माने हारि अयान ॥

धरणी आकाश दोउ भूलहो भूलहो हो पवन नीर ।
देह धरे हरि भूलहो देखहि हंस कबीर ॥

अथ शब्द कहरा लिख्यते

सहज ध्यान देहु सहज ध्यान रहो गुरुके वचन
समाए हो ।
मेलि सिस्टो आरा चित राखहु रहहु
दृष्टि ले लाए हो ॥
जस दुख दोष सहहु एहि अवसर अस सुख
होइ हि पाए हो ।
जौ खुटकार बेगि नहि लागे हृदय नेवारहु आए हो ॥
मनु अहि काइ रह हु मन मारे खिझ आखी
भिझ बोले हो ।
मानु मीत मीतै बनि छोड़े कपट गांठि न
खोले हो ॥
भोग उपभोग भुगुति जिनि भूलहु ज्ञान युक्ति
तन साधहु हो ।
जौ एहि भांति करहु मतवालो तामत
किञ्चित् बाधहु हो ॥
नाहित ठाकुर है अति दारुण करि है चाल
कुचलिया हो ।
वाधि मारि डांडि सब लेइ है छूटिहि सब
मतवलिया हो ॥
जब हो शामत आनि पहुंचि है पोठि साठ भल
टूटी हो ।
ठाढे लोग कुटुम्ब सब देखहि कहे काहु के
न छूटो हो ॥
एकते निस्ति पाय परि विनवै विनती किये
न माने हो ।
अनचिह्न रहेहु कियेहु नहि चिह्नरे सो कैसे
पहिचाने हो ॥
ले रथ बोलाइ बात न पूछे कैवट गर्व तन बोले हो ।
जो करे हाथ संभल कछु नाहीं सो निदाव
में डोले हो ॥

जेन्ह सब युक्ति थगू मन के राखल धरेन्हि
कछु भरि डहरो हो।
जे करे हाथ पांव कछु नाही धरे लाग ते सहरो हो॥
पेलना आछत पेलि चलु बौरे तीर तीर
करोवहु हो।
उथले रहहु परहु जिनि हाथ हु के खोवहु हो॥
तर के धाम उपर के भूभरि छांह कतहु नहि
पायहु हो।
ऐसो जानि पसीजहु सीझहु कस न छपरिया
छायहु हो॥
जे कछु खेल कियेहु सो कयेहु बहुरि खेल
कस होई हो।
सासु ननद दुइ दिहै उलाटन रहहु लोज मुं ह
गोई हो॥
गुरु भौ ढील गोद भौ लचपच कहा न मानेहु
मोरा हो।
ताजी तुरकी कबहु न साधेहु चढ़े हकाके घोरा हो।
ताल झांझ भल बाजत आवे कहरा सब कोइ
नाचे हो।
जे रङ्ग दूलह ब्याहन आवे ते रङ्ग दुलहिनि राचे हो॥
नौका आछत खेवइ न जानेहु कैसे के लगवे
तीरा हो।
कहहि कबीर रामरस माते जोलहा दास
कबीरा हो॥

२

मत सुनु मानिक मत सुनु मानिक हिदया बने
बारह हो।
चटपट कोहरा करे कोहरैया चमरा गावन
बारह हो॥
निति उठि कोरिया बेठि भरथरो गोपी आगी नाचै हो।
निति उठि नौवा नाव चढ़त है बेरहु बेरा बाचै हो॥
राउर के कछु खबरि न जानेहु कैसे के झगरा
निबेरहु हो।
एक गांव में पांच तरुणि बसें ता में ढोठ निहेरहु हो॥
आपन आपन सन झगरा बरगासेन्हि पियसे
प्रीति नसावनि हो।
भइसिन्ह माहु रहत निति बकुला तकुला
ताकि लगावनि हो॥
गाइन माह बसेहु नहि कबहूं कैसे के पद
चिन्हवेवहु हो।
पंथी पंथ पूछि नहि लीन्हेहु मूढ़हि मूढ़ गंवेवहु हो॥
जन्तु इतिके घर हेरिन्ह ललचि कोइ इनके मन
दोरा हो।
इन कर जिनि दरर पसारहु तब पैवहु थित
ठोरा हो॥
प्रेम पान एक सत गुरु दोन्हा गाढ़ो तीर कमान हो।
दास कबीर कहे एइ कहरा रामहि माह समान हो॥

३

मूड़ मुड़ाय फूलि के बैठेहु मुद्रा पहिरि मजूसा हो।
ताहि उपर कछु छार लपेटे भितर भितर
घर मूसा हो॥
बरषत है गवें मे मथोसा मुक्ता मुहकारो हो।
मोहन जहां तहां ले जे है नहि पति रहो
तुमारो हो॥
मांझ मझरिया बसे जो जाने जन होइ सो
थोरा हो।
निर्भय भे तहां गुरुको नगरिया सुख सोवै दास
कबोरा हो॥

४

खेम कुशल औ सही सलामति कहहु कवन को
दोना हो।
आवत जात दुनो विधि लौटो सबे तंग हरि
लीना हो॥
सुर नर मुनि यतो पीर औलिया मीरा पैदा
कीन्हा हो।

कहं लग गणहु अनन्त कोटि लहि सकल
पयाना दीन्हा हो ॥
पानी पै न अकाश जाहिंगे चन्द्र जाहिंगे सूरा हो।
ए भी जाहिंगे वो भी जाहिंगे परत न काहु के
पूरा हो ॥
कुशल कहत कहत जग बिनसे सकल कालकी
फांसी हो।
कहै कबीर सारो दुनिया बिनसी रहल राम
अविनासी हो ॥

५

ऐसनि देहनि रावन बीरो मुए छुवे नहि कोई हो।
डंड़वा करोरवा तोरि लड़ाइन्हि जो कोटिन्ह
धन होइहि हो ॥
उर्द्ध निश्वासा उपयुत रासा हकरायन्हि परिवारा हो।
चन्दन चौर चतुर सब लेपे गले गजमुक्ता हारा हो ॥
कहहि कबीर सुनहु हो सन्तो ज्ञानहीन
मतिहीना हो।
एक एक दिन इहै गति सब के का राव का दीना हो॥

६

हो सबहि नमें हो सबहि नमें बिलग बिलग
बिलगाई हो।
ओढ़न मोरे एक पिछौरा लोग बोले एकताई हो॥
एक निरन्तर अन्तर नाही ज्यों जल घट
शशि झाई हो।
एक समान कोइ समुझत नाहीं जाते जरा
मरण भ्रम जाई हो॥
तामें बालक बूढ़ो नाहि न मोरे चेलकाई हो।
·नि दिवस तहवां मैं नाही नारि पुरुष
समताई हो॥
तिरविध रहो सबन में बरतो नाम मोर रमराई हो।
पठये न जाव आने नहि आवो सहज रही
दुनियाई हो॥

जोलहा तान बान नहि जाने फाटि
बिने दश ठाईं हो।
गुरु परताप जिनहि अस भाखो जन बिरले
सिधि पाई हो॥
अनन्त कोटि मन हीरा बेधो कोटको मोल नहि
खाई हो।
सुर मुनि जाके खोज परे है कछु कछु कबिरहि
पाई हो॥

७

नमदो गे ते बिषम सोहागिनी ते निदरे संसारागे।
आवत देखिय सङ्ग सु तोते औ खसमहु मारागे॥
मोरे बापके दुइ मेहरुवा मैं औ मोरि जेठानीगे।
जब हम अइलि रसिक जगमें तबहि बात
जग जानीगे॥
माय मोरि मरलि पिताके सङ्गे सर रचि
मरल संघातागे।
अपने मुई अवर ले मुई लोग कुटुम्ब सङ्ग सातागे॥
जो लगि श्वास रहै घट भीतर तो लगि कुशल
परिहैगे।
कहहि कबीर जब श्वास निसरिगे मन्दिर
अनल जरिहैगे॥

८

ई माया रघुनाथ को बौरी खेलन चली अहेरा हो।
चतुर चिकनिया चुनि मारो काहु न राख्यो नेरा हो॥
मौनी वो दिगम्बर मारो ध्यान धरन्ते योगी हो।
जङ्गल महके जङ्गम मारे माया किनहु न भोगी हो॥
वेद पढ़ंते पांड़े मारे पूजा करन्ते स्वामी हो।
अर्थ विचारत पण्डित मारो सकल शास्त्र परगामी हो॥
सोगी विनि वन धीमर मारो ब्रह्मा कविरा फोरा हो।
नाथ मछीन्द्रा चले खीटि देसि गलहु मयोरा हो॥
जा घटके घर करता धरे ता हरिभक्तनके चेरी हो।
कहहि कबीर सुनहु हो सन्तो ज्यों आवे
त्यों फेरी हो॥

९

राम नाम भजु राम नाम भजु चेति देखु मनमाही हो।
लछ करोरि जोरि धन गाड़ेहु चलत डुलावत
बाही हो॥
दादा बाबा औ परपाजा जिन्ह कर ई भुइ भाड़े हो।
अन्धरे भयेहु हियहु की फूटी तिन्ह काहे
सब छाड़े हो॥
ई संसार असारक धन्धा अन्तकाल कोइ नाही हो।
उपजत बिनसत बार न लागे जस बादर परछाही हो॥
नातो गोत अरु कुल कुटुम्ब सब इन्ह कर कवन
बड़ाई हो।
कहहि कबीर एक राम भजे बिनु बूड़ी सब
चतुराई हो॥

१०

राम नाम बिनु राम नाम बिनु मिथ्या
जन्म गंवायहु हो।
सेमर सेइ सुगा ज्यों पिंजड़े सून परे पछतायहु हो॥
जैसे मदपि गांठ अर्थ देइ घर हुके अकु गंवाई हो।
स्वादहि उदर भरै कहु कैसे ओसहि प्यास न जाई हो॥
गांठी रत्न मर्म जनि जाने पारख लीन्हो छोरी हो।
कहहि कबीर यह अवसर बीते रत्न न मिले
बहोरी हो॥

११

राम नाम की सेवा बौरा दूरि नाहि दुरि आशा हो।
और देव का पूजहु बौरे ई सब झोठी आशा हो॥
उपरके उजल कहा भे बौरे भीतर अजहु कारा हो।
तनके वृद्ध कहा भयो बौरे जो मन अजहु बारा हो॥
मुखके दांत कहा भयो मेरे अन्तर दांत
लोहे का हो।
फेरि फेरि चना चबाय विषय को का स्वाद
मद लोभी का हो॥
तनकी सकल संज्ञा घटि गयउ मन हो दिलासा
दूनी हो।
कहहि कबीर सुनहु हो सन्तो सकल सयानप
ऊनी हो॥

१२

बोढ़न मोरै राम नामके मैं रामहिके बनिजारे हो।
राम नामके करहु बनिजिया हरि मोरे हरुवाई हो॥
सहस्र नामके करो पसारा दिन बहोत गंवाई हो।
जाके देश मैं नव पांच सेरवा ताके होत चढ़ाई हो॥
सेर पसेरी पूरा करि ले पसंगा कतहु न जाई हो।
कहहि कबीर सुनहु हो सन्तो जोर चला जहड़ाई हो॥

बसन्त—धमार

ऐसो जात है दुर्लभ शरीर।
राम नाम भजु लागु तीर॥
गये वेणु बलि गये कंश।
दुर्योधन गये बूड़े वंश॥
पृथु गये पृथिवीके राउ।
तिल विक्रम गये रहे न काउ॥
सब चक्रवे गये मण्डलीक झारी।
अजहु हो नर देखु विचारी॥
हरि बत कश्यप जनक बालि तारा।
उन्ह सब छेकल यमको धारा॥
गोपीचन्द्र भल कोन्ह योग।
जैसे रावण मारो करत भोग॥
ऐसे जात देखिए सबको याम।
कहहि कबीर भजु राम नाम॥

२

सब मदमाते कोउ न जागु।
संगहि चोर घर मूसन लागु॥
योगी माते धरि योग ध्यान।
पण्डित माते पढ़े पुरान॥
तपसी माते तपके भेव।
सन्यासी माते करि हरि सेव॥
मोलना माते पढ़ि मुसाफ।
काजी माते हैं इनिसाफ॥
संसार माते मायाके धार।

राजा मातै करि भण्डार ॥
मातै सुखदेव ऊधव अक्रूर ।
हनुमन्त मातै लेइ लङ्गूर ॥
शिव मातै हरि चरण सेव ।
कवि मातै नामा जयदेव ॥
सत्य सत्य कहि अमृत वेद ।
जैसे रावण मारि बबरके भेद ॥
चञ्चल मनके अधम काम ।
कहहि कबीर भजु राम नाम ॥

३

हमार कहल केउ नहि पतियार ।
आपु बूड़े नर सलिल धार ॥
अन्ध कहै अन्धे पतिआय ।
जस विश्वाके लग ना जाय ॥
सो तो कहिये ऐसे अबूझ ।
खसम ठाढ़ ढिगा नहि सूझ ॥
आपन आप नचै चाहै मान ।
झूठ प्रपञ्च सांचके जान ॥
झूठा कबहि न करै काजु ।
मैं बरजी तोहि सुन निलाजु ॥
छाड़ पाखण्ड मानु बात ।
नाहित परहु यमके हात ॥
कहै कबीर नल कियेहु खोज ।
भटकि मुयल सब वनके रोज ॥

४

मैं आयो हरि मिलन तोहि ।
ऋतु वसन्त पहिराव मोहि ॥
लम्बी परी या पाई छीन ।
सुरा न खोटा है दो तीन ॥
सर लागी तेहि तीनि से साटि ।
कसनि बहत्तरि लागु ताटि ॥
खुब खुब खुब चले नारी ।
बैठि मोहिनी पलयी मारी ॥
अपर नाचे निकरत कोड़ ।
करि गह मह दुइ चाले गोड़ ॥
पांच पचीयो दशए द्वार ।
सखी पांच तहं रचे धमार ॥
रङ्ग विरङ्गी पहिरि चीर ।
हरिके चरण धै गावै कबीर ॥

५

तुम बूझो पण्डित कौन नारी ।
कोई न विवाह लहै कुमारी ॥
सब देवन्ह मिलि हरिहि दीन्ह ।
चारिउ युग हरि सङ्ग लीन्ह ॥
प्रथम हो पदमिनी रूप आय ।
है सापिनी जग ये दिखाय ॥
ई भरि युवती बावरि नाहि ।
अति रे तेज त्रिय रैनि ताहि ॥
कहहि कबीर चोज पियारी ।
अपने बल कब रहलि कुमारी ॥

६

बुढ़िया हसि बोले मैं नितहं बारि ।
मोहि सो तरुणी कहु कवनि नारि ॥
दांत गयल मोर पान खात ।
केश गयल मोर गङ्ग नहात ॥
नयन गये मोर काजर देत ।
वयस गयल पर पुरुष लेत ॥
जानत पुरुषवा मोर आहार ।
अनजाने के करों संहार ॥
कहै कबीर बुढ़िया आनन्द गाय ।
पुत्र भर्तारहि बैठी खाय ॥

७

करपल्लव कवल बैले नारि ।
पण्डित होइ सो लेइ विचारि ॥
कपड़ा न पहिरे है उघारि ।
गिर जोव से धन अति पियारि ॥

उलटि पलटिके बाजू तार ।
काहुहि मारे काहुहि उधार ॥
कहहिं कबीर दासनके दास ।
काहु सुख दे काहु उदास ॥

८

जाके बारह मास बसन्त होय ।
ताके परमारथ बूझो बिरला कोय ॥
बरिसे अग्नि अखण्डधार ।
हरिअर यौवन अठारह भार ॥
पानिय आदर धरे न लोय ।
मौन गहे काम मन धोय ॥
बिनु तरुवर फूले आकास ।
शिव विरञ्चि तहं लेहिं बास ॥
सनकादिक भूल भ्रमर होय ।
लख चौरासी जीव जग जोय ॥
जो तोहि सत गुर सत्य लखाव ।
ताते नहि छूटे चरखन भाव ॥
अमरलोक फल लावे चाय ।
कहहि कबीर बूझे सो खाय ॥

९

घरही में बाजं बढ़ो रारि ।
उठि बैठि लागी चपल नारि ॥
एक बाटी जाके पांच हाथ ।
पांच हुके पचीस साथ ॥
पचीस बतावे और और ।
और बतावे केक ठोर ॥
अन्तर मध्य अन्त लेइ ।
झिक झारि दे लाजि नहिं देइ ॥
आपन आपन चाहे भोग ।
कैसे कैसे के कुशल परि है योग ॥
विवेक विचार न करे कोय ।
सब खिलकत मा सदके, कोय ॥
सुख झारि हंसे राव रङ्क ।
ताते धरे न पाइ एको अङ्क ॥
नियरे नयो जी बतावे दूलि ।
चहु दिसि पाखलि रहलि फूलि ॥
लख घरेरो एक जीव ।
ताते पुकारे पीव पीव ॥
अबरिक बार जो होइ चुकाव ।
कहहि कबीर ताको पूरो दाव ॥

१०

शिव काशी कैसे भई तोहारि ।
अजहुं हो शिव देखु विचारि ॥
चोवा चन्दन अगर पान ।
घर घर अमृत होइ पुरान ॥
बहुविधि भवनन्ह लागु भोग ।
एसे नग्र कोलाहल करे लोग ॥
बहुविधि परजा लोग तोर ।
तेहि कारण जीव ढीठ मोर ॥
हमरे बालक के इहइ ज्ञान ।
तोहके हरि समझावे आन ॥
जे जाहि मनसे रहल आय ।
जीवन मरण कहु कहां समाय ॥
ताकर जो कछु होइ अकाज ।
तोहि दोष नहि संशय लाज ॥
हरि हर्षित सो कहल भेव ।
जहां हम तहां अवर न केव ॥
दिन चारि मन धरहु धीर ।
जस देखहि तस कहहि कबीर ॥

११

रसना पढ़ि बोले श्रीबसन्त ।
पुनि जे परबे यमके फन्द ॥
मेरु दण्ड पर दण्ड कीन्ह ।
अष्ट कमल पजार दीन्ह ॥
ब्रह्म अग्नि कियो प्रकास ।
अधः जहं तहां बहे बतास ॥

गौ मारी तहां परिमल गाव।
सखी पांच तहां देखन धाव॥
अनहद बाज रहल पूरि।
पुरुष बहत्तरि खेले धूरि॥
माया देखि कस रहेहु भूलि।
जस वनस्पति रहलि फूलि॥
कहै कबीर हरिदास के दास।
फगुवा मांगी बैकुण्ठ वास॥

१२

माइर मोर मनसा अति सुजान।
धान कूटि कूटि करो विहान॥
बड़री भोर उठि आगन वाट।
बड़री खाचि लई गोबर काट॥
वासी भात मनु सेलिह खखाय।
बड़े घइल लेइ पनियाके जाय॥
सर अपनो बांधे पाट पाट।
लेइ रे वेचो मैं हाट हाट॥
कहहि कबीर ई हरिके काज।
जोइया के ढिग रहि कहु कवन लाज॥

अथ साखी लिख्यते

पांच तत्तुका पूतरा मानुष धरिया नाव।
एक कलाके बीछुरे विकल भया सब गाव॥
पांच तत्तुका पूतरा जो विरचे मैं कौव।
मैं तोहि पूछो पण्डिता शब्द बड़ा को जीव॥
पांच तत्तु ले धातन सो तन कहि कहं दीन्ह।
कर्महिके वस जीव है कर्महि जीवके कीन्ह॥
पांच तत्तुके भीतरे जो प्रवस्तु अस्थान।
विरले मर्म को पाइयां गुरुके शब्द प्रमान॥
पांच तत्तुका खेल है ताकर करहु विचार।
कहै कबीर ई तत्तुके बूझि जीवका होइ उबार॥

२

रङ्ग हिते रङ्ग ऊपजे सब रङ्ग देखो एक।
कौन रङ्ग है जीव का ता कर करहु विवेक॥

सुनत खात चढ़ि आसन पोढ़े भरी खजूर।
जाके दिलमें हो बसो सैना लिए हजूर॥
शब्द हमरा आदिका पल पल राखो याद।
अन्त फलेगी माहली ऊपरकी बरबाद॥
जागत तरखो जीव है शब्द सोहगा सेत।
जरत बुन्द जल को कुम्ही कहै कबीर कोइ देख॥

३

शब्द हमारा आदिका शब्द हमारा जीव।
फल रहा न किता करो घोरिया बाधोव॥
शब्द हमारा तुम शब्दका सुनिए मति जाहु सरकि।
जो चाहहु निज तत्तु को तो शब्द लेहु परखि॥
शब्द विना स्रुति आधरी कहो कहां को जाय।
द्वारन पै वे शब्दका फिरि फिरि भटका खाय॥
शब्द शब्द बहु अन्तरे सार शब्द मत लीज।
कहहि कबीर जेहि सार शब्द महि
धूक् जीवन सो जीज॥

४

शब्द हि मारा गिरि परा शब्दहि छाड़ा राज।
जिन्ह यह शब्द विवेकिया ताकर सुधरा काज॥
पर्वत ऊपर हरि बसे घोरि चढ़ बसे गाव।
विना फल भंवरा रस चाहै कहु बरवा को नाव॥
गांव ऊंचे पहारपर औघटको है बाह।
कबीर ऐसा ठाकर साइयां ऊपरि गापको छाह॥

५

जेहो गये हैं पण्डिता तेहो गये अहीर।
ऊंची घाटी रामकी तेहि चढ़ि रहा कबीर॥
एक बार ते उतरि रहु संभल परो न साथ।
संभल घाटे खग थके जीव विराने हाथ॥
कबिरा का घर शिखर पर जहां सलह ली गयल।
पांव न टिकै पलका तहां पण्डित न लादो बयल॥

६

जहिया जन्म मुक्ति है होता तहिया होत न कोय।
छूटिति हारो हो जगतै कहां चला विगोय॥
विनु छाड़े जग छाड़िया सोरठ परिया छाड़।

बाट निहारी भोनिया गुरुते माटो खाड़ ॥
ई जग तो जहड़े गया भया योग नहि भोग ।
तिल भवि कबिरा ले गया तिलौ भारे खोग ॥
कबिरा आत पुकारिया चढ़ि चन्दनके डार ।
बाल सगाये ना लगे पुनि का लेत हमार ॥
चन्दन सर्प लपेटिया चन्दन काह कराय ।
रोम रोम विष भोनिया अंमृत कहा पियाय ॥
चन्दन वास निवारहं तुम कारण बन काति ।
जीवत जीव न मार हूं मूये सबै निपाति ॥
जिन्ह जिन्ह सुमिरन है किया ऐसो पूर पढ़ाय ।
भूलि परे दिन आयये सुमिरन कियो न जाय ॥
दुइई सुमिरन धारि ले आगे विषमी बाट ।
स्वर्ग बिसाहन सब चले जहं बनिया नहि हाट ॥
बहुत दिवस तेहि बीतिया सुभग समाधि अगाय ।
करहा डारा गाड़में दूरि परे पछताय ॥
वनते भागी बेहड़ो पर करहा अनजान ।
करहा देख न सो कहै को करहा को जान ॥
कबिरा भवन न भाजिया बहु विधि धरिया भेख ।
साईं के परिचय विना अन्तर रहिगो रेख ॥
तनमन परिचय सब नसे शून्य न मानो भाय ।
झिलमिल ज्योति अनाहदी विनसे कहां समाय ॥
झिल मिल झगरा झेलते बाकी छुटो न काहु ।
गोरख अटके कामपुर कौन कहावे साहु ॥
गोरख रसिया रामके मुए न जारे देह ।
मास गले माटो भई कौरे मांझे लेह ॥
काटे आम न मौलसी काटे छुटे न काम ।
गोरख पारस परस विन काहेका नुकसान ॥
जो जानहु जग जीवना ज्यों जीवहु त्यों जीव ।
पानी चाहहु आपना पनिया मांगिल पीव ॥
जो जानहु जो आपना तो कर जीव के सार ।
जियरा ऐसा पाहुना मिले न बारम्बार ॥
पनिया पियावत का फिरे घर घर हारहि हार ।
तृषावन्त जन होइ तो पीवेगा झक मार ॥
कह बढ़ियां बल आपहो छाड़ विरानी आस ।
जेहि अंगना नदिया बहै सो कस मरै पियास ॥
हृदया भीतर आरसी मुख देखो नहि जाय ।
मुख भी तब ही देखिये दिलका धोका जाय ॥
जो मुददा सम मोलमें सबको रूप समान ।
कह कबीर उस सावकी गति सब देखि भुलान ॥
देखि के भूकै लागन कुत्ता सुनिके भुके अवाजी ।
विन देखे विन सुने भूके सो कुत्ता है पाजी ॥
गहके टेक न छाड़िया चोंच जोभ जरि जाय ।
काहा तप्त अङ्गार है गये चकोर चबाय ॥
चकोर चन्द्रके भारोसे निगले तप्त अङ्गार ।
कहै कबीर डाढ़े नहीं ऐसो वस्तु खगार ॥

७

मलयागिरिके वास में बेधो ठाक परास ।
वेना कबहि न वाधिया युग युग रहते पास ॥
मलयागिरके वासमें वृक्ष रहे सब गोय ।
कहनेको चन्दन भया मलयागिरि नहि होय ॥
चलते चलते पगु थका नगर रहा नौ कोस ।
बीच हि मह डेरा परा कहहु कौनको दोस ॥
चलते चलते पगु थका अन्तर परिगो सांझ ।
बहुत रसिक खेला किया विखा रहि गो बांझ ॥
मन बोले कब जाइये चित्त कहै कब जाव ।
छयो मासके हीठते ज्य.ादा को सरगाव ॥
रहते भयो उदास जब भार खण्ड को जाय ।
चीरी ताको मारिया चिरई चुनि चुनि खाय ॥
राम नाम जिन्ह चीन्हिया झीनो पञ्जर तासु ।
नयनन आवे नीदरी अङ्गन जामे मासु ॥
जो जन भीजे रामरस मग्न होत मनमाह ।
ज्यों दर्पणको सुन्दरी गहे न आवे बांह ॥
जो जन भीजे रामरस विकसित कबहि न सूख ।
अनुभव भाव दरास तो नरको सुख न दूख ॥
पारसरूपो जीव है लोहरूप संसार ।
पारसते पारस भया परसि भया एक सार ॥

प्रेम पाटको चोलना पहिरि कबीरा नाचु।
पानिप दीन्हो तासु को तन मन बोले साचु॥
दर्पणकेरी गुफहमें सो नहिं पैठा धाय।
देखि जो प्रतिमा आपनो भूकि भूकि मरि जाय॥
ज्यों दर्पण प्रतिबिम्ब देखिये आप दुनइ मइ सोय।
ज्यों या तत्तु व तत्तु से आइ जाइ पुनि दोय॥
यौवन प्रायर बूझते रसिया ललच कराहि।
अब कबीर पायँ परे पन्थो आवे जाहि॥
एक समाने एक सम सकल समाने ताहि।
कबिरा सबे समान बूझते तहां दूसरो नाहि॥

८

देर रतौनो ताइ सब पदहि न चीन्हें कोय।
जिन्ह है शब्द विवेकिया छत्रधनी है सोय॥
सबही ते सांचा भला सन चासे भल होय।
सांच बिना है सुख नहीं कोटि करे जो कोय॥
सांचा भया तो क्या भया जो नहि सांचा जान।
सांच होइ सांचहि मिले सांचहि माइ समान॥
सच्चा सौदा कीजिये अपने दिलमें जान।
सांचेहि हीरा पाइए झूठहि मूरो हान॥
सांच बराबर तप नहीं झूठ बराबर पाप।
जाके दिलमें सांच है तहां बिराजत आप॥
सांचहि श्राप न लागही सांचहि काल न खाय।
सांचहि सांचहि जो चले ताको काह नसाय॥
जाते सांचा बनिया सांचो हाट लगाव।
अन्दर झाड़ू देइके बाहर कहा बहाव॥
सुकृत बचन माने नहीं आपु न करे विचार।
कहहि कबीर पुकारि के सपने गया संसार॥

९

आगि जो लागि समुद्रमें जरिगे दानव झारि।
पूर्ब पच्छिम के पण्डिता मुये बिचारि बिचारि॥
आगि जो लागि समुद्रमें धावत परगट होय।
सो जाने जो जरि मुवा को जाको लव होय॥
आगि जो लागि समुद्र में टूटि टूटि खसे झोल।
रोवे कबीरा डाफर्ड मोरा हीरा जरे अमोल॥

लाई लावन हारको जाको लाय पर लार।
बलिहारो लावनहारको छप्पर बचै घर जार॥
बुन्द जो परा समुद्र में ताहि जाने सब कोय।
समुद्र समाना बुन्द में बूझे बिरला कोय॥
जहर लोभो मेरो पिया अफोमचो सो बार।
कबीर पलक न ते तजे जामें जौन बिचार॥
बिरह बाण जेहि लागिया औषध लगे न ताहि।
सुसुकि सुसुकि मरि मरि जिये उठे कराहि कराहि॥
बिरह कियो दिल करि सपच सपच धुआं धुंधुआय।
दूध से तब हो बाचि हो जब सकल लोक जरि जाय॥
कहत कहहि कर प्रतिदिवस समय जो देखो देरि।
गये होत नहीं बाहुरे बहुरि न अइ हो फेरि॥
सांचा शब्द कबीरका हृदये देखु बिचारि।
चित्त देइ समझे नहीं मोहि कहत भयल युग चारि॥
दवको डाढ़ो लाकरो वो भो करे पुकार।
अब तो परेहु लोहार घर डाहै दूजो बार॥
जो तू चाहे मूझको छाड़ि देइ सब आस।
मूझे ऐसो होइ रहु सब कछु तोरे पास॥
कोटि तो काटे कोटि गढ़ि कोटिक दीन्हों आगि।
पण्डित पढ़ि गुनि झलि भए सो कत उबरे भागि॥
सावन के रा सेहरा बुन्द परा असमान।
सारो दुनो वैष्णव भई गुरु न लागे कान॥
दिन बुड़ाउ धूला नहीं इहै अंदेशा मोहि।
सलिल मेहके धारमें कस नींद परी है तोहि॥
बहता बहते हो मिले गहता मिला न कोय।
बहि जाने दे ऐसो कहता जो नहि गहता होय॥
साखो कहे गहे नहीं चालो चलो न जाय।
सलिल मोह नदिया बहे पांव कहां ठहराय॥
जहां गहको तहां हो नहो हो नह गहको नाहि।
बिना बेग्र भटकत फिरे देखि शब्दको छाहि॥

१०

जहं बोला तहं अक्षर आया।
जहां अक्षर तहं मन हि दृढ़ाया॥
बोल अबोल एक नहि होई।

जेन्ह ई बया सो विरला होई ॥
एक एक के निरवा रतनो बदवारो जाय ।
दुइ मुखका बोलना घना तमाचा खाय ॥
जिन्ह बन्दन देवहु बोलना नेवार ।
साखो वे सङ्ग करु गुरु मुख शब्द विचार ॥
प्राणो तौ जीभे डगा चण चण बोलै कुबोल ।
मनके घाले भरमत फिरे काल ही देत हिंडोल ॥
जाके जिवहा वदन नहि हृदया नाहीं सांच ।
ताके सङ्ग न लागे घाले खटिया मांच ॥
जो लगि भार शरीरमें तोर रह्यो है टूटि ।
युवक वौलु निकसे नहीं कोटि पाहन गे छूटि ॥
आगे सीटी साकरो पाछे चकनाचूर ।
परदा तरको सुन्दरो रह्यो धकासे दूर ॥
जो मारग सनकादि गे ब्रह्मा विष्णु महेश ।
सो मारग अब थाकिया मैं काहि करों उपदेश ॥
संसारी सब अविचारी कोइ विरह्यो कोइ योग ।
अवसर मारे जात है ते चेतु विराने लोग ॥
संशय सब जग धांधिया संशय धंधै न कोय ।
संशय धंधे सो जना जा शब्द विवेकी होय ॥
बोलना है बहु भांतिका नौ मन कछु उ न सूझ ।
कहै कबीर पुकारि के ते घटघट वाणी बूझ ॥
नकटा का यह राज है नफर कवरते तेक ।
सार शब्द टकसार कोइ हृदया करे विवेक ॥
मूल गहे ते काम है ते मति भर्म भुलाय ।
मन शायर सामुद्र है बहो कतहु मति जाय ॥
भौंरा भूले बागमें बहु फूलनको वास ।
ऐसे जीव बोलने विधिमें भ्रमहु चले निरास ॥
भौंर जाल बगजाल है बहुत विचार अचेत ।
कहहि कबीर ते बांचि है जाके हृदय विवेक ॥
तीनि लोक टोड़ी भये उड़े मनके साथ ।
हरि जन हरि जाने विना परे कालके हाथ ॥
नाना रङ्ग तरङ्ग है मन मकरन्द असूझ ।
कहहि कबीर पुकारिके ते अकोम कलाके बूझ ॥

११

बाजीगरका बांदरा सो जियरा मनके साथ ।
नाना नाच नचाइ के राखे अपने हाथ ॥
ई मन चञ्चल ई मन चोर ई मन सुध ठगहार ।
मन मन करते सुर नर मुनि जहड़े मनके लच दुआर ॥
राम वियोगी विकल तन इन दुखवे मति कोय ।
छूपत हो मरि जाहि गे ताला वेलो होय ॥
काल खरा शरीरमें सब जग पाय सिझारि ।
विरले जन कोइ बाचि है जो रामहि भजहि विचारि ॥
काल खड़ा शिर ऊपर तेरे जागु विराने मीत ।
जाको घर है गरेलमें सो कस सोवे निचीत ॥
कलौ काट काले घुना यल यल घुन खाय ।
काया मध्ये काल वसत है मोमन कोई पाय ॥
मनमायाको कोठरो तामें संशयका कोट ।
विषहर मन्त्र माने नहीं काल सर्पका चोट ॥
मन शायर मन साल हरि बूड़े बहुत अचेत ।
कहै कबीर ते बाचि है जाके हृदय माह विवेक ॥
शायर बुद्धीमान को वाय बिंक ना चोर ।
सारी दुनिया जहड़े गये कोइ न लागे ठोर ॥
मानुष होयके कोइ न मुवा मुवा सौदागर चोर ।
एका जीव ठोर नहि लागा भया सो हाथी घोर ॥
मानुष जन्म दुर्लभ है होहि न बारम्बार ।
पाका फल ज्यों गिरि परे बहुरि न लागे डार ॥
मानुष जन्म पाइ नर चूकहु अबके घात ।
जाय परेहु भव चक्रमें सहत घनेरो लात ॥
मानुष बेचारा क्या करे जाको शून्य शरीर ।
जो जीव झाकि न उबरे तो कहा पुकारे कबीर ॥
मानुष बेचारा क्या करे जाके हृदया माहो शून्य ।
सोहा चउक बैठाइ के फिरि फिरि चासे चून्य ॥
मानुष बेचारा क्या करे जाके कहे न खुले कपाट ।
सोनहो चौक बैठाइके फिरि फिरि ऐपन चाट ॥
मानुष ते बड़ पापिया अक्षुर हराइ न मान ।

बार बार बगळु कुन्हो गभो परे औधान ॥
मानुष का गुणे बड़ा मासु न आवे काज।
छाड़न अभरण होय तो चाम बाजने बाज ॥
रतन काजर न कद माटीका शृङ्गार।
आय कबीरा फिरि गया फोका है संसार ॥
हंसा मोल बिकानिया कञ्चन थार उराय।
जो जस मर्म न जाने सो तस काइ कराय ॥
हंसा ते सो वरण वरण का वरणो मैं तोहि।
तब करवा लोहे लहु तब सराहो तोहि ॥
हंसा तुम सबलता हटुको अपनो चार।
रङ्ग विरङ्गे रङ्गिया तुम कोन्हेहु अवर लगवार ॥
हंसाके घट भीतरे वसे सरोवर ताल।
हंस शरीरी ते जानिये वक उबरहिंगी काल ॥
हंसा सरवर तजि चले देहो परिगो सून।
कहहि कबीर पुकारि के तेइ दर तेई थून ॥

१२

काहे हरिणी दूबरी एहो हरियरि ताल।
लाख अहेरो एक मृग केतिक टारे भाल ॥
कुल करणीके कारणे हंसा गये बिगोय।
तब कवन कुल जोहै जब चारि चरणका होय ॥
जा सो दिल मिलिया नहीं शब्द न वेधो अङ्ग।
कहहि कबीर पुकारि के हंस बकुलका सङ्ग ॥
तीन लोक भे पींजरा पाप पुण्य भो जाल।
सकल जीव सावज भये एक अहेरो काल ॥
बेन्हा दीन्हो खेतको बेन्हा खेतहि खाय।
तीनि लोक संशय परो मैं काहि कहौं समुझाय ॥
बलिहारी वहि दूध की जामें निकसा घीव।
आधो साखि कबीरकी चारि वेदका जीव ॥
लोभे ज्ञान गवाइया पापि खाया पून।
आधा सो आधो कहै तापर मेरा खून ॥
आधी साखी सिर कटै जो निरुवारी जाय।
का पण्डित तेरी पोथिया जोरा दिन मिलि गाय ॥
बांह मरोरे जात है मैं सोवत लिया जगाय।
कहहि कबीर पुकारि के येहि पौढ़े होइ की जाय ॥

१६ ६

बेरा बांधेन्हि सर्वका भवसागर पतिमाइ।
छाड़ो तो बूड़े नहीं गाहित डासे बाइ ॥
हाथ कटोरा खोवा भरा मग जोहत दिन जाय।
कबीर उतरा चित्त ते छाछ दियो नहि खाय ॥
एक कहो तो एक नहि दुइ कहो तो गारि।
हो जैसा का तैसा कहहि कबीर पुकारि ॥
अमृत केरी मोटरी सिर सो धरी उतारि।
जाहि कहीं मैं एक सो कहे मोहि दुइ चारि ॥
अमृत केरी मोटरी बहु विधि दीन्हा छोरि।
आपु सरीखे जो मिले ताहि पियावो घोरि ॥
चारि चोर चोरी चले पगपनी उतारि।
चारो दर दूको हरो पण्डित करहु विचारि ॥
जाके मुनिवर तप करहि वेद थके गुण गाय।
सोइ देउ पिया पनो कोई नहि पतिआय ॥
एक ते अनन्त अनन्त एक ते होइ हाय।
परिचय भया एक ते तब अनेकहि माइ समाय ॥
एक शब्द गुरुदेवका तामें अनन्त विचार।
थाके मुनिवर ज्ञानी वेद न पावे पार ॥
घोगोड़ाके देखते व्याधा भागा जाय।
एक अचम्भो हो देखा मरा काल का खाय ॥
रावरके पिछवारे गावे चारो सेन।
जीव परा बहु लूटिमें ना कछु लेन न देन ॥
विषके बिरवे घर कियो रहा सर्प लपटाय।
ताते जियरहि डर भया जागत रैन बिहाय ॥
जो घर है सांपका तेहि घर साधु न होइ।
विमुख सकल समपदा विषहर लागा सोइ ॥
घुघुची भरिके बोये उपजु पसेरी आठ।
डेरा परा कालका सांझ सकारे जात ॥
मन भरि को बोये घुघुची घुघुची भरि नहि होय।
कहा हमार माना नहो अन्तहु चला बिगोय ॥

आपा तजिके हरि भजे नखसिख तजे विकार।
सब जीवन ते दुर रहे साधु मता है सार॥
मायाकी झक जग जरै कनक कामिनी लागि।
कह कबीर कस बाचि हो धुवां लपेटी आगि॥
पक्षापक्षी कारणे सकलो जगत भुलान।
निरपक्षी होइ हरि भजे सोई सन्त सुजान॥
बड़े गये बड़ आपने रोम रोम हङ्कार।
सतगुरुके परिचय विना चारो वरण चमार॥
माया जग सापिनि भई विखलिइ बइठी आहि।
सब जग फन्दे फन्दियां चले कबीरू काहि॥
सांप बिछीका मन्त्र है महुरो झारा जाय।
विकट नारि पाले परे काटि करेजा खाय॥
बीखर वैरी एक है व्याह करै मति कोय।
बांधे हो मरि जाहुगे मुक्ति कहांते होय॥
मन माया दोउ एक है माया मनहि समाय।
तीनि लोक संशय परी मैं केहि कहों विलगाय॥
मन मायाकी चोटमें मारा सकल जहान।
सुर नर मुनि सब हो खसे उबरे सन्त सुजान॥
फटो कानकी कामिनी मोतीको पतिआय।
झुमकि झुमकि लोहू पिये काटि कलेजा खाय॥
अति तिरिया किरपा करै देन कहै कछु और।
मूल पाव आगे धरै यही नरकका ठौर॥
पीपर एक महारङ्ग भान।
ताकर मर्म कोइ नहि जान॥
डार नवाय कोइ नहि खाय।
खसम अछत बहु पिपरि जाय॥
साहुसे भौ चोरवा चोरहुसे भौ असूझ।
तब जानहुगे जीयरा जब तुमह परैगो बूझ॥
ताको पूरो क्या परे गुरु न लिखाई पाट।
ताको बेड़ा बूड़ि है फिरि फिरि अवघट घाट॥
चारि मास घन बरिसता अति अपूर्व जलनीर।
पहिरे जब तन बखतरी झुभे न एको तीर॥
गुरुको भेलो जीव डर काया छीजनिहार।
कुमति कमाई जौ बसे लागि जुआको लार॥
तामसके हैं तीनि गुण भ्रमर लेहिं तहं वास।
एक डार तीनो फले भांटा ऊख कपास॥
लोगन केरो अथइया मति कोइ बैठे जाय।
एक खेत में चरत है बाघ गदहरा गाय॥
मन गयन्द मानै नहीं चला सुरतिके साथ।
महावत बेचारा क्या करै जो अङ्कुश नाहीं हाथ॥
मन मसनद गई अरहने मनसा भई सचान।
मन्त्रयन्त्र मानै नहीं उड़ि उड़ि लागो खान॥
ई माया है चूहड़ी औ चुहड़ाकी जोय।
बाप पूत अरुझावतो सङ्ग न काहुके होय॥
कनक कामिनी देखि कै तू मति भुलहु सुरङ्ग।
मिलन छुटन दोउ लगे ज्यों केंचुली भुजङ्ग॥
मायाके हैं वश परे ब्रह्मा विष्णु महेश।
नारद सारद सनक सनन्दन गौरी अवर गणेश॥
तन संशय विनसो नहीं काल अहेरो नोतु।
एकहि डङ्ग वसेरवा कुशल पुछहु का मोतु॥
साहु चोर चीन्हें नहीं अन्धा मतिका हीन।
पारख विना विनास है करि विचार हो भीन॥
साहु भरोसे चोरके चोर साहु है केइ।
जो लगि चोर बंधे नहीं तो लगि वस्तु न देइ॥
साह साज बतावई चोर बुझुब्‌जा देइ।
वस्तु बचावै आपना चोर कहांते लेइ॥
मूरख से का का करै शठसे काह बसाइ।
पाहन भार फुटे नहीं चोखा तीर नसाइ॥
गुरु सैकलि गढ़ करिल मन हाथ सुषुम्ना देइ।
शब्द लाञ्छना छोलिके चित दर्पण करि लेइ॥
मूरखके समुझावते ज्ञान गांठिका जाय।
कोइला होइ न ऊजरो केतको साबुन लाय॥
मूरख मूढ़ कमान खसि खपा तीर खरधाहि।
बाणनिहारा क्या करै जो वाण न लागे ताहि॥
जैसे गांसो गुमजको नीच ररै हहराय।
ऐसा हृदया मूर्खका शब्द नहीं ठहराय॥

सुगना सेमर सेइया दुइ ढेंठीको श्रास।
ढेंठी फाटि चमाकदा सुगना चला निरास॥
सुगना सेमर वेखिले तेरो घनी बिगुरची पांखि।
ऐसा सेमर सेइये जाके हृदया नाहीं आंखि॥
चक्की चलती हो देखा मेरे नयनन्ह आई रोय।
दुइ पट्टनके बीचमें सालिम गया न कोय॥
लोग भरोसे कोनके बइठि रहा श्ररगाय।
जियरहि ऐसे यम लुटै भेड़ा लुटै कसाय॥
जानि बूझि जड़ होइ रह बल तजि निर्बल होय।
कह कबीर तेहि सन्तका पला न पकरै कोय॥
हीरा सोइ सराहिए जो सहे घनकी चोट।
कुचट कुरङ्गी मानवा परिछत निकला खोट॥
हाड़ जरै जस लाकरो केश जरै जस घास।
कबिरा जारे राम रस कोठी जरै कपास॥
पावन्ह पुहुमी नापते दरिया करते फाल।
हाथ न परवत तालते तेहि धरि खायो काल॥
पूर्व उगे पश्चिम वसे भखे पवनका मूल।
ताहू राहु गरासतो मानुष काहे भूल॥
सन कागज छूवो नहीं कालम धरो नहि हात।
चारि युगका महातम कबीर मुखहि जनावे बात॥
अपने अपने पीरके सबहि न लीन्हो मानि।
हरिकी बात दुरन्त है परो न काहू जानि॥
अपरकी दाई गई हृदयको गई हेराइ।
जाके चार लोचन गये तासो काहा बसाइ॥
उपरेकी दोज गई हृदयको फूटि आंखि।
कबीर बेचारा क्या करै जीवहि नाहीं भाखि॥
मैं रोवो एहि जगत्को मो को रोवे न कोय।
मो को रोवे सो जना जो शब्द बिबेकी होय॥
साहेब साहेब सब कहै मोहि अंदेशा और।
साहेब से परिचय नहीं बैठहुगे केहि ठौर॥
गुरु पूरा शिष्य सूरा बाण् मरोरि न पैठि।
साहेब से परिचय कह तब एक दुलैचा बैठि॥
केतिक दिन एहु गये श्रनरूचेको नेह।
बोए ऊसर जमजे नहि जल बरिसे मेह॥
हरि हीरा जन जौहरी सबन पसारी हाट।
जब जन आयो पारखी तब हीरो देखो साट॥
हीरा तहां न खोलिए जहां कपटकी हाट।
बांधहु चुपको मोटरी लागहु अपने बाट॥
हीराकी बोरिया नहीं चन्दनको नहि पाति।
सिंहों का लेहड़ा नहीं साधु न चले जमाति॥
नौ मन दूध बटोरि के टपके किया बिनाश।
दूध फाटि कांजी भया भया घीवका नास॥
जिव बिनु जिव जीवे नहो जीवका जीव अहार।
जीव दया कै पालहू पण्डित करो बिचार॥
हो तौ सब होको कहो मेरो कहै न कोय।
मेरो तो सोई कहै जो मुझई ऐसा होय॥
हौ तौ सबहोको कहो मोको कोइ न जान।
तब भी अच्छा अब भी अच्छा युग युग होउ न आन॥
मै चितवो तेरे चित्तको ते चितवै कछु और।
लानत है तेहि चित्त को एक चित्त दुइ ठौर॥
जस दिल मेरा तुझे पर तस तेरा दिल होय।
काचा लोहा ताय के सन्धि ना लखै कोय॥
परगट कहो तो मारिया परदे लखै न कोय।
सहना छपा पुश्रालतर को कहि बैरो होय॥
कलि खोटा जग आंधरा शब्द न मानै कोय।
जाहि कहीं मैं आपनो सो उठि बैरो होय॥
कहहि कबीर हमार मन बहुत यत्न समुझाय।
बांड़ी पूंछि उठायके चलो बेन्ह को जाय॥
देश बिदेशी हौं फिरो मन हो भरा सुकाल।
जाके ढूंढत हौं फिरो ताके परा दुकाल॥
देश देश हम बागिया गांव गांव की खोर।
एकै जियरा ना मिला देखा फटकि पछोर॥
राह बेचारो क्या करै पन्थि न चलै संभारि।
अपनो मारग छोड़ि कै चलो उजारि उजारि॥
समुझेकी मति एक है जिन देखा सब ठौर।
कहै कबीर है बोचका बन्न कहि और का और॥

बोल हमारी पुरबको हमहि लखै नहि कोय।
हमहि लखै सोई जना धूर पुरबिया होय॥
जाके चलते खुद परा धरती होय बेहाल।
सो सावत घामें परा पण्डित करहु विचार॥
मूवा है मरि जाहुगे बिनु सर थोथे भाल।
परेहु कहां रे हृक्षतर आजु मरहु के काल॥
सबको उतपति धरति है सब जीवन्ह प्रतिपाल।
तिल तिल होती गाहई रही ठिकाके भाल॥
सब हो से लघुता भली लघुता से सब होय।
जस दुतियाके चन्द्रमा सिर नावै सब कोय॥
तौ लगि तारा जगमगै जो लगि उदय न सूर।
तौ लगि जीवहु कर्म बसि जब लगि ज्ञान न पूर॥
जहिया जनम न होत है धरती होत न नीर।
उतपति प्रलय न होत है तबकी कही कबीर॥
नाम न जानै गांवका भूला मारग जाय।
काल्हि गड़े गा काठ अगु मनहो कस न खोराय॥
तीनि लोक चोरी भई सरवस् सबका लीन्ह।
बिना मुण्डका चोरवा परा न काहुहि चीन्ह॥
सङ्गति से सुख ऊपजै सङ्गति से दुख होय।
कह कबीर तहं जाइए अपनी सङ्गति सोय॥
जैसी लागी पेड़की तैसी निबहै ओरि।
कउड़ी कउड़ि बटोरिके छुटै न लख करोरि॥
आजु काल्हि दिनके लिये अस्थिर नहीं शरीर।
केतिक दिन नर राखिहो काचे बासन नीर॥
पलमें परलय बीति है लोगन्ह लागु तमारि।
आगिल सोच नेवारहू करि पाछिलो गोहारि॥
बन्धा को बन्धा मिले छूटै कवन उपाय।
कर सेवा निरबन्धको पलमें लेत छोड़ाय॥
बहु बन्धनसे बांधिया एक बेचारा जीव।
की छूटै बल आपने या कि छोड़ावहि पीव॥
जिव जिन मारहु बापुरा सबका एकै प्रान।
तीरथ गए न बाचिहो कोटि हिरा दे दान॥
जिव जनि मारहु बापुरा सब घट एकै प्राण।
हत्या कबहु न छूटि है कोटिन्ह सुनो पुराण॥
तीरथ गये थे तीन जन चित चञ्चल मन चोर।
एकौ पाप कटा नहीं लादे दसमहस और॥
तीर्थ भई विष बेलरी रही युगहु युग छाय।
कबिर निर्मूल निकंदिया कवन हलाहल खाय॥
ए गुणवन्ती बेलरी तव गुण बरनि न जाय।
जहं काटै तहं हरियरी सींचेते कुम्हिलाय॥
आगे आगे दौ बरै पीछे हरिअरि होय।
बलिहारी वहि वृक्षको जर काटे फल चोय॥
बली कुटुम्बी निहफली फुलवा कुबुध बसाय।
बोर बिनष्टी तोमरी सरो पात करुआय॥
परदे पानी ढाढ़िया सन्ता करो विचार।
शरमा शरमी पचि मुवा काल घसीटै छार॥
अस्ति कहौ तो कोई न पतीजै बिना अस्तिका सेधा।
कहहि कबीर सुनहु हो सन्तो हीरे हीरा बेधा॥

१४

काजर केरी कोठरी बूड़त है संसार।
बलिहारी वहि पुरुषकी पइठि के निकरनिहार॥
काजर केरी कोठरी काजर हीकी कोट।
कारी तो दुनया भई रही ओटकी ओट॥
काजर केरी कोठरी पानी केरा गड़्ढ।
कह कबीर कैस बाचिहो पांच कुरङ्गो सङ्ग॥
अर्ब खर्ब ले द्रव्य है उदय अस्त ले राज।
भक्ति महातम ना तुलै ई सब कवने काज॥
मतृस्य बिसाने सब गए धीमरके दरबार।
अखियां रतनारी तेरो तै कस पहिरो जार॥
पानी भीतर घर किया सेजा किया पताल।
पासा परा करीमका त्यों मैं पहिरो जाल॥
मतृस्य भये ना बाचिहो धीमर तेरो काल।
जेहि जेहि डाबर तर तुम फिरो तेहि तेहि डारो जाल॥
बिनु रसरी गर जग बंधा ताकर बन्ध अलेख।
दीन्हो दर्पण हाथ में चश्म बिना क्या देख॥
समुझाए समुझै नहीं पर हथ हाथ बिकाय।

मैं खींचत हौं आप को वह चलि यमपुर जाय ॥
आप कहे ते मारिया झूठहि करे पियार।
हम सिर डारे टेकुरी सींचे अवरहि पार ॥
सज्जन ती दुर्जन भया सुनि काहुकी बोल।
कांसा तांबा हो रहा होत हिरा को मोल ॥
खोहा केरी नावरी पाहन केरा भार।
सिर पर विषकी मोटरी उतरा चाहै पार ॥
क्षण समीपी पाहुवा गले हैवारे जाय।
लोहेको पारस मिले काहे काई खाय ॥
नयनन आगे मन बसे पलक पलक कर दौर।
तीनि लोक मन भूप है मन पूजा सब ठौर ॥
मन स्वारथि है आपु रस विषम लहरि फहराय।
मनहि चलाए तन चले ताते सरवस जाय ॥
मनके धारे परहु जनि छाड़ि देहु बुधिवानि।
बहुत परोसिया बुड़ि मुए हम अपने दिल जानि ॥
ऐसी गति संसार की ज्यों गाड़र की ठाठ।
एक परा जेहि गाड़ में सभे गाड़ में जात ॥
मारग तो अति कठिन है तहं मति कोई जाय।
गए तहां नहि बाहुरे कुशल कहे को आय ॥
बेरा तब हि न चेपिया जब ढिग लागी बेर।
अबके चेपे क्या हुवा काटन्ह लीन्हां घेरि ॥
मारी मरे कुसङ्गके केरा साथ बयेर।
वैहाले वैचीर हू विधिमें सङ्ग निवेर ॥
सङ्गति कीजे साधुकी हरहि अवरको व्याधि।
ओछी सङ्गति नीचको आठो पहर उपाधि ॥
वस्तु अनत खोजत अनत क्यों करि आवे हाथ।
ज्ञानी सोई सराहिए पारख राखे साथ ॥
छः दर्शन मह एक बेचारा तासु नाम बनवारी।
कहहि कबीर ह खलक सयानी तामें हमहि घमारी ॥
लिखे सुने विचरे नहीं अन जानेका दोहा।
कह कबीर पारस परसे विन पाहन भीतर लोहा ॥

१५

जाके सतगुरु ना मिले व्याकुल दश दिशि धाव।
आंखि न सूझे बावरा जारे घूर बताव ॥
प्रथमहि एक जो हो किया भया सो बारह बान।
कसतक सबटिन टिका यो तर भया निदान ॥
जीवनि मरनि न जाने अन्ध भया सब जाय।
वादी हारे धावन पाये अब अब पछताय ॥
भक्ति बिगारि कबीर हम कंकर पत्थर धोय।
हृदयामें विष राखिके अमृत डारेन्हि खोय ॥
प्राण रतनकी कोठरी कुञ्चक दीन्हे ताल।
पारख आगे खोलिए कुञ्जी वचन रसाल ॥
सर्ग पातालके बीचमें दो तुमरी आवहि।
षट् दर्शन मह संशय परी लक्ष चौरासी सिधि ॥
दुर्मति को तू दूरि कह अच्छा अक्ष बनाव।
काक गमन बुधि दूरि करि हंस गमन चलि आव ॥
हारे तेरा रामजी मिलो कबीरा मोहि।
ते तो सबन मह मिलि रहा मैं न मिलावों तोहि ॥
जे ते पावन वनस्पति भी गङ्गाका रेनु।
पण्डित बेचारा क्या करे कबीर कहा मुख बैन ॥
हो बिलगाए ओरके बिगरो नहि कछु तोर।
जाव क्या करो जहां देखो तहां प्राण मोर ॥
भ्रम भक्षा तिहु लोक में भ्रम मक्षा सब ठांव।
कहहि कबीर पुकारि के तुम बसे भ्रमके गांव ॥
रत्न अड़ायन्हि रेतमें कङ्कर चुनि चुनि खाय।
कहहि कबीर पुकारिके अन्त चला पछताय ॥
हम जाना कुल हंस हो ताते कीना सङ्ग।
जो जनते बग बावरा छुवन न देते अङ्ग ॥
सतगुरु वचन सुनहु हो सन्तो मति लेहो सिरभार।
हौं हुजूर ठाढ़े कहत बहुत संभार संभार ॥

१६

सिंह अकेला बन रमे पल पल करता दौर।
जैसा बन है आपना तैसा बन है और ॥
विरह भुजङ्गम तन बसे मन्त्र न माने कोय।
राम वियोगी ना जिये जिये तो बौरा होय ॥
विरह भुजङ्गम पैठिके करे करेजे घाव।

साधु पङ्ग न मोरही ज्यों भावे त्यों खाव ॥
कह बन्दगी विवेकको भेष धरे सब कोय।
वह जाने दे बन्दगी शब्द विवेक न होय ॥
एक बाण हैगा मेरा मनका बाण छतीस।
एक बाण मेरा लगी सबे बाण हो फीस ॥
जो मीला सो गुरु मिला शिष्य मिला नहि कोय।
षट् लख छनवे सहस में एक जीव पर होय ॥
पैठा है सबके घट भीतर बैठा हैगा सचेत।
जब जैसी गति चाहिये तब तैसी मति देत ॥
जासो गोइ भीतर रहे सोइ जाने सब बात।
जानत हो अवगुण करे तो काहे कुशलात ॥
वाणीते पहिचानिए चोर साहुकी घाट।
अन्तर्गतकी करणि जो निकरे मुंहके बाट ॥
बूझे तो रीझे सदा समुझे तो हो सार।
देखु तमाशा ताहि को जो बन्धन ते पार ॥
अपनी कह मेरो सुने सुनि मिलि एकहि होय।
मेरे देखत जग गया ऐसा मिला न कोय ॥
जा वन सिंह न सञ्चरे पक्षी नहि उड़ि जाय।
सो वन कबिरा छण्डिया शून्य समाधि लगाय ॥
जो खोजत कस्पे विना घटही में सो मूल।
बाढ़े गर्व गुमानको ताते परि गइ भूल ॥
जाके खोजन जाइए सो तो हाल हजूर।
तालिब को है नौयरे बेतालिब के दूर ॥
एक बातकी बात है कोई कहै बनाय।
भारी परदा बीचका ताते लखी न जाय ॥
मुखसे मीठी जो कहै हृदये है मति आन।
कह कबीर तिन लोग सौ तैसेइ राम सयान ॥
जौ लगि तोला तोलसी तौ लगि बुधि व्यवहार।
तोला फूटा धन गया कोइ न ढोवे भार ॥
विरहिन साजो आरती दर्शन दीजे राम।
मूये दर्शन देहुगी आवैं कवने काम ॥
अहिर छुते जब सब छुते जिह्वा दांतकी ठोर।
मुक्ति परी बिललात है वृन्दावनकी खोर ॥
बाजन दे बाजन्दरो कलि कुकुरी मति छेम।
तुझे विरानी क्या परे ते आपनी निबेर ॥
मर जीवा अमृत पिवा का धसि मरसि पताल।
गुरुकी सेवा साधुकी सङ्गति को एहि हाल ॥
देखहु जिवके ढाढ़से धसि जरि पइठ पताल।
जीव अटक माने नहीं गहिरे निकरा लाल ॥
एक साध सब साधिये सब साधे एक जाय।
उलटो सींचे मूल को फूले फले अघाय ॥
यन्त्र बजावत होय ना टूटि पड़ा सब तार।
यन्त्र बिचारा क्या करे गया बजावनहार ॥
औरनके समुझाव को जिह्वा परिगो रेत।
राशि विरानो राखते खायो घरको खेत ॥
क्षण मनुया खिल खिल हंसे क्षण मनुया उठ रोय।
क्षण मनुया परि जर मरे क्षणहू चला बिगोय ॥
बोला एक अमोल है जो कोइ बोले जान।
हृदय तराजू तोलि के तब मुख बाहर आन ॥
कर्क करेजे गड़ि रहा वचन वृक्षके फांस।
निकलाए निकले नहीं रहा सो काहू गांस ॥
गुरु माथे पर राखिए चलिए आज्ञा माहि।
कह कबीर तेहि सन्तके तीनि लोक डर नाहि ॥
गुरु माथे से उतरा शब्द बेमुखा होय।
ताके काल घसोटि है राखि सके ना कोय ॥
विनु देखे वहि देशको बात कहे सो कूर।
आपुहि खारी खात है बेचत फिरे कपूर ॥
बलिहारी वहि चित्तकी परचित परखनहार।
साई दीन्हीं खांड़को खारी बोल गंवार ॥
सोना सज्जन साधु जन टूट जुटहि सौ बार।
दुर्जन सभा कोहार की एकहि धका दरार ॥
घाट भुलाना बाट विनु भेष भुलानो कानि।
जाकी माड़ी जगत्में सो न परा पहिचानि ॥
मरते मरते जग मुवा मरण न जाने कोय।
ऐसा हो कर नहिं मुवा बहुरि मरण नहिं होय ॥
मरते मरते जग मुवा मरण न कियो विचार।

एक सयानो आपनो परबस मुवा संसार ॥
माया तजके क्या भया जो मन तजो न जाय।
जी मन मुनिवर हैं छड़े सो मन सब ही खाय ॥
कितन मनावो पाव परि कितन मनावो रोय।
हिंदुवा देवता पूजता तुरक न काहू होय ॥
दादा भाई बाप के लेखो चरणन्ह होइ हो बन्दा।
एहि पुरिया जो मोहि चीन्हैं सो जन सदा अनन्दा ॥
धोखे धोखे बीतिया जन्मो गये सिराय।
स्थिति अपनो पकरो नहीं दुःख कहां प समाय ॥
जाके भरि घर आबरो कूप दुआरे आय।
जो कोइ निकलो चाहई परे कूपमह जाय ॥
इनको मासु न मेल हो कोटि कल्प का हीर।
जेहि मारग नग मिलत है कैसे तजे कबीर ॥
वह हो राजनि जानह्न जो लादत बनिजार।
ई हीरा है मुक्तिका खोये जात गंवार ॥
करना होइ सो करि न ले अबरा पहुंचो आय।
आगी लागी हारते तब कछु काटि न जाय ॥
बोई तो बोई सही ते क्या भया अयान।
वै निर्गुण गुणवन्त तू दोऊ एकै ग्यान ॥
शब्द संभारे बोलिए शब्दके हाथ न पांव।
एक शब्द कर औषधी एक शब्द कर घाव ॥
जैस कथन तैसा करण जस शुब्बक तस ग्यान।
कह कबीर शुब्बक विना क्या जीतै मैदान ॥

१७

सब वासो इक देशका वन चक लागो आय।
देखि शरत्को चांदनी परे भुलाय भुलाय ॥
भाल चाहहु तो चेतह्न आय लगो है नाव।
बार बार पछताहुगे बहुरि न ऐसो दाव ॥
अब बिछुरे कहं जाहुगे कहं रोपहुगे पांव।
शिर दे सनमुख लड़ि मरहु अब जनि परहु कुदांव ॥
गुरु मूरति गति चन्द्रमा सेवक नयन चकोर।
पलक पलक निरखत रहे गुर मूरतिको वोर ॥
गुरु समाने शिष्यमें निज कर लागा नेह।
बिलगायि बिलगै नहीं एक प्राण दुइ देह ॥
गुरु गुरुमें भेद है गुरु गुरुमें भाव।
सो गुरु हरदम बन्दिए शब्द बतावहि दाव ॥
सात पांच गुरु करि हो लोइ।
शब्द बतावै गुरु है सोइ ॥
हरि बिछुरे गुरु शरण है गुरु बिछुरे नहि ठौर।
रे अपराधी मानवा गुरुसे कहो न और ॥
गुरु कुम्हार शिष कुम्भसे गढ़ि गढ़ि काटहि खोट।
भीतर रखा प्रेम सो बाहर बाहर चोट ॥
गुणका गोफा हौं किया सादिक मिला न कोय।
योगी जङ्गम बहि मुवा भाव भक्ति नहिं होय ॥
गुरु तौ ऐसा चाहिए शिषसे कछू न लेइ।
शिष तौ ऐसा चाहिए गुरुको सर्वस देइ ॥
जाके दिलमें कपट नहि कपट न लागै ताहि।
जाके दिलमें कपट है कपटे कपटे खाहि ॥
साहब तो है सबहि का साहब का कोइ एक।
लाखन मध का देखिये कोटिन मध्ये टेक ॥
पूरा साहेब देखिए पूरा होवै आय।
पूराको पूरा मिलै पूरा परहि लखाय ॥
पूरा साहब सेइये सर्वस पूरा होय।
बकसे प्रीति लगाय के मूरहु आवै खोय ॥
क्षमा शील जब उपजै अलख दृष्टि तब होय।
बिना शील पहुंचे नहीं कोटि करै जो कोय ॥
शीलरत्न सबसे बड़ा सब रत्नको खानि।
तीन लोककी सम्पदा बसे शीलमह आनि ॥
गोधन अनधन गोपधन सबै रत्न धन खान।
जब आवै सन्तोष धन सब धन धूरि समान ॥
जहां पाप तहां आपदा जहां सोग तहं पाप।
जहां दया तहं दीनता जहां क्षमा तहं आप ॥
जहं अथाह तहं थाह न पावै।
जहां थाह तहं स्थिर न रहावै ॥
हहर अथाह थाह सबहि नमें दरिया लहरि समानो।
धीमर जाल नाह कह करि है मीन रहा होइ पानो ॥

साखी बल दर ठढ़ि परी बेबन चर युग चार ।
कबिरा रस नहिं होत है बरि न सके निरवार ॥
सुख देना दुख मेटना दूरि करण सब बाध ।
कह कबीर हम कब मिले प्रेमसनेही साध ॥

१८

सुखदायी सबमें रमे दुःख ना काहुहि देइ ।
अपने मतमें दृढ़ रहै साधु लक्षण तेइ ॥
सन्त न छोड़हि सन्तई कोटिक मिलहि असन्त ।
चन्दन सर्प लपेटिया शीतलता न तजन्त ॥
आजाके घर अजर है बेटाके शिर भार ।
तीन लोक नाती ठगो पण्डित करहु विचार ॥
साधू जगमें दुलभ है और मिले बहु भेख ।
नीर खीरते जानिए बकुला हंस परेख ॥
साधु तो सब हो भले अपनो अपनो ठौर ।
शब्द विवेकी पारखी ते माथेके मौर ॥
मन रङ्गी बड़ रङ्गिया रंगता रङ्ग कुरङ्ग ।
कह कबीर तब बाचि हो बसहु शब्दके सङ्ग ॥

१९

मन तो अमर होत है मारे नाहि मराय ।
ज्ञान रत्न कह शिला तब घसत घसत घसि जाय ॥
मन सब पर असवार है पैड़े करे अनेक ।
जो मन पर असवार है सो कोइ विरला एक ॥
मन पक्षी होइ उड़ि चले भ्रमंत फिरै अकास ।
वैकुण्ठो खाली परा साहब सेवक पास ॥
ई मन तो शीतल भया उपजा ब्रह्मज्ञान ।
जेहि भ्रम सुन्दर जग जरे सो अब उदक समान ॥
गोरी चढ़ी पहार पर रचिरचि करे सिंगार ।
पिय सुख बात न जबरै सभै सिंगार असार ॥
गोरी सब गुन आगरी कानन झलके बोर ।
कांटा लागा मैन का सालै सकल शरीर ॥
सब अहेरी एक मृग बहु डग पग्यो एक ।
अवसर बपुरा का करे दुर्जन बसे अनेक ॥
सङ्ग दोष लागी नहीं ज्ञान रत्नके साथ ।
बाजीगरको छोकरा खेले सर्पके साथ ॥
बसा बसा या जजरा अबर बसाता गाव ।
नहीं बसा नहिं जजरा भया बसेका नाव ॥
यावत तू है साथ हमारा ।
नाहीं बूझै बूझनहारा ॥
वाही में जो रहै रहावै ।
कह कबीर सो बहुरि न आवै ॥

२०

पक्षा पक्षीमें जग पचा ते नर मतिका हीन ।
ज्ञान पक्ष निर्पक्ष है सब पक्षनते भीन ॥
माया जाते मन धरा मन घर भया पतङ्ग ।
आपा खोया तुझ मिला तुझ मिल तेरो रङ्ग ॥
जबहि छरोला तन मलो तब नहिं व्यापा पोर ।
जानि जौहरी पगु दियो तब फाटो नग हीर ॥
सदा सर्वदा सोवता चारि अवस्था माहि ।
सतगुरु अञ्जन अञ्जिया लोचन ढपि ढपि जाहि ॥

बसन्त—धमार

नहीं छाड़ों बाबा राम नाम ।
मेरे और पढ़न से कौन काम ॥
प्रह्लाद पठाए पढ़न शाल ।
जाके सङ्ग सखा लिए बहुत बाल ॥
मोहो कहा रे पढ़ावे पाण्डे आलजाल ।
मेरी पाटीमें लिख दे श्रीगोपाल ॥
पाण्डेने मुरके कहो जाय ।
प्रह्लाद बुलायो वेग धाय ॥
राम नामकी छाड़ बान ।
तोही अब हो छुड़ावों मेरो कह्यो मान ॥
कहा डरावे मोहि बार बार ।
जिन जल खल गिरिको कियो प्रहार ॥
मार डार भावे देह जार ।
राजा रामजी छाड़ों तो मेरे गुरुके गार ॥
राजा खङ्ग काढ़ कोप्यो रिसाय ।
तेरो राखन हारो मोहि बताय ॥

खम्भ फारि प्रगटे मुरारि।
हिरनाकुश मारो नख विदारि॥
आदि पुरुष देवादिदेव।
जिन भक्त हेतु धारो नृसिंह भेव॥
कहै कबीर कोउ लहै न पार।
प्रह्लाद उबारो अनेक बार॥

चर्चरी—तिताला

बढ़ैया मोरा मीत आय।
चरखा दे हो बनाय॥
बाबा रे मोरा ब्याह कराय दे सुन्दर वर खोज लाव।
ज्यो खोजि ते वर नहीं मिले रे हमरा तुमरा न्याव॥
सास मेरे ससुरार मरे रे ब्याहा खसम मर जाय।
एक बढ़ैया ना मरे रे जिन चरखा दए है बनाय॥
पानी से पैदा किए रे नगर बसायो गाव।
एक अचरज हम देखा साधो बिटिया बाप लजाव॥
दास कबीर यह चरखा देखा चरखा लखा न जाय।
जो यह चरखा लखि परे रे आवागमन नशाय॥

ईमन-झंझोटी—तिताला

भज राम राम राम।
चरखा चलेगा सुदाम॥
मैं घर आई पोनी लाई अम्बर बात विचारी।
चरखा लेके चौकमें बैठी कातत हरिकी प्यारी॥
भाव भक्ति कर पुनी मरोरत सुचोकने रंग पोवन हारी।
ज्ञान ध्यान वाके मल आर राखा विरह ताते भननकारी॥
मन कर टिकी बात न करता चमरख ऐसी युक्ति लगाई।
इस चरखेमें पांच पाखुरी भ्रमर माल लिपटाई॥
ऊंचो सेरी लाल अटारी ता बिच बैठी कातनहारी।
सद्‌गुरुने मोहे कुञ्जी दीनी खुल गई ज्ञान किवारी॥
साहब कबीरका चरखा चाले आठ पहर एक तारी।
निराकार ध्वनि सूत कतत है लाग रहा झुनकारी॥

झंझोटी—पश्तो

गमे दूरी से जो जलता आशक आंखों से जारी है।
सजन सकारे जायेंगे नयन मरेंगे रोय।
विधिना ऐसी रैन कर भोर कभू नहि होय॥
कहां लों सोयें ए प्यारो सुबह रुख़सत हमारी है॥
साजन तुम मत जानियो तुम बिछुरे मोहि चैन।
डाढ़ो पवनकी लाकड़ी सुलगत है दिन रैन॥
तपे गम से जिगर तो जल चुका अब तन की बारी है।
एक तो नयना मद भरे दूजे अञ्जन सार।
ए बौरी कोइ देत है मतवारे हथियार॥
निगाहें यार जादू है या बूंदीकी कटारी है॥
अरे पपीहा बावरे आधी रात न कूक।
हौले हौले सुलगती तैं क्यों दीनी फूक॥
अरे ज़ालिम तेरी आवाज़ने आफ़त गुज़ारी है।
जा वेदा घर आपने तू क्या जाने सार।
आशक किम चङ्गे किए बिन देखे दीदार॥
मेरे इस दर्दकी दारूसे अफ़लातूं भी आरी है॥
कागा आंख निकास दूं पिया पास ले जाय।
पहले दर्श दिखायके पाछे लीजो खाय॥
जमाले यारसे कब आशक़ोंको आंख प्यारी है।
देह सूख पिञ्जर भयो रक्त रह्यो नहि मास।
बाला जियरा रह गयो याको कब लग आस॥
अजल ला दो खबर जल्दीसे हम पर मौत भारी है॥
हम तो योगी प्रेमके प्रेम हमारो वेश।
अङ्ग विभूति लगायके फिरते देश विदेश॥
न था मालूम क़िस्मत में हमारे खाकसारी है।
साजन वे दिन कौन थे जो सुख लाए प्रीति।
अब दुख दे न्यारे भए कौन ग्रामकी रीति॥
अरे बौरे मुरव्वत कुछ करो पर किरदगारी है।
मार छुरी मर जायिये छूट परे सब जार।
ऐसा मरना क्या भला दिनमें सौ सौ बार॥
कभी मरते कभी जीते यही हालत हमारी है।
आठ पहर चौसठ घटी खड़ी पुकारूं पीव।
जैसे खाल लोहार की सांस लेत बिन जीव॥
न मरते हैं न जीते हैं यही हालत हमारी है॥

काटौं चौंच पपीहरा ऊपर छिरकौं लोन।
पी मेरा मैं पीवको तू पी कह सो कौन॥
धरोहर तुम धरो जिससे कि उनकी यादगारी है॥

सोरठ—तिताला

पोथी तो खोल पांड़े मेरा साजन कब घर आवे।
कोई सई संदेसा ल्यावे कोइ मिठड़ी बात सुनावे॥
मेरा साजन कब घर आवे उनही सो मेरा चित है।
सुन सुन सज्जनकी बतियां मेरे पड़ी कलेजे कतियां
मोहे नींद न आवे सारी रतियां येही निगोड़ी रत है॥
दादुर मोर कोकिला बोले।
चपला चहु दिश डोले॥
दादूको दर्शन दीजे।
मेरा यही सन्देशा लीजे॥

२

कायामें कीरत कर ले तू मोटो दातार।
बसते सिरजिड़ा साहबाजी तू मोटो करतार॥
चौदह भवन पलमें गढ़े ते गढ़त न लागे बार।
थापेउ तापर तू धनी रे धन धन सिरजनहार॥
धरती अम्बर तें धरतीते पानी पवन अपार।
चन्द्र सूर्य दीपक रच्या रे रैन दिवस विस्तार॥
ब्रह्मा शङ्करते किया रे विष्णु लिया अवतार।
सुर नर साधु सिरजिया रे कर ले जीव विचार॥
आप निरञ्जन ह्वै रह्या रे काय मो कौतुकहार।
दादू निर्गुण गुण गहे हो जीवनको बलिहार॥

जङ्गला—तिताला

हरि तुम अपनि शरण माहि राखो।
गृध्र व्याध गज गणिका तारो वेद विमल
यश भाखो॥
तुम तजि और ठौर नहीं मेरे नित तेरे ही
दर्श अभिलाखो।
सागर आगर गुणके उजागर राग रङ्ग रस चाखो॥

———o———

इति श्रीकृष्णानन्द व्यासदेव कृत रागसागरोद्भव सङ्गीत
रागकल्पद्रुमे कबीरबीजकादि समाप्तः।

परिशिष्ट

राग—बिलावल

नागर नन्दकुमार मुरलीधर तनतानी।
गिरिवरके पहुते अचानक लइ राधिका सयानी।
ब्रजकुन्दरि जतननि मुदित करि नूपुर
कङ्कण वाणी।
कृष्णनदास मुसकानी मन्दगति अञ्चलहि
अञ्चल पयानी॥

२

तेरे तनको उपमाकों देख्यो मैं विचारि
के कोउ नाहि न भामिनी।
कहा बपुरो कञ्चन कदली कहा केहरि
गज कपोत कुम्भ पिक कहा चन्द्रमा और
कहां बपुरी दामिनी।
कहां कुरङ्ग शुक वन्धूक केकी कमल या आगे
औ देखियें सवनि कामिनी।
मोहन रसिक गिरिधरन कहत राधा परम
भावती तु है कृष्णनदास स्वामिनी॥

३

तोसों भोर सो कहूं रसिकें कह्यो सखोरी
तु करति मान।
इतनेहो को काहेकों रूसति गोवर्द्धनधारी
सुख निधान॥
मेरो कह्यो करि छाड़ि अटपटो सुनि रीत
आइ अपनों सयान।
कृष्णनदास स्वामी सों प्यारी न करि निदान॥

४

जो तो सो बात कही पीय तरे मन काहे
कों रिसानो।
प्राणनाथ सों कोप धारि सोइ अयानो॥
जा बिनु रह्यो न परे छिनु ता सों क्यों
रूसिये सयानी।
कृष्णनदास प्रभु गिरिधरन कहै सोइ कीजिये
ज्यो रहिये हृदे लपटानी॥

५

सुनि गोपाल एक व्रजसुन्दरि तुमहि मिलन कों
जोहति करति।
वार वार मोसो कहति रहति है है वाके
जीय बहुत अरति॥
तुमहि जपति रहति निशिवासर और बात
कछु जीय न धरति।
श्याम सरूप चहुंटि चित लाग्यो लोक लाज
तें नाहि डरति॥
हों तन मोन वाहि एको छिनु अति आतुर
चित विरह भरति।
कृष्णनदास प्रभु गोवर्द्धन धर तुम कारण
नव जोवन गरति॥

६

तेरे नैन चञ्चल वदनकमल पर जैसे
युगखञ्जन करत कलोल।
कुञ्चित अलक मनो रस लम्पट अलि
आये मधुपनिके टोल॥
कहा कहौं अङ्ग अङ्गकी शोभा खुटीन
परसत चारु कपोल।
कृष्णनदास प्रभु गोवर्द्धन धर देखत
बाढ़े मनोज अमोल॥

७

अखनकों खोले कञ्चुकी के कसना।
मनमु चहेव पिय झरि झरोखनि तब
अङ्गुठी दोनी बिच दमना॥

लज्जित तन कम्पित भे वीढीनामें
ओर वसना।
कुम्भनदास प्रभु गोवर्द्धनधर वहीं
लाल लये है हसना ॥

८

अञ्जन पीक कहुं कहुं लागी नैननि सगी
करति सब भ्रूटि।
मोहन लाल गोवर्द्धनधारी सबै सुभाभिनी
लियो है लूटि ॥
नेना रसमसे अधर ओर छवि चन्दन
गयी गातते छूक।
कुम्भनदास प्रभु सों मिली भामिनी
कहत न बनै सुख भइ मति मूक ॥

९

पिउ सङ्ग जागी वृषभानुदुलारी।
अङ्ग अङ्ग आलस से जंभाति अति कुम्भ
मदन ते भवन सिधारी ॥
मारग हात लिहो सखी औरन
कहिं सर्द्धाथ तन दसा बिसारी।
छीतस्वामिनी सों कहे भामिनी तोहि
मिले निसि गिरिवरधारी ॥

१०

राधा निसि हरिके संग जागी।
जमुना पुलिन सजल कुञ्जनमें पिया
अङ्ग मिलि मिलिके अनुरागी ॥
कुटिल अलक वगरी जु वदन पर दोउ
कपोल पीकनिसों पागी।
छीतस्वामिनी उमगि उमगिके गिरिधर
लाल उरनि सों लागी ॥

११

बालकृष्ण जागहु मेरे प्यारे।
बैठी सेज कहति है जननी वार वार
मुख कमल निहारे ॥
सुन्यो वचन माताको जब हो तनिक तनिक
दोउ नैन उघारे।
लिये उठाहि अङ्क भरि तबही उद मोदक
सों वदन पखारे ॥
माखन मिश्री और मलाइ औट्यो दूध
तुम लेहु दुलारे।
विविध भांति पकवान मिठाइ आनन
मेलि अपुनपो वारे ॥
मुख पसारि अंगुलि पहराइ सिर ऊपर
चौतनि जब धारे।
डोलत अजिर मुदित मनमोहन व्रज जन
ओट भई जु निहारे ॥

१२

गोद लिये जननी मुदित मन बालकृष्णको
करति सिङ्गार।
अंगुली लाल जरी पहराइ सिर कुल हो
धारति एक मार ॥
इमुना कण्ठ जड़ित नगमानिक अरु सोहत
मोतिनके हार।
बाजबन्द लाल भुज राजत जगमगात है
परम सुढार ॥
पहुंची हातनि गरम विराजत ताकी
शोभा को नहो पार।
मानो अहि सुतके फणि ऊपर मणि
अङ्गनमें व्रजपति देखि लजानो मार ॥

१३

बालकृष्णको जगमोहनको लायें गोद खिलावे।
सुन्दर मुखछवि निरखिके मनमें सब गावे ॥
चु चु करि चुम्बन करे बहुलाभ भावे।
कबहुंक अङ्गुरी लाइ कें फन्द चलन सिखावे ॥
घुटरुन चलत उताल सों मैया ढिग आवे।
ले उछङ्ग जननी तबे स्तन पान करावे ॥
पीत अंगुली पहराइकें तिर कुल बनावे।

कण्ठ कठुला हसुली चुनी कारधनी सुहावे ॥
घर घरतें नव गोपिका देखनको आवे ।
अजिर दौरि रिङ्गन करें ब्रजजन मन भावे ॥

१४

तात कहुं यो कहित कोलो सों ।
चारि कबे जिनि सुनि मन मोहन देवहुं
कारो कहि कहि मो सों ॥
सूरजवंश भयो नृप दशरथ तिनके
पुत्र भये है चारि ।
राम भरत लछमन शत्रुहन खेलत गृह
आंगनके द्वारि ॥
विश्वामित्र मखरक्षण करिकें मग तारा
गउतमकी नारि ।
मिथिला जाइ शिवधनुष तोरे तब
जनक सुता माला उर डारि ॥
वरि विवाह घरकों जब आए भरत
गए मातुलके धाम ।
नृप मन सोंधि कह्यो गुरु आग्यें हूं गहि
राज देहुं श्रीराम ॥
कैकइ वचन पिताकि आज्ञ चले
दण्डक तापस अनुहारि ।
लछमन सहित सतीवरनारी भोग
चलनि चाप कर धारि ॥
पञ्चवटी बिच रत वियके सङ्ग रावण
हरण कीहो तिहि काल ।
इतनो सुनत सूरके स्वामी चौंकि
कह्यो दे धनुष उताल ॥

१५

सुनि सुत एक कथा कहों प्यारी ।
कमल नयन मन आनन्द उपज्यो रसिक
शिरोमणि देइ हुंकारी ॥
नगर एक रमणीक अयोध्या बड़े बने
जहां अगम अटारी ।
बहुत गली पुर बीच विराजत भांति भांति
सब हाट बजारी ॥
तहां नृपति दशरथ रघुवंसी जाके
नारि नवलि सुखकारी ।
कौशिलया कैकइ सुमित्रा तिनके जनम
भये सुत चारी ॥
चारि पुत्र राजाके प्रकटे तिनमें
एक राम व्रतधारी ।
जनक धनुष पण कियो जानकी त्रिभुवन
के सब नृपति हंकारी ॥
राजा पुत्र देउ रिषि लाये सुनत
जनक जन तहं पगुधारी ।
धनुष तोरि मुख मोरि नृपतिको
जनक सुता तिन तब वरी नारी ॥
पट अङ्गुठा जब पोर नृपतिकें तब
कैकइ मुख मेलि निवारी ।
वचन मागि नृपति सों यह लीनो रघुपतिके
अभिषेक सभ्भारो ॥
तात वचन सुनि तमोराव जिनि भ्राता धरणि
सहित बनचारी ।
उनके जात पिता तनु त्यागो अति व्याकुल
करि जीव विसारी ॥
चित्रकूट गए भरत मिलन वन पग पांव रादि
करी लपारी ।
सुवति हेत कपट मृग मारो राजीवलोचन
गर्व प्रहारी ॥
रावण हरण कियो सीताको सुनि करुणामय
नींद निवारी ।
सूर श्याम तब रट्यो कोपको लछमन देहु
जननी भ्रम टारी ॥

१६

आजि निकुञ्ज मञ्जुमें खेलत नवल किशोर
नवलि किशोरी ।

अति अनुपम अनुराग परस्पर अति
अभूत भूतल पर जोरी ॥
विद्रुम स्फटिक विधि नियमित
धर नव पूर पराग लखोरी ।
कोमल किसलय मैंनसुपेसल पर
श्यामल निवासित गोरी ॥
मिथुन हास परिहास परायण पीक कपोल
कमल परजोरी ।
गौर श्याम भुज कलह मनोहर नारी
वन्दन मोहन तोरी
हार उर मुकर विलोकि अपनपो
विभ्रम विकल मानजुत भोरी ।
चिवुक सुचारु प्रलोइ प्रबोधित
परि प्रतिविम्ब जनाइ निहोरी ॥
नैंति नैंति वचनामृत सुनि सुनि ललितादि
देखति दुरि बोरी ।
हित हरिवंस करत कर धूनति प्रणय
कोप-मानावनि तोरी ॥

१७

अतिही अरुण तेरे नैन नलिनरी ।
आलसजुत इतरात रगमगे भए निशि
जागर अनिल मलिनरी ॥
शिथिल पलक में उठत गोलक गति विधि यों
मोहन मृग सकत चलनरी ।
हित हरिवंस हंसकल गामिनी सम्भ्रम देत
भारिन अलिनरी ॥

१८

बनी राधा मोहनकी जोरी ।
इन्द्रनील मनि श्याममनोहर श्वेत कुम्भ तन गोरी ॥
भाल विसाल तिल कुहरि कामिनी
चिकुर चन्द्रबिच रोरी ।
गज नायक प्रभुपाल संग्रहनि गति
वृषभानु किशोरी ॥

नीलनिचोल जुवति मोहन पट पीत
अरुण सिरमोरी ।
हित हरिवंस रसिक राधापति सुरति
रङ्ग में बोरी ॥

बिलावल—चर्चरी

आजु नागर किसोर भारती विचित्र
जोर कहा कहुं अङ्ग अङ्ग परम माधुरी ।
करत केलि कण्ठ मेलि बाहु दण्ड गण्डमण्ड परसि
सरस वाद्य हास्य मञ्जुलो जुरी ॥
श्यामसुन्दरी विहार बांसुरी मृदङ्गतार
मधुर घोष नूपुर किङ्किणी चुरी ।
देखत हरिवंस आलि निर्गुणी सुधाङ्गलि
वारि फेरि देत प्राण देह सौं दुरी ॥

२

मञ्जुल कलकुञ्ज देश राधाहरि विसद वेस
राका लसत कुमुद बन्धु सरस सद यामिनी ।
सांवल दुति कनक अङ्ग धरे तनिनि एक सङ्ग
नीरद मणि नीलमध्य लसति दामिनी ॥
अरुण पीत नव दुकूल अनुपम अनुराग मूल
सौरभ जुत सीत अनिल मन्दगामिनी ।
किसलय दल रचित सेन बोलत पिया चाटु बैन
मान सहित गति पद अनुकूल कामिनी ॥
मोहनमन मथन मार वरसतु चली निहार
वेकुजुत नैति नैति वदत भामिनी ।
नर वाहन प्रभु सुकेलि विधिभर भरति बेलि
सुरति रसरूप नदी गजगत गामिनी ॥

३

सुनहि राधिके सुजान तेरे हित सुखनिधान
रास रचो श्यामतट कलिन्दनन्दिनी ।
नृत्यति जुवती समूह रागरङ्ग अति कतूह
वागुरम मूल मूलिका अनन्दिनी ॥
वंसीवट निकट जहां परम रमण भूमि तहां
सकल सुखद वहै मलय वायु मन्दिनी ।

जातोकुन्द विकास कानन चतिसे सुवास
राका शशि सरद मास विमल चांदिनो ॥
नरवाहन प्रभु निहारि लोचन भरिमें नारि
नख सिख सौन्दर्यकाम दुख निकन्दिनी ।
विभ्रमय भुज ग्रीव मेलि भामिनी सुखसिन्धु झेलि
नव निकुञ्ज श्याम केलि जगत वन्दिनी ॥

४

निरखि आंखि विमुख नैन सिरा वसति
विपरीत भात ।
श्यामल पर शोभित गोरिजात ॥
कटमें झटपट में पट चरझे उर मह नव उरजात ।
मुखमें अधर बाहुनिमें सुदृढ़ वन्दे वलिजात ॥
चन्द्रवदन सानन्दकिशोर चकोर पियतन अघात ।
व्यास स्वामिनी पियसङ्ग विरहति
मानसी सदै बाल ॥

५

श्यामसुन्दरी कहां अति कोमल परम किशोर ।
सुनि सुकुमारी महा अति कठिन कुटिल
नखसिख अङ्ग तोर ॥
कहां कपोल मृदुल मञ्जुल अति
कहां तव नख रसकोर ।
कहां कोवोर जलधर सम कहा दसन
अन्धारे घोर ॥
कहां कुंवर को सदय हृदय कहां तव कुच पीन
कठोर ।
कहां निराग सनाहु कहां दृढ़ वाहनि वन्धन जोर ॥
कहां दीन आधीन कहां तव वङ्क चितवनि
चितचार ।
व्यास स्वामिनी रसिक प्रीत के नाते
कह्यो सुखोग ॥

६

ठाढे दोउ कुञ्जमहलके द्वार ।
राधा मोहन मोहि लागत है तुं देखियो उन
कु नैन भरि मोहित आसु सुतार ॥
अति आतुर तोहि तन चितवत इकटक पलक
लगत नहि लोचन मीन सरी ज्यों गार ।
व्यास स्वामिनी चितवत ही चुम्बन लखित
विहसि उरसि पीर लइ विहरत राधा रङ्गधार ॥

७

मोहनकी देखो उलटी रचौरी ।
नैन नीरसर बूड़त हुतें विरह दहनतें जरत बचौरी ॥
भइ श्याम तें पीन धरनि दृहि तरणी
प्रताप तटौरी ।
हे राधे रव श्रवण सुनत तुं अजहुं न
निठुर लटौरी ॥
चन्दनचन्द पर पवन पानु करि दुख की
राशि रटौरी ।
तो विन चनत न शरण मीत कहु भीत
समा विरटौरी ॥
इतनेइ सुनि उरि चलि अमी सङ्ग अङ्ग
सुगन्ध गथठौरी ।
व्यास स्वामिनी रतिरस वरषत सुख मैं
को चमटोरी ॥

८

ऐसी कुंवरि कहां पिय पाई ।
राधा हुते नख सिख सुन्दरि अबलौं कहां दुराई ॥
काकी नारी कौनकी बेटी कौन गांउते आई ।
सुनी न देखि व्रज वृन्दावन सुधि बुधि
हरति पराई ॥
याकी सुभग सुहाग भाग अभिलाष जु
अभिसन भाई ।
याहीके रस वस ह्वै तुम वृषभानसुता विसराई ॥
यह विनोद सुनि देखन आइ अङ्ग कि कण्ठ
लपटाई ।
व्यास स्वामिनी विहसि मिलित हांस रस
सुधङ्ग नचाई ॥

९

काहन न पै है कोउ बात।
श्याम कामवश गोजर ह्वै गये राधाके से गात॥
जे सोइ ध्यानु धरो ते सोइ भए अधर गण्ड
उरजात।
नख सिख अङ्ग अनङ्ग मोहियत देखत
नैन सिरात॥
बहु गुण रूप न तोहु मै सखि फूल भरत
मुसकात।
गज मराल गत निरखत मोहै रति
मनसिज कुंघात॥
अपनी जोरि हि भेंव्यो याइतें ललितादि
को बलिजात।
तैंही रसमें विरसु कियो अब
कौन काज पछितात॥
कण्ठ बाहु धरि चलो अनीकें सुनि
अभूत अनकात।
व्यासस्वामिनी परसत मोदन
धरणि गिरे लपटात॥

१०

सैनन बिसरे चेंलगि भोर।
वैन याते कासों पिया हियतें विहसत
कत हि किसोर॥
दुख मेंटत भेटत तुको नहिं चुम्बन देयो न ओर।
काहि देयो जोवन धन कर गहि ले कुचकोर॥
माके पाइ गयो मरे प्यारे कासों करत निहोर।
को नहि विकल किये नवनागर तुम
पनिहां तुम चोर॥
निजु विहार आरोपि आनपर कोपि मान गढ़ तोर।
व्यासस्वामिनी विहसि मचाइ सुरति समुद्र हिलोर॥

११

सन्देशो कह्यो दूतिका आनि।
अनबोले सब अङ्ग दिखाइ नागरि ले है जानि।
वदन प्रसारि तामें नीबू निचोयो सिर ऊपर
धरि पानि।
कानकु काइ नाइ हंसि ना ज्यो धरनि
गिरि मुरझानि॥
पुलकित कंपित खेद भेदतन अंसुवनि
आप चुचानि।
शीतल जल भरि कमल उरहि धरि
फारति पटु दुख दानि।
वनमाला तोरत कर मोरत पाइ परत मुसक्यानि।
शीतलजल भरि कमल उरहि धरि कदलि
खंभ लपटानि॥
व्योरो विपदा सुनि सुनि व्रतेजि छाड़ि
जीयकि वानि।
रामदासिकें समुझि विनोदनि कुंवरि
जिवायों आनि॥

१२

ए हरि मोसों न बिगारनकी तोसो न संवारनको
मोहि तोहि परो छोड़।
कौन धौं जीतै कौन धौं हारै परी बदि न छोड़॥
तुम माया बाजी पसारी विविध मोहों
मन मोको भूलगा कोड।
कहि हरिदास हम जीते हारे तुम तउ न तोड॥

१३

प्रिया पियके उठवे को छवि वरणो न जाइ
सबतें न्यारे।
मानो घोसरे निइ कटोरे होवन भये न्यारे॥
बार लटपटे मानो भौंर यूथ लरत परस्पर
कमलदलनि पर खञ्जरीट शाभा न्यारे।
हरिदासके स्वामी श्यामा कुञ्जविहारी पर
कोटि कोटि अनङ्ग कोटि ब्रह्माण्ड वारि डारे॥

१४

जगाइरी भइ वेर बड़ी।
अबवेली खेलो प्रियकें सङ्ग अलक है कल लाडलड़ो॥

तरनि किरनि चमकनि ह्वै आइल गोनिवा आनि
मुकर परत वहीही ह्वै रही अड़ी।
बिहारीदास रति की बरनै कवि जो छवि
मो मन मांझ गड़ी॥

१५

जिनि जगावै जुगल नवल निजु नेह सुख।
जागे यामिनि मैन नैननि भीर वन प्राण जीवनी
मेरे मनभावन दमन दुख॥
अमित अमित विहार मूरत सुखद कुमार
ये सकुमार तन मनहि दिये लिये रहे रख।
ओवर विहरनिदासि लोक लोचन निरखि
सुखराशि हंसि मिलत सुन्दर सुमुख॥

१६

जागो सनेह अर्थोमत मानै।
झगरत जुरत किशोर किशोरी बरजोर
मेलत तउ न मानै॥
ओटि समेटि वसन सम्भम निषि पलटि
नेवि पाइयानै।
बिहारी सामी दम्पति को सुखनिरखत
सखी वारति अपने प्रानै॥

१७

कुञ्ज मैंन रस ऐन प्रिया पिया बनैं है विचित्र
बरबागे।
चन्दनवन्दन विविधि मन रञ्जन अञ्जन वेश
छवि मानों चित्र सों किये सुतन अङ्ग
अनङ्ग नि दागे॥
अपने अपने रस आनन्द विरस भये आलस
विनु अनुरागे।
बिहारनिदासि गह्यो भागी ओरनिके कत्र
पुनि हंसि हंसि हंसि उर लागे॥

१८

या हंसि हंसि कहत है बात सुनति न बात
निपुन पढात।
सोमन कुरनिसों मुखमूंदि राखत श्रवणनि
तन जात॥
वचन रचन बलवलानि पुलकित सम्भत।
बिहारनिदासिके नैननिमें सुखमें ललि लटपटात॥

१९

आजु को छवि अङ्ग अङ्ग रही फवि ऐसी
मति कोनको कैं बरनै कवि।
उपल अहि न काहि बताउं गाउं हूं
सुनि जांहि सबै दवि॥
हंसत खेलत मिलत सकल निमागत झपटि
चलत पगु धरत भुवि।
बिहारनिदासी सङ्गम सुख सुरति देखियो देखि
आनन्द उदै रवि॥

२०

सांवलो मनहरण मनोहर।
वचन रचन रुचिर ह्वै जुरि कुञ्ज कुटीतन
मगन प्रेमभर॥
अङ्ग अङ्ग आलिङ्गन चुम्बन हंसत रसात
सहज सुन्दर वर।
बिहारीदासी दुलरावति गावति जु नव किसोरी
सुजन सर्वोपरि॥

२१

तूं मनमोहनीरो मोहन मोहेरो अङ्ग अङ्ग।
अगमनो अलके झलके वर उरपर छूटी लट मुख
हसत लसत दसनावलि सहज भ्रकुटी भङ्ग॥
मृग मधुपलों श्याम कांम सब सजी अलवेली
धाम सौरभ सुर सवद सुनत फिरत सङ्ग सङ्ग।
रहसि फिर चितयो हितसो मनि आनि उर
अङ्ग रङ्ग अनङ्ग॥

२२

मुदित मोहन सङ्ग मोहनको मनमोहनो तू
मोह्योरी मोहन।
जदपि रहत हसत खेलत अङ्ग सङ्ग निशिदिन
छिनु न तजि सकत मोहन॥

अभूत रीति जीति पिया उपम नव चक्र किये
कहति तुमसों सखी कर पदपर आयोजन।
बिहारीदासीकी स्वामिनी सुनि ह्वै मौन
* चिते मुसिकाति पत्याति न मोहन ॥

२३

मोहन नील रसाल सों मोहिल अल कौन
हु बोल्यो भावै।
जब कबहुं हौं रहों मौन वे हांस
मन मोद बढ़ावैं॥
तान अतीत अनागत अङ्ग सङ्ग मिलि मधुर
सुर गावै।
बिहारीदासी स्वामिनीके रस रसिक रसहो में
रस उपजावै॥

२४

बिहारि निहारि लोहो लागत सकल सुख-
हिनिकी दानि।
चितवन चित पोषति तोषति तन मन
मनसा रस सानि॥
दरस रूप रस हास परसपर विचित्र तिहारी बानि।
धन्य जनम मानत अनुरागी जरभर लागत आनि॥
बिहरत वन रति मानिनि सङ्गर बिदारि
कामको सानि।
बिहारी दासी लता बनि छिन छिन
नहीं ये को जानि॥

२५

मेरी स्वामिनी प्रसन्नवदन सांवरो सुखराशि।
इनहि लड़ाउं अनुदिन छिनछिन लहीं साबासि॥
फूली फूली टहल करों मनके मनोन हुलासि।
अनन्य श्रीहरिदासि विपुल वर्नविहारनि दासि॥

२६

सांवरो नवरङ्ग।
ते गौरीतन घन दामिनी दुति कुंवरी किशोरी
गोरीको सङ्ग॥

इनहिं रसरसिक उपासित खातहिया बिकलौं
जल आवत लगत नङ्ग।
बिहारनि दासी अनन्य भजन विनु साधन
ध्यान करत न कछु ढङ्ग॥

२७

प्रिया श्याम सङ्ग जागी है।
शोभित कनक कपोल उनै पर दसन छाप छवि
लागी है॥
अधरनि रङ्ग छुटो अलकावलि सुरतरङ्ग अनुरागी है।
विठल विपुल कुञ्जकी क्रीड़ा कामकेलिरस पागी है॥

२८

रसिक रसीली भांति छबिली नैन रङ्गीली तूं
पियपैतें आई।
अलक कचुकी छुटी पाट व्यारि चूरी फूटी
आलस मदन लटी लैति जम्हाई।
डगमगचरण धरति मालो पिया आंकों भरति
चित चित नहि टरति वहि छरिमें लुभाई॥
श्रीविठल वेष उरवसी नखदेख रजनीके जीवशोच
जामिमें पाई॥

२९

श्यामा चलहु लड़ैती प्रिया कुञ्जनिकरहु केलि।
श्याम तमाल लाल नव किशोरी बाल तुम स्वज
नवल नव कनकको वेलि॥
विविध कुसुम घन रचित श्रीवृन्दावन बोलत
सुहाये पिकमधुप रहेहैं झेलि।
विठल विपुल रस बिहारी तिहारे बल जमुनाके
तीर सुखविलास खेलि॥

३०

आवत नारि लो लालफूले।
कुञ्जकेलि नवरङ्ग बिहारी सुरतहि डोरे झूले॥
निशि जागी अलसात रसमगी पट पलटे गति भूले।
विठल विपुल पुलक ललितादिक दिन देखत
हुमझूले॥

२१

सुनहु रसिक वृन्दावनको यश ।
कुञ्जकेलि मानिनी मनोहर परवस भए
नाहि न अपने वश ॥
इहि वन नितु नवीन युगलवर द्रुमदल नितु
श्रवत ललिताकस ।
विठल विपुल विनोद विहारीको गुणकियो
चाहति रसना रस ॥

२२

सुन्दर श्यामसुन्दर वहु लीला
सुन्दर बोलत वचन रसाल ।
सुन्दर चारु कपोल अति सुन्दर उरज वनी
सुन्दर वनमाल ॥
सुन्दर चरण सुन्दर है नखमणि सुन्दर कुण्डल
हेमजराल ।
सुन्दर मोहन नैन चपल किये सुन्दर ग्रीवा
बाहु विशाल ॥
सुन्दर मुरली मधुर बजावत सुन्दर राधे है गोपाल ।
सूरदास दम्पती अतिराजत व्रजकों
आवत सुन्दरबाल ॥

२३

तुम जागो मेरे लाड़िले गोकुल सुखदाई ।
कहति जननि आनन्दसों उठो कुंवर कन्हाई ॥
तुमको माखन दुध दधि मिश्री हौं ल्याई ।
उठिकें भोजन कीजिये पकवान मिठाई ॥
सखा द्वार परभातसों सब टेर लगाई ।
वनकों चलिये सांवरे दइ तरनि दिखाई ॥
सुनत वचन अति मोदसों जागे अतुराई ।
भोजन करि वनकों चले सूरज बलि जाई ॥

२४

आजु प्रात हि तुम रात बात कहत वन कन्हैया ।
जैसे शुकपिक कपि बोलत है अरस परस सुनि
सुनि सुख पावत भावत नन्द यशोदा मैया ॥
वचन रचन कहत समुझि समुझि परत नाहि
कहु बीच बीच दाउ जब कहत मेरी गैया ।
रीझि रीझि हरसि हरसि पुलकि पुलकि उर लावत
चुंमति मुख वार वार लेति फुलिबलैया ॥
बहुविधि पकवान पानि खीरनीर भोजन घृत
माखन मिश्री खवाई घोर चावत खैया ।
बलि बलि व्रजवनिता जहाँ दामोदर हित चितवत
हरत लरतभूषण पढ़ नटवर दोउ भैया ॥

२५

माई कौन गोपके ए दोउ नागर धोटा ।
इनकी बात कहाँ सखी तो सों गुणनि बड़े
देखतके छोटा ॥
अग्रज अनुज सहोदर जोरी गौर श्याम
ग्रथित सिर चोटा ।
सन्तदास बलि बलि मूरति पर
ललित सबहि विधि मोटा ॥

२६

नैननिकी चञ्चलता कहा कोनें भोनें रङ्ग
कौनकेहो श्याम हमसों दुवारत ।
भोरके वदन देखनको नेमलियो कियों पत्रनिमधि
राखो प्यारी ताके मार मउर नए आवत ॥
मधुप गधलुवध सेजे पोढ़निश्चि बसे सलाग आवत
रति कोरति गावत ।
सूरदास मदनमोहन तनको प्रीति प्रकट भई
मुख नहों वनत बनावत ॥

२७

भोर भए मुख देखि लजाने ।
रसको केलि वाल मुख मोहत अरुण नैनि
अरमाने ॥
काजर रेख बनी अधरमिन पर ललित कपोल
पीक लपटाने ।
मधुप मनो कुञ्जनिपर बैठे उडि न सकत मकरन्द
लुभाने ॥

देखति द्वार अलङ्कृत विन गुण आए जीती रण
धीर सयाने।
सूरदास पीय पाव धारिये जानतिहौं परद्दाय
विकाने॥

३८

झीले भटको घुंघट तामधितरारे भारे
नो इनमोके लारे रीजीय अञ्जन।
कछुक सकुच गुरजनको ताते ओठ दीये अवलोकति
पीय तन चञ्चल मानहु जालपरे अकुजात खञ्जन॥
छवीलीको छवीलो अंखियारी जिनके कटाक्ष
तरङ्गनिमें हरिको मन लाग्यो करन मञ्जन।
अति चतुराइ सों चतुर विहारीके चितकों लागेरी
निरखि निरखि अनुरञ्जन॥

३९

तुम मुख ओर चन्द्रमा विरञ्चि तुलाकारी तोल्यो
ओछो अकाश गयो धुकि धरणी रही निकाइको
भारी भरोरी पला।
याहीतें शशी घटत बढ़तहै देखि देखि तेरो
वदन निर्मला॥
तो सम नाहि न पूजीये सव मिलि कलङ्की नाम
धर्यो निशि भ्रमत फिरत न रहे अचला।
तानसेन प्रभु सरस वस करलायो रूपआगरी
रूपकला॥

४०

अहो टेटो पागरि नागरि नारि सीस धरे जैसे
टेटो पागकों राखे रहतु कि चिकनीया।
ढुरि ढुरि मुरि मुरि वतीया करति अगिली पाछिलीन
सों दोउ करतारी मारति एकनिसों नैनसें
नव वनीया॥
लाहीको लहंगा पचरङ्ग चूनरि कण्ठकरा
ओर तावीच मनिया।
तानसेन प्रभु रीझि चकित भए तुहीं सवनि में
धनि धनिया॥

४१

चुनरी प्यारी पचरङ्ग ओढ़िरे सुघनीया गगरीया
भरे आवति है सुदोउ हाथ चेंपी धरे।
गोरे भुजनमें गाढ़े वरा फुनिड़ड़निमें श्याम चुरोइ
घेरी महनमें इंदोसों गहिरोइ रङ्ग करे॥
श्वासन वेसरि मोती हालत मुख प्रस्वेद
नेनाभोहं चढ़ाए।
कानन वीरें गरें मोतीन लर कुच उतङ्ग नितम्ब
भारी कटि छीनी चलत लफि लफि परत उरवेनी
पाट भोजेरी सुवो होत फुलेल परे॥
जै हरि जोति सूरज सोंहो उपरो पाइ महावर
नखनि जोति अरु गुदनगुदाए तानतरङ्गको
प्रभु विनति करत है सों हंसि बोलति हरे हरे॥

४२

नील पट पहिरे कञ्चन गात प्रात अलसात नवल
राधावर वाललाल सङ्गलागो पागोरस पागो रसकेलि
निकसि ठाढ़ी भई सघन कुञ्जनके द्वार।
भुज न जोरि एकहाति अम्भाति मन्द मुसिकाति
सुमिरति वातन जाति सखीलखो मुखशशि
विथुरे वार॥
अरुण नयन आलसजुत वेन अधर अञ्जन लगो
पीक छाप जुग मृदुल कपोलनि नखछत उरज
उतङ्ग सुभट कञ्चुकी कवच कस छूटे टूटे मणिगण
मुक्ताहार।
सिथल वसन कटि सिथल रसन डगमगो चाल
उरमाल मरगजी चरण महावर कहुं कहुं छुव्यो
यह छवि निरखि निरखि व्रजजन वलिहार॥

४४

त्रिभङ्ग अङ्ग रङ्गभरे विराजित हरि छवि सों
व्रजवनिता निके करजोरे।
तेही सांचति गतें लेत रेखा प्रमाण मोहति प्राण
चरण धरत थोरे थोरे॥
कवहु री रिझावत श्यामहि देखत नयनन
मोह मोरे।

नटवर भेष धरे रामदासको प्रभु मोहन नाइकु जाके
नित्य नृत्यत शिव विरञ्च सुर नर मुनि भइ भोरे ॥

४५

व्रजतें निकसि हरि वनकों चलत केती शोभा
राजत गायनु लेत सम्भारि ।
अपनी अपनी धेनु पाछे मिलवन मिस देखन चली जे
चातुरही व्रजनारी ॥
सबनिपेंते लेत वरण वरण निटेना करत सौंगत
सब ग्वालवृन्दहि आपु नहीं मुरारि ।
रामदास प्रभु वे चले बालकसङ्ग भेष धरे जैसे फांदत
दादुर बोलत चातक नृत्यत वही अनुहारि ॥

४६

हमपर यह हो गइवी वाजन ।
ले डारे यशोदाके आगे जेनम फोरे भाजन ॥
दुरी बात सब प्रकट करि देत नें कछु आइ लाजन ।
रामदास प्रभु दूरे भजन मध्य आङ्गन लागी गाजन ॥

४७

मो मनसे छोरी लालन कहि कहि थोरी
वोरि वतियां ।
मांगत दानु दियो सरवसु विरसो सुगयो जियते
मैन जाग्यो छैटगो कौन भतियां ॥
अट पटाइ मुरझाइ रहो देखत किशोर मोकों
भूलेरी सबै गतियां ।
रामदास प्रभुको अङ्ग अङ्ग मारतातें भुजनि चापिले
लगाइ छतियां ॥

४८

चितवत क्यों नरी तेरो चितवत लागतु कहा ।
एकनिपे झगरि दानु मागतु हरि तूं इतनेहु कों
अति कठिन महा ॥
उरध ग्रीव करि डग सुधे करि मुख पढ़लत करि
निरखि नयन भरि करति इहा ।
इनहु कों कितनीये कीजे प्यारी घोंधीको प्रभु
ढेंरो चतुर चहा ॥

४९

नयन तेरे अति रस माते अरुण अरुण डारे
लगत सुहाते ।
कबहुं लजात कबहुं अनखात कबहुं कुलि पियसन
मुख चितवत इतराते ॥
कबहुंक इकटक देखि रहत कबहुं आगु नहो
मुरि मुसिकाते ।
रसिक प्रीतम सङ्ग निशदिन विलसत नेकु नहो
सकाते ॥

५०

खेलतमें को काको गुसैयां ।
हरि हारे जीते श्रीदामा वरवसही कत करत रुसैयां ॥
जाति पाति हमते बढ़े नाहो ना हम वसत तु
छारी छैयां ।
अति अधिकार जनावत याते अधिक तुम्हारे गैया ॥
रुचि करै तासों को खेले रहे बैठि जहां तहां
सब गोइयां ।
सूरश्याम प्रभु खेल्योइ चाहत दावदियो करि
नन्द दुहैयां ॥

५१

खेलत श्याम प्यारिके वाहेर व्रज लरिका सङ्ग
सोहत जोरी ।
ते सेइ आपुते सेइ सब बालक अति अज्ञान
सबको मति भोरी ॥
गावत हांक देत किल कारत दूरि देखति नन्दरानी ।
अति पुलकित गद गद मृदुवाणी मन मनहर
पिसिहानी ॥
माटी लै हरि मेलि दई मुख तबही यशोदा जानी ।
साटी लिये दौरि भुज पकरे श्याम लङ्ग्यो ठानो ॥
लरकनि कों तुम सब दिन झूठ बात मोसों कहा
कहोग्यो ।
मैं माटी नहि खाइ मैया मुख देखो निवहो गो ॥
वदन उघारि दिखायो त्रिभुवन वन घनमदीसुमेर ।
नभ शशी रवि मुख भीतर है सब सागर धरणी फेर ॥

यह देखत जननी मन व्याकुल बालक
मुखका आहि।
नयन उघारि वदन हरि मूंघो माता मन अवगाहि॥
झूटे लोग लगावत माकों माटी मोहि न सोहावै।
सूरदास सब कहति यशोदा व्रजलोग निद है भावै॥

५२

कहत नन्द जसुमति सुनि बात।
अब अपने मन सोचकरत कित जाके त्रिभुवन
पति सो तात॥
गर्ग सुनाई कही जो बानी सोई सोई प्रकट
होत है जात।
इनतें और नही कोउ समरथये हहै सबही के नाथ॥
मायारूप मोहनो लाई डारि भुले सबै ए गाथ।
सूरश्याम खेलतें आये माखन मांगन दे माहाथ॥

५३

तबहि यशोदा माखन ल्याई।
मैं मथिकै अबही धरि राख्यों तुमहि काज मेरे
कुंवर कन्हाई॥
मागि लेहु ऐसी विधि मोसों मो आने तुम खाहु।
बाहेर कबहुं कछु जिनि ऐहाड़ो टिलागे मो काहु॥
तनक तनक कछु खाहु लाला मेरे ज्यों बढि
आवे देह।
सूरश्याम अबहोहु सयाने बारनके सुख खेह॥

५४

प्रथम करो हरि माखन चोरो।
ग्वालनि मनइच्छा पूरण करि आपु भजे हरि
व्रज कि खोरो॥
मन मन इहो विचार करत प्रभु व्रज घर घर
सब गांउ।
गोकुल जनम लयो सुखकारण सबके माखन खांउ॥
बालरूप जसुमति माहि जाने गोपिन मिलि
सुखभोग।
सूरदास प्रभु कहत प्रेम सो ये मेरे व्रजलोग॥

५५

सखा सहित गये मांखन चोरो।
देख्यो श्याम गावाक्ष पन्थह्व गोपी एक मथति
दधिभोरी॥
हेरि माथनी धरि माटते माखन हो उतरात।
आपु गयोकमोरो मांगन हरि पाइह्यो घात॥
पैठे सहनिसहित घरसूने माखन दधि सब खाये।
छूछी छाड़ि मटुकिया दधिकी हंसि सब
बाहिर आये॥
आयगयो करलियें कमोरो घरते निकसो हाल।
माखन कर दधिमुख लपटाने देखि रहो नन्दलाल॥
कहं आये व्रजबालकन सङ्ग माखन मुख लपटानो।
खेलततें उठि भज्यो सखा यह येहि घर
आर छपानो॥
भुज गहिलियो काहा एक बालकनिकरे
व्रजकी खोरी।
सूरदास ठगि रही ग्वालिनी मन हरि लियो अजोरि॥

५६

चक्रत भई ग्वालिनि तनु हेरयो।
माखन छाड़ि गई मथि वैसेहि तबतें कियो अबेरयो॥
देखे जाइ मटकिया रीतिमें राख्या कहुं हेरि।
चक्रत भई ग्वालिनि मन अपने ढूरति घर फिरिफेरि॥
देखति पुनि पुनि घरके वासन मन हरि लियो
गोपाल।
सूरदास प्रभु रसभरी ग्वालिनी जान्यो हरिके ख्याल॥

५७

व्रज घर घर प्रकटी यह बात।
दधि माखन चोरी करि लै हरि ग्वालसखा सङ्गगात॥
व्रजवनिता यह सुनि मनहरषित सदन हमारे आवे।
माखन खात अचानक पाए भुज भरि उरहि छुपावे॥
मनहीं मन अभिलाष करत सब हृदय करति
यह ध्यान।
सूरदास प्रभुको घरतें लदेहै माखन खान॥

५८

ग्वालिनि घर गये जानी मांझको अंधेरो।
मन्दिरमें गये समाइ ह्यासन तब लखिन आइ
देहगेह रूप कहो को अहै निवेरो॥
दीपक यहदान कह्या भुजा च्यार प्रकट धयो देखत
भई चकृत ग्वालि इतउतकों हेरो।
श्यामहृदय अति विशाल माखन दधि विंदजाल
मनमोह्यो नन्दलाल बाल कहोवेरो॥
युवती अति भई विहाल भुजभरि दै अङ्कमाल
सूरदास प्रभु कृपालड़ाखो तनवोरो।
काम परसों करनलगाइ महरिपै गइ लिवाइ
आनन्द उरमे नजाइ बातहै अनेरो॥

५९

जसुमति धौं देखिआनि आगेह्नैले पिछानि बहि
आनहि ल्याइ कुंवर आनकौका तेरो।
अवलौंमि करो कानिसहो दूधदही हानि अजहुं
जियजानि मानि कान्ह है अनेरो॥
दीपकहो धयो वारि देखत भुज भइ च्यारि हारिहौं
धरति करति दिन दिन कोभेरो।
देखियत नहि भवन माझ तें सोहतन तैसो मांझ
कलसों कछु करत फिरत महरि को अटेरो॥
गोरस तन छांट रहि शाभा नहो जात कहोत
मानो जल जमुन विम्ब उड़गन पथ फेरो।
उरहन नहि देहु काहि कहे तूं इतनो रिसाइ
नाहो व्रजवासु सासु ऐसो विधि मेरो॥
यशोदा निरखे कुमार सोवो बरने निहार भूली
भ्रमरूप मानो आनकोउ हेरो।
मनमें विहसत गोपाल भक्तपाल दुष्टसाल जानेको
सूरदास चरित कान्हा केरो॥

६०

महरि तुम मानहु मेरी बात।
ढूंढ़ि ढूंढ़ोरि गोरस सब घरकों हयो तुम्हारे तात॥
कैसे कहति लयामो कैसे ग्वाल कांध देलात।
घर नहि पिवत दुध धौरोको कैसे तेरे खात॥
अबअव बोलत है आई ढिट ग्वालिनो प्रात।
एसो नहो अब गरो मेरो कहावनावति बात॥
कहा मे कहो कहति सकुचतिहौं कहा
देखाउ गात।
जे गुणबढ़े सूरके प्रभुके ग्वालरि काहो जात॥

६१

गए श्याम तेहि ग्वालिनिके घर।
देखौ जाय मथति दधि ठाढ़ी आपु लगी खेलन
हारे पर॥
फिरि चितइ हरिदृष्टि परिगये बालि लये
हृदवें सूलेवर।
लिये लगाय कठिन कुचके विच गाढ़े चांप रह्यो
अपने कर॥
उमगि अङ्ग अङ्गिया उरदरकी सुधि बिसरो
तनको तेहि आसर।
तब भये श्याम वरष द्वादशके रोझि लई
युवतो वा छविपर॥
मन हरि लियो तनकसेह्वै गये देखि रहो
शिशुरूप मनोहर।
लै माखन मुख धरति श्यामके सूरज प्रभु रतिपति
नागरवर॥

६२

ग्वालिनि उरहनके मिस आई।
नन्दनन्दन तनमन हरिलोन्हो बिन देखे छिन
रह्या न आई॥
सुनहु महरि अपने सुतके गुण कहा कहांकेहि
भांति बनाई।
जौनि फारि हार गहितो त्यो इन बातनि कहा
होत बड़ाई॥
माखन खाइ खवावत ग्वालनि जो उवरा सो
दियो लुटाई।
सुनहु सूर चोरी सहिलीन्हो अब कैसे सहिजाति
ढिटाई॥

९३

कबहि कारण गयो माखन चोरो।
जानतिहौं सु कटा छति हारो कमलनयन मेरो
इतनक दोरो॥
दे दे दगाबुलाइ भुवनमें भुजभरि भेटति
उरज कठोरी।
उर नखचिन्ह देखाअति डोलति श्याम चतुर
भयो तुम अति भोरी॥
गोरसके मिस आवति है नित चितै रहै जनु
चन्द चकोरी।
सूर सनेह ग्वालि मन अटक्यो अन्तर प्रीति जाति
नहि तोरी॥

९४

हा कहौं हरिके सुख तोसों।
सुनहु महरि अबही मेरे घरजे रङ्ग कीन्हे मोसों॥
मै दधि मथति अपने मन्दिर गये तहां येहि भांति।
मै सों कह्यो बात सुनि मेरो मै सुनिकें मुसिकाति॥
बांह पकरि चाली गही फारो भरि लीन्हा अङ्कवारि।
कहत न बनै सकुचकी बातें देखो हृदा उघारि॥
माखन खाइ निदरिगोको विधि यह तेरे
सुखको घात।
सूरदास प्रभु तेरे आगे सकुचति कह्यो न जात॥

९५

ऐसे हाल मेरे घरमें कीन्हे हौले आइहो तुम हियै
पकरिकै।
फोरे सब बासन घरके दधिमाखन खायो
जोउ बखोदाग्वा रिसकरिकै॥
लरिका छिरकि मही सों देखो उपज्यो पूत
सपूत महरिकै।
बड़ोगाढ़ घर घर हो सुगनिको ढूक ढूक कियो
सर्खनिय करिकै॥
पारिस पाट चलत तर पाएहौं ल्याइ तुमहोपें पकरिकै।
सूरदास प्रभुकों ऐसे राखो यशोदा जंसे रखियै
गजमद कौउ करिकै॥

९६

श्याम सब भाजन फोरि पराने।
हांक देत पैठतहै पैला नेकन मनहि डराने॥
सीके छोरि मारि लरिकनिको माखन दधि
सब खाइ।
भवन मच्यो दधि कादोलरि करि वेरित पाये जाइ॥
सुन जसुमति सबहाके लरिका तेरो सो कहुं नाहि।
हाटनि वाटनि गलिन कहु कोउ चलि नहि
सकत डराहि॥
रितु आको खेल कन्हैया सब दिन खेलत फागु।
रोकि रहत यहि गलि सांकरो टेढ़ो बांधत पाग॥
वारेतें सुतये ढगलाये मनही मनहि सिहानि।
सुनहु सूर ग्वारिनिको बातें सकुचि सहरि
पछितानि॥

९७

दे मैया भवरा चकडोरी।
जारलेहु आरेप राख्यो काल मोलिल राखो कोरो॥
लआये हसि श्याम तुरतहोकें देखि रहे
रङ्ग रङ्ग बहु टोरो।
मैया बिना और को ल्यावै बार बार हरि करत
निहोरो॥
बोलि लये सब सखासङ्गके खेलत कान्ह
नन्दको पौरी।
तै सेइ हरि तै सेइ ब्रजबालक कर भवरा
चकरिनको जोरी॥
देखति जननी यशोदा यह सुखि बिहसति
बार बार मुखमोरी।
सूरदास प्रभु हसि हसि खेलत ब्रजवनिता डारति
ढ्रण तोरि॥

९८

कान्ह उठे अति प्रातही तन खेली लागि लागो।
प्रिया प्रेमके रसभरे रति अन्तर खागो॥
श्याम उठत विलोकिकें जननी तब जागी।
सुन्दर वदन बिलकिकें अङ्ग अङ्ग अनुरागी॥

माता बुझति सुबलकों वलि गइ मेरे वारि।
कहा आजु अचरजु कियो तुम उठे सवारि॥
झारि जल दतवन दियो छवि पर तनुवाओ।
उत्तम जल ले प्रेमसों हुलसिम पखाओ॥
करि मुखारी बतुरइ नागरि रसछाके।
सूरश्याम ऐसी दया त्रिभुवन वस जाके॥

६९

उत वृषभान सुता उठी यह भाव विचारि।
रैनिविहानी कठिन सों मनमथ बलहारि॥
मोवमोति लरि तोरिकें अचरा सों बाध्यो।
यहै छांनो करि लियो हरि मनु अनुराध्यो॥
जननी उठि अकुलाइके क्यों राधा जागी।
कहा चली उठि भोरही सो वैन सभागी॥
अब जननी सो उनही रवि करनि प्रकाशो।
तुइ उठति काहे नहो जाने व्रजवासी॥
आप उठी आंगन गइ फिरि घरही आइ।
कवधों मिलहे श्यामकों पल रह्यो ना जाइ॥
फिरि फिरि अजिरहि भवनही तनवेली लागी।
सूरश्यामके रस भरी राधा अनुरागी॥

७०

सुनिरी माता कालिहो मोति लरी गंवाइ।
सखिनि मिले यमुना गइ धों उनहि चुराइ॥
कीधों जलही में गइ यह सुधि नाहि मेरे।
तबतेंमें पछितानि तहा कहति नहीं डर तेरे॥
पलक नही निमि कहुंलगी मोहि सपतरो तेरी।
यहि डरतें में आजुही अति उठी सवेरी॥
महरि सुनत चकृत भइ मुख ज्वाव न आवै।
सूर राधिका सुख भरी कोउ पारन पावै॥

७१

धन्य कान्ह धन्य राधा गोरी।
धनि वह भाग सुहाग धन्य यह धन्य नवल
नवला नवजोरी॥
धनि यह मिलनि धन्य यह वैठनि धन्य अनुराग
नही रुचि थोरी।
धनि यह अरस परस छवि लुटनि महाचतुर
मुख भोरे भोरी॥
प्यारी अङ्ग अङ्ग अवलोकति पिय अवलोकत
लगत टगोरी।
सूरदास प्रभु रीझि थकित भये नागरी
घर डारत तृण तोरी॥

राग सूही

श्याम निरखि प्यारी अङ्ग अङ्ग।
सकुचि रहति मुख तन नही चितवति जेह वसत
रहत अनन्त अनङ्ग॥
चपल नयन दीरघ अनियारे हावभाव नाना
गति भङ्ग।
वारो मीन कोटि अम्बुजगन खञ्जन वारत कोटि
कुरङ्ग॥
लोचन नहि ठहरात श्यामके कबहु अङ्ग
देना मुख रङ्ग।
सूरदास प्रभु यो प्यारी वस ज्यो वस डोर
फिरत सङ्ग सङ्ग॥

बिलावल

सुनहि महरि तेरो लाड़िलो अति करत अचगरो।
यमुन भरण जहं हम गई तहं रोकत डगरो॥
शिरते नीर ढराइ दै फोरी सब गगरी।
मुड़री दइ फटकारिकें हरि करतहें लङ्गरी॥
नितप्रति ऐसेहि ढङ्ग करै हमसों कहै धगरी।
अब वसवास नही बनै यह तुव व्रजनगरी॥
आपु गयो चढ़ि कदमको चितवत रहै सगरी।
सूरश्याम ऐसे सदा हमसों करै झगरी॥

२

जो सुख श्याम प्रिया सङ्ग कीन्हो।
सो युवती अपनोइ करि लीन्हो॥
दुविधा छूटे कछु नहि राख्यो।
अति आनन्द वचन मुख भाख्यो॥
दुहे कहति तवको अवलोके।
सकुचि हंसी नागरी सङ्ग पीके॥

नयन कोर पिय छूटनि छाको।
उनि पहिलेहि पीताम्बर धाको॥
सूरदास यह लीला गावै।
हरिपद शरण अच्छे पद पावै॥

३

नाना रङ्ग उपजावत श्याम।
कोउ रीझति कोउ खीजति वाम॥
काहुके निशि वसत बनाइ।
काहु सुख छियो आवत जाइ॥
बहु नायक हैव विलसत आप।
जाकों शिव पावै नहि जाप॥
ताकों ब्रजनारी पति जानै।
कोउ आदर कोउ अपमानै॥
काहुसों कहि आवत सांध।
रहत और नागरी घर माझ॥
कबहुं रैनि सब सङ्ग विहात।
सुनहु सूर ऐसे नन्दतात॥

४

अब युवतिन सों प्रगट श्याम।
अरस परस सबहिन यह जानो हरि लुबधि सबहिनके धाम॥
जादिन जाके भवन न आवत सो सो मनम यह करति विचार।
आजु गये औरहि काहुके रिस पावति कहि बड़ लवार॥
यह लीला हरिके मन भावति खण्डित वचन कहत सुख होत।
सांझ बोल दै जात सूरप्रभु ताके आवत होत उदोत॥

५

ललिताकों सुख दै गयो श्याम।
आजु बसैगीवेनि त ह्यारे प्राण पियारी हो तुम वाम।
यह कहिके अनतहि पगुधारे बहु नायकके भेद अपार।
सांझ साथ आवन कहि आये सोंह बहुत करि नन्दकुमार॥
बहु बैठी मार गहरि जोवति एक एक पल बीतत एक जाम।
सूरश्याम आवनकी आसा सेज सम्बारति आकुल वाम॥

६

ज्याव नहो पिय आवहो क्यों कहा ठगाने।
मंतबहोको वकतिहों कछु आजु भुलाने॥
हा नाहि नहो कहतहो मेरो सों काहे।
आये क्यों चकृत भये मोकों रिस दाहे॥
कहां रहे का सों बन्यातहइ पगुधारो।
सूरश्याम गुण रावरे हिरदे बिसारो॥

७

काहेकों कहि गये आइ है काहे झूटी सोंहे खाये।
ऐसे के जाने नहि तुमकों जे गुण करि तुम प्रगट दिखाये॥
भलो करि दरसन यह दीन्हो जनम जनमके ताप नशाये।
तब चित ये हरि ने कचि रातन तुमको हिरदे माझ बसाये॥
सत्य कहत तोसंहो भूल्यो इतनेहि सब अपराध छमाये।
सूरदास सुन्दरी सयानी हंसि हंसि लीन्हो हरि अङ्ग मिलाये॥

८

नयन कोर धरि हरिके प्यारी बसकीन्हो।
भावकह्यो अखि आलको ललिता लखि लीन्हो॥
तुरत गयोरि सुन्दरी केङ्क हंसि कण्ठ लगायो।
भली करी मन भावती एसेहु में पायो॥
भवन गई गहिवाङ्ह ले निशि जागे जाने।
अङ्ग शिथिल निशिश्रम भयो महो मनमान॥

अंग सुगन्ध मरदन कियो तुरतहि नहवाये।
अपने कर अङ्ग पोंछिकें मनसाध पुराये॥
और आभूषण अङ्ग दै बैठे गिरिधारी।
रुचि भोजन प्रियकों दियो सूरज बलिहारी॥

९

रह छवि अङ्ग निहारत श्याम।
कबहुंक चुम्बन देत उरज धरि अति सकुच
तितनु वाम॥
सनमुख नयन न जोरत प्यारी निलज भए पिय ऐसे।
हाहा करति चरण कर टेकति कहा करत ढङ्गनेसे॥
बहुरि धाम रसभरे परस्पर रति विपरीति बड़ाई।
सूरश्याम रतिपति विह्वल करि नारि रही मुरझाई॥

१०

पिय प्यारी तनु श्रमित भये।
सकुचि उठि नागरी पट लीन्हो श्याम लज्जाइ गये॥
सावधान रति आन्तर भर पिय प्यारी तननहि हेरत।
नागरी कुटिल कटाच्छनि हेरति भृकुटि बङ्कत फेरत॥
एसे गुणविनि तुमहि शिखाये तीर निकट
कसि दन्ही।
सूर कहति पिय सों चिरवाणी आजु तुमहि
मैं चीन्ही॥

११

सारङ्ग सुत प्रति तनयाके तटठारे नन्दकुमार।
बहुत तपत जारासमे सविता ताको सुतासङ्ग
करत विहार॥
गुड़ाकेश जननी पति वाहन ता सुतके
अङ्गसमे सिङ्गार।
चन्द योहयोर आट हंसदे व्याल कमलवती सविचार॥
एक अम्ब शोभारवता उपाव चन्द्रोदवे कमल मझार।
सूरदास यह युगल रूपकों रे मन राखि
सदा उरधार॥

१२

देखि सखि पांच कमल है शम्भु।
एक कमल व्रज उरराजत निरखत नयन अचम्भ॥
एक कमल प्यारी कर लीन्हे कमल सुकोमल अङ्ग।
युगल कमल सुतकमल विचारत प्रीतित कबहुं भङ्ग॥
षड़अम कमल मुख सनमुख चितवत बहुविधि
रङ्ग तरङ्ग।
तिनमें तीनि सोमवशी वसतीनि सुकश्यप अङ्ग॥
जेइ कपिल सनकादिक दुर्लभ जिनहो निकसी गङ्ग।
तेइ कमल सूर नित्य चिन्तत निपट निरन्तर सङ्ग॥

१३

देखि सखि च्यार चन्द एक ठोर।
निरखति बैठि नित वनि प्रियसङ्ग सूरसुताको ओर॥
द्वै शशि श्याम नवल घन सुन्दर द्वै कीन्हे विधि गोर।
तिनके मध्य च्यार सुकराजतद्वै फल आठ चकोर॥
शशि शशिसङ्ग प्रवाल कन्द अलि अरुझि रह्यो
मन मोर।
सूरदास प्रभु अतिरति नागर बलि बलि युगल
किशोर॥

१४

देखि री प्रकट द्वादश मीन।
षड़ इन्दु द्वादश तरनि शोभित विमल उडुगन तीन॥
षठ् अष्ट अम्बुज कीर षड़मुख कोकिलासुर एक।
दश दोइ विद्रुम दामिनी घटति नवध्यान विशेष॥
त्रिवली घट् श्रीफल विराजत परस्पर बरनारी।
व्रजकुंवरि गिरिधर कुंवर पर सूरजन बलिहारि॥

१५

देखि सखि तीस भान इकठौर।
ता उपर चालीस विराजत रुचि न रहि कछु और॥
धरतो गगन गगनतें धरती ताबिचरहे विस्तार।
गुण निर्गुण सागरको शोभा विनु रवि भयो भुनसार॥
कोटिक कोटि तरङ्ग उपजत जो गजगति चितलाउ।
सूरदास प्रभु अकथ कथाकों पण्डित भेद बताउ॥

१६

रवि हरि रिपुकों न छपावति।
मेरु सुतापति ताके पति सुता ताकों क्योन मनावति॥
हरि वाहन तवोहन उपमा सोतैं धरे हृढ़ावति।
नव षट सात बीस तोहि सोहत काहे गहरु लगावति॥
सारङ्ग वचन कह्यो करि हरि सों सारङ्ग वचन न भावति।
सूरदास प्रभु दरस बिना तुव लोचन नीर बहावति॥

१७

महोदधितनया सुत रिपुगति ममनो सुनि वृषभानु दुलारो।
दादुर रिपु रिपुपति हे पठाई सो चितवेंप विहारो॥
अलिवाहन रिपुवाहन रिपुको तपति भई अतिभारो।
सोनि सञ्चारि प्रभु छिदितहै हों बलिजाउ तिहारो॥
मारुत सुतपति रिपुपति पत्नीता सुत नारो बिसरो।
सूरदास प्रभु तिहारे मिलनकों को हटक्यो तिह प्यारो॥

१८

एहि तेरे वृन्दावन बाग।
सुनि राधिका कदम्ब विटपको साख एक अमी फल लाग॥
श्याम अरुण कछु अधिक प्रीत छविवर निजहि नहि अङ्ग विभाग।
अति सुपक्ष मुरलीके बरसत चुइ चुइ परत उमगि अनुराग॥
व्रजवनिता बरवारि कनकमय रोके रहत सुधा सुरनाग।
तुव प्रताप कुहलक तन सुन्दरि सुकमनि मर्कट कोकिल काग॥
सं मालिनि जतन निज तज गयो सोचत सुहृय परे कर दाग।
सूर सुश्रम उठि भेटि परस्पर पिउ पीयूष पाये बरभाग॥

१९

जलसुत प्रीतमसुत रिपुबन्धव आयुध आनन बिलखु भयोरी।
मेरु सुतापति बसत जहांपे कोटि प्रकाश रिसाइ गयोरी॥
मारुत सुतपति अरिपुरवासी पति वाहन भोजन न सुहाई।
हरसुतवाहन असन सनेही मानहु अनल देह दौआई॥
उदधिसुतापति ताक आहनता वाहन कैसे समुझावे।
सूरश्याम मिलि धर्म सुवन रिपुता अब तारहि सलिल बहावे॥

२०

हरिसुत पावक प्रकट भयो।
मारुतसुत बन्धव पितु प्रोहित ता प्रतिपालहि छाड़ि गयो॥
प्रीति पतिताको फनिताइनता वाहन घनसुततनयो।
मीनसुतासुत तात कहतहैं तापरकासत सकल छयो॥
शशि सङ्ग सरोज कलोको तातैं मेरे मनमाझ टयो।
शैलसुताको रूप न भावत तादिन को प्रिय नयन लयो॥
सारङ्गसुता वाके सुत को हेतु ता सुत सों सुखनाश ह्यो।
सूरदास निरन्तररिवके अस अजहुं न मोहन दरस दयो॥

२१

मिलवहु पथिक मिचहि आनि।
जलजसुतके सुतको रुचिते भई रसको हानि॥
उदधिसुतासुत अवलि उरपर इन्द्र आयुध आनि।
गिरिसुतापति तिलक शर कर हतन साधक तानि॥
पिनाकीसुत तासु वाहनभक्षको भक्ष बखानि।
शाखामृगरिपु मलयजहु कतहु तासन जानि॥
धर्मसुत अरिके शुभ इच्छ तजौ शिर अरि पानि।
सूरदास विचित्र विरहिनि चूक मन मन मानि॥

कहियो अति अबला दुख पावै ।
हिरन पठनपति प्रवीन ज्यों है बार बार समुझावै ॥
सारङ्गारि सुतापति रिपुवारिपु तारिपु तजनहि ध्यावै ।
हरिवाहन वाहन पतिवाहकता सुत आनि बचावै ॥
सुररिपु गुरुवाहन तारिपुता चढ़ि भेनु दिखावै ।
सूरदास प्रभु तुम्हारे मिलनकों विरहिं नितपति बुझावै ॥

२२

कहांलो मन राखिये विरमाई ।
इकटक शिवधर नैन न लागत स्यामसुता सुत धरणि भाई ॥
हरिवाहन इव तासु सहोदर रतिपति उदित मुरछि महि जाई ।
गिरिजापति रिपुनखसिख आवत ताम सुधाप्रिय कथा सुनाई ॥
विरहिनि विरह आपु वसकीनों लंब कमल जिनु पाइ बुलाई ।
बेगी मिलो सूरके स्वामी उदधितनयापति मिलिहैं भाई ॥

२३

गोरिपु तारिपु तासुत आयुध प्रीत मतहानि नारे ।
सो विरचि सभव जात न तेंतहां रहे प्राण हमारे ॥
सो बरजाहो गवनकियो हठि खादल वधर सयल ।
सुनि नन्दतात मुख जोवति कन मलाइ अति प्याल ॥
भोरभये पशुवन्दन छूटे ज्यों विरहिनि रति भाने ।
इहि विधि मिलहि सूरको स्वामी चतुर होइ सो जाने ॥

२४

सोवति राधा लिखति नखनि मही वचन कहत कण्ठ जलतास ।
छिति पर कमल कमल पर कदली कदली पङ्कज कियो प्रकास ॥
तापर अलि सारङ्ग सारङ्गपति सारङ्गरिपु कियो ले कुसवास ।
तहं अरि पन्थ पिता जुग उदित खारिज विम्ब रङ्ग भव भास ॥
सारङ्ग मुखकें परत अम्बु ढरि मानहु सिव पूजति तपत विनास ।
सूरदास प्रभु विनु हरिहर रिपु दाहत अङ्ग दिखावत वास ॥

२५

हरिमें हरि नख काहि लुगये ।
हरि दरसत मुदित उदित हरि हरि व्रज हरि जु लये ॥
हरि रिपु तारिपु तारिपुके सुत हरि हरि विनु अधिक बए ।
हरि तनया सोधित जलदह महं हरि अभिमान गंवाए ।
अब हरि वदनको या कुविजा हरि सूरदास मन भाए ॥

२६

सखोरी हरि विनु दुख है भारी ।
सिन्धक सुतह भूषण निकट जैसे तैसो गति भइ हमारी ॥
शिखरवधू अरि काहे निवारति पुहप धनुसके विशेष ।
चक्षु श्रवा उरहार चासतें भछि नन्दतिया वपुरेख ॥
घट अमु असनसमें सुख आनन अमो गलित जैसे ग्रेष ।
जलधर व्योम आवकत मुंदत नैन जोड़ बदलेख ॥
द्विजपति प्रभु मोहि आनि मिलावहु हरत आरति जानि ।
जैसे हारिकवन्ध प्रकट भयो हरि आनन्द रतिमानि ॥
षट् आनन वाहन काननमें घनरजनी तहंवाढ़ी ।
सूरदास मिलि रसिकशिरोमणि सुनिवा त्रिक पिककाढ़ी ॥

२७

श्रीनव नागरी प्यारी, तु' श्रीवृन्दावनकी रानी ।
विहारिणी लाड़िली प्यारी, तेरी कीं रति जगत बखानि ॥

छन्द

जगतमे जगिमगि रह्या जसविनु कृपा कैसे बुझिये।
अभिमान अन्ध अनेक कर्म्मो ताहितें नहि सुझिये॥
करो कृपा परम उदार माहि बारम्बार सुनाइये।
बलिजाउ श्रीवृषभानुनन्दिनी सुजस तुम्हारो गाइये॥

१८

श्रीनवनागरी प्यारी, तेरी मोतिन माग सम्वारी।
श्रीविहारीन लाड़िली, तैसोयैं पहिरन झुमकसारी॥

छन्द

सारी झीभीहि फूलेल सौंवे प्रकटवेनी देखिये।
धसी सीस सुमेरतें मानों भंवर पाति विसेखिये॥
ललित कटिपर लाल लेहंगा नीलकञ्चुकि कसतनी।
प्रथम जोवन जोति तनकी जात नही कविपे भनी॥

१९

श्रीनवनागरी प्यारी, हे चन्द्रवदनी हे मृगनयनी।
विहारिन लाड़िली प्यारी, ते सोये चञ्चु कतन
शुकपिकवैनी॥

छन्द

वाणी सो पिक शुक नासिका प्यारी अधरविम्ब-
विलासिनी।
कनककुण्डल अलक झलके कपोलमें मृदुहासिनी॥
ललित सुखभर पानवीरो नासिका मुक्ता चरे।
चिवुक सांवल विंदुकी छवि कौन विय सरभर करे॥

२०

श्रीनवनागरी प्यारी, तेरी विन्दी जगमग ताई।
विहारिन लाड़ि प्यारी, यह छवि मोपे वरनी
न जाई

छन्द

वरनी न जाय यह छवि मोपे निरखि
श्याम सरावही।
दमन दामिनी अवररातें लाल अति सुख पावही॥
गौर भाल विशाल लोचन बरणी अतिछवि राजही।
मोह काम कमान मानों वान मनमथ साजही॥

२१

श्रीनवनागरी प्यारी, तेरे छोटो छोटी लरगज मोती।
विहारीन लाड़िलो प्यारो, तैसोयै वोच जड़ालो पोती॥

छन्द

पीतपुञ्ज जरावरोको रह्यो उरपर जगमगी।
हे अंसपर मख तूलकौदा दृष्टि जिनि और की लगी॥
हेकर वांकन जड़ित दोउ बाहबुरी विराजही।
रतनजड़ित अमोल सुन्दरी अङ्गुरीयन छवी छाजही॥

२२

श्रीनवनागरी प्यारी, तेरे पाय नुपुर झनकार।
विहारिन लाड़िली प्यारी, तैसोये मधुरी चरण
विहार॥

छन्द

मधुरी चरण विहार यह गति राजहंसहि परपिये।
जघन सघन सरोज भारा देखि सिंह कटि उरपिये॥
नितम्बिनी किङ्किनी प्यारी निकटही नीवीवनी।
झवाझलके देखि कोउ रीझि वहे श्यामल धनी॥

२३

श्रीनवनागरी प्यारी, तु गियतन देखि मुरि
मुसिकानी।
विहारिन लाड़िली प्यारी, उनवंसीहु निरत न जानी॥

छन्द

न जानि वंशी गिरत करतें पीतपट सखि भी पस्यो।
रहे जैसे चित्र कैसे पगन पुहमीतें टस्यो॥
झुकि जात कछु अनगातकी सुधि अङ्ग अङ्ग
शीतल भए।
नृपति राजकुमारहो सखि भुजाभरि भामिनी गहे॥

२४

श्रीनवनागरी प्यारी, तेरे सुवस वसे जु कन्हाई।
विहारिन लाड़िली लालन, अङ्ग अङ्ग रहे अवझाई॥

छन्द

अङ्गी अङ्ग लाल लुभाई राखे रसिक शिरमुकुटमणि।
गुण रूप शील सुहाग सुन्दरि और सखि
नृपवत गणि॥

ब्रजराज नवलकिशोरके कोउ चोर चित
नहो भावहो।
बलि जाउ श्रीवृषभानुनन्दिनो तोहि बेणु बजावहो॥

१५

श्रीनवनागरो प्यारो, तोकुं श्याम मनोहर बोलो।
विहारिन लाड़िलो प्यारो, तुं उठि चलि नवल
किशोरो॥

छन्द

उठि चलि नवल किशोरो राधे नवललले बुलावहो।
सुन्दर श्याम सुजानहों सखि बार बार कहावहो॥
छाड़ि मान सम्भारि प्यारो बार बार मनावहो।
बलि जाउ श्रीवृषभाननन्दिनो तो हित मोहि
पठावहो॥

१६

श्री नवनागरो प्यारो, जस तेरो हि पिय मनभावे।
विहारिन लाड़िलो प्यारो, वे जस आपुहि
श्रीमुख गावे॥

छन्द

गाय तो जस आपे श्रीमुख तुही तनमन रमिरहो।
धन्य तुं धनप्राणजीवन सपत करि मोसों कहो॥
अब करो विविध विहार भामिनो एतो
रगर न कीजिये।
बलि विष्णुदास विचित्र जोरो लोचननि सुख दोजिये॥

१७

ब्रजको रीति अनोखी री माई।
जो कोउ नन्दभवनमें आवे ताको मनहरि
लेत कन्हाई॥
कण्ठ बघना मुख माखन सोहे तनको कहा
कहों जु निकाई।
घुटरुन चलत छांहको पकरत किलकत हंसत
खेलत अङ्गनाई॥
मात यशोदा लेति बलैया मनमें मोदबढ़ो
न समाई।
प्रभु कल्याण गिरिधरको यह छवि पलकको
ओट सही नहो जाई॥

१८

हरि मूरत बिनु देखे कल न परे।
जा दिनते मेरो दृष्टि परे मेरे नैनते उरते नटरे॥
श्यामसुन्दर मनमोहन ललना प्राणजीवनधन
क्यों बिसरे।
रसिक गोपाल सनेह न छूटे देह सुरति
सखो कौन करे॥

१९

भोजन भयो भावते मोहन।
तातोइ जेइ जाहुगे गोहन॥
और खण्ड खाचरा सम्वारो।
मधुर महेरो गोपनि प्यारो॥
राइ भोग लियो भात पसाई।
मूंग रहरो हांगुलगाई॥
सद माखन तुलसो दे छायो।
घृत सुवास आचारनि लायो॥
पापर बरो आचार परम सुचि।
अद्रक अरु नोबुं अनिहो है रुचि॥
सूरन करि तरि सरसतोरई।
सेमसांगरो भमकि भोरई॥
भरता भटा खटाइ दोनो।
भाजी भलो भांति दस कोनो॥
सागुच नाम कहा चोराई।
सोरा अरि सरि सोसर साई॥
बंथुवा भलो भांति रचि राध्यो।
हो गु लगाई लाई दधा साध्यो॥
मोइ पर पर सांगफरो चुनि।
ठेढ़ो डेढ़ सदा किलये पुनि॥
कन्टूरो और ककोरा फोरे।
कचरो चार चढ़ंड़ा सोरे॥

बनै बनाय करैला कीन्हे ।
लोन लगा तरत तरि लीन्हे ॥
फूले फूल सहिजना छौंकि ।
मनरुचि होइ लाजकं भौंकि ॥
फूल करील कली पाक करिम्म ।
फरो अगस्ति करी अमृत सम ॥
अरुइहि आंविला दइ खटाई ।
जेंवत कटुर सजात लटाई ॥
पेठा बहुत प्रकारनि कीन्हे ।
तिलनौ सबै खाद हरि लीन्हे ॥
खीरा राम तुरैया तामे ।
अरु बिन रुचि अङ्कुर जिय जामे ॥
सुन्दरकृप रतालू रातो ।
तरि है लीन्हो अबही तातो ॥
ककरी कचरा अरु कचनारयो ।
सरसनि मोन निखाद् सम्बारयो ॥
कछुक भाति केरा करि लीन्हो ।
दै कारो बहरदा रङ्ग भीन्हो ॥
वरी वरिल अरुवरा बहुत विधि ।
खारे खाटे मीठ पयोनिधि ॥
पानी ना राइ तौ पकौरी ।
उभकौरी मुगछो सुठि सौरी ॥
अमृतइ डर हरइ रससागर ।
बेसन सालन अधिकौ नागर ॥
खाटो कटो विचित्र बनाई ।
बहुत बार जेंवत रुचि आई ॥
रोटी रुचिर कनिक बेसन करि ।
अजवाइनसेंधो मिलयो धरि ॥
अवहि अङ्गा करि तुरत बनाई ।
जी भांज भजि ग्वालनि सङ्ग खाई ॥
मांड़ो मांड़ि दुहरे चुपरी ।
बहु घृत पाइ आपुही उपरी ॥
पूरीसपूरक बीरो कीरो ।
सदल सउज्जल सुन्दर सीरो ॥

सुचइ ललित लापसो सोहै ।
स्वाद सुवास सहज मन मोहै ॥
मालपुवा मांखन दधि कीन्हे ।
आइ असित रविसामर लीन्हे ॥
लावन लाड़ लागत नीके ।
सेव सुहारी घेवर घीके ॥
गुंझागुन्दे गाल मसूरी ।
मेवा मिले कपूरन पूरी ॥
अमी सम सुन्दर सजल अन्दरसो
उपर कनो अजनु जनु बरसो ॥
बहुत जलेब जलेबी रोरी ।
नहिन घटत सुधातें थोरी ॥
देखत हरषत होत है समो ।
मनहु बुदबुदा उपजि अमो ॥
फेनी घुरि मिली पयसङ्गा ।
मिस्री मिश्रोत भई एकरङ्गा ॥
साज्यो दह्यो अधिक सुखदाई ।
ता उपर फूलि मधुर मलाई ॥
खोवा खोइ अवटिन्हे राख्यो ।
सुहै मधुर मीठो रस चाख्यो ॥
बासौंधो सिखरिन अति सांधो ।
मिले मिरचि मेटति चकचांधो ॥
छाछि छवोनो भवो धुंगारो ।
झरहै उठत झारको न्यारो ॥
इतनं जतन यशोदा कीन्हो ।
तब मोहन बालक सङ्ग लीन्हो ॥
बैठे आइ हंसत दोउ भैया ।
प्रेम मुदित परुसति है मैया ॥
थार कटोरा जरित रतनके ।
भरि सब सालन विविध जतनके ॥
पहिले पनवारा परुसायो ।
तब आपुन कर कौर उठायो ॥
जेंवत रुचि अधिकौ अधिकैया ।
भोजन बहु बिसरत नहि गैया ॥

सीतल जल कपूर रस रच्यो।
सो मोहन निज कर रुचि अच्यो॥
महरि मुदित मन लाड लडावै।
ते सुख कहां देवको पावै॥
धरित छीगड़वा जल ल्याइ।
भस्यो चुनु खरिकाले आइ॥
पोरे पान पुरानें बीरा।
खात खात टुति दांतनि हीरा॥
मृगमद कनक कपूर कर लीन्हो।
बांटि बांटि ग्वालनिको दीन्हो॥
चन्दन और अरगजा आन्यो।
अपने कर बलके अङ्ग वान्यो॥
ता पाछे आपनहु लायो।
उबस्यो बहुत मखनि पुनि पायो॥
सूरदास देखो गिरिधारी।
बोलि दइ हंसि झूठ निधारी॥
यह जो वनार सुनें जो गावें।
सो निजु भक्त अभय पद पावै॥

४०

देखि सखी ब्रजते वन जात।
राहि निज सुमति सुतको छवि गौर श्याम हार हलधर गात॥
नीलाम्बर पीताम्बर ओढ़े शोभा कछु कही नहि जात।
युगल जलद युग तड़ित मनहु मिलि परस परस जोड़नहे नात॥
सीस मुकुट मकराकृतकुण्डल भलकत विवि कपाल इहि भांति।
मनहु जलद युगल रवि ता पर चन्द्रधनुषको कान्ति॥
कटि कछनी कर लकुट मनोहर गोचारण चले मन अनुमानि।
ग्वालसखा विध श्रीनन्दनन्दन बोलत वचन मधुर मुसकानि॥
चिते रही ब्रजको युवती सब आपुसही में करत विचार।
गोधनवृन्द लये सूरज प्रभु वृन्दावन गये करत विहार॥

४१

अघासुरका वध।

नन्दसुत लाड़ि खस्यो सब ब्रज जीवन प्राण।
बार बार माता कहे हो जागहु श्याम सुजान॥

ध्रुव

जसुमति लेति बलाइ भोर भयो उठो कन्हाई।
सङ्ग लिये सब सखा द्वार ठाढ़े बल भाई॥
सुन्दर वदन देखाइये हरो नैनके ताप।
नयनकमल मुख धोइये कछु करो कलेउ आप॥
माखन रोटी लेहो सरस दधि रनि जमायो।
षट्रसके मिष्टान्न सोई जेवहु रुचि आयो॥
मोसों लीजे मागिके जोइ जोइ भावे तोहि।
सङ्ग जेवहु बलराम तुमहो रुचि उपजावहु मोहि॥
तब हंसि चितये श्याम सेजतें वदन उघास्यो।
मानहु पयनिधि मथत फेन कटि चन्द्र उजास्यो॥
सखा सुनत देखन चले मानहु नैन चकोर।
युगल कमल जनु इन्दु पर हो बैठि रहे अति भोर॥
तब उठि आये कहा मात जल वदन पखास्यो।
बोलि उठे बलराम श्याम कत उठ्या सरास्यो॥
दाउ जू कहि हंसि मिले बांह गहो बैठाई।
माखन रोटी सद दह्यो हो जेवत रुचि उपजाई॥
जल अचया मुख धोइ उठे बल मोहन भाई।
गाइ लइ सब घेरि चले वन कुंवर कन्हाई॥
टेर सुनत बलरामजी आये बालक धाइ।
लै आयी सब जोरिकेंहो घरते बछरा गाइ॥
उखनि कान्ह सों कहो आजु वृन्दावन जैये।
यमुनातट तृण बहुत सुरभिगण तहां चरैये॥
ग्वाल गाइ सब लै गये वृन्दावन समुहाई।
पतिहि सघन वन देखिकेंहो हरषि उठे सब गाई॥
कोउ टेरत कोउ हांकि सुरभिगण जोरि चलावत।
कोउ कोउ हेरा देत परस्पर श्याम सिखावत॥

अन्तरयामी कहत जिय यह मोहि सिखावत टेरि ।
कान्ह कहत अबकें गह हो पुनि बोली जो फेरि ॥
कोउ मुरली कोउ बेणु शब्द शृङ्गी कोउ पूरे ।
कृष्ण कियो मन ध्यान असुर एक, बरो वस्यो अधूरे ॥
बालबच्छ बनि राखि हौं एक बेर ले जांउ ।
कछुक जनाउ आपुन पोहो अबनी रह्यो सुहाउ ॥
असुर कुलहि सङ्घारि धरनीके भार उतारौ ।
कपट रूप रचि रह्यो दनुज येहि तुरत पछारौ ॥
गिरि समान धरि अगमतन बैठ्यो वदन पसारि ।
मुख भितर बन घन नदी हो मायाछन्द करि भारि ॥
लैंठ गये मुख ग्वाल धेनु बछरा सब लीये ।
देखि माया वन भूमि रहे द्रुमद्रुम छवि कीये ॥
कहन लगे सब आपुमे सुरभि चरै अघाय ।
मानहु पर्ब्बत कन्दराहो मुख सब गये समाय ॥
सब मुख गये समाये असुर तब चोंच सकोर्‍यो ।
अन्धकार इमि भयो मानो निशि वादर जोर्‍यो ॥
अतिहि उठे अकुलाइकें ग्वाल बछ सब गाई ।
त्राहि त्राहि कहि कहि उठे हो परे कहा हम आई ॥
धीर धीर कहि कान्ह असुर यह कन्दल नाहौं ।
अनजानत सब परे अघा मुखभितर माहीं ॥
जिय त्याग्यो यह सुनतही अबको सके उबारि ।
यातें दूनो देह धरी तब असुर न सक्यो सम्भारि ॥
शब्द कस्यो आघात अघासुर टेरि पुकार्‍यो ।
रह्यो अधर दोउ चापि बुधि बन सुरति पसार्‍यो ॥
ब्रह्मद्वार शिर फोरिकें निकसे गोकुल राई ।
बाहेर आवहु निकसि कैंहो मैं करि लियो सहाई ॥
बालक बछरा धेनु सबे अति मनहि सकाने ।
अन्धकार मिटि गयो देखि जहं तहं अतुराने ॥
आये बाहिर निकसिकें मन सब किये हुलास ।
हम अज्ञान कत डरतहै हो कान्ह सदा मइ पास ॥
धन्य कान्ह धनि नन्द धन्य जसुमति महतारी ।
धन्य लयो अवतार कूखि धनि जिहि देतारी ॥
गिरि समान तनु अति अगम पन्नगको अनुहारि ।
तुम देखत पल एकमेंहो मार्‍यो दनुज प्रचारि ॥

हरि हंसि बोले बैन सङ्ग जो तुम नहि होते ।
तुम सब कियो सहाय भयो तब कारण मोते ॥
हमहु तुमहु मिलि बैठिके बन भोगो करे जाई ।
वंशीवट भोजन बहुत हो जसुमति दयो पठाई ॥
ग्वाल परम सुख पाई कोटि मुख करत प्रशंसा ।
कहा बहुत जो भयो सपूतये कुहवंसा ॥
चढ़ि विमान सुर देखहीं गगन रहे भरि छाई ।
जै जै धुनि नभ करनहै हो हरषि पुहुप बरसाई ॥
ब्रह्म सुनी यह बात अमर घर बरनि कहानी ।
गोकुल लीन्हो जनन कौन यह मैं नहि जानी ॥
देखों इनको खोज लै सोच पर्‍यो मनमाहि ।
सूरश्याम ग्वालनि लिये चले वंशीवटको छांहि ॥

वत्सहरण

ब्रह्म-मोहनलीला

बिलावल

हरष भये नन्दलाल बैठ तरु छाइकी । ध्रुव
वंशीवट अति सुखद और द्रुमपाश चहुं है ।
सखा लये तह गये धेनु बन चरत कहुं है ॥
बैठि गये सुख पाइकें ग्वालबाल लये साथ ।
कांवरि झोरी लये सखाहो आनि नवायो माथ ॥
आनन्द दये मधु छाक तुरत वृन्दावन आये ।
विजन सहस्र प्रकार यशोदा बनें पठाये ॥
श्याम कह्यो बन चलतही माता सों समुझाई ।
इततेंबे आये सबे हो देखतही सुख पाई ॥
कान्ह देखि मधु खाक फुलक अङ्ग अङ्ग बढ़ायो ।
हरि हंसि बोलत बैन प्रेम जननी पहुंचायो ॥
मोकें पहुंचे आय तुम भलो बन्यो संयोग ।
बार बार कहि सखनि सोंहो आजु करें सुखभोग ॥
बनभोजी विधि करत कमलके पातम गाये ।
तोरि पान पलास सरस दो नावहु लाये ॥
भांति भांति भोजन धरे दधि लवनी मिष्टान ।
बन फल लये मंगायकें हो लागे रुचि करि खान ॥

वन भोजन हरि करत सङ्ग मिलि सुवल सुदामा।
श्याम कुंवर प्रवीन मधुर सुत अरु श्रीदामा॥
कान्ह सबनि मिलि खातहैं ले ले कौर छिड़ाय।
औरनि देत बुलाइकें हो उबकु आपु मुख नाय॥
ब्रह्मा देखि विचारि सृष्टि कोउ नई चलाई।
मोहि पठयो जेहि सों पिताहि कछु केहीं जाई॥
देखों धौं यह कौनहैं बाल बछ हरि लेउं।
ब्रह्मलोक ले जाउगो हो येहि बुध करि दुख देउं॥
अन्तरयामी नाथ तुरत विधि मनकी जानी।
बाल है दिये पठे धेनु वन कहां हिरानी॥
जहां तहां वन ढूंढ़िकें फिरि आये हरि पास।
सखा सबनि बैठारि कैं हो आपुन गये उदास॥
हरि ले बालक बछ ब्रह्मलोकहि पहुचायो।
फिरि आवें जो कान्ह कछु कोउ नहीं बतायो॥
जान्योई सबमि तबे ब्रह्मा ले गयो हराय।
प्रभु तबहो रङ्गन तेहि रूपको हो बालक बछ बनाय॥
तात कीन्हे और ब्रह्म हृदिनाल उपायो।
अपनों करि तेहि जानि कियो ताको मन भायो॥
उचाटन मारण समर्थ मह हरि कीनो ध्यान।
अनजाने विधि वह करो हो लये रचे भगवान॥
उहे बुधि उहै प्रकृति उहै पौरुष तन सबके।
वहै नाम वहै भेष धेनु बछरा मिलि रबके॥
श्याम कह्यो सब सखनि कों ल्यावहु गोधन फेरि।
सन्ध्याको आगम भयो हो ब्रज तन हांक्यो घेरि॥
सुनत ग्वाल ले धेनु चले ब्रज वृन्दावनतें।
कान्हहि बालक जानि उरे सब ग्वालहि मनतें॥
मध्य किये ले श्यामकों सखा भये चहुं पास।
ब्रज धेनु आगी दिये हो आवत करत विलास॥
बाजत वेणु विषाण सब अपने रङ्ग गावत।
मुरली धुनि गोरभि चलत पग धुरि उड़ावत॥
मोर मुकुट शिर सोहई मनहु चन्द्र कन सीत।
आसपास नाचत सखा हो बिच हरि गावत गीत॥
देखि हरषि ब्रजनारी श्याम पर तन मन वारति।
एकटकरूप निहारि रही मेटति चित आरति॥
कहां कहे छवि आजुको मुख मण्डित खुरधूरि।
मानहु पूरण चन्दमा हो कुहु रह्यो आपुरि॥
गोकुल पहुचे जाय गये बालक अपनो घर।
गोसुत अरु नरनारि मिलि अति है करि आदर॥
प्रेमसहित वे मिलत हो जो उपजाये आशु।
जसुमति मिलि सुतसों कहति है रैनि करत
किहि काशु॥
मे घर आवन कह्यो सखा सङ्ग कोउ न आवे।
देखत वन अति अगम डरोंवि मोहि डर पावे॥
बार बार डर लाई के ले बलाई पछि ताय।
कालिहुते वेह सवे हो ल्यावहि गाई चराय॥
यह सुनिकें हरि हंसे कालि मैरो जाय बलैया।
भुख लगी मोहि बहुत तुरत हो दे कछु मैया॥
माखन दोनो हाथकें यह तब लो तुम खाहु।
तातो जल है धामको हो तनका तेल सो न्हाहु॥
तब जसुमति गहि बांह धंहे हरि ले नहवाये।
राहिणो करि जेंवनारि श्याम बलराम बुलाये॥
जेंवत अति सुख पावहीं पहसति माता हेत।
जेइ उठे अचवन लिया हो दुहुं करबोरा देत॥
श्याम हो नींदे देखि माता रचि सेज बिछायो।
ता पर पोढे लाल अतिहि मन हरष बढ़ायो॥
अघ मर्द्दन विधि गर्व्व हरत करत न लागो बार।
सूरदास प्रभुके चरितको पावत कोउ न पार॥

२

ब्रजकी लोला देखि गर्व विधि को गयो। भुव
त्रिभुवन नायक आनि भये गोकुल औतारा।
खेलत ग्वालनि सङ्ग रङ्ग आनन्द मुरारि॥
घर घरतें छाके चलो मानसरोवर तोर।
नन्दनन्दनके सङ्ग चलेहो बालक सखा अहीर॥
भोजन सकल मंगाई सखनिके आगे राख्यो।
खाटे मिठे स्वाद सबे रस ले ले चाख्यो॥
रुचि सों जेंवत ग्वाल सब ले ले आपुन खात।
भोजनको सब स्वाद लेहो कहत परस्पर बात॥

देखत गण गन्धर्व्व सकल सुरपुरके वासी।
आपुसमें वे कहत हंसत येई अविनासी॥
देखि सबु अचिरज भये कह्यो ब्रह्म सो जाई।
जाकों अविनासी कहैं हो सो ग्वालनि सङ्ग खाई॥
येहि सुनि ब्रह्म चल्यो तुरत वृन्दावन आयो।
देखि सरोवर सलिल कमल तोहि मध्य सोहायो॥
परम सुभग जमुना बहै तहां रहै त्रिविध समीर।
पुष्प लताद्रुम देखि कैंहो थकित भयो मति धीर॥
अति रमणीय कदम छांह रुचि परम सोहाई।
राजत मोहन मध्य अवलि बालक छवि पाई॥
प्रेममगनह्वै परस्पर भोजन करत गोपाल।
लावहु गोसुत हेरि कैंहो प्रभु पठये है ग्वाल॥
वन उपवन सब ढूंढ़ि सखा हेरि फिरि आये।
बछरा भये अदृष्ट केहु खोज तुमहि पाये॥
सब सखा बैठे रहो मैं देखा धौं जाई।
बछहरण हरि जानि जियहो आप गये बहराई॥
जब गोविन्द गये दूरि बालनि हर्यो विधाता।
लैहे तुरत मंगाई आयके जैहो ताता॥
ब्रह्मलोक ब्रह्मा गयो लै बालक बछरा सङ्ग।
प्रभुको लोला गमो नहो विधि कियो सर्व्व अति भङ्ग॥
तब चिन्तामणि चितै चित्त येक बुद्धि विचारी।
बालक बछ बनाई रचे जोहो अनुहारी॥
करत कुलाहल सब गये व्रजघर अपने धाई।
अति आदर करि करि लियेहो अपनो अपनो माई॥
ब्रह्मा कियो विचार माई निज गोकुल देखौं।
करि है शोक सन्ताप जाइ पितामाताहि पेखो॥
आये तहं विधि नाचते घर घर देख्यो धाई।
सन्ध्या समै होत कौतुहल जहां तहां दुहि गाई॥
की यह गोकुल और किधो मैंहो भ्रम भूल्यो।
येहि अविनाशी छांडि ज्ञान मेरो भ्रम भूल्यो॥
अन्तरयामी जानि धौं हरे बछ लै आई।
जगत पितामह संभ्रमो हो गये लोक फिरि धाई॥
देख्यो जाइ जगहि बाल गोसुत जहं राख्यो।
विधि मन अचरज भयो बहुरि व्रजकों अभिलाख्यो॥

छिनु भूतल छिनु लोकमें छिनु आवे छिनु जाई।
एसेहि करत बरष दिन बीते थकित भये विधि पाई॥
तब जान्यो हरि प्रकट ज्ञान चितमें जब आयो।
धिग् धिग् मेरो बुद्धि कृष्ण सों बैर बढ़ायो॥
लै गोसुत गोपाल शिशु शरण गयोहो साथ।
चारिहु मुख अस्तुति करे प्रभु क्षमो मोहि अपराध॥
अन जानतहो करो तुमहि सों मैं बरिआई।
ये मेरे अपराध क्षमहु त्रिभुवनके राई॥
ज्यों बालक अपराध शत जननी लेति सम्भारि।
शरण गये राखत सदा हो औगुण सकल बिसारि॥
ज्यों खद्योत विजहि ताहि क्यों तिमिर न सावै।
दीपक बहुत प्रकाश तरणि सम क्यों कहि आवै॥
मैं ब्रह्मा एक लोकको ज्यों गूलरि फल जीव।
प्रभु तुम्हारे ये करोंल प्रतिहो कोटि ब्रह्मा अव शिव॥
मिथ्या यह संसार और मिथ्या यह माया।
मिथ्या है यह देह कहोक्यों हरि बिसराया॥
तुमि बिनु जान जीव सब उतपति प्रलय समाहि।
शरण मोहि प्रभु राखिये हो चरणको छाहि॥
कोजे सलि व्रजरेणु देहु वृन्दावन वासा।
मांगो इहै प्रसाद और नाहो मेरे आशा॥
जोइ भावे सोइ करोनता सलिल द्रुम गेह।
ग्वालबालको भृत्यकरा हो मनहि सत्यव्रत देह॥
जो दरशन नर नाग अमर सुरपति हु न पाया।
खोजत युगपरे वोति अन्त मोहन देखायो॥
यह व्रजपारम नित्य है मैं अब समुझो आइ।
वृन्दावन रजरह्वै रहों मोहि ब्रह्मलोक न सोहाई॥
भवगत वार वार शेष ग्वालनिके गांउ।
आजुनियो कछु जानिभक्त करि मेदर पुरांउ॥
अब मेरे निजु ध्यान बहै रहो मूढ़नित खाई।
और विधाताको दिये होमें नहि छाड़ौं पाई॥
तब प्रभु बोले आप बचन मेरो अवमानो।
और कहि विधि करों तुम हितौ कोन सयानो॥
तुम ज्ञाता कर्म धर्मके तुमते सब संसार।
मेरी माया अति अगम कोहो कोउ न पावे पार॥

श्रीमुखवाणी कहत बिलम्ब अब नेकु न लावहु ।
ब्रजपरिक्रमा करहु देहके पाप नशावहु ॥
तुरत जाहु कहि लोककों विधिकीनी मनुहार ।
ब्रह्मा करि अस्तुत चले हो हरि दीनो उरहार ॥
धनि बछरविकि वान जिनहि तें दरसन पाये ।
उरमेरो भयो धन्य कृष्ण माला पहिराये ॥
धनि जसुमतिजि निवसकिये अविनाशी अतोरि ।
धनि गोपे जिनके सदन हो माखन खात मुरारि ॥
मथुरा आदि अनादि देहधरि आपुन आये ।
धनि देवे वसुदेव पुत्र मागि तुम पाये ॥
चारि वदनमे कथा कहौं तुह्मारि महिमा गाई ।
सहमा जन निसदिन रटे होत उनगाइ माई ॥
गाइ चराते ग्वालन प्रेम करत देहि ध्यान लगायो ।
ते ब्रजवासिन सङ्ग रहत अति प्रेम बढ़ायो ॥
वृन्दावन ब्रजको महत्वका पेंवर ज्यों जाई ।
चतुरानन पद परसिके हो गयो लोक सुख पाई ॥
हरि लीन्हो अवतार पार सारद नहि पावे ।
सतगुरु कृपा प्रताप कछुकता तेकहि आवे ॥
सूरदासके से कहे महपिति न अवतार ।
शेष सहसमुख जपत सदा हो शिव न पावत पार ॥

२

माधोज जोजनघें बिगरे ।
सुनि कृपान करुणामय कबहु प्रभु नहि चित्त धरे ॥
जासि सुजो जननी जठरगत शत अपराध करे ।
तउतन यहत तोषि पोषि चित विकसित अङ्कभरे ॥
द्विज रसना नार्दलि दुखित होत तबतो रिस
काहि करे ।
छमिकतको भाव सुशील सुशीतल रिपुतन तापहरे ॥
धरणी धंसि हल हतन कृषीकरि वैर बीज सचरे ।
सो सनमुख सहित सतोगुण ससिवह फरषि फरे ॥
करे नक्षरण अन्त आज कहि कहि विधि चरण परे ।
यह कलिकाल वनत नहि मोसो सूर शरण हि धरे ॥

अथ कालीदमन लीलावली

बिलावल

नारद कहि समुझाइ कंस नृपराजकों ।
तब पठयो ब्रजदूत पुहुपके काजकों ॥ ध्रुव
तब पठयो ब्रजदूत सुनी नारद सुखवाणी ।
बारबार विधिराज कंसमुख अस्तुति मानी ॥
धन्य धन्य मुनिराज तुम भलो मन्त्र दियो मोहि ।
दूत चलायो तुरतहो हो अबहि जाइ ब्रजजोहि ॥
यह कहियो तू जाइ कमल नृप कोटि मगायो ।
पत्र दिया लिखि हाथ कहो बहु भांति जनायो ॥
कालि ककन नहि आवहो तो तुमकों नहि चैन ।
सीर नवाइ करजोरि केंहो चलेउ दूत सुनिबेन ॥
तुरत पठायो दूत नन्दघर हो मैं पायो ।
कमल पुहुंपके भार कंसन्टप वेगि मगायो ॥
कालि न पहुंचे आइके तब बसि हो ब्रजलोग ।
गोकुलमें जे सुख किये हो ते करि हो भोग ॥
जौ न पठावहु पुहुप कहोगी तेतो मोकों ।
ठारिगे नृप तेरे वसन उपहो नहि ओकों ॥
यह जानु गोपनि समेत पकरि मगावहु कालि ।
पुहुप वेगि पठाये बने हो जोरे वसो ब्रजपालि ॥
यह सुनि नन्द डराइ अतिहि मन मन अकुलाने ।
यह कारज क्यों होइ का न अपनो करि जाने ॥
और महर सब बोलिकें ले कैसो करे उगाइ ।
कालि प्रात ब्रजमारि है हो बांधि सबनि ले जाइ ॥
वन मोले को नाम धर्यो कहि पकरि मगावन ।
तातें अतिभयो सोच अलगत मुनि सोहि भगवन ॥
यह सुनि सिरनाये सबनि मुखहि न आवे बात ।
कहो कहा अब कीजिये हो कैसे मिटि है घात ॥
के बालकनि मगाइ जाहि ले आन भूमि पर ।
वक मेको नेजाइ श्याम बलराम वचे धर ॥
मुहरि सबे ब्रजनारिसों कहि पुछति कोउ पाउ ।
जनमहितें करवर टरोहो अबके मही वचाउ ॥
कोसकहे दे दे दाम नृपति जितनो धन चाहै ।
कोउ कहे जैये शरण सबे मिलि बुधि अवगाहै ॥

ऐसो सोचत सब पगिरइके कहुं नहीं निरवरे।
व्रज भीतर नन्द भवनमें हो घरघर इह विचरे ॥
अन्तरजामि जानि नन्दसों बूझत बात।
कहा करत हो सोच कहो कछु मोसों तात ॥
कहा कहों मेरे लाड़ले कहत बड़ो सन्ताप।
मथुरापतिके जिया कछु हो तुम पर उपज्यो पाप ॥
कालीदहके पुहुप मागि पठये हमसो वान।
तबते मो जिय सोच जबहि तें बात परी सुनि ॥
जो नहि पठवहि कालिहा तौ गोकुल देउ लगाइ।
मो समेत नन्द तुम हो कालिहो लेइ बंधाइ ॥
यह कहि पठयो कंस तबहि तें सोच पर्यो मोहि।
प्रथम पूतना आई बहुत दुःखदै जु गइ तोहि ॥
तृणावर्तके घात तें बहुत बच्यो दुख पाय।
सकटा केसी तें बच्यो हो अब काकरे सहाय ॥
अघा उदर तें बच्यो बहुत दुख सह्यो कन्हाइ।
वका रह्यो मुखवाइ तहा भयो धर्म सहाइ ॥
इतने करवर है टरे देवनि करे सहाय।
तबते अब गाढ़ो पर्योहो मोको कछु न सुहाय ॥
बाबा तुम हो कहत कौनधों तोहि उबारे।
सोइ व्रज भीतर प्रकट कंस गहिकेस पछारे ॥
यह जब हो हरि सों सुनी नन्द मनहि पति आई।
गगन गिरत जो सङ्गर्यो हो सो करिलेइ सहाई ॥
नन्दहि यह समुझाइ कह उठि खेलन धाये।
जहं व्रजबालकहु है तुरत तहं आपुन आये ॥
गोपसुतनिसों यह कह्यो खोन खेद मगाइ।
श्रीदामा यह सुनतही हो घरतें ल्यायो जाइ ॥
सखा परस्पर मार करें कोउ कानि नमाने।
कौंरवड़ो को छोट भेद भेदा नहि आने ॥
खेलत यमुनातट गये आपुहि ल्याये ठारि।
श्रीदामाके हाथ तें लै वे गेंद कालीदह डारि ॥
श्रीदामा गहि फेट कह्यो हम तुम एक जोटा।
कहा भयो जो नन्द बड़े तिनके तुम ढोटा ॥
खेलनमें कहा छोटवड़ो हमहु महरके पूत।
गेंद दियेंही पे बनेहो छाड़ि देहु मति धूत ॥
तुमसों धूत्यो कहा करों धयो नहि देखो।
प्रथम पूतना नारिका सकटा सुर पेख्यो ॥
तृणावर्त्त पटक्यों शिला अघा वका सम्हारि।
तुम तादिन सङ्गही रहे अवधूत काइन सम्भारि ॥
ठेटे कहा बनात कंसको कमल देहु अब।
कालिहि पठये मांगिहै पुहुप अब ले देहो जब ॥
बहुत अचगरो जिनि करो अजहुं तजो भरारि।
पकरि कंस लै जाइगो हो कालिहि परे सम्भारि ॥
कमल पठाई कोटि कंसको दोष निवारो।
तुम देखत पुनि जाउ कंस जीवन धरि मारो ॥
फेट छिंयो तब झटकिके चढ़े कदम पर जाई।
सखा हंसत ठाढ़े सबहो मोहन गये पराई ॥
श्रीदामा चले रोइ जाइ कहों नन्द आगे।
गेंद लेहु तुम अहि मोहि डर पावन लागे ॥
यह कहि कूद पार सलिल कीनें नटवर साज।
कोमल तनु धरिके गयेहो जहां सोवत अहिराज ॥
येहि अन्तर नन्दघरनि कह्यो हरि भूखे ह्वै हैं।
खेलततें अब हि भूख कहि मोहि सुनै हैं ॥
अति आतुर भीतर चल्यो जेवन कारण आप।
छोंक सुनत कुसगुन कह्यो हो कहा भयो यह पाप ॥
आजिर चलो पछि तात छोक को दोष निवारण।
मांजारी गई कांटित वहि निकसत हो वारण ॥
जननी जिय व्याकुल भई कान्ह अबै लगाय।
कुसगुण आजु बहुत भये हो कुशल रहे दोउभाई ॥
श्याम परे दह कूदि मात जिय गयो जनाई।
आतुर आये नन्द घरहि बूझत दोउ भाई ॥
नन्दघरनी सों यों कहत मोकों लगत उदास।
यह अन्तर कूदि तहं गयेहो जहं कालीको वास ॥
देख्यो पन्नग जाइ अतिहि निर्भय सोवत।
बैठी तहं अहि नारि उरा बालकके जोवत ॥
भागि भागि सुत कौनको अति कोमल तेरो गात।
एक फूंकको नहो तूं हो विष ज्वाला अति तात ॥
तब हरि कह्यो प्रचारि नारि पति देहि जगाई।
आयो देखत याहि कंस मोहि दियो पठाई ॥

कंस कोटो जर जांहि मेरे लखो एक फुकार।
कह्यो करि फिरि जाहि तुं हो बालक सुकुमार ॥
येहि अन्तर सङ्ग सखा जाइ ब्रज नन्द सुनायो।
हम सङ्ग खेलत श्याम जाइ दह माझ धसायो ॥
बूड़ो गयो उचक्यो नहो ता बीतहि बड़ो बेर।
कूदि पर्‍यो चढ़ि कदम तेंहो खबरिन करो सबेर ॥
याहि याहि करि नन्द सुनत दौरे यमुनातट।
जसुमति सुनि यह बात चली रोवति तोरति लट ॥
ब्रजवासी नरनारी सब गिरत परत चले धाई।
बूढ़्यो कान्ह सबनि सुनोहो अति आकुल मुरझाई ॥
जहं तहोरो पुकार कान्ह विनु भयो उदासी।
कौन काहि सों कहै अतिहि आकुल ब्रजवासी ॥
नन्द यशोदा अति विकल परत यमुनामे धाई।
और गोप उपनन्द मिलिहो बांह पकरि ले आई ॥
धेनु फिरोति बिललावि वछ थन कोउ न लगावै।
नन्द यशोदा कहत कान्ह विन कौन चरावै ॥
यह सुनि ब्रजवासी सबै परे धरणी अकुलाई।
हाय हाय करि कहत सबैहो कान्ह रह्यो कहां जाई॥
नन्द पुकारत रोई बुढ़हि मोकों छड़ायो।
कछु दिन मोह लगाई जाई जल भीतर मछायो।
यह कहिकों धरणी गिरत जनु तरु काटि गिराई।
नन्दघरनी तब देखि कोंहो कान्हहि टेरि बुलाई ॥
निठुर भये सुत आजु तातको छोहन आरति।
यह कहिकें अकुलाइ जलहि भीतरकों धावति ॥
परति जाइ यमुना सलिल गहि आनति ब्रजनारी।
नेक रहौ सब सरहि गोहो कोहै जीवन हारि ॥
श्याम गयो जल बूड़ि वृथा ध्रुत जीवन जगको।
शिरफोरति गिरिजाति आभूषण तोरति अङ्गको ॥
मूरछि परो तन सुधि गइ प्राण रहो कछुं जाय।
सुधर आए धाइ कोंहो जननी गइ मुरझाय ॥
नाक मूदि जल सोचि जननी करि टेक्यो।
बार बार झझकोरो नेकटन धरत न छेक्यो ॥
कहत उठि राम सो वनहि तज्यो लघु भ्रात।
कान्ह तुमहि विन रहत नहिहो तुमसो क्यो रहि जात॥

अब तुमहु जिनि जाहु सखा एक देहु बताई।
कान्हहि आवे जाहि आजु अभ्रसेरि कराई ॥
छाक पठाउ जोरि कै मन शोकसमाज।
घृत कछु खायो नहो हो भुखेहै गइ सांझ ॥
कबहुं कहति वन गये कबहुं कहि बरहि बतावति।
कहं खेलतेहो लाल टेरि यह कहति बुलावति ॥
जागि परी दुख मोहि तें रोवत देखे लोग।
तब जान्यो हरि दहगिरयो हो उपयोग
हरि वियोग ॥
धूम धूम नन्दहि कह्यो और कितने दिन जोहो।
मरत नहो मोहि मारि बहुरि ब्रजवासो हो कोहो ॥
ऐसे दुखमे मदन सुख मन करि देखहु ज्ञान।
आकुल धरणी गिरि परे हो नन्द भये विनु प्राण ॥
हरिके अग्रज बन्धु तुरतहो पिता जगायो।
माताकों परबोधि दुहुनि धीरज धरवायो ॥
मोहि दुहाइ नन्दको अबहो आवत श्याम।
नाथि नाग ले आइहै हो तब कहियो बलराम ॥
हलधर कह्यो सुनहि नन्द जसुमति ब्रजवासी।
वृथा मरत के हि काज मरे क्यों वह अविनाशो ॥
आदिपुरुष मै कहत हो गये कमलके काज।
गिरिधरको तुम हरत हो हो व क्रूटे बनि शिरताज ॥
अभी अविनाशी आहि धरो धीरज अपन मन।
कालो छेदे नाक लोये आवत नृत्यत फन ॥
कंसहि कमल पठाइहो कालोहि पढ़दे दोप।
एक घरो धीरज धरौ हो बैठो सदतरु नीप ॥
सुनिहो अहिकी नारी श्याम अहि क्यों न जगावै।
बालक बालक करति कहा पति क्यों न उठावे ॥
कहा कंस कहा डर यह अबहुं दिखाउ तोहि।
दै जगाई मै कहत हों तुं नहि जानति मोहि ॥
से जानति हों बने फुंक एकमे जरि जहै।
छोटे मुख बड़ी बात कहत अबहो मरि जै है ॥
छोहन गति तोहि देखि मोहि कालो
बालक आहि।
जगपति सों सरवर करोहो तु बपुरो को आहि ॥

बपुरो मोसों कहति ताहि बपुरो करि डारो ।
एक लात सों चांपि खसम तेरे कों मारो ॥
सोवत कीहु न मारिये चलि आई यह बात ।
खगपति कों मैंहो कियोहो कहति कहातु वात ॥
तुमहि विधाता भये और कर्त्ता कोउ नाहो ।
अहि मारोगे आपु तन कसे तन चलिवाहो ॥
कहा करों कहत न बने अति कोमल सुकुमार ।
देतो अबहि जगाइ कोंहो जरि बरिहे हो क्षार ॥
तुं धौं देहि जगाइ तोहि दोष कछु नाहो ।
परी कहां तोहिहारि पाप अपने जरिजांहो ॥
हमको बालक कहनेहै आप बड़ेको नारि ।
बादतहै बिनु काजहो हा वृथा बढ़ावति रारि ॥
तुंहो न लेहि जगाइ बहुत जो कहत ढिटाई ।
फुलि मरिहे पछि ताहि मात पित तेहो भाई ॥
अजहुं फिरि करि जाहि तूं मार लई सुख कौन ।
पांच बरसको सात कोहो आगो तोको हैन ॥
फिर कोनोरो दे गारि आपु महि जाइ जमायो ।
पगसों चांपो पूछ सबै औ मान भुलायो ॥
चरण मसकि धरणो दलो उरग गयो अकुलाई ।
कालो मनमे तब कह्योहै यह आयो खगराई ॥
देख्यो नेन उघारि तहां बालक एक ठाढो ।
विषधर भटको पुंछि पटकि सहमा कन काढो ॥
बार बार जन घात करि विष ज्वालाको भारो ।
सहसौ फनि फनि फूंकरेहो नेकन तनहि लगारि ॥
तब कालो मन कहत पूंछि चांपो येहि मेरो ।
मन मन करत विचार लेन याके मे घेरो ॥
दाव पर्यो अहि जागिके लियो अङ्ग लपटाई ।
चरण लपेटे शिखा लोहो येहि अति करो ढिटाई ॥
कहति उरगको नारो गव अतिहा करि आयो ।
आइ पहुंच्यो काल वस्य पग दर्लाह चरायो ॥
अहि नारिनसो यह कहो मोहि समसरि कोउ नाहि ।
एक फूंक विषज्वाल कोहा जलड़ंगर जरि जाहि ॥
गर्व वचन प्रभु सुनत तुरतहो तनु बिलाखो ।
हाय हाय करि उरग बारहो बार पुकाखो ॥

शरण शरण अब मरतहो में नहि जान्यो तोहि ।
चढ़ बढ़ात अङ्ग फटहो हो राखु राखु प्रभु मोहि ॥
शरण शरण धुनि सुनत लियो प्रभु सहुबाई ।
क्षमहु मोहि अपराध न जाने करो ढिटाई ॥
ब्रजमे कृष्ण अवतार होत जानो प्रभु आज ।
बहुत कियो फणघात मैंहो वदन दिखावन लाज ॥
रक्षा आनि इहि ठौर गरुड़को त्रास गासांई ।
बहुत कृपा मोहि करो दरस दोना जगसांई ॥
नाक फारि फनपर चढ़े कृपा करो देवराई ।
फन फन प्रति प्रति चरण धरेहो नृत्यत हरस बढ़ाई ॥
धन्य कृष्ण धनि उरग जानिजग कृपा करि हरि ।
धन्य धन्य दिन आज दरसमां पाप गये जरि ॥
धन्य कंस धनि कमल य धन्य कृष्ण अवतार ।
बड़ो कृपा उरगहि करोहो फण प्रति चरण विहार ॥
शेष करत जिय गर्व अवको भार शोस धरि ।
पूरण ब्रह्म अनन्त नामको सक पार करि ॥
फनफन प्रति अति भार भर अमित अन्त मे गात ।
उरगनारी कर जोरि कोहा कहति कृष्णसों बात ॥
देखत व्रज नरनारो नन्द यशादा समेत सब ।
सङ्कर्षण सों कहत सुनहा सुन कान्ह नहा अब ॥
येहि अन्तर जन कमल बिच उठ़ा कछु अकुलाई ।
रोवततं बरजे सबै हो मोहन अग्रज भाई ॥
आवतहैं यह श्याम पुष्प कालो शिर लाने ।
मात पिता व्रज दुखित जानि हरि दरशन दोने ॥
नृत्यत कालो फननिपर दिव दुन्दुभि बजाई ।
नटवरवपु काछिरहै हो सबदेखो वह भाई ॥
आरत देखे श्याम हरस कोना व्रजवासो ।
सोकसिन्धु गयो उतरिसिन्धु आनन्द प्रकाशो ॥
जलबूड़त नौकामिले ज्यों तन होत आनन्द ।
त्यों व्रज जन हुलसे सबेहो आवत है नन्दनन्द ॥
सुत देखत पितु मात रोम गद्‌गद पुलकित भये ।
उर उपज्यो आनन्द प्रेमजल लोचन दुहु गये ॥
दिव दुन्दुभि बजावहो फनप्रति नृत्यत श्याम ।
व्रजवासो सब कहत है हो धन्य बलराम ॥

सुर अमर साधनौ सहित जे मुनि सुख गाई।
बड़ी कृपा यह उरगको हो ऐसी काहु न पाई॥
कृपा करो प्रह्लाद खम्भते प्रकट भये तब।
कृपा करो गजराज गरुड़ तजि धाइ गये जब॥
द्रुपदसुताकों करी कृपा वसन समुद्र बढ़ाइ।
नन्द यशोदाहि जो कृपा हो सोइ कृपा अहिराइ॥
चरणचिह्न दरशन करत गहिरहै तेरे पाइ।
उरग दीपकों करि यशाहो कह्यो करहु सुख जाइ॥
प्रभु याते सुख कहा जे चरण फन फन प्रति परसे।
रमा हृदे जो वसत सुरसरी शिरवहै हरसे॥
जनम जनम पावन भयो फन पदचिह्न धराई।
पाइपखो उरगिनी हित हो चलगो दीप समुदाई॥
कालो पठयो दीप सुरनि सुरलोक पठाये।
आपन आये निकसि कमल सब तटहि धराये॥
जलते आये प्रकाश तब मिले सखा सब आई।
मातपिता दोउ धाइके हौलीनो कण्ठ लगाई॥
केरि जन्म भयो काह वाहन लोचन भरि आये।
जहां तहां व्रजगोपनारी आतुर ह्वै धाये॥
कहुन भरि भरि मिलत है मनोति धन पाय।
मिलो धाइ रोहिणी जननी चुम्बति लेति बलाय॥
सखा दौरिकें मिलगये हरि हमपर रिसकरि।
धनि माता धनि पिता धन्य सोदिन जेहि अवतरि॥
तुम व्रजजीवन प्राणहो यह सुनि हंसे गोपाल।
कूंदिकर चढ़ि कदम तेहो यह तुम देखत ये ख्याल॥
कालो ल्याये नाथि कमलताहो लगाये।
तैसो कहि खये श्याम प्रकट सो हमहो दिखाये॥
कंस मरैगवि विसनव भइ हम मानी व्रजराज।
सिहेनि कोकौना भलोहो कहावड़ो गजराज॥
हरि हलधर तब मिले हंसे मन हो मनदोउ।
बन्धु मिलत सब कहत भेद नहि जाने कोउ॥
माता पिता व्रजगोप सोंहरि कह्यो नन्दलाल।
आजुरहो वसि सब इहांहो मेटहु दुख जञ्जाल॥
सुनि सब हिन सुखकियो आजु वसिये यमुनातट।
शीतल सलिल सुगन्ध पवन सुखतरु वंशीवट॥
नन्दघरतें मिष्टान बहुत षट्रस लिये मगाइ।
महर गोप उपनन्दजिहो सबकों दियो बढ़ाइ॥
दुखकिन्हो सब दूरितुरत सुखदियो कर्णागइ।
हरस भये सबलोग कंसके भय विसराइ॥
कमलकाय व्रजमारतो किमनों लेइ गलाइ।
नृपगजको अवतार कहा होप्रकठ्यो सिंहकहाइ॥
नन्द कह्यो करि काल कंसकों कमल पठावहु।
और कमल जलधरहु कमल कोटिक दे आवहु॥
यह कहियो मेरो कहो कमल पठाये कोटी।
कोटि इ कमल हौ धरे हो यह विनती एक छोटि॥
अपने सम जे गोप कमल तेहि साथ चलाये।
मन सबके आनन्द कहो जलतें वचि आये॥
खेलत खात अन्हातहो वासर गयो विहाय।
सूरश्याम व्रजलोगकों हो जहां तहां सुखदाय॥

अथ चीरहरण-लीला

बिलावल

नन्दनन्दवर गिरिवरधारी।
देखत रीझी घोषकुमारी॥
मोर मुकुट पीताम्बर काछे।
आवत देखे गायन पाछे॥
कोटि इन्दु छवि वदन विराजे।
निरखि अङ्गप्रति मनमथ लाजे॥
रविशत छवि कुण्डल नहि तुले।
दमन दमक दूति दामिनी मूले॥
नैनकमल मृगशावक मोहै।
शुकनासा पटकों कोहै॥
अधर विम्बफल पटतर नाहो।
विद्रुम अरु वन्धुक लजाहो॥
देखत रीझि रहो व्रजनारी।
गइ गेहकी सुकृति विसारी॥
यह मनमे अनुमान कियो तब।
जप तप संयम नियमकरे अब॥

बारवरस वितांहि मनावति ।
नन्दनन्दन पति देव सुनवति ॥
तनुतमें तप साधन कीजे ।
शिवसों मागि कृष्णपति लीजे ॥
वरस दिवस को नेम लियो सब ।
बहुरि सेवहु मनवचक्रम अब ॥
दृढ़ विश्वास व्रतहि जो कीन्हो ।
गौरीपतिपूजा मन दीन्हो ॥
षड़दशसहस्र जुरी सुकुमारी ।
व्रत सबतिरीके तनु धारी ॥
प्रात उठे यमुनाजल न्हावें ।
शीतभीत कहां आदि न मोरें ॥
पतिके हेत नेम व्रतसाधें ।
शङ्करसों यह कहि अवराधें ॥
कमल पत्र तू मान चढ़ावें ।
नैन मुंदि यह ध्यान लगावें ॥
हमको पति दीजे गिरिधारी ।
बड़े देव तुम हो त्रिपुरारि ॥
और कछु नहि तुम सो मागी ।
कृष्ण हेत यह कहि पां लागी ॥
ऐसे हि करत बहुत दिनवीते ।
प्रभु अन्तरजामी मनचीते ॥
यक दिवस आपुन आये नहां ।
तब तरुणी अस्नानकरति जहां ॥
वसन धरे जलतीर उतारी ।
आपुन जलपैठी सुकुमारी ॥
कृष्णयह अस्नान करें जहां ।
सबके पाछे आपुन है तहां ॥
चोहत पोढ़ि प्रेम अतिवाढ़ी ।
चकित भई युवती फिरि ठाढ़ी ॥
देखे नन्दनन्दन गिरिधारी ।
व्रतफल प्रकट भये वनवारी ॥
सकुचि अङ्ग जल बैठि सुकावें ।
बार बार हरि अङ्गमनावें ॥

लाज नाहि आवत है तुमको ।
देखत वसन विना सब हमको ॥
हंसत चले तब नन्दकुमार ।
लोगनि सुनवनि करति पुकार ॥
हार चीर लै चले पराइ ।
हांकि दियो कहि नन्द दुहाइ ॥
भारि सब भूषण तब भागी ।
श्याम करन अब ढिटोलालागी ॥
भागी कहां यशोमति मोहन ।
पाछें आइ गइ तु अगोहन ॥
तनको सुधि सम्भार कुछ नाही ।
वसन आभूषण पहिरत जाही ॥
चीर कढ़्यो कञ्चुकी कन्द छूटे ।
लेतन वसन तहार नटूटे ॥
प्रेम सहित मुख खीझत जाहीं ।
झूठे बार बार पछिताही ॥
गइ सबै त्रिय नन्द महरघर ।
जसुमति पागगइ सब दरदर ॥
देखहु महरि श्यामके गुण ।
जैसे हालकरे सबके उन ॥
बोली चोर हार दिखराये ।
आपुन भाजि इतहिको आये ॥
यमुनातट कोउ जान न पावे ।
सङ्ग सखा लये पाछे धावें ॥
सुतको वरजहु हो नन्दरानी ।
गिरिधर करत भला नहीं वाणी ॥
लाज लगति एक बात सुनावति ।
अञ्चल छोरि हियो दिखरावति ॥
यह देखत हंसि उरि जसोद ।
कछु रिस कछु मनमें करि मोद ॥
आइ गये तेहि समय कन्हाई ।
बांह गही लै तुरत दिखाई ॥
तनक तनक कर तनक अङ्गुरिया ।
तुम यौवन भर नवल बहुरिया ॥

आडु घरहि तुमको मैं चीन्हो।
तुमरी जाति जानि मैं लीन्हो॥
तुम चाहति सांई होन येहै।
और बहुत ब्रज भितर रहै॥
बार बार कहि कथा सुनावति।
इन बातनि कछु लाज न आवति॥
देखोरी ये भाव कन्हाई।
कहां गई तवकी तरुणाई॥
महरि तुमहि कछु दोषन नाही।
हमकों देखि देखि मुसुकाही॥
इन के गुण कैसे कोउ जाने।
और करत औरै धरि टाने॥
टेन उरहनों तुमकों आई।
नीकी पहिरावनि हम पाई॥
चलो सबै युवती घर घरकों।
मनमें ध्यान करति है हरिको॥
वरस दिवस तप पूरण कीनो।
नन्द सुवनकों तनमन दीनो॥
प्रातहोत यमुना फिरि आई।
प्रथम रहे चढ़ि कदम कन्हाई॥
तीर आइ युवती भई ठाढ़ी।
उर अन्तर हरि सों रति बाढ़ी॥
कहो चलें यमुना जल खोर।
अङ्ग अङ्ग आभूषण सब छोरै॥
चोली छोरै हार उभारै।
करसों शिथिल केश निरवारै॥
इत उत चितवति लोग निहारें।
कहो सबनि अब चीर उतारें॥
वसन आभूषण धरे उतारी।
जल भीतर सब गई कुमारी॥
मागशीर ओभी तन मानों।
षड़ ऋतुके गुण सम करि जानों॥
बार बार बूड़े जलमाही।
नेकहु जलकों डरपत नाही॥
प्रातहुते एक जाम नहाही।
नेम धर्महो मे दिन जाही॥
इतनो कष्ट करै सुकुमारी।
पतिके हेत गोवर्द्धनधारी॥
अति तप करत देखि गोपाल।
मनमें कह्यो धन्य ब्रजबाल॥
हरि अन्तरयामी सब जाने।
छीन छीनको यह सेवा माने॥
व्रतफल इनहि प्रकट दिखराउ।
वसन हरो लै कदम चढ़ाउ॥
तन साधे तपकियो तुमारो।
भजी मोहि कामातुर नारी॥
सो रहस इस गोपाल सुकुमारी।
सबके वसन हरे बनवारी॥
हरत वसन कछु बार न लागी।
जल भीतर युवती सब नागी॥
भूषण वसन सबै हरि ल्याये।
कदम डार जहां तहां लटकाये।
ऐसो नीपद्रुम विस्तारा।
चीत हार धौंकि तु जाह जारा॥
सब समानें तरु प्रति डारा।
यह लीला रचि नन्दकुमारा॥
हार चीर मानहु तरु फल्यो।
निरखि श्याम आपुन अनुकूल्यो॥
नेम सहित युवती सब नाही।
मन मन सविता विनै सुनाही॥
मुंदे नैन ध्यान उरधारै।
नन्दनन्दन पति होई हमारै॥
रवि करि विनै शिवहि मन दीन्हो।
छूटे माझ अवलोकन कीन्हो॥
त्रिपुर दमन त्रिपुरारि त्रिलोचन।
गौरीपति पशुपति अघमोचन॥
गरल-अशन अहिभूषणधारी।
जटाधरन गङ्गा-शिरधारी॥

करति विनय यह मागति तुमसों ।
करहु कृपा हंसिके आपुनसों ॥
हम पावै सुत जसुमतिको पति ।
इहै देहु करि कृपा देवरति ॥
नित्य नेम करि चली कुमारी ।
एक हम तनकों हिमजारी ॥
ब्रजललना कह्यो नीर जड़ाई ।
अति आतुर है तटकों धाई ॥
जलतें निकसि तरुणी सब आई ।
चीर आभूषण तहां न पाई ॥
सकुच गई जल भीतर धाई ।
देखि हंसे तब चढ़ कन्हाई ॥
बार बार युवती पछिताहि ।
सबके वसन आभूषण नाही ॥
ऐसे कौन सब लै भाग्यो ।
लेतहुं ताहि विलम्ब न लाग्यो ॥
माघ तुषार युवती अकुलाही ।
ह्यां कहु नन्द सुवन तो नाही ॥
हम जानहि यह बात बनाई ।
अम्बर हरि लै गयो कन्हाई ॥
हो कहुं श्याम विनय सुनि लीजै ।
अम्बर देहु कृपा करि जो जै ॥
थर थर अङ्ग कम्पति सुकुमारी ।
देखि श्याम नहो सकै सम्भारी ॥
येहि अम्बर प्रभु वचन सुनायो ।
व्रतके फल दरशन सब पायो ॥
कहा कहति मोसों ब्रजबाल ।
माघ शीत कत होनि बिहाल ॥
अम्बर जहां बताउ तुमको ।
तो तुम कहा देहुगो हमकों ॥
तनमन अर्पण तुमही कोनो ।
मो कछुहु तोसो तुमही दीनो ॥
और कहा तजु लैहो हमसों ।
हम मागति है अम्बर तुमसों ॥
यह सुनि हंसे दयाल मुरारि ।
मेरो कह्यो करो सुकुमारी ॥
जलते निकसि सब तट आवहु ।
तबही भले तुम अम्बर पावहु ॥
भुजा पसारि दीन ह्वै आवहु ।
दोउ कर जोरि जोरि तुम राहहु ॥
सुनहु श्याम एक बात हमारी ।
नगनि कहु देखिये न नारी ॥
यह मति आप कहां धो पाई ।
आजु सुनी यह बात नवाई ॥
ऐसो साध मनहि मे राखहुं ।
यह बाणी मुखते जिनि भाषहु ॥
हम तरुणी तुम तरुण कन्हाई ।
बिना वसन क्यों देहि दिखाई ॥
पुरुष जाति तुम यह का जानो ।
हा हा यह मुखतें जिनि आनो ॥
तो तुम पठोहो जलहि सब ।
वसन आभूषण नाहि चहति अब ॥
तबहि देउ जब बाहिर आवहु ।
बिनु बाहिर आए नहि पावहु ॥
कत हो शीत सहति सुकुमारी ।
सकुच देहु जलहीमे डारी ॥
कह्यो कदम व्रत करनि तुमारो ।
अब कह लज्जा करति हमारी ॥
लेहु न मानि आपने व्रतकों ।
मै जानत या व्रतके व्रतकों ॥
नीके व्रतकीनी तनुगारी ।
व्रत ध्यायो धरि गिरिवरधारी ॥
तुम मनकामन पूरण करिहों ।
रास रङ्ग रचि रतिसुख भरिहों ॥
यह सुनिके मन हरस बढ़ायो ।
व्रतकों पूरण हम फल पायो ॥
छाड़हु तुम यह टेक कन्हाई ।
नीर माझ हम गई जड़ाई ॥

आभूषण सब आपुन हो लेहो ।
और कृपा करि हमको देहो ॥
हाहा लागें पांइ तुम्हारे ।
पाप होत है जारिन मारे ॥
आजहु ते हम दासी तुम्हारी ।
कैसे अङ्ग दिखावैं नारी ॥
अङ्ग दिखाए हि अम्बर पैहो ।
मानहु वैसे हि धोंहहु वैहो ॥
नीरे कहँ निकसि सब आवहु ।
खोये हि हमको भलो मनवेहु ॥
सुहावरी तरुणी मुसुकाही ।
यह आपुन खोरी करि लाही ॥
मोह जोइ कही सो तुमको नाहैं ।
आशु तुम्हारे पसुतर कोहै ॥
हमरी पति सब तुम्हारे हाथा ।
तुमहि कही ऐसी ब्रजनाथा ॥
तपतनु गारि कियो जिहि कारण ।
सो फल लह्यो नोपतरु भारन ॥
आवहु निकसि लहु पट भूषण ।
यह लागे हमको सब दूषण ॥
अब अन्तर कत राखति हमसों ।
बार बार कहत हो तुमसों ॥
गोपिनी सुनि यह बात विचारि ।
अबतो टेक परे बनवारी ॥
चलहु न जाइ अब लीजे ।
लाज छांरि उनको सुखदीजै ॥
जलतें निकसि तीर सब आइ ।
बार बार हरि हरसि बुलाइ ॥
बैठि गइ तरुणी सकुचानी ।
देहु श्याम हम अतिही लजानी ॥
छाड़ि देहु यह बात सयानी ।
हैसे हि करो कहो हो बाणी ॥
करहु कुच अङ्ग ढाकि भइ ठाढ़ी ।
बदन नवाइ लाज अति बाढ़ी ॥
देव श्याम अम्बर अवतारा ।
हाहा दासी सब तिहारी ॥
ऐसे नहीं बसन तुम पावहु ।
बांह उठाइ अङ्ग दिखरावहु ॥
कह्यो मानि युवतिन कर जोरे ।
पुनि पुनि युवती करति निहोरे ॥
धन्य धन्य कहि श्रीगोपाल ।
निश्चय व्रतकी से ब्रजबाल ॥
आवहु निकट लेहु सब अम्बर ।
बोलो हरे मुरलि पटम्बर ॥
निकट गइ सुनिके यह वाणी ।
तरुणी नगन अङ्ग अकुलानी ॥
भूषण बसन सबनिको दीने ।
नियर्क कहत कृपा हरि कीने ॥
चीर अभूषण पहिरे नारी ।
कह्यो तबहि ऐसे गिरिधारी ॥
तब हंसि बोले कृष्णमुरारि ।
मै पति तुम मेरी सब प्यारी ॥
तुमहि हेत यह वपु ब्रजधार्यो ।
तुम कारण वैकुण्ठ बिसार्यो ॥
अब व्रतकरि तुमनहा ननगारो ।
मै तुम ते कहुं होत न न्यारो ॥
मोहि कारण तुम अति तप साध्यो ।
तनमनकरि मोको अवराध्यो ॥
जाउ सदन अब सब ब्रजबाल ।
अङ्ग परसि मेटेह तुडाल ॥
युवतिन विदा दइ गिरिधारी ।
गइ घरनी सब घोषकुमारी ॥
वस्त्रहरणलीला प्रभु कीन्हो ।
ब्रज तरुणिन व्रतको फल दीन्हो ॥
यह लीला श्रवणनि सुनि भावै ।
औरनि सिखवै आपुन गावै ॥
सूरश्याम जनके सुखदाई ।
हृदताइमे प्रकट कन्हाई ॥

बिलावल

वसन हरे सब कदम चढ़ायो।
सोरह सहस्र गोप-कन्यकिके अङ्ग अभूषण
सहित चुरायो॥
अति विस्तार नीपतरु तामे लेले जहां तहां
लटकायो।
मागि अभरण बार बार प्रति देखत छवि मनहो
अटकायो॥
नीलाम्बर पटाम्बर सारी श्वेत पीत चुनरी
अरुणायो।
सूर श्याम युवतिन व्रत पूरणको फल कदमडारि
फललायो॥

राग सूही

आपु कदम चढ़ि देखत श्याम।
वसन आभूषण सब हरि लिन्हे विना वसन
जल भीतर वाम॥
मुंदति नैन ध्यान धरि हरिकों अन्तरयामी
लीन्हो जानि।
बार बार सवितासों मागति हम पावे पति
सारङ्गपानि॥
जलते निकसि आइ तट देख्यो भूषण चीर तहां
कछु नाहि।
इत उत हेरि चकृत भइ सुन्दरी सकुचि गइ
फिरि जलहो माहि॥
नाभि परंस्त नीरमे ठारो थर थर अङ्गकम्पन
सुकुमारी।
को लै गयो वसन आभूषण सूरश्याम और प्रीति
विचारि॥

बिलावल

खोजत जात माखन खात।
अरुण लोचन भौंह टेढ़ी बार बार जम्भात॥
कबहुं रुनुभुनु चलत घुटरुण धूर धूसर गात।
कबहुं भुकिकों अलक खेंचत लेन जलभरि यात॥
कबहुं तोतर बोल बोलत कबहुं बोलत बात।
सूर हरिकी निरखि शोभा निमिष तजत न मात॥

२

माखन तनिक दे री माय।
खेलत घुटरु फिरत आँगन धावत चरण चलाय॥
सुन्दर दांतया अति विराजत बोलत हैं तुतराय।
मोर मुकुटकी शोभा निरखत सूर वलि वलि जाय॥

३

आज सुफल सखी जनम हमारो।
नयन भरि देखोगे नन्ददुलारो॥
वाम कपोल वाम भुज दीने।
अधर मधुर मुरली कर लीने॥
नयन कुरङ्ग सुपरस मामिख्यो।
आजु हरि हम अपनो करि लेख्यो॥
नाद वेद सङ्गीत सुनावे।
चलत भुवनसिर शिखर डुलावे॥
जनम जनमकी पूरी भेरी आशा।
श्रीजगन्नाथ मुख देख्यो माधोदासा॥

४

वलिगइ बालरूप मुरारि।
पांयउ पैजनी वदन रुनुझुनु नचावति नन्दनारी॥
कबहुं हरिकों लाइ अङ्गुरिया चलन सिखावतिधारि।
कबहुं हृदे लगाइ हित करि लेति अञ्चल डारि।
कबहुं हरिको चित चुम्बति कबहुं दिखावति गारी।
कबहुं नेकरि पाछे दुवारनि इहां नहो वनचारि॥
कबहुं अङ्ग भुज लय लावति राई लोन उतारि।
सूर सुरमुनि सबे मोहे निरखि यह अनुहारि॥

५

नन्दरायजूके द्वारे भीरहि ठाठ पहाउ।
निरवधि आनन्द मूरति निरखि नंन सिराउ॥
उज्ज्वल तन थोरो थोंदि राता अम्बर साहे।
अरुण घनतें निकसि पूरण चन्दकी छवि कोहे॥

ब्रह्म घनोभूत पूत कर अङ्गुरिया लायो ।
मन्द मन्द चलन सिखवति लोचन फल पायो ॥
रिद्धि सिद्धि निद्धि सहित रमा टहल करति फिरे ।
अर्थ धर्म्म काम मोक्ष भीख भिखारीन परे ॥
नन्दजू कहत कहा मागत हौं टेरि सुनाउ ।
नन्ददास नन्दलालको लेकु उत्तीर न पाउ ॥

६

खेलत श्याम ग्वालन सङ्ग ।
सुबे हलधर अरु श्रीदामखेलत नाना रङ्ग ॥
हाथ तारी देत भाजत सबे करि करि होड़।
बरेमे जु हलधर श्याम तबही चोट लागी गोल ॥
तब कह्यो मै दोरि जानत बहुत बल मो गात ।
मेरो जोराइ श्रीदामा हाथ मारे जात ॥
बोलि तबे उठे श्रीदामा जाहु तारी मारि ।
आगे हरि पाछे श्रीदाम विस्यो श्याम हकारि ॥
जागि केसे रह्यो ठाढ़ो छुवत कहा तु योहि ।
सूरश्याम खीझि सखनि सों मने हों कीनो ताहि ॥

७

मैया मे नही माखन खायो ।
ख्याल परेये सखा सबे मिलि मेरे मूह लपटायो ॥
देखि तुही छोके पर भाजन उंचे धर लटकायो ।
हौं जु कहत नान्हे कर मेरे सो केसे करि पायो ॥
मुख दधि पोंछि बुधि एक कीनो दोना पाछे दुरायो ।
डारि साचो मुसिकाति यशोदा श्यामहि
कण्ठ लगायो ॥
बाल विनोद भाव करि मोह्यो माता मनहि
रिझायो ।
सूरदास कह जसुमतिको सुख देवनि दुर्लभ गायो ॥

८

देखो माइ या बालको बात ।
बन उपवन सरिता सब मोहे देखत सांवल गात ॥
मारग चलत अनीत करत हरि हटि करि
माखन खात ।
पीताम्बर वह शिरतें ओढ़त अञ्चर दे मुसिकात ॥
तेरी सौंह कहा कहुं यशोदा उरहत देह लजात ।
जब हरि आवत तेरे आगे सकुचनिकह्यो न जात ॥
कौन कौन गुण कहो श्यामके नेकन काहु डरात ।
सूरश्याम मुख निरखि यशोदा कहति कहाये बात॥
नेक मेरे बारे कान्ह छाड़ि दे मथनिया ।
देखि देखि मुख लेति नन्दजुको रनिया ॥
कण्ठ वघनो मोहे नाक न थुनिया ।
नैननतें नीर मानों मोतिनके मनिया ॥
नेकु रह्यो देउ माखन मेरे प्राण धनिया ।
आरि जिनि करो मेरे छगन मगनिया ॥
सुरनर मुनिन कहुके ध्यान न आवनिया ।
सूरसुत देखि रानी भूलि धाम धनिया ॥

———*———

प्रथम खण्डोक्त

वर्णानुक्रमिक राग-रागिणी-सूची

अकारादिक्रमिक प्राचीन संस्कृत शास्त्र-सूची

(१ले खण्डमें वर्णित)*

* २रे खण्डमें भी यह नाम उद्धृत हुए हैं।

१ले, २रे और ३रे खण्डको अकारादि वर्णानुक्रमिक नामसूची।